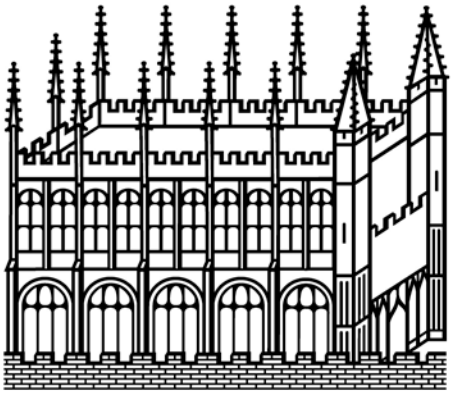


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



3. E.46. F24 Hindi Hamz 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Amīr Ḥamzah kī dāstān .

Dastan Amir Hamzah : Nay

अमीरहमज़ा की दास्तान

داستان امیر حمزہ

जिसमें

आल्हा ऊदल कीसी शूरता वीरता विख्यात है यह प्रसिद्ध
दास्तान ईरान के बादशाह नौशेरवाँ के समय की है,

यद्यपि यह प्रसिद्ध क़िस्सा उर्दू भाषा में फ़ारसी से उल्था
होय नवलकिशोर प्रेस में बहुत बार छपकर संसार में
प्रसिद्ध हुआ है

तथापि नागरी के रसिकों और क़िस्से के अभिलाषियों को
ऐसी अपूर्व दास्तान से ज्ञान और लौकिक रीति में उपयोग के

हेतु

सरल हिन्दी बोल चाल में बहु परिश्रम से नागरी में रचना
होय

दूसरी बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में शुद्धता पूर्वक छपा

सितम्बर सन १८८३ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सनमक्ष सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं। वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	६- भीष्म पर्व	रामायण सटीक मय	विष्णु पुराण भाषा
महाभारत	७- द्रोण पर्व	मानस दीपिका कोष	लिङ्ग पुराण
१- पहिले हिस्सा में	८- कर्ण पर्व	आदि	ब्रह्मोत्तर खण्ड
आदि पर्व सभा पर्व व	९- शल्य पर्व व गदा	तथा जिल्द बन्धी	भुवनेश भूयण
न पर्व	पर्व सौप्तिक पर्व मय	तथा मोटे अक्षरों की	शंकर चरित सुधा
२- दूसरे हिस्सा में वि-	योशिक व विशोक व	मय तसवीर व क्षेपक	वाराह पुराण
राट पर्व उद्योग पर्व भी	स्त्री पर्व	रामायण तुलसी कृत	भविष्योत्तर पुराण
ष्म पर्व द्रोण पर्व	१०- शान्ति पर्व राजध	टीका सुरवदेव लाल कृत	स्कन्ध पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	र्म मोक्ष धर्म्म व दानधर्म्म	रामायण तुलसी कृत	बाल्मीकी रामायण भा०
कर्ण पर्व शल्य पर्व ग-	११- अश्वमेध आश्रम	टीका रामचरण दास कृ०	अद्भुत रामायण
दा पर्व सौप्तिक पर्व ।	वासिक मुशल पर्व	रामायण तुलसी कृत	सुन्दर विलास
योशिक पर्व विशोक	महा प्रस्थान स्वर्गा-	सातों काण्ड	शुक्रनीति
पर्व स्त्री पर्व शांति पर्व	रोहण पर्व	१- बालकाण्ड	रसदृष्टि व रसचन्द्रोदय
में राज धर्म्म आपद धर्म्म	१२- हरिवंश पर्व	२- अयोध्या काण्ड	सुदामा चरित्र
मोक्ष धर्म्म	महाभारत सबल सिंह कृ०	३- आरण्य काण्ड	कथा गीतावली
४- चौथे हिस्सा में	१- आदि पर्व	४- किष्किन्धा काण्ड	श्री अनुराग रस
शान्ति पर्व दान धर्म्म	२- सभा पर्व	५- सुन्दर काण्ड	सौदागर लीला
अश्वमेध आश्रम वासिक	३- विराट पर्व	६- लंका काण्ड	रासलीला द्वारकाप्र० कृ०
पर्व व मौशल पर्व व	४- उद्योग पर्व	७- उत्तर काण्ड	**नाटक**
वारा प्रस्थान स्वर्गा	५- भीष्म पर्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोध चन्द्रोदय
रोहण पर्व हरिवंश	६- द्रोण पर्व	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
पर्व महाभारत पर्व अ-	७- कर्ण पर्व	रामायण मानस दीपिका	आनन्द रघुनन्दन
लेहदा भी हैं	८- शल्य पर्व	रामायण कवितावली	भ्रमजालक नाटक
१- आदि पर्व	९- गदा पर्व	रामायण गीतावली स०	हनू नाटक
२- सभा पर्व	१०- स्त्री पर्व	विनय पत्रिका बाबू मोहन	**वेदान्त**
३- वन पर्व	११- स्वर्गारोहण पर्व	लाल	योग वाशिष्ठ
४- विराट पर्व	रामायण राम विलास	विनय पत्रिका बाबू शिव	आनन्दाऽमृत वर्षिणी
५- उद्योग पर्व	रामायण तुलसी कृत	प्रसाद	सांख्यतत्व कौमुदी

भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्द घन परमेश्वरका धन्यवादहै कि जिसने इससंसार में उपकारकेलिये हजारोंप्रकारकी उत्तम २ चीजैंपैदाकीहैं और उसी प्रकार अपूर्व्व २ बातें किस्सेजातकी किताबोंमें जिनको देखनेसेमनुष्यका मन प्रसन्न और अनेक प्रकारकी चातुर्य्यता प्राप्तहोतीहै रचना की हैं अगलेसमयमें ऐसेबुद्धिमान् और विद्वान् मनुष्यहुयेहैं जिन्होंने अपनेचित्त के उद्गारसे नवीननवीन उत्तम २ पुस्तक निर्माणकीं जिनसे इनदिनों के लोगोंको प्रतिसमय लौकिक कार्य्यकी प्रवीणता कुशलता विद्याकीवृद्धि प्राप्तहोतीहै उसीतरह यह अमीरहमजाकी दास्तानहै यह ऐसामनो-हर उत्तम औ मनोरम क़िस्सहै कि जिसके अवलोकनसे बहुधामनुष्य प्रसन्नहोतेहैं और इसके वृत्तान्त ऐसेउत्तमहैं कि ज्योंज्यों पढ़ते जाइये त्योंत्यों और पढ़नेकोमन चाहताहै इसमें अमीरहमजानामी बड़ेसाहसी और शूरवीरका वर्णनहै जिसने सम्पूर्ण संसारके लोगों और मुख्यकर बादशाह नौशेरवां औरकाफ़िरदेवों और जिन्नोंको पराजय किया इसमें ऐसी शूरताका वर्णनहै जैसे पिछले राजाओं पृथ्वीराज आल्हाऊदल आदिने बड़े २ विजयके कामकिये और भी बहुतसी पुस्तकें किस्सों की जैसे अलिफलैला अर्थात् सहस्ररजनीचरित्र गुलबकावली बाग़बहार आदि उल्था होकरछपीं जिससे हिंदुस्तानभरके सम्पूर्ण मनुष्योंनेअलभ्य लाभ उठाया ॥

इस अमीरहमजाके किस्सेको पढ़कर लोगोंको अधिकतर इसबातकी इच्छाहुई यदि यह पुस्तक देवनागरी भाषामें उल्था कीजावे तो बड़े उपकारकीहो तथाच श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगणमण्डलीमण्डन पांडित्यादिनेक गुणमण्डित गुणग्राहक गुणिजनसुखदायक श्रीयुतमुन्शी नवलकिशोर जी वीरेश अवधसमाचारसम्पादक जिनका यश सकलसंसार में प्रसिद्धहै उनमहाशयने अपने मित्रवर्गोंकी सम्मतिसे नागरी रसिकों के उपकारकेलिये सकलगुणअलंकृत समयके आचार्य्य पण्डित कालीचरण जी महाराजसे बोलचालकी सरल हिन्दीभाषामें प्रीति पूर्वक उल्था कराकर निजयंत्रालयमें छपवाई ईश्वर ऐसे मुन्शीसाहबकी आयुरारोग्य बहुनकरे मित्र प्रसन्नरहें इसके पढ़नेवालोंको इसअपूर्व अलभ्य पुस्तकका फलहो और इससे लौकिककार्य्यमें लाभउठावें जिससे हमकोहमेशा २ छपवाने का अवसर मिले ॥

प्यारेलालशर्म्मा ॥

सूचीपत्र॥

वृत्तांत	पृष्ठसे	पृष्ठतक
पहिली कहानी	१	४
अलकशके हाथसे ख़्वाजेका मारा जाना ..	४	७
अलकशके स्वर्ग समान अन्याई नाम बागमें बादशाहके जानेका इतिहास	७	१०
अन्याई नाम बागमें बादशाहका जाना बारादरीके तख़्तपर बैठकर अलकशको पारितोषिक देना ..	१०	१२
अलकशका निरपराध बुजुरुच्चमेहरका पकड़ाना औरउसका छूटना और स्वप्न परीक्षार्थ बादशाह करके गुणिजन एकत्र करना	१२	१६
राजसभामें बुजुरुच्चमेहर करके बादशाहका स्वप्नवर्णन और उसकेपिताके बदले अलकश मंचीका बधवृत्तान्त वर्णन ..	१६	१८
बुजुरुच्चमेहरका अलकशकीपीठपरसवारहोनाऔर देखनेवालोंकाउनके साथजाना	१८	२३
बादशाह करके अति स्वरूपवती दिलाराम नाम स्त्रीका निकालना और फिर उसको स्वीकार करना	२३	२६
जाना बादशाहका कबादलकरिहारेके घरमें और दिलारामपर कृपादृष्टि करना और भोजन करके बारुणीमद्यका पानकरना ..	२६	३५
जाना बुजुरुच्चमेहर का चीनकी ओर सहित दबाव और प्रतापके और लाना मलकामेहरअंगेज़ का और गठिबन्धन उन दोनोंका	३५	४२
अमीरहमज़ाको क़ाफ पर्वतकी ओर उड़ालेजाना ..	४२	४५
अमरूके लालचोराने और पाठशालामें जानेका वृत्तान्त ..	४५	६१
करलेना अमीरका और मुसल्मान करना यमनके बादशाह	६१	७०
हुस्साम अलकशखेबरीके पुचका बड़ाहोना और मदायन देशमें करलेना ..	७०	७४
नौशेरवांकी सभामें मुक़ाबिल बफ़ादारके जानेका इतिहास	७४	७६
अमीरका मक्काकी ओरजाना और नौशेरवांका परवाना पहुंचना	७६	८६
अमीरका मदायनमें जाना और रुस्तमकी जगहपर बैठना और उससे अधिक बल और प्रताप दिखाना	८६	६२
बहराम गिरदख़ाकानचीनके साथबड़ी धूमधामसे मदायननगरमें गुस्तहमकाआना	६२	११०
मलकामेहरनिगारसे प्रथम मिलाप	११०	११६
मलकामेहरनिगारका अमीरके ऊपर मोहित होना और जाना अमीरके डेरेकी ओर अमीरकी चाहमें	११६	१२७
लन्धौरकी शिकायतमें भाई सादानशाहको विनयपत्र भेजना और उसके पराजय हेतु अमीरका मनोरथ करना	१२७	१४३
अमीरके जहाज़ोंका सिकन्दरी तूफानमें फसना और उससे निकलकर सरन्दीपमें पहुंचकर सादानशाहके पुत्र लन्धौरसे करलेना	१४३	१६३
अमीरहमज़ाके साथ लन्धौरका युद्धकरना	१६३	१६४
रणभूमिमें युद्ध होना अमीर और लन्धौरसे और तलवार मारना अमीर का लन्धौरके शिरपर और तलवारके घावसे लन्धौरके घोड़ेकी गर्दन अलग होकर धरतीपर गिरना और घोड़ेका माराजाना	१६४	१७८

वृत्तांत	पृष्ठसे	पृष्ठतक
बिजयप्राप्तहोनेकेपीछेमदायनकी ओर लन्धौरसमेतबड़ेसजधजसेअमीरकाचलना	१७८	१८१
पकड़ाजाना ओलाद मुर्जबाके पुचका ओर जाना बंधुवाहोकर अमीरकी आज्ञा से प्रतिष्ठारहित होकर नौशेरवां के समीप	१८१	१८६
निकट ओर तमाशासे युद्धकरना ओर पकड़ना ओलादका	१८६	१९६
बिदितहोनामरनामलकामेहरनिगारका सकरगारवानेसेमावस्तककीजवानी ओर यहहालसुनकर अमीरकी परेशानी ओर मारना अमरूका सकरगारको ओर पत्तों में छिपाना उसीबदकारको **दूसरा भाग॥**	१९६	२०५
हज़रत ख़िज़र अलेहुस्सलामकी आज्ञानुसार अमरूका निषेध करना बिषमिले जलके पीनेसे अमीरकी ओरआकाशबाणीके सुननेसे अमीरकाउसजलको न पीना ॥	२०५	२०८
सातदेशोंमेंसेइलज़ाबियावइलज़ाकियाकेअधिपतिसेहाम,महर्ज्जरी,क़मरओरसामका अमीरकेहाथमुसल्मानहोकर ओर आधीनहोनाबकरदेनावसेवाकरना हामआदिकका	२०८	२१२
अमीर का यूनान की तरफ जाना ओर हइदरहीम के साथ बिवाह करना	२१२	२१८
कबूतर का मदायन में पच लेकर जाना ओर मुक़बिल आदिक के मारने का यत्न करना ओर अमरूका आना	२१८	२२१
जाना अमरू का मिश्र को कबूतर के पीछे ओर मारना उसका मिश्रके दर-बाजे पर ओर छुड़ाना अमीर का कारागार से .	२२१	२२४
मिचताकरनाअमरूकासरहंगमिश्रीकेशागिर्दोंकेसाथओरबाजीलेजानाउनमक्कारों से	२२४	२२७
छूटना अमीर का कारागार यूसुफी से ओर बचना सरहंगमिश्री से	२२७	२३८
युद्ध करना ज़ोपीन का अमीर के साथ ओर दबाना अमीर का जोपीन को ओर खंजर रखकर मुसल्मान होना ..	२३८	२३८
रात को लड़ाई करना जोपीन का ओर जख़मी होकर न मिलना अमीरका	२३८	२४०
आना अमीरके लेनेको अब्दुल रहमानजिन्नीवजीर शाहनशाह परदेक़ाफ़ का	२४०	२४५
माराजाना गुस्तहम का अमीर के हाथ से ओर छूटना उसका सेना के साथमें	२४५	२४७
अमीर का परदेक़ाफ को जाना ओर उसका अट्ठारह वर्ष के बाद लौटना	२४७	२४९
वृत्तांत अमीर का जो परदेक़ाफ में हुआ ..	२४९	२५३
नौशेरवांका अमीरकेकोहक़ाफकीतरफजानेकाहालसुननाओरउसकासेनाभेजनामक्केको	२५३	२५८
भेजना नौशरवां का हारम पुच अकबरको अमरूके बध करने को	२५८	२६१
साहवकिरां (हमज़ा) के पीनेके लिये देवोंका अंगूरकी शराब लाना	२६१	२६५
वृत्तांत ख़्वाजे अमरू का	२६५	२६९
जाना ख़्वाजे निहाल का मलका मेहरनिगार के लाने को मक्केकी तरफ ओर उसका माराजाना अमरू के हाथ से ..	२६९	२७०
कारनफीलगर्दनकाअमरूकेपकड़नेको ज़ानाओरउसकामाराजानानक़ाबदारकेहाथ से	२७०	३०१
बादशाह नौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार काबुलीका ओर जहांगीर काबुली भाई ज़ोपीनशाहज़ादे जहांगीर का जाफ़रांमर्ज़ की सहायता को	३०१	३१४
माराजाना अफ़रेतशाह देवोंका अमीरके हाथसे ओर शीश काटनेसे सैकड़ों देव बनकर अमीरसे युद्धकरने को आना	३१४	३१५
आना ख़्वाजे हज़रत अलेहुस्सलामका अमीरके पास ओर उनकी आज्ञानुसार		

वृत्तांत	पृष्ठसे	पृष्ठतक
जादूकातोड़नाऔरमाराजानाअफ़रेतकीमाका हज़रतकेमंचसेऔर लूटनातिलिस्म का	३१५	३२६
वृत्तान्त (साहबक़िरां) हमज़ा का जिससमय परदेक़ाफ़ को गयेथे	३२६	३२६
वृत्तांत हरमज़ जाफ़रांमर्ज़का	३२६	३३४
आना नारंजी पेशदेवका और अमरू को क़ैदसे छुड़ाना	३३४	३५०
तीसराभाग ॥		
वृत्तांतखुसरोहिंदलंधौरपुचसादानकाक़िलेसरन्दीपमेंपहुंचनाऔपराजयदेना महलील		
संगसारमलिकअहबूबऔबहरामशाहख़ाकानचीनकोऔचीनमेंजाकरराजगद्दीपरबैठना	३६०	३७४
जानाख्वाजेअमरूकाक़िलेकायमसेक़िलेदेवदेमेंसाथमलिकामेहरनिगारमुसल्मानी सेना	३७४	३८०
केजानाआसमानपरीकासेनासमेतक़िलेसब्रुनिगारकोऔरनगरलूटकरपराजयकरकेपकड़		
लानाबादशाहसब्रुक़बाउसकीबेटीरैहानपरीसमेतऔरक़ैद करनाकारागृह सुलेमानीमें	३८०	४१६
वृत्तांत ख्वाजेअमरू का	४१६	४२५
पहुंचना अमीरका देवसमुन्दके स्थानपर और छोड़ानाज़हरमिश्रीका कारागारसे	४२५	४३०
वृत्तांत अमरू अमीरजमीरी के पुचका	४३०	४३८
चौथाभाग ॥		
साहब क़िरां अर्थात् हमजा का बृत्तांत	४३६	४५६
अमीरकामक्के कीऔरजाना औपराजयदेपकड़करसादानअमरूहबशीकामुसल्मानकरना	४५६	४६६
मदायनमें पहुंचकर हरमुज और नौशेरवांका पता लगाना और अमीरहमजा		
का नौशेरवांके छोड़ाने के लिये जाना	४६६	४७४
पहुंचना क़ारून पुच फरहाद और क़यात पुच गईम सिपाही का अमीर के		
पास और बांधकर लेजाना अमीर और मुक़बिलको	४७४	४८४
जाना अमीर का फतेहयार भाई फतेहनोशके देश में और मारना अज़दहे		
का और उत्पन्न होना अलमशेरख़ूमी का	४८४	४६१
जाना अमीर का गेलानगरकी ओर और वहांके अधिपति गुनजाल शाह को		
मुसल्मान करके उसकी बेटी गेलासवार के साथ विवाह करना	४६१	४६४
अमीरहमज़ा का औतिसकुन्दा नमरूद की तरफ़ नौशेरवांके लानेको जाना		
और आनेपर नौशेरवां की दूसरी बेटीके साथ बिवाह करना	४६४	४६६
जाना अमीर का कोहअलबुर्जकी तरफ	४६६	४६०
शाहज़ादे बदीउज्जमां गेलीसवार का लड़की गुनजालशाहके पेटसे पैदाहोना		
और बहादेना शाहज़ादे को संदूकमें बन्दकरके नदीमें और हजरत ख़िज़रकी		
आज्ञानुसार करीशा बेटी आसमानपरीका लेजाकर रक्षा करना	४६०	५००
वृत्तांत अनल पुच अब्दुल मुत्तलिब भाई हमज़ा का	५००	५०६
आनामरजूकहकीमकाबरूक़ केभेजनेसे औरअमीरकोसरदारोंसमेतअन्धाकरना	५०६	५०७
आना हाशम पुच हमजा और हारन पुच सादका अमीर के पास और अच्छा		
होना अमीर के नेत्रोंका हज़रत ख़िजर की सहायता से	५०७	५०६
रुस्तम पीलतनका अहिरन से माराजाना	५०६	५१८
अमीर का मक्के की तरफ जाना और हज़रत सालिम से मिलकर एकस्त्री के		
हाथ से अशकर समेत माराजाना और वृत्तांत का पूरा होना	५१८	५२०

श्रीगणेशायनमः ॥

दास्तान अमीरहमजा भाषा ॥

दोहा ॥

गौरी शेष गणेशको विनय करौं करजोरि । गुरु चरणन शिरनायके उल्थाकरौं बहोरि ॥
मुन्शी नवलकिशोरको आज्ञापाय पबिच । हमजाके इतिहासको उल्थाकियो विचिच ॥

इस इतिहासको लेखकलोग विचिच चरिच मधुर वृत्तान्त शुभकल्यांत प्राचीन आचारी अतिविचारीसंसारकेनिमित्तसुचित्तहो योंवर्णनकरतेहैं कि ईरानबैकुण्ठ समानभूमिमें अदायनदेशका बादशाहसुखमें प्रबाहजिस का नामक्रबादकामरां दीनदयाल सदा प्रजा के पालनमें आरूढ़ और न्याय करनेमें अतिगूढ़ सुखआनन्द उसदेशमेंजागता दुखकष्ट और उपद्रव मृत्युस्थानमें सोताथा और उसकेदेशमें दीन अरुयती उनक्राके समान बे निशानथे धनवान पुण्य के कारणभिषारी व दीनमनुष्यको खोजनेमें अति तंगबेरंगथेपरन्तुकोई उचितपदकापुण्यलेनेवालानपातेथे औरबलवानदीन को नहींसतातेथे सिंहगाय एकघाटमेंपानी पीतेथे तीतरअरुबाजएकसाथ रहतेथे छोटे बड़े एकदूसरेसे प्रीतिकरतेथे एकदूसरे परकोई बोझनधरता था निशिदिन कंवाड़द्वारपालोंके नेचसमान बेरुखकखुलेरहतेथे चोरका कभीकोई नाम न लेताथा और जोमनुष्य मार्गमें परीहुई बस्तुपावेउसके मालिककोढूंढ़करदेदेताथा इससेभीअधिकन्यायउसदेशमेंथा, औरवहबल वानबादशाहजिसकाचित्तसिंहकेसमान औरऐसापराक्रमी किजिसकेबल कोदेखकररुस्तम दृढ़स्त्रीकेसमानकांपताथा औरदूसबादशाहतेशस्त्रीकेचा स्त्रीशमंत्रीजोज्ञानवानबुद्धिमानऔरअतितंत्रीथेऔरसातसौवैद्यअफलातून जिनके आगेअरस्तूपाठशालाकेलड़केसमानथेसबज्ञानी, औरससुभदारीमें अपने सामनेदूसरेकोनहींरखतेथेऔरसब विद्यापढ़ेहुवेथेपदार्थसारीऔर गणिताबिचारी औररमल, औरज्योतिष, मेंअमलजालीतथा, रेखागणित औरसातसौपण्डित ज्ञानीसुशीलउसकी न्यायशालामें वर्त्तमानथेऔरचा रसहस्रपहलवान अतिबलवान जोसामनरीमा औररुस्तमकोअपनाचेला

गिनतेथे और तीन सौबादशाहउसके दरवाजेपर दुन्दभीबजातेथे औरसब हाथजोड़कर करदेतेथे और दशलाखसवार बड़े अक्की औरचालीशदस्ता सेवकोंके सोनहलेरुपहलेके जड़ाऊभूषण वस्त्रहीरामोतीसे सजेहुयेथे उस बादशाहकी सभानन्दनको डाहदेनेवाली फिरदोसको सुशोभित करने वालीमें रहतेथे सेवाकरने में अति चालाक जो निछावर करने में पाक सांस भरतेथे और उसी नगरमें एक वैद्य ख़ाजेबख्तनामी पैग़म्बर अली नबियाअलेह उस्सलामके द्वारपरटिकाथा वैद्यता औरपदार्थविद्या और रमल,वा पण्डितावमें बड़ाचतुर आगेके बुद्धिमानोंसे अत्यन्त ज्ञानवान था अलक्ष बादशाह के मंत्री ने बहुधा उसकी चतुरता की परीक्षालीथी और अपनी इच्छापूर्ण उससे प्राप्त कीथी और उसकी ओरसे अपने हृदयमें इसभांतिसे प्रमाणकियाथाकिजोवह कहताथा उसेसत्यमानलेता था और एकपलभी उससे अलग न रहताथा थोड़ेदिनके पीछे अलक्ष ने रमलकी बिद्यामेऐसी चतुरताप्राप्तकी किख़ाजेकाविद्यार्थी प्रसिद्धहुआ और प्रकाश उसकादूरदूरतकहुआएकदिनउसने ख़ाजेसेकहाकिनिश्चिके समयमेरा जोचित्तघबराया तोमैंनेतुम्हारेनिमित्तपांसा फेंका उससेजाना गयाकिआपकाग्रह मन्दस्थानमेंहैकुछदिनकष्टपाना तुम्हारेकर्ममेंहैऔर चालीश दिनतक वहग्रहउसी स्थानमेंरहैगा इसकारणसे इतनेदिनआप घरसेबाहर कहीं न जाइयेगा औरकिसीका एतिबार न कीजियेगाऔर मैंभीधीरजकापत्थरइतनेदिनतकअपनीछातीपरधरेरहूंगाआपसे मिलाप न करूंगा ख़ाजेने अलक्षके कहनेके अनुसार अपनेहृदयमें बिचार घर के केवांरसंवारकरएककिनारेबैठिरहाऔरअपनेमित्र औरस्नेहियोंसेमिला पछोड़दिया और उसीकोनेमें बैठे२ जबउन्तालीसदिवस व्यतीत होगये उसकेमन्ददिन दरिद्रताकेशिरसेउतरगयेचालीशवेंदिन ख़ाजेसेबैठेहुये न रहागया बैठे २ उसमें घबराया और हाथमें अपना अस्त्रलेकर घरसे बाहरकोचला औरमनमेंबिचाराकि चलकरअलक्ष राजमंत्रीसेमिलाप करिये और उसकेचित्तका सन्देहहरिये अपनेशुभसमाचार उसेजनाइये औरइससे उसेआनन्द प्राप्तकराइये औरकोईहमारामित्र इसरानगरमें नहींहै मित्रऔरमिलापी सच्चेमनसेवहीहै दैवयोगसे सुमार्गछूटकरकुमार्ग में फँसगया और एक जंजड़ स्थानके निकटहो नदीपर जानिकला उस समयसूर्य्यके किरणोंसे घबराकर एकपेड़के तलेछायामें बैठिरहा एका-एकीएकबड़ीदीवारउसकीदृष्टिमेंआईपरवारदीवारीउसकीगिरगईथी जो उमंगउसके मनमेंआई टहलते २ आगेको राहली आगे चलकरदेखा कि बहुधा घरउसमेंगिरगयेहैं दालानटूटेहुये पड़ेहैं परन्तु दालानगिरने से टूटेनहींहैं सबउसीके भीतर गड़ेहैं औरउस दालानमें एककोठरीका दरवाजा जोईंटोंसे ढालागयाथा वहबचाहुआहै ख़ाजेने ज्योंहीईंटोंको

टाया तोउसमेंएक छोटादरवाजादेखनेमेंआया वहतालेसे बन्दथाखाजे चाहा कि इसको किसीभांतिसेखोलैं और इसमेंकुछ बलभीकरैं इस मनोर्थसे उसमें हाथलगाया ताला छूतेहीगिरपड़ा खाजेने उसकेभीतर पांवरक्खा जाकरदेखातो मालूमहुआ कि एकतहखाना उसमेंहै जिसमें अत्यन्त द्रव्य और हीरा मोती बड़े २ मोलके भरेहुयेहैं और शहादकेदू-कड़ा करायेहुयेहैं खाजेने डरकेकारण उसमेंसे कुछलेनसका और उलटे पैरों वहांसेफिरा और मनमेंविचारा यह समाचार आनन्दकारक अल-कशमंचीको सुनानेकेहेतगया अलकशने जो खाजेकोदेखा अति प्रसन्नहुवा उसे देखकर और मसनदपरबैठाकर हृदयका स्नेह खोलनेकेपीछे बोला कि आज चालीशवां दिनथा आपनेक्यों कष्टसहा कलमैं आपकेनिकट उ-पस्थितहोताखाजेने दो चार बातेंकरके उसद्रव्यकीबाहुल्यताकावृत्तान्त कहा और सम्पति अनपावनीका समाचार वर्णनकिया और कहा कि अबमेरा गृह आनन्दमय प्रकाशहुआ जिससे इतनीद्रव्य दृष्टिपड़ी परन्तु यह संपत्ति बादशाहके देशमेंहै मुझदीनको कब पचसकतीहै इसकेलेनेको मेरा देहँ कँपताहै इसकारण मैंने अपनेचित्तमें यहबिचार कियाहै कि आप मंत्रीहैं औरमुझदीनके अत्यंतमितहैं इसबहुतधनकापता आपकोदूं औरजो मुझे हाथउठाकर आपदेवें उसे मैंभीलूं अलकशने सातढेरद्रव्यकेउसकेमुंह सेसुनकर कृतकृत्यहोकर रोमावलि फूलकर अपनेशरीरमें नसमाया और शीघ्र दो बाजीसालके एकपर खाजे दूसरेपरआप गाजकेचढ़ा औरखाजे के साथहोकर उसीमार्गमेंबढ़ा चलते २ उसीस्थानमें उपस्थितहुआ और ऐसीसंपत्ति देखकर घबरागया इसप्रकारका आनन्दप्राप्तहुआकिजिसमें जीगवांवे कि मेरेईश्वरने मुझ यहद्रव्य अलभ्य कृपाकीहै उसकीउदारता सेमुझेमिलीहै परन्तु इसभेदको खाजेबख्तअमाल जानताहै ऐसानहो कि यह वृत्तान्त अपनी प्रतिष्ठाकेनिमित्त बादशाहसे कहदे तोउससमयऔर काऔरहोजावे सहजहीसंकटमें जानफँसे यहद्रव्य ईश्वरकीदीभी हाथ सेजायऔर बादशाहमुझे अत्यंतकपटीजान बहुतकष्टदेके मंचीपदवीसेदूर करदेवै और कुछआश्चर्यभी नहीहै किमेराघरभी छीनलेवे औरमुझेबंदी स्थानमेंडालकर लड़केबालोंसमेत सबघरबारको धूरमेंमिलादे और मेरा नाशकरदे इससेअच्छाहै कि खाजेको मारकर इसीस्थानमें डाल दूं और इसधनको अपनेवशकरलूं जिससे इसकाभेदन प्रसिद्धहो यहजानकरअति शीघ्र उसनेपछाड़कर छातीपरचढ़बैठा औरछूरी उसकीगरदनपरमारी खाजे इसचरित्रको देखकर अतिआश्चर्यमें होकरकहनेलगा कियेअलकश तुझे क्याहोगया मैंनेतेरेसाथ मित्रताकीहै नकिशत्रुता इसयशका बदलाय-हीहै मैंनेतेरेसाथ क्याअपराधकियाहै जिसकेकारण मुझेऐसाफलदेताहै यहकह अत्यंतरोयापीटा चिल्लाया और उससेआधीनता और दीनता

कीपरकुछभीदयाउसकेचित्तमेंनआई उसदुष्टमनुष्यनेइसदुष्टकेहाथसेछूटना कठिनजानकर अपनी मृत्युकाहोना अवश्यजाना और जीनेसे निराशहो कर यह दोहापढ़ा ॥ दोहा ॥

धिकमृतक मोहंकरतहै प्रकटअवशकरुलाश । प्रीतिनअमपुनि कीउकरै जेहितनहोयबिनाश ॥

अलकशसुन मुझे तू अब मारताहै औरमुझको मारकर तू अपने ऊपर अपराध लेताहै परन्तु मैं दोबातें तुझे समझाता हूं इसकोजांमाने तोमैं तुझसे वर्णनकरूं क्योंकि मेराजीना केवलइससंसारमें इतनाहीथा तेरेमरतेसमय यहखून अपनेऊपरलूं यहसोचाकितेरीमृत्यु निकटहै उसेभीकह दे अब कटारी तेरालोहू पीनाचाहतीहै उसनेकहा और मोरहसनकी भांतिसे इस चौपाईकोपढ़ा ॥ चौपाई ॥

मिचरहापरबैरीभयऊ । मगपूछेउसोईठगरहेऊ ॥

परंतु मेरेघर केवलआजही भरका अन्नखानेकोथाअबठिकानानहींहै इससे आपको उचितहै किकुछखर्चमेरेघरमें कृपाकरके भेजदीजिये और दुखियोंका निर्वाहकरना दूसरीबात यहहै कि मेरीस्त्री गर्भवतीहै उससे इतनाकहिदेना कि जोपुत्रहो उसकानाम बुजुरुच्चमेहर धरना और जो दुहिताहोतो जो तुझेसमुझिपरैसोनामधरिलेनायहकहिकर आखेंबन्द करलीं और परमेश्वरका स्मरणकरनेलगा इतनेहीबेरमें उसने उसको और उसके घोड़ेको मारकर उसी कोठरीमें गाड़दिया ॥

—o—

अल्कश के हाथ से ख़्वाजे का भागजाना ॥

और उसकेकेवाड़ उसीप्रकारसे मूंदकर नदीपरगया कटारी और अपनेहाथकालोहूधोया और उसचल सम्पत्तिके हेत अपनाधर्मखोया फिरतुरंगपर चढ़कर अपनेधामको पधारा चित्त अतिप्रसन्नहुआ दूसरे दिन सवारहोकर सामान समेत फिर उसीस्थानपरगया और उसेदेख भालकर अपने प्रधानदारोगाको आज्ञादी कि हमारेनिमित्त एकफुलवारी यहांपर लगाईजावे और सामान भारीमोलके उसधामरचनाके निमित्त भेजेजावें उसकीआज्ञापाकर दारोगाने थवई और मजूर और संकतराश बोलाकर धामबनानेमेंआरूढ़करदिया और थोड़ेकालमें चार दीवारी बागसमेत बनगई अलकशने उसेदेखकरअतिप्रसन्नहुआ उसफुलवारीकानाम अन्यायीबाग रक्खा और ख्वाजे बख्तजमालके घरमेंजाकर संदेशाख्वाजेका वर्णनकिया और अत्यन्त धीरजदिया औरबहुतसारुपया देकर कहाकिअपनेखाने पहिरनेमें उठावो औरजबअवश्यकताहोगी तब तुम्हारी सहायताऔरभी करूंगा तुमकोकष्टनहोने पावेगा ख्वाजेकोमैंने व्यापारकेनिमित्तचीनकीओरभेजाहै अतिशीघवहांसेधनउत्पन्नकरकेआवेगायहसमझाकर अपनेघरकोगया औरसत्यसमाचार निजचित्तमेंरचा ॥

कवित्त ॥

जोनेकेसमय सबबीतिगये जनुवायु विपिनके मध्यचली ।
कडुआंब अनन्द अकारथले बीती सबभांति बुरीवभली ॥
कहिनाकुछवाको किवोहीनहीं मैंनेअन्याथकिलीनीगली ।
उसकी ग्रीवापर फेरिरही बीती मोपै सब अंग शली ॥

इतिहास बुजुरुच्चमेहरके उत्पन्नहोनेका औरविदितहोना वृत्तान्तप्रस्तुतका—कहने वाले आनन्दमयहोकर इसभांतिसे प्रकाशकरतेहैं किईश्वर अपनीउदारतासे वहसुदिन समीपलायाकिगर्भकेदिवसबीतनेकेपीछे शुक्रवारकेदिनसुसायतिमेंखाजेवख्तजमालका भाग्यवान्पुत्रउत्पन्नहुआ॥

सोरठा ॥

रविसम प्रगट्यो आय निज गृह तमहित दीपज्यों ।
सभी परसपर आय । जुरे पतङ्गा के सरिस ॥

प्रथमतोउसकीमाता खाजेकास्मर्णकरके नानाविलापसेअपनीबिकलाईपरशोक ग्रसितहुई और नयननीरबरसायाउसकेपीछे अपने पुत्रकामुख निरखकेउसकेप्रतापकेप्रकाशसे आपपतंगाकेसमाननिछावरहुईऔरईश्वरकाधन्यवादकरके कहेहुयेसंदेशाके अनुसार बुजुरुच्चमेहर नामधरा वह अपनीमाताकेगोदमेंसेवापानेलगा औरपरमेश्वरनेसबप्रकारकेकष्टोंसेउसकीरक्षाकी मानोअपनेनिजहाथसे उसकेशरीरकी रचनाकीथीसुन्दरता संसारकी उसकोदेखकरअतिलजाय घबरायछिपरही औरउसकेमस्तक के प्रकाशसेप्रतापकाचिह्न बिदितहोताथा औरचेहरेकीचमकसे उसकेसुलक्षणप्रकटथे जबपांचवर्षकाहुआ उससमयउसकीमाता गुरूकेसमीपविद्या पढ़नेकेनिमित्तलेगई और वहपण्डित खाजेकाचेलाथा औरउसकेसमीपी लड़के उसीकेसमीप पढ़नेकोजातेथे उससे कहनेलगी कि तुमपर खाजेका अतिउपकारहै इससतुमभी इसलड़केकोपढ़ादो क्योंकियहउसका पुत्रहै तुम्हारानामहोगा उसनेशिरनेचसे यहस्वीकारकिया और उसकेपढ़ानेमें अति चित्त लगाया ॥

चौपाई॥

जोजोबर्ष बीतिजगजाई । अधिक भली उपजे अरुनाई ॥

उसकायहस्वभावथा कि दिनभरतक वहअपनेगुरूकेसमीप पढ़नेलिखनेमेंध्यानलगाता और जब चारघड़ीदिनरहता उससमय अपनेघरको जाता उसकीमाताजोश्रमकरकेपातीउसेबनारखती सोखालेताथादैवयोगसेएक दिवस कुछखानेकोनहींमिलाबुजुरुच्चमेहरनेअपनीमातासेकहाकिअबतो क्षुधाकेकारण आंतेंव्याकुलहैं जो कोईवस्तुदीजिये उसे बेचलाऊं खानेका उपायकरूं उसकीमाताने कहाकिबेटा तुम्हारेपिताघरमें कुछनहीं लाये औरनछोड़गयेहैं जोतुमकोबेचनेकेनिमित्तदूं औरखानेपीनेकीअवश्यकता

मिटाऊं किन्तुएककिताबतुम्हारेनानाकीधरीहै बहुत पुराचीन लिखीहै बारम्बारतुम्हारे पितानेचाहाथा किउसेबेचकर अपनेखर्चमेंलावें परजब वहकिताबलेनेकेनिमित्त ताकेनिकटजाते तोउसमेंसे एकभुजंग फुनकारें मारताहुआनिकलताथा वहडरकेकारणसेहटआतेथे देखो जोतुमकोवह मिलेतोलेजावो और उसेबेचकरखावो केवल उसकेसेवाय औरतो कोई वस्तुघरमें नहींहै जोतुमकोदूं और उसेबेंचकरलाऊं माताकेमुखसे यह सुनकरकिताबउठालाया औरवहसांपजोसदैवदेखपड़ताथा दृष्टिनआया औरउसकेचारपच पढ़करप्रथमतोअतिरोया पीछेउसकेएकस्थानदेखकर अत्यन्तआनन्दमेंहोहँसा औरप्रसन्नतासे मुखप्रसन्नहोगया देखनेवालोंने जो उससमय वहांपर उपस्थितहुयेथे यहसमाचारदेख अतिआश्चर्य किया ईश्वर यहकिसकारणसे प्रथमतोरोया तदनन्तरअतिहँसा इसका चरित्रनहीं जानाजाताहै उसकीमाताको सिड़ीहोजानेको संदेहहुआ औरसबसेकहनेलगी किईश्वरकेनिमित्त कृपाकरके गुणीकोबोलादो तो इसकीनसकटाकर रक्तनिकलवाडालूं और किसीसेबोली कियंच लिखा दोकिइसके गलेमें बांधदूं क्योंकिसुझदुखियाको केवलइसीका आसराहै कदापियहविच्छिप्तहुवा तोमुझअनाथका कहींठिकानानलगैगा बुजुरुच मेहरने अपनी माताको संकटमें देखकर कहनेलगा किआप न घबरायें ईश्वरचाहेगा तोयहकष्ट वैबिपत्तिकेदिवसशीघदूर होजावेंगे और इसके बदलेंमें अतिआनन्द पावोगी अधभाग्य उदयहोनेवालाहै औरसबमन्द व कष्टताकासमय दूरहोताहै ॥

दोहा ॥

भोरदिवसहेईदका बेगिबारुणीदेइ । प्यालापी आनन्दहों रविजनि उदयकरेइ ॥

चौपाई॥

देत उसे नहिं लागत देरी । जनि निरासहो होय निबेरी ॥
अतिउदारहे कृपानिधाना । समुझिदेखु निजहर बिधिनाना॥

मैंविच्छिप्त नहींहुआ रोनेऔर हँसनेका यहमनोर्थहै कि इसकिताब केपढ़नेसेसबवृत्तान्त अगलापिछलाजानाजाताहै इसकारणसे मैंनेजानाकि मेरेपिताको अलकशमंचीनेबेअपराधमाराहै औरउसकीलाशअबतकवहां परपड़ीहुईहै ऊपरसेबीकेधरीहुई औरहँसाइसबातपरहै किमैंभीअपने बापकाबदलाउससेलूंगा औरयहांके बादशाहकामंचीहूंगा अबखानेपीने काक्लेशनहोगा अपनेचित्तमेंशोकनकरो खानाबहुतहै औरदशकोदीजिये यहकहकरएकदासीकोअपनेसाथलेकर एकबनियेकीदूकानपरगयाऔर उससेकहाकि इसलौंड़ीको इतनीजिन्समैदा औरकंदऔरघत आदिजो मांगाकरेदिनप्रति दियाकर औरउसकामोल नमांगाकर उसनेकहाकि अच्छाउसकामोल कबतकमिलैगा बेहिसाबकियेकैसेबनैगा बुजुरुच मेहर

ा कि मोल मुझसे मांगताहै अपना कहा क्या भूलगया चांदनामीगँ-
रसे कई सहस्र मनगेहूं लेकर उसको विष देकर पुत्रसमेत गल्ला के
ारणबेअपराध मारडालाहै यहभेद राजसभा में विदित करूं तोतेरा
ाहालहो और किसभांति तुम्हारा मालहो बनिया यह पतासुनकर
पहोगया और पगड़ी उतारकर उसके चरणों पर रखदी घबराकर
हनेलगाकि मियांजीयहदूकानआपकीहै जिससमय जोदूच्छाऊंवाकरे
गवालिया करो परन्तुयहचरित्रदूसरेसे नजनावो अपनेमनमें रखियेऊं-
चमेहर वहांसे लौंड़ीको साथलेकर चिकवा की दूकानपर गया उस्से
हा कि एकमनमांसउत्तमहूसस्त्री को दिनप्रतिदियाकर उसनेकहा कि
ोलकालेखा कबसमझावोगे रुपयाकिस समयदोगे वुजुरुचमेहरने कहा
क जोतूनेकोश गिलावानसे कईसहस्र मेढ़ेलेकर मोलमांगने के समयउ-
को मारकर अपनी दूकानकी कोठरीमें गाड़दिया है उसबिचारे का
हस्रोंरुपयेकाधनसहजहीमारलिया है तूजानता नहींहैकिजो उसकीस-
तानकोराजसभामेंभेजदूंतुझेउस अपराधकारंग देखलादूं मांसकीद्रव्यतु
दिलादूं मोलमुझसेमांगताहैऐसाअयानबैठाहै यहसमाचारसुनकरगाय
ीभांतिकांपनेलगा और अतिशीघ्र उसके चरणों परगिरा और अति
मतासे गिड़गिड़ाकर कहनेलगा कमांसता क्या मेरीजान भी आपपर
नछावरहै जितना सरकार की दासी आज्ञा करैगी उतनामांस करै-
ीका दिनप्रति दूंगा और धोखेसे उसके मोलका अक्षर जीभपर न ला-
ूंगा परन्तु मेरीजान व प्रतिष्ठापरकृपादृष्टिकियेरहियेगा फिरकिसीसे
ईसीबात न कहियेगा इसीभांतिसेसराफकोभी कुछकुसमाचार सुनाकर
बरादियाथा और उससेपांच मोहर दिनवारी खर्चके निमित्त ठीककर
लियाथा आनन्द मयहो अपने घरमें बैठकर समयका खोजकरने लगा
मिचस्नेही नयेनये इकट्ठा होनेलगे सुख व आनन्द करनेलगा ॥

सोरठा ॥

अशुभसगुनहूं जात जबउदारताप्रभुकरै । काहमूढ़पछितात भजनकरै अतिमगनहूं ॥

अलकश के स्वर्ग समान अन्यायी नामबागम बादशाह के जानेका इतिहास ॥

वृक्षबांधनेवाले बाग वृतान्तकेऔर फुलवारी सुशोभित करनेवाले बाग
विदित करनास्वच्छ कागदमें इसप्रकार पेड़शब्दों के उचित खचित
करते अर्थात् वर्णन करतेहैं कि जबबाग अन्यायी बनकर तैयार होगया
मिसेवैकुण्ठ की भांतिसुशोभित व प्रफुल्लित हुआ उससमय अलकश अति
प्रसन्नतासेफूलगयासन्देहदोनोंस्थानका भूलगया अत्यन्त आनन्दसेफूला
न समातातनसे बाहरहुआजाता बादशाह के समीप जाकर अतिदीनता
से प्रार्थनाकी कि इससेवकने आपके प्रतापसे एकबाग बनायाहै उसमें
भांतिभांतिकेवृक्षफलदारऔरफूलबूटेकेलगायाहैऔरदूरदूरसेभारीम.ल

केसुन्दर वृक्षमँगाये हैं और अतितीव्र माली पेंड़बांधने के हेतनियतहैं सहस्रों रुपया खर्चकरके इसकाम के कारीगर मँगायेहैं प्रत्येक मनुष्य अपने २ काममें अतिचालाकहैं और बेलिबूटे इसप्रकार से लगायेहैं कि जिनको देखकर विश्वकर्मा अपनीरचनासे लज्जितहोजावे परन्तुइसअनुचरकीदृष्टिमें समाता नहींहै प्रतिमारका रंगदीख पड़ताहै जबतक आप सवारहो उसमें अपना चरण सुलक्षण नहीं धरतेहैं ॥

दोहा ॥

चरणाबरे के परेसकल बाग बिलिजाय । जहां तनिकसा ठहरिये सूखबृक्ष हरियाय ॥

इसआधीन की बिनय यहहै कि कबी आपजगत् प्रताप उसओर शैर केवहानेचरण लेजायँतोइसआधीन कोअत्यन्तबड़ाई प्राप्तहो आपकेचरणों कोछपासे उसबागमें बसंतऋतु आजाय हरफूल व कलीमेंनयारंगप्रकाशितहोजाय औरअपनीछपासेजो दोएकफलखालीजियेतो अनुचरकोअत्यन्तआनन्दमिलैऔरआशारूपवृक्षकाफलपायेबादशाहनेउसकीबिनती स्वीकारकियाऔर उसकेमनोर्थ पूर्णकरनेकोकहा अलकशने प्रणामकरके नजरदीऔरवहांसे आज्ञालेकरबागमेंआयासामग्रीजिवनारकी करनेलगा अतिशीघ्रसबइकट्ठा कियाऔरभांति२केखानेबननेलगेऔरबिबिधप्रकारकेमेवानावोंमेंधरेगईंबजानेवालोंकोबजानेकी आज्ञादीगईखेलौनेवालेखेलौना छोड़नेकासमयदेखनेलगेप्रकाशऔरचमतकारी कीसामग्रीहोनेलगीसहस्रोंगिलासचढ़गयेझाड़फानूसदीवारोंपरसजनेलगे थोड़े कालकेपीछेबादशाहतखरी महाप्रतापीनादिप्रकाशी न्यायबिलासीसेवकोंसमेतअन्यायीबागमें आया अलकशकाक्रमनोर्थ पूराहुआऔरबादशाहकेबैठनेके निमित्तअतिरुचिरगद्दीसजीउसपरफूलबूटेहीरामोतीकेबनायेहुयेथेऔर चारोंकोनोंपरचारमोरपन्नेकेबनेहुयेलगेयेगयेथेऔरसबप्रकारसेसजेहुये थे होरेकपत्ते और पन्नोंकेफूलबनेहुयेथे अतिरचनाकरकेवहचौकी सुशोभितथीजबबादशाहकीसवारीबागकेनिकट पहुंचीअलकशनेतोधावनऔर सवारहृत्तान्तजाननेकेनिमित्तनियतकररक्खेथेउन्होंनेबादशाहके आनेका समाचार सुनाया सबजगह आनन्द छागया ॥

दोहा॥

बादशाह जबबाग में आयेप्रेम समेत । फूलप्रफुल्लित अतिभये आनन्दित करहेत ॥

अलकशअपनेलड़कोंसमेतऔरमित्रोंको साथलेअगवानीकीराहपैउपस्थितहुआवहचौकीऔरचालीसहाथीजिनपरसुनहरीझूलेंपड़ीहुईऔर अम्बारी सोनेरूपेहीरामोतीकेगंगायमुनी कामपीठोंपरखचीहुई और जंजीरैंसुनहलीरुपहलीगर्दनमेंपड़ीऔरदातोंपर चांदीमढ़ीपीलवानों ने लहसुनियाकीडण्डियांहाथमें लियेबनारसी पगड़ियां चुड़ीदार शिरपर कबायेंसोनेहली पहनेहुये रुपहली कमरबंद कमर में और कमखाबकी

मिर्जाईयां सजेहुये बनारसीपट्टी कमरमेंकसेहुयेसोनहलेफेंटे शिरपर ल-
पेटेहुये बरछे और दंडजड़ेहुये हाथोंमेंलियेहुये आसपास सम्पूर्ण सामान
वायु समान चाल तुरंगों पर चढ़ेहुये घोड़ोंको जमाते उड़ाते अपनागुण
दिखाते पंक्तिबांधेचलेजातेथेदोसै घोड़े ताजी, इराक़ी, अरबी, विलायती,
काठीवार, खचो, जोकोसिया, भावराथली, तुरकी, तातारी आदिटेढ़ीकस
केटाप वायुसमान बजाते चलेजातेथे परीके आकारदेखभाव आयलटक
हुयेजीनसानहलेचढ़ेहुये अतरकीसुगन्धसेभरेहुये सोनहले चारजामापड़े
हुयेकलंगीपट्टा दुमची आगे अगवन्दहैकल जड़ाऊ गजगायेंसड़कैंसुरक्षल
लगेहुये लालकलावत्तूनके पीठोंपर उसपर पाखरें जवाहिरोंसे बनीहुई
कंचन सोनहले हाथोंमें जेरबंद पश्मीनेके बनेहुये बालातंग जेरतंगसेखिचे
हुये कलाबत्तूनकी लगामैंसहीसोंके हाथमें प्रतिबाजी दो२सहीससोन-
हलेकड़े उनकेहाथमेंपहेलालबत्तियांतूलकीशिरपरबांधेगुजराती मुसरूके
घुटने पांवमेंपहनेमिर्जाईयां सजे भारी २ चौरियां गंगायमुनीडंडियोंकी
जिनमें मोतीगुहेहुयेथेआगेपीछे दायेंबायें जीवोंकेवृत्तान्तको देखतेरहते
थे कईसहस्रऊंट अरबी, बुग़दादी, आदिजिनपै जराऊ झूलैपड़ीहुईकलं-
गियां सोनहली रूपहली मुखोंपर चढ़ीहुईं नाकमें नकलें रेशमी प्रति
ऊंटके सजीहुईं साड़िनीसवार अति चालाकीसेचलतेथेसाड़िनीभीभागी
गर्वमेंपगी तनीजातीथी कभीअतिलाड़ व सनेहसेउसकेसवार गोदीमेंशर
रखतेथे अतिचालाकव गर्वनाकसेएथ्वीकीओरग्रीवांनभुकातीथीऔरकई
सहस्रनाव व रूपे व सोने व हीरा, लाल, पन्ना, नीलम, माणिक, लहसुनि
या, पुखराज, गोमेद आदिसे भरीहुई और गहना जड़ाऊके अत्यन्त भरे
और कईसहस्र नावमें भांति २ के अस्रतलवार, छुरी, कटारी, बांक
जमधर, सिरोही, तमंचा, बन्दूक़आदिसे चुनेहुयेथे इसी प्रकार
कपड़ोंकेथान सहस्रभांति कमखाब, सुथुरू, गुलबदन, रूमाल, डुपट्टे
पटुकेबनारसी, गुजराती, जामदानी, कामदानी, महमूदी, चंदेली
सबनम, चिकन, तारसिमार, तारादाम, मलमल, नैनू, नैनसुख, तंजेब,
आदिकेनावोंके ढबसेलगेहुये बस्र बिबिधिप्रकारके सुरमई, दुशाला, रूमाल
पटके, गुलूबन्द, जामा, सदरी, लबादा, अचकन, इत्यादि अतिचतुरताके
साथ चांदीकेपाच और नावोंमेंधरेहुये साथलेके बाहिरके आनन्दधाममें
नजरदेके चौकीकापाया पकड़ेसाथहुआ जब बादशाह बागमेंआये देखा
तोसत्यबाग उचितसैर आनन्ददाताहै अच्छीभांति सजाहुआहै दरवाजा
बागका बहुतऊंचाहै बड़ीभारी चौखटबाजूचन्दनकी बनीहै उसपरचांदी
पोलादकी खूंटी गड़ीहैं और मजबूतहैं ॥

अन्यायीबाग में बादशाह का जाना और बारादरी के तख्त पर बैठकर अलकश को पारितोषिक देना और नाच होना ॥

अत्युत्तमदीवार संगमरमरकी बनीहुईथी और उसके दरजोंमें जवाहिरसे काम बनाहुआथा और स्थान स्थान प्रति दीवार में जवाहिर के वृक्ष बनेहुयेथे डाली और पत्ते पन्नासे सजेथे और फूल व कली लहसुनियां आदिक पत्थरोंसे काम बनाथा और उन डालियों पर बुलबुल तोता मैना आदि पक्षी बनेहुयेथे और उसके नीचे टट्टियां रचनाकृत रची हुईथीं और मोतियों के गुच्छे के बदले अंगूर के गुच्छे लगे हुयेथे और जो वृक्षों में फल लगे हुयेथे उनपर रंग बिरंगी थैली चढ़ी हुईथी और रेशम व कलाबत्तूनकी डोरी से कसी हुईथीं और मोलमें एकसे एक बढ़ीहुईथी और फुलवारीके बांधनेमें और स्वच्छ करनेमें इसप्रकार की शोभाथी कि जिनपर दृष्टिका पांव फिसलताथा और तमाशा देखने वाले अतिआश्चर्य्यमें होतेथे कियारियोंमें सबभांतिकेफूललगेहुयेथे लाला गुलाब, दाउदी, नाफरमानी, पिस्ताई, मूगरा, गुलशब्बो, दुपहरिया, कुंदी आदि सब प्रकारके फलखिलेहुयेथे और किसी स्थानमें मूलसरी काटवृक्ष मनुष्यके बराबर छटेछटाये लगेथे और किसीफुलवारीके कोनोंपर सर सनोबरके वृक्ष शृंगारमय आकाशतक चलेगयेथे सुगंधित बायु उनसेचल रहीथी और फूलोंकीडालीअतिसनेहसे एकदूसरीकलीकामुख चूमरो हीथीं औमेवालगेहुये वृक्ष अतिसुन्दरताईसेझूमरहेथेबुलबुलआदिपक्षी चहकिरहेथे औरप्रतिएककियारियोंपर दरवाजेमहराबदारलगेहुये थे औरउनके किनारोंपरखम्भारचितखचितथेऔर उनपरचांदीकेपचचढ़े मढ़ेअतिशोभादेरहेथेऔरकहीं२मुरैलेनाचरहेथे औरनौयोवनामालिनें सोनहलेआभूषणसहितबस्त्रजड़ाऊलहँगेपहिनेउसपर चुनरीसुवर्णके तारों कीओढ़े मांगनिकाले हुये अंगुलियोंमें छल्लाछापपहिने अनवट बिछुये चांदीके पहिनेटीकाबेंदीमस्तकमें दियेहुयेसबप्रकारका गहनापहनेहुये हाथों औरअंगुलियोंमें मेहँदीकी अरुणाई सजीसजाईहाथोंमें सोनेके बेलचेलियेहुये रविश परकीघास काटरहींथींऔरसूखीलकड़ी टूटीफूटी को निकाल रहींथीं कियारियोंको अतिसुन्दरतासे सुधाररहींथीदेखने वालोंकेचित्तआनन्दित करके हरलेतीथीं औरउनकी नर्म२ कलाइयां चंदनकी डलीको लज्जित करतीथीं नान्हीं२ अंगुलियोंमेंमेहँदीशोभा देरहीथी औरजिनकी छातियां अतिस्वच्छ औ कोमलथीं नींबूके समान कुच और गोरागोरा मुखअतिशोभा देताथाऔरअंगुलियोंमेंसोनहली मुँदरी पहनेहुयेथींप्रतिस्थानचमनोंमें पानीबहातीथींऔरआपसमेंहँसी ठठोलीदिल्लगी करतीथीं औरकोकिलासमानमृदुबैनबोलरहींथींकिसी गौशकीघाससूखीउखारकरदूसरेस्थानमेंलगातींऔरकहींसेहरीकोमल

दूबउखारके बेलचेसे जमातीं और किसीकियारीमें थालेलगातीं और ट-
ट्टियोंपर अंगूरकी बेलदौड़ानेलगीं औरनलिया पानीबहनेके निमित्तच-
मनोंमेंलगीं विविधिभांतिके बगहंसआदि चिड़ियां आनन्दकररहीथीं
औरजोबड़े २ वृक्षथे उनपर रेशमकी डोरियोंसे डालियां बँधीथीं और
कहीं २ चबूतरे बिल्लौर व संगमरमरके बनेथेऔरप्रतिचबूतरेकेआगेहौज़
उनमेंअतर व गुलाब व कस्तूरीआदि भरीहुईथी औरमध्यमें फौवारेहीरे
सेबनेहुयेथे औरचांदीसोनेकाढेर उनफौवारोंके हौज़ोंमें लगेहुयेथेऔर
जब उनफौवारोंसे हजाराछूटता तो सहस्रोंभांतिकी क्रीड़ा देखातीथीं
देखनेवालोंकी दृष्टिमेंआश्चर्यआताथा चित्तप्रफुल्लित होजाताथा और
बागके मध्यमें एकऐसाघरबनाथा किजिसकेसमानसंसारमेंकोईभीनबना
होगा और उसकेआसपास साबूबान गंगायमुनी सोनहरा काम किया
हुआथा औरदरवाज़ोंमें सोनेरूपेसे बेलियों की कलाबत्तू नसेगुन्धी हुई
पड़ीथीं और सोनहलेपरदा अर्थात्भारीऔरहीरालालकी खिरकियों
में डोरीलगीहुईथीं औरचौखटपर सातलाख मोहरोंकाचबूतराथाऔर
भीतर उसबँगलेके एकचौकी जवाहिरसेबनीथी बादशाहउसचबूतरेसे
बँगलेको सुशोभित करके वहांगये नजरेंदीगईं अलकश को प्रतिष्ठाका
प्रातःकालप्राप्तहुआबागअन्यायीकीशोभादेखकरअपनेबागन्यायकापति
कारदेखा औरअतिशीघ्र मुखसेवचनकहा कि सत्यहै यहबाग अति रम-
णीयहै और सुस्वादफल लगेहैं उसकीशोभा औरप्रशंसा लोकानोंसेसुनते
थे उसे आंखोंसे देखलिया कि अत्यंत मनोहर औरसुशोभितयहबागहै॥

चौपाई॥

जो प्रसिद्ध है सुर अमराई। ताते अति है सुन्दरताई॥
स्वरमाली देखेउ जब आई। भैाचकरहेउ हृदयअधिकाई॥
सुरपुर की सुधिनहिंपुनि करई। नहिं बैकुंठ चित्त कछु धरई॥
रविश रविश पर चमन सोहाई। खिले फूल तामें अधिकाई॥
मेवती जूही कीन प्रकाशा। कौनिउं और केतकी हुलाशा॥
नरगिश फूल आंख सम करई। सुमन निरखिबुलबुलचितहरई॥
पक्षी कतहुं अनन्दित अहहीं। हंसत चकोरसुक्ख अतिलहहीं॥
अदब समेत सरो फुलवारी। घेराकीन सनोवर भारी॥
डाल सरोपर पेडुकी सोहे। कूकू शब्द करत मन मोहे॥
वृक्षफलित फलविविधि प्रकारा। नाशपाति ले सेव अनारा॥
मेवा लगे मधुर तेहि माहीं। सो सब रुचि समेतलेखाहीं॥
रविश मध्य नाचत हैं मेरा। करतमधुरमण्डितप्रति शोरा॥

अलकश बादशाहकी प्रशंसासुनकर अतिहृतकृत्यहोकरफूलेनसमाता
था अति आनन्दकेकारण तनसेबाहर हुआजाताथाविनय करनेलगाकि
यहसब आपहीके प्रतापसे रचना बनीहै और सेवकका क्यामक़दूरथाजो

ऐसा स्थानबनाता आपकेआनेसेऔर अत्यंत बड़प्पन इसेप्राप्तहुआऔर ताबेदारकी प्रतिष्ठाआकाशतकपहुंची और समानोंमेंअतिप्रतिष्ठामिली इसकेपीछे बादशाहने भोजनको अतिरुचिसेखाया अलकशनेसाजनाच व रागका मगाया और नाचनेवाली वैश्यापरीसमान और बारमुखीअति मनोहर नाचने गानेलगीं आनन्दरूपीबारुणीका प्यालाभरनेलगींमापक का घूमनदेखकर प्याला आसमानका चक्करमेंआया उस समयमें कछु औरहीरंग देखाया आतशबाजीके खिलौनेछूटनेलगे देखनेवालोंकी दृष्टि सुखमें आनन्दपानेलगी संक्षिप्तहै कि २१ दिनतक निशिदिन बादशाहने प्रसन्नताकी बाईसवेंदिन अलकशको पारितोषिक यमशैदीं कृपाकुआ तत्पश्चात् बाहनशाही उपस्थित कियेगये बादशाह उसपर आनन्दित सवारहुये राजस्थानमेंआये और न्याय नीति करनेलगे ॥

अलकश करके निरपराध बुजुरुच्च मेहरका पकड़ना और उसका छूटना औरस्वप्न परीक्षार्थ बादशाह करके गुणीयकच करना ॥

दोहा ॥

एक दिवस गोशैर को फुलवारी की ओर ।
जाय दीख इक फूलको भरा डालकर शोर ॥
कहा किया क्या तैंने हे जलता कौने हेत ।
कहा कि मैं इस बागमें हसाथा चैन समेत ॥

मायाकृत मालीरचनासे संसाररूप फुलवारीमें प्रतिसमय नयाफल फुलाताहै चतुरताकी दृष्टि उसकीरचना देखकर संसारमें अपनामनोर्थ भूलजातीहै जोहँसा यहोकांटा शोकका उसके कलेजेमें चुभा जिसडाली ने दीनतासे गर्दनझुकाई शीघ्रमनोर्थकाफल हाथमेंलाई जिसटिड्डनीने अपनीसीवांसे शिरउठाया उसे वृक्ष बांधनेवालेने काटडाला ॥

सोरठा॥

करै विचार विवेक । गिनागणित ह्यांयलियना ।
समुझिधरै उरटेक । जो मर बुल्लातक गहै ॥

देखिये उसबागमें नयाफूल फूला और औरहो रंगका गुच्छाचिटका बुजुरुच्चमेहरका वृत्तान्त लेखकलोग अब यों वर्णनकरतेहैं कि बुजुरुच्च मेहर अतिधर्ममें आरूढ़ चतुर और अतिगुणज्ञथा एक कोनेमें परमेश्वर का स्मरण करनेलगा एकदिन उसकी माताने कहा कि अबमेराचित्त साग खानेको चाहताहै बेटा जो कष्टसहकर माको साग ले आदेते तोमेरी नियति भरती बुजुरुच्चमेहरने माका कहना स्वीकार किया और अन्यायीबागकीओरचला जबबागकेदरवाजेपरपहुंचातोबागकादरवाजा बंदपाकर मालीको हांकदी आवाज सुनकर माली चलाआया ताला खोलनेका मनोर्थकिया खाजेने कहा कि तालेमें हाथ न लगाना तूने जो कलह सांप मारायाथा उसकी स्त्री तालेकी झड़में तेरे डसनेके निमित्त

आईहै अपने जोड़ेका बदला लेनेको बैठीहै बागवानने जोदेखा तो सत्य एक नागिन तालेके भरमें बैठीहै मालीने उसे मारकर दरवाजा खोला और चरणोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आपने मेरीजानबचाई मुझे पहिलेसे जतादिया नहींतोमेरेमरनेमें क्याशेषरहाथा इत्याअनुचरकाप्राणगयाथा यहकहकरबोला कि आपकी क्याआज्ञा होतीहै उसने उत्तर दियाकिमुझे थोड़ासागचाहिये जोदामहोंगेदूंगा अपनेघरका मार्गलूंगा बागवाननेकहाकिसाग आपकेनिमित्तलाताहूं मोलउसकाआपऐसेपरोपकारीसे क्यालूंगा योंहीं दूंगा मालीज्यों सागलानेगया तोक्या देखताहै किबकरी केसरमेंखातीहै मालीने झुंझलाकर एकबेलचा उसकेमारा वह तड़पकर मरगई बुजुरुच्चमेहरने कहा कि तुमने नाहकमें यह तीन अपराध लिया उसने मुस्कराकर कहा कि साहबजादे अच्छी भांतिसे एक जीवके तीन बतलातेहौ यह क्याबात कहते हौ बुजुरुच्चमेहरने कहा कि सुनबेसमझ इसबकरीके पेटमें असुक २ रंगके दोबच्चेहैं वहभी इसीकेसाथ मरगयेइनदोनोंमेंयहबातेंहोतीथींकि अलकशभीबैठासुनरहाथा उसओर ध्यानलगायेथा मालीको बुलाकर सबवृत्तान्त पूछा कि क्याबातें करतेथे उसने सबसमाचार सचाविचारके कहदिया अलकशने बकरीका पेटफार करदेखो तोउसीरंगकेदोबच्चे बकरीकेपेटमेंदेखे यहवृत्तान्त देखकर अति आश्चर्यमाना और बुजुरुच्चमेहरको बुलाकर अपनेसमीप बैठालिया और पूछाकि तूकौनहै और तेरेपिताका क्यानामहै और कहांहैं बुजुरुच्चमेहरनेकहा किखाजेबख्त जमालका पुत्र और हकीमका नवासाहूं तंगोंके अन्यायकासताया हूं मेरेबापको किसीक्रूरने मारडालाहै उससेबदलालेनेकोफिरताहूं कोनेमेंबैठना स्वीकारकिया कुछदिन और धीरजधरे बैठा ईश्वरका स्मरणकरताहूं सदाअपने पिताकेशोकमेंहूं अलकशने कहाकि तूने अपने पिताके मारनेवालेका खोजपायाहै बुजुरुच्चमेहरने उत्तरदिया किईश्वर बड़ा अंतर्यामीहै उसके निकट सब सहजहै कभी न कभी पता मिलही जायगा उसदुखिया बेपराधी मारेजायेका सकल समाचार रंग देखायेगाअलकशनेकहाकिभलातूबता रातकोमेराक्यामनोर्थथा बोलाकि तूनेगड़ाहुआ मालपायाहै सहजही हाथआयाहै चाहताथा किअपनी जीसेकहै परंतुनहीं कहाकुछ समझकर चुपहोरहा यहबात सुनतेही अलकशके होशउड़गये और चित्तघबरागया संदेहमय होगया कुछऔर का औरही ढंगबनगया बेदके समान कांपनेलगा चित्तमें बिचारकिया कदापि यहभेदबिदित होजाय मालजायऔरसङ्कट ऊपरआवैयहलड़का अंतर्गति जाननेवाला है ऐसे मनुष्यका चित्त और कलेजाखानेसे वहभी अंतर्यामी होजाताहै इसको मारनाचाहिये और इसका कलेजाखाया चाहिये सबउपद्रवभीजातारहै औरसुखसेकोईअक्षरभी ननिकालसकेगा

शीघ्रहीवस्तयार हवशीको बोलाकरकहाकि तुमेरासेवकहै इससमयचुप केसेतू इसलड़केकोमारकर इसकेकलेजेका कबाबबनाकर मुझकोखिलादे इसके बदलेमें तेरामनोर्थ पूर्णकरूंगा उससेवकने बुजुरुचमेहरको एक अंधीकोठरीमें लेजाकर पछाड़ा चाहताथा किछुरी गलेपरफेरै तोअत्यन्त खिल खिला कर मेहर हंसा और कहा कि जिस आशापर यहपातक लेताहै वहतेरी ईश्वरसे झूंठहोगी बल्कि यहप्रतिष्ठाभी तेरीभंग होवेगी जातूइसकार्यसे बचारहैगा तो ईश्वर चाहैगा तूमुझसेअपनी मनोकामना पूर्णकरैगा उसनेकहा किभलामेरा क्यामनोर्थहै जातुम बतादोगे तोहम तुमकोअभीछोड़देवेंगे बुजुरुचमेहरनेकहा कि तूने अलकशकीबेटीसेप्रीति कीहैऔर उसे अलकशतुझे कधीनहीदेगा परंतुमैंतेराउससेनिश्चय करके बिवाह करादूंगा बल्कि तेरे बिवाहकी सामग्रीभी मैंकरदूंगा इससमय तुमुझे छोड़दे आलके दशवें दिन बादशाह एक स्वप्न देखकर भूल जायगा और अपनेमंत्रियोंको वहस्वप्नसुनावेगा सबसे उसका अभिप्राय पूछैगा सबकीपरीक्षालेगा जबकोईबतानसकैगा तोबादशाह क्रोधवान्होगातिस समय यही तुझसे मुझे बुलावेगा खबरदार जबतक तीनतमाचे तुझको न मारै तबतक मुझे न बताना यह अक्षर अपनी जीभपर न लाना हवशीने कहा कि उसने तेरे कलेजे के क़बाब मांगेहैं जोमैं किसी जीवका कलेजा निकालकर कबाब बनालेजाऊं तोवह हकीमहै निश्चयकरके जानलेवेगा और मुझे दण्ड करेगा बुजुरुचमेहरने कहा कि नगरके दरवाजेपर एक बकरीकाबच्चापडाहै उसकोआदमीका दूधपिलाकरपालाहै एकबुढ़िया बेंचतीहै मुझसेमोललेकर उसबुढ़ियाकोदेकरला और उसेमारकरकबाब उसकेकलेजेका भूनकरउसेखिला शेषमांसअपनेखानेके निमित्तरखले उस समयउसकोभीईश्वरकाडर औरअपनेअभिप्रायकी लालचलगआईबुजुरु चमेहरके कहनेकेअनुसार कामकिया उसकेमारनेसे हाथउठाया अलक्रश कबाबखाकरसमझा किमैंभी अन्तर्यामी होगया बाग़में बैठे २ आनंदमें रहनलगा बुजुरुचमेहर जीताजागता अपने घरआया ॥

चौपाई॥

परा बिपतिमें मैं बहुभांती । बीति गई आयों कुशलाती ॥

अपनीमातासे सबसमाचार वर्णनकिया वहबिचारी आफ़तकीमारी यहसमाचार सुनकर अपनी दीनतागुनकर और पुत्रके मुखसे यहवृत्तांत जानकरअतिरोई औरफिरउसकेबचनपरईश्वरकी प्रशंसाकरनेलगी और कहाकिबेटा घरसेबाहर न निकलाकरो ईश्वर न करै कोईबला तुमपर पड़ै तुमकोबैरियोंसे हानिपहुंचे उसनेउत्तरदिया कियाप यहबात अपने चित्तमेंनलावें औरंजनकरैं देखियेईश्वरक्याकरताहै वहअपनीरचनाकैसी दिखाताहै उसकेदशवेंदिन बादशाहएकस्वप्न देखकर भूलगया प्रातसमय

हकीमों और मंत्रियोंको बुलाकरकहाकि मैंनेरात्रिको एकस्वप्न देखाथा सोभूलगयाहूं किसीभांतिसेयादनहींआताहै तुमकोउचितहैकिउसस्वप्न काइत्तान्त वर्णनकरो उस्काबदलाहमसेलोसबनेविनतीकीकिजोस्वप्नज्ञान पढ़तातो उसका अभिप्रायसुनातेअपनीबुद्धिके अनुसारकहते बादशाहने कहाकिसिकन्दरके समयमेंजोहकीमथे बहुधा वहस्वप्न देखकर भूलजाता था परन्तुउसस्वप्नको वे लोगबता देतेथे जो मेरास्वप्न बताकर उसकाफल न कहोगे तोएक २ को मारडालूंगा क्योंकि मैंनेइसी मनोर्थके कारण से सहस्रोंप्रकारके कामतुम्हारेनिकालेहैं और इसीनिमित्त तुमलोगोंको हमने नौकररक्खाहैजोनकहोगेतोतुमलोगोंको मारकरतुम्हारेबालबच्चों कोभीमारूंगा और घरतुम्हारा सबनष्ट करदूंगा चालीसदिन की अवधि देताहूं जो मेरास्वप्न सच्चीभांति न कहातोदेखना किसभांतिसे मैंकरूंगा अलक्षपरसबसेबिशेषआज्ञाकीगई क्योंकि वहसबसेअधिक अधिकारपर था जितने हकीम और बुद्धिमानथेइसबातसे अत्यन्त घबराकर और संदेह मयहोकरपरस्परकहनेलगे कि बिनासुनेउसस्वप्नका बिचार किसभांति से करें जिससेइसबलासे छूटजावें जबचालीस दिवसहुये अर्थात् बादशाह की कहीअवधिव्यतीतहोगईतबसबको बुलाकरपूछाकिस्वप्नका बिचार किया कुछपता लगाया और तोकोई न बोला परन्तु अलक्षनेप्रार्थना की कि सेवककोरमलकेद्वारानिश्चयहुवाहैकि आपनेस्वप्नमेंयहदेखाथा कि आ-काशसे एकपक्षीनेआकर आपकोआगकेगड्ढेमें डालदियाहै यहदेखकर आप डरसे अति चौंकपड़े और स्वप्न भूलगय बादशाहने क्रोधवानहोकर अतिआतुरकहा कि ऐनीचतूमुझेझूठ इसप्रकार के शब्दसुनाताहै तूनेमुझे भलीप्रकारकीबार्त्ताकहीउसपरदावाहकीमी और रम्मालीका करताहै और अपनीबुद्धिमानी जताताहै यहस्वप्न भलामैंनेवाब देखाथा कि जोतूने वर्णनकिया अच्छामैंनेदोदिवसकीआज्ञाऔरदीहैजोतैंने तीसरेदिनमुझे स्वप्न न बतायातोसौगन्धखाकरकहताहूं कि तुझेनमरूद की भट्टीमेंडाल कर जलादूंगा औरोंको अतिदुसह दुखदूंगा किन्तु किसीकोभी जीतान छोड़ूंगा अलक्ष यहसुन अतिघबरायशोकमेंमग्नहोगया और इसीप्रकार से घरकोगया वहांपहुंचकर शीघ्रबख्तयार हबशीको बुलाकर पूछनेलगा कि सचबता तैंनेवह लड़का क्या किया जीताछोड़ दिया या कि जमीन के तलेछिपाकर गाड़दिया उसनेकहा कि उसको मैंनेतभी मारडा-ला था और उसके कलेजे का कबाब बनाकर आपको खिलादिया अबमुझसे पूछाजाताहै कि वहलड़का कहांहै अलक्षनेकहा कि वहबड़ा बुद्धिमान और अन्तर्यामीहै वहतेरे हाथसे बचरहाहोगा आज्ञाभंगसे मतडरमुझेबतामैंकसमखाताहूं तुझसेकोईबातनकहूंगा बल्कितुझेजागीर और अधिकारदूंगातूउसेबतलादेकिजिसमेंमेरीजानबचे और मेरेसाथबहुत

लोगोंकीजान और प्रतिष्ठा बचजावेउसनेजोपहिलेकहा वहीबात फिर भीकही तबतो उसने बलसहित तीनतमाचे उसकेमारे जिससेनाक फटकर लोहू निकल आया बख्तियार मूरझाकरजमीनपरगिरगया थोड़ीदेरके पीछे चेतमें आयाऔरकहनेलगासेवकको मतमारिये मैं उसकोलियेआ-ताहूं आपका कहाकियेलाताहूं अल्कशनेकहा कि हेनादान पहिलेमैंने किस २ बातिसपूछातूने नमाननेके सिवाय स्वीकार न किया अबजबमार खाई यहबातजीभपरआईबख्तियारने कहा किउसने मुझसेमनाकरदिया था कि जबतक तीनतमाचे नखालेनातबतक मेरापताकिसीभांतिसेनदेना अल्कशने उसेको छातीसे लगाया औरकहाकिशीघ्र उसकोबुलालामैंतुझे अतिप्रसन्नकरूंगाऔरअगणितरत्नदूंगाबख्तियारनेबुजुरुज्जमेहरकेदरवाजे पर जाकर हांकदी बुजुरुज्जमेहर अतिशीघ्रसेबाहरआयाऔरसमाचार पूछकेउसकेसाथअल्कशकेसमीपगयाअल्कश बुजुरुज्जमेहरसे शिष्टाचार स-हित आगेआया और अगली बातोंकाउत्तरकरनेलगा औरकहाकिबाद-शाहएकस्वप्नदेखकरभूलगयाहैऔर हमकोनाहकसशोकाकररक्खाहैकह-ताहै कि मेराजो स्वप्न न बताओगेतोएक २ को मारूंगा सोआपकेसिवाय ऐसाकिसमेंबलहैकिअन्तष्करणकीबातबतायेहमारीस्त्रीऔरबच्चोंकेसंकटसे छुड़ाये जोइससमय कृपाकरके आप उसस्वप्नकोबतावेंतोमानों हमारेसब की जानछुड़ावें बुजुरुज्जमेहरने कहाकिमैंयहांतो न बताऊंगा किन्तुआप प्रातसमय बादशाहसे प्रार्थनाकरें कि मैंसरकारके हकीमों और बुद्धि-मानों व मंत्रियोंकीपरीक्षाकरताथाकियहभी कदाचितअन्तष्करणकीबात जाननेका ज्ञानरखतेहों सोजैसा यहलोग जानतेहैं मुझपर क्या दीनद-याल परभी प्रकाशितहोगयाइनकोचतुरताविदितहोगईऔरअनुचरका एकविद्यार्थीहै जोउससेकारबुलाकरपूछेंतोवहभीआपकास्वप्नबतलादेगा सबव्योरा समेत सुनादेगा जबबादशाह मुझेबोलावेगा मैंस्वप्नको वर्णनकर के उसका अभिप्राय विचारके कहदूंगा आपको प्रसन्नकरादूंगा सैकड़ों मनुष्योंकी जानबचालूंगा आपको बहुतसा अधिकार औरभी मिलैगा ॥

राजसभासे बुजुरुज्जमेहर करके बादशाहकेस्वप्नका वर्णन और उसके पिताके बदले अल्कशमंत्री का वधवृत्तान्त वर्णन ॥

कुण्डलिया ॥

गेहूंपैगेहूंजमै यवसेयव ह्वै जाय । बदला अपना छोड़जनि नहिंपाछे पछिताय ।
नहिंपाछे पछिताय समयसम एकनजैहैं । पहिलेहो पतझार फेरि कल्ली लगिऐहैं ॥
ग्रन्थकार कहे सत्य मानले मेरे बैना । दुख परने के बादि चैनपैहैं भरिनयना ॥

इससंसारमेंबदलासबकामिलताहैक्योंकिबहुधालोग कहावतकोकहते हैं कि कलियुगनहींकरयुगहैइसहाथसेदे उसहाथले और बदलातोइसी संसारमेंमिलजाताहै कदाचित् दैवयोगसे रहजावे तोउसे अन्तमें अवश्य

मिलताहै इसलिये मनुष्यकोउचितहैकिईश्वरकाध्यानकरै और क्षणभंगुर संसारकीसम्पतिकेलियेदुनियांमेंबदनामी न ले और परलोकको नबिगाड़े जैसेकि इसदुष्टअलक्षणने बुरेकामकरकेदुनियांऔर परलोकको बिगाड़ा है उसका वृत्तान्त लिखने वाले ठीक २ योंलिखतेहैं कि दूसरे दिन जो अलक्षणमंत्री बादशाहकी सेवामें प्राप्तहुआ और बुजुरुजमेहरका हाल प्रारम्भकियातोबादशाहनेआज्ञाकी किउसकोराजसभामेंशीघलाओयह सुनकर एकचोपदारने बुजुरुजमेहरसे जाकरकहा किचलिये बादशाहने आपको स्मर्ण कियाहै और बहुत शीघ बुलायाहै उसनेकहा किमेरेवास्ते सरकारसे क्या सवारी लायेहो तोमैं उसपर सवार हो बादशाह की चौखट चूमकर सभामें उपस्थित होऊं उसनेकहा किसवारीतो नहीं लाया उसीभांतिसे आयाथा क्योंकि सवारी के निमित्त सर्कार से कुछ आज्ञानहीं पाईथी मैंअबजाताहूं और सरकारके मंत्रियोंसेविनयकरके सवारी लाताहूं चोपदारने जाकरबिनतीकी कि बेसवारी वहनहींआसक्ताहै वहमनुष्य बड़े मनुष्यकालड़काहै आज्ञाहुईकिघोड़ा लेजावोउसे शीघलाओ जबघोड़ालेजाकरचोपदार आयातोबुजुरुजमेहरने कहाकि घोड़ेकी उत्पति वायुसेहै औरमैं मिट्टीसे बनाहूं विदितहै किमिट्टीऔर वायुसे परस्परविरोध अर्थात् एकदूसरेमें मिलनहीं सक्तेहैं इसकारणसे मैंतो घोड़ेपर सवार होकर कभी नजाऊंगा मेरे लायक़ सवारी लाओ तोमैं उसपर सवारहोकर चलूंगा बादशाहकी सभामें चोबदारने पहुंच करउसके कहेके अनुसार समाचार वर्णन किये बादशाहने उत्तर दिया किसब सवारियां लेजाओजिसपर उसकाचित्तचाहै सवारहो आवे बादशाहकीआज्ञानुसार सबप्रकारकीसवारियां तय्यारकीगईंऔरशीघ बुजुरुजमेहर के घर पहुंचीं बुजुरुजमेहर ने कहा कि हाथीपर तोमैं नचढ़ूंगाक्योंकि यह केवल सवारी बादशाहकी है इसपर सवारहोना बेअदबीहै मियाने पर बीमार चढ़तेहैं मैंबीमारभी नहींहूं औरनमतक जो चारकेकांधे जाऊं जीतेजी अपनेको मराहुआ बनाऊं प्रशंसा है उस ईश्वरकी मैं अच्छीभांति नीरोगहूं न मांदानसुस्तहूं औरऊंटफिरिस्ता स्वभावहै और मैं मनुष्यहूं इसपरसवारहोनेकी ताक़तनहीं और मुझमें ऐसी कुछ लियाक़त नहीं खंचर हरामज़ादा है औरमैंहलालज़ादाहूं मेरी सवारीके योग्य नहीं बैलपर वणिये और धोबी चढ़ते हैं मैं भले मनुष्यका लड़काहूं और मैं अपनेबुरे भलेसेबचा रहताहूं विचारकेद्वारा काम करताहूं गधेपर वहचढ़े जोभारी अपराध करै मैंतो बेअपराधहूं बादशाहकाछोटा प्रजाहूं इनसवारियोंको फेरलेजाओ और मेराकहा बादशाहको सुनाओ लाचार होकर जो सवारियां लोग लायेथे फेरले गये और बुजुरुजमेहरकी कहीहुई बात बादशाह से कही बादशाहने

कहाकि भलाउससे पूछो तो क्यासवारी मांगता है जोकहै वहभेज दी जावे उसका उपाय कियाजावै नौकरोंने जाकर बादशाहकी आज्ञा बुजुरुच्चमेहरको सुनाईउसनेकहा कि जोबादशाहस्वीकारकरैं औरस्वप्न सुननाअवश्यहोतो अलक्षश मंचीकी पीठपर जीनकसवाकर भेजदेंतोमैं अपनेमनकी सवारी पाकर उसपर सवार होकर सरकारमें आऊंऔर स्वप्नको भलीभांति से वर्णनकरूं दूसरे यहकि वहइकीसोंका गधाहैऔर उसपरसवारहोनादोषनहींमुझेउचितहैसभाके लोगोंकोयहवृत्तान्तसुन कर बड़ाआश्चर्यहुआऔरकहनेलगेयहमनुष्यकिसप्रकारकाचित्तवमस्त-क रखताहैऔरकिसप्रकारसेसाफउत्तरदेताहैबादशाहकीआज्ञामाननेमें लोग अपनेको बड़ाजानतेहैं तोकोईमंचीकेद्वाराआतातोभी उसकायह-सान मानतेहैं यहांतो बादशाह उसे आप बोलातेहैं वहकिस २ भांति काउत्तर देताहै या तो इसमनुष्यके मस्तकमें कुछउपद्रवहै याकोईबड़ा मनुष्यहै बादशाह यहसुनकर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहाकि अलक्षशकी पीठपर चारजामा खींचकरलेआओ बुजुरुच्चमेहरकोलेआओ आज्ञाकीदेरीथी अतिशीघ्र अलक्षशकी पीठपर जीन बांधकर मुहमेंलगाम दीगई और बुजुरुच्चमेहर के समीपलेजाकर उसके मनोर्थ को पूर्णकिया बुजुरुच्चमेहर अलक्षशकी पीठके ऊपर सवारहोकर एड़ैंमारमारकर कहा किउस ईश्वरकी प्रशंसाहै किआजमेरेपिता के वधिकको मेरेवशमेंकिया॥



बुजुरुच्चमेहर का अल्कशकी पीठपर सवारहोना और देखनेवालोंका उनकेसाथ जाना॥

मार्ग के मध्यमें जिसने देखा लड़का युवा वृद्ध हर एक उसके साथ हो लिया जब बादशाहके समीप आया बादशाहने उसकी अति प्रतिष्ठाकी और अच्छा आसन दिया फिर पूछा कि अलक्षश ने तेरे साथ क्या अप-राध कियाहै जिसकारणसे तूने उसके साथ इस प्रकार किया बुजुरुच्चमे-हरने कहा कि प्रथमतो इसने बड़ा कपट कियाहै और आपसा दयाल मालिक पाकर छलका मार्ग लियाहै और चोरीभी इसने भारी की है इसको किंचित्माच डर न आया किजो मेरी चोरी विदित होजाय गीतो इसकाअंत क्या होगा और कौनभांति से बादशाह मुझपर क्रोध करैगा जीताछुआ पृथ्वी मेंगाड़ा जाऊंगा और कौनगति मेरीहोगीयह चोरीकैसी खराबी देखावैगी दूसरीयहबातहै कि यद्यपि इसने मेरेपिता सेरमलकी विद्यापढ़ीऔर उसका विद्यार्थीथाऔर उसने इसकेसाथअति स्नेहकिया और सबप्रकारसे ज्ञान व गुण व विद्याका दिखाया जोइसका बाधक होतातो इस प्रकारसे कभी इसको न सिखाता और मेरा पिता

इसकीओरसे अपनाचित्त प्रसन्नऔरस्वच्छऔर गुरूके समान सिखानेमें रखताथाऔरअपनीसंतानसेइसदुष्टकेसाथअधिकस्नेहरखताथाऔरकोई समाचार भला बुरा इससे छिपा न रखताथा औरकोईवस्तु इससेबाहर नहीं रखताथा सातढेर द्रव्यके गाड़ेहुये सहादके थे उसेमिलेथे आपने नहींलिया और मिचताके कारणइसको बतादियाएककौड़ीभीउसमेंसेन ली सकलद्रव्यइसे सौंपदियाइसनेइसडरसे कि कदाचित्यहबातकिसीसे कहदे औरहोते २ आप परभी विदितहोजावे तो येसातोंढेर मेरेहाथसे जातेरहैं और सहजही दूसरेको मिलजावें उस बेअपराधको मारकर उसी कोठरीमें गाड़दिया कुछ भी ईश्वर और बड़ेबूढ़ोंकाडर मनमें न लाया औरबे अपराध अपनीगर्दन पर अपराध लिया और अभी उसी स्थानमें उसकीमिट्टी पड़ीहै कंकड़ पत्थरकेतले कुछतुपीहैयहनहींजाना कि बे अपराधका अपराध पुकारता फिरैगा नये २ भांतिके रंग देखाकर संसारमें जहां पानी न मिलैगावहां मारैगासो इसकारणसेमैंदीनदयाल सर्वकृपालसे आशरखताहूं कि मैं अपनेन्यायका पक्षचूं जोआप मेरा न्याय अपने न्यायशालामेंन करैंगे तो ईश्वर सर्वव्यापीहैवह न्यायआपसे मांगेगा जिससमय मैं उससेमांगूंगा उससमय आपभी पूंछेजांयगे इस कामकेनिमित्तबदलेकेहेत आप बुलाये जावेंगे तब उसकेसामने क्याउत्तर दीजियेगा जब आपसे पूंछेगातबकिसभांतिसेतरियेगा जब बादशाहनेयह समाचार पायाअत्यंत क्रोधवशहोकरअलकशमंचीकीओरदेखाऔरकहा यह क्या कहताहैइसके पिताने तेरेसाथ क्याअपराधकियाथा जिसपरतैंने उसे मारडाला और उसके लड़केको मुरहा और स्त्रीको रांडकरडाला मेरा क्या तैंने ईश्वरकाभी कुछडर न किया यह न शोचा कि मैंइससमय नाहक अपराध करताहूं अन्तकोयहपाप रंगप्रकट करैगा मुझेअतिद ख दिलावैगा सचहै उसनेतेरेसाथ ऐसीही बदीकीथी कि जिसकेबदले तूने उसको इसभांतिका कष्टदिया जो वह रमलकीविद्या न पढ़ाता तो ॥

दोहा ॥

बाणावरी सिखायदी बिबिधि भांति गुणजाहि । अन्त निशाना कीनमोहिं निजमनमें हर्षाहि ॥

निशानामृत्युकतीरकाक्योंबनताजो वह सातढेर द्रव्यकेजो किईश्वरने दीथी तुझे न दिखाता तो उसकाभोग क्योंचढ़तासचहै ॥

सोरठा ॥

बदकी बदी न जाय नेकीजो बातें करै । तासोंबदी समाय यह चरिचहे खलनको ॥

किन्तु देखतू इसका बदला कैसाधाता सोधा अभय रसातलको जाताहै और इस समाचारको तैंने राजसभामें प्रकट न कियायहभीबड़ा अपराधकिया और न्यायकापाप तूने अपने शिरपर लियाअलकशने कहा कि सरकार यह झूंठ मुझे अपराध लगाताहैऔर सहजही मुझेलिये म-

रताहै बुजुरुचमेहर ने कहा कि यहीगेंद मैदान है हाथकंगनको आरसी क्याहै कुछमनुष्य मेरेसाथचलें मैं अपनेदावाको ठीक करदूंगा इसझूंठेको दरवाजेतक पहुंचाऊंगा बादशाह आप नौकरोंसमेत उस स्थानकीओर जहां खाजेनमाल माराहुआ पड़ाथा चला बुजुरुचमेहरके साथहोलिया और आज्ञाकी कि अलकशकोभीबेड़िया पहिनाकर पैदलकेसमान शीघ्र दौड़ालाओ इस चरित्रकोदेखकर सबनगरमें हलचल पड़गया सबमनुष्य इस समाचारके देखनेकेनिमित्त दौड़े कोई ईश्वरका क्रोध जानकर बचने काशब्दजीभपरलायाकोईमनुष्य यहकहताथाकिऐसेशीलवाले मनुष्यको इसने अपराधबिना माराहै सैकड़ोंगालियां देनेलगे और भलाबुराकहने लगे कोईकहताथा बदीकाफल बदीहोताहै बुरेकामका बदला कभी न कभी मिलताहै कोई उसकीबुरीदशा देखकर उसपर शोककरनेलगाथा खुलासायहहै कि सकल नौकर व देखनेवालोंसहित यत्नसमेत उसको बाग़के दरवाजेतकलाये जिससमय अन्यायबागमें पहुंचे बुजुरुचमेहर बादशाहको उस तहखानेमें लेगया और उसीस्थानका पतादिया देखातो सत्य सातढेर द्रव्यके उसतहखानेमेंभलीभांतिरक्खेहैं औरएकओरमिट्टी खाजेनमालकी पड़ीहुईहै परंतु सखगईहै औरमाराजाना बेदोषउसके शरीरपर विदितहै और घोड़ाभी मतक पड़ाहै और खाल व हड्डी सब सूखगईहैं काठकेसमान होगयाहै बादशाह वह अधिक द्रव्यदेखकर छत छत्यहुआ और आज्ञाकी कि इसीसमय इसद्रव्यको हमारे खजाने में पहुंचावो सुशीलतासे हमारेकोठोंमें भरदो उनकीआज्ञानुसारकाम कियागया ॥

चौपाई॥

संपति जहंअति तहंचलिजाही । यह वृत्तान्त बिदित जगमाही ॥

और बुजुरुचमेहरका कहा सत्यजाना और खाजेकीलाशनिकालकर बहुत धूमधामसे साजकर कबरमें रखवादी और उसस्थानमेंएकसुकबरा बनादिया इसकेपीछे अलकशसे बदलालेने औरअपनेपिताकीक्रियाकरने को चाहताथा अर्थात् फातिहाआदि अपने दीनके अनुसार करनेकेनिमित्त चाहा इसकारण बादशाहने समझ और जानकर उसेचालीस दिवसकी छुट्टी कृपाकी और अपने कोषसे सहस्रों रुपयादेकर बिदा किया बुजुरुचमेहर उनरुपयोंको हाथियोंपर लदवाकरघरमेंलायाऔर कृपाशालिनी माताकेसामने रखवादिये और तमाम वृत्तांत वर्णनकिया और चेहलम करनेके शोचमेंरहा सब प्रकारकेलोग जो बादशाहकी न्यायशालामें कामकरतेथे नई सरकारको देखकर जमाहुये औरमित्र तथास्नेही व कुटुम्ब परिवारकेलोगअधिकप्रतापहोना सुनकरप्रीतिपूर्वक सबइकट्ठे हुयेऔरखानेकोसामग्रीहोनेलगीऔरप्रतिदिन खानाबटनेलगा

और अनेकमार्गोंमेंभी बांटने के निमित्त खानाभेजागया जब मित्रों और कुटुम्बवालोंमें अच्छेप्रकारसे शिष्टाचार करचुके उसमयय भिक्षुकआदि प्रजाकोबारी आई इसी प्रकारसे चालीसदिवस तक बराबर पुण्यकरता रहा चालसीका व्योहार करचुका और सबभांतिके रसम निबाह दिये तिसपीछे बुजुरुजमेहर बादशाहके समीपगया मातमपुरसीकी अर्थात् शोककरनेकीखिलअतपाईऔर अपनेन्यायशालामें रहनेकेनिमित्तबादशाहकीआज्ञाहुईएकदिवसअवसरपाकर विनयकीकिजोप्रभुकीआज्ञाहो तोउसस्वप्नकोकहूं आपकेसमीपसत्यठहरूं कहाकिसबसेउत्तमजामेरास्वप्नसचबतावोगेतोबहुतकुछपावोगे मेरासन्देहदूरहो जावेगाचित्तद्विविधारहितहोगाबुजुरुजमेहरनेविनयकीकिआपनेयहस्वप्न देखाथा किदस्तरखान बिछाहै उसपर भांति २ के इकतालीस व्यंजनकेपाच खानेकेरक्खेहैं आपने एकफलुआकेपाचमेंसे कौलतोड़करचाहाकिभोजनकरें इससे एककुत्ताकालेरंगकाआया औरवहकौलआपकेकरसेछीनलिया औरवहांसेभागगया आपडरकरचौंकपड़े औरइसस्वप्नकोभूलगये बादशाहनेकहाकिमैंसौगन्ध खाताहूं कियहीस्वप्नमैंनेदेखाथा औरसत्यहैमेराखप्नयहीथा हांअबइसका बिचारकर मेरेसामनेवर्णनकरो बुजुरुजमेहरनेकहाकिसेवकको अपनेधाम मेंलेचलिये औरसबस्त्रियोंको जमाकीजिये उससमयइसस्वप्नका बिचारकहूंगा और सच २ समाचार सुनाहूंगा बादशाह बुजुरुजमेहरका साथलेकरमहलमेंगया औरस्त्रियोंकोबोलाया सबबादशाहकीआज्ञानुसारएक स्थानमें आईं तदनन्तर एकयुवती अतिनागर परमउजागर स्वरूपकीआगरसाजपहिने परी समान प्रकाशवान मृगनैनी मदुबैनी गजगामिनी सिंहकटिभामिनी लौंड़ियांसाथ मेंहँदोहाथमें आसपास टहलुई बीचमें हुईनईचालढालसेउपस्थितहुई लौंडियोंके साथएक श्वशिनभीदृष्टिपड़ी बुजुरुजमेहरनेउसकाहाथपकड़केविनयकीकियहबड़ीकुत्ताकालाहैजिसने आपकेहाथसेकौलछीनलियाथाऔरवहकौलवहशाहजादीहैजोआपसा बादशाहस्वरूपवानपाकरफिरछोड़करइसदुष्टकेसाथबिलासकररहीहैबादशाहआश्चर्यमानकर उसेदेखातोबिदितहुआ किसत्यवहस्त्रीनहींमर्दहै स्त्री केबानामें शाहजादी के साथरहाकरताथा रातदिन आनन्दसहित निडरबिहार कियाकरताथा बादशाहको इसवृत्तान्तके मालूम होनेसे अत्यन्तक्रोधउत्पन्नहुआ औरसबद्वारपालपकड़ेगये औरखासकरइसद्वार पालको अतिकष्टदियागया और बादशाहकीआज्ञासे उसीसमय श्वशुरी कुत्तोंकरकेकटायागया और उसशाहजादीको प्रथमतो गधेपर चढ़ाकर सकलनगरमेंघुमाया तदनन्तरमीनारमेंरखकर चुनवादिया औरबुजुरुजमेहरकोबड़ाईकी खिलअतहुपाकी अलकशको उसीसमयबाहरभेजवाकर और सबकोदेखाकर एकस्थानमें गड़वादिया परन्तु ऊपरकाधड़खुलारु

क्खा और तीरन्दाजोंसे निशानालगवाया और अल्कशकीधनसम्पतिस्त्री पुत्रोंसमेत बुजुरुचमेहरकोदेदी लाखोंरुपयेका धन कहांसे कहांआया बुजुरुचमेहर नजरदेकर वहांसेछुट्टीलेकर और बख्तियारसेवककोसाथले अल्कशमंचीकेघरमेंगया उसकीस्त्रीसेकहा किमुझेइसधनसम्पतिसेकुछकाम नहींहैऐसाधनलेकरकोईक्या करैतुझीकोसुबारकरहैपरंतुमैंनेबख्तियारसे बचनकियाथा किअपनेबापका बदलालेनेकेपीछे तेराबिवाह अल्कशकी लड़कीकेसाथकरादूंगा औरतेरामनोर्थपूर्णकरूंगासोतूअबमेरीखातिरसे इसकेसाथअपनीदुहिताब्याहदे औरइसकीमनोकामनापूर्णकरदेऔरतुझे भीबचनदेताहूं किजातेरीबेटीकेपेटसे बख्तियारकाजोपुत्रउत्पन्नहोगातो उसेमै पढ़ाऊंगी और जबवह चैतन्यहोगा उससमय अल्कशके अधिकार बादशाहसेदिलादूंगा अल्कशकीस्त्रीनेविनयकीकिमुझेआपकेमनोर्थमेंकुछ उजुरनहींहै मैंआपकीदासीतुल्यहूं आपजिसपरप्रसन्नहों मैंउसपरराजी हूं वहआपकीदासीहै जिसकोइच्छाहो देदीजियेमैं अतिआनन्दपाऊंगी खुलासायहहै किअल्कशकीस्त्रीनेबुजुरुचमेहरकी आज्ञानुसारअपनीबेटी का बिवाहबख्तियार इबशीसेकरदिया बुजुरुचमेहर का कहनास्वीकार कियाजिससमय बादशाहने यहसुना तोबुजुरुचमेहरकी बुद्धिमानी और शीलताऔरनिर्लोभतादेखकर आश्चर्यमानाऔर फिरकईदिनपीछेजिस समयमंची और बुद्धिमान् और हकीम व पहलवान आदि न्यायशालामें आयेकहा कि बुजुरुचमेहर अपने घरानेमें बड़ा अच्छामनुष्यहै और भले अच्छेमनुष्यकापुत्रहै औरउसकेसमान हिम्मतमेंदूसरानहींहैखाजेवख्तज-मालकाबेटा हकीमलामासका पौत्रहै औरविद्यामें अपनासा दूसरानहीं रखताहै और धर्म कर्ममें अतिचतुरहै ऐसा मनुष्य कम देखनेमें आयाहै देखो अल्कश कुकर्मी अधर्मीने कैसीदुष्टताकी जोमैंनेसम्पत्ति उसकोक्षपा कीथीउसनेउसकीस्त्रीऔरबेटीकोदेदीएककौड़ीतकउसमेंसेउसनेनलीव्या करण वज्योतिषरमल गणितइत्यादि सबप्रकारकी विद्याओंमेंअतिनिपुण हैइसकोछोड़उदार वीरोजप्रबन्धमें चतुरपहलवानी सुशीलता औरशुभ स्वरूपमेंभी अतिशोभितहै औरसत्य और मृदुबोलताहै इसभांतिका म-नुष्यदेखनेमें नहींआयाहै बल्कि ढूंढनेसे ऐसासर्वगुणी नहींमिलसक्ताहै और अन्तर्यामी भीहै इसके पहिले हमारे राज्यमें जितने मंचीथे अबुध और राज्य प्रबंधमें आलसीथे इसकारण से इसको मैं अपना मंचीबनाकर प्रधानताकी खिलअत इसेदूंगा सभाकेरहनेवालोंने बादशाहकी बुद्धिकी प्रशंसाकी औरकहाकिसत्यहै इसगुण का क्याकोई दावाकरसकैआपकी बुद्धिमानीवर्णनकरनेसे बयाननहींहोसक्तीहै इहकामकोजोआपनेकहाहै उसे कृपादृष्टिसे शीघ्र करडालिये हमसबको भीयहीआशहै कि बुजुरुच-मेहरको अधिकअधिकार दियाजावे बादशाहने उसीसमय बुजुरुचमेहर

कोमंचीकी खिलअतदी और दाहिनी ओर कुरसीपर बैठने को तख्तके समीपआज्ञादीफिरथोड़ी देरकेपीछे कचहरीबरखास्तहुई बुजुरुजमेहर अतिहर्षसे अपनेघर में आया और पारितोषिक आदि बटनेलगा उसकी माता देखकर ईश्वरको नमस्कार करके प्रशंसा करनेलगी बुजुरुजमेहर राज्य प्रबन्धको विचारकेद्वारा करनेलगा॥

बादशाह करके अति स्वरूपवती दिलाराम नामस्त्री का निकालना और फिर उसके स्वीकार का वर्णन ॥

आकाशबाजीगरमनुष्योंकोकिस २ भांतिसेफिराताहैऔरमायाजादूगरनीकैसेरूपदिखातीहै कभीफकीरकोबादशाह औरकभीबादशाहको यतीकरदेतीहैऔरजिन्हैंसूखीरोटीतकनहींमिलतीवहसहस्रोंमनुष्योंको भोजनदेतेहैंजोएक एककौड़ीकेकंगालथे उनकोधनसम्पति अत्यन्तबढ़ातेहैं इसवृत्तान्तकेअनुसारयहइतिहास एकयतीका वर्णनकरतेहैं किबादशाह को उसस्त्री चञ्चल चपलकी चालसे सबस्त्रियोंका विश्वास जातारहादिलारामके सिवा किवहअतिस्वरूपवान और गाने व बजाने आदिमेंअति चतुरथी बादशाहके निकट कोईस्त्री आनेनपातीथीऔर कदाचित्किसी स्त्रीका सामना दैवयोगसे होगया तोबादशाह क्रोधवानहो उसेअधिक दण्डदेताथा एकदिन बादशाह आखेटको गयाबाज,जुर्रे,बहरी,लगाड़भगड़, बेसराफाड़ी, पाखबहरी, बच्चासिकरा, बाशातिर्मुती आदिवधिकारीकुत्ते चीतेस्याह गोशकरौल इत्यादिका समूह का समूह साथबादशाहके चलेराजके समीप एकपहाड़ आसमानकेसमानऊंचाअतिरमणीक स्थानकहीं कहींफूल लगेहुये और मनोहर भूमिदेखनेमें आई किसीओर अति लम्बेसोधे वृक्षसोहायमानथेकिसीओरबेलीआधीनसे शिरपृथ्वीपर रक्खेहुये और उसकेखोहमें एकआखेटको जगहअति आनन्द दायकथी औरभांति२ केफूलोंकोसुगन्धकारहीथीऔरवृक्षअतिहरे लहलहा रहेथे औरशिकारहूसभांतिसेथेकिगिननेमेंनआसकेकाजकुंग सुरखाब मुरगाबी सारस आदि अगणितहूस्क छोड़ एक ओर मैदानमें मृग,चीतल,पाढेवा बारासिंगे,पसीन,घोड़ारोज,चिकारी,भांति २ के पशुपक्षियोंकीअधिकता थीऔरकोशोंतकघासलहसुनियाकी भांतिजमीथी औरपानीकीनहरेंचारों ओरसे बहतीथीं कहींनदीकहींसोतेकहींसरवरबहतेथेएकओर महा नदलहरें आनन्दमयी लेरहाथा जिसकाफाट व जलनिर्मल और बहुत पवित्रथा और उसीके कनारेपर हरेहरे धानोंकेखेत लहलहा रहेथ और कहीं २ फूलफूल रहेथे बादशाह यहसमाचार देखकर नदके समीप उतरपड़ा दैवयोगसे एकमनुष्य वृद्धलकड़ियों का गट्ठाशिरपर धरेहुयेवन की ओरसे आताहुआ दृष्टिपड़ा अत्यन्तवृद्धहोगयाथापैरधरनेसेकांपरहे

क्खा और तीरन्दाजोंसे निशानालगवाया और अलक्षकीधनसम्पतिस्त्री पुत्रोंसमेत बुजुरुच्चमेहरकोदेदी लाखोंरुपयेका धन कहांसे कहांआया बुजुरुच्चमेहर नजरदेकर वहांसेछुट्टीलेकर और बख्तियारसेवककोसाथले अलक्षमंचीकेघरमेंगया उसकीस्त्रीसेकहा किमुझेइसधनसम्पतिसेकुछकाम नहींहैऐसाधनलेकरकोईक्या करैतुझीकोसुबारकरहैपरंतुमैंनेबख्तियारसे बचनकियाथा किअपनेबापका बदलालेनेकेपीछे तेराबिवाह अलक्षकी लड़कीकेसाथकरादूंगा औरतेरामनोर्थपूर्णकरूंगासोतूअबमेरीखातिरसे इसकेसाथअपनोदुहिताब्याहदे औरइसकीमनोकामनापूर्णकरदेऔरतुझे भीबचनदेताहूं किजातेरीबेटीकेपेटसे बख्तियारकाजोपुत्रउत्पन्नहोगातो उसेमै पढ़ाऊंगी और जबवह चैतन्यहोगा उससमय अलक्षके अधिकार बादशाहसेदिलादूंगा अलक्षकीस्त्रीनेविनयकीकिमुझेआपकेमनोर्थमेंकुछ उजुरनहींहै मैंआपकीदासीतुल्यहूं आपजिसपरप्रसन्नहों मैंउसपरराजी हूं वहआपकीदासीहै जिसकोइच्छाहो देदीजिये मैं अतिआनन्दपाऊंगी खुलासायहहै किअलक्षकीस्त्रीनेबुजुरुच्चमेहरकी आज्ञानुसारअपनीबेटी का बिवाहबख्तियार इबशीसेकरदिया बुजुरुच्चमेहर का कहनास्वीकार कियाजिससमय बादशाहने यहसुना तोबुजुरुच्चमेहरकी बुद्धिमानी और शीलताऔरनिर्लोभतादेखकर आश्चर्यमानाऔर फिरकईदिनपीछेजिस समयमंची और बुद्धिमान् और हकीम व पहलवान आदि न्यायशालामें आयेकहा कि बुजुरुच्चमेहर अपने घरानेमें बड़ा अच्छामनुष्यहै और भले अच्छेमनुष्यकापुत्रहै औरउसकेसमान हिम्मतमेंदूसरानहींहैखाजेबख्तज-मालकाबेटा हकीमलामासका पौत्रहै औरविद्यामें अपनासा दूसरानहीं रखताहै और धर्म कर्ममें अतिचतुरहै ऐसा मनुष्य कम देखनेमें आयाहै देखो अलक्षष कुकर्मी अधर्मीने कैसीदुष्टताकी जोमैंनेसम्पत्ति उसकोक्षपा कीथीउसनेउसकीस्त्रीऔरबेटीकोदेदीएककौड़ीतकउसमेंसेउसनेनलीव्या करण वज्योतिषरमल गणितइत्यादि सबप्रकारकी विद्याओंमेंअतिनिपुण हैइसकोछोड़उदार वीराजप्रबन्धमें चतुरपहलवानी सुशीलता औरशुभ स्वरूपमेंभी अतिशोभितहै औरसत्य और मृदुबोलताहै इसभांतिका म-नुष्यदेखनेमें नहींआयाहै बल्कि ढूंढनेसे ऐसासर्वगुणी नहींमिलसक्ताहै और अन्तर्यामी भीहै इसके पहिले हमारे राज्यमें जितने मंचीथे अबुध और राज्य प्रबंधमें आलसीथे इसकारण से इसको मैं अपना मंचीबनाकर प्रधानताकी खिलअत इसेदूंगा सभाकेरहनेवालोंने बादशाहकी बुद्धिकी प्रशंसाकी औरकहाकिसत्यहै इसगुण का क्याकोई दावाकरसकैआपकी बुद्धिमानीवर्णनकरनेसे बयाननहींहोसक्तीहै इहकामकोजोआपनेकहाहै उसे कृपादृष्टिसे शीघ्र करडालिये हमसबको भीयहीआशहै कि बुजुरुच्च-मेहरको अधिकअधिकार दियाजावे बादशाहने उसीसमय बुजुरुच्चमेहर

कोमंचीकी खिलअतदी और दाहिनी ओर कुरसीपर बैठने को तख्तके समीपआज्ञादीफिरघोड़ी देरकेपीछे कचहरीबरखास्तहुई बुजुरुजमेहर अतिहर्षसे अपनेघर में आया और पारितोषिक आदि बटनेलगा उसकी माता देखकर ईश्वरको नमस्कार करके प्रशंसा करनेलगी बुजुरुजमेहर राज्य प्रबन्धको विचारकेद्वारा करनेलगा॥

बादशाह करके अति स्वरूपवती दिलाराम नामस्त्री का निकालना और फिर उसके स्वीकार का वर्णन ॥

आकाशवाणीगरमनुष्योंकोकिस २ भांतिसेफिराताहैऔरमायाजादूगरनीकैसेरूपदिखातीहै कभीफकीरकोबादशाह औरकभीबादशाहको यतीकरदेतीहैऔरजिन्हैंसूखीरोटीतकनहींमिलतीवहसहस्रोंमनुष्योंको भोजनदेतेहैंजोएक एककौड़ीकेकंगालथे उनकोधनसम्पतिअत्यन्तबढ़ातेहैं इसवृत्तान्तकेअनुसारयहइतिहास एकयतीका वर्णनकरतेहैं किबादशाह को उसस्त्री चञ्चल चपलकी चालसे सबस्त्रियोंका बिश्वास जातारहादिलारामके सिवा किवहअतिस्वरूपवान और गाने व बजाने आदिमेंअति चतुरथी बादशाहके निकट कोईस्त्री आनेनपातीथीऔर कदाचित्किसी स्त्रीका सामना दैवयोगसे होगया तोबादशाह क्रोधवानहो उसेअधिक दण्डदेताथा एकदिन बादशाह आखेटको गयाबाज,जुर्रे,बहरी,लगाड़भगड़, बेसरापहाड़ी, पाहबहरी, बच्चासिकरा, बाघातिर्मुती आदिवशिकारीकुत्ते चीतेस्याह गोशकरौल इत्यादिका समूह का समूह साथबादशाहके चलेराजके समीप एकपहाड़ आसमानकेसमानऊंचाअतिरमणीक स्थानकहीं कहींफूल लगेहुये और मनोहरभूमिदेखनेमें आई किसीओर अति लम्बेसोधे वृक्षसोहायमानथेकिसीओरबेलीआधीनसे शिरपृथ्वीपर रक्खेहुये और उसकेखोहमें एकआखेटकी जगहअति आनन्द दायकथी औरभांति२ केफूलोंकीसुगन्धछारहीथीऔरवृक्षअतिहरे लहलहा रहेथे औरशिकारइसभांतिसेथेकिगिननेमेंनआसकेकाजकुंग सुरखाब मुरगाबी सारस आदि अगणितइसक छोड़ एक ओर मैदानमें हग,चीतल,पाढेवा बारासिंगे,पसीन,घोड़ारोज,चिकारी,भांति २ के पशुपक्षियोंकीअधिकता थीऔरकोशोंतकघासलहसुनियाकी भांतिजमीथी औरपानीकीनहरेंचारों ओरसे बहतीथीं कहींनदीकहींसोतेकहींसरवरबहतेथेएकओर महा नदलहरें आनन्दमयी लेरहाथा जिसकाफाट व जलनिर्मल और बहुत पवित्रथा और उसीके कनारेपर हरेहरे धानोंकेखेत लहलहा रहेथ और कहीं २ फूलफूल रहेथे बादशाह यहसमाचार देखकर नदके समीप उतरपड़ा दैवयोगसे एकमनुष्य हड्डलकड़ियों का गट्ठाशिरपर धरेहुयेवन की ओरसे आताहुआ दृष्टिपड़ा अत्यन्तवृद्धहोगयाथापैरधरनेसेकांपरहे

था मार्गमें अच्छीभांतिसेचला न जाताथा बादशाहउसकेऊपर दयालुहो-कर कहनेलगा कि पूछोइसलकड़िहारेका क्या नामहै इसकाघर कहांहै पूछागया ताजाना कि नामइसदीन का कबादहै कुसमयके हाथोंसेअति दुखितहो रहाहै बादशाह अपने नामकेमनुष्यको देखकर अतिआश्चर्य मानकर बजुरुच्चमेहरसे पूछाकि देखातो हमारे और इसकेभाग्यमें क्या भेदहै यद्यपि एकराशिहोनेसे मैं तो सातोद्वीपोंका बादशाहहूं और यह भिखारीहै बुजुरुच्चमेहरने रीतिकेअनुसार देखकर विनयकी कि आपकी और इसकीराशितोएकहीहैऔरग्रहभीएकहैंपरन्तुआपकेउत्पन्नहोनेके समय चंद्र सूर्यऔरस्थानपरथेऔरइसकेपैदाहोनेकेऔसर वेदोनोंमीनग्रह मेंथे यहसुनकर दिलारामस्त्री ने इसभांतिसेकहा कि मैंइसकाप्रमाणनहीं मानताइननच्चोंकोकुछनहीं जानतीमुझेजानपड़ताहैकिइसकीस्त्रीकुबुद्धि है और यहमनुष्यभोलाहै नहींतोइसगतिकोनप्राप्तहोताऔर इसकायह समाचारनहोतातोइसकष्टमेंअपनीअवस्थान खोता बादशाह तोस्त्रियोंकी ओरसेशोकमयअप्रसन्नरहताहीथादिलारामकीयहबातअतिबुरीजान-पड़ीइसकेकहनेसेजानाजाताहैकिहमारीसम्पत्तिइसीके हेतकरकहै और सबधनव सामग्री इसीसेहै क्रोधितहो बादशाहनेकहा किइसकाभूषणयहीं उतारकेइसेलकड़िहारेकोदोतुरन्तहमारीदृष्टिसेइसनिर्लज्जकोदूरकरो आज्ञाहोतेही वहलकड़हारे को सोंपदीगई सहस्रोंमनुष्योंकेमध्यमेंअति शोकमें ग्रसितहुई दिलारामनेईश्वरकीकृतज्ञयानकरलकड़हारेसेकहा कि मुझे अपने घरकालेचल भगवानने तुझपर दयाकी किमुझसी स्त्रीको तुझेदिलाया ईश्वरका धन्यवादकरकि कष्टकेदिन दूरहुये इसकाशोच न करना किमुझेरोटीदेनीहोगी किइसअवस्थामेंऔरविपत्ति सिरपरलेनी पड़ैगी मैंऔर हजारोंको भोजनदूंगी तेरानाम प्रसिद्धकरूंगी इनवचनों का सुनकर वहदुःखमनुष्य अत्यन्त प्रसन्नहुआ अपनेसाथउसकोघरलेचला जबघरके निकटगया ताउसकी स्त्रीनेदेखा कि बुड्ढा आजनया परिच लाया और यहएक नयाफूल बनमेंफूला एकस्त्री अतिकोमल युवती अरू-पवतीलिये आताहै क्या बुढ़ापालगाहै किमुझपर इसअवस्थामें दूसरी सौतलायाहै यहवचन कहकर बड़ेबलसे दोथप्परमारे जिससेबूढ़ा भूमिपर गिरपड़ा लोटन कबूतरकी भांति लोटने लगा दिलारामने उससी से यहकहा ॥

चौपाई ॥

आप क्रोधकिमि उसमें लीन्हा । तवपति पितासरिस मैं चीन्हा ॥
कछु अपने उरजनि घवराहू । नहिं पुनिशोच पोच पछिताहू ॥

ऐबीबी सुलक्षणीपरी विलक्षणी इसनातेसेआपमेरीदयाशालिनिमाता के समानहुई अपने लड़को में मुझेभी जानो मुझे अपने हाथसे रोटीउठा

कर दीजिये मैंखाने पीनेका दुख न होने दूंगी बल्कि और आपकीसेवा करूंगी उस बुढ़िया को दिलारामकी बातों पर दया आई और अपने कहनेपर लज्जितहोकर कहाकि बीबी मैंराज़ीहूं सहित घरबार आपका है मुझेभी जो हाथ उठाकर देदोगी तुम्हारी सेवा किया करूंगी और यह उसका मामूल था किदिनभर लकड़ियां सदा बीनकर संध्यासमय बेचकर बाज़ारसे रोटियां मोललेकर घरमेंआता और बारह तेरहलड़के लूलेलँगड़े अपाहिज उसे लिपटजाते और रोटियां लेकर परस्पर बांटकर खाजाते थे परन्तु पेट संतुष्ट कभी न होताथा भूखेरहते थे यह दीनता और कष्ट सहते थे एक दिनतो दिलाराम यह समाचार देखकर चुप होरही दूसरे दिन न रहागया उस लकड़िहारेसे कहाकि बाबाजान आज तुम लकड़ियां बेचकर गेहूं मोललाना बाजारकी रोटियां किसी भांतिसे न लाना उसने कहाकि अच्छाबेटा आजऐसाही करूंगा तुम्हें गेहूं लादूंगा उसदिन लकड़ियां बेचकर वह गेहूं लाया दिलारामकेसामने वैसेही पहुंचाया दिलाराम लेजाकर पीसलाई और रोटी उसकी बनाकर सबको क्षुधाभर खिलाई वहसब उसका धन्यवाद करनेलगेऔर उसके प्रतापसे सब चैन करने लगे जोदो दिवस के पैसे बचेछबे थे उसकी ऊन मँगाकर उसकी डोरियां बटकर उसबूढ़ेको सौंपदींकि इसेबाज़ार में लेजाओ उचित मोलपर बेचलाना फिर इसीरीतिका बरतावकरती रही कि कई दिवसकी गेहूं इकट्ठा करके एकदिन उसकी ऊन बदलाई और उसकी डोरियां बटकर बाज़ारसे बिकवा मँगवाई होते होते थोड़े दिवसमें कुछ रुपया जमाकरके खच्चर मोल लेकर उस टहलूको दियाकि इसपर लकड़ियां लादलायाकरो इस बुढ़ापेमें कष्ट न सहो लकड़ियां भी अधिक आवेंगी और तुमभी सुख पाओगे और जो बचेंगी वहघरमें जलजांयगी निदान इसी भांतिसे दोवर्षके समयमें धीरे २ चार खच्चर और कई टहलुये दिलारामने मोललिये और उसके केराये से कुछअसबाब और मकानात भी मोललिये उस टहलूके घरकी सूरत बदलगई दरिद्र दूरहुआ भाग्य उदयहुई लड़केवाले अतिप्रसन्न और मियांकी भीसूरत रंगबदलीदेखकर अति प्रसन्नतासे आनन्दमयहुये और जब वर्षाकी ऋतु आई दिलारामने कहा कि इसऋतुभर टहलुओंको खच्चर समेत अपने साथ लेजाकर लकड़ियां बनसे बाज़ारमें बेचने को न लायाकरो वहीं पहाड़की गुफामें एकट्ठाकर आयाकरो जाड़े औरवर्षामें अधिकमोलसे बिकेंगी कुछ न कुछलाभ प्राप्त होरहैगा उस टहलमनुष्यने वैसाही किया जिस भांति दिलारामने कहा जब वर्षा व्यतीत होनेलगी और जाड़ेकी ऋतुआईऔरलकड़ियोंका खर्चस्नानआदिकमेंहोनेलगाऋतुकारंगबदलगाया शरदी ने अपना आगमन जनाया बादशाह उसी पर्व्वत परफिर आखेट खेलनेको आया दैवयोगसे दूसरेदिन रात्रिको ऐसी बर्फपड़ी कि

था मार्गमें अच्छीभांतिसेचला न जाताथा बादशाहउसकेऊपर दयालहो-कर कहनेलगा कि पूछोइसलकड़िहारेका क्या नामहै इसकाघर कहांहै पूछागया ताजाना कि नामइसदीन का कबादहै कुसमयके हाथोंसेअति दुखितहो रहाहै बादशाह अपने नामकेमनुष्यको देखकर अतिआश्चर्य मानकर बुजुरुचमेहरसे पूंछाकि देखातो हमारे और इसकेभाग्यमें क्या भेदहै यद्यपि एकराशिहोनेसे मैं तो सातोद्वीपोंका बादशाहहूं और यह भिखारीहै बुजुरुचमेहरने रीतिकेअनुसार देखकर विनयकी कि आपकी और इसकीराशितोएकहीहैऔरग्रहभीएकहैंपरन्तुआपकेउत्पन्नहोनेके समय चंद्र सूर्यऔरस्थानपरथेऔरइसकेपैदाहोनेकेऔसर वेदोनोंमीनग्रह मेंथे यहसुनकर दिलारामस्त्री ने इसभांतिसेकहा कि मैंइसकाप्रमाणनहीं मानताइननक्षत्रोंकोकुछनहीं जानतीमुझेजानपड़ताहैकिइसकीस्त्रीकुबुद्धि है और यहमनुष्यभोलाहै नहींतोइसगतिकोनप्राप्तहोताऔर इसकायह समाचारनहोतातोइसकष्टमेंअपनीअवस्थान खोता बादशाह तोस्त्रियोंकी ओरसेशोकमयअप्रसन्नरहताहीथादिलारामकीयहबातअतिबुरीजान-पड़ीइसकेकहनेसेजानाजाताहैकिहमारीसम्पत्तिइसीके हेतकरकहै और सबधनव सामग्री इसीसेहै क्रोधितहो बादशाहनेकहा किइसकाभूषणयहीं उतारकेइसेलकड़िहारेकोदोतुरन्तहमारीदृष्टिसेइसनिर्लज्जको दूरकरो आज्ञाहोतेही वहलकड़हारे को सौंपदीगई सहस्रोंमनुष्योंकेमध्यमेंअति शोकमें ग्रसितहुई दिलारामनेईश्वरकीकृतव्यजानकरलकड़हारेसेकहा कि मुझे अपने घरकालेचल भगवानने तुझपर दयाकी किमुझसी स्त्रीको तुझेदिलाया ईश्वरका धन्यवादकरकि कष्टकेदिन दूरहुये इसकाशोच न करना किमुझेराटीदेनीहोगी किइसअवस्थामेंऔरविपत्ति सिरपरलेनी पड़ैगी मैंऔर हजारोंको भोजनदूंगी तेरानाम प्रसिद्धकरूंगी इनवचनों को सुनकर वहदुःखमनुष्य अत्यन्त प्रसन्नहुआ अपनेसाथउसकोघरलेचला जबघरके निकटगया ताउसकी स्त्रीनेदेखा किबुड्ढा आजनया परिव लाया और यहएक नयाफूल बनमेंफूला एकस्त्री अतिकोमल युवती अरू-पवतीलिये आताहै क्या बुढ़ापालगाहै किमुझपर इसअवस्थामें दूसरी सौतलायाहै यहवचन कहकर बड़ेबलसे दोथप्परमारे जिससेबूढ़ा भूमिपर गिरपड़ा लोटन कबूतरकी भांति लोटने लगा दिलारामने उससी से यहकहा॥

चौपाई॥

आप क्रोधकिमि हमपै लीन्हा। तवपति पितासरिस मैं चीन्हा॥
कछु अपने उरजनि घवराहू। नहिं पुनिशोच पोच पछिताहू॥

ऐबीबी सुलक्षणीपरी विलक्षणी इसनातेसेआपमेरीदयाशालिनिमाता के समहुई अपने लड़को में मुझेभी जानो मुझे अपने हाथसे रोटीउठा

कर दीजिये मैंखाने पीनेका दुख न होने दूंगी बल्कि और आपसे
करूंगी उस बुढ़िया को दिलारामकी बातों पर दया आई और
कहनेपर लज्जितहोकर कहाकि बीबी मैंराज़ीहूं सहित घरबार आपके
है मुझेभी जो हाथ उठाकर देदोगी तुम्हारी सेवा किया करूंगी और
यह उसका मामला था किदिनभर लकड़ियां सदा बीनकर संध्यासमय
बेचकर बाज़ारसे रोटियां मोललेकर घरमेंआता और बारह तेरहलड़के
लूलेलँगड़े अपाहिज उसे लिपटजाते और रोटियां लेकर परस्पर बांटकर
खाजाते थे परन्तु पेट संतुष्ट कभी न होताथा भूखेरहते थे यह दीनता
और कष्ट सहते थे एक दिनतो दिलाराम यह समाचार देखकर चुप
हो रही दूसरे दिन न रहागया उस लकड़िहारेसे कहाकि बाबाजान
आज तुम लकड़ियां बेचकर गेहूं मोललाना बाजारकी रोटियां किसी
भांतिसे न लाना उसने कहाकि अच्छाबेटा आजऐसाही करूंगा तुम्हें
गेहूं लादूंगा उसदिन लकड़ियां बेचकर वह गेहूं लाया दिलारामकोसा-
मने वैसेही पहुंचाया दिलाराम लेजाकर पीसलाई और रोटी उसकी
बनाकर सबको क्षुधाभर खिलाई वहसब उसका धन्यवाद करनेलगेऔर
उसके प्रतापसे सब चैन करने लगे जोदो दिवस के पैसे बचेउसे ये उसकी
जन मँगाकर उसकी डोरियां बटकर उसबूढ़ेको सौंपदीकि इसेबाज़ार
में लेजाओ उचित मोलपर बेचलाना फिर इसीरीतिका बरतावकरती
रही कि कई दिवसके गेहूं इकट्ठा करके एकदिन उसकी जन बदलाई तो
और उसकी डोरियां बटकर बाज़ारसे बिक्री मँगवाई होते होते वह
दिवसमें कुछ रुपया जमाकरके खच्चर मोल लेकर उस टहलको दियाकि
इसपर लकड़ियां लादलायाकरो इस बुढ़ापेमें कष्ट न सहो लकड़ियोंमें अति
अधिक आवेंगी और तुमभी सुख पाओगे और जो बचेंगी वहघरमें
जांयगी निदान इसी भांतिसे दोबर्षके समयमें धीरे २ चार खच्चर
कोई टहलुये दिलारामने मोललिये और उसके कोराये से कुछ
और मकानातभी मोललिये उस टहलके घरकी सूरत बदलगई
दूरहुआ भाग्य उदयहुई लड़कीवाले अतिप्रसन्न और मियांकी
रंगबदलीदेखकर अति प्रसन्नतासे आनन्दमयहुये और जब
आई दिलारामने कहा कि इसकहुभर टहलुओंको खच्चर
साथ लेजाकर लकड़ियां बनसेबाज़ारमें बेचने को न लायाकरो जाड़े और वर्षामें
पहाड़की गुफामें एकट्ठाकर आयाकरो जाड़े और वर्षामें
बिकैंगी कुछ न कुछलाभ प्राप्त होरहैगा उस टहलमनुष्यने वैसा
जिस भांति दिलारामने कहा उस भांति व्यतीत होनेलगी
हतुआईऔरलकड़ियोंका दूकानआदिकमें होनेलगा
लगाया धरदी ने अपना बालक बनाया बाटवारा उसी
आखेट खेलनेको आया देवयोगसे दूसरेदिन राजिको

जिससे कोईबोलनहींसक्ता।थाहाथपांवबाहरनहींहोतेथेआग वरुईकेबिना किसीको चैन नथा दांतपर दांतबालरहेथे सबसेना बादशाही भीत के कारण ठिठुरकर मृतकके समान होगई बनमें ऐसा दुःखपड़ा कि मनुष्य लकड़ी तापनेको खोजनेलगे अचानक लकड़ियों का ढेर जो पहाड़ में देखातबजीमेंधैर्य्यआया कि जीनेका सहारा हुआफिर आगलगाकर तापने लगेजब इन्द्रियां चैतन्यहुईं तब प्रातःकाल बादशाहसेनासमेत आखेटखेलकर अपनीराजधानीकोलौटआया,कबादलकड़िहाराभीलकड़ोलेनेकोचलाऔरअपनीरीतिकेअनुसारउसीस्थानपरपहुंचालकड़ियां तो न पाई परन्तुकोयलोंकाढेरदेखातोकमर्थांम्हकर बैठगयाऔरधाड़ मार २ कर रोनेलगा आंसूसे मुखधोनेलगा अबईश्वरकेचरित्रकोदेखिये कि क़बादके दिन फिरे भाग्य उदयहुई मिट्टी छूनेसे सोना होताहैउन लकड़ियोंका समाचार योंहुआ कि उसखाड़ीमेंएक सोनेकीखानथी जिससमय आगकी गर्मी पड़ी वहपिघलकर एक स्थानपर इकट्ठीहोगई क़बादने कोयला खादना आरम्भ किया पत्थरभी जलगयाथा उसकोभी कोयलाजानकर खोदा तो उसकेतलेकईसिलें निकलींबुड्ढेने दिलाराम के निमित्त कईखच्चरकोयलोंकेलादेऔरदोएक सिलेंभी साथरखलीं जब घरमें आया तो दिलारामकेनिकट कोयले डालकरफूट २ कररोयाऔर सब कहानी कहसुनाईऔरकहाकोयलोंकोछोड़कर पत्थरोंकीभीहजारों सिलेंबनगईहैं ढरकीढेर पड़ीहैं दोएक सिलेंभी इसीनिमित्त उठा लायाहूं कि कदाचित् तुम्हें विश्वास न हो तो अपनीदृष्टिसे देखलोमुझे झूठा न जानो मसाला पीसनेके काममें आवेंगी और एकआध बेंच भी डालेंगे दिलाराम उनसिलको छुरीकीनाकसे परीक्षाकेनिमित्तजोखुरच कर देखातो सिल सुवर्णकीहै उसीसमय भगवान् का धन्यवाद किया और बोली॥

चौपाई॥

गरुअ सुमेरु रेणुमम ताही। रामकृपा करि चितवैं जाही॥

क़बादसे कहाकि शीघ्रजा औरजितनी सिलेंहैं खच्चरोंपरलादलाओ बुड्ढाअतिशीघ्रतासे सबसिलें लादलाया फिरदिलारामने एकपचफैसल सोनारकेनामलिखकर क़बादके हाथमें दिया और एक खच्चरपर जितनी सिलें लदसकीं लदवाकर उसकेसाथ करकेकहा कि बसरेमेंजाकर यह पचऔर यहसिलेंजोखच्चरपरलादीहैंफैसलसोनारकोदेनाऔरमेरी तरफसे दण्डवत्करना जिसभांतिसे तुममेरेपिताहोउसीभांतिसेवहमेरा भ्राताहै उसने मुझपर बड़ीदयाकीथी उससे कहना कि मैंदिलारामका वकीलहूं तुम्हारे समीप भेजाहै और प्रयोजन इसपचमेंलिखाहै वहइन सिलोंके सिक्के कराके तुम्हेंदेदेगा तुमलेआना खबरदाररहमें कहींकिसीचोर बटपार डाकूकेजालमें न आजाना क़बाद तो पचऔरसिलेंलेकर

बसरेकीओरचला इधर दिलारामने बाक़ी सिलोंको एकगट्ठा गड्ढा आंगनमें खोदवाकर गड़वादीं और एकटहलुयेकोसुहेल सराफकेसमीप जो मदायन नगरमें रहताथाभेजा और यह संदेशाकहा कि कईवर्षसेमैं बादशाहकेक्रोधमेंआईहूं दुःखमेंसमयव्यतीतकरलेतीहूं आकाशकेचक्करमें फँसीहूं जो ईश्वर चाहैंगे तो अतिशीघ्र फिरउसीभांति होजाऊंगी और बादशाहकीचौखटपर शीघपहुंचजाऊंगी उचितहै कि तुमजल्दीमेरेनिकट कारीगर थवई मजदूर बढ़ईआदि साथलेकर पहुंचो और किंचित् ढील इधरके आनेमें न करना कि मुझे एकस्थान बादशाहोंके समान तुम्हारेद्वारा बनवानाहै जोतुम्हारेप्रबंधसे बनजायऔरमेरेप्रसन्नहोजाय तो तुम्हारा अधिक उपकारहै और इससमय जोकुछरुपयाउसकेबननेमें लगेगा तुम अपनेपाससे खर्चकरनामजदूरोंआदिकी मजदूरीदेदेना ईश्वर चाहैगा तो शीघतुम्हारारुपया पटजायगा दाम २ मुझसे ले लेना जो कि सुहेलको दिलारामका बड़ाविश्वासथा इससंदेशा सुननेकेसाथ थवई संगतराशआदि कारीगर चतुर प्रवीण व बुद्धिमानलेकर दिलारामकेनिकट आया और विनयकी कि मैं आपकाअनुचरहूं जोकुछ आज्ञाहो उसे करूं देने लेनेकाचर्चा क्याहै जबईश्वर आपको बड़ेदर्जेपर पहुंचावै मुझे प्रसन्नकीजियेगा भूल न जाइयेगा यह प्रार्थनाकरके शुभघड़ीमें महलकी नींवडाली सहस्रों कारीगरकामबनानेलगेइसबनमेंबस्तीकीसूरतनिकली थोड़ेदिनमें वहस्थानबनगया उसस्थानमें ईश्वरकीमाया प्रकाशहुई जब वहमकानबनगया दिलारामने अपने और बादशाहके चित्तसभीतों में खिचवाये औरभी अनेकचित्र मनोहर थवइयोंसेबनवाये औरसामान राजोंकासा उस मकानके निमित्त मँगाकर सजाया थोड़ेसमयमें अति विचित्र सुडौलकेसाथ उसघरको अरजंग बादशाहके धामकेसमान बनवादिया और दूत बरकंदाज और तिलंगे फर्राश सेवक खासबरदार व चोबदार व कहारआदि नौकर रक्खे औरसबगुणनके गुणागार और पहलवान फक्कैत टपयत बकयत तबनयत चाबुकसवार नेजाबाज तीरन्दाज दूर २ सेबुलवाये इससमयमें कबादभी अशर्फियां बसरेसेलेकर पहुंचा दिलाराम क़बादको स्नानकेनिमित्त फौजमेंभेजा क़बादकी सत्तर पीढ़ीमेंभी किसीनेकभीनहीं ऐसा हम्माम देखाथा सेवक स्नानकेनिमित्त कपड़े उतारनेलगेकबादभयभीतहोकरउसकेचरणोंपरगिरपड़ा कि मुझसे जोकुछ अपराध हुआहो उसे क्षमाकीजिये मुझे नंगाकरके इससखौलते हुये पानीमें न जलाइये सेवक उसको ऐसादेख बहुतहँसे और उसेधीर्य दिया और कहा कि जोतुमसमझेहोवैसा न होनेपावैगा तुमनडरोतुम्हें कष्ट न होगा नहानेकेपीछे देहखच्छ और हलकी होजातीहै लुंगीजो बांधनेकोदीतोशिरसेबांधनेलगाबड़ीकठिनतासेक़बादकोस्नान करवाया और वस्त्र पहिनायेगये किसीबादशाहोंकोछोड़किसीकोप्राप्तनहोंऔर

दिलारामने उससेकहा कि आजके दिनसे क़वादको सौदागरके सिवाय कोई लकड़िहारा कहैगा तो उसकीजीभ निकाली जायगी और बहुत कष्ट व दुःख उठावेगा और चार पांचदिनकेपीछे उत्तम असबाब और नवीन वस्तु उसकेसाथ करके बुजुरुच्चमेहरकी भेंटकेनिमित्तभेजा और ढंग सबभांतिका जो मंचीऔर अमीरोंका होताहै लिखा पढ़ादिया क़वाद मंचीके गृहमें पहुंचा बुजुरुच्चमेहरको समाचार विदितहुआ औरन्यायशालामे बोलवाकर सौदागरसे मिलकर बूढ़े मनुष्यको देखकर अधिक सिष्टाचारकिया और अति प्रतिष्ठाकरके भेंट और मनोर्थ प्रकटकरनेके पीछे क़वादने दिलारामकोआज्ञानुसार बादशाहकीभेंटकामनोर्थकिया और उसके मिलापकी युक्तिचाही खाजेनेकहा कि अतिउत्तम आजमैं बादशाहसे आपकीचर्चा करूंगा आपकी प्रतिष्ठाके अनुसार बादशाहसेवर्णनकरूंगाकलशुभदिनभीहैऔरसावकाशभीमिलैगा प्रथमपहर में चलेआइये बादशाहसे भेंटहोजायगी क़वादविदाहोकर अपनेघरमें आया और जोकुछ बुजुरुच्चमेहरने कहाथा उसेकहसुनाया दिलारामने दूसरेदिन सुहेलसे पूंछा कि आज बादशाह किसभांतिके वस्त्र धारणकियेहैं और कैसे भूषण सजेहैं उसने जिसप्रकारसे वर्णनकिया दिलारामने उसीरीतिसे वस्त्र क़वाद सौदागरको पहिनाकर बादशाहकी भेंटके निमित्तभेजा क़वाद प्रथमतो खाजेकेसमीपगयाखाजा अपनेवचनके अनुसार साथलाया और महलकीओरचला और कचेहरीमें लेजाकर साजकेघरमें ठहराया औरआप बादशाहसे बातेंकरनेकोचलाऔरराजद्वारमें जाकर जोकुछ प्रार्थनाकरनीथी सबभांतिसे सब समाचार वर्णन किया बादशाहने बुजुरुच्चमेहरका कहास्वीकारकियाजोकि यहआधीन लकड़ी काटनेऔर बेंचनेकेसिवाय बादशाह सिवमंचीकीसंगतिकी प्रतिष्ठा क्याजानताथा दिलारामने चलतेसमय कहदियाथा कि जब बादशाहकेसमीपजाना पहिले दाहिनापैरधरनाऔर सातसलामें झुककरकरना इसको तो वहभूलगया किंतुबादशाहकीसूरतदेखकरदिलारामकीसिख यादआई आपने दोनोंपांव मिलाकर एकबार कूदकरदेखा तो वहांसंगमरमरका बिछौनाथा पांवजोखिसला तो चूतड़ोंकेबल गिरपड़ा इस चालसे बादशाह मुसकराया सभाकेलोगभी बादशाहका मुसकराना देखकर मनमें हँसकर रहगये बादशाहने उसकीभेंट स्वीकारकी और ऐसी उसपर कृपाकी कि एक डली मिश्री जोहाथमेंथी उसेदी उसने लेकर सलामकिया और सलामके साथही मुखमें डाललिया जितनेलोग वहांथे सबपर साबितहुआ कि यह अविवेकी और मूर्खहै औरबुजुरुच्च मेहरको इनदोनों चालोंसे उसपर सन्देहआया मनमें उसकीओरसे ग्लानिहुई जिससमय दरबार उठगया क़वादघरमेंआया और बादशाहकी कृपासे मिश्री मिलना और सलामकरके खजाना दिलाराम

से वर्णन किया दिलाराम अपने चित्तमें क़ज़ाद के उस काम से अत्यन्त लज्जितहुई कहाकि तुमने बिनाविचारे कामकिया बादशाहकी वस्तुदी हुई बादशाहके सामने नहीं खातेहैं बल्कि भेट देकर सलाम करके शिर पर रखतेहैं और अपने घर सौगात लातेहैं क़ज़ाद ने पूछा कि फिरअब क्या करें कि जिससे राजद्वार में मूर्खनबनें दिलारामने कहाकि अब जो कुछ बादशाह कृपाकर देवें उसको शिरपर रखलेना और सलाम करना और कदाचित् औसर भेंटका होवे तो भेंटदेना वह इस बातको सुन मनमें कियेरहा दूसरेदिन न्यायशालामें गया उस समय बादशाहखासे परथा परन्तुक़ज़ादको हाजिरीको उसकीचालदेखकर कहरकखाथादर-बानियोंनेविनयकी औरशीघबोलाया क़ज़ादको देखकर बादशाहकृपाकर केएकप्यालाक्रोरमेकादिया क़ज़ादउसेलेकर सलामकियाऔरदिलाराम की शिक्षायादकरके उसपात्रको अपनेशिरपर उलटलिया उसके शोरवे से कपड़ेसमेत दाढ़ीमूछभीभरगई सबशरीरमेंलपटगया बादशाहने अपने चितमेंकहाकिइसेकुछबुद्धिनहींहैजोचालचलताहैवहसबमूर्खताकीविदित होतीहै फ़िरइसपर सौदागरी करताहै ईश्वरकोमायाहै उसदिनदिला रामनेचलतेसमयकहदियाथा किखाजेसेसम्मतकरके बादशाहकेन्योताके निमित्त प्रार्थना करना जोस्वीकारकरें तोअधिकप्रतिष्ठा तुम्हारीहोजा-वेगी सो क़ज़ादने वैसाहीकिया दिलारामके कहनेके अनुसार उसनेन्यो-ताका नाम बादशाहके सामने लिया और यह दोहा दिलारामका सि-खाया हुआ पढ़ा ॥

दोहा ॥

प्रभुताओर प्रतापजग नहींराज्यतेकोय । मुझगंवारकी ओरप्रभु कृपादृष्टिअबहोय ॥

बजीरअमेहरकोभी उसके ऊपर कृपा बहुतथी सिफ़ारशकी बादशाह भी उसका सीधा और भोलापन देखकर दयाकी दृष्टिकी और उसका न्योतास्वीकारकिया क़ज़ादकृतकृत्यहोकरहँसताहुआ विदाहुआ और दिलारामसे आकरबादशाहका न्योतामानलेनावर्णनकिया दिलाराम बादशाहके न्योताकी सामग्री इकट्ठा करनेलगी ॥

जाना बादशाहका क़ज़ादलकड़िहार के घरमें और दिलारामपर कृपादृष्टि करना और भोजन करना और बाहुणीमद्य कापाना ॥

जब प्रात समय सूर्य आसमानपर उदयहुआ तब बादशाह बजीर-अमेहर और सब बड़े बड़े अधिकारवालों को साथ लेकर क़ज़ाद के घरमें न्योता खानेको गये क़ज़ादने अगवानीलेकर भेंटदी और कहा ॥

चौपाई ॥

चरण रावरे केर जो आये । बस्यो विपिन हर्षित लयलाये ॥

जब बादशाह उसके घरमें गये बैठकों और मकानकी दीवारों पर

अपने और दिलारामके चित्रपरस्पर देखेतोदिलारामको यादकरबहुत शादकिया और जिस स्थानकोदेखा बादशाहीमहलके समानपाया फिर बुजुर्गमेहरसेकहाकियहघरमानोमेराहै औरउसीभांतिसुशोभितहैयह कहकरबारहदरीमें मसनद जड़ाऊपर बैठगया तबलेपर थापपड़ने लगी नाचराग होनेलगा थाड़े कालके पीछे बावरचीने बिछौना बिछाके उस पर दस्तरखान भोजनके निमित्त बिछाया और फिर भांति २ के षटरस के व्यंजन अलग २ पात्रों में चुनकररक्खे क़वादने दिलारामकीआज्ञानुसार दिलाराम के हाथ धोने के निमित्त बर्तन मंगाकर हाथ धुलाये और बाजे २ व्यंजन अपने हाथसे चुनदिये बादशाह जिस समय भोजन करचुका दिलारामने बस्त्र आभूषण भांति २ के पहिनकर परदेकी ओटसे अपनी मनोहर शोभा बादशाह को देखानेलगी और परदेसे बादशाह का मन हरनेलगी बादशाहने ज्योंहीं उसकी झलक देखी क़वादसे पूछा कि यहस्त्री जो परदेके भीतरहै तुम्हारी कौनहै और इसका क्यानामहै यह युवती अति सुलक्षण औरप्रवीणहै सबभांतिकाप्रबन्ध इसीनेकियाहै क़वादने हाथजोड़कर प्रार्थनाकी कि सेवककीपुत्रीहै यहजोकुछसम्पदा है इसीके लक्षण करके है और आपसे क्या परदाहै महल में आइये इस सेवक की प्रतिष्ठा बढ़ाइये लौंडी की भी इच्छा दर्शन करने को है तब बादशाह क़वाद की प्रार्थना के अनुसार महल में जो गया तो पहिले दूर से देखकर दिलाराम पर संदेह दिलारामका किया जब निकट पहुंचा तब उसने मोजरा किया कहा कौनहै दिलाराम यहां कहांआई दिलाराम चरणोंपरगिरपड़ी औरजीखोलकररोई बादशाहनेउसकेशिरकोउठाकर छातीसेलगाया और कृपासहितबोले उसनेप्रार्थनाकीकियहवही क़वाद लकड़िहाराहै कि जिसको मुझे दियाथाआपकेप्रतापसे यहांतक धनीहोगया किजिससे सकल देशका सौदागरहुवा किआपनेभी कृपासहित उसकोप्रतिष्ठादी बादशाह यहसमाचार सुनकर अतिलज्जितहुआ और दिलारामका हाथ पकड़कर उस बारादरीमें लाया जहां मसनद पड़ीहुईथी जाबैठा और दिलाराम के लक्षणोंकी प्रशंसा करने लगा और मसनद के निकट बैठालिया और क़वादको खिलअत कृपा करके खिताब मुल्कुलतिजारत अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी के सौदागरों के अधिपति की पदवी दी और अधिक उदारता से दिलारामको चंगबजाने की आज्ञादी वह आज्ञानुसार चंगबजाने लगी और इसभांति चंगबजाया कि आकाश को भी चक्कर में लाई और फिर उसीप्रकारसे समाबँधगया कि राजसमीपी सब बिकल होगये जब दिलाराम चंगबजा चुकी और बादशाह कृपासागरको अपना गुण दिखाचुकी तबभांड़भगतियेकथिक काश्मीरी कौवाल ढाढ़ी कलावतऔर बेश्याओंने अपनातमाशा देखाया कुछकालके पीछे क़वाद को खिलअत कृपाकर बादशाहने

सभा बरखास्त होनेकी आज्ञादी और दिलारामसमेत बादशाह मन्दिर में आया और जोखियोंसे घणाहोगईथी सो अवअति चाहनेलगा थोड़े-दिवस के पीछे मोहतरिमबाँना जो बादशाहके चचाकी कन्याथी उसके साथ अपना विवाह करलिया एकवर्षके पीछे शाहज़ादीकोपुत्रकीआशा हुई जबईश्वरकी कृपासे समय गर्भकाव्यतीत होगयाराजपुत्रो को पुत्रहोने की पीड़ाहुई बादशाहने बुजुरुजमेहर को बुलाया और कहा कि राजपुत्री को अतिकष्टहै जिससमय पुत्रउत्पन्नहोवे उसके भाग्यका वृत्तान्त लिखना चाहिये और जन्मपत्र बनाना उचितहै फिरखाजेने बालक उत्पन्न होनेकासमय जाननेकेनिमित्त हिन्दी फिरंगीकूमी आदि घड़ियां औरग्रहोंके चक्रमालूम करनेकेहेत रमलकातख्ता अपने निकट रखके पांसालेकर चैतन्यहो बैठा और पुत्रहोनेका मार्ग देखनेलगा इतनेमेंईश्वर की कृपासे सूर्यके सरिसपुत्र शुभघड़ी शुभमुहूर्त में उत्पन्नहुआ और दाई के गोदमें शुशोभित हुआ उससमय शुभसायत लिखकर पासां तख्ते परफेंका और जन्मपत्र खींचकर सबप्रकार जो विधिमिलाई गई तो उससमय सूर्यऔर चांदको एकस्थानमें पाया और शुक्र और बृहस्पति को परस्पर देखा खाजेकी आंखें आनन्दसे खुलगईं बादशाह को शुभ समाचार देकर बिनयकी और यहसोरठा पढ़ा॥

सोरठा॥

पुत्र रहे कल्यान सुख निधान संसारमें। मिघन हित गुणखान बेगिहिय याते सबे॥
सप्तदेश नृपहोय असप्रताप्या की सुनो। नहिंसमानजगकोय पुत्रहुत राजस बिदित॥

यहलड़का सुभाग्य बहुधा देशोंका नृपतिहोगा और बहुत न्याय करने वालाहोगा सत्तर वर्ष तक प्रताप समेत राज्यकरैगा परन्तु एक बुद्धिमान की मूर्खता में बहुधा शोकग्रसित रहैगा यह कह नामधरने का मनोर्थ किया कि दोचालाकोंने बादशाहसे बिनयकी कि जोसर पानी का सूखगयाथा आज आपही आप बहचला बुजुरुजमेहर सगुन अच्छा जानकर शाहज़ादे का नामनौशेरवां रक्खा और बाजे इतिहास वालोंने लिखाहै कि जिससमय वहउत्पन्न हुआथा उस समय बादशाहके हाथ में अरुणप्याला मदिराकाथा बुजुरुजमेहरने फारसी बोलीमें बर्णनकिया अर्थात् कहा कि आपप्याला शराब का पीजाइये बादशाह प्रसन्न होकर खाजेको पारितोषक दिया और राजपुत्र का नामनौशेरवां धराबाजाबजाने वालोंको बजानेकी आज्ञाहुई और तोप-खानामें सलामी छूटनेके निमित्त कहागया तोपखानेमें तोपोंपर बत्तियां पड़नेलगीं और दमाम घरमें नौबत झरनेलगी तुरन्त मंगला चरणका शब्द आसमान तकपहुंचा और सकल नगरमें छोटे से बड़तक सबकेयहां आनन्द बधाये होनेलगे आनन्दकी सामग्री परस्पर करनेलगे नाचरंग घर २ में होनेलगे और आसमानने उसके मंगलकेहेत सूर्यचांद

कोदफ़ बनाया शुक्र व बृहस्पतिअतिप्रसन्नतासेनाचकाबहुरंग जमा याकि सबआकाशमें घूमनेलगेऔर खुशाने लूटनेलगे उसीक्षण दुखीको धनवान-करदियाकंगालोंकोसबभांतिसेसम्पतिदीऔरसबप्रजाकोएकवर्षका कर छोड़दियासकलमनुष्यसुखमेंभोगकरनेलगेग्यारहवेंदिनउसीसमयबादशाह को धावनने खबरदी कि अलकशकीबेटीकेपुत्रहुआबादशाहआज्ञादेकासेवकभी उत्पन्न हुआ बादशाहने खाजेसेकहा कि अलकशके नातीको अभीमार डालना उचितहै जोयह लड़काजीता रहातो मुझेसंदेहहै कि औसर पाकर तुमसेबैरिया दावकरेगा अवश्य तुमसे अपने नानाका बदलालेगा सांपको मारना और उसके बच्चेको पालनाकाम ज्ञानवानों का नहीं है इस पर ध्यानधरना उचितहै आगेतुमको अखितयारहै इनकामों में तुम्हारी बुद्धितीव्रहै खाजेनेकहा कि अपराध विनाकिसी को मारना धर्मशास्त्र के अनुसार उचितनहींहै ऐसेलड़के अबुध का मारना ठीक नहीं बादशाहने कहा कि मेरेनिकट यहकिस्सा यहांसचहै शत्रुको कष्टसे प्रथम वधकरना लायकहै नहींतो इसकातन बनारहैगा तो तुमकाकष्ट अवश्य करैगा बुजुरुच्चमेहर उसके बचानेके निमित्त बादशाह की मति इसवाक्य की ओरसकरी और बादशाहने विदाहोकर अ-लकशके घरमेंगया और बखितयारके लड़के का नामबखतक रक्खा जब नौशेरवां बारवर्ष चारमास का हुआ बादशाहने शिक्षाकेहेत बुजु-रुच्चमेहर को सौंपा बुजुरुच्चमेहरने सप्ताहके पीछे बखतकसे बादशाह को भेंट दिलवाई और प्रर्थना करके जागीर अलकश की उसके नाम पर लिखाई नौशेरवांके पासउसेभी पढ़ानेलगा औरअत्यन्तप्रसन्नतासेउसकी शिक्षामें श्रमकरने लगा जोकि नौशेरवां बड़ातीव्र बुद्धिथा कई सालके समय में सबविद्या व्याकरण वैद्यक ज्योतिष गणित रमल नमता पण्डि-ताव आदिमें अतीव प्रवीण हुआ और सिपाहियाना में भी अति चतुर हुआ सकल प्रकार का अभ्यास प्राप्तकरके बड़ागुणी हुआ दैव-योगसे एकदिन चीनके बणिये उसनगरमें आये बादशाह की सेवामें नवीनवस्तु सौगात लाकरदी तिसपीछे राजपुत्रको भी भेंटदेनेके हेत आज्ञाचाही बादशाहने उनकी प्रार्थनाके अनुसार आज्ञाकी जिससमय सौदागरोंने राजपुत्रकेसम्मुखभांति २ कीसौगातआगेधरीऔर कुछवस्तु सोभायमानभेंटकीरीतिमेंदीतबनौशेरवांचीनके महाराजकावृत्तान्तपूछने लगा बणियोंने उसका समाचार ब्यौरासमेत विनयकिया और कहा कि चीनके बादशाहके एककन्याहै मेहरंगेजनामसूर्य और चन्द्रमाकेसमानरू-पवान शोभा सागर परम उजागर परीसदृश कामिनीहै जिसकी सुन्दर-ताई संपूर्ण संसारमें प्रसिद्धहै एकसमूह उसकी शोभापर मोहितहै हजारों राजपुत्र उसकेस्नेहमें पानीभरतेहैंसैकड़ोंबादशाह उसचन्द्रबदनी पर मरते हैं ॥

देखे की गतिको कहे मृगनयनी केनयन ।
सुनने ते बहुमरतहैं सत्य मानले बैन ॥

मेहरंगेजकी चर्चासुनकर राजपुत्रका चित्त अति मोहितहुआ और प्रीतिकी आग नौशेरवांकी छातीमें प्रकाशितहुई कलेजेमें प्रीति रूपी-बान पारहोगया स्नेहमें बँधगया होते २ बल व पराक्रमने भी जवाबदिया और धीर्यनेभी अपनामार्ग लिया खाना पीना छूटगया केवल चुपसाधे रहता हँसना बोलना ध्यानसे उतरगया निशिदिन उसके निमित्त क्षीण होता जाताथा और उसीकी बातेंकियाकरताथा सदाध्यानलगायेरहता था और इन कवित्तोंको पढ़ाकरताथा ॥

कवित्त ॥

थातो वे दिन रातथे बावरे जामें बसन्त समाय रह्यो ।
बाग अनूप कीसैर सजी चितमें लहराई तो धायगयो ॥
प्रेमहिके बशकेआन पड़्यो फुलवारी उतैलै जात भयो ।
बायु सुगंधित फूलन को मम भेंटहि तेकर मांझलायो ॥ १ ॥
मिच सनेही लिये सबसंग महाछबि रंग में अंग मग्यो ।
कबहूं हँसनाथा परस्परबीचकबहींफूलों करखेलजग्यो ॥
कली के भांतिन चित्तथो तंगसभीजगमध्यमें शोकभग्यो ।
मेरे चित्तको देखिकेफूलसदाहैरांथाबड़ाईकेओरलग्यो ॥ २ ॥
निशिबासर सुखमें अंगरह्योजनुफूल प्रफुल्लित रंगलिये ॥
सब औसर चित्तमें वित्तयहोउरमांझअनन्दउमंगदिये ।
कामिनि तेनहिं कामकछू नहिंशोचशरीरमेंलेऊ किये ।
बायु नतातिलगी तनबीचमेंनीचकीरीतिनबोल्योहिये ॥ ३ ॥
मदपानसिवायनआनकियोदिनरातसदायहबानिलिये ।
निशि बासर शोकनहींतनको निजमिचसमेतसुचैनकिये ॥
अरु केवल एक अनन्द रम्योसब रंजकलेशबिसारिदिये ।
बसताथा बसंतसमयसबभांति अनन्दअनंतसम्हारेहिये ॥ ४ ॥
निजमिचकेहाथमेहाथदिये अरुसुखसमेतरह्यो जगमें ॥
यातो समय असदृष्टिपर्‌यो जहँ भूलतई सगरी मगमें ।
झकझ प्रीतिमें आनफँस्या जोव्यप्योहै चित्तकीरगरगमें ।
अतिशीघभयोपतिभारमनो जरदीकियो रूपसभीलगमें ॥ ५ ॥

विदाभया सुखऔरदुःखवेरिआयोमोहिकोयन उबारमेरीगोदखाली देखको। बिधिब॥शोकतनकोकसभीसूखिगयोकांटेकेरूखभयोफूलडालीलेखके। नरगिसकेसमानहूंहैरानइसजहानमेंसोसनकेभांतिकांतिशोभनिजपेखिके।आपतनक्षीण अरुदीनवोमलीनमुखसैरकीनसुधिबुधिभावतनरेखके ॥

कुण्डलिया ॥

डाली सूरति मोरकी परबन्धन निज ग्रीव । गुलूबंद घेराकियो दुःख

पड़ेकीसीव ॥ दुःखपड़ेकी सीवकठिनता अधिकसमाई । रक्तअंसुअनकी नदी बीचबहिताहूं भाई ॥ चित जानतहै मोरशोक दुःख जाहिडरायो । नलकुछ रह्योन मोहिं ईश यहकाह समायो ॥ नदीअगमके मध्यमें खड़ा हौं शोकसमेत । दृष्टिकनारा पड़तनहिं कहूंनदूरसचेत ॥ कहूंन दूरसचेत लहर दुख अधिक सतावे । देखें अब यह चरित कर्म कह काह देखावे ॥ मित्र सनेही कोइ कामनहिं मेरे आवे । बिनाईश के दुक्खकौन अबमोर मिटावे ॥ कहोंकहा कासों कहौं कठिन बिपति अति मोहिं । प्रीतिरूप पावक विषय निशिदिन जरना होहि ॥ निशिदिन जरनाहोयस्वासस्वँग ज्वाला निकलें । धीरज कितनाधरों अधिक उरमें वे सिकलें ॥ ठौकयही है बातबिदितकीजैयह किस्से । अंतरगतिकाहालसुकखपहुंचै पुनिजिस्से ॥

यद्यपि उसने बहुत छिपाया परन्तु जरदरंगत और मुंहके सूखने आहसरदकेभरने और चित्तपर क्लेशकेतीरचुभनेसे प्रतिदिन दुर्बलता छुई जब यह समाचार शाहजादेका होनेलगा दूतोंने बादशाहके समीप यह चरित्र पहुंचाया कि जाना नहीं जाताहै कि हमारे लोगों के नष्ट कर्मसे कौन उपाधि शाहजादेको व्यापीहैखाना पीना सब छूटगयाहै न किसीसे कुछकहतेहैंऔर न किसीकी सुनतेहैंदर्पणके समानआश्चर्यवान् हैं यह समाचार सुनकर बादशाहने पारेके सदृश दुखित होकर बुजुरुच्च-मेहरको बोलायाऔर यह वृत्तान्त कहासुनाजिनेबादशाहकोधीरजदेकर शांतकिया और आप नौशेरवांके पासगया और एकांतमें जाकरके कहा किशुभतोहै आपकाचित्तकिस प्रकारका है ऐसा क्योंहै सत्यबतादीजिये तो उसकी मैं औषधिकरूं आपके निमित्तदवाबनाऊं नौशेरवांनेकहाकि खानहसाहब आपमेरेपिताके मंत्री दूसरेमेरेगुरूहैंआपकोमैं बड़ाजानता हूंयद्यपि स्थान लाजका है इसछिपेभेदका विदित करना अच्छानहीं है किंतुअपनासमाचारप्रकटकरूंऔर दुःखकहूं परंतुआपकीआज्ञानुसार कहताहूं कि मैं मलिका मेहरंगेजजो चीनके राजाकीबेटीहैउसकास्वरूप बिनादेखे उसपर मोहितहूं और अच्छी भांतिसे जानलीजिये कियबतक मेरा उससे बिवाह न होगा तबतक मैंइसी शोकमें रहूंगा और जीवभी जातारहै तोआश्चर्यनहीं ॥

दोहा ॥

यह कहकर इक आहकी मनमें बंधी सनेह । बिरह अग्नि तनमेंलगी जरनलगी सबदेह ॥
बिरह बश्य मूर्छितभयो सुधिबुधिकछू न ताहि । तनके भीतरप्रीति है मन बूड़े तेहिमांहि ॥

बुजुरुच्चमेहरनेकहा किशाहजादे इसभांतिका खयालतुमकोकरनाउ-चितनहीं तनमनकोआनंदसे रक्खो यह कौनबड़ीबातहै जिसकेहेतऐसा ढंग बनायाहै इतनादुःख बैठेबैठाये उठायाहै ईश्वरके हेतयहशोकचित्तसे दूरकरो खानपान आनंद समेत करो अभी आपकी क्या अवस्थाहै जो इस ओर मन लगायेहो आप स्वरूपवान्हैं आपके ऊपरवह सहितनी

निछावरहोगी बादशाहकेपास बिवाहके कारण पैगाम आवेंगे कुछ काल औरधीर्यधरिये अपनीबुद्धिसे काम न कीजिये यहबात क्याकठिनहै जिसमें जो आपकेजीवकाभी संदेहहै आपचित्त स्थिररखिये इसकार्यको मैं आपकरूंगा औरआपकामनोर्थ पूर्णकरूंगानौशेरवांकोउसकीबातोंसे धीर्यआयाऔरमेहरंगेजराजपुत्रीकेमिलनेकी आज्ञाडुई जल्दीवहांसेउठ कर स्नानकिया और मिचोंसमेत आकर बख्तबदलकेभोजनकिये बुजुरुच्च-मेहर वहांसे बादशाहके समीपगया औरराजपुत्रके शोकमिटनेका समाचार सुनाया बादशाहनेकहा कि खाजह यहकार्य तुम्हारेबिना होना कठिनहै तुम्हारे उपायसे हमको विश्वासहै कि होजायगा वहबादशाह भी बड़ाप्रतापीहै और उसका देशभी बहुतहै बिवाहकाकार्य बहुतसूक्ष्म है कोई मनुष्य सुशील उसकेनिमित्तजावे ऐसेबड़े प्रबन्धकेहेत मनुष्यबहुत तीव्र औरउपायी चाहिये अन्तकोयहबात ठीकठहरी कि खाजहआप चीनकीओरजावे औरबिवाहकेनिमित्त पहिले अपनेसे ठहरावे इसपर मार्गकी सामग्री सब कीगई बुजुरुच्चमेहरपचाससहस्र सवार पियादे अपनेसाथ लेकर चीनकीओरचला अबबख्तककाहत्तान्तसुनिये कि जबसे सुध सम्हालीथी अपनेनानाका चरित्र सुनकर प्रतिदिन अपनीमाता से कहताथा कि मैंजब बुजुरुच्चमेहरका मुखदेखताहूं तब मेरीआंखोंमें खून उतरआताहै नानाकासमाचार याद करके चित्तभरआताहै जबतक अपने नानाका बदला न लूंगा तबतकमैं बेचैनरहूंगा अवसरपाना मुख्यहै कहां जायगा कभी न कभी जालमेंआवेगा और सदैव बुजुरुच्चमेहर की बड़ीकरके नौशेरवांकेकान अपनी जानमें भराकरताथा और जो २ चित्तमें आताथा झूंठ सच्च अच्छा बुराकहाकरताथा किंतु नौशेरवां उसे लानत मलामत करके कहताथा कि खाजहकी भलाई को अपने साथ देख वह तेरेसाथ क्या २ उपकार करताहै औरतू उसकेओर ऐसे२ काम करताहै और उसको मिथ्याअपराध लगाताहै अरे वह सब भांतिसे तेरा उपकारकहै इस बातकी चरचा कभी न कर नहींतो ईश्वरके निकट अपराधी होगा और इस संसारमेंभी लज्जित होगा ॥

जाना बुजुरुच्चमेहरका चीनकीओर सहितदबाव और प्रताप केओर लाना मलका मेहरंगेजका और गठिबन्धन उन दोनोंका ॥

बुद्धिमान्लोग इस इतिहासको आनन्दरूपी लेखनीसे यों वर्णन करतेहैं कि जब खाजह बुजुरुच्चमेहर बादशाहसे आज्ञालेकर बहुत ऋद्धि सिद्धि सहित मार्ग चलताहुआ चीनकी सीमामें पहुंचा फिर चीननगरमें गया दूतोंने चीनकेराजाको समाचार पहुंचाया कि सप्त देशके बादशाहका मंत्री उपायी खाजह बुजुरुच्चमेहरआपकेपास आया है बादशाह रूबादकामरांका कोईसंदेशालायाहै यहसुन चीनके महा-राजने मंत्रियोंको खाजहकी अगवानीको भेजा और जब अति समीप

आयातब अपनेबेटोंको शाहखुताबखुतनेसमेत आज्ञाकी कि आगे बढ़कर अगवानी लेवें जब बुजुरुच्चमेहर दीवानखासमेंआया तबअदबसमेतबादशाहकोझुककरप्रणामकियाऔर अपने बादशाहकीओरसे राजमंचियों के अनुसारसिष्टाचारनिबाहकेभांतिभांतिकी बस्तु और सौगातजोअपने साथ लेगयाथा अपने बादशाहकी ओरसे चीनके बादशाह के समीप रक्खी और हीरामोतीआदि बहुतमोलके और घोड़ा हाथी और अस्त्र आदि सबप्रकारके पदार्थ बादशाहके निकट रखदिये खाकान चीनके बादशाहने खाजहका स्वभाव और नम्रता पसन्दकी और उसकी मधुर बातोंसे अति प्रसन्नहुआ और खाजहका प्रतिष्ठाका पारितोषिकदिया और धनसंपति अधिकदी लेखकोंने लिखाहै कि प्रथम मिलापमें खाजह को ग्यारहबार खिलअत कृपाकिये और उसकी अति प्रतिष्ठा और बड़ाई इहसेअधिकबढ़ाई अर्थात् जोबात चीनका बादशाह मुखमेंलाता था उसकाउत्तर अच्छीभांतिसे पाताथा और खिलअत अनुग्रह करता था जिससमय आनेकाकारणपूंछा उसकोबुजुरुच्चमेहरनेदूसरीतिसेवर्णन कियाऔरअभिप्राय यहविदितकिया कि जिससेचीनकेबादशाहनेमनसे राजपुची मेहरंगेजकाविवाह नौशेरवांकेसाथ स्वीकारकिया सिवायमान लेनेके कोईबात न बनपड़ीयहबड़ीबात न्यायशालामें अपनेमुखसेकही कि क्या शुभसमय और भाग्यउदयहुसकाममेंहुईहै जोमुझेनौशेरवांसदृशदामादमिलाहै फिर उसीदिनआज्ञाकी कि शीघ्र सामग्री मार्गकीकीजाय जिससे राजपुचीसमेत मदायन नगरकोजावेआज्ञापातेहीथोड़ेहीदिवस में मार्गकासामानकियागया चीनकेबादशाहने कबाबाचीनी और कलावाचीनी जो दोनों बादशाहके सुशीलपुचथे राजपुची मेहरंगेजके साथ चालीससहस्र सेनासे बिदाकिये औरकईपीढ़ीकी जोड़ीहुई सम्पतिकईसौ लौंड़ियां व सेवकतुर्की व हबशीखताईखुतनीजहेजअर्थात् दायजमेंदिये कईमहीनेमें बुजुरुच्चमेहर मेहरंगेज राजपुची समेत आनन्दित होताहुआईरानकेनिकटपहुंचाऔरउस स्थानमें रातकीरातवास किया प्रातःकालमें सेनापतियोंने अपनी २ सबसेना सवाँरी और चीन के राजपुचने सब सामग्री दायज औरविवाहकी सबभांतिसेकी जबबादशाह और नगरबासियोंको यह समाचार आनन्दका बिदितहुआ तो सब ओरसे प्रजाकामेलाहुआ बादशाह नौशेरवांने अगवानीकी और बहुतसम्पति राजपुचीकी डोलीपरनिछावरकरकेफकीरोंको धनवान्कर दिया औरखाजहबुजुरुच्चमेहरपरबड़ीकृपाकरकेगलेसेलगायाऔरबहुतसेपारितोषिक अनुग्रहसमेतकृपाकियेऔरशुभमुहूर्तमें नौशेरवांकाविवाहमहरंगेजराजपुचीकेसाथहुआबरातकेपीछेएकबर्षतकआनन्दरहा ॥

दोहा ॥

परमानन्द मगनसब धूमधामकर ब्याह । पुरबासी अतिसुखित भे तनमन अधिकउछाह ॥

जब दूनह बनठन चला शोभा बरणि न जाय । राजप्रफुल्लित भईअति जनुदिन प्रगटेउ आय॥
अवशोभा परगट भई कविको अगम देखाय । तातेयह चुप होरहा मन सुखकर अधिकाय ॥

इसकेपीछे बादशाहने खाजहकी सम्मतिसे नौशेरवां को गद्दीदी और एकांतबैठ आप ईश्वरका स्मरण करनेलगा और बिबिधि प्रकारकी शिक्षा बादशाहने बार २ नौशेरवांकोदी कि बुजुरुचमेहरके सम्मतबिना कोईकाम न करना और बख्तक को प्रधानमंत्री न करनानहींतो बादशाहतनष्ट होजावेगी कहतेहैं कि जबबादशाहने नौशेरवांको गद्दीपर बैठानेके निमित्त खाजहसे सलाहकीथी तबखाजाने कहाथा कि चालीस दिनके पीछे शाहजादेको गद्दीपर बैठाइयेगा बादशाहने स्वीकार कियाऔर खाजेने यहभी कहलियाथा कि तबतक मुझसे कहदीजिये कि अपनेआधीनरक्खूंयाजोचाहूं सोकरूं बादशाहनेइसनिमित्तभीखाजहको अधिकार दिया उसीसमय बुजुरुचमेहरने नौशेरवांको बेड़ीपहना कर जेहलखानेमेंभेजदिया और इकतालीसवें दिनबँधुआई से छोड़ाकर अपनी सवारीके साथ दौड़ाता हुआ बादशाही महल तकलाया और तीन कोड़े इसजोरसे मारे जिसमें नौशेरवां तिलमिला गया और ग्रीषम का रेतउसमें नंगेपैर दौड़ाया उससेअतिदुखित होगया तदनन्तर खड्गखींच कर नौशेरवांके हाथमेंदी और शिरझुकाके कहा कि इसबे अपराधका यहीदण्डहै कि मेराबध कीजिये और इसका बदला लीजिये नौशेरवां खाजहके गलेसे लपटगया और कहनेलगा कि खाजह इसमेंभी कुछ उपाय होगा नहींतो आपमुझे इतना क्लेश न देते और मेरेकष्टका आपशोच अपने अन्तरनलेते इसकेपीछे जिससमय बादशाहने शरीर त्यागनकियाउससमयमेंदोवर्षतकबख्तकको मंत्रीका अधिकारमिला उस क्षुद्र मनुष्यने नौशेरवांसे किसकिस भांतिका अन्याय कराया जिससे नानाभांतिकेकष्टप्रजाकोपहुंचेजिससे उससमयमें नौशेरवांबड़ा अन्यायी विदितहुआऔर उसकेइसअन्यायका प्रकाशदूरदूरतकहुआ दैवयोगसे एकठग मार्गलूटनेके दोषसे पकड़आया जो महाअपराधी और दुष्टऔर ठगोंका राजाथा जिसने बेअपराधहजारोंमनुष्योंकोफांसीदीऔर बहुतों के शीश राहचलते हुये काटडालेथे और बहुतलोगोंको जहरदेकर मार डालाथा नौशेरवांने उसके मारनेकेहेत बधिक को आज्ञादी बधिक उसे वधस्थान को लेचला उसने उससमय विनयकी कि बधतोमेरा होहीगा और सबका बदला पाऊंगा जो चालीस दिनकामुझे सावकाश मिले तोमेरा मनोर्थ पूर्णहो और मदिरा मांस और एकस्त्री कृपाहोतो मैं एकऐसी विद्या जानताहूं और नयागुण गुरूसे सीखाहै कि बादशाही सभामें कोईनहीं जानता होगा बल्किकभी किसीने न सुनाहोगा चालीस दिनकेपीछे जिसबातकी आज्ञाहोगी उसेस्वीकार कर लूंगा नौशेरवांने पूछा कि वहविद्या कौनसीहै उससेकुछ लाभभी होताहै

उसनेकहा कि मैंजितनेजीवहैं सबकीबोली जानताहूं और इसविद्याको अच्छीभांति जानताहूं परचिड़ियों की बोलीको बहुत उत्तम जानताहूं नौशेरवांने उसकीविनय स्वीकारकीऔरबुजुरुजमेहर को सौंपदियाबुजुरुजमेहरनेउसकेरहनेकोएकस्थानदिया उसकीइच्छाके अनुसार सामग्री भी भेजदी और पहिनाव और खानेपीनेमें अधिक प्रबन्धकिया उसने चालीस दिवसतक अच्छीभांतिसे चैनकिया इकतालीसवें दिन बुजुरुजमेहरने कहाकि अबतोचालीसदिनगुजरगयेबोलीजाननेकीविधिमुझे पढ़ाइये और अपनी अवधिके अनुसार कहीहुई बातको पूराकीजिये उसनेकहा कि मैंसबविद्याओंमें मूर्खहूं मुझसेऔर विद्यासे क्याकामहै मैं तो कुबुद्धिहूं लेकिन ईश्वरअपनेगधोंकोउत्तमभोजनखिलाता औरअपनी रचना देखाताहै यहउसका प्रतापहै कि जिसने बधहोनेसे मुझेबचाया और भांति २ के भोजन कराये जो आनन्द करनाथा सो इसउपायसे किया अबखड़ाहूं चाहेफांसी दीजिये यागर्दन मारिये जिसभांति चाहिये जीवलीजिये खाजहने यहसुनकर हँसदिया और उसको ठगी और चोरीसे सौगन्द लेकर छोड़दिया एकदिन बादशाह शिकार करता हुआकिसीओरचलागयाऔरवख्तकऔरबुजुरुजमेहरकोछोड़कर और कोई साथ न था एकस्थान परदेखा दोउल्लू एकवृक्षपरबैठे अपनी अपनी बोलीबोल रहेथे नौशेरवांने बुजुरुजमेहरसे पूछा कि इनकी क्या बातें हैं किसनिमित्त सलाह करतेहैं बुजुरुजमेहरने कहा कि आपसमें बातें अपने लड़कोंके विवाहकेहेत करररहेहैं घरबसने का उपाय करतेहैं बेटे वाला बेटीवालेसे कहताहै कि जोतीनखंड पृथ्वीके सबउजाड़ अपनीबेटीको दायजमें देना स्वीकार करेतो मैं अपनेलड़केसे तेरीलड़कीका विवाहकरूं नहींतो मुझेस्वीकार नहीं और मैंदूसरे स्थानपर अपने लड़के की ससुराल करताहूं उसनेकहा कि जोनौशेरवां की जिन्दगीहै और ऐसा अन्याय प्रजापर करता रहैगा तोतीनखण्ड क्या उजड़ेजितनादेशनौशेरवां काहै मैंसबदायजमें दूंगा तेरे मनोर्थ को पूर्णकरूंगा नौशेरवांने कहा कि अबहमारे अन्याय का चर्चाजानवरोंमेंहानेलगा इसकाहलचलदूर २ तक हुआ यहसुनकर बहुतलज्जित हुआ औरफूट२कररोयाआतेही दीवान खासमेंसांकर बँधावादी और नगरमें डुग्गी पिटवादी कि जोकोईन्याय के वास्तेआवेजंजीरको हलादेवे किसीके द्वाराकहना कुछकाम नहींहै चोबदारोंकी कुछआवश्यकता नहींहै फिरऐसीही रीतिठीकहोगई जो न्यायके हेतआया उसीकेद्वाराअपना अभिप्रायविदित कियाजिससेआज तक नौशेरवां का न्याय विदितहै जो छोटे और बड़ेहैं सबउसके नामको जानतेहैं उसका वर्णनकुछ अवश्यनहींहै कईबर्षके पीछे बादशाहके मेहरंगेज राजपुत्रीके उदरसे दोपुत्र और एकलड़की उत्पन्नहुई उसमेंसे एक का नामतो हरमुज और दूसरेका नाम फरामुरज औरबेटीकानाम मेहर

निगारक्खा और उनकी सेवा होने लगी और उनको ख्वाजह के निकट भेजा ख्वाजह ने एक का नाम सियारूश और दूसरे का नाम दरियादिल रक्खा और दोनों की सेवा में परिश्रम कर ने लगा बख्तक को भी ईश्वर ने एक पुत्र दिया उसने उसका नाम बख्तियार रक्खा लिखने वाला लिखता है कि एक रात को नौशेरवां ने स्वप्न में देखा कि पूर्व से काला काग आया और मेरे शिर से छत्र उतार कर ले भागा फिर पश्चिम की ओर से एक बाज आया उसने उस काग को मार कर छत्र मेरे शिर पर रक्खा यह स्वप्न देखकर बादशाह जाग पड़ा और बुजुरुज्ञमेहर से वर्णन कर के विचार पूछने लगा बुजुरुज्ञमेहर ने प्रार्थना की कि पूर्व की ओर एक नगर खबीर है उस नगर में इब्रहामना म एक बादशाह जादा है उसका पुत्र अलकमाखैबरी नाम उत्पन्न होगा आप से और उस से लड़ाई होगी वह आकर आपका छत्र छीन लेगा और आपको पराजित करेगा फिर पश्चिम की ओर एक नगर मक्का है वहां से एक लड़का मुहम्मद नाम आवेगा वह उस निर्लज्ज को मार कर फिर छत्र और गद्दी आपको देवेगा और आप का बदला उस से लेगा वह यह बात सुनकर बख्त प्रसन्न हुआ और ख्वाजह को पारितोषिक देकर मक्के की ओर भेजा कि इस काम की दवा करो कि जो वह लड़का उत्पन्न हुआ होगा तो हम उस लड़का प्रसिद्ध कर के सब भांति से उस की सेवा करो ख्वाजह बुजुरुज्ञमेहर बख्त से सीख सम्मति और सामग्री ले कर मक्के की ओर चला और उस सुशील पुत्र को ढूंढ़ने लगा और प्रति घर पता पूछने लगा ॥

बुजुरुज्ञमेहर का मक्के को और जाना और अमीर हमजा का पता पूछना ॥

बुद्धिमानों ने ज्ञान के प्रकाश से भांति २ के वृत्तांत लिखकर इस मधुर इतिहास को यों वर्णन किया है कि जब ख्वाजह मार्ग में चलते २ मक्का के निकट पहुंचा तब एक पत्र उस स्थान से अबदुल्मतलब को जो वहां के मालिक थे इस समाचार का लिखा कि यह आधीन मक्के के दर्शन के निमित्त आया है और आपसे मिलने की भी इच्छा रखता है आशा करता हूं कि आप अपने दर्शन से कृतकृत्य कीजिये और मेरी दीनता देख के दया की दृष्टि से देखिये ख्वाजह अबदुल्मतलब पत्र को पढ़कर बख्त प्रसन्न हुये और मक्के के अच्छे २ मनुष्यों को साथ लेकर बुजुरुज्ञमेहर की अगवानी के निमित्त आये और बड़ी प्रतिष्ठा से सिष्टाचार किया और अच्छे २ स्थान उनके रहने के लिये खाली करवा दिये पहिले तो बुजुरुज्ञमेहर ख्वाजे अबदुल्मतलब के साथ २ काबे के दर्शन किये तदनन्तर नगर के सुखियों से जो बड़े २ अच्छे मनुष्य थे उनसे मिलाप किया और हर एक को रुपये और मोहरें देकर कहा कि ईरान के बादशाह ने कहा है कि मैं तुम से बख्त प्रसन्न हूं और तुम लोगों का उपकार मानता हूं और सदा भलाई चाहता हूं यह कहकर डुग्गी पिटवा दी कि आज के दिन से जिस के घर में लड़का उत्पन्न होगा वह ईरान के बादशाह का नौकर होगा सो पैदा होने के साथ ही लड़के के मालिक हमारे पास ले आवें और उस लड़के को हम देखावें हम बादशाह की ओर से

उसकीसेवाकीनिमित्तमासिकनियतकरदेवेंगेऔरउसकानामभीहमीरखें गेऔरजोकि सेनाबुजुरुच्चमेहरकेसाथअधिकथीइसलियेनगरकेबाहरडेरा कियापरंतुसदाबुजुरुच्चमेहर ख्वाजहअबदुलमतलबकेदर्शनकेनिमित्तआता और कभी २ ख्वाजह अबदुलमतलबभी बुजुरुच्चमेहरके समीपजाता एक दिनपन्द्रहबीसदिवसकेपीछे ख्वाजहबुजुरुच्चमेहरख्वाजह अबदुलमतलबके भेंटकेनिमित्तनियतसमयपरजोआयातोख्वाजह अबदुलमतलबने सलामके अनन्तर काहाकि कलहूसआधीनकेपुचउत्पन्नहुआहैईश्वरने भाग्यवान् और प्रतापीपुचहुपाकियाहै बुजुरुच्चमेहरने उसी समयमँगाकर उसका मुंहदेखाऔरपांसाफेंककरउसकीरीतिविचारी जानागयाकि यह वही लड़काहैजो सप्तद्वीपके बादशाहोंसे करलेगाऔरसम्पूर्ण संसार मेंअपना प्रतापफैलावेगाऔरजितनेदेशसबसंसारमेंहैं पहाड़समेतइसके वश्य रहैंगे औरबड़े२प्रतापीमनुष्यइसकेआगेतुच्छरहैंगेऔरदम्भियोंकीघटतीऔर सदाचारियोंकीबढ़तो होगी न्यायकीवृद्धि और अन्यायका नाशहोगा बुजुरुच्चमेहरने उसके मस्तककोचूमलियाऔर हमजा उसकानामरक्खा औरकृतकृत्यहोकर ख्वाजहअबदुलमतलबकोमंगलाचारदियाऔरपरस्पर में आनन्दबधाये हानेलगेजितने मनुष्य वर्त्तमानथे सबनेख्वाजह बुजुरुच्च मेहर सहित काबा की ओर हाथ उठाकर धन्यवाद किया और हमजाके आनन्द रहनेका वरमांगा ईश्वरकी प्रशंसा बारम्बारकी कई सौ संदूक मोहरों के हमजाके पालने केहेत बुजुरुच्चमेहर ने ख्वाजह अबदुलमतलबको देकर और हीरा मोती और वस्त्र पहिनने के हेत सौगात की रीतिसे दिये ख्वाजह अबदुलमतलब ने अरबकी रीति के अनुसार शरबत बनवाकर चाहा कि सबको पिलावें औरस्नेहियों औरकुटम्बवालोंऔर पड़ोसियों को बटवावें बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि अभी धीर्य करो और दो मनुष्योंको आलेनेदो किउनकेभी लड़के आपकेलड़केकेमित्रप्रेमी होंगे और उपकारी और सहायक होंगे बुजुरुच्चमेहर यह कहताही था कि बशीरनामीसेवकख्वाजह अबदुलमतलबको अपनेपुचकोभी लायाऔरकहा कि सेवककेघरमेंआपकासेवक उत्पन्न हुआहैबुजुरुच्चमेहरनेनामउसलड़के कासुक्रबिलवफादाररक्खाऔरवशीरकोएक तोड़ा मोहरोंकासुक्रबिलके पालनेकेहेतदिया औरकहाकियहलड़काबानविद्यामेंबड़ापराक्रमीहोगा फिरवशीरअच्छालेकरअपनेघरकीओरचला मार्गकेमध्यअमीजमीरीसार-बानसे भेंटहुईउसनेवशीरसेपूछाकिकहांसेआताहैऔरयहतोड़ामोहरों काकिसनेदियाहै उसनेसबसमाचारब्योरासमेतवर्णनकिया वोप्रसन्नहो-कर घरमेंजाकर सबवृत्तांत सुनाकर अपनी स्त्रीसे कहनेलगा कि तू सदा कहा करतीहै कि मैंगर्भसेहूं सो जल्दपुच उत्पन्नकरकिजिससेरुपयाऔर मोहरेंहाथलगें औरआनन्दित होकर समय व्यतीतकरें उसनेकहा कि तुझे कुछ चेतहै मुझे अभीकेवल सातवांमहीनाआरम्भहैइतनेदिनोंमेंमुझे

क्यों क्लेशहो मेरे शत्रुओंको पीड़ा होवे उसनेकहाकि तू कांखना अंगी-कार कर कदाचित् पुत्र उत्पन्नहो जो आजभोरमें लड़काहुआ तो मेरी इच्छा पूर्ण होगी जो दो महीना पीछे उत्पन्न होगा तो मुझे क्या लाभ होगावह क्रोधित होकर बोलीकि तेरीबुद्धि जातीरहीहै पीरसे लड़का उत्पन्न करताहै बुद्धिहीन अन्यायी तूमुझे आंखें दिखाता है उसकोजो क्रोध आया तो एक लात इसबलसे उसको मारी कि गर्भ स्थान में लगीकि जिससे वह बिचारी पीड़ासे लोटने लगी बच्चा तौ उसके पेटसे निकलपड़ा और वहमरगई अमीरने झटपटपुत्रकोअंगरखा कीआस्तीन में लपेटलिया बुजुरुच्चमेहरके निकट लेजाकर कहनेलगा कि हेकृपानिधान इस दासके घरमेंभी पुत्र उत्पन्नहुआहै और सुभाग्यने यह दिनदिखाया है मालिक को दिखाने लायाहूं इसका नामभी आपकेरोजनामचा पर लिखवाने आयाहूं ख्वाजे बुजुरुच्चमेहरनेउसे देखकर हँसदियाऔरख्वाजे अब्दुल्मतलबकीओरदेखकरकहाकियहपुत्र बादशाह अच्छाहोगाऔर बड़ाचालाकचतुरफरेबीहोगा बड़े२ बादशाह औमलबलिष्टइसकानाम और इसका चर्चा सुनकर कांपेंगे और सैकड़ों बल्कि सहस्रों कोआप अकेले जीतलेगा और बड़ी सेनाको केवल अकेले अपने बल से भगा देगा और बड़ा चालाक प्रवीण होगा यह दयाहीन और अन्यायी ईश्वर को भी न डरैगा अमीर हमजा का सहायक और मित्र होगा मित्रतामें बड़ उपकारी होगा यह कहकर जो बुजुरुच्चमेहर ने उसको गोदीमें लेलिया तो वह चीखेंमार२ कररोनेलगा ख्वाजे बुजुरुच्चमेहरने अपनी अंगुली उसके मुंहमेंदेदी उसने अंगूठीख्वाजेकी अंगुलीसे उतार ली और फिर चुपारहा जिससमय ख्वाजेने अंगूठी अपनी अंगुली में न देखीतोइधाकी जेबोंमेंढूंढ़ी जब न मिली तो चुप होरहा जिससमयसबने शरबतपिया ख्वाजेने एक बूंदशरबत का उसके मुंहमे डालदिया मुंह जो खुला तो अंगूठी मुंहसे गिरपड़ी बुजुरुच्चमेहर अंगूठीको उठाकर और हंसकरख्वाजे अब्दुल्मतलबसेकहा कि यहपहिली इसकीचोरीहै मुझीसे प्रारम्भ कियाहै यह कहकर कहाकि मैंनेइसका नाम अमर रक्खाऔर दो सन्दूक मोहरोंके अमीरकोदेकर कहाकि अच्छीभांति इसकीसेवा चित्तसे करना और इसकी शिक्षा अच्छेप्रकारसेकरनाउसने भी अशर-फियोंके तोड़ लिये और कहनेलगा कि इसकी माता इसके उत्पन्नहो-तेही मरगईमैं इसको किसभांतिसे पालूंगा किसभांति इसकी सेवाकर सकूंगा बुजुरुच्चमेहरने ख्वाजे अब्दुल्मतलबसे कहाकि हमजाकी भी मा मरगईहै औरइनदोनों लड़कोंकोभी महतारी नहींहै अब उचितहैकि आप इनदोनों बच्चोंको अपने घरमेंरक्खें और आदियेवानों मादीकर्ब की माताजो इबराहीमने हमजाके दूधपिलाने के निमित्त मुसल्मान करके भेजाहै सो वह चलीआती है आप अगवानी लेकर लेआवें और

हरिनी ओरका स्तन हमज़ाको औरबायां सुक़बल वफ़ादार और उमर अय्यारको पिलावें ख्वाजेअब्दुल्मतलबबुज़ुरुज्जमेहरकी आज्ञानुसारआ-दियेवानों को ले आये और पञ्जनईकी भांति सिष्टाचार करके शरबत पिलाया और हाथ पांव धुलवाय और तीनों लड़कोंको उसके हाथमें दूध पिलाने के निमित्त उसको सौंपदिया जबछः दिवस अमीरके उत्पन्न होनेकेव्यतीतछ्येछठीका दिवसहोचुका बुज़ुरुज्जमेहरने ख्वाजेअब्दुल्मत-लबसेकहाकिप्रातःकाल अमीरका हिंडोला ड्योढ़ीपर रखवादीजियेगा और जोवहपेलना उठावावे तोउसके निमित्तकुछ शोचनकीजियेगा कि ईश्वरने नानाप्रकार के पदार्थअपनी रचनासे उत्पन्नकियेहैं और प्रत्येक वस्तुका रंगरूप भांति२के दिखायेहैं एक स्थानहै जिसमें परीजनअप्सरा आदिक रहतेहैं उसकानाम क़ाफपर्वतहै उसके आसपास बहुत घर बनेहैं उन सबमें जिन्नदेवपरी के समूह और ऊंट और हाथी घोड़सुहें आदिक रहतेहैं और वहांका बादशाह शाहरुख़का पुत्र शहपाल नाम है जिसका बहुत सुन्दर चन्द्रमा समान मुखहै उसका मंत्री जो इस समयमें न्यायकरनेमें अद्वितीयहै औरबुद्धि व ज्ञानमेंउसके बराबरदूसरा नहीं मिलताहै वह ईश्वरके स्मरणमें ध्यानारूढ़ बैठाहै सो हमज़ाका पा-लना आपने बादशाहके समीप मंगवावेगा और सातदिन के पीछे फिर आपके समीप भेजवादेगा इसमेंअधिक लाभहोगा और विविध प्रकार के काम और मनोर्थ उससे प्राप्त होंगे यह कहकर ख्वाजे अब्दुल्मतलब से आज्ञा लेकर अपनीसेनामें गया ख्वाजेअब्दुल्मतलब समयको देखता रहताथा और उसघड़ी कहेहुयेका ध्यानलगाये हुये बैठाथा ॥

अमीरहमज़ाको क़ाफपर्वत की ओर उड़ालेजाना ॥

गुणोंकी प्रकाश करनेवाली लेखनी क़ाफ़पर्वतकीओर उठालेजाना यों वर्णन करती है और प्रवीणों को मधुरचरित्र यों सुनाती है कि एक दिन शाहरुख़का पुत्रशहपाल क़ाफपर्वतके बादशाहकी गद्दीपर सुशो-भितथा और पर्वत के आसपासके अठारह बादशाह उसके आधीन और करदेनेवाले न्यायशालामें उपस्थित रहतेथे और इस भांतिसे बड़े२लोग प्रतापवाले उसके निकट सदैव आतेथे इसीकालमें द्वारपालने आकर आनन्द समाचार विनयपूर्वककहा कि आपकी पुत्री सुभाग्य पवित्रचन्द्र के समान मानोंआसमानसे आईहैउत्पन्नहुईहैबादशाहने ख्वाजे अब्दुल रहिमानसे कि जो उसका मंत्री बुद्धिमान और सुलेमान बादशाह और सकल ज्ञानवानोंका संगीथा कहा कि इस लड़कीका नामरक्खो और उसके ग्रहविचारोकैसेहैं और भाग्यकिसभांतिकीहै ख्वाजे अब्दुलरहि-मान बादशाहकी आज्ञानुसार शाहज़ादीका नामआसमानपरी रक्खा और रमलकेद्वारा विचारकर बादशाहसे यह शुभसमाचार वर्णनकिया कि हेपासागरका कल्याणहो यहलड़की क़ाफ़केअठारह परदे परराज्य

ी और बड़ीप्रतापी सुलक्षणीहोगी परन्तुआजके अठारहवेंदिन
देव बलवान्हैं वह आपकी आधीनता न अंगीकारकरके फिरबैठेंगे
आपकाडर कुछभी न मानेंगे औरगुलिस्तानदूरमजरी व सीमी व
कुम इत्यादि छोड़ जितनेनगरहैं सब आपसे छूटजायँगे किन्तु उसस-
मयमें एकमनुष्य चतुर्थभागबासी आयेगा वह इनसबको जीतकर प-
रजित करेगा नयेशिरसे आपको सबदेशदेगा बादशाह यहबात सुनकर
अति प्रसन्नहुआऔरकहा किदेखो तोवहलड़का उत्पन्नहुआहैयानहीं
वह किसदेशकाबासीहै फिरदूसरेबार जोबिचारकिया और जानकर
कहा कि अरबदेशमें एकनगर मक्काहै वहांके सरदारका वह लड़काहै
और आज छठादिनहै कि वहउत्पन्न हुआहै उसकानाम हमजा रक्खा
गयाहै और आजपलना उसका उसके पिताने डेवढ़ीपर रक्खाहै बाद-
शाहनेकहा कि चारजिन्नजाकर उसका पलना उठालावें और उस सुख
शालिको हमारे समीपलावें औरआप आनन्दमें मग्नहुआ कोश
का पाट खुलादिया और पुण्यकरनेलगा बादशाह आनन्दहीमेंथा कि
इसीकालमेंपरीपुत्रोंने हमजाका पलना लाकर रखदिया बादशाहने
सेवाकेहेत प्रतिजिन्नको पारितोषिकदिया जितने न्यायशालामेंथेउस
रूपदेखकर चित्रलिखेसे आश्चर्यमें डूबगये उसको देखकर परीपुत्र
मगत होगये बादशाहने अमीरको उठाकर गोदमेंलिया और सुले-
मानी अंजन मँगवाकर उसकी आंखोंमें लगाया और दूधपिलानेके
लिये बादशाह दायी उसकीसेवाको ढूंढ़नेलगा उसकी आज्ञानुसारशीघ्र
ही उपस्थितहुईं और देवपरीके समूह बाम सिंहकादूध सातदिन
पिलाया खाजेअब्दुल रहिमानने कहा कि रमलके द्वारा मालूम
होताहै कि इसी लड़के से आपकी लड़कीका बिवाह होगा और पर-
मनुष्य और जिन्नातसे नातेदारी इसीके भाग्यसे होगी बादशाह
सहोकर एक और पेलना कि जिसकेपाये मूंगेके और पट्टी लाल
मणिकी सुवर्णसे जोड़ी बनीथी और रेशमसे बिनवाकर उसपर अमीर
लेटादिया और भांति २के रत्न उसमें रखवादिये और फिर उसीमें
अमीरको सोलाकर जोजिन्न लायेथे उनसेकहा कि जहांसे लायेथे
रखआवो परन्तु बिचारसमेत रखआना उसके घरका सबसमाचार
मुझेबताना आज्ञा पातेही अमीरका हिंडोला जहांसे लायेथे
उठाया और आनन्दितहोकरसकलसमाचारबादशाहकोसुनाये॥

बुजुरुच्चमेहरका मदायनकीओर जाना और वहां पहुंचकर आनन्द करना ॥

इतिहास लेखक इससमाचारको यों वर्णन करतेहैं कि एक सप्ताहके
पीछे खाजे बुजुरुच्चमेहरने अब्दुलमतलब से कहलाभेजा कि सुधितो
लियेकि हिंडोला छतपर आयाहै कि नहीं वहखोयाहुआअपना
आपनेपाया कि नहीं यह सुनकर खाजेअब्दुलमतलबने आदमी जो

कोठेपर देखनेके हेतभेजा तो वह हिंडोला देखकर भौचकगया और उसीकीओर आश्चर्यवान् होकर टकटका बांधकर देखनेलगा खाजेको फिर समाचार जनाया कि अमीर एकदूसरे पलनाको कि आसमाननेभी ऐसाकभी दृष्टिसे न देखाहोगा लेकर आयेहैं कि जिससेसबछत प्रकाशित होरहीहै सकल कोठामें लाल लालो देरहेहैं ॥

दोहा ॥

यूसुफ़ जो खोगयाथा गुण न लीन जेहिदेह
कुनआंमें पूनिआपगे पिता हेतकरिनेह ॥

खाजेअब्दुल् मतलबने यह वृत्तान्त सुनतेही सब समाचार प्रतीतमान आनन्दसहित बुजुरुचमेहरसे कहलाभेजा वह सुनतेही अपनी सेनासे आया और अमीरको देखकर आंखें प्रकाशितकी और खाजे अब्दुलमतलब से कहा कि मुझे बादशाहसे आज्ञालेकर आये बहुतकालव्यतीत हुआ और मेरे लड़कों बालोंका ईश्वर जाने क्यासमाचार हुआहोगा अब बादशाहके देखनेको चित्त अकुलाताहै अब मैंतो आपसे बिदा होताहूं आपके कल्याणको सदा चाहताहूं परन्तुआप अमीर और मुक्रबिल और अमरकीसेवासे न चूकें और अपने उपाय पढ़ने लिखनेमें भी अमकरियेगा जबकभी मेरापत्र आयाकरे उसका उत्तर शीघ्रकृपा हुआकरे अभिप्राययत्नसमेत लिखा कीजियेगा औरअमीरकोसप्रदीप काचतुर बादशाह विदित कीजियेगा अपनेसाथियोंमेंइसबातकाचरचा कीजियेगा खाजे अब्दुल्मतलबने सब स्वीकार किया और एक बिनय पत्रलिखकर खाजेबुजुरुचमेहरको प्रशंसाके हेत दिया बुजुरुचमेहर उस बिनयपत्रको लेकर मदायन देशकीओर चला कुछकालकेपीछे अपने स्थानमें पहुंचा और बादशाहके दर्शनसे कृतकृत्यहोकर वह बिनय पत्रदिया और अब्दुल्मतलबकी उत्तमता और साहसकी बड़ी प्रशंसा की बादशाह उसे पढ़कर अति प्रसन्नहुआ और बुजुरुचमेहरका बड़ा पारितोषिक दिया उसके कईमहीनेकेपीछे एकदिवस नौशेरवांकेका-जसकी गद्दीपर बैठाथा सब सभाकेलोग मंत्रीआदि सभामें बैठेथे औरगानेवाले देशोंके और बणिये सौदागर सबओरोंके आयेथे सब नगरोंके वृत्तान्त सभामें पढ़ेजातेथे कि चीनका वृत्तान्त बांचागयातो उसमें यहलिखाथा कि चीनके महाराजके गुरु बहराम कापुत्र खाक़ानुल्ला गद्दीपरबैठाहैऔर यह बड़ाप्रतापी बादशाह हुआहै औरअपने समान दूसरेको पराक्रमी व साहसी नहींजानताहै रुस्तम बनरीमा उसके आगे बुड्ढीस्त्री तुल्यहै आखेटमें जिसहाथीको थप्पड़ मारताहै वह चिघड़के बैठजाताहै और शेरबबरको कुत्तेके समान जानता है और सबलोग उसकेबलको मानतेहैं उसने देशभी बहुतविजयकर लियाहै और चारसालका कर जो उसके ऊपरहै उसके देनेकीइच्छा

हीं है अपनेबलपर यह घमंडकियाहै और यह सबसेकहता है कि मुझको समुद्रीप काबादशाह करदेवे यातो अपने रुपयेका नाम न लेवे नहींतो मदायनको लूटकर उजाड़दूंगा यह सुनकर बादशाह सन्देह युक्तहोकर बुजुरुच्चमेहरसे सलाहपूंछी कि इसकाकोई उपायकरना उचितहै खाजनेकहा कि इसका उपाययहीहै कि अभी उसको जोर अच्छीभांतिनहीं प्राप्तहुआहै किसीनौकरकोआज्ञादीजियेकि उसदुष्ट को बांधकरके आपके समीपलावे या उसअबिबेकी का शिरकाटकर सरकारमें लाकरधरे नहींतो बलवान् होनेपर उसकीजड़ उखड़ना कठिनहोगी चीनकेदेशमें उसके शरीरसे उपद्रव अधिकहोंगे बादशाह ने कहा कि तुमको शक्तिहै जिसे इसकार्यकेयोग्य जानो उस दुष्टके पराजयकेहेत भेजदो बुजुरुच्चमेहरने अस्फजारीकेपुत्र गुस्तहमको जोबड़ा शूरबीर और बुद्धिमान् और मल्लोंके समूहका मालिकथा बादशाह से पारितोषिक दिवाकर बारहसहस्र सवार पोढ़गरसे चीनके बहराम पहलवान्के पराजयकेहेत भेजा औरभी बड़े २ सुखिया सेनापति युद्ध प्रवीणोंका साथकिया और कठिनआज्ञादी कि करलेनेके सिवाय चारसालकी भेंटजुर्माना के भांति लेना और उसे पराजित करके अति कष्टदे बांधलेना और बेड़ी पहिनाकर न्यायशालामें भेजना खबरदार इसमें सुस्ती कुछभी न करना यहसुनकर गुस्तहम सलाम करके चीनकीओर चला॥

अमरके लाल चुराने और पाठशालामें जानेका वृत्तान्त॥

अबयहां अमीर और अमरके पाठशालामें पढ़ने जानेका इत्तान्त यों वर्णन करतेहैं कि आदियावालोंका यह मालूमथा कि एक स्तनका दूध अकेले अमीरहमजाको और दूसरी छातीका मुक्तबिल व अमरको पिलातीथी और उन दोनों से अमीरहमजापर कृपादृष्टि अधिक रखतीथी परन्तु अमीर प्रतिदिन दुबलाहोता जाताथा और अमर मोटाहोता जाताथा यद्यपि दोसाथी मिलकर एक स्तनका दूधपीते थे सब आश्चर्यवानथे कि इसका क्याकारणहै कि यहऔरलड़कोंसमोटा है और खरूपवान्है एक दिवस आदिया रातको सोती सोतीजोचौंक पड़ी देखती क्याहै कि अमरने अमीर और मुक्तबिलकाता पलंगसे नीचे ढकेलदियाहै और आप दोनों स्तनोंकादूध पीरहाहै प्रात समय आदियाने यह समाचार सबसे वर्णनकिया और कहा कि यह लड़का जब बड़ाहोगा बड़ानामी चोरहोगा कि अभीसे ऐसीचालें करताहै बड़ाधीठपन कररहाहै उसके कुछकालकेपीछे जब पैरों चलनेलगा अमरने अब यहबात अंगीकारकी कि जब घरके सबलोग सोजाते तब आप धुटुओं चलकर जिस दालानमेंजाता स्त्रियोंकाछल्लाअँगूठीऔरजो कुछ गहनापाता उठाकर आदियाके पानदान या उसकी तकियाकेतले

रखदेता औरआपसोजाताप्रातःकालजबलोग अपनामालढूंढ़तेतो आदि-यावानोकी तकियाके नीचे या उसकेपानदानमेंपातेतबअपना २ सबलोग उठालेजाते आदिया बड़ाआश्चर्य करतीऔरलज्जित होतो किन्तुमुखसे कोईशब्द न कहती एकदिवस अमीरके हिंडालेका लाल चुराकर अपने मुखमें रखलिया और कुछ किसीको मालूम न हुआ और यह वृत्तान्त खाजेअब्दुलमतलबको पहुंचा कि हिंडालाका एकलाल खो गया वह अबाहिर बहुमोल्य मकानहीसे वहगया दैवयोग्यसे उसदिन खाजेकीदृष्टि अमरके मुखपरपड़गई देखा कि एकओरकागाल कुछ सूजाहै खाजेने औरभी आदिया और लौंड़ियोंपर क्रोधकिया और अमरको निकट बुलाकर देखनेलगा कि यह फूलाकैसाहै गालको जो दबाया उसके मुखसे लाल निकलपड़ा खाजेनेकहा कि ईश्वर खैर करै कि इस बाल्यावस्थाका यह चरित्रहै तो युवामें देखियेयह क्या करैगा क्या २ यह ढहावेगा गरज कि अमरके हाथसे सबरोतेथे और कभी लड़कपनके कामसे हँसतेथे जब अमीरहमजा और मुक़बिल और अमर पांचसालके हुये खाजे अब्दुलमतलबने एक गुरूकेनिकट जोहा-श्रम और नबीअम्मियांके लड़कोंको पढ़ाताथा उनतीनोंकोभी पढ़नेके हेत पाठशालाकी रीतिके अनुसार भेजा पहिलेदिन श्रीगणेशकराया गया उससमय के अनुसार आनन्दाचार कियागया जब दूसरे दिवस मोलवी अर्थात् गुरू सबकदेनेलगा अमीर मुक़बिलने उसके पढ़ानेके भांतिपढ़ा परन्तु अमरसे जब उसनेकहा कि कहो अलिफ तबबोला सच बबरहक़ है अर्थात् व्यापकहै पदके योग्यहै कहा कि मैंकहताहूं अलिफ़ कह तब कहताहै सच बबरहक़है यहक्या बातहै कैसा मूर्खहै अमरने कहा कि जोआप कहतेहैं उसकाउत्तर मैं देताहूं जोमैं समझाहूंवह आपके चरणोंके निकट बिनय करताहूं अर्थात् आपकहतेहैं कि अलिफ़ मैंकहताहूंसच बबरहक़है अर्थात् अलिफ़ सीधाहै और इसकाअंकएक है और ईश्वरभी केवल एकहै जिसे फारसीमें वहदहूलाशरीक़ बोलते हैं वहभी अकेलाहीहै जोमैंइसे अशुद्ध और झूंठबोलताहूं तोमुझे शा-सन दीजिये और मुझे कायलकीजिये औरकईभांति समझादिये आप इसमें क्या कहतेहैं कि ईश्वर एकनहींहै कोई दूसराभी उसका साथी है गरज कि सहस्रों उपायसे अलिफबे पढ़ाईगई ज्योंत्योंदूसरीपाटी कीबारी पहुंची जब अलिफ खाली बेकेतले एकनुक़्ता तेकेऊपर दोनु-क़्ता सेके ऊपर तीनिशून्य अर्थात् बिन्दी गिनाकर पढ़ानेलगेतोऔरभी अमरकाचित्त घबराया और चिढ़ाई करनेपर उतारू हुआपढ़नेके ओरचित्तकुछनलगाता व्यंगवचन बोलने लगताथा गुरूने क्रोधकी दृष्टि देखी परन्तुअपनाही कहनाकरताथालाचारहोकर हमजासेकहनेलगा कि तुमको शक्तिहैइससगुरूसे पढ़ो और अपना अमोलसमयगवांवामैंतो

नहीं पढ़ूंगा ऐसी विद्यापढ़नेसे बाजरहा इसविद्या का पढ़ना छोड़-
दिहूं मैंकायदा अर्थात् रीतिपढ़ने आयाहूं याहिसाब अर्थात् गणित
सीखने को किताब लायाहूं जो अलिफ़खालीहै तोमुझे क्या याकिसी
के पास दोएकनुक्ते अर्थात् शून्यहैं तोमुझे क्या पड़ीहै उनसे क्या प्रयो-
जनहै संक्षेप यहहै कि अमर इसीप्रकारकी बातेंकहा करताथा मुल्ला
एकदिन खाजे अब्दुल्मतलब के निकट गया और अमर के ढीठपनेका
समाचार सबवर्णन किया और सबवृतान्त कहा कि नतो आपपढ़ताहै
और न हमलोगोंको पढ़नेदेताहै जो हमलोगोंको पढ़वाया चाहो तोउसे
और किसीको सौंप दीजिये नहींतो मैंऐसाकष्ट अपने ऊपर नलूंगा उन
दोनों लड़कोंको भी बोलवा लीजिये खाजेने कहा कि अमीरको दूसरे
स्थानपर पढ़नेके हेतभेजैं परन्तु अमीर ने स्वीकार न किया उसपर यह
सुनकर रोदिया और कहनेलगा कि जहां अमर जायगा वहांमैं भी
जाऊंगा नहींतो मैं एकअक्षरभी न पढ़ूंगा खाजा लाचार होकर
चुपहो रहा और फिर सुखसे कोई शब्दभी न कहा रीतियो कि सब
लड़कों के निमित्त उनके पालक अपनी शक्तिके अनुसार भोजन बनवा-
कर पाठशाला में भेजतेथे एकदिवस का समाचार सुनिये कि
रीतिके अनुसार प्रतिगृहसे पाठशाला में भोजन आयाथा और उचित
स्थानोंमें रक्खा हुआथा मध्याह्न के समय गुरुसमेत सबनींद वशहोकर
सोगये परन्तु अमर जागताथा जोकछु चाहा उसमेंसे लेकर खालिया
और शेषपाठक के तकिया के तलेछिपाकर रखदिया जबसब जागे खाना
ढूंढा परन्तु न पाया प्रत्येक बालक क्षुधाके कारण घबराये पाठक ने
कहा कि अमर के सेवाय यहकाम और किसी का नहीं है उसके आगे
और किस्से इसभांति का कामहोगा अमरने कहा कि वाह २ स्वामी
यहबड़ी कहावत है कि नगरमें ऊंटबदनाम आप प्रथम अच्छी भांतिसे
ढूंढ़वा लीजिये जिसपरअपराध ठीकहो वहदण्डके योग्यहोगा औरवही
अपराधी है पाठकने कहा कि तूहीढूंढ़ अमरने पहिले नीतिके अनु-
सार सबलड़कों का झाड़ालिया और आसपास देखने लगा तिसपीछे
पाठकके बस्तकिया झाड़ो सबकपड़े उलटडाले सबने देखा कि पाठक के
तकियाकेतलेसेभोजननिकलाचिल्लाकरकहनेलगा कि देखोतोसाहबो ॥

चौपाई ॥

जो काबे ते अधरम होई । मुसलमान पुनि रहे न कोई ॥
जो गुरु करै काज यहिभांती । चेला किमि न होयखलघाती ॥

पाठक की जो ऐसी नियतहै तो मूर्खोंके ऐसे वृत्तांतपरक्यापश्चात्ताप
है हमलो चलो उठो अपने पिता से कहो कि चोर पाठक के पास न
पढ़ेंगे ऐसी विद्या पढ़नेसे अपढ़ रहना उचितहै हमको किसी प्रवीण
सुधी नीतिवान् गुरू के पास पढ़ावो और किसी तीव्र बुद्धि के निकट

बैठावो पाठक ने यहबात सुन लज्जित होकर दो तीन तमाचे अमर मारे जब शासना न मानी तब कोड़े फटकारे अमीरने अमरका अपरा क्षमाकरवाया और अधिक दण्ड न होने दिया दूसरे दिन मध्याह्न के समय जब पाठक और शिक्षक सोगये तब अमरने पाठक का शमला किरमानी हलवाई के निकट गिरोंधर के पांच रुपये की मिठाई लाकर पाठशाला में रखदी और आप सोरहा पाठक ने उठकर जब मिठाई अधिक देखी तब जीमें प्रसन्न हुआ किन्तु साथही अमर की चलांकी के ओर ध्यान किया प्रत्येक से पूछा कि यह कैसी मिठाई है औरकहां से आईहै सबोंने कहा कि हम नहीं जानते हैं तब अमर को जगाकर पूंछा तो आपने उत्तर दिया कि बाबाजी ने प्रसाद माना था सो यह मिठाई लेकर आयेथे दो एक स्नेही साथ लाये थे आपकोसोतेसे जगाना बेअदबी समझ चलते समय मुझ से कहगये थे कि जब पाठक सोकर उठें इसपर फ़ातिहा अर्थात्देवता का नाम लेवाकर बटवा देना और मेरा भाग तुम लेलेना गुरू ने कहा कि किसके नाम पर अर्पण करूं अमर ने कहा कि बाबा शमला के नाम पर पढ़ो पाठकने कहा कि यह कैसानाम है यह सुन अमर बोला कि फ़क़ीरों के ऐसेही नाम होतेहैं ऐसे नामों से उनके गुरू उनको पुकारा करते हैं गुरूने उसको शमलार्पण करके ऊपर से अच्छी २ मिठाई निकाल कर पहिले आपही खाई शेष अमर ने सबलड़कों को बांटदी और आप भी खाई उन पेड़ों को जिन्हें पाठक ने खाये थे अमर ने कुछ जमालगोटा मिला दिया था थोड़ी देर के पीछे पाठक साहब के पेट में गड़गड़ा कर दर्द होना आरंभ हुआ पाठक को दस्तपर दस्त होनेलगे पाखाना तक जाना कठिन हुआ हाथ पाँव थरथराने लगे पाठक ने अमर से पूछा कि अरे इस मिठाई में क्या मिला हुआ था कि जिसके खाने से मेरा हाल इस भांति का हुआ है अमर ने कहा कि जिस प्रकार से आपको सकल वर्णों में सैकैं ऐसी याद हैं कि प्रत्येक शब्द लातहैं मैंभी लाख काफ़ुँहरे निकालूंगा कि मुझको भी यही अक्षर अच्छे याद होगये हैं मिठाई तो हम सबने खाई है कि डकारतक भी नहीं आती है जो मिठाई के खाने से आपका समाचार ऐसा पतला हुआ तो हम लोगोंको क्या हुआहै किन्तु ऐसा जोड़ा तो कदाचितही जैसा कहावत में है कि किसी को बैंगन दी जियाले और किसीका पाचक आपने मेरे जानेके आगे ऊपर २ किसी लड़के से मिठाई उड़वाई होगी या बेसम्हार मिठाई खाई होंगी बाबा शमला ऐसेनथे कि कोई उनसे खराब काम होवे और उसके पेटमें किसी भांति की बुराई न उत्पन्न हो सेवाय इसके आप काहेको भूखके मारे बहुतसी खाली कि जिससे पचनेमें भी कठिनता अधिक जनाई अमर की ढिठाई अमीर ने जान करके मट्ठा मँगवाया पाठक मोल्लाको पिलवाया और कहा कि

मिठाई की उष्णता ने गर्मी विशेष की है आपदही को पान कीजिये और चित्तमें किसी भांतिके सन्देह न करिये ईश्वर २ करके पाठकका भी बचा उस बलाय से सावकाश मिला जब चार घड़ी दिनरहगया पाठक सब बालकों को छुट्टी दी सबने अपने २ घरकी राहली पाठक ने भी अपनी पगड़ी और फेंट सँवार देखें तो शमला नहीं मिलता खोगया लाचार होकरके फेंटाका दुपट्टा छोरकर मूड़ में बांधा और घर की राहली जब हलवाईकीदूकानके निकट पहुंचे तब हलवाई शमलालेकर दौड़ा और कहाकि आपको शमला अर्थात् पाटम्बरभेजकर मिठाईमगाना क्याअवश्यथा क्यासुझेलज्जित करनाआपकोथा क्यापांचरुपयामेरे ऐसेथे कि जिससे आपकी विश्वास नमानता दशपांच दिवसका धीरज न होता दामोंकी कुछ ऐसी मुझे आवश्यकतानथी जबमासिक आपका आयाकरे भेजवा दिया कीजिये यह दूकान आपकी है जब जिस प्रकार की मिठाई चाहिये मँगवालिया कीजियेगा पाठक यह बातें सुन कर कुछ बनावटकी बातें कहीऔर शिमलालेकर अंगाकीजेबमेंसे पांचरुपया निकालकर लाचार हो हलवाईके हाथमेंधरे और चित्तमें विचारकिया किवह वही मिठाईहै कि जिसको अमरने आजअर्पण करवाई थी रात अच्छीभांति व्यतीतहो प्रातःकालमेंहूं वा अमर है कोड़ाहै या उसकी पीठहै अबप्रातः समय होतेही सबसे प्रथमअमरशालामें आया औरबिछौनाझाड़के बिछाया और पाठक की मसनद तकिया लगाकर किताब खोलकर पढ़नेलगा पाठकने आकर जोउसको शालामें पढ़ते हुये देखा चित्तमें विचारा किइसपर मेरा डरछागयाहै जिससे आज सबसे प्रथम शालामें आयाहै आज इसको कुछ न कहना चाहिये भुलावादेना चाहिये पाठकने सबको पढ़ाकर कहाकिमैं हम्माममें स्नानके हेत जाताहूं बहुत शीघ्र वहां से आताहूं तुमसब बैठे २ पढ़ो अपना २ पढ़ाहुआ याद करो और खिज़ाब बालोंमें लगानेको अमरकेहाथपहिलेहीसेभेजदिया था पीछे आप जाने का मनोर्थकिया अमरने मार्गमें समयपाकर तोला भरहरताल मिलादिया और अच्छी भांति खिज़ाबमें घोरदिया गुरूजी हम्माममें पहुंचकर खिज़ाबको दाढ़ी मूछोंमें अच्छी भांति लगाकरएक घड़ीके पीछे जब उष्णपानी से धोया तोसब दाढ़ी मूछोंके बाल गिरपड़े तब अत्यन्त लज्जित हुये और सबसे मुहँ छिपाया रात्रीके समय एक कपड़ा मुहँपर डालकर खवाजेअबदुलजतलबके निकटजाकरविनयकीऔर अपनी सूरतदिखाई और अच्छीभांति से मुहँपोटा और रोरोकरअति विलापकर कहाकि अमरने इस बुढ़ापेमें मेरीयह गतिकी और इस दुष्ट अवस्थामें मुझे किस प्रकार का कष्टदियाहै कि लाजके कारण किसीको मुहँनहीं दिखासक्ता किसी मित्र स्नेहीके निकट नहीं जासक्ताऔरसब वृत्तान्त शमला और मिठाई आदिका वर्णन किया और शमालगाटा

डालदेने का सब समाचार कहा खवाजेने उनको तो विनय करके विदा किया और अमरको कष्टदेकर घरसे निकालदियाऔर अमीर से कहा कि जो तुमने कभी अमरका नामलिया तो हम तुमपर बहुतक्रोधकरेंगे ऐसे अयोग्यकुमार्गीको अपने समीप न बैठने दियाकरो मूर्खको अपने निकटकोई नहीं बैठाताहै और अपने घरमें बोलाताहै ऐसेकीसंगत में बदनामी प्राप्तहोती है बुरेकेसंग बुराईही मिलती है अमीर अमर का बिछुरना कब चाहता था निशिदिन अमीररोया करता और भूखाबैठा रहता यह समाचार जब खवाजे अबदुल्मतलब पर बिदितहुआ लाचार होकर अमरको बुलवाकर उसका अपराध क्षमाकिया और अमीरको सौंपदिया और एक चिट्ठी गुरूके नाम अपराधके क्षमाकरनेके हेतदी पाठकने उसका अपराध क्षमाकिया और उसी प्रकार फिर भी अमर पाठशालामें पढ़ंचा एकदिवस किसी विद्यार्थीके घरसेकुछ भोजनआया गुरूजीने अमरको देकर कहाकि इसको मेरेघरमें देआइये और मार्ग में कुछचालाकी न देखाइयेगाजोमार्गमें खोलोगेतो इसमेंमुर्गका बच्चाहै उड़जायगा फिर कठिनता सेभी न मिलैगा अमरनेकहाकिमुझे खोलनेसे क्या कामहै आपकीआज्ञानुसारघरमें दियेआताहूं औरउनसे उत्तरलाताहूं फिरउस भोजनको लेकर वहांसेचलाजबपाठकके घरकेनिकटगया तो एक स्थानस्वच्छमेंउसभोजनको शिरसेउतारकरखोलातोउसमेंमीठे चावल दृष्टिपड़े चित्त चलायमानहुआ भूखातो थाही उसी स्थानपरबैठकर अच्छीभांति भोजनकिया शेषकुत्तोंको डालदिया और खालीपात्र रखकर कसनी और भोजनको ढकना फाड़कर आगेबढ़ा पाठकके द्वार पर पहुंचकर गुरुस्त्रीको हांकदी बहुतबकिबाड़केनिकटआई तब उनको देकर कहाकि पाठकने इसकेखोलनेकेनिमित्त मना कियाहै कि खाना कुछ न बनाना और पड़ोसी भी जो दो एक मित्रस्नेही तुम्हारेहोंउनको भी खाना बनाना मना करना और उनके यहां खाना भेजवाना वहबिचारी अमरकाछलनजानतीथी उसनेखाना भी कुछनबनाया और पड़ोसियों को भी जो दो स्त्रियां उसकी अति मित्रथीं भोजन बनानेको मनाकरवा भेजा दैवयोग्यसे उसदिन जो गुरूजी पाठशालासेउठतोएक मित्रकी मुलाक़ातको गये किघड़ीभर मन बहलाकर कुछ कहते सुनते चलें उसने दो पहर रात गयेतक पाठकको जाने न दिया यद्यपि खाना खानेका शिष्टाचार उसके मित्रनेकियापरंतु पाठकको मीठे चावलों का स्वाद मुहँमें था कुछ न खाया जब विदाहोकर घरगये और स्त्रीसे पूछा कि आज क्या बनाया है तुमको आजबड़ा कष्ट हुआमेरे आनेका ध्यान कियेरही उसने कहाकिआपनेभोजनबनानेकेहेत मनाकराभेजाथाऔर तुम्हारीआज्ञानुसारपड़ोसकीस्त्रियोंकोभीभोजनबनानेसे मनाकरदिया थासोआजनाइकआधीरात तकबाहररहेपाहुनोंसेऐसेबेसुधिरहे किवह

बिचारीभी अपने पुरुषोंसमेत भूखीबैठीहैं खानेका मार्ग देखरहीहैं अबजोआपने भोजनभेजाथा वहरक्खाहै पहलेतो उन बिचारियोंको जिनको मैंने तुम्हारे कहनेके अनुसार न्योतरक्खाहैभेजोफिरआप खान पानकरें पाठक यहबाक्य सुनकर चित्तमें कहनेलगा कि ईश्वर अच्छा करे यहचाल अमरकीहै और यहबात भी ढिठाईसे बाहरनहीं है उस पाषकोलेखोलातो उसमेंभोजननदेखा और चित्त में कहाकि जांचेकुये कोजांचना मूर्खताहै तेरीबुद्धिपर क्या परदा पड़ाहैकि इस दुष्टके हाथसे कईबेर फलपायुकाहै फिर उसपर विश्वास करता है फिरपाठक ने उस राचिको स्त्री समेत उपवास किया और यहहाल सुनकर जोऔरस्त्रियां थीं वेभी भूंखी पड़ी रहीं भोर होतेही गुरू ने कुछबनवा कर खा लिया और शालामें जाकर अमरसे पूछाकि कलजो भोजन भेजाथा वह क्या हुआ अमरने कहा कि खानेसे तो कुछ भेदजाना नहीं लेकिन वह मुर्ग जो आपनेभेजाथा मध्य मार्ग में कसनी फाड़कर उड़गया और मैंने बहुत ढूंढ़ा परंतु उसका पता न लगा पाठक ने कहा कि तैंने हमारे घरमें भोजन बनाने को क्यों मनाकिया औरक्यों निष्प्रयोजन घरवालोंकोदुःख दियाऔर हमने कबकहाथा कि पड़ोसियों कोभी न्योता देना उनको भी मेरे साथ दुःखदिया अमर बोलाकि यह मुझसे अपराध हुआ पाठकने अमरको बांधकर अच्छीभांति दण्डदिया अमीरनेउसकादोषक्षमा कराया और उसकष्टसेछोड़ाया और कहाकि इसदाससे अबऐसा अपराध नहोगा परंतु अमर पाठक का मनसे जीवघातक होगया और सदैव किसी न किसी बातमें दुःखदेता औरअबूजेहल और अबीसुफियां भी इसी शालामें पढ़तेथे दोपहर के समय जब सब लड़केसोरहे नींद में आसक्त हुये अमरने अंगूठी अबूजेहल की अंगुली से उतार कर पाठक केघरमें जाकर पाठककी लड़कीके पानदानमें रखआया और लड़कीके कानकी बाली उतारकरअबूजेहलके हाथमेंडालदी और चुपका होकर लेटरहा चुपकी साधलीजब सबलड़के जागेमुंह धोधो कर पढ़ने लगे गुरू ने अबूजेहलके हाथकी अंगुली में अपनी पुत्रीके कानकी बाली जो देखी तो कुछ कान खड़ेहुये परंतु कुछ कह न सके अबूजेहल से पूछा कि यह बाली तूने क्योंकरपाई है अबूजेहल अपनीअंगुली को देखकर अति आश्चर्य माना और घबराकर कहनेलगा किमैं यह नहीं कहसक्ता कि किसने यहबाली मेरेहाथमेंपहिनाईहै अमर बोला कि आमीजी मुझसे पूछिये मैं इस वृत्तान्त को अच्छीभांति जानताहूं यह भेदमुझे अच्छीतरह विदित है यद्यपि आपके सामने कहना उचितनहीं है पाठक ने कहाकि कहो अमर बोलाकि दोपहरके समय जबआप और सबलड़के सोजातेहैं यह उठकर आपके घरजाया करताहैऔर फिर उसीपावँभट पटफिर आताहै आजजबयह उठकर चला दैवयोगसे उसी समय मेरी

भी आंखखुलगई मैंभी उसके पीछे पावँ दबाकर चलागया जबवहआपके दरवाजेपर पहुंचा इसने जंजीर हिलाई आपकी पुत्रीसुनकर दौड़ीआई प्रथमतोपरस्परबार्त्तालापकरतेरहेऔर फिरकुछआनेजानेकी बातठहरी चलते समय इसने अपनी अंगूठीउसदी और उसके कानकीबालीआपने ली इसकेपीछेयहांछिपाहुआ आकरसोगया मैंभी पीछेसेआकरसोरहा यहसुनकर पाठकक्रोधितहुआऔरअबुजेहलसेबालीलेकरइसभांतिसेउसे पीटाकिवेदमहोगयाऔरउसीसमयअपनेघरजाकरपुत्रीको निकटबोलाया और उसका पानदान मँगाया देखातो सच मच उसमें अंगूठी रक्खी है और अच्छीभांतियत्नसमेत धरीहै यह देखतेही उसबिचारी के बाल पकड़कर ऐसेथप्पड़उसकेफूलसे गालोंपरमारे कि जिससेवह घबड़ाकर अचेतहोगई और मुहँउसका तांबासा लालहोगया माता उसकी गालियांदेतीहुईदौड़ीकि क्या तू बिच्छिन्नहोगया है तेरेमूंड़पर प्रेत बैठा है उसबिचारीको मारे डालताहै उसका क्यादोष है यह कहकर एक दोहांथ अपने पतिको पीठपर मारे वह अपनी पुत्रीको छोड़कर उसके लिपटगयाऔरउसकीडाढ़ीउसकेहाथमेंऔरउसकीचोटी उसकेहाथमें टोलाके मनुष्य यह गुलशोरझगड़ासुनकर दौड़ेऔर पाठकसेकहने लगे कि तुमकोस्त्रीपर हाथडालना यहपाठ किसनेपढ़ायाथाऔर किस गुरू ने विद्याकी शिक्षाकीथी जिसकिताबमें यहलिखाहो कि स्त्रीको पुरुष मारेलिखाहुआदिखादीजियेयहबात हमकोभी समझादीजिये निदान लोगोंनेबीचबराव करदिया और प्रत्येकको समझाकर बहकहनेलगे कि मनुष्यको उचितहै कि स्त्रीपरहाथ न चलावैं दैवयोगसे उसके भोर शुक्र का दिनथा लड़कों को छुट्टी दीगई थी प्रत्येकबालक खेल कूद में प्रवृत्त थे और सब बालकक्रमसिन अर्थात् थोड़ीही अवस्था केथेअमर को नई सूझतोथी एकबिसातीसे जाकर कहाकि तुम्हारीस्त्रीका समाचार बुरा है मुझेहाथजोड़२ कर लोगोंने भेजा है बिसाती यहबात सुनकर रोता पीटताघरकोचला अमरथोड़ी दूरउसके साथहोकरअलग होबैठाऔर उलटेपावों और राह से दूकान पर आया और उसके चेलेसे कहा कि वह बड़ा बक्सजासुइयोंकाहै तुम्हारेगुरूने मांगाहैकिउसकोएकमनुष्य मोललेगा और दाममुहँके मांगेदेगा वहआपतो न आसके इसनिमित्त मुझेभेजाहै फिरआगे तुमकोअख्तियारहैवहयहसमझकर कियहलड़का अच्छाभलामानुसदीखपड़ताहै छल यहनहीं जानताहोगा बक्स सुइयों कादेदिया अमर उसेलेकर पाठशाला में पहुंचा और सूनापाकरपाठक के बिछौनामें अच्छीभांति तकिया समेतमें वहसुइयां चुभोईं और आप अपनेघरचलाआया और जोकिउस दिवस पाठकसे और उनकी स्त्री से मारपीटहुईथी इसकारणसे भोजन कुछन बनाया और झगड़ा मचाया पाठक रिसाकर शाला में आया और बिछौना बिछाया कि आजयहीं

सोरहूंगा फिरकर घर न जाऊंगा जैसेही बिछौना पर पावँरक्खा यह सुइयांतलुओं में गड़गईंतोआसक्तहोकरउसपर लेटकरजबकरैटैंलेनेलगा ता देहभरमें सुइयां गड़गईं औरचलनोके भांतिसम्पूर्णशरीरमेंछेदहोगये औरउसदिवसविद्यार्थीभीनये छुट्टीकेकारणकोईलड़का न आयाथाअब उनके शरीर से सुइयां निकालनेवाला कोईनहीं है जिस भांतिशरीर में चुभीथीं उसरीतिसे छेदीरहीं शिरसेपैरतकसबसून गया और जहांजहां सुइयां छिदगईथीं वहां २ से रुधिर की धारें छूटनेलगीं दूसरे दिवस शनिश्चरकोजबलड़केआये तो देखा कि पाठकसाहब मछलीके समानतलफतेहैं और कराहतेहैं बिछौनेपर अचेत सुरझाये छुयेपड़ेहैं लड़के सुइयां निकालनेलगे औरपाठकशूलके कारणचीखें मारनेलगे और कभीमन को पोढ़ाकरके रुकजाते थे इतने में अमर भी सबसे पीछे उस दिन गया था पाठकको देखकर रोरोकर कहनेलगा कि जिसनेस्वामीजीकेसाथ यह कियाहै जोमैं उसेजानपाता तो इनसे उसकीबुरीगतिकरता औरअपने गुरूका बदलालेता यहकहकर झटपट एकमियाना लाकर गुरूजी को सवारकराकेजर्राहकेघर लेचला जब उसबिसातीकेघरके निकटमियाना पहुंचाचुकअमरको पहिंचानकर दौड़ा और कहनेलगाकिऐलड़केतूबड़ा छलीहै और झूठमूठ की बातें बनाकरअच्छीभांति तमाशा करना जानताहै मुझे झूठ मूठ वाक्य सुनाकर कि तेरी स्त्री मरने के निकट है घर को भेजा और मेरे चेलेसे मेरा नाम लेकर कई सहस्र सुइयों का पुड़ालेकरचलागया अबतू कहां जाताहै अभी तेरी गति करताहूं और सुइयां अभीमैंतुझसेलेताहूंऔरइसछलकाखादतुझेदिखलायेदेताहूं यहबातजब पाठकके कानमेंपड़ी उससमय कानखड़े हुये और बिसाती की ओर मुहँ करके पूछनेलगे कियहकबसुइयांतेरीदूकानसे लेगयाथा अमरने कहाभेद खुलगया झटपट आंखबचाकरवहांसेचलदिया पाठशालामें आयाअमीर और मक़बिलसे कहा किलो ईश्वर मालिकहै मेराबास अब इसनगरमें नहीं होसक्ता अमीर को भी अमर के बिना कब चैनथा यहबात सुनकर पूछा भलाताहै सचबताक्यासमाचारहै अमरनेकहाकि मेरीतो इन्द्रियां इससमय स्थिरनहींहैं कि जोइत्तांत वर्णन करूं मार्गमें सब चरित्र सुनाहूंगा तब अमीरनेकहा किचल कहां चलताहै तेरेबिना मेराचित्तभीघबड़ाताहै हमतेरे साथ हैं यद्यपि आपकी चालों को खूब जानते हैं अमीर व मुक़बिल और जिन २ बालकों को अमीर के साथ प्रीति होगई थी सबके सब अमरके साथ हुये और छिपे२ डरतेकांपतेआगेपीछेदीखतेहुये उसके साथचले और अबुलकेश पर्वत की गुफा में लुकरहे और साथियों समेत उसस्थानमें एक दिन और एक राचि बासकिया जब कुछ काल बे अन्नजल व्यतीत हुआ अमीरने कहा कि अबतो भूख के कारण चित्तघबड़ारहाहै और सब साथी दुखित होरहेहैं अब पेट भरना किसी भांति

चाहिये अमर ने कहा कि आप साथियों समेत यहां रहैं सेवक भोजन लाता है देखिये तो किस भांतिके व्यंजन आपको भोजन कराताहूं यह कहकर नगर की ओर चला और एक बधिकसे दो हाथआंतलेकरजेवदा नामी बुढ़ियाके घरके पिछवाड़े पहुंचा उसकीमुरगियां घूरे परचरतीथीं उन्हैं पकड़नेलगा और ऐसा उपाय किया कि उसआंत के सिरेपर एक गांठिदेकरफेंका जो मुर्गी उसे निगलगई दूसरे सिरेपर फूकनेलगता था जब आंतफूलगई गलेमें गिरहपड़ी तो उसेपकड़कर छुरीसे मारकरऔर परनोचकर रूमालसे बांधी इसीउपायसे पन्द्रहसोलह मुरगियांमारकर बांधलीं फिरबिचाराअबकुछऔरउपाय किया चाहिये तोचारपांचपत्थर उस बुढ़ाके घरमें फेंके औरआपघात लगाकर आड़ में खड़ारहा वहबुढ़ा हल्लाकरतोहुई घरसेबाहरनिकली औरऐसी वैसीदीखनेलगीअमर तो घात लगायेही था दूसरी ओर से उसके घरमें पहुंचकर कोठरी दीखने लगा वहांएकहांड़ीमेंसुरगियोंके अण्डेजोजमाधेलेकरअपनीराहलीआगे बढ़कर एककबाबीके पासकबाबभुनवायेऔर अण्डेपकवायेऔरपांचरुपये कीशीरमालें औरनिहारी लेकर उसपरकबाबऔरअण्डेरखकरचादरा को उतारकर उसपाच को अच्छी भांति बांधकर अपने मुंड़ पर रक्खा और कबाबी से कहा कि अपना आदमी मेरेसाथ करदे मेरे वह साथ चले कुछ देर न होगी इसी समय तुम्हारे आदमीके हाथ दामभेजताहूं ख्वाजे अब्दुलमतलबने मगायेहैं उनके घरमें भाइयोंका न्योताहै उसनेजब ख्वाजे का नाम सुना शीघ्र अपना आदमी उसके साथकिया कुछभी भय सौदादेनेमें न की फिर थोड़ीदूर जाकर उसआदमीसेअमरकहाकितुम आगे बढ़ो ख्वाजेके दीवानखानेमें चलो मुझेदही आदिलेनाहैउसेलेकर आताहूं तुम्हैंअभी मेहनत दिलाताहूं वहतो उसओरगया औरआप अबुलकेश पर्वत की ओरचला जब अमीरके समीप पहुंचा भोजन देखकर सबोंका चित्तप्रसन्नहुआ औरभोजनकोजोखोला तोउसमेंभांति२केखाने दृष्टिपड़े अमीर उसेदेखकर अति प्रसन्नहुआ अमर की चालाकियां तो अच्छी भांति जानताहोगा कहाकि प्रथम यह बतादिये कि खाना किस उपाय से लाये अमर ने कहा कि प्रथम भोजन फिर वर्णन यह भोजन खा लीजिये फिर बातें कीजिये अमीरने साथियों समेत उसको भोजन किया अब उस आदमी का वृत्तांत सुनिये कि जिसको कबाबीनेअमरके साथरुपया लेनेकोभेजाथा ख्वाजाअब्दुलमतलबकेसमीपगया औरकहाकि मेरे गुरूने सलाम कहाहै और जो पांच रुपये की शीरमालें सरकार ने अमर को मारफत मगाईहैं उनका मोललेने के हेत सेवकको भेजाहै वहां पाठक तो पहिलेही से बैठेहुये अमर का दुःख रोरहेथे यह सुनकरऔर चित घबड़ाया इसी में एक बुढ़िया रोती पीटती हुई नालशी आई कि अमर ने मुझ दुखिया रांड़को किसभांति छल देकरमुरगियां औरअण्डे

लेगयाहै ख्वाजे अब्दुलमतलब ने कबावी के आदमी से पूछा कि अम्तको अमर किधरकोगया है उसने कहाकि अबुलकेश पर्वतकी ओर जाताथा और चारों ओरको देखता भवचकासाथाख्वाजे अबदुलमतलब ने उसका पांचरुपये मंगादिये और बुढ़िया को भी मुरगियों के दाम भँगा दिये और पाठकसेकहाकि आप अबुलकेश पर्वततक कष्ट सहियेअपने विद्यार्थियों से अमर को पकड़वालाइये पाठक पर जोबेधचढ़ाथा विद्यार्थियों को साथलेकर पर्वत का मार्गलिया और अमरके बांधनेका मनोर्थ किया जब पर्वत के निकट पहुंचे अमरने दूर से देखकर अच्छी भांतिसे ठट्ठामारकर हँसा और अमीर से कहा कि गुरूजी हमें पकड़ने आते हैं विद्यार्थी भी कुछ साथ लातेहैं देखिये तो मैं कैसी उनकी गति बनाता हूं किस सूरतसे घर भेजवाताहूंयहसुनकरगुरूजी ठिठुके औरअपनेस्थान पर खड़े रहे किन्तु अबूजेहल और अबूसुफियां आदिको अमरकेपकड़ने को आज्ञादी और आप कुछदूर चलकर बताना आरम्भ कियाजबबू-जेहल आदि निकट पहुंचे तो अमर ने पुकारकर कहा कितुमलोगों का मृत्यु चढ़ीहै जो बैठे बैठाये खोपड़ी कुचलातेहो गुरूजीतो विक्षिप्तहोगये हैं तुम्हें क्या कुत्तेने काटाहै भलाचाहो तो फेरजाओ अच्छी भांति अपने बाप माको मुहंदिखावोअबूजेहलकम मानताथा बलसम्हारकर आगेबढ़ा अमर ने कंकड़ उठाकर इसबलसे अबजेहलके मुहँपर मारे किसब मुहँ उसकाघायल होगयाऔर मुहँभरमेंचनेकेसमानछेदहोगये सबकंकड़ मुहँमें घुसगये तबतो अबूजेहल रोताहुआ पीछेको हटा और लड़कों ने अबूजेहलका जबयह हालदेखा एकभी आगे न बढ़े पाठकने यह विचार कियाकि कदापि मेराडरमाने इस मनोर्थसे उसके पकड़नेको आपचला जब निकटपहुंचा तोअमरनेएकपत्थर उठाकर ऐसामारा कि पाठकका शिर फटगया और आगे चल न सके और रुधिरकी धारें शिरमें छूटने लगीं तबतो गुरूजीभी गणित विचारके पीछेहटे और घरकामार्गलिया शोणितसे सब बदन डूबगया चलते २ अबदुलमतलब के निकटपहुंचे और अपनाशिरऔरअबूजेहलकामुहख्वाजेकोदिखाकरसबवृत्तान्तवर्णनकिया और कहाकि मैं अमरकोनहीं पढ़ाऊंगा आपने अच्छी मित्रतामेरेसाथ की ख्वाजे सब इतिहास सुनकर आपसवार होकर पहाड़की ओरगया और जो पता पाठकने बतायाथा उसी मार्गपर चला अमरने दूरसे देखकर कहाकिअमीर ख्वाजे आतेहैंइनसे मेराबसनहींचलैगासुझेपावेंगे तो नहीं जानताकि कैसादण्डदेवेंगे मैं अपना मार्ग लेताहूं सेवकपन का पद निबाहे देताहूं अब आपजाने आपका कामजाने ख्वाजे जब गुफा में पहुंचे उसमें अमरको तो न पाया परंतु अमीरको दिलासादेकर ऊंट पर अपने साथबैठाया और मनोर्थ समेतधामकोपधारे और सुकबिलका बालकोंके समेत अपने सेवकके साथकिया जबघरमें आये यद्यपि अमीर

को धीरज और ढाढ़सदेकर कहाकि भैया अब अमर का नाम मुहँपर नलाना और इसका अब कभीअपने घरनबुलवाना भलेमनुष्य ऐसोसंगति से बिचारकरते हैं ऐसे दुष्टके साथ बैठने उठनेसे भागते हैं वह तुम्हें कुमार्गीऔरबदनामकरेगा तुम्हारेबापदादेका नाम मिटादेगा अमीर का बे अमरकी कब चैन और संतोष था आसक्त होकर रोने लगा खाजे ने बहुत कुछसमझाया परन्तु उसका उत्तर न दिया चुपहोरहा और सात दिवस तक खानपान कुछभोन किया तब खाजे अब्दुलमतलब घबड़ाये कि हमलोगोंकी इसी परजायगा लाचार होकर अमर के ढूंढ़ने को आदमी भेजवाये परन्तु अमीर से कहाकिअबतुमअमरका कहनान मानना उस अयोग्य की बातों को चित्तमें न लाना और जो चित्त व्याकुल होवे तो अपने बाग़में सैर करना अपना मन बहलाना किन्तु दूसरे किसी के बाग़में न जाना हमारे कहे को ध्यानमेंरखना ॥

दोहा ॥

सेर हेत चल बाग़ में सुमन सुचित हूँ देख । हैं पुकारती बुलबुलें चलु आनन्द भर लेख ॥

एकदिन अमर ने अमीर को शिक्षा दी कि आज चलके बाग़की सैर कीजिये फुलवाड़ी का मार्ग लोजिये उसके कहने के अनुसार अमीर ने शुक्लबिल और अमर को अपने साथ लेकर बाग़ में गये और अति आनन्दित हो बाग़ को सैर करने लगे अमर उस बाग़ से निकल कर किसी दूसरे के बाग़में गया और वहांसे अच्छे फल चख चखाकर आया और कहाकि कृपानिधान यहांसे निकट एकबाग़ बहुत सुशोभित और रमणीय है आप के बाग़ की बसंतऋतु उसके आगे पतिभार है अमीर ने पूछा कि कितनी दूरपर और किधरहैबोला कि इसी आपके बाग़ स अति समीपहै अमीर शुक्लबिल समेत अमरके साथ उसओर चलेऔर चलते २ उसबाग़में पहुंचे देखातो वैसाही पाया भांति २ के फूल क्यारियों में खिलेहैं और कुछ वृक्षों में फल खुरमे के लगे हुयेहैं नहरें स्वरूपवान बनीहैं और कियारियां प्रति वृक्षके सामने प्यारी २बनीहैं उस बाग़को मेवा देखकर देखनेवालेके मुखमें लार भरिआये एक खुरमा जो उसमेंका खायतो स्वाद और मेवोंका भूलिजाय और बाग़के मध्यमें एक चबूतरा संगमरमरकाऐसास्वच्छ बनाहै कि जिसपर आंख भी नहीं ठहरतीहै अमीर उस चबूतरे पर बैठके सैर करनेलगा अमर इधर उधर फिर २ के मेवे तोड़ २ कर अपना पेट भरनेलगा कुछ देरके पीछे थोड़े खुरमें तोड़कर खाता हुआ अमीर के सामने आया अमीरनेकहा कि हम भी इन खुरमोंका स्वाद चक्खें मुखको अच्छा करें बोलाकि बैठोसाहब किस २ परिश्रमसे वृक्षपर चढ़के यह खुरमें लाया हूं अपने जीपर खेल आया हूं सो आप न खाऊं इनको खिलादूं जो खानेकामन है तो हाथ और मुँहअपना है आपभी उस वृक्षके तलेजावें

अपने हाथसे तोड़कर खावें अमीरने जो वृक्षके निकट जाकर चढ़नेको चाहा तब अमरबोला कि स्वामी ऐसेकार्यके करनेकोसेवकहै न कि ऐसे मोटे मनुष्यका वृक्षपर चढ़नेका कामहै तुम्हारे समानमेराशरीर होता तो वृक्षको जड़सेउखाड़लेता अमीरको अमरके कहनेपरकुछलज्जाआई और क्रोधित होकेवृक्षमेंएकधक्कामारा वृक्षपृथ्वीपरगिरपड़ाअमरनेकहा कि इसवृक्षकाउखड़नाकुछकठिननहींहैमैंभीचाहता तो इसछोटेवृक्षको गिरादेता अभी और आपको अपना पराक्रम दिखादेता यह वृक्ष कीड़ोंने खालिया था यहसुनकर अमीरको बड़ाभारी क्रोधहुआ तो एक और वृक्षको जड़से उखाड़करफेंकदियाअमर बोला कि यहभी वृक्षघुना था हां किन्तु वहजो वृक्ष आपकी दृष्टि के सामनेहै वह पुष्टहै उसका उखाड़ना कठिनहै अमीरको जो क्रोधआयातो उसकोभी उखाड़डाला तबतो कहनेलगा कि वाहसाहब क्यों परायाबाग़ उजाड़ेडालतेहो अपने बलके समान किसीको नहींसमझते हो कुछ ईश्वरकाभी डरहै यह कहकर बाग़के मालिक को समाचार पहुंचाया और मालीको भी बुलादिया कि इससमय ऐसे जोरसेआंधीआईथी कि तेरेबाग़के तीनवृक्ष जड़से उखड़गये पहिलेतो कुछ डालेंटूटीं फिर एकही साथ एक झोंके में वृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़े उसने कहा कि यहांतोइतनीभी वायुनहींआई कि पत्तातक हिलता या एक फूलही या फल वृक्षकेनीचे हमको मिलता बाग़में ऐसीहवा कहांसेआई कि वृक्षोंको गिरागई अमरनेकहा कि बाग़में जाकर देखो सत्य असत्य अभी विदित हुआजाताहै माली जब बाग़में गया तो देखा कि सत्यहै तीन वृक्ष उखड़े पड़े हैं जो सम्पूर्ण बाग़में उत्तमथे देखकर रोनेलगा कि मालिक उसका उसीपरथा और उसीके फलोंसे अपना खाने पीनेका सामान करताथा अमीर को उसे देखकर दयाआई धीर्य्यऔरढाढसदियाऔरवृक्षोंकेबदलेती नऊंटदियेऔरशीघ्र अपने आदमीकोभेजकरबँगवादिये मालीअति आनन्दित होगया मन से हजारों प्रकारके आशीर्वाद देनेलगा उसके मनोर्थके वृक्षफिरसेहरे हुये अमरने उसमालीसे कहा कि तू लड़कोंको फुसलाये लेताहै भला तू जबतक मुझे न साक्षी करैगा तबतक मैंक्योंतुझको यह ऊंटलेने दूंगाऔर बेचने दूंगा तेरे नाकमें दमकरूंगा उसने मारे डरके एकऊंट अमर कादिया और दो ऊंट आप लेकर अपना मार्गलिया ॥

अमीर व अमर व मुक़बिलके बर पानेका इतिहास ॥

अब बुद्धिमान् लोग इस वृत्तान्तका वर्णन यों करतेहैं कि एकदिन अमीर मुक़बिल व अमर समेत अपने बराठेमें बैठेहुयेथे और जो मिल नेही उनकेथे सोभी वहांपरबैठेथे तोबहुतलोगोंकोएक ओरसेजातेहुये देखातो अमरसे पूंछा कि इनका समाचार तोलावो कि ये कहां जा-

तैहैं मुझको जल्दी आनकर पतादो अमर उसकी आज्ञानुसार पूछ कर वर्णन किया कि कुछ सौदागर घोड़े लायेहैं उनके देखनेको यहसब मनुष्य चले जातेहैं और अच्छी तरहसे बेधड़क देखआतेहैं जो आपकाभी चित्तहो तो चलके देख आइये अमीरने घोड़ोंका नामसुनकर उसओर जानेका मनोर्थकिया और मित्रोंसमेत आनन्दसे मग्नहो टहलतेहुये चले वहां जाकर देखातो सचमुच बहुत अच्छे २ घोड़े हैं भांति २ के तुर-की ताजी अर्बीबुग़दादी हिन्दीकेप आदि घोड़े प्रतिस्थानमें बंधेहैंऔर वहांपर एकघोड़ा सांकड़ोंसे जकड़ाहुआ मुंहमें छेकादियाहुआ आंखों पर अँधेरियां पड़ीहुई पावोंमें साकड़ोंकी अगाड़ी पछाड़ी बंधी हुई एक शामियानेकेतलेबंधाहै शेरकी सदृश खड़ाहै अमरनेउसके मालिकसे जाकर मेलकिया और पूंछा कि इस घोड़ेको सांकड़ोंसे क्योंबांधाहै इ-सने क्या अपराध कियाहै वहबोलायह घोड़ा बड़ा दुष्टहै पांचदोषरखता है चढ़नातो कैसा कोई इसके निकटभी नहीं जासक्ताहै छींकोंमें रखकर इसको दाना पानी दियाजाताहै बड़ी कठिनतासे दाना पानी खाता पीताहै अमर बोला कि यहतो कहनेहीकी बातहै कि कोई इसपरचढ़ नहींसक्ता हौवा बना रक्खाहै भला जो कोई इसपर चढ़ तोक्याहोऔर उसको क्यादोगेउसनेकहा कि ऐसा तोमैं यहां किसीको नहीं देखताहूं इन लोगोंमें अच्छीतरहदेख चुकाहूंजोकोईसवारहोऔरइसकोदशपांच पैग फेरे तो यही घोड़ा बेदाम भेंटकरूंगा अमरनेयह सुनकर अच्छीभां-ति से बचन ठीककरके हाथ मारलिया और कुछ सौदागरोंको जो वहां उतरेथे इस बाजी लगानेका गवाहकिया और अमीरसे आकरसबसमा-चार वर्णनकिया और उसघोड़ेपरचढ़नेकी रुचिदिलाई अमीरउसघोड़े के निकटगया औरउसपरजीनबंधवाई सांकड़ औरअंधियारियांउसकी खुलवादीं और चौकमें मंगाया जब चढ़नेका मनोर्थकिया और अयालपर हाथ रक्खाघोड़ा छूतेही अपनीतीव्रताकोदिखानेलगाताखियांबजानेलगा अमीर उसके निकट जाके एक फलांग मारके उसकीपीठपर जाबैठा वह टापैं मारने और कूदने लगा अमीरने एक घूंसा उसके शिरपरमारा घोड़ा बेचैनहो पसीनेमें डूबगया और बकरी केभांति कान करलिये मनसमेत सब इंद्रियां उसकी व्याकुल होगईं तब अमीरने उसे प्रथम कदम चलाया फिर पोई और सरपट दौड़ाया जब घोड़ेकोदौड़ते समय हवालगी तो अतिबलकरकेदौड़ताहुवा चलाअमीरने यद्यपि बागखींची परन्तु न थंभा पचास कोशतक बराबर दौड़ता चलागयाअन्तकोअमीरने अपना लंगर देकर उसकी कमर तोड़डाली औरउसकीधिठाईकाखाद चखादियाघोड़ातोगिरगयाअमीर पैदल घरकोफिरा कभीपैदलचलनेका स्वभाव न था पावँमें छाले पड़गये पैरउठातेहैं तो उठनहींसक्ते निदान थककर एक वृक्षकेतले बैठगये घोड़ीदेरके पीछे क्या देखतेहैं कि एक

सवार झालर पहिनेहुये आताहै और एकघोड़ा चितकबरा जड़ाऊ जीनसे सजाकोतल साथलाता है ॥

चौपाई ॥

वाजि बड़ाई होइकेहि भांती । जिसके साथ पवन नहिंजाती ॥
पुनि आकाश न धावत ऐसे । चलत बेगहै वहहय जैसे ॥

जबवह सवार अमीरके निकट आया और रीत्यनुसार प्रणाम किया और कहा कि हेहमका यहघोड़ादुसहाकनबीअलेहस्सलामकी सवारी काहै और इसकानाम सियाह कैतासहै इसमें अनेक गुणहैं ईश्वर की आज्ञासे तेरेचढ़ने के निमित्त लायाहूं और ईश्वर की आज्ञा अनुसार तुझको मैंभेंट करताहूं कोई बलवान तुझको वश न करसकेगा तेरा प्रताप सदैव प्रकाशित रहेगा और सबतेरे आधीन रहेंगे और सब के सबतेरी सेवाकरेंगे यहजो पत्थर सामने ढेरसा लगाहै इसको हटा कर पृथ्वीको खोद इसमेंसे एक संदूक नबियोंके अस्त्रोंका निकलेगा उसमें नानाप्रकार के अच्छे २ शस्त्रदेख पड़ेंगे उसको अपने शरीरमें बांधना समयपर उसकेगुण देखना अमीरने शीघउस पत्थर को हटाया और बलइतना पाया कि जिसका भरोसानथा पृथ्वीके खोदनेमें बड़ाबल किया उसमें हजरतहादकाबख़्तरदाऊदकादास्तानायूसुफका मोजा सालेहके कमरबंद और कटार रुस्तमकी तलवार आदि उसमें से सबके शस्त्र निकालकर देखाभाला और उनहथियारों और वस्त्रों को पहिनकर ईश्वर का नामलेके सियाह कैतास घोड़ेपर चढ़ा ॥

दोहा ॥

आया तुरग पुनीतजब तलेजांघ सुकुमार । बिदित भई अंगुश्तरी नगशोभा सुखसार ॥

और झालर पहिनेहुये वहपुरुष दृष्टिसे जातारहा और लवमात्र की देरीमेंवह छिपगया लिखतेहैं कि वहझालर वाले घूंघटकाढ़े हजरत जबरीलथे जो उससमय में अमीरके सहायकथे फिर ईश्वर जाने अमीर तो मक्केकी ओरचले अपने घरकी ओरसे पैरन हटाया अबअमर का समाचार सुनिये कि दशकोस तक अमीरके पीछे २ गिरता पड़ता चलाआया और साथ न छोड़ा दौड़नेसे पाँवन फेराजब तलुये पावोंके बबूरोंके कांटेसे ममाखी के छाते होगयेतोचलनसकाऔरएकवृक्षकेतले असाध्य होकर गिरपड़ा तबईश्वर की रचनासेजबरीलउसकेनिकटपहुंचे और उसको भरोसा दिया और पृथ्वीसे उठाकर अपनी दयाकरके कहा कि ऐअमरउठ हमपरमेश्वरकी आज्ञासेतुझको वरदेताहूं कि तुमसे चलनेमें कोई आगे न जासकेगा यहकहकर अंतरध्यान होगये अमर ने उनके कहने की परीक्षाली देखा तो सचमुच पवनसे अधिक गवन करताहै तबईश्वरकाधन्यवादकरकेअमीरकोढूंढ़नेको चला औरइसीओर फिर अमीरको छोड़ाथा बढ़ाघोड़ीदूर गयाथा किसामनेसेअमीर देख

पड़े दोनों ओरसे प्रेमसमेत कुशल प्रश्नहुई और मार्गके कठिनता को बखानके पीछे अमर हथियारऔरघोड़ा देखकरआश्चर्य करकेअमीरसे कहने लगा कि वहघोड़ा सौदागरका क्या किया और सचबतावो कि किसको मारकर यहघोड़ा और शस्त्रआदि छीनलिया अमीरने कहा कि पराईजानमारनातेराकामहै यहक्या खराबबात कहताहै मैंईश्वरकी आज्ञासे हजरत जबरील का बरदिया हुआपायाहैऔरयहशस्त्रऔरवस्त्र नबियोंके पहिनेहुंऔरयहघोड़ास्याहताक़ैसनामअसहाककीसवारी का है और नबियोंके सम्पूर्णशस्त्र ईश्वरने मुझकोकृपाकिये हैं अमरबोलायह तो मैं जबजानों कि जब आपका घोड़ामुझसे आगे निकल जावे औरमेरा पावँघोड़े से पछरजावे अमीरने अपने चित्तमें बिचाराकि यहक्याबकताहै इसको क्या होगयाहै मनुष्य कहीं घोड़ेके साथदौड़ सक्ताहै और घोड़े से आगे निकल जाय क्या ठीकहै कहा कि अच्छा आइये अमरने कहा कि कुछबाजी लगा लीजिये और मेरामन संतुष्टकरदीजियेअमीरने कहा किजोतेरीइच्छाहोवहहमसेबाजीलगाले अमरनेकहाकिजो मैंइस अश्वके आगे निकल जाऊं तो दशऊंट आपसेलूं और जोघोड़ा मुझसेआगेनिकल जावे तो तेरापिता एकबर्षतक बेदाम तेरेबापके ऊटोंका चरवाहाहो अमीरने उसेअंगीकारकिया और घोड़ेकी लगाम पकड़ी अमरभी साथ हुआ दशकोस तकगये अमर और घोड़ेकेपैर बराबर उठतेथे दोनोंवायु से शीघचले जातेथे अमीर अमरकी दौड़देखकरअतिआश्चर्यकरने लगा और उसकी तीव्रचालसेसंदेहकियाअमरनेबिनयकीकिऐअमीरमैंभीहजरत खिजरसे बरपायेहुयेहूं अबकुछखाजे अबदुलमतलबकाइत्तान्त सुनिये किजब सौदागर का घोड़ा अमीरकोलेकरभागा और अमर उसकेपीछे व्याकुल होकरचला यहसब समाचार खाजेको पहुंचा वह सुनतेही अचेत होगया औरअच्छे २ मक्केकेमनुष्योंकोसाथलेकरनगरसेबाहरनिकला कि सामनेसे अमीर अस्त्रपहिने सजेसजायेस्याहक़ैतासघोड़ेपरचढ़ाप्रतापकेसमूहसहितऔरअमरउसकासिकारबन्दपकड़ेचलेआतेहैं यहदेखकर खाजेका शोक और संदेह दूरहुआऔरशरीरप्रफुल्लितहोगया और ईश्वरकाधन्यबादकरनेलगा अमीरखाजेकोदेखकरघोड़ेसे उतरपड़ा और दण्डवत करके चरणोंपर मस्तक रक्खाखाजेने अमीरको छातीसेलगाया आंखोंमें आंसू भरलाया और प्रसन्न होकर अमीर को साथलेकर घरआया और बहुतकुछ अमीरपर उतारके पुण्यदान किया औरघोड़ा और शस्त्रोंका समाचार पूछा अमीरने सबव्यारा वर्णन किया खाजेसुन कर अति आनन्दित हुये और ईश्वर का भजन करनेलगे अबमुक़बिल वफ़ादार का इत्तान्त सुनिये कि उससुक़तीमनुष्यका क्याहालहुआ कि यहदानों बरदानी होगये उससमय यहअपने मनमेंशोचा कि तेरा समय इनदोनों बरदानियोंमें नकटेगाक्योंकि इनदोनोंकाचित्तबढ़ाहुवा

है तेरा इनमें कबपार होगा इससे चलकर नौशेरवांकी सेवा अंगीकार करैं शायदईश्वरकी कृपासेवहां किसी अधिकार पर नियत कियाजाऊं मेरीभीभाग्यउदयहोऔरहांप्रत्येक की प्रतिष्ठाबराबरहोतीहैयहचितमें विचारकर मक्केसे चला चार पांचहीकोश गया होगा कि मार्ग में थककर एक वृक्षके तले बैठरहा और चित्तमें शोचाकि इस जीने से मरना भला है न तो कुछ खर्चहै न सवारी यह शोचकर उस वृक्षपर चढ़गया और कमरबन्द का एक सिराटहनी डाली में बांधा और एक सिरा अपनी गर्दन में फांशी लगाकर डाला और लटक कर हाथ पावँ मारने लगा शरीरसे जीव निकलने परथा कि इतनेमें शाह खैबरशिकन दूसरे पंजतन ने पहुंचकर हांकदी तब मुक्तबिल पृथ्वीपर गिरपड़ा हजरतने उसको उठालिया और पांचतीरऔरएककमठादेकर कहाकि हमने तुझेबाणावरी की विद्यादी और इसमें तेरे समान दूसरा कोई न होगा तब मुक्तबिलने बिनती की किभलामहाराज मुझसेजोकोईपूछेगाकितू किसका बरदानीहै तबउससे मैं क्याकहूंगा हजरतने कहाकि कहियो अब्दुल्लाउलगालिबसे बरपायाहै मुक्तबिल पांचोंतीर और धनुष लेकर अतिप्रसन्न तासेमक्केकी ओरचला अब यहांका हालसुनिये कि जबअमीर व अमरने मुक्तबिल को न देखा तो घबराकर अमर मुक्तबिल की तलाश को चला जैसेही नगरके बाहर गया तैसे मुक्तबिलदेखपड़ा तो अति प्रसन्न होकर लिपटगया और हाथमें हाथ मिलाके अमीरके पास लेगया मुक्तबिलने अमीर के समीप जाकर तीर और धनुष आदि दिखलाये और बरदान होनेका समाचार सुनाया यह सुनकर अमीर बहुत प्रसन्नहुआ और सब मिलकर आनन्द समेत रहने लगे ॥

करलेना अमीरकाऔर मुसलमानकरनायमनके बादशाहका ॥

अबलिखनेवाला यों वर्णन करताहै कि जबसातवांवर्ष अमीरको लगा तो अमीर मुक्तबिल और अमर समेत बाज़ार की ओर सैरकरनके लिये गये तो देखा कि यमन महाराजा के सेनापति तहसील करने के लिये आगयेहैं दूकानदारों से करलेतेहैं जिसके पास कुछ देने को न था वह वादा करताहै परंतु वे लोग नहींमानते मारपीट करतेहैं अमीर ने अमरसे कहा कि देखो यहगुल कहांहोताहै अमर ने कहा कि यमन के नौकर करलेतेहैं और मारपीट करतेहैं अमीर को दयाआईतो अमरसे कहा कि इनको मनाकरदो कि तंग न करें अमर वहांगया पर इसकी वहांकौन सुनताहै फिरअमीर आप वहां गयेऔरअमरसे कहाकिदूकानदारों को मनाकरदो कि कोईकिसीको कुछ न देवें और जो कुछसिपाहियों ने तहसील कियाहै सो भी छीनलेवें यह आज्ञा पातेही मुक्तबिल और अमर उनको रोकनेलगे उन्होंने लड़के समझकरकुछन माना तब अमीरने चारपांच सिपाहियों पर आपक्रोध करके किसी का हाथ

तोड़ा और किसीका पावँ और किसीका शिर फोड़ा उनलोगों ने भाग कर सुहेल यमनी के डेरे में गये और सब समाचार वर्णन किया कि एक लड़का हमलोगोंको पहिलेतो खजाना तहसीलने से रोका जब न माना तब दोलड़कों समेत हमको मारकर भगा दिया और जो कुछ खजाना तहसील कियाथा वह सब हमारा छीनलिया यह कहरहेथे कि अमीर सिपाह क़ैतास पर चढ़े दूरसे दृष्टिपड़े और मुक़बिल व अमर दायेंबायें शिकारबन्द पकड़े हुये बराबर चलेआते हैं जब निकट आये तब सुहेल यमनी डेरेमें से निकल आया और अमीरकी ओर देखकर कहने लगा कि ऐ लड़के तेराघोड़ा और हथियार मुझे अच्छे मालूमहुये खाके शीघ्र आगे धर मैं तेरा अपराध क्षमाकरूंगा नहीं तो अपने किये का फलपावैगा यहसुनकर अमीर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहनेलगा कि जो तेरा जी प्यारा हो तो पहिले मुझे झुककर सलाम कर फिर पीछेबातें करना और मेरी सेवा अंगीकार कर नहींतो पछितावेगा सुहेलने कहा कि इस लड़के को क्याहोगया है कि छोटे मुंह से बड़ीबात कहता है इसको घोड़ेपरसेउतारलोऔरसबहथियार छीनलो सारथियों ने उसकी आज्ञानुसारअमीरकोचारोओरसेघेरलियाऔर अमीरकेमारनेकामनो र्थकिया अमीरनेकिसीको तीरोंसे किसीकोतलवारसे किसीकोघोड़े की टापोंसे रौंदवाकर मारडाला और मुक़बिल भी तीर मारनेलगा और जो दोतीनमनुष्य आगेपीछे हुयेएकहीतीरसेपृथ्वीमेंसोरहेसुहेल नेदेखा कि कई हज़ार सेना मारीगई तब आप अमीरहमला के सामने आया अमीरनेउसकाकमरबन्दपकड़करके शिरसेऊंचाकियाऔरघोड़ेपरसेउठा लिया इच्छाकी कि मारे कि उसने रक्षा मांगी दीनतासे जीव बचाया अमीरने धीरेसे पृथ्वीपर छोड़दिया सुहेलयमनी उसी समय सहस्रवीरों समेत मुसल्मान हुआ अमीर ने उसे छातीसे लगाया और अपने बराबर बैठालिया औरउसकेऊपर कृपाकीसबयोद्धाऔरसुहेलयमनी औरअमर व मुक़बिल सब अमीरके आधीन हुये और सेवकाई अंगीकार की और अमीर को सबोंने भेंटदी और सबोंने उसके सम्मुख नमताकी अमीर ने मुसकरा कर उनको अधिकारके अनुसार खिलतैं दी और नगर में प्रवेशकर पहिले काबेके दर्शन किये फिर अब्दुल्मतलब के निकट आकर सुहेलयमनी का हाल वर्णनकिया ख्वाजेने कहा यद्यपि मुझे इस बात के सुनने से अतिआनन्दहुआ कि ईश्वरने मुझेऐसादिन तो दिखलाया पर नगरके लोग इसबातसे डाह करेंगे और बादशाह यमन के इससमय चालीस हज़ार सवार और लाखोंपियादे हैं और कई बादशाह उसके आधीन हैं ऐसा न हो कि तुमपर सेनासाज के चढ़आवे जिससे सब मक्के के लोग घबराजावें अमीर ने कहा कि आपका आशीर्वाद और ईश्वरकी कृपा चाहिये वह इधर न आनेपावेगा मैं खुद वहांजाकर उसे पराजित क-

रूंगा अन्तको दो दिवस के पीछे अमीर मुक़बिल और अमर हजार सवारों समेत यमन की ओर चला जब सब लोग मेजने के हेत नगर के बाहर तक आये बिदा के समय किसी ने आशीर्वाद पढ़ा और किसी ने यंच बांधा ख्वाजेने भी गले लगाकर ईश्वर को सौंप दिया और कुछ उपदेश की बातें कहीं निदान अमीर अपने मनोर्थके मार्ग में पाँव रक्खा दूसरी मंजिल के मार्ग के बीच में सेना से अलग होकर अमीर अमर से बातें करते हुये चले जाते थे इतने काल में एक मनुष्य दश बारह वर्ष की अवस्था का यतीकासा भेष बनाये हुये शोक ग्रस्त बैठा है अमीरको उसके ऊपर दया आई और उसकी ओर घोड़ा बढ़ाया कि ऐसा जवान फक़ीर होजावे अमीर सलाम करके हाल पूछनेलगा उसने कुछ उत्तर न दिया तब अधिक सताया अमीरके आगे उसका कुछही न चला चित्त में बिचारा कि बिना भेद कहे यह कभी न मानेगा और दिल का हाल इससे अवश्य कहना होगा ॥

दोहा ॥

देखा भाली क्यों करै उस सवार की ओर । जाती रहा शरीर ते धीरजहू की डोर ॥

अमीर के पूछने के आगे कुछ न चला तो एक हायमारकर यह कहने लगा कि ऐ भाई मुझे वह दुःख है जिसकी संसार में दवा नहीं है ॥

सोरठा ॥

जोन शूल है मोहिं सुख बिहीन देखत जगत । नहिं अराम से होहिं ईशा जो औषधि करै ॥

चौपाई ॥

नेह मध्य कोइ होय न ईशा । श्वास जाय जावै तन खीशा ॥
चिनग मोहनी रूप न व्यापै । खोट दाम यूसुफहि न लापै ॥
नयन ज्योति नहिं रहै शरीरा । कर्म धर्म सब चले अधीरा ॥
नेह बताशा जग कर लयऊ । नष्ट होय पुनि न मिटिगयऊ ॥
सरवर मध्य बुन्द यक जाई । बेगवन्त तेहि खेह उड़ाई ॥
नभ फटि परै होय अस संगा । गिरि पर परै चूर है अंगा ॥
सदा शोक बश याते रहई । मीठा प्रथम करू पुनि सहई ॥
तनकर भस्म बिरहकर छारा । जिमि पारा पावकबिच डारा ॥
सुधा सींच पै जिये मरैना । बारि करै पुनि तेज हरैना ॥
ईश हाय जनि नेह विकारा । दारुणदुखित बहुरिजगजारा ॥
रहे शोक बश सदा शरीरा । जोजग लीन्ह नेहकर बीरा ॥
बहुधा खोज मध्यमिटि गयऊ । बहुत न खं शशीश जगलयऊ ॥
अस कठोर जग और न दूजा । करै नाश तब लेवै पूजा ॥
परे फरहादकठिन यहिमाहीं । भयो नष्ट कछुबरणि न जाहीं ॥
लुटे समूह लाख संसारा । भये बहुत जारिके पुनिछारा ॥
नेह मेह जापर बरषाहीं । नयनन नदी बहे जग माहीं ॥

लाज हीन अति दीनमलीना । शोक मध्य बूड़त है दीना ॥
तनमन सुमन सरिस होखाग । व्यापै अंग मध्य अमधाग ॥
बूड़ेउताहि खोजनहिं मिलेऊ । मोती सीप मध्य जन पिलेऊ ॥
सरिस पतङ्ग रङ्ग तपिगयऊ । क्षमा शरीर सकल गलिगयऊ ॥
चालढाल जनिदोख करै जग । नष्ट त्यागिपुनिगहै सुमतिमग ॥
नागर रूप सीप जनि करई । जेहि वश ज्ञान मानसबटरई ॥
स्वप्न बीच अस चहै न कोई । बाजी चाल ढाल चहुं होई ॥
बिपति परेजोचितअस चहई । लाज हीनमुख नहिंजग लहई ॥
मोह देखिपुनि जग दुखहोई । करै अमान होय अस कोई ॥
नेह न करै मान मम बाता । डूबि जाय वर नाशै गाता ॥

अमीर ने कहा कि मृत्यु को छोड़ और तो ऐसा नहीं है कि जिसकी औषधि न हो उसने अमीर की कृपा देखकर वर्णन किया ॥

दोहा ॥

मन मलीन तनक्षीणहै दुखकछुकहा न जाय । समैन लालसम टांग है भ्रमक्रम भ्रमअकुलाय ॥

पश्चिम देशमें अति सुशोभित मेरे पितामह का स्थान है मैं इस जंगल के बीच संकट में पड़ाहूं और सुलतान बख्त मेरा नामहै पश्चिम केमहाराज का पुत्र यमन के महाराज की पुत्री से स्नेह लगाया है उसके स्नेह ने मुझे इस भेष में पहुंचायाहै और मानप्रतिष्ठा का विचार छोड़ाया है कुटुम्ब और मित्रों से अलग कराया है ॥

दोहा ॥

प्रीति बाण जाके लगे थिर न रहै यक ठौर । भ्रमत रहत संसारमें छिण प्रति औरहि और ॥

और उसकी बाजी पूरी मुझसे नहीं होसक्ती है इससे भेंबनमें निकल आया और फक़ीरी अंगीकार की है अमीर ने कहा कि यह बात कुछ कठिन नहींहै वह कौनसी बात है कि जो उपाय करने से न हो सके परन्तु मनुष्य को उचित है कि कभी किसी वस्तु या काम के करने में अधीर्य न हो और सदा चित्तको प्रसन्न रक्खे ॥

दोहा ॥

मानुष को यह चाहिये बेधीरज नहिं होय । कठिन नहींकोइ बस्तुहै सहज न होवे सोय ॥

ईश्वर की कृपा से धीर्यको ग्रहण कर और शोक सन्देह अधीर्य को परित्याग कर आप यहां से चलें मुझ पर दया करें इस भेष को त्याग करके मेरे पास रहिये ईश्वर चाहेगा तो मैं शीघ्र इस कार्य को करूंगा आशा रूपी मोती से शीघ्र दामन भरूंगा अमीर ने उस दिन उसीस्थान में डेरा किया और सुलतानबख्तमग़रबीकोसुसल्मान किया और सेवकों कोआज्ञादीकि राजपुत्रकेफक़ीरीवस्त्र उतारकरस्नानकरनेकेपीछेअच्छी भांति से उमत्त २ वस्त्रपहिनावोऔरतम्बू व अस्तबल अर्थात् घोड़सार आदि जो उचित जाना उसकेनिमित्तएकांत बतलाया औरसदैव उसके

आदरके हेत कृपादृष्टि रक्खी शाहजादा अमीर की दयासे उन्हींके निकट आनन्दसे रहनेलगा फिरकई मंजिलके पीछे मार्गके बीचमें एक युवा अवस्थाकेमनुष्यको देखा किशेर की खालकीटोपीऔर अंगा धारण किये बैठाहै और एकबाघ उसके निकट बंधाहै उसके निकट जाकर उससे पूछा कि ऐजवान तू कौनहै औरनाम व निशान तेराक्याहै और इस बाघको तूने क्योंबांधाहै वहबोला कि मैंठग लुटेराहूं इसकार्य में बड़ा प्रवीणहूं मेरानाम तौफ़बिनहैराहै यही मैदान मेराघरहै जो कोई इधरसे निकलता है इसबिंह को उसपर छोड़देताहूं जबयह उसे मारडालताहै तब उसके पासकी वस्तु सब लेलेताहूं और उसका मांसइसे खिलाताहूं और कपड़ा आदि बेंचकर मैंखाताहूं अमीरने कहा वे अपराधियोंके मारनेसे हाथउठानहींतो अन्तमें अतिकष्ट पाकर नरक में बासकरैगा और एकदिन इसका फल पावेगा उसने कहा कि ऐमनुष्य मुझको तेरेरूप परदया आतीहै ऐसीबातैं क्यों कररहा है अपनी जाननहीं बचाता है और जोतुझे जान प्यारीहोवे तोइसीमें भलाईहै कि अपना घोड़ा और हथियार मुझेदे नहींतो अच्छान होगा इसेदेकर सीधा अपना मार्गले अमीरने कहा कि यहक्या निर्बुद्धिता की बातकहीक्यातेरी मृत्युतोनहींआईहैअपनेसिंहकोछोड़करईश्वरकी रचना देखले उसने सुनतेही बाघकीडोरी पट्टीसे खोलदी और अमीर की ओर सैनदी बाघअमीर के सन्मुख हुआ और एकझपट अमीरके ऊपर की अमीरने भालासे उठाकर उसी मनुष्यपर फेंकदिया उसने अमीरका बलदेख अति आश्चर्य किया और तलवार लेकर अमीरपर धावा किया अमीरन भालाकी डांड़ीसे उसेगिरा दिया और घोड़े परसे उतरके उसकी गर्दन पकड़के उठालिया चाहतेथे कि उसेगर्दन मिरोड़के देमारें इतनेमेंउसनेजीवदानमांगाअमीरनेउसेछोड़दियाउसने ठगीसे शपथ किया अमीरने उसेमुसलमान किया और अपनी सेनाका झंडाबरदार किया और अपनी कृपादृष्टिसे उसपर अतिदयाकी चलते २ जबयमनकी राजधानी पांचकोश रहगईअमीरनेएकसुन्दरमनोहरस्थान देखकर आज्ञाकी कि आज यहांबास करो कुछदिनआराम करके सेना का प्रबन्धहो उसकी आज्ञानुसार जटोंपरसेतम्बूउतरनेऔरप्रतिस्थान पर गड़नेलगे अबयमन के बादशाह का समाचार सुनिये कि जोसुहेलनाम यमनी के सेनाकेलोग भागकर यमनको गयेथे उन्होंने अमीरकी लड़ाई औरसुहेलयमनीके मुसलमान होनेकासमाचारबादशाहकोसुनायाउसी समय शाहयमन ने नैमायनामी अपने पुत्र और दशसहस्रसवार किलेमें छोड़कर आपतीससहस्र सवारसे मक्केकी ओरचलापरन्तु वहऔरमार्ग से गया और अमीरकी सेनादूसरे मार्गहोकर आई अमीरने प्रथम एक पत्र नेमायके नाम लिखकर भेजा और यहभी संदेशा उसीकेहाथ कहला

लाज हीन अति दीनमलीना । शोक मध्य बूड़त है दीना ॥
तनमन सुमन सरिस होखाग । व्यापै अंग मध्य अमधाग ॥
बूड़ेउतांहि खोजनहिं मिलेऊ । मोती सीप मध्य जन पिलेऊ ॥
मरिम पतङ्ग अङ्ग तपिगयऊ । क्षमा शरीर सकल गलिगयऊ ॥
चालढाल जनिदोख करै जग । नष्ट त्यागिपुनिगहै सुमतिमग ॥
नागर रूप सीप जनि करई । जेहि वश ज्ञान मानसबटरई ॥
स्वप्न बीच अस चहै न कोई । बाकी चाल ढाल चहुं होई ॥
बिपति परैजोचितअस चहई । लाज हीनमुख नहिंजग लहई ॥
मोह देखिपुनि जग दुखहोई । करै अमान होय अस कोई ॥
नेह न करै मान मम बाता । डूबि जाय वर नाशै गाता ॥

अमीर ने कहा कि मृत्यु को छोड़ और तो ऐसा नहीं है कि जिसकी औषधि न हो उसने अमीर की कृपा देखकर वर्णन किया ॥

दोहा ॥

मन मलीन तनछीणहै दुखकछुकहा न जाय । समैन लालसम टांग है श्रमक्रम भ्रमअकुलाय ॥

पश्चिम देशमें अति सुशोभित मेरे पितामह का स्थान है मैं इस जंगल के बीच संकट में पड़ाहूं और सुलतान बख्त मेरा नामहै पश्चिम केमहाराज का पुत्र यमन के महाराज की पुत्री से स्नेह लगाया है उसके स्नेह ने मुझे इस भेष में पहुंचायाहै और मानप्रतिष्ठा का विचार छोड़ायाहै कुटुम्ब और मित्रों से अलग करायाहै ॥

दोहा ॥

प्रीति बाण जाके लगे थिर न रहै यक ठौर । भ्रमत रहत संसारमें छिण प्रति औरहि और ॥

और उसकी बाजी पूरी मुझसे नहीं होसक्ती है इससे जंगलमें निकल आया और फक़ीरी अंगीकार की है अमीर ने कहा कि यह बात कुछ कठिन नहींहै वह कौनसी बात है कि जो उपाय करने से न हो सके परन्तु मनुष्य को उचित है कि कभी किसी वस्तु या काम के करने में अधीर्य न हो और सदा चित्तको प्रसन्न रक्खे ॥

दोहा ॥

मानुष को यह चाहिये बेधीरज नहिं होय । कठिन नहींकोइ बस्तुहै सहज न होवे सोय ॥

ईश्वर की कृपा से धीर्यको ग्रहण कर और शोक सन्देह अधीर्य को परित्याग कर आप यहां से चलें मुझ पर दया करें इस भेष को त्याग करके मेरे पास रहिये ईश्वर चाहैगा तो मैं शीघ्र इस कार्य को करूंगा आशा रूपी मोती से शीघ्र दामन भरूंगा अमीर ने उस दिन उसीस्थान में डेरा किया और सुलतानबख्तमग़रबीकोसुसल्मान किया और सेवकों कोआज्ञादीकि राजपुत्रकेफक़ीरीवस्त्र उतारकरस्नानकरनेकेपीछेअच्छी भांति से उमत्त २ बस्त्रपहिनावोऔरतम्बू व अस्तबल अर्थात् घोड़सार आदि जो उचित जाना उसकेनिमित्तएकांत बतलाया औरसदैव उसके

आदरके हेत कृपादृष्टि रक्खी शाहजादा अमीर की दयासे उन्हींके निकट आनन्दसे रहनेलगा फिरकई मंजिलके पीछे मार्गके बीचमें एक युवा अवस्थाकेमनुष्यको देखा किशेर की खालकीटोपीऔर अंगा धारण किये बैठाहै और एकबाघ उसके निकट बंधाहै उसके निकट जाकर उससे पूछा कि ऐजवान तू कौनहै औरनाम व निशान तेराक्याहै और इस बाघको तूने क्योंबांधाहै वहबोला कि मैंठग लुटेराहूं इसकार्य में बड़ा प्रवीणहूं मेरानाम तौफ़बिनहैराहै यही मैदान मेराघरहै जो कोई इधरसे निकलता है इसबिंह को उसपर छोड़देताहूं जबयह उसे मारडालताहै तब उसके पासकी वस्तु सब लेलेताहूं और उसका मांसइसे खिलाताहूं और कपड़ा आदि बेंचकर मैंखाताहूं अमीरने कहा वे अपराधियोंके मारनेसे हाथउठानहींतो अन्तमें अतिकष्ट पाकर नरक में बासकरैगा और एकदिन इसका फल पावेगा उसने कहा कि ऐमनुष्य मुझको तेरेरूप परदया आतीहै ऐसीबातैं क्यों कररहा है अपनी जाननहीं बचाता है और जोतुझे जान प्यारीहोवे तोइसीमें भलाईहै कि अपना घोड़ा और हथियार मुझेदे नहींतो अच्छान होगा इसेदेकर सीधा अपना मार्गले अमीरने कहा कि यहक्या निर्बुद्धिता की बातकहीक्यातेरी मृत्युतोनहींआईहैअपनेसिंहकोछोड़करईश्वरकी रचना देखले उसने सुनतेही बाघकीडोरी पट्टीसे खोलदी और अमीर की ओर सैनदी बाघअमीर के सन्मुख हुआ और एकझपट अमीरके ऊपर की अमीरने भालासे उठाकर उसी मनुष्यपर फेंकदिया उसने अमीरका बलदेख अति आश्चर्य किया और तलवार लेकर अमीरपर धावा किया अमीरने भालाकी डांड़ीसे उसेगिरा दिया और घोड़े परसे उतरके उसकी गर्दन पकड़के उठालिया चाहतेथे कि उसेगर्दन मिरोड़के देमारें इतनेमेंउसनेजीवदानमांगाअमीरनेउसेछोड़दियाउसने ठगीसे शपथ किया अमीरने उसेमुसलमान किया और अपनी सेनाका झंडाबरदार किया और अपनी कृपादृष्टिसे उसपर अतिदयाकी चलते २ जबयमनकी राजधानी पांचकोश रहगईअमीरनेएकसुन्दरमनोहरस्थान देखकर आज्ञाकी कि आज यहांवास करो कुछदिनआराम करके सेना का प्रबन्धहो उसकी आज्ञानुसार जटोंपरसेतम्बूउतरनेऔरप्रतिस्थान पर गड़नेलगे अबयमन के बादशाह का समाचार सुनिये कि जोसुहेलनाम यमनी के सेनाकेलोग भागकर यमनको गयेथे उन्होंने अमीरकी लड़ाई औरसुहेलयमनीके मुसलमान होनेकासमाचारबादशाहकोसुनायाउसी समय शाहयमन ने नैमायनामी अपने पुत्र और दशसहस्रसवार किलेमें छोड़कर आपतीससहस्र सवारसे मक्केकी ओरचलापरन्तु वहऔरमार्ग से गया और अमीरकी सेनादूसरे मार्गहोकर आई अमीरने प्रथम एक पत्र नेमायके नाम लिखकर भेजा और यहभी संदेशा उसीकेहाथ कहला

भेजा कि मैं ज़मायताजदार के साथ बिवाह किया चाहताहूं उसकी बाजी को मुझेवता मैंवह सबपूरी करूंगाऔरज़मायताजदार को अपने साथ लेजाऊंगा नेमायने यहसमाचार अपनी बहिन को सुनाया उसने कहा कि अच्छायह कहकर मैदानके बनानेकी आज्ञाकी औरकहाकि प्रात समय चौगानबाजी में तलेकरके उसकाशिर क़िलेके कँगूरेपर चढ़ाऊंगी उसकेबल और सिपाहगरी का समाचार बतादूंगी सबमर्दी-नगी भुलादूंगी इसफिरजाने का स्वाद चखादूंगी यहसुनकर नेमाय ने उत्तरमें लिखा कि बज़ुत अच्छा हमको आपका कहना सबभांतिसे स्वीकार है कलचौगान बाज़ी होगी प्रत्येक मनुष्यकी बाणावरी देखी जायगी जो आप मैदान के चौकसे जीतजावेंगे तो ज़मायताजदार को पावेंगे नहींतो आपका शिरकाटकर क़िलेके कंगूरेपर चढ़ाया जावेगा दोनोंओर समरहोगा अमीरचौगानबाज़ीसुनकरअतिप्रसन्नहुआऔर बड़े २ योद्धोंका चित्त बढ़ानेलगा और राग नाचका सामान कराने लगा और आज्ञादी कि सबसेनामें तबला नगारा व रागरंग होकर रातको जागरण करके व्यतीतकरें और ईश्वरके चरणोंमें ध्यानकरें जबसूर्य पूर्व स्थानमें प्रकाशितहुआऔर तमनष्टहोकर सूर्य्यका तेजझलका उससमय नयमाय सेनालेकर चौगानमें निकला और इधरभी बलवान् अस्त्रसज्ञ कमर बांध सावधान हुये अमीर भी अस्त्रखड्ग व भाला व धनुषबाण व वस्त्रआदि धारण करके सियाहकैतास पर सवार हुआ और हेरोंके बेटे सम्हारा तोकनेभी झंडा अमीर हमलापर लगायासुलतांबख्तमगरबीभी दक्षिनीऔर अमीरके सज्जधजबनाके आया और बायेंओरसुहेल यमनी भी हथियार बांधके आयाऔर अमर व मुक़ाबिल घोड़ेके आगे धनुषबाण धारणकर तलवार आदि बांधिके घोड़ेपर चढ़के नचाते खुंदाते चले जाते सेनाके लोगोंका चित्तबढ़ाते आगे लहलहाते आनन्दमें समाते सुखपाते बलखाते बढ़ेजातेथे और मुक़ाबिल वफ़ादार को उसदिन अमीर ने सेनाके आगेकिया और वही हज़ार सवारों का रिसाला जो सुहेल यमनीके साथ मुसलमान हुआथा मुक़ाबिलके साथ करदिया अमरनेइस उपायसे सेनाका प्रबन्धकिया कि बराबर पंक्ति २ खड़ाकिया जिसे दूसरी ओरके लोग देखकर आश्चर्य करते पांचछः सहस्र सिपाही का अमीर की सेनापर औरों का गुमान हुआ दोनों ओरसे जबपंक्ति बनचुकी लड़ाई करनेकी जबवारी आई अमीर ज़मायताजदारकी इच्छामें नय-मायमंजिरशाह के पुचके आगेखड़ेथे और शेरबबर कीभांति पुकारतेहुये ईश्वरसे बरमांगरहेथे कि एकजवान घूंघुटहरे बस्चका धारण कियेहुये शिरसे पांवतक घोड़ेसमेत जड़ाऊ सजेहुये ढाल तलवार कटार बाण शरासन भालाआदि अस्त्रकंधे पै सँभाले गेंदहाथमेंलिये घोड़ेको चलाते हुये चलते २ मैदानमें आया और अमीरकी ओर देखकर हांकदी कि

हुमायूं ताजदार के चाहनेवाला कौनहै मेरे सामनेआवै यहीगेंद है यही मैदान है अपनी सीखीहुई विद्या दिखलावे अमीर हांकसुनतेही घोड़े को बिजली की भांति चमकाकर मैदान में आये कावाईंड़ पर लगाये कभी उड़ाते कभी जमाते उस अच्छे चालाक घोड़े को लड़ाई में लाये और कहाकि बलवान् सावधान हो यही स्थान यही चौगान यही गेंदहै उसकी चालाकी देखिये कि गेंदको मैदान में लाकर डालदिया और उस प्रवीण स्त्रीने घोड़े को जांघसे गुदगुदाकर गेंदको चौगानसे लिया चाहती थी कि गेंदको लेजावे और अपनी चालाकी और तीव्रता दिखावेकिअमीरने अमरके हाथसे चौगानलेकर घोड़ेको आगे ठहराया औरउसे बिल्लीके समान आसनसे दबाया और चौगानको संभालकर गेंद पर मारा और ईश्वरदत्त बलकी शोभा दिखलाई उसस्त्रीने देखाकि हाथसे बाजी जातीहै और सबभांतिका गुणमिट्टीमें मिलाजाता है तो झटपट घूंघट उलट कर मुखका प्रकाश विदित किया उहकामुंह हमजामें आंखोंसे देखा और सब चौगानमें प्रकाश छा गया ॥

चौपाई ॥

घूंघट उलटिदीन्ह जेहि काला । सूर्योदय जनु परम बिशाला ॥
हमज़ा दृष्टि कीन्ह जब वाही । अतिआश्चर्य कीन्हमनमाही ॥

अमीर उसेदेख चित्तलिखेसे होगये और ईश्वरकी रचना देखकर अति आश्चर्यवान हुये किहुमायताजदारने फुरसत पाकर घोड़ेको झिझकारा बल्किअपनी जान में गेंद लेजानेमें कमीनकीथी परन्तु अमीरने चित्तको संभालकर ईश्वर का ध्यानकर अपना मन सावधान किया और घोड़े को दौड़ाकर कहाकि हमतेरा छलसमझगयेयोंहीं तूगेंदोंको मैदानसे लेजातीहै और लोगों को जीतकर उनके शिर कँगूरों पर लटकातीहै किसी से काम न पड़ा होगा देखमैं मैदान से गेंदको लेचला ईश्वर की कृपा से मैदान मेरे हाथरहा यह कहकर गेंदको मैदानसे लेगये यद्यपि हुमायताजदारने अपनी चतुरता प्रकटकी तबभी अमीरसे कब बाजी पासक्ती थी अमीर गेंदको लेजाकर उसकेओर देखकर कहने लगाकि ऐहुमायताजदार अबक्या कहतीहै कुछ और भी हौसिला बाक़ीहै उसने कहाकि एकबार और इसकी परीक्षा कियाचहिये फिर लड़ाईका सामान करके अपना २ गुण दिखाया चाहिये अमीर उसके कहने के अनुसार गेंदको चौगान में फेकदिया और तेजी करके फिर भी बाजी जीत ली हुमायताजदारने कहाकि बाजी हाथसेगई सहस्त्रों में प्रतिष्ठा भंग होगई चाहाकि घोड़ेको एंड़ीलगाकर अपने भाई नेमायतक पहुंचें और मैदानछोड़कर अपनी सेनामेंजामिलें अमीरने घोड़ेको चलाकर हुमायताजदारका कमरबन्दपकड़के घोड़ेसे अलग कियाऔर अमरकीओरगेंद फेंकदिया अमरने कमरसे हाथ बांधकर अपनी सेनाकीओर मंह

किया हुमायने अपनी सेना से कहाकि यारो इसने गजबकिया अति शीघ्र मैदान मारलिया किसी भांति यह जाने न पावे जिसमें इज्जतरहजावे हुमायताजदार को लिये सबको बेइज्जत कियेजाताहै उस समय दशसहस्र सवार अस्त्र पहिनेहुये खड़ेथे सबके सबएकचित्त होकर अपनाश्वारकरना शुरूकिया अमीरकी सेनाभी शिघरबढ़ी पंक्तिकी पंक्ति साफ करदिया नैमाय की सेना काई की भांति सब फटगई समर का स्थान लाशों से पटगया॥

दोहा॥

आयेथे खल गर्भकरि बोलबोलि अधिकाइ। डालदिये हथियार सब खोलिश्रकुलाइ॥

ग़ाजीने सबके हृदय में संभार के बाणलगाये अच्छी भांति जिससरदार के शिर पर तौल के तलवार लगाई वह जीन तक उतर आई जिसके हुमायलका हाथमाराशिर और गर्दनआधीछातीसे अलगहुआ जिसकी कमरपर हाथ पड़ासाफ दो टुकड़े होगये उस समय यमन के महाराजके पुत्र ने मायने आनकर चाहाकि एक तलवार अमीर के शिरपर लगावें और दुष्टताका बलदिखावेंकि अमीरनेउसकेवारकोढालपररोककरऔर उसके कमरबन्द में हाथ डालके जीनसे साफ़ उठा लिया और दृढ़ा चिड़ियाकी भांति अमीरहमजाने शाहज़ादे ने मायको दाबकर अमर के हवाले किया बाकी लोग जितनेथे बहुधा अचेत होकर भागे और बहुत से तलवारके कौर होकर यमपुर में पहुंचे अमीर फौज का लूट माफ़ करके विजय प्राप्त करके अपनी सेना में पहुंचा जीत के बाजे बजाने लगे खुशी और आनन्द होनेलगा जब रात को खुशी की सभा सजी गई अमीर ने नैमाय को बुलाया कहाकि कह अबक्या कहताहै चित्तमें क्या इच्छाहै उसने बिनयकी कि अगर कोई मेरे कुटुम्बमें होता तो उसको क्या मजालथी कि मेरीसेनाका सामना करता और जान न खोतापरन्तु ईश्वर जाने कि आप कैसे पराक्रमी मनुष्य हैं सब प्रकार से ईश्वर के वरदानिक हौ क्या करूं मुसल्मान होता हूं अमीरने समझाकर अपनी छातीसे लगाया और अपनी बराबर उसके निमित्त बिछौना बिछवाय और अति शिष्टाचार किया फिरअमर मंगलगाने लगा जबसभा उठगई अमीर ने नेमाय और मलिका हुमाय ताजदारको कि उसने भी मुसल्मानी दीन अंगीकारकिया था खिलअत उचित कृपा करके उनको रवाना किया और आप सोनेके हेत तम्बूमें गया प्रातःकाल नयमायने अपनी सेना को बुला के मुसल्मान होनेका न्योता किया सबोंने दीनता से शिर झुकादिया और सब मुसल्मान होतेगये जितने सेनामें मुखियाथे सबके सब मुसल्मानी मतमें आये और उनको लाकर अमीर की मुलाकात करवाई और भेंटदिलाई अमीरने प्रत्येककोपारितोषिक कृपाकिया जब यह समाचार यमनके बादशाह मंजरशाहको पहुंचे कि चौगान बाज़ी

मेंहमज्ञागेंदवाजी हुमायु ताजदारसे लेगया और उसकी प्रतिष्ठाकेअनुसार बड़ाईकी और नयमायको लड़ाईमें पकड़के सेनासमेत मुसल्मानकिया सुनतेहीहृदयमेंअतिक्रोधआया और मक्केकामनोरथछोड़के उलटा अपने देशको फिरा औ गढ़ीमें पहुंचतेही समर केहेत दुन्दुभी बजवाई अमीरने यह समाचार पाकर अपनी सेनामेंभी नगारा बजानेका हुक्मकिया और सेनाका प्रबन्ध करनेलगे सूर्यकीकिरण फूटतेहीदोनों ओरकीसेना समरभूमिमें युद्धकरनेलगी बलवान् शेरसमान आस पासमें घिरआये और बड़े २ भट योद्धा जानदेने और लड़ने भिड़ने पर फेंटबांधी मंजरशाहने अपनाघोड़ा मैदानमें निकालकर हांकदी कि अमीरहमज्ञा सेनापति किसका नाम है और कहां है देखूं तो उसकी सूरत कैसीहै किसभांतिका मनुष्यहै मेरे सम्मुख आकर अपना बल प्रताप देखावे ॥

दोहा ॥

जो कोई फोलाद में निज पंजा करदेइ । सो दुखिया यहि बांहसों अति कलेश करिलेइ ॥

कभी किसीके साथ नहींपड़ा किसी युद्ध करनेवालेसे सामना नहीं हुआ अब अपनी जानदेना चाहताहै यह सुनतेही उसके सामनेआया अमीरनेकहा कि यह क्या बक २ कररहाहै क्योंकाल शिरपर चढ़ाहै ईश्वर चाहैगा तो एकवारमें तेराकाम हुआ जाताहै पलमात्रमें तुझे मुसल्मान करताहूं प्रथमतू अपनागुणदिखा और चित्तकीहौस चित्तमें मतरख उसने भालाउठाया अमीरने घोड़ेकोदवायाऔउसकेसमीपगया और तेजीकरके भालाउसका छीनलिया और डंडी तोड़कर पीछे फेंक दिया उसने खड्ग ईंचोअमीरउसकावारबचागयाऔरकमरमेंहाथडाल कर घोड़ेपरसे गिराकर तलवार छीनली औरचाहतेथे कि पृथ्वीपरपटकें कि उसने रक्षामांगी अमीरने धीरेसेउसे जमीनपर छोड़दिया वह भी उसी समय मुसल्मानहुआ फिर उसको अपने तम्बूमेंलाकरअतिसिष्टाचार किया मंजरशाहको औरउसकेसनेहियोंकोजोसेनापतिथे बड़े २ पारितोषिकदियेऔरउनकेदरजाबढ़ायेमंजरशाहनेएकमासतकअमीरके सिष्टाचारसे न्योताकिया और सब प्रकारसे ताबेदारी औरआधीनता की और उसीदिन सामान बिवाहका अपने अधिकारके अनुसार करने लगा और अमीरकी आज्ञानुसार सुल्तानबख्त मग़रबीकेसाथ हुमायु ताजदारका बिवाह करनेको उद्यतहुआ सुल्तानबख्तने बिनयकी कि हुमायुताजदार मेरीबेटी होचुकी किन्तु ईश्वरचाहैगा तो गठिबंधनउस दिन करूंगा जिसदिन आपका बिवाहहोगा तबतक हुमायुताजदार घरमेंरहै बापकेयहां कुछदिन सैरकरे अमीरने रीतिके अनुसार उसका मनोरथ पूर्णकिया और मंगलाचारके पीछे अमीरने मंजरशाहसे कहा कि अबमैं यहांसे कूच करूंगा और अपने घरकी ओरजाऊंगा

कि मेरी माता सशोक व सन्देहमय होगी मंजरशाहने बिनयकी कि मैंभी आपकेसाथ चलताहूं काबेके दर्शन करूंगा और वहां ख्वाजेसाहब केभी दर्शन पर्श चाहताहूं यह कह देशकाप्रबंध अपने मंत्रीपर छोड़ा तीस सहस्र सवार नैमायसमेत लेकर अमीरके साथचला ॥

हुस्साम अल्कशखेवरीके पुत्रका बड़ाहोना और मदायन देशमें करलेना ॥

जबहुश्शामबारहवर्षकाहुआऔर होश सम्हाला औरअतितेजवोप्रतापसघरसे बाहर पैर निकाला बाजारमें हल्ला गुल सुनकरपूछा कि यह हल्ला कैसा होताहै लोगोंनेकहा कि तहसीलदार नौशेरवां की ओर से कर तहसील करतेहैं जो मनुष्यशीघकरदेनेमेंढीलकरताहै उसकोअति कष्टदेतेहैं हुश्शामको बुरा मालूमहुआ तो कुछलोगोंको पकड़वा के नाक व कान काटकर शहरसे बाहरकिया और हुक्मदिया कि कोई एक कौड़ी किसीको न देवे जो कर नियत हुआहै वह हमारी सर्कार में भेजाजावे और सेनाके इकट्ठाकरनेमें अतिपरिश्रम करनेलगा यहांतक कि थोड़ेही कालमें एक बड़ीभारी सेना जमाकरली और मदायनकी ओरकूचकियाजब इतिहासलेखकोंनेयह समाचारलिखाऔरबादशाहके कानतक पहुंचा किहुश्शामअतिबलप्रतापकेसाथगर्वकरकेऔर बड़ीसेना साथलेकर मदायनहुकामार्गलियाहै हुश्शामअल्कशकापुत्रखेवरीबलवान हुआ बादशाहने बुजुरुच्चमेहर से सलाहचाही बुजुरुच्चमेहरने सलाह दी जो हुजूर आपही उसकेसाथ सामना करेंगे तो मेरे निकट यहबात अनुचित है क्योंकि जो इसपर बिजयभी हुई तो कुछनाम न होगा और जो कदापि औरही सूरतहुई तो अच्छा न होगा बैरियोंको बात करनेका स्थान होजायगा कि सप्तद्वीपके बादशाहको एक छोटेमनुष्य ने जीतलिया फिर प्रत्येकको आपसे सामना करनेका हौसिला हो जायगा इससे मेरे निकटयहीशुभहै कि उसकेआनेके पहलेही हुजूर शिकार खेलनेकोजावें और मदायनमें किसी सेनापतिको मुक़र्रर करदें जिससमय वह दुष्टआवे उसको पराजयकरें जिससे छोटेबड़ेकाहौसिला टूटजावेऔरआधीनताकेसिवाय शिर न उठावे बादशाहको बुजुरुच्चमेहर की यह सलाह प्रसन्नहुई और उसके शुभबिचारपर अति प्रशंसाकी आप आखेटकीओरगयाऔरशिकार खेलना अंगीकारकियाऔरअन्तर फीलगोश जो मल्ल प्रसिद्ध था पचासहजार सवारसे मदायनकी रक्षा और हुश्शामको दण्ड देनेकेहेत मुक़र्रर किया आठ दश दिवस व्यतीत हुयेथे कि हुश्शामखेवरीने चालीस सहस्र सवारसे आकर गढ़ीको घेरलिया और प्रजाको सतानेलगा अन्तरफीलगोशने भी गोली तीर तोप आदिसे किसीको खांवांतक न आनेदिया एक दिवस अन्तर फीलगोश ने यह चित्तमें बिचारा कि हुश्शाम बहुत दिवससे नगर घेरे पड़ाहै और मैं गढ़ीमें बन्दहूं हुश्शाम ऐसा कहांका बीरहै कि

जिसमें मैं दबूं नगर के बाहर निकलकर सामना करूं और पल माच में मारके पराजितकरूं और संसारमें नेकनाम और बीर कहलाऊंगा और बादशाह से जागीर और उहदा पाऊंगा ॥

दोहा ॥

रुस्तम नहीं संसार में रहा न पुनि बहराम । एक रहेउ आकाशतर वीरनको जगनाम ॥

यह समझ के पांच सहस्र मनुष्य सवार लेकर नगरसे बाहर निकला हुश्याम उसे देख कर ठट्ठा मार कर हँसा और बोला कि इसके शिर पर मृत्यु सवारहै कि जो यह मेरे सम्मुख आया है गैंड़ेको उसके सामने लाकर कहने लगा कि क्या मनोर्थ है क्यों अपनी और अपनी सेना का जी खोनेकेहेत आयाहै वह बोला कि अरेखल सदैवका पीढ़ी दरपीढ़ी का तूसेवक होकर तिसपर चढ़आया है इससंसार असार में थोड़ीसी उमर पर दुष्टता अंगीकार कीहै तू यह नहीं जानता है कि सप्तद्वीप के बादशाह का एकछोटा टहलुआ तुझको दण्डदेसक्ता है और यहसब सामान क्षणमाच में धूरमें मिला देसक्ताहै हुश्याम ने कहा क्या विक्षिप्त हुआ है इतना नहीं जानताहै कि बादशाहीके कामोंमें कौन किसका मालिक है और कौन किसके आधीन होता है और प्रजा कहलाताहै जो मनुष्य तलवार मारे उसी के नाम से सिक्का चलताहै मैं तलवारके बलसे तेरेबादशाहसे करलूंगा और सबदेशऔरकोशको बहुतशीघ्रअपने वश में करलूंगा हुश्यामका यह कहना था कि अन्तर ने तौल करएक भाला उसकी छाती पर मारा भालेने अपनी नोक पीठ से बाहर की हुश्याम ने यद्यपि ऐसा घावखाया परन्तु अन्तरको तलवार से दोटुक हूं किये और उसकी सेना पर जागिरा सेनाबिना सेनापतिकीथो नगर की ओर भागी हुश्याम सेना समेत मदायन नगर में पहुंचा और सब नगर को नष्ट और बरबाद करदिया औरसत्तर सहस्र मनुष्य मारे और नगर के नाकोंपर अपने सिपाही नियत किये और बादशाहतका साज ताज और तख्त समेत लेकर अपने डेरेपर लौट आया औररात आनन्द समेत व्यतीतकी और सुबहकोसरदार समेतखैबरकी ओरचलाऔरकई दिनके पीछे एक दो राहैंमिलीं कि जिसमें एक मार्ग काबेकोजाता था और दूसरी खैबर जाने की थी साथियों ने कहा यह लड़ाई दुनिया के नाम के लिये आप लड़े और विजय प्राप्तकी एकलड़ाई पुण्यके हेतभी चल कर ईश्वरके घरमें कीजिये और मुसल्मानोंके धर्म स्थानको मिटा-दिये हुश्याम पर जो दुष्टता सवार हुई यह सलाह उनकी प्रसन्न आई औरकाबेकी ओरचला यह वृत्तान्त मक्कामें विदितहुआ कि हुश्याम खैबरीमदायन को जीति करके काबेके खराब करनेके हेत आताहै और बहुतसी सेना साथ लियेहै जिसने सुना वहबेतके समानकांपगया और डरके मारे अचेत होगया उसीदिन हमजाभी विजय प्राप्त करके सेना

समेत मक्के में पहुंचा और काबेका दर्शनकरके अपनेबापको दण्डवत की और चरणोंपरगिरपड़ा ख्वाजेअबदुल्मतलब ने अमीरका शिरअपनेचरणों परसे उठाया और अति स्नेहसे गलेलगाया और साथियोंकाभी प्रतिष्ठा के अनुसार आदर किया शरबतकेघड़े मंगवाये और ईश्वरका धन्यवाद किया और धाहमार कर रोने लगा अमीरने विनय की कि आज का दिन खुशीकाहै ऐसे समयमें दुःख व शोककाक्याकारणहै मैं अच्छीभांति से युद्ध जीत करके आयाहूं लागोंको जिसका भरोसाभी न था ईश्वर ने मुझ पर कृपा की और आप इस आनन्दको त्याग करके रंजकरतेहैं ख्वाजेने कहाकि ऐपुत्र मेरेरोने का यह कारणहै कि थोड़े कालमेंविपत्ति का सामना होने वालाहै कि अल्कस का पुत्र कुश्शाम खैबरी मदायन को नष्ट करके काबेके गिरानेको बड़ीभारी सेना लिये आता है नगर के अच्छे प्रतिष्ठमनुष्य उसकेकारण अतिघबरातेहैंकारण उसकायहहैकि वहबड़ा दुष्ट है इस निमित्त मैं चाहता हूं कि तुमको किसी बहाने से इबशकी ओर भेजदूं अमीर ने कहा कि ऐकृपानिधान मरने से पुकार क्या है अवश्य है कि ईश्वर बड़ा बलवान है उसकी कृपा और आप के आशीर्वाद से जो मेरी जीति होजावे क्या बुद्धिसे दूरहै मैं उसे यहांतक कबआने देताहूं आगे चलकर उसका जान लेताहूं यह कहकर उसी समय बाप से बिदा होकर काबेके दर्शनकोगया और बिजयकी इच्छासे मंत्र पढ़े और ईश्वर से सहायता चाही और सेना जोड़के कुश्शाम का मार्ग रोकने के हेत चला और दुगुनी मंजिलें चले जातेथे एक मंजिल पर वह ठीकसमाचार पाया हरकारेने आकरवृत्तान्त बतलायाकियहां से दो मंजिल की दूरीपर उस दुष्टकी सेना पड़ी है कोशों तक भीड़भाड़ लिये पड़ा है यह सुनतेही हमजा उस स्थान पर उतरा और सेना का प्रबन्ध करनेलगा चारघड़ी रात व्यतीत हुईहोगी कि कईहजार सवार अपनी सेना से चुने और उस समय दौड़ मारने का मनोर्थ करके उस ओरको कूचकरदियाऔरअतिशीघकुश्शामकीसेनापरअमीर हमजाकी सेना बजकी भांतिजागिरी कुश्शामकीसेनामें हलचलपड़ी अमीरनेईश्वर का नाम लेकर हांकदीकि ऐ सोतेहुयेभाग्यवानलोगोजागो किईश्वरके प्रलय ने तुम्हें घेरलिया बड़े २ दुष्टों का जीछुड़ा दिया यमदूत तुम सब को लेने आयेहुयेहैं और प्रात होते २ दशसहस्रमनुष्य कुश्शामकीसेनाके कुश्शाम अपने तम्बू में पड़ा सोता था मार २ यह शब्द उसके कान में पड़ा तो शीघ जाग उठा और अपने लोगोसे पूछनेलगाकियहहल्लाकैसा है लोगों ने कहा कि कोई हमजानामी अरबका है उसने रातको दौड़ मारकर आलमगीर के समान मार पीट कर सेना को नष्ट कर दिया है जो ऐसेही दोचार घड़ी तक रहैगा तो सेना में मनुष्यका चिह्न भी न रहैगा कुश्शाम झटपट गैंड़े पर चढ़कर सेना में आया वहां सब को

न रहैगा कृष्णाम झटपट गैंड़े पर चढ़कर सेनामेंआया वहांसबकोअचेत और दुःखित और बहुतेरोंको मारे हुये बहुतेरोंको घायलपाया कि इतने में सूर्यउदय हुआ उससमय तीससहस्र सवार कृष्णामकेसाथ और दशसहस्र सवार अमीरकेसाथ थे और बनियेआदि अधिकथे कृष्णामने मैदानमें गैंड़ेको लाकर हमजासे बोला कि ऐ अरबी जवान यह घोड़ा और हथियार किससे तू मांगलायाहै इतनी बिसांतपर मुझसे सामना करनेको आयाहै तुझे अपने जीका डर न आया नाहक मेरी सेनाको सताया तेरीजवानीपर मुझे दया आती है इससे तेरे मारेजाने की आज्ञा नहींदीजातीहै यह हथियार और घोड़ा तू मुझे भेंटकी भांतिदे और हाथ जोड़कर अपना अपराध क्षमाकरावे तो अलबत्ता तेरा जी न मारूंगा तूने जो मेरीसेना पर रातकोडाकामारा उसकेबदले से तुझे छोड़दूंगा और जो मेराकहा न मानेगा तो तुझे अपनी तलवारसे बेमौत मारूंगा अमीर यह मूर्खताकी बातें सुनकर क्रोधको न थामसका और अत्यन्त क्रोधवन्त होकर कहनेलगा कि अरेनीच तू नहीं जानता कि मैं कौनहूं और किस घरानेका हूं खाजे अबदुल्मतलब का पुत्रऔरहाशमकापोताहूं औरहमारीतलवार कासमाचार क्यातेरे कान तक नहींपहुंचाऔर मेरेबाहोंका बल तेरेकानमें नहींआया और अपने मुंहको नहीं रोकता अब अरे मूर्ख नरकवासी सावधान हो क्या तेरी मृत्यु आई है किसलिये जीने से तेरा चित्त घबराया है कृष्णाम इस बात को सुनकर गर्वित हुआ और भालाजो उसके हाथमें था अमीर की छाती पर मारा अमीर ने उसका भाला अपने भाले पर रोका और दोनों ओर से भाले चलनेलगे जब सौ २ बार भाले चले और दोनों ओर से किसी के घाव न लगा तबकृष्णाम लज्जित होकर भाला को हाथ से फेंकदिया और तलवार मियान से खींचली चाहता था कि अमीर के बराबर आकर तलवार मारे कि अमीर ने चालाकी करके तलवार उसकेहाथसेछीन ली और अपने साथियोंके आगेफेंकदी और कहाकि तू अपना वार कर चुका अब मेरी बारी आई अपने को सम्हाल और अपने घोडे और हथियारों को देख भाल पीछे यह न कहना कि साव-धान करके न मारा मेरी हौस न पूरी होने पाई यद्यपि उसने ढाल को मूपर रक्खा परंतु अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर जो तलवार उसके शिरमें मारी तो ढालके दो टुकड़ा करके फौलादका झलरिया टोप काट करशिरके दोटुकड़े करते हुये छाती के बीचोबीच होकर चूतड़ों के नीचे उतरके आधा २ काट गई बैरीके मित्रोंके हवास ऐसी तलवार देखकर जाते रहेकि जो कभी न देखीथी ॥

चौपाई ॥

काट बखान करै केहि भांती । शिर पर धरै जाय आराती ॥

आंख बेठका पर नहिं रहई । ढाल काटि नीचे तक बहई ॥
यह वह देखि करै द्वै फारा । शिरते पावंलेइ महि धारा ॥
असि तलवार और नहिं देखी । कीन्हविचारहृदय निजलेखी ॥

छन्द ॥

कहै खड्ग दामिनि सरिस सुन्दर शोभ वर्णत नहिं बने ।
मानुष के करते अस चले जस ईश निज करते हने ॥
हुश्याम को करि नर्क बासी मीर मृग नृप सोहई ।
सेना के बीच में अस धस्यो जस अजय यक २ जोहई ॥

अमरने एकपलमें सबको मारकर लाशोंसे समरस्थान भरदिया बहुत भागखड़ेहुयेऔर बहुतमुसलमानहोगयेअमीरनेनौशेरवांकातख्तऔरछत्र लेकर सबलूट लमाकी और ईशाराको बन्दिसे छोड़ दिया औ प्रत्येकको सवारी और खिलअत और मार्गका खर्च देकरकहा कि तुम लोग घर को जावो उसके पीछे एक बिनबपच नौशेरवांको लिखाकि मैंनेईश्वरकी कृपासे इस नीचको मारा और हजारों मनुष्य जो उसके बन्दि मेंआपके थे उनको छोड़ा दिया और उस दुष्टका शिर मुक़बिलके हाथ कृपानिधानके निकट भेजताहूं और कैखुसरो का ताज और तख्त जो आज्ञा होतोमैं लाकर हाजिरहूं यह अर्जी और हुश्यामकी खबरदेकर रवाना किया और आप विजय प्राप्त करके मक्केकी ओर प्रसन्नहोकर कूच किया कहते हैं अमीर इस डाकामारने के सिवाय और कभी रात को डाका नहीं मारा ॥

नौशेरवां की सभा में मुक़बिलवफ़ादार के जानेका इतिहास ॥

बुल २ रूपीकलम नया इतिहास सुनाता है स्वच्छ कागज के तख्तापर सुन्दर बाग बनाता है कि चालीश दिनके पीछे नौशेरवां आखेट स्थान से मदायनमें आया और नगरको शोक और उजाड़ और तख्त ताजका चिह्न न पाया बुजुरुजमेहरसे नेत्रोंमें जल भरके कहने लगा कि गर्दिशने यहबुरा दिवस दिखावा यहांतक स्वप्नकी बिचार ठीक दिखलाई दी जो तुमने बताई थी किन्तु शेष यह दुखहमारा कब दूर होवेगा और कब आनन्द मिलैगा बुजुरुजमेहर ने कहा कि ईश्वर चाहता है तो आज से कल तक वह भी विदित हुआ जाता है आपको अति आनन्द प्राप्त होगा सासानियोंने जो मारने से बचे थे बख्तकसे कहा कि यह जो कुछ किया बुजुरुजमेहरने किया जो बादशाह को मदायन से आखेट को लेजाता तो हुश्याम ऐसा बुरादिन न दिखाता मुफ्त में नातेदार और कुटुम्बके लोग हमारे बेमौत मारे गये और बाकी रहे तेबन्दी में होगये सचहै कि बुजुरुजमेहरने अपने मतके डाहके कारण बरबाद किया बादशाहकी सेवा में जाकर और बिनय करके हमारा न्याय करावो और हमारी ओर से इतना करवाइये यहहल्ला होरहाथा कि सवारनमदा

पहिने हुये बालाक गर्दगुबार में भराहुआ बादशाह के निकट हाजिर हुआऔर समाचार आनन्दमय बादशाहको सुनायाकि हुशामखैबरी ने जो मदायन को नष्टकरके सत्तरसहस्रस्त्रीपुरुषों को बंधुआकरकेलेगया था यहांसे खैबर की ओर जाता था और अपने आगे गर्व के कारण किसी को न गांठता था हमलाने आपके प्रतापसे उसको मारडाला है और उसकाशिरअपनेएकमित्रकेहाथ कि जिसकानाम सुक्रबिलवफ़ादार है हुजूर ने भेजाहै और उसकीसेनाको मारके वहांकी प्रजाकोउसकीबंदिसे छोड़ाकरसबको खिलअतेंदीहैंयह शुभवृत्तांत सुनकरबादशाह उछलपड़ा और बुजुरुजमेहर को दौड़कर छातीसे लगालिया और कहाकि सब अधिकारी शीघ्र सुक्रबिलवफादार कीअगवानीकोजावें औरप्रतिष्ठा समेतउसको लेआवें वैसेहीबादशाहकी आज्ञानुसारकियागया जोलोग बड़े २ अधिकार पर थे अपनी २ सामग्री दुरुस्त करके सुकबिल की अगवानी के हेत नगर से बाहर आये और प्रतिष्ठा समेत उसको अपने साथलाये जिससमय सुक्रबिल आया बादशाह के तख्तको चूमलिया और अमीर अमीर की दी बादशाह इसभांति अमीर की प्रतिष्ठा की कि उन के विनय पचको सुकबिलके हाथसे लेलिया पहिले तो आपने पढ़ा फिर बुजुरुजमेहर को देकर कहा कि इसको बड़ी आवाज से पढ़ो और इसके मतलब से सबको विदित करो और हमारी बादशाहत में इसका विदित पच लिखकर सबशगह भेजवादो जितने लोग थे उसको सुनकर अति प्रसन्नहुये और बादशाह को इस विजयका मंगलाचार देनेलगेबादशाहने उससमय सुक्रबिलको पारितोषिक देकर प्रसन्न किया और रुपये मोहरें जवाहिर आदिसे उसको अतिप्रसन्न किया और आज्ञाकी किजब तक सुकबिलवफादार मदायन में रहै प्रतिदिन दरबार में बेधड़क आया करे लिखनेवाला लिखताहैकि जिसदिन सुकबिलवफादार ने बादशाह से भेंट की थी दैवयोग से उसदिन एक पेटुकी बादशाह के बागमें सरो की डाली पर बैठी देखपड़ी और उसकी गर्दन में एक साप परिध समान गलेमें लपटाहुआ दृष्टिपड़ाधावनने आकर समाचार बादशाहके सामने विदित किया बादशाहने कहा कि जानपड़ा कि अपनान्याय कराने के हेत आईहै कोई धनुषधारी ऐसा है कि जो इस पेटुकी को बचाकर सांपके फनमें बाण मारै; किन्तु इसको किंचित् साचतक कष्ट न मिलै यह बात सुनकर सब चुपके होरहे परन्तु सुक्रबिल अपने स्थान से उठ खड़ाहुआ और बादशाह कोतख्तकापाया चूमकर आज्ञा मांगने लगा आज्ञापाने के पीछे उधर को मुंह किया और भालाकी नोक पर एक दर्पण खड़ा करके एक मनुष्य के हाथ में दिया कि उसके मुंह के सामने रक्खे कुछ भी डरनकरे और हाथ हलने नपावे सांपको जो अपनी सूरत दृष्टिपड़ी फनको उठाकरउस ओरदेखनेलगाऔर जीभनिकालकर

अपने प्रतिबिम्ब की ओर निगाह करने लगा सुकबिलने फन देखकरतीर को फोंक में लगाया और गोशाकमानका ईंचकर उस सांपके फनपर मारा कि उस सांपके फनमेंलगा लगतेही उसने अपना प्राण त्यागदिया पेढुकी के परतक मेंभी कुछदुःख न पहुंचा और तीरसांपके घुसगया वह सांप तो पृथ्वी पर गिरपड़ा सुकबिल ने अपना तीर निकाल लिया और पेढुकी परबजाते हुये अपने घोसलेकी ओर उड़गई आशक्त होकर दी-खने वाले वाह २ का शब्द सराहने के हेत कहनेलगे बादशाह ने सुक-बिलके हाथ चूमलिये और पारितोषिक देकर अच्छी भांति से प्रसन्न किया और हमजा के बिनयपत्र का उत्तर लिखा और पारितोषिक समेत बख्तक को दिया कि लिफाफापर हमारी मोहर करके वह मन-सगां और वहमनखरां को सौंपदो कि शीघ्र अमीर के निकट जावे और यह उत्तर और पारितोषिक अमीर के निकट यत्नसमेत से पहुं-चावे कहतेहैं कि बादशाहने अमीर हमजाको अपने परवाने में लिखाथा किऐ सुभट समय के बैरियों के नष्ट करनेवाले संसार से तूने अपनी सुशीलता से अपना धर्म अच्छा निर्वाह किया और मेरे बैरियों से जोअतिगर्वित थे उनको पराजित करके नाम व निशान मिटादिया जो आजरुस्तम जीताहोता तो अधीनता काघेरातेरे ओरसे अपने गर्दन और कान में लटकाता औरसोहराब इसफंदपर तेरेबलकेआगे शिर न उठाता वह मनसगां व वहमनखरां को पारितोषिक समेत भेजा है तख्त और छत्र और और असबाब बादशाही जो तूने उस नीचेसे फेरलिया है अति शीघ्र रवाना करके यहीं हाजिर हो जिससे मेरी आंखें तुमको दे-खकर चैतन्यहों वख्तक दुष्टने उस परवानेको तो नहींभेजा दूसरा पर-वाना इस मजमून का लिखा कि हेअरबजादे इससे पहिले मेरामनोर्थ था कि सब अरब बासियोंको मारके हाशम के पुत्रोंमें से किसी को नरक्खूं परन्तु तुझसे यहकाम हमारी इच्छाके अनुसार हुआ इसका-रण हमने तेरा अपराध क्षमाकिया और पारितोषिक वहमनसगां व वहमनखरां के हाथ भेजते हैं और वह परवाना बादशाह का नहीं भेजा लिखाहै कि एक मल्ल आदीनामी सदैव से उसी गढ़ीमें रहा क-रता था हाशम अलक़स के पुत्र खैबरीका समाचारसुनकर घरको अ-पने खाली किया और अठारहसहस्र सवार से पहाड़ में छिपकर बैठा कि जिससमय हुशशाम इधर आनिकले मैं उसको पराजितकरूंकिएक धावन ने उसको समाचार दिया कि हुशशाम खैबरी को हमजाने मारा और उसका माल व असबाब लिये हुये मक्केका मनोर्थ किया है कि जो उसके रहने का स्थानहै आताहै यह सुनकरवह बोलाकि अच्छा हमभी अपना हिस्सा उससे लेंगे जिस समय गढ़ी रवाजिल के निकट हमजा आन पहुंचा आदीने अपनी सेनामेंसेएकसरदारकोदूतकेहेतचुनके यह

सँदेशा देकर हमज़ाके निकट भेजा किहुशाम मेरा शिकारथामैं बहुत दिनसेउसकीघातमेंथाउसकोआपनेशिकारकियामेरीइच्छासनहीमेंरही अबआपसे यह बिनयकरताहूं जोकुछ उसके माल व असबाब मेंसे आपके हाथ आयाहै आधा मुझकोदेदीजिये और आधा आपलेकर शुभसेअपने घरकी राह लीजिये नहींतो आपकाभीमाल उसके साथ जायगा सिवाय डाह और अफ़सोसके और कुछ न हाथ आवेगा अमीरयह संदेशा सुन कर बहुत हँसा औरउसके ऊपर बहुत कृपाकरके कहनेलगा किहमारी ओरसे दुआदेकर कहनाकि जो सलाह उसेप्रसन्नहोतो शराबकाप्यालाहाज़िरहै औरजो युद्धका सामान चाहता है तो यही मैदयहीमैदानहै सबप्रकारसे मुझेस्वीकारहैजोउसकी इच्छामेंहोउसकोमैंभीकरूंवहदूत हमज़ाके चालचलनपर सबप्रकारसे प्रसन्नहुआ और आदीसे जाकरप्रश्न का उत्तर कहा और अर्ज़ किया कि हमने अपनी अवस्थाभरमें ऐसा विवेकी औरबुद्धिमान्औरसुशील सर्दारकोई मनुष्यऐसाहमनेनहींदेखा मालूम हुआकि यहबड़ा प्रतापीहै आश्चर्य नहींहैकिसप्तद्वीप में अपनी दुन्दुभी बजावे और कुछ दिवसकेपीछे सकल देशोंकी बादशाहत इसके आधीन होजावे यह उत्तर सुनकर आदी लड़नेपर उद्यत हुआ आदी दूसरे दिवस अठारा सहस्र सवारका समूह लेकरदुन्दुभी बजाताहुआ मैदान में आया अमीरभी अपनी सेनालेकर सामने आये औरयुद्धकरने पर उद्यत हुये आदी इससजधजसेआया कि सेनावालोंकाचित्तघबराया देखातो इक्कीसफुटका लम्बाचौड़ा दोनोंओरबराबरहै औरअतिबिकट रूप बनाये हुयेहैं और शिर पर झलरियाटोप और सात पगडियांबांध कर तिसपर शमला बांधेहै और उसमें मूंड़के बालभी कुछ २ दीखपड़तेहैं और इक्कीस गजकी उसकेपेटकीदौरहै मनुष्यक्या देव है उसपर कमर-बन्द फोलादीबांधे जिरा बकतर और दास्तानेराकीमोजे टिकौरीपहिने ढाल पीठ पर तलवार कटार छूरी तरकश नीचेकमरके कमान पांच टांक की कांधे पर डाले लम्बा भाला हाथ में लिये हुये है अमर देख-कर अमीर से कहने लगा आपको अपने बलका बहुत घमंडथा आजमा-लूम होजावेगा ईश्वर भला करैदांतों पसीना आवेगा अमीरने कहा कि मुझे बल देनेवाला उससे अधिक बली है बैरीजो बली है तो हमारा सहायक ईश्वरदयानिधानहै देख तो क्या होताहै अमीरनेपरमेश्वरका स्मरण करकेउसके शरीरसे और देहसेकुछभी अँदेशा न कियाऔर घोड़े को उसकी ओर चलाकरकनोटीसे कनोटीकोमिलादियाबराबरहोता थाकि एक औझड़ ढालकी ऐसी उसके घोड़ेके मस्तक पर मारी किकई क़दम उसकाघोड़ापीछेहटगया और अचेतहोकरशिरझाड़नेलगाआदी नेजब यहबल हमज़ाका देखाकि बैरी अधिक बलवान्है औरजवानी से मस्तहैबोलाकि ऐजवानतुझमेंभीजानपड़ाकिइसभांतिकाबलहै औरबड़ा

साहसी है अब अपना नामबता कि तुझसाबीर मेरे हाथसे न माराजावे अमीरनेकहा कि पहलवानोंकानामखड्ग और धनुषादिसे विदितहोता है उसीपर खुदारहताहै तू सुनलेकि मेरानाम अबुलअलाहै तेरे सामने तेरा बल देखनेके हेत आयाहूं ला क्याअखरखता है देखूं तेरा वारकैसा होताहै आदी गदालेकर अमीरके शिरपरआया औरबोलाकिऐअबुल अला इसकी चोटसे तू न मरैगा यहकहकर अमीरके ऊपर अपनीइच्छा केअनुसार वहगदा मारी और अपनाबलकौसिलादिखायाअमीरनेउस को बचाकरके कहा कि हां अबदूसराभीवारकरलेजिसमेंतेरी हौस न रहै अबकी चोटसे बचूंगा तौ मैंभीएकबार करूंगा जोजीतारहा तो उसका स्वादकभीनभूलैगासदैवउसवारकोयादकरैगाआदीयहसुनकरक्रोधवान हुआऔरगदाको शिकारबन्दमें लटकायातलवारमियानसे लेकरचाहा कि अमीरके शिरपर वार करके मारे अमीर ने उसका कब्जा पकड़के दूसरा हाथ उसके कमरबन्द परडाल दिया वह भी अमीर से बलकरने लगा अमर ने निकट आकर कहा कि ऐमल्ला तुमतो आपस में बैलों की सी लड़ाई कर रहे हो घोड़ा बिचारे बेजीभके हैं इनकी कमर क्यों ताड़तेहो जो बल देखना मंजूरहै तो पृथ्वी पर उतरके लड़ौ तब हमजा और आदी दोनों ने अमर कीराय प्रसन्नकी और घोडों परकी लड़ाई बन्दकी घोडोंसे उतरे सामने मुकाबिला करनेको खड़ेहुये आदीनेकहा कि हथियार में तो हमतुम दोनों समान रहेहैं भाला व गदा युद्धमें भी हमतुमसमानरहे अबपिछलीलड़ाईमें दोनोंअपना २ बलदेखावें जो हारै वह उसकी आधीनता अंगीकार करे अमीरने कहा किमैं सब प्रकार से हाजिर हूं तेरी परीक्षा लेना चाहताहूं फिर आसन मारकर बैठगये आदीने इतना बलकिया कि रोम २ में पसीना बह निकला किंतु हमजा हलनसका और पृथ्वी न छोड़ी आदीबोला कि हमजा मुझे जितनाबल था करचुका अपने बलकी सीमासे गुजर चुका अब तुमभी अपना बल दिखाओ उसका आसनमार के बैठना था कि हमजा ने पहलेही बलमें उसका लंगर उठा लिया और कई बार चक्कर देकर पूछाकि अब तेरा क्या मनोर्थहै आदीने कहा आधीनता और सेवकाई और मनसे आपके ईश्वर प्रदत बलपर न्योछावरहूं अमीर ने धीरेसे उसको पृथ्वी पर रख दिया आदी नम्रहो ईश्वरका स्मरण करके उसके दीन में आया अमीर का सेना समेत गढ़ी तंग रवाजिल में ले जाकर अति आनन्द से शिष्टाचार बादशाहोंके समानकिया और अपने भाइयोंको भी इनसे मिलाया अमीर ने प्रत्येकको गलेसे लगाया और बीरताका पारितोषिक कृपा किया जब अमीरने उसआनन्द सभासे छुट्टी पाई तो कहा किवहईश्वर निगहवान है अब मैं अपने घरको जाताहूं अपने पिता के चरण के दर्शन करूंगा आदीने कहाकिऐ हमजा ऐसातो नहीं कि जोसुखेखाना

न देसकेगा मुझे किसहेत साथ नहीं लेतेहो जो हजार मन अनाज मेरे निमित्तदोगे तो मैं उसमें अपना भी रखलूंगा दोपहर नहीं तो उसे एकही पहर भोजन करूंगा अमर बोला कि क्या खूब मनुष्य सबसे कम आदी खाता है भला ऐसी कम भूखमें कौन खाना देनेमें मुंह मोड़ेगा इस बिचारे कमखुराक का कौनचित्त तोड़ेगा अमीरने हंसकर आदी से कहा कि यह क्या बात है परमेश्वर रक्षक है मुझको और तुमको दोनोंको वही खानेको देता है और सब चराचर की वही सुधि लेता है जो तुम चलो तो मेरे शिर आंखों पररहो फिर आदी अठारह हजार सवार लेकर अमीर के साथ २ आया और अमीर प्रसन्न होकर मक्केकी ओर चले ॥

अमीर को मक्का की ओर जाना और नौशेरवां का परवाना पहुंचना ॥

लिखने वाले इस मधुर वृतान्तको यों बर्णन करते हैं कि जब अमीर मक्के में पहुंचा प्रथम काबेके दर्शनकर के नमाजदोगाना पढ़ी और आदी से ठगीकी कसमकरवाई फिर अपने पिताकेचरण चूमनेको चला खाजे अबदुलमतलब ने जब अमीरके आनेका समाचार सुना तो नगर बासियों से अमीर के लौटनेका मंगलाचार करवाया और नगर के भले २ मनुष्य लेकर अमीरकी अगवानीको चला और कुटुम्ब समेतसबलोग अमीर के लेनेकोगये मार्गके मध्यमें पिता पुचका मिलाप हुआ अमीर ने चरणचूमे खाजे ने उठाकर अमीर को अपनी छाती से लगाया और रुपया व मोहरें फकीरोंको लुटाईं वेलोग आशीर्बाद देनेलगे कि ईश्वर बिजयी सदैव तुमको बिजय प्राप्तकरे खाजेजब अमीरको घरमेंलायेऔर दीवान-खाने में बैठे और नगरबासी भी सब आकर उपस्थित हुये अमीर से मंजिरशाह यमनी और नयमाय मंजिरशाह यमनी के पुच और सुहेल यमनी और सुलतानबख्त मगरबीन् आशीर्बाद देकर तौकबिनहैरां की नौकरी करवाई और प्रत्येककी प्रशंसाकीखाजेअति कृतकृत्यहुआ और सबपर कृपा की दृष्टि की और इसी भांति से सबका अधिकार बढ़ाकर पहुनई की एकदिन बातोंबातअमीरको मालूमहुआकि आदीआदिया बानोका पुचहै तब अमीरअतिप्रसन्नहुयेकिदूधकेकारणमेराभाईहै उसी दिन आदीकोअपनी सेनाका सेनापतिऔरदीवानखानेऔर नक्कारखाने और फर्राशखानेका दारोगाकियाऔर अठारह प्रकारका पारितोषिकदेकर अच्छी पदवीपर नियतकिया अमरने अमीरकी आज्ञानुसार आदीसे पूछाकि आपके खानेके हेत जितनी सामग्री चाहनाहो कहदीजिये कि बावरचीखाने का दारोगा प्रति दिन आपके निकट भेज दिया करै या खाना बनवाकर आपके डेरेमें भेजवादिया करै आदीनेकहा कि यहतो घरहै मुझे खाना इतना चाहिये जिसमें जीव रहै अंगीकार यह है कि अमीरके दरवाजे पर अच्छीभांति सेवकाई निबाहूं अमरनेकहा

कि प्रतिवस्तुकानाम और तादादकहदीजियेतो दारोगाआपकेबाबरची खानेमें पहुंचादियाकरैगा गोल २ कहनाक्या जरूरहै खोज न करनाचाहिये आदीने कहा कि अच्छा भाई दारोगा से कहदो कि प्रातसमय इक्कीसऊंटका मांसखाताहूं और दोपहर को इक्कीसहिरन और इक्कीस दुम्बेके कबाब अंगूरी मदिरा के इक्कीस शीशों के साथ चखताहूं और जितनामैंने प्रातःकालसे दोपहरतक बताया उतनाही सांझसमय बल्कि इक्कीस भैंसा अधिक बियारी करताहूं और इक्कीसमन आटेकी रोटियां दोनोंपहर खानेके निमित्त ढेर होता है और इसपर मेरा पेट अच्छी भांतिसे नहीं भरताहै किन्तु इतनेमें मेराजी रहसक्ता है अमीरने कहा कि इसदुकानके दारोगासे कहदो भेजदियाकरै कुछभी इसमें कमी न कियाकरे उनके कहनेके अनुसार उतना रातिब उसका ठीकहुवा और प्रतिदिन खाना जायाकिया कईदिवसके पीछे अमीरने सुनाकि नौशेरवां के एलची आतेहैं मेरेनामपरवाना व खिलअतलातेहैं फिरखाजेअबदुलमतलब और अमीरहमजा नगरकेवासियों समेतउनको अगवानी लेने के हेत नगरके बाहरआये और अपने घर पर पहिले उनको लाये जो शीशेके घर उनके हेत सजरहेथे उसमें उनको उतारा और थोड़ीदेर के पीछे अच्छे२ व्यंजन बनवाकर उनके निमित्तभेजे उन्होंने अमीरहमजा को परवानाऔर खिलअतदीअमीरउसपरवानेको पढ़करभौंहँसिकोड़ी और अतिरंजकिया खाजेने अमीर के रिसकरनेका कारण पूछकरकहा कि बाबा यह बादशाहहै कभी सलामसे त्योरी भौंचढ़ाते हैं और कभी गालीसे प्रसन्न होकर खिलअत देतेहैं अप्रसन्न होनेका स्थान नहीं है दूसरेदिन जबरातबीती सूर्यने अपना प्रकाशकिया तबखाजेअबदुलमतलबने नौशेरवां के लोगों को दावत की और सबनगर बासियों को भी उसन्योतेमें बुलाया खाने पीने के पीछे एलचियोंने खाजे के नामका परवाना खाजे को दिया उसके पढ़नेसे अमीर को अपनी खैरखाही और परिश्रमपरअति डाहहुआ देखने वालोंको अति आश्चर्य हुआ कि इन लोगों का कैसा नामहै अर्थात् वह मनखरांके नामपर जेपर चौकता था उसको खेकी बिन्दी जानकर खरांपढ़ा और तशदीद काफ सुकान अशुद्धता से उसको काफफारसी अर्थात् गापढ़ी और वेदोनों दूसीनाम से मक्केमें प्रसिद्धहुये अमर उस परवानेका समाचार सुनकर अमीर से भीअधिक अप्रसन्नहुवाजबखानेकेहेतदस्तरखान बिछा और सबजमाहुये दोखानकसनोंसे कसके उनदोनों के सामनेलाया और बुराभला कहने कोतय्यारहुवा किन्तुअमीरने उनकोमनाकिया औरकहाकिन्योतायह आपकामेरी ओरसेहै और अच्छीभांति से उसे रखवाया इसमें खुराक आपकेयोग्यहै यह कहकर खानपोश उतार कर कसनों को खोलकर जिसकाबमें घासथो वहतो वह मनखरांके सामने धरवाई और जिसमें

आदमियोंकी हड्डियांथीं वह वह मनसगांके आगेलगाये और जितने लोग उस स्थानपरथे सन्दहमें आकर अमरसे कहनेलगे कि यह क्याचाल है यह कैसी बुरीबात करताहै अमरबोला कि खर व सग अर्थात् गधा व कुत्तोंके निमित्त इसकेसिवाय अच्छाभोजन क्याहै यही पशुओंको मिला करताहै जोकि इनकी पङ्क्तई मुझपरभी उचितथी इसकारणसे मैंने भी मुंह न छिपाया वे दोनों अमरपर दांत पीसकर रहगये और अनुचित बात जानकर कुछ कह न सके जब खानेसे छुट्टीपाई सबकाचित्त भरगया अमरने दो नावें मँगवाईं उसमें उनकी खिलअतेंथीं वह उनके सामने धरवाईं एकपरसे ढकना उठाकर एक कपड़ाकुत्तोंकेडौलकानिकाला और वहमनसगांके हाथमेंदिया और दूसरेमेंसे एक झूल निकालकर वह भी वहमनसगांकादी और फिर एकपाखर निकालकरवहमनखरांको ओढ़ाया तबतोउनसे न रहगया कटारनिकालकर दोनोंअमरपरदौड़ेऔर उसके मारनेपर मुस्तैदहुये तौकबिनहैरां ने कटार दोनोंके हाथोंसेछीन ली और घूसोंसे उनकोमारा उसीदिन दोनों एलची शिरपरहाथ रखकर भागे किसीके होश ठिकाने न रहे अमीरने एक अर्जी बादशाह के दरबारमें अपने सेवकके हाथ लिखी उसमें अभिप्राय यहथा कि जो सेवा मुझसे आपके निमित्त बनपड़ी उसके बदलेमें हुजूरने अच्छीभांतिसे प्रतिष्ठा इस आधीनकी की मैं ऐसेही परवाने और खिलअत कोयोग्यथा आपसे मुझे आशाथी कि इस अनुचरके नाम कृपापत्र आवेगा उसपर नाराजी कापत्र आपनेभेजा और अर्जी और परवाना खिलअत समेत एक सेवकके हाथ रवानाकिया और कुछ विनय करनाथा सो उसकी जबानी कहलाभेजा एलचियोंने बादशाहके पास आकर रो पीट की सब बुराईका समाचार वर्णनकिया और झूंठ सच बहुतकुछ कहा नौशेरवां ने सुनकर बहुत क्रोध किया और बुजुरुजमेहर की ओर देखकर कहा कि यह अर्जी अधिक गर्वीहै उसके बड़े २ मनोर्थहैं एलचियोंकी बातोंसे जाना जाताहै कि फिरारहुआ चाहताहै बुजुरुजमेहरने विनय कीकि कृपानिधानहमजा ऐसाशीलवान गुणनिधानहौसिलामंदहिम्मतवान मनुष्य संसारमें उत्पन्न नहीं हुआहै जो एलचियोंकी बातें सचहैं और उसमें सन्देह और कोई बुराई नहींहुईहै सब प्रकारसे मालूमहो जायगा यहबातें होहीरहीथीं कि मुक़ाबिल अजीब परवाना व खिलअत जो बादशाहकी ओरसे गयाथा लेकर हाजिरहुआ बादशाह अर्जीका मजमून और अपने परवानेका लिखाहुआ वृत्तान्त और वह खिलअत जो बादशाह अपने भंगीको न देता देखकर बख्तकपर क्रोध करनेलगा कि हे मूर्ख दुष्ट यह क्या बातहै जो तूनेकी ऐसी मूर्खता और धिठाई पर कमरबांधी और उसीसमय हजारतोड़ा मोहरें उसपर जुर्माना किया और कईदिनतक दरबारमें आने न दिया और अमीरको उजरनामा

अपनेहाथसेलिखा कि वह परवाना और खिलअत जो तुमको पहुंचाया वह बख्तकने दुष्टतासे बदलकर भेजाथा तुमको उचित नहीं है कि हमारी ओरसे अपने दर्पणरूपी चित्तमें मैल न बैठनेदेना और अपनेचित्तका खेद दूर करदेना और इसीनिमित्त परवाना खिलअत बुजुर्ग उम्मेद बुजुरुज्जमेहर के पुत्रके हाथ भेजाजाता है कि जिससे बख्तक को किसी भांति दुष्टता करनेका समय न मिले कि तुमभी बुजुर्ग उम्मेद के साथ मेल मिलाप करके शीघ्र दरबारमें आवो और अपने हाथों तख्त व छत्र लेकर गुजरानो यहलिखकरपरवानावशाही खिलअतबुजुरुज्जमेहर कोदे कर कहा कि बुजुर्गउम्मेदके हाथ देखना दूसरा कोई इसपरवाने और खिलअत को न देखे खाजे बुजुरुज्जमेहर बादशाहसे बिदा होकर जबघर में आया तो सुघड़ी देखके एक सर्प जादूकाबनाया कि जबहवाउसकेपेट में जातीतो तीनबार आवाज साहबकिरांको निकलतीऔरबैरी व मित्र के कानमें पहुंचती और उसकी सुगंधसे सबका दिमाग सुगंधमयहो जाता उसकी महकके आगे और सुगंधित वस्तु लज्जित होती और जब बैरियोंके आगे देखपड़ता तो अमीरकीसेना का डर उसके हृदय में छाजाता और इस वस्तुकेसाथ एक चौखट दानियाल पैगम्बरकी हमजाकेहेत भेजी और चारसौ चौवालीस बोझ कपड़ा घोड़ोंपर रख कर अमरके निमित्तभेजा और बुजुर्गउम्मेद से कहा कि हमारी ओर से यह अमरको पहुंचादेना और वस्त्र पहिननेका उपाय बुजुर्गउम्मेद को सिखाकर कहा कि इसीभांति अपने हाथसे अमरको पहिनादेना यहबातें समझाकर एक दस्ता सवारोंका साथ करके रवाना किया और मार्गकाहाल सब समझादिया जब चारकोश मक्का रहगया खाजे बुजुर्ग उम्मेदने डेराकिया दैवयोगसे उसदिन अमर उसओर गयाथा बुजुर्गउम्मेदने पहिंचाना हो न हो यहीअमरहैतोअपनेनिकटबुलाकर गलेसेलगाया और कहा कि हम तुम दोनोंभाईहैं यहांउतरो पिताने कुछ वस्तु तुम्हारेहेत कृपाकीहै और वस्त्र व भूषण अच्छे २ भेजेहैं यह कपड़े उतारो जिसमें वे कपड़े पहिनावें और उसका उपाय तुम्हें बतावें अमरने अपने वस्त्र उतारे बुजुर्गउम्मेद ने वेकपड़े अपने आदमियों को देदिये और एकघड़ी तक अमरको वैसाहीरक्खा और कहा कि लालचसे नंगेमतहोना अब यही सजाव पहिनेरहो और ईश्वरपर राजी होकर निश्चिंत लाड़ले रहो तबतो अमर बहुत घबराया और धाहैंमार कर रोने और हाथ जोड़नेलगा कि मेरे वस्त्रमुझको कृपाकरो मुझे इतने मनुष्योंमें नंगा मतरक्खो मैं सदा तुमको आशीर्वाद देतारहूंगा मैं आपके खिलअतसे हाथ उठाया अब अपने घरको राहलूंगा बुजुर्गउम्मेदने हंसकर कहा कि ऐ बाबा ऐसेही इस सृष्टिमें बहुत लोगोंको तुभी नंगा व हैरान करैगा और बहुतोंके कपड़े उतारलेगा इस निमित्त

मैंने तुझे नंगा कियाहै कि जिससे आगे यहसमय यादरहै अमरने कहा कि मैं आप का चेला हुआ बुजुर्गउम्मेद ने गठरी तोशेखाने से मँगवाई पहिले एक अम्मामा अमरका पहिनाया उयोंहीउसको पकड़कर ऊपर को ईंचा तो एक थैलीसी अमर के लटकनेलगी अमरने कहा बाबाजान भी बड़े उदारहैं कि बालिश्तभरकीमियानीतम्बामें नदी बुजुर्गउम्मेदने आफ़तबन्दनिकाला अमर देखनेलगा तो उसमें एकथैली मखमलकी थी उसपरसातरंगकेगुलबूटेनिकालकरभेजीहै औरउसकीडोरीमें एकघुंघडी लालकी लगी है कि वह अमोलघा बुजुर्गउम्मेद ने लिंगेन्द्री उसमें रखके लंगोटकी भांति ईंचकर कहाकिइसकाआफ़तबन्दकहतेहैंआपकेपुरुषों नेभी ऐसे कपड़े कभी सुने व देखेहैं और उसके लाभ बतातेहैं किइससे एक तो दौड़ने कूदने में अण्डोंपर चोट किसी प्रकारकी नहीं आती है और दूसरे पानीमें तैरने के समय इसके खोलने की कुछआवश्यकता न होगी अमर बोलाकि पिता कृपानिधान की मुझ पर बड़ी दया है कि मेरे निमित्तभी खिलअत भेजी और मेरी लिंगेन्द्रीकेहेतभीभेजी बुजुर्ग उम्मेदने दो भांतिकेबस्त्रअमरको पहनायेएक हरीर काथा औरदूसरा कतांका और उनके सबके लाभबताये औरकहाकिजोएकनर्महैवहशरीर की स्वच्छता और आरामकेहेतहै और दूसरामध्यमबायुके लियेहै और हराअंगा सुनहला पहनाया और एक आधा कुच जड़ाऊ कि जिसपर सुगन्धित करनेवालाएकतोताजमुर्दका बनायाकलँगीके तौरसेशिरपर रखदियाऔर हिरनकी खालकीसूर्यामुकुटसूर्यकीउष्णता केहेतमाथेपर लगाया और एक फलाखून कि जिसपर सातरंगका रेशम लगाहुआथा औरभांति२कानड़ाऊकामउसपरबनाथाऔर एककमन्दजिसकीलच्छों से गाठेंबंधीहुईथीं चमकमें सूयेसे अधिकशोभितथीं और पांचकटारजिन के दस्ते जड़ाऊ और चवालिस घुंघरू अमरके कमरमें बांधे बारह स्थान अट्ठाईस कोने पर शब्द चौबीस घुंघरू और छः पाताबे दिये और डाढ़ी का पट्टीबांधनेकी सबबातें बताईं थैलीऔर कारूरा लफ़्ज़कमरमें रक्खा और मज़बूत कसा और कुछ बस्तु मदिरा में भिगो कर सुखाई हुई कि जब उसका पानी में भिगो दीजिये तो पानी मदिरा होजावे और एक हुक्का और एक अतरदान अच्छी भांतिका बनाहुआऔर जहरमोहरा की डबिया मोरकीसी पूंछ बनीहुई और बिजली की तरह अच्छीसजी हुई तलवार और धनुष और लम्बी चौड़ी शिरसे पावँतक चादर और जोड़ा जूतेका अधिक नरम मोती उसपर जड़े हुये इसी भांतिसे चारसौ चवालिस टुकड़े बस्तुके सजेहुये बुजुर्गउम्मेद ने अमर को पहनाये और भांति २ के अस्त्रउसकेशरीरपरसजे अमरबुजुर्गउम्मेदसेविदाहोकर उसी भांति से अमीरकेपासगया और ब्योरा समेत सब समाचार कहा और बिनयकी कि नौशेरवां ने आपके बिनयपत्रके उत्तरमें भारी उजुरनामा

पारितोषिक सहितबुजुरुज्जमेहरके बेटेके साथउनका खाजे बुजुर्ग उम्मेद नामहै और वहनगरसेदोकोशकीदूरपर टिकेहुयेहैंभेजाहै और खाजेबुजुरुज्जमेहरने भी एक जादू का सर्प और दानियालका तम्बू आपके हेत भेजाहै और चारसौ चवालीस टुकड़े भांति २ केजो इस समयमें मैंपहिने और लगायेहुं मुझको कृपाकियेहैं और उनके साहबजादे ने यह सब वस्त्र और अस्त्र पहिनाकर सबका सुभाव बतलायाहै अमीर यह समाचार सुनकर अति प्रसन्नहुआ और स्त्रीयों समेत साजबनाकर सवार होकर खाजेबुजुर्गउम्मेद की अगवानी के हेत नगर के बाहर पहुंचा बुजुर्गउम्मेद अच्छी भांति से अमीर के आगे आया और नौशेरवां का उजुरनामा अमीर को दिया और खिलअत जो नौशेरवांने दी थी वह अमीरकेआगे धरी अमीरशाही परवाना पढ़कर अति आनन्दित हुआ औरखिलअतमेंसे कोई २ कपड़े निकालकरउसीसमयपहिनलिये उसके पीछे अमीरको सर्प और दानियालका तम्बू बुजुर्गउम्मेदने निकालकर दिया औरकहाकिपितानआपकोआशीर्वादकहाहैऔरयहवस्तुआपके निमित्त भेजीहै और सचतो यहकि ये वस्तु आपही के योग्य है अमीर उससे अति प्रसन्नहुये और वह सर्प तौकबिन हैरांको और तम्बू आदी को सौंपदिया और बुजुर्गउम्मेद को साथले सेना समेत नगर की ओर चला वहां पहुंचकर खाजे अबदुल्मतलब और भले २ मनुष्यों से मिलाप करवाया और बहुत दिनों तक एक मंगलाचार के हेत सभा शोभित रक्खीएकदिन बुजुर्गउम्मेदने अमीरसे कहाकि बादशाह आपका मार्ग देखते होंगे और आपका चर्चा बारम्बार करतेहोंगे उचित यह है कि अबआपमदायनकी ओर पधारिये अमीर उसी समय काबेके दर्शनकरके खाजे अबदुल्मतलबसे बिदाहोकर मंजिरशाहयमनी व नैमायऔर सुहेलयमनी व सुलतानबख्त पश्चिमी और आदीकरव व तौकबिनहैरां समेत तीस सहस्र महाभट व याधा से मदायनकी ओर चले प्रतिदिनमार्गमें चलते सैर करते चलेजाते थे कि इतने में एक स्थानपर दो मार्ग मिले अमीर ने खाजेबुजुर्गउम्मेद से पूछा कि आपइसी ओरसे आयेथेआपको मालूमहोगा कि यहराहैं किधरको गईहैं और कौन २ देशकी सीमामें मिलीहैं बुजुर्गउम्मेदने कहा कि दोनों मार्ग मदायन के हैं एक मार्ग निडरहै परन्तु दूर बहुतहै छः महीने में इस मार्ग से पहुंचते हैं और दूसरी राहमें बहुत जल्द मदायनमें पहुंचतेहैं परन्तु पांचवर्षसे यहमार्ग बन्दहै किइस मार्गमें भारीजंगल मिलताहैऔर उसमें एक सिंहआकर रहाहैऔर आदमीकी सुगन्धपाकर बिपिनसेनिकलकरएकही थप्पड़में चाहे जैसामनुष्यबलिष्टहो प्राणहरलेताहैइसकारणइसमार्ग होकरकोई नहीं जाने पाताहै अमीरने कहाकिवहदुष्टईश्वरकी सृष्टिको दुखदेताहै मुझको उसेमारना उचित है यह कहकर अकेले आपतलवार लेकर अ-

र्थात् ख्वाजे अमर अत्यार समेत उसमार्ग भयभीत से मदायन की ओर पधारे और सेनाको स्नेहियों समेतदूसरीमार्गजो अभयथी उस्से ख्वाजेबुजुर्ग उम्मेदके साथभेजा और कहाकि घोड़ोंकीचाल चलेजाना यद्यपि मंजिर-शाह आदिने साथचलनेको कहा परन्तु अमीरने नमाना दूसरेदिन उस बियाबानमें एक झाड़के निकटपहुंचे वहांअच्छी ठंढीवायु देखकर घोड़ेसे उतरपड़े और एक तालाब देखा कि उसके किनारों पर हरी २ दूबलगी हुई थी और कुछ वृक्ष इधर उधर छायादार लगेहुयेथे उसपर पक्षी विविध प्रकार की अच्छी २ बोलियां बोलते थे उसके किनारेपर जीन-पोश बिछाकर बैठगये और अमरघोड़े को चरानेलगा और उस बिपिन में फलआदि खानेलगे इतने में एक भारी खड़खड़ाहट पैदाहुई और जानवर के आनेकी आहट मालूम हुई और एकसिंह उसमें से निकला अमरने अपनी उमर में कभी मिट्टीका भीसिंह न देखाथा ज्योंहीं उसे देखाभयभीत होकर घोड़े को छोड़कर एकबड़े वृक्षपरचढ़गया और अ-मीरको पुकारने लगा किऐ हमजा एकसिंह बड़ाही लम्बाचौड़ा झाड़ से निकलाहै और आपकी ओरचला आताहै इससे आप उसतालाब पर से भागकर मेरेपासचलेआइये याभागकर शीघ्र किसी वृक्षपर चढ़जाइये अमीर अमर की यहबात सुनकर बहुत हँसे और कहने लगे कितूक्यों अचेतहुआजाताहैकुछदीवानाहुआहैमैंआपउसकेमारनेके हेत इसमार्ग से आयाहूं इसीकारण इतनामार्ग चलकर सेनासे अलगहुआहूंऔरतू मुझेउससे डराकर भगाया चाहताहै इस स्थानपर तू मुझेनामर्द बनाया चाहताहै यहकहकर सिंहकी ओर देखने लगा और उसको ओरचला देखाकि सिंहबहुतभारी है अतिडरावनी सूरतहै पूछतक चालीसहाथ लम्बाहोगा और गातसे अधिकऊंचाहै अमीरने सिंहको ललकाराकि ऐ गीदड़ किधरजाताहै तेराबैरी आनपहुंचा है सिंह यहहांकसुनतेही अमीरके ऊपरगिरा कि अमीरने चोटबचाकर उसकी वार बचादी और ऐसा शब्द किया कि सब बनगूंजउठा और सिंहके पिछले पैरपकड़कर ऐसा झिटका मारा कि कमर की हड्डीटूटगई और दोपहरमें वहसिंह चिल्लाकर मरगया अमरने अमीरके हाथों को चूमलिया औरप्रात:-काल उस सिंहकी खालको खोचके साफकिया और भीतरसे भीअच्छी भांति साफकिया और उसमें भुस भराकर उस बनसे लकड़ियां तोड़ लाया और नयातमाशा करनेको जीचाहा तो एक बैठका बनाया उस पर उससिंहको इसभांतिसे बैठाया कि जोकोईदेखे उसको जीता देख पड़े और एक मनुष्यको पकड़के उसके शिरपर रखवालिया और अमीर के साथहुआ अमीर इसकारणसे कि सेनाबहुत दिनों में मदायनपहुंचे गी जहांकहीं स्वच्छअस्थान पातेडेरा करते औरआखेट खेलतेजाते इस कारणसे अमीर और बुजुर्गउम्मेद साथही पहुंचे अमीरतो अपनीसेना

मेंगये और अमरने एकटीकड़े के नुक्कड़पर जो गढ़ीके तले की दीवारके तले बनाथा उसभुस भरेहुये सिंहको बैठाया किकुछभी सजीव सिंहसे और उससे भेदनहीं था इसीभांति दूसरे दिवसजब दरवाजा नगर का खुला घसियारे उसटीकड़े कोओर घासछीलने केनिमित्तजातेथेतोएका एकी उनमेंसेएककी दृष्टिउससिंहपर जापड़ीतोचिल्लाकरअचेतहोगया और बोलबंद होगया उसकेसाथी इधरउधरदेखनेलगेकिइसनेक्याऐसी वस्तु डरकी देखी कि चिल्ला कर अचेतहो पृथ्वी पर गिरपड़ा देखते २ सिंहपर दृष्टिपड़गई तो सबकेसब नगरको ओर सिंह २ कह करभागे किसीका चित्त ठिकाने न रहा घसियारों की जबानी जो यह समाचार विदित हुआ नगरमें हलचल पड़गई कि एकबड़ा भारी लम्बाचौड़ासिंहटीलेपरबैठाहै थोड़ी देरमें नगरकीओर आया चाहताहै हमारे साथका एक मनुष्य वहां अचेत होकर गिरपड़ा है देखें वह घरतकआताहै या उससिंहका कौल होजाता है सब नगर भर घबरागया कोई अपना दरवाजा बन्द करने लगा कोई बंदूक बांध कर अपने कोठे पर जाबैठा और बाहर निकलना पैठना कठिनहुआ नाकों पर प्रबन्धहोने की आज्ञाहुई नगरमें यहचर्चाहुईकि देखाचाहिये जो कदापि नगरकी ओरफिराता सैकड़ोंको मारडालेगा यहवृत्तान्तजब बादशाहनेसुनातो नगरकी गढ़ीकीओरजाकर मल्लांसमेत और सेनापतिसाथलेकर देखा तो सचमुच एकसिंह टीकड़े पर बैठाहै जो कोई उसे देखताहै वहकांप उठताहै दैवयोग्यसे मुकबिल अपने तम्बूसे कि जो नगरके बाहर गड़ाथा बादशाहकी मुलक़ातको जाताथा जब टालेके निकट पहुंचातबवहसिंह दिखाईदिया तोतरकससेतीर निकालकरकमानकीनोकपर चढ़ाउसकी ओर चला और सामने पहुंचकर ध्यानलगाके जो देखा तोसिंहमें हलचल न पाई धोखेसे सूरतदृष्टिपड़ी तबशोचा कि ऐसी बाजीगरी अमरके सिवाय दूसरेको समझना कठिन है यह उन्हींका कामहै मालूमहोताहै कि अमीरसिंहको लगाड़ सुनकर बनकी ओरसे आये और सिंहदुष्टसे उसबनको साफकरआयेहैं औरसिंहकोमाराहै लोगोंको डरनेकेलियेअमरनेउसकीखालमेंभुसभरकरएकतमाशाबनायाहै फिरबादशाहसेजाकर अपनी बड़ाईबर्णनकीबादशाहकोभीज्ञानहुआऔरप्रसन्नहोकरसुहरों के संदूकचे मुकबिलको कृपाकिये और खिलअत औरभारी मोलके जवाहिरदिये औरकहादेखोतो अमीरनगरसेकिधरउतरेहैं शीघजावोऔर हरकारे रवानाकरो और पूछके इसको अतिशीघसमाचारदो मुकबिल बादशाह से विदाहोकर नगरकेबाहर निकलादैवयोग्य से अमरअमीर की सेनामें पहुंच नगरकी ओरआताथा औरबादशाहके पासअमीर के आनेका समाचारसुनानेजाताथातोदूरसेदेखाकिएकमनुष्योंकाझुण्डगढ़ी से बाहर निकला औरउसबनकीओरजाताहै अमरनेउसकापीछाकिया

और निकटजाकरदेखा कि मुकबिल वफ़ादार हमारा पुराना मित्रहै मुकबिल अमरको देखकर पूछनेलगा कि अमीरका तम्बू कहांपर खड़ाहै यहसुन अमरको बुरा मालूमहुआ कि न तो मुझे सलामकी और न क्षेम कुशल पूंछीऔर न घोड़ेसे उतरकरमिला अमर मुकबिलकी ओर देखकर कहनेलगा कि हेदुष्ट सुन तुझको अमरने बादशाहकी सेवामें भेजाहै या सैर करनेको मुक़बिलने कहा कि मैंने सुनाहै कि थोड़ीदेरहुई कि यहां अमीरआये हैं उनके मिलनेको जाताहूं सैर कैसी बादशाह की सेवासे आताहूं अमरने कहा तूने बहुत बुराकिया कि उनके मिलनेको चला मुक़बिलनेकहा कि क्यातू दीवाना होगयाहै कि मुझसे बराबरी करताहै अमर यहसुन झुझुलाकर बोला कि ऐ भाई तुझकोभी यह हौसिलाहुआ जो मुझसेभी ऐसीबातें करनेलगा नौशेरवांने तीनसंदूक मोहरोंके क्या दिये कि तू खाजा बनगया जिससे तेरामन ठिकाने न रहा यहकहकर गोफन निकाला और अति दमक चमकका एकपत्थर अपनी थैलीसे निकालकर गोफनपर रक्खा और घुमाकर मारा तो मुक़बिलके माथेपर लगनेसे रुधिरकी धारें छूटनेलगीं मुक़बिल उसी सूरतसे अमीरके निकट चलाआया और रोन पीटनेलगा अमीर यह समझकर कि क्या मदायनके लोगोंनेइसेरक्तसे स्नानकराया हैइससे भौंहैं सिकोड़ी फिर मुक़बिलनेअमरकागिल्लाकिया अमीरनेअमरको बुलाकर कहा कि यह कैसी चालहै आपसमें ऐसी शत्रुतारखतेहो अमरने बिन्ती की कि यह वही कहावतहै कि यह अपनेही मुखमियां मिट्ठू बनताहैमुझ सेभी सुनलीजिये अमीरने कहाकहो कहताहै अमरनेकहा कि मनुष्य परदेशमें दूसरे साथीका भरोसा रखताहै और यह मुझको मिलातो न सलामकियानमिलाजोअच्छेमनुष्योंकोचाहियेअबहमदानोंआपकेसम्मुख समानहैंजैसीआज्ञाहोवहकरैमैंतो उसकेमिलनेकोखड़ाहुआऔरयह गर्वसमेत मुझसे घोड़ेकीबाग थामकर आपको पूछनेलगा मैंने उससेकहा कि ऐ दुष्ट तुझको अमीरने बादशाहकेसमीप सेवाकरनेकेनिमित्त भेजाहै कि सैरकरनेको यह बहुतबुरा करताहै कि सैर करता फ़िरताहैतोयह मुझसे क्या कहताहै कि तू मेरी बराबरी करताहै आप इसका न्याय करें और इसकोछोड़ आपकप्रतापहीसे यहदिनइसे ईश्वरने दिखलाया है कि बादशाह की दीहुई जड़ाऊ खिलत पहिनेहै और तीन संदूक मोहरोंके पायेहैं और कौनसी बातमें यह मुझसे अधिकहै यहक्याकरै इसको अपनी धन सम्पतिकाअभिमानहैयह कहावत सचहैकिसीनेकहा है कि ईश्वर छोटे मनुष्यको धन प्रताप न देवे औरकिसीकमीनेकोबड़ा अधिकार न देवे अमीरने अमरकीबातें सुनकर मुक़बिलसेकहा कि इससमाचारमें तेरा अपराधहै कि तुम दोनोंको आपसमेंविरोधकरना अनुचितहै जाओ आपसमें मिलाप करलो मुक़बिलतो मिलनेपरराजी

होगया परन्तु अमरने इनकारकिया और कहा कि यहधनसम्पतिवान और सेठहै औरबड़े अधिकारपरहै मैं बिचारा बे सामान और आधीन और दीनहूं मुझसे और इनसे समानकी कोई बात नहींहै और इनके आगे क्या हकीक़तहै मुक़बिलने देखा कि अमरतो मिलाप नहीं करताहै तो एक संदूक मोहरोंका अमरको दिया और कहा कि ले भाई अबतो मेरा अपराध क्षमाकरके अपना चित्त मेरी ओरसे साफकर अमर तो लोभका सेवकहीथा मोहरोंसे प्रसन्न होकर मिलगया दूसरेदिन ख़ाजे बुजुर्गउम्मेद बादशाहके पासगया और अपनेजाने और अमीरके आने का समाचार वर्णनकिया बादशाह बहुतप्रसन्न हुआ और बिचारके अनुसार बुजुरुक्षमेहर सब अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेने का बिचारकिया बख्तकने सासानियों को बहँकाकर मनाकरनेपर आरूढ़कियाकि सप्तद्वीपकाबादशाह एकअर्बज। देकीअगवानीलेके औरछोटे नौकरकी इतनी प्रतिष्ठाकरे ख़ाजे बुजुरुक्षमेहरने कहाकि हमलोग बादशाहका पुत्रहै उसने भी तुम्हारे साथ २ उपकारकिया है कि तुमलोगों को लड़के बालोंसमेत एकभारी शत्रुसे छोड़ालिया और उसपर खिलअतें आदि देकर बन्दिसे छोड़दिया है मालुमहुआ कि तुम लोग अति निर्लज्ज हो और कुछ भी बुद्धि नहीं रखते हो बुजुरुक्षमेहर के समझाने से वह झगड़ा दूरहुआ और प्रत्येक मनुष्य अपने २ स्थानपर चुपहोरहा फिर बादशाह चार हाथीके तख्तपर सवार होकर अधिकारियों समेत सजधज बनाके अमीर उमराओं सहित अमीर की अगवानीको चले दो कोश सवारीगईहोगी कि सामने से कालीरेखप्रगटहुई जब वायुनेउसमैदानकोरज उड़ाकरसाफकिया तोबीसझण्डेतीससहस्र सवारोंके विदित हुये और उनसवारोंके बीचमेंअमीर स्याहकैतासपरसवारदेखपड़ादायें बांहकीओर बादशाह बायेंमल्लदिखाई दिये और अस्त्रधारण कियेहुये बख्तसजे शब्दकरते बारह स्थान चौबीसलचक अट्ठाईस कोनेकामुंह करते हुये विद्यार्थियोंको साथलिये ख़ाजेअमर अख्यारभीचलेआतेथे बादशाह ने दायेंबायें आगेपाछे पियादह सवारों की सेनाका तमाशा देखते हुये अमरको देखा कि पन्द्रह सोलहबर्षकाहै और उसकीसुन्दरताईकेआगे कोईसंसारमें नहींहै और सकलगुण निधान अतिशीलवान स्याहकैतास पर सवारहै इससजधजका मनुष्य आसमाननेभी संसारमें न देखा होगा नौशेरवां की आंखें सब साथियोंसमेत अमीरपरपड़ीं अमीर बादशाहको देखकरघोड़ेसेकूदपड़ा औरभेंटकरनेको आगेबढ़ाऔरझुकेसलामकिया औरकैखुसरोकातख्त जिसे हुशङ्ग।मलेगयाथा अपनेशिरपररख छत्रसमेत बादशाहको भेंटदिया अमीरका तख्त शिरपर लेजानेका कारण यहथा कि जब कैखुसरोने तूरान बिजयकरके ईरानपर कब्जाकियाथा तो रुस्तमजालके पुत्रने उस तख्तको अपने शिरपर उठाकर तीसपग बादशाह के

दर्शनको गयाथा इस कारणसेअमीरने भी नौशेरवांकीबड़ाईकीकितख्त को शिरपर उठाकर चालीश पगगया और उसको फूलसा उठाकरइस वास्तेलेगया कि मैं रुस्तमसे दशगुना अधिक बलिष्टहूं नौशेरवां इसचाल को देखकर अमीरसेअतिप्रसन्नहुआऔरअपनेनौकरोंमेंसेएकको आज्ञा दी कि शीघ्र तख्त अमीरके शिरपरसे उतार ले और आपतख्तसे उतर कर अमीर की ओर चला और अमीरको अति कृपादृष्टिसे देखनेलगा अमीरभी दीनतासे अति शीघ्र आगेबढ़ा और बड़े प्रेमसे चरणोंपर गिर पड़ा नौशेरवां ने अमीरके दोनों हाथ पकड़कर गलेसे लगालिया और उसीसमय अपने दोनों पुत्रों हरमुज और फरामुर्ज को अमीरके मिलने को आज्ञा दी और सब सरदारों से मिलवाया और हर एकका अधिकार और नाम बताया ॥

अमीरका मदायन नगर में जाना और रुस्तम की जगह पर बैठना और उससे अधिक बल और प्रताप दिखाना ॥

लिखनेवालाइसवृत्तान्तको यों वर्णन करता है कि दूसरेदिनख्वाजेबुजुरुचमेहरने दरबारके भीतर अमरकी बादशाहसे नौकरीकरवाईऔर उसके गुण और लक्षणकी प्रशंसा बादशाहसेकी बादशाह नेअतिकृपासे अमरकी ओर पावँ फैलादिया कि चूमलेवे और हाथको जंघापररक्खा अमरने बादशाहकेपावँचूमकरहाथोंको आंखोंसे लगाया और चालाकी से अंगुली से अंगूठी इसप्रकारसे उतारली कि बादशाह को खबर भी न हुई और फिर और २ सरदारोंसे मिलनेलगा जब ख्वाजा गिराजउद्दीनबख्त से मिलने लगा तो चुपकेसे वह अंगूठी उसकी जेबमें डाल दी उसी समय बादशाह घोड़े पर सवार होकर लगाम पकड़ कर मदायन की ओर चले अमर अपने साथियों समेत बादशाहके साथ रहा फलांग मारता हुआ चला अमर को इस चालसे मेहतर आतश जो नौशेरवां की सभा में बड़ा चतुर और सरदारोंमें बड़ाथा अमरकी इसचालसेजल भुनकर कबाब होगया पुकार कर अमर से कहने लगा कि ऐ लड़के गुरुगुड़ही रहा चेला शक्कर होगया यहस्थान तेरे चलनेका नहीं है मेरे आगे तुझे चलना न चाहिये अपने क़ायदे से चल बादशाह के साथ तुझे चलना क्या कामहै अमर बोला कि प्रथम तो तुम बूढ़ेहो और मैं जवान और पराक्रमी दूसरे आगेतुमअकेले थे अब मैंभी आगयाहूं आगेतुमको जाना अनुचित है अबछुट्टी लेकरएक किनारा पकड़के बैठिजाइये मेहतर आतश अमर की ये बातें सुनकर आग होगया नर्मगर्म कहने लगा बादशाह और अमीर ने दोनोंकी सुनी दोनों कीओर देखकर बादशाहने आतशसे पूछा क्याहै आपसमें क्या झगड़ा है उसने वर्णन किया सेवक पुराना चतुरोंका सरदार है और सदासे आपने पालन किया है और यह लड़का मुझको आपके साथचलने नहीं देता नौशेरवांने कहा

कि अमर तू क्या कहता है क्या तुझको अपनी चतुरता का अभिमान है अमरनेप्रार्थनाकी किञ्चुपानिधान चतुरता केवलबातोंसे मेलनहीं रखती बड़गुणसे समझी जाती है इसमेंबड़ा दौड़धूपका कामहोता है जो आतश को इसकी परीक्षा करनीहोतोदेर न करे मैदानपकड़े बादशाहनेकहा कि अमर यहबाततोतूने बहुतअच्छी कही मैं प्रसन्नहूं आयहां सेनगरका दरवाजा दो कोशहै तुमदोनों एक २ तीर लेकर दौड़ो तुममेंसे जोप्रथम तीरदरवानको देआवैतोवहदूसरेपरबड़ाईलेजावैदोनोंने अंगीकारकिया बादशाहकी आज्ञानुसार एक२तीरमिला दोनों हाथ पर हाथ मार करभागे थोड़ी दूर सवारीसे बढ़कर अमर पीछे रहा आतश आधकोश आगे बढ़गया देखनेवालोंने कहाअमरनेनाहक अपनी प्रतिष्ठाखोई अंत में मेहतर आतशआगे निकलगया कि आतशनगरकेनिकट पहुंचाअमर ने यहसमझकर कि देखनेवाले मुझपर हंसतेहोंगे उसवरको यादकरके आतशके निकटफलांग मारकेपहरेके सिपाहीको तीर देके आतशकेपीछेसे दुलत्तीलगाई और गर्दनको ऐसागांठा कि आतशचित्तगिरपड़ाऔरसब शीघ्रताकीचालभूलगयाशिरमेंजोपत्थरकीठोकड़लगीएककिर्चखोपड़ीकी उड़गई रुधिरबहचला अचेतहोकर घबरागया और पगड़ी उसकीउतार कर तीरहारपालको देकरकहा कि मुझकोपहिचान रख कि मेरानाम अमर है मेरी चतुरता सबकहीं प्रसिद्ध है और असत्य को अच्छी भांति समझलेताहूं ऐसा नहो कि कुछ लेदेकर कहा कि प्रथम तीर आतशने दिया है और अमरने उसकेपीछे दिया है बच्चाजोझूठबालोगे तोअपना किया पाओगे इससे सावधान होजाना लालचका काम न करना सच २ बादशाह से कहना द्वारपालक घबरायाकि यह क्या हालहै अमर पीछे पाओं चलकर बादशाहके समीप जा पहुंचा और सलाम कर मेहतर आतश की पगड़ी दिखलाई बादशाह उसकी चालाकी पर बहुत हंसे और आतशलाज के कारण बादशाह के पास न गया जब बादशाह की सवारी नगरके फाटक पर पहुंची कहा कि सेना साहबकिरां कातिल शादकाम स्थानपर उतरे और उसी स्थान पर सबके स्थान सवार और पियादेके स्थानबनें सबने पांति २ से डेराकिया और वहस्थान नदीकेकि-नारेथा किन्तु साहब किरांबादशाह के साथनगरमें पहुंचा और वहांसे किलेमेंगया और साहबकिरांके देखन को सब नगरभर उमड़ाथाछोटेबड़े स्थानोंमेंखुशीथीकि साहबक्किरांने उनलोगोंको बन्द से छुड़ाकरसलूक कियाथा जो देखताथा वहअमीरको आशीर्वाद देताथा कि ईश्वर सदा इसकोबनायेरक्खेऔर इसकातेजऔरप्रतापसदाहराभरा रक्खेइसीभां-तिसेसाहब किरांबादशाह के साथदरबारकी ड्योढ़ीपर आये बादशाहने आज्ञादी कि मुसलमानी अमीर तककी दाहिनी ओर बैठें और लोग अपने २ स्थान परबैठें सबसेपहिले अमर एक चौकीपर तकिया लगाकर

बैठगया और मूछोंपर ताव देनेलगा साहब किरांसे बादशाहने कहा कि तुमको अख्तियार है जहांचाहो वहांबैठो तुम्हारा घरहै अमीरने अपने चित्तमें कहाकि ऐसीजगहपर बैठोकिकोई बराबरी का दावा नकरसके कहावत है कि बिल्ली को पहिले दिनमारै जिससे तोताबर्ष बादशाहके तख्त के निकट एकचन्दनकी चौकी जड़ाऊ बिछीथी और वहबैठका रुस्तमका था सलामकरके उसीपर बैठगये जिससमय साहब किरांने जीनपोश उठाकर पावँरक्खा सासानियोंके कलेजेमें गांसीसी लगगई चित्तमें विचारकिया कि आजकादिन तकरारकानहींकहसमझलेंगेहूस बैठने का प्रश्नोत्तर करेंगे बादशाह ने कईढेर मोहरों के साहब किरांके ऊपर नेवछावर किये अमीरनेभी जो अच्छी २ वस्तु लायेथे बादशाहपर नेवछावरकी बादशाह की आज्ञासे कन्दका शर्बत अमीरको दियागया पहिले साहब किरांने पिया फिर और २ सरदारों को दिलाया फिर बावरची भांति २ के खाने चुनकर लाया बादशाहने साहबकिरां समेत उसे खाया जबखाना खाचुके तबमदिरा चलनेलगी और मंगलाचार की सभा सजी मदिरा देनेवाले एकहाथमें मदिरा की बोतल लिये हुये और दूसरे हाथमें प्याला थांमेहुये उपस्थित हुये बादशाहने अति आनन्दमें खाजे अमरसे गानेके निमित्त आज्ञादी अमर दाऊदी दुतारे को मिलाकर सबप्रकार के राग गानेलगा प्रत्येक छोटा बड़ा कान लगाके सुननेलगा वहरागगाये कि चियांसूरी फीकेहोगये तोता भी कान लगाकर सुननेलगा और सबओरसे प्रशंसा का शब्द निकलता था मियां तानसेन सानोजोउठे उससमय नौशेरवांने चाहा कि अंगूठी उतारकरदेवे गाने का बदला लवै देखातो अंगूठीसे अंगुली खालीहै क्रोधकरके कहा कि हमारी अंगूठी किसनेलीहै अभीहाथसे उड़ीजाती है कहीं गिरतोनहीं पड़ीहैअमरनेकहा किसेवाय इनलोगोंके औरतो कोईनहीं आयाहै जोवह इसअपराधमें फँसे और इतने आदमियोंसे सुलतान आलमकी अंगूठी लेगया जो आज्ञाहो तो सेवक एक २ की तलाशीले और आपके प्रतापसे उसेनिकाले और पुकार २ कर कहनेलगा कि यारो जिसने अंगूठी पाईहो हजूरमें गुजरानदेवे इनआम पावेगा नहींतो उसको कष्टमिलेगा इधर उधर ढूंढ़नेलगा और प्रत्येक कहता कि भलाहुआ कि हम दरबारसे बाहरभी नहींगये बादशाहने अमरसे कहातो अमरने शाहकी आज्ञानुसार सबका झारालिया नाम करने के हेत सबकीजेब टटोली और कहा कि मुसलमानों परहमें कुछ संदेह नहींहै तुमहमारे लोगोंका झारालो इनहीं लोगोंमें ढूंढ़ो जब अमरसब पहलवानों और सेनापतियों का झारालेचुका बादशाहने बुजुरुजमेहर को आज्ञादी कि अबतुम अपनी ओरके लोगोंको देखो सबका झारालो और अच्छी भांतिसे सबकी कमर और कपड़ेदेखो और सबका

कि अमर तू क्या कहता है क्या तुझको अपनी चतुरता का अभिमान है अमरनेप्रार्थनाकी किञ्चपानिधान चतुरता केवलबातोंसे मेलनहीं रखती बड़गुणसे समझी जाती है इसमेंबड़ा दौड़धूपका कामहोता है जोआतश को इसकी परीक्षा करनीहोतोदेर न करे मैदानपकड़े बादशाहनेकहा कि अमर यहबाततोतूने बहुतअच्छी कही मैं प्रसन्नहूं आयहां सेनगरका दरवाजा दो कोशहै तुमदोनों एक २ तीर लेकर दौड़ो तुममेंसे जोप्रथम तीरदरवानकोदेआवैतोवहदूसरेपरबड़ाईलेजावैदोनोंने अंगीकारकिया बादशाहकी आज्ञानुसार एक२तीरमिला दोनों हाथ पर हाथ मार करभागे थोड़ी दूर सवारीसे बढ़कर अमर पीछे रहा आतश आधकोश आगे बढ़गया देखनेवालोंने कहाअमरनेनाहक अपनी प्रतिष्ठाखोई अंत में मेहतर आतशआगे निकलगया कि आतशनगरकेनिकट पहुंचाअमर ने यहसमझकर कि देखनेवाले मुझपर हंसतेहोंगे उसवरको यादकरके आतशके निकटफलांग मारकेपहरेके सिपाहीको तीरदेके आतशकेपीछेसे दुलत्तीलगाई और गर्दनको ऐसागांठा कि आतशचित्तगिरपड़ाऔरसब शीघ्रताकीचालभूलगयाशिरमेंजोपत्थरकीठोकड़लगीएककिर्चखोपड़ीकी उड़गई रुधिरबहचला अचेतहोकर घबरागया और पगड़ी उसकीउतार कर तीरद्वारपालको देकरकहा कि मुझकोपहिचान रख कि मेरानाम अमर है मेरी चतुरता सबकहीं प्रसिद्ध है और असत्य को अच्छी भांति समझलेताहूं ऐसा नहो कि कुछ लेदेकर कहा कि प्रथम तीर आतशने दिया है और अमरने उसकेपीछे दिया है बच्चाजोझूठबालोगे तोअपना किया पाओगे इससे सावधान होजाना लालचका काम न करना सच २ बादशाह से कहना द्वारपालक घबराया कि यह क्या हालहै अमर पीछे पाओं चलकर बादशाहके समीप जा पहुंचा और सलाम कर मेहतर आतश की पगड़ी दिखलाई बादशाह उसकी चालाकी पर बहुत हंसे और आतशलाज के कारण बादशाह के पास न गया जब बादशाह की सवारी नगरके फाटक पर पहुंची कहा कि सेना साहबकिरां कातिल शादकाम स्थानपर उतरे और उसी स्थान पर सबके स्थान सवार और पियादेके स्थानबनें सबने पांति २ से डेराकिया और वहस्थान नदीकेकि-नारेथा किन्तु साहब किरांबादशाह के साथनगरमें पहुंचा और वहांसे किलेमेंगया और साहबकिरांके देखन को सब नगरभर उमड़ाथाछोटेबड़े स्थानोंमेंखुशीथीकि साहबक्किरांने उनलोगोंको बन्द से छुड़ाकरसलूक कियाथा जो देखताथा वहअमीरको आशीर्वाद देताथा कि ईश्वर सदा इसकोबनायेरक्खेऔर इसकातेजऔरप्रतापसदाहराभरा रक्खइसीभां-तिसेसाहब किरांबादशाह के साथदरबारकी ड्योढ़ीपर आये बादशाहने आज्ञादी कि मुसलमानी अमीर तककी दाहिनी ओर बैठें और लोग अपने २ स्थान परबैठें सबसेपहिले अमर एक चौकीपर तकिया लगाकर

बैठगया और मूछोंपर ताव देनेलगा साहब किरांसे बादशाहने कहा कि तुमको अख्तियार है जहांचाहो वहांबैठो तुम्हारा घरहै अमीरने अपने चित्तमें कहाकि ऐसीजगहपर बैठोकिकोई बराबरी का दावा नकरसके कहावत है कि बिल्ली को पहिले दिनमारै जिससे तोतावर्ष बादशाहके तख्त के निकट एकचन्दनकी चौकी जड़ाऊ बिछीथी और वहबैठका रुस्तमका था सलामकरके उसीपर बैठगये जिससमय साहब किरांने जीनपोश उठाकर पावँरक्खा सासानियोंके कलेजेमें गांसीसी लगगई चित्तमें विचारकिया कि आजकादिन तकरारकानहींकहसमझलेंगेइस बैठने का प्रश्नोत्तर करेंगे बादशाह ने कईढेर मोहरों के साहब किरांके ऊपर नेवछावर किये अमीरनेभी जो अच्छी २ वस्तु लायेथे बादशाहपर नेवछावरकी बादशाह की आज्ञासे कन्दका शर्बत अमीरको दियागया पहिले साहब किरांने पिया फिर और २ सरदारों को दिलाया फिर बावरची भांति २ के खाने चुनकर लाया बादशाहने साहबकिरां समेत उसे खाया जबखाना खाचुक तबमदिरा चलनेलगी और मंगलाचार की सभा सजी मदिरा देनेवाले एकहाथमें मदिरा की बोतल लिये हुये और दूसरे हाथमें प्याला थांमेहुये उपस्थित हुये बादशाहने अति आनन्दमें खाजे अमरसे गानेके निमित्त आज्ञादी अमर दाऊदी दुतारे को मिलाकर सबप्रकार के राग गानेलगा प्रत्येक छोटा बड़ा कान लगाके सुननेलगा वहरागगाये कि तियांसुरी फीकेहोगये तोता भी कान लगाकर सुननेलगा और सबओरसे प्रशंसा का शब्द निकलता था मियां तानसेन मानोजीउठे उससमय नौशेरवांने चाहा कि अंगूठी उतारकरदेवे गाने का बदला लवै देखातो अंगूठीसे अंगुली खालीहै क्रोधकरके कहा कि हमारी अंगूठी किसनेलीहै अभीहाथसे उड़ीजाती है कहीं गिरतोनहीं पड़ीहैअमरनेकहा किसेवाय इनलोगोंके औरतो कोईनहीं आयाहै जोवह इसअपराधमें फँसे और इतने आदमियोंसे सुलतान आलमकी अंगूठी लेगया जो आज्ञाहो तो सेवक एक २ की तलाशीलेे और आपके प्रतापसे उसेनिकाले और पुकार २ कर कहनेलगा कि यारो जिसने अंगूठी पाईहो हजूरमें गुजरानदेवे इनआम पावेगा नहींतो उसको कष्टमिलेगा इधर उधर ढूंढ़नेलगा और प्रत्येक कहता कि भलाहुआ कि हम दरबारसे बाहरभी नहींगये बादशाहने अमरसे कहातो अमरने शाहकी आज्ञानुसार सबका भारालिया नाम करने के हेत सबकीजेब टटोली और कहा कि मुसलमानों परहमें कुछ संदेह नहींहै तुमहमारे लोगोंका भारालो इनहीं लोगोंमें ढूंढ़ो जब अमरसब पहलवानों और सेनापतियों का भारालेचुका बादशाहने बुजुरुजमेहर को आज्ञादी कि अबतुम अपनी ओरके लोगोंको देखो सबका भारालो और अच्छी भांतिसे सबकी कमर और कपड़ेदेखो और सबका

भारालिया जबबख्तककी बारीआई उसकी जेबमें अंगूठी पाई और वह सब अमीर आश्चर्यवान् हुये और बख्तकअतिलज्जितहुआ अमरनेबाद-शाहसे हाथ जोड़कर कहा कि चालाकोंको चोरी करते सुनाथा और मंत्रियोंको न सुनाथा न देखाथा सो आज बख्तकको देखा कि मंत्रीभी चोरी करतेहैं जोदश बीसलाखकी कोई वस्तुहोती तो संदेह न था इस थोड़ेपर निश्यत करना इन्हींका कामहै आपकीकृपासेइसके घरमेंबड़े२ मोलके रत्नहोंगे उसपरभी यहनिश्यत है किस प्रकारहो क्या सृष्टिमें यह आतशका नातीहै जो उसकेभांति चालपकड़ी है उसनमक हराम पापीने सातढेर शहादके आपके पितासे चुरायेथे इसने सप्तद्वीप के राजाकी अंगूठी चुराई तो क्याहुआ यहतो अपने नानासेभी अधिक हुआ नौशेरवांने बख्तकको बुराभलाकहा और अमीरनेकहाकिचोरके हाथ काटना उचितहै ऐसेमनुष्यके हाथ काटना और दण्डदेना योग्य है बख्तकने अपनेजीमें कहा कि इसचालाकने मेरेहाथकटवाने की तद-बीरकी वहांकी कसर मुझसे निकाली और बुजुरुचमेहर की सिफारश से हाथतो न काटेगये लज्जितहोनेसे बचा परन्तु दरबारसे निकालागया और आज्ञाहुई कि बख्तकको गर्दनपकड़करदरबारसे निकालदोऔर फिरकभी दरबारमें न आने पावे आज्ञाकीदेरथी कि उसीसमय बख्तक निकाला गया अमीरने थोड़ीदेरके पीछे बादशाहसे बिनयकीकिबख्तक का अपराध कुछनहीं यहचालाकी अमरकी है बादशाहने अमर की चालाकी देखकर आश्चर्यकियाऔरबख्तककोअमीर के कहनेसेदर-बारमें आनेदिया और वहअंगूठीअमरकोकृपाकीऔरउसकीचालाकी से प्रसन्न हुआ अमीरने कहा कि तम्बूमेंजाकर आरामकरो परन्तुप्रति दिन स्नेहियों समेत दरबारमें आयाकरो अमीरदरबारसे बिदाहोकर तिलशादकाममें पहुंचा और बादशाह महलमें गये॥

बहराम गिरदखाकान चीनके साथबड़ी धूमधामसे मदायन नगरमें गुस्तहमका आना॥

अबदूस इतिहासको यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर तिलशादमें गये और दरबार के वस्त्रउतारे और शस्त्रखोलकरलेटनेका मनोर्थ किया कि बख्तक का कामस्थानपर अमरकेनाम दूसमजमूनका पहुंचा कि पांचसौ रुपये नकद और पांचसौकाकागज तमस्सुक के भांति भेजाहै कि यह रुपया आपकी भेंटकाहै अतिशीघ रुपया भेजके तमस्सुक फेरलिया जावेगा और कभी२ औरभी कुछ आपकी भेंटमें कियाजायगा आप से यहप्रार्थना करताहूं कि अबऐसा कभी दरबारमें लज्जित न की-जियेगा जिसमें आपकी कृपासेमैंभी सासानियों में प्रतिष्ठितहूं अमर रुपया और तमस्सुक लेकर कृतकृत्य होगया और चित्तमें कुछविचार ईश्वरका धन्यवाद किया और कहा कि पहिले पहिल रुपये की सूरत तो देखी कि इतनी द्रव्यहाथ लगी ईश्वरने घरबैठे इतनीद्रव्य कृपाकर

के भेजदी और उस पत्रके उत्तरमें बहुतसा उज्रकिया और रुपयोंकी रसीद लिखभेजी दूसरेदिन अमीर साथियों समेत बादशाही दरबारमें आये और फिरभी उसी चौकी पर बैठगये और सामानी अमीर क्रोधितहो इस उपायमें हुये कि किसी भांतिसे अमीरहमज़ाको बादशाह की दृष्टिमें हलका करदेवें यह जो बढ़ २ कर बैठतेहैं उसका फल इनको चखादेवें एकदिन अमीरने विचारकर रीतिके अनुसार उसी चौकीपर बैठनाचाहा कि एक मनुष्य वस्त्र और अस्त्र सजेहुये दरबार में आया बादशाहसे सलामकिया जब बैठचुका तब अमीरकी ओर तिरछी चितवनसे देखकर बादशाहसे प्रार्थनाकी कि मेरे पिताको आपने काबुलपर युद्धकरनेके हेत भेजा औ उनके आसनपर एकअर्बनादे को बैठाया यह क्या प्रतिष्ठा और न्यायहै और इसीजगह हमलोगोंकी प्रतिष्ठा और आबरूहै वह थोड़े हीकालमेंविजय प्राप्त करकेआताहोगा उससमय देखाचाहिये कि यह अर्ब किसमतिसे इस चौकीपर बैठता है अमीरसे यहबात सुनकर रहा न गया बादशाहसे यह पूछा कि यह कौन मनुष्यहै और कहांका रहनेवालाहै नौशेरवांनेकहा यह गुस्तहमका पुत्र पोलादहै बहिराम मलखाकान चीनने सिर उठायाथा मैंने इसके बापको उसके पराजय करनेकेहेत भेजाहै सो वह उसको पकड़े हुये लिये आताहै और जल्द पहुंचेगा यह चंदनकी चौकी जिसपर तुम बैठेहो उसीके बैठनेकीहै यह स्थान उसीके बैठनेको छपा हुआहै इससे तुम्हारा बैठना अच्छानहीं मालूम होताहै कहताहै कि यह चन्दनकी चौकी मेरेबापके बैठनेकोहै इनके बैठनेको क्यों दीहै अमीरने कहा कि मैंभी यही चाहताहूं कि इसकाबाप मुझसे बलकरे जो जीते वह बैठे दूसरा उसकी आधीनता करे पोलाद यहबातसुनकर क्रोधितहुआ और तिउरी चढ़ाकर बोला कि रे अर्ब मेरेबापसे पीछे बल करना पहिले मुझसे बलकरके पंजा मिलाले और अच्छी भांतिबलकरले अमीरने कहा कि बहुतअच्छा पोलाद अमीरके समीप बैठा और अमीरसे पंजा लड़ानेलगा अमीर उसका पंजा जीतगये और वह कुरसी से नीचे गिरपड़ा और लज्जितहोगया अमीरपर खंजर खींचके दौड़ा अमीरने उसका खंजर छीनलिया हुरमुज़ने पोलादसे कहा कि ऐ पोलाद तेरा क्या मनोर्थहै इधरआकर चुपका बैठ बहुत भागड़ा न कर नाहकमें और दुख पावेगा दरबारके मध्यमें बेइज्जत करके निकाला जायगा वह नीचा शिर करके हुरमुज़के समीप जा बैठा बादशाह ने अमीरसे उज्र करके दरबार बरखास्त किया संक्षेप यहहै किप्रतिदिन अमीर दरबारमें साथियों समेत आताथा और जब दरबार उठजाताथा अमीर तिलशाद कामस्थानपर जाकर बैठतेथे दश बारह दिनके पीछे बादशाहको समाचार मिला कि गुस्तहम बहिराममलखाकानचीनको

चारसहस्र पहलवानों समेत बांध लायाहै यहांसे चारकोशके दूर पर ठहराहै आपकी आज्ञाकी राह देखताहै जिससमय आज्ञाहो आकर उपस्थित हो आपके चरणोंके दर्शनकरै जाकि बख्तकके उर में अमीरकी ओरसे मैल भराहीथा सब प्रकारसे उपाय बांधताथा कि अमीरकी प्रतिष्ठा भंगकरै बादशाह उसकी अगवानी लेनेको गया था और देशों २ इसका चर्चाथा बख्तकने इस लागपर चाहा कि बादशाहको गुस्तहमकी अगवानी को लेजावे और यहबात लोगोंके चित्तमें जमाई कि बादशाह जो अमीरकी अगवानी को गये तो यह कुछ इनकी बड़ाई नहीं जो कोई शाही नौकर विजय प्राप्त करके आता है उसकी अगवानी करतेहैं गरज कि प्रार्थना करके बादशाहको गुस्तहमकी अगवानीके हेत लेगया और आपभी रकाबकेसाथ चला मार्ग के मध्यमें बुजुरुज्ज मेहरने बादशाहसे प्रार्थनाकी कि अमीर हमजाका भी साथ चलना अवश्यहै उसके चलनेसे आपकीसेना सुशोभित हो तीहै बादशाहने उसीसमय अमीरको कहला भेजा कि हम गुस्तहम की अगवानीको जातेहैं तुमभीआवो और अपनीसेना और साथी साथलावो बादशाह एक कोशभर नगरसे आगेगयेहोंगे कि देखा गुस्तहम अख्शजरीका पुत्र गैंडेपरसवार मूछोंपर तावदेता झंडों की छायाके नीचे चलाआताहै और चितवनसे ऐसा जानपड़ता है कि खाकान मख्तचीनको बंधुआ करके लानेको छोड़ अपने समान दूसरा पराक्रमी नहीं जानताहै उसको देखकर सासानीलोग चित्त में प्रसन्न हुये कि अब यह आगयाहै कि अमीरको नीचे करेगा चित्तके मंसूबे सब निकल जायँगे गुस्तहमने घोड़ेपरसे उतरकर बादशाहके तख्तका पाया चूमलिया और अपनी बहादुरी और बहरामके पकड़ने और लड़ने भिड़ने का समाचार बर्णनकिया बादशाह ने ईश्वरका धन्य बाद कियाऔर गढ़ीकीओर फिरागुस्तहमबख्तककीसैनसंपीछे रहगया और बादशाहकेसंग न गया फिरतेसमय मार्गमें अमीर मिले बादशाहने अमीरसे कहा कि आपभी गुस्तहम से मिलते आइये उसकी बातें सुनकर थोड़ीदेर जी बहलाइयेअमीरने कहा कि बहुतअच्छा मुझे आप की आज्ञा माननेमें क्या इनकारहै आपकी आज्ञामेरेलियेअतिउत्तम है बख्तकका वृत्तांत सुनिये कि गुस्तहमसे अमीरकीचुगली करकेकहा कि औरतो और इस अर्बजादेको अपने बलका ऐसा अभिमानहै कि वह आपकी बैठकपर बैठगया और पोलादका पंजा भरीसभा में लचाकर अति लज्जित किया धन्यहै कि आपआनपहुंचे शीघचलेआइये बगलगीर होनेके समय ऐसादबाइयेगाकिथोड़ीसीहड्डियां उसकीनर्म होजावें कि जिसमें आपको समुझेरहै और फिर आगे कभीआपकेसामने अभिमान न करै ऐसी बातेंजिसमें आगे न करें गुस्तहमने कहा कि ऐसा

ही होगा इतनेमें अमीरकी सवारी आन पहुंची गुस्तहम के डेरेमें पहुंचे गुस्तहम अमीरको देखकर पैदल होकर अगवानीकेहेत आगे बढ़ा अमीरभी अपने घोड़ेसे उतरे दोनों बराबर सामने २ चले भेटहोने के समय पहिले गुस्तहमने अमीरको अपने बलभरदबाया और स्नेहमय बातें कहनेलगा फिर अमीरनेभी प्रीति विदित करके उसको ऐसा दबाया कि गुस्तहमके नीचेसे कई बार वायु निकलपड़ी लज्जित होकर अमीरके कानमें कहा कि ऐ अमीर तुम बड़े पराक्रमी हौ इसबातको किसीके सामने न कहना मुझे कभी लज्जित न करना मेरी और आप की यही प्रतिज्ञा रहेगी अमीरने कहा कि ऐसाही होगा गुस्तहम और उसकी सेनाभी उसकेसाथ चली और अमीर उसी स्थानमें सैर करनेलगे और साथीभी साथहीरहे कि एकओर जो दृष्टिपड़ी देखा कि एक संदूक जंजीरोंसे जकड़ाहुआ पीछे उसके चार सहस्र सवार साथ चले आतेहैं पहरे वालोंसे पूंछा कि इस संदूकमें क्याहै वह बोले कि बहिराम मल्लखाकान बन्दहै जो बड़ा पराक्रमी संसारमें प्रसिद्धहै अमीरने कहा कि बादशाहों और पहलवानोंको कोई इस भांतिसे बन्द करताहै जो इन लोगोंको इस भांतिसे पकड़कर सताता है संदूकको पृथ्वीपर रखवाया और शीघ्रअपने नौकरोंसेखुलवाया देखा तो उसमें एक सुंदर मनुष्य बन्दहै और साकड़ोंसे जकड़ाहुआ पड़ा है अमीरने उसको संदूक से निकालकर बन्दिसे छोड़ाया और अतर गुलाब उसके मुखपर छिड़का और सरबत सेब अनारके जो बहिंगीपर पर साथथे उसके मुखपर छिड़काया जब उसको चेतहुआ अमीरने पूंछा कि ऐबहादुर तूकौनहैउसनेकहा कि आपकेघरपरपहुंचकरअपना ब्योरा कहूंगा अभी मुझमेंइतनाबलनहींहै कि आपसे बातें करूं मेरेमुख से बातें नहीं निकलतीहैं अमीरने एक घोड़ा मंगवाकर उसे सवारकिया और जितनेबंधुथेसबको छोड़दियाऔर अतिप्रतिष्ठासेअपनेसाथलेचला और शीघ्र अपने डेरेमें पहुंचे और बहरामने खाकान चीनको अपने पलंगपर लेटाके सुगंध सुंघानेकी आज्ञादी और हरीरह बनवाके पिलाया और उसके साथियोंके वास्ते अच्छा खाना बनवाके भली भांतिसे खिलाया जब खाकान मल्लचीनके चित्त और हवास ठीक हुये तो अमीरसे कहा यद्यपि आपका समाचार आपसे पूछना अनुचित है परंतु तुम्हारे चेहरासेरियाअत और बड़प्पनऔर प्रताप साफ़२ विदितहै परंतु यहां कोई दूसरा इससे योग्यनहीं कि आपका वृत्तांत उससे पूछूं इसकारण आपहीसे प्रार्थनाहै कि आप अपना वृत्तांत और नाम निशान बतलाइये कि मुझेजीवदानदिया नहीं तो कोईक्षणमें मरजाता बहुत दिनोंसे मैं इस सन्दूकमें बन्दथा ईश्वरने मुझे आप तक पहुंचाया वह दिन दिखाया मालूमहोताहै कि कुछदिनअभीमेरा

जीना है अमीर ने कहा कि ऐ बहिराम तुझपर गुस्तहमक्यौंकरगालिब आया और तू उसके बशमें किस भांति से हुआ उसने बर्णन किया कि संग्राममें मैंने उसेगिरादिया और अपने आधीन करलिया था और सेना को मार के उसको पकड़ा था चार बर्षतक यह मेरी आधीनता में रहा एक दिन मैं शिकार खेलता हुआ दूर निकल गया और सेना मेरी मुझसे दूरथी प्यासा जो हुआ तो इससे पानी मांगा इसने औसर पाके बेहोशी मदिरा मिलाकर पानी मुझे पिला दिया जब मैं अचेतहो गया अपने मित्र स्नेहियों को जो मेरी सेना में मिले हुयेथे बोलाया और मुझको पकड़के संदूक में बन्दकिया और विविधि प्रकार का कष्ट दिया यहसुन अमीरने उसको धीर्य्य और ढाँढस बंधवाया बहिराम ने प्रसन्न होकर कहा कि ईश्वर धन्यहै कि जिसका सप्त द्वीपमें कोई बराबरी करनेवाला नहीं है उसकी रक्षामें प्राप्त हुआ और जबयह समाचार गुस्तहमको पहुंचाकि अमीरबहुराआम मलखखाँनचीनको बंधुवों समेत अपनी सेना में लेगये उसको सेनासमेत बन्दिसे छुड़ादिया और उसको पहुनई और सिष्टाचार से अति प्रसन्न किया यह सुन आग होगया और उसी समय बादशाह से जाकर व्योरा समेत सब समाचार कहा बादशाह कोभी अमीर की यह बात बहुत बुरी मालूम हुई अमीर को बुलाकर कहा कि ऐअहमक तुमजानते हो बहरामकासाकोई बैरीसप्त द्वीपमें न होगा मेराकुछ बिचार न किया तुमने क्या समझके उसे छोड़ दिया अमीर ने कहा कि कृपानिधान आप सप्तदीप के बादशाह होजो पहलवानों और बहादुरों को इसी प्रकार से छलकरके नीचेकिया करेंगे तो लोग निडर होकर गाली देंगे इतिहासों में लिखा जायगा अब्दुल आबद आदि बादशाहों की सभा में चर्चा रहैगी कि नौशेरवां ऐसा नामर्दथा कि उसके समय में पहलवान छलसे बंधुआहोकर कैद रहते थे और उसके नौकर और अधिकारी पहलवान आदिछल करने के हेत आरूढ़ रहेते थे और बहराम कैसा कौनसा पराक्रमी है कि मैदान के बीचमें बिजय नहीं होसकती बादशाहने कहा बहराम कहां है उसेबुलवावो दरबारमें हाजिर करोकिमैं उससे उसके पकड़े जानेका हालपूछूं उसका वृतान्तमैं अपने कानोंसें सुनूं अमीर बहिराम को अपने डेरे पर छोड़गयेथे उसीक्षण उसे बुलाया बादशाहने उसकी ओर देखकर कहा कि गुस्तहम तुझे बहादुरीसे पकड़ लायाया नामर्दीसे आधीनऔर बंद कियाथा बहरामने प्रार्थनाकी कि आपयहां देखलेवें कि मैंनेचारमहीने से लंघन कियाहै अन्न और पानीकी सूरतनहीं देखीहै उसपर संदूक मेंबन्द और सांकड़ोंसे जकड़ाहुआ बंधुआआताथा बाहरकी हवाको तरसताथा जो अमीर मुझे थोड़ीदेर कटेहरसे न निकालते तो मैं मर चुकाथा इससे विदित है कि अत्यन्त निर्बलहूं परन्तु इस औसरमेभी

गुस्तहम मेरेसामनेआवे तो उसके हाथसे तलवार छीनलूं तो दण्डकेयो-
ग्य समझाजाऊं गुस्तहम सामानियों समेत उससमय दरबारमें हाजिर
था बादशाहनेकहा कि यह क्या कहताहै गुस्तहमने लज्जितहोकरनीचे
शिर करलिया और कुछभी उत्तर न दिया बादशाहने फिर बहरामसे
पूंछा कि अमीरहमजासे अपना बल करेगा वहबोला कि हाजिरहूं पह-
लवानीका नाम करके मुख क्यों मोडूं अमीरनेकहा कि कृपानिधान यह
अभी अत्यन्त निर्बलहै इसमें बलका चिह्नभी नहींहै जो चालीशदिनतक
अच्छीभांतिसे खानापावे तो फिरभी उसी भांतिका होनावेगाउससमय
इसकाबल देखनेके योग्यहोगा और यहभी जानकर अपनाबल मुझसे
करेगा बादशाहको अमीरकी यहबात बहुत पसन्दहुई अमीरऔरबह-
राम दोनोंको पारितोषिक देकर बहुत कृपाकीऔरआज्ञादी किऐह-
मजा बहराम तुम्हारेही पासरहे उसकीसेवा और खाना तुम्हारेही
आधीनहो चालीश दिनके पीछेतुम दोनोंको कुश्तीलड़ाकेदोनों काबल
देखेंगे जब चालीश दिनव्यतीतहोगये तबदूकतालीशवेंदिनअमीर बहराम
समेत बादशाहके पासगया और प्रार्थनाकी कि बहरामसे लड़ाइये
भलीभांति खा पीकर तैयार हुआहै कुश्ती देखलीजिये बादशाहने बह-
रामसे पूछा कि तेरी क्या इच्छाहै वह बोला कि मैं हाजिरहूं आपकी
आज्ञा क्योंकर भंगकरूं बादशाहने कहा कि अच्छीबातहै हमभी तुम
लोगोंकी लड़ाई देखेंगे अखाड़ा बननेके लिये आज्ञादी वह शीघ्र बनाया
गया अमीर और बहराम बाघके खालकी जांघिया और टोप पहिन
लंगोटकस ताल ठोंक परस्पर बल करने लगे दोनोंने गर्दनोंमें हाथडाल
कर एकटक्कड़ ऐसीमारी कि जो पोलादपर टक्कड़ पड़ती तो चूना हो
जाता किसीके मस्तकमें कुछ न जानपड़ा फिर परस्पर में दोनोंके दाँव
पेंच चले परन्तु किसीका लंगड़ किसीसे न उखड़ा और चित्तहोनेकी
तो क्या चर्चाथी अन्तमें अमीरने ईश्वरका नामलेकर बहरामको उठा
कर शिरसे ऊंचाकिया बहरामनेकहा कि हे अमीर मालूमहुआ कि
तुझमें ईश्वरदत्त बलहै संसारमें तुझसा बली नहींहै आपके आधीनऔर
सब प्रकारसेसेवकहूंमुझेपृथ्वीपरगिराके दूतनेमल्लोंमें लज्जित न कीजिये
अमीरने हलकेसे उसे पृथ्वीपर रखदिया चारों ओरसे अमीरकीप्रशंसा
होनेलगी बादशाहनेभी बड़ाईकी अमीरने कहा कि ऐ बहराम अब
बादशाहकी सेवा करना अपना मूलधर्मजानो और सदाअपना मालिक
समझो उसने कहा कि मैं आपको छोड़ और किसीके पासनहीं रहूंगा
बादशाहने कहा कि तुम्हारेपास रहा तो मेरेहीपास है और दो खिल-
अत मँगाकर अमीर और बहराम कोदिये और अमीर बहरामको
अपने डेरेमें लाये और उनको अच्छीभांति आदर और व्यवहार से
प्रसन्न किया और विविधि प्रकारसे शिष्टाचारकरनेलगाऔरउसकेरहने

केलिये अलगस्थान बनवादिया अपनी सवारीमेंसे चालीश घोड़े और बहुतसे ऊंट आदि बहरामको दिये और चौथाई हिस्सा लुश्शामकी लूटका दिया और एक बिनयपत्रमें सब समाचार लिखकर अमरके साथ खाजे अब्दुल्मतलबके पास भेजा अब सासानियोंका हाल सुनिये कि बख्तक समेत सब गुस्तहमके निकट जाकर कहनेलगे कि हमलोग हमज़ा के सामने प्रतिष्ठाहीन होगयेहैं जो हमज़ाके निकालनेके लिये कोई उपाय न करोगे तबतक हमलोगोंको चैन न मिलेगा किसी भांतिसे जिन्दगी न होगी दिन दिन बादशाहकी कृपा उसपर होतीहै और हमलोगोंकी प्रतिष्ठा घटती जातीहै गुस्तहमनेकहा कि बलमेंतो हमज़ा से कोई न जीतपावेगा परन्तु मैं दो चार दिवसमें छलकरके उसे मारूंगा उसका चिह्नभी मिटादूंगा रातको तो यह सलाहहुई प्रातसमय गुस्तहम घोड़ेपर सवार होकर अमीरके निकटगया और खुशामद करके आगेआया और अति दीनतासे आधीनी करनेलगा अमीरने उसकी बहुत खातिरकी और दोनों सवार होकर बादशाहके दरबार में आये और मार्गमें बहुधा बातें मिचताकी करतेगये जब अमीर दरबारसे उठकर आप तम्बूकीओर आये गुस्तहमभी अमीरकेसाथजाकर तम्बूतक पहुंचा आया प्रतिदिन दोनोंपहर गुस्तहम अमीरकेपास जाता और बिबिधि प्रकारकी खुशामदियां करता होते २ अमीरकोभी गुस्तहमकी ओरसे कोई खटका चित्तमें न रहा एकदिन गुस्तहमने अमीरसे कहा कि आपकी जितनी कृपा मेरे ऊपरहै सकल नगरमें बिदितहै इस सूरतमें मेरीसेवा करने और आपकी कृपाह नेका समाचार प्रकट करना अवश्यहै इस हेतुसे मेरी यह इच्छाहै कि मेरे बाग़में चलकर दो चार दिन आनन्द मंगल कीजिये और मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाइये अमीर जो निःकपट और निःछलथेउसका न्योताअंगीकार कर लिया वहांपर यह रीतिथी कि बादशाह सातदिन दरबार करतेथे और सातदिन मकानमें स्त्रियोंकेसाथ बिहार करतेथे जब बादशाह का समय आनपहुंचा तब गुस्तहमने अमीरसे कहा कि इस सप्ताहमें छुट्टीहै आप मेरे बागको चलें यह सप्ताह आपभी आनन्द समेत व्यतीत करें तो और लोगोंमें मेरी प्रतिष्ठा अधिक होगी अमीर बहराम मलखाकान चीनको साथलेकर मुक़बिल आदि साथियों समेत गुस्तहमके बागकी ओर बड़े प्रतापसे चला और आनन्दित होकर बागकेनिकट पहुंचा गुस्तहमने बागके भीतर अच्छे २ वस्त्रआदि अतलस व कमखाबकेबिछायेथे और बारादरीमें बिछौनाबादशाहोंकासा बिछवारक्खा था अमीर उसके हौसिलेको देखकर अति प्रसन्न हुवा औरआपने मित्रों से उसकी प्रशंसा करनेलगा गुस्तहमने बिबिधि प्रकारकी मेवा अमीर के आगे धरी और मदिरा वालोंको बुलाया और मदिराके प्यालेचलने

लगे और प्रत्येक मनुष्य दूसतमाशे को देखने लगा और अमीर के आने के पहिले चारसौ पहलवान छिपाकर बैठारक्खेथे और उनसे कहदिया था कि जबमैं तरऊपर तीनहांकेदूं तबतुम शीघ्र पहुंचकर अमीर और उसके साथियोंको तलवारसे मारडालना और बुजुरुच्चमेहर और बादशाहका कुछडर न करना संक्षेपयहहैकिजब गुस्तहमनेदेखा कि आधीरातका समय आया और अमीर साथियों समेत ऐसेमदके बशहुआ कि काला और उजला नहीं पहिंचान सका उसनेअपनी सलाहकेअनुसार तीनहांकेदीं और तीनतालियां बजाईं लोगगाड़ेसे निकले और गुस्तहमके साथहोकर अमीरके शीशपर आये गुस्तहमने अमीरसे आखें भिड़ाकर कहा कि ओअबेजादे तूनेबहुत शिरउठायाथा और अमीरों और अधिकारियोंकोअतितुच्छसमझताथादेखअबतेरी मृत्युनिकटआन पहुंची यहकहकर अमीरके शिरपर जापहुंचा औरएकतलवारसे मारा बहराम यद्यपि नशेमें चूरथा परंतु अमीरपर जापड़ा और आपको ढाल बनगया वहतलवार गुस्तहम की अमीरपरतो न पड़ी बहरामकी पीठमें लगी इसओरसे उसओरतक खुलगया सबआंतें पेटसे बाहर निकलपड़ीं मुकबिलने चतुरईसे मदिरा बहुतकम पानकीथी थोड़ा २ पीता था और सभाकारंग देखरहाथा शीघधनुष धारणकरके बाणवर्षानेलगाऔर इतनेही कालमें सौजवान पृथ्वीपर गिरादिये बागमें लाशोंकेढेर लगा दिये गुस्तहमने चित्तमें विचार किया कि हमजा का कामतोमैंनेतमाम करदिया यहांरहना मुकबिलके हाथसेमौतमांगनाहैअपनेमित्रों समेत जो मुकबिलके हाथसे बचेथे जीवलेकर भागकरकिसीओरचलदियाजिस समय अमीर का मददूर हुआ देखातो सभाका ऐसाढंग होगयाहै कि सब बारादरी रुधिरसे लालहोरहीहैबहरामएकओरपेटफटासिसकता है और सौजवानसे अधिक मरेहुये पड़ेहैं मुकबिलने वहसमाचार वर्णन किया कि उसने आपकेसाथअच्छीभांतिमिचता निबाहीजिससे आपको मारना चाहा और उसके छलका चर्चा सबकहीं छागया कि गुस्तहमने बागमें बुलाकर ब्योताके बहानेसे अमीरकोमारडाला बादशाह सुनकर अति सशोक हुआ और शीघ हुरमुज़ तानदार औरबुजुरुच्चमेहर और और बख्तकको भेजा कि हमजाकी खबरलो और उनकोशीघदबाकरो अष्कमय सातूरदक को तीनसहस्र मनुष्योंसेगुस्तहमकेपकड़नेके हेतुभेजा और बहुतसा पारितोषिक देनेकोकहागुस्तहमयह सुनकरनगरसेभागा और शाहजादा हुरमुज़और बुजुरुच्चमेहरबख्तकसमेतगुस्तहमकेबागकी ओरगये और बागमेंपहुंचेअमीरकोअच्छीभांति देखकरईश्वरका धन्यवादकिया और बहरामको घायल देखकर अत्यन्त शोचकिया अमीरने राजे बुजुरुच्चमेहर से कहा कि आपवैद्यहैं इसकी शीघ दवाकीजिये जो बहरामकी जान न बचैगीतोमैं मक्केकी सौगन्ध खाकर कहताहूं कि

सासानीको जीता न छोड़ूंगा बुजुरुच्चमेहर बहरामका कठिनघाव देख करबहुत घबराया दवा इलाजतोक्याय हसुनकरअचेत होगया इतनेमेंअति प्रबीण खाजे अमरभी आये और आनन्दित होकर खाजे अबदुल्मतलब का समाचार अमीरको तो सुनाया परन्तु बहराम का हाल देखकर रोनेलगा और अमीरसे कहनेलगा कि क्यों साहब किरां इसीभांतिका सलूक होताहै जिसपर उपकार करतेहैं उसेइसी भांतिका दण्डदेते हैं अमीरने कहा कि ऐअमर यहसमय सिखानेका नहींहै बहराम के अच्छा करनेका उपायकियाचाहियेअमरने खाजेबुजुरुच्चमेहरसेकहाकि आपईश्वरकीकृपासेबड़ेहकीमहैंआपनेक्याऔषधिविचारकीहैऔर मैंभी शोचरहाहूं खाजेने कहा कि इसके भारीघाव लगाहै इसकी आंतेंपेट में जावें और अपना स्थानपावेंतो टांकेलगें और आतोंका पेटमें जाना कठिनहै और सबप्रकारसे इसमें कठिनता जानपड़तीहै और दिलपर हाथलगानेसे शीघ्र मरजावेगा फिरकुछ न बनआवेगा और यहहोनहीं सक्ताहै कि आंतोंमें हाथ न लगाया जावे और घावसीनेका कोईउपाय होजावे अमरबोला कि ऐखाजे यद्यपि आपमेरे गुरूहैं तद्यपि वैद्यहोना अति कठिनहै और आज कल कोई मनुष्य इसगुणमें निपुणता नहीं रखता है यहकहकर एकछुरा जेबसे निकाल बहराम को दोनोंपांओंसे दबाकर हाथपेटकी ओरबढ़ाया खाजे बुजुरुच्चमेहर ने अमरसे पूछा कि क्या मनोर्थहै अमरने कहा कि जितनी आंतें बाहर निकलीहैं इनको हाथकी सफाईसे साफकरदूंगा जिसमें घाव सियाजावे फिर मलहम लगाकर अच्छा करदूंगा खाजेने यहसुनकर आश्चर्य कियाकि यहक्या कहताहै इसबिचारेकी जानलेनेका मनोर्थ कियाहै बहरामने अमरकी जोये बातेंसुनी सन्नाटेमेंआया जिन्दगीसे निराशहुआ और अत्यन्तघबराया ठंढीसांस ज्यों उसनेभरी कि सबआंतें पेटमें अपने २ स्थानपरजा पहुंचीं अमरने खाजेसे कहा कि लीजिये अबतो आपका अभिप्रायप्राप्त हुआ आप देखिये कुछभी कठिनता न पड़ी टांके दीजियेघावसीलीजिये बुजुरुच्चमेहरने अमरकी बुद्धिकी प्रशंसाकी औरदेखनेवालेहँसते २ बेचैन होगये खाजेने बहरामका घावसिया और शर्बत पिलाने को आज्ञादी कि बेकाररुधिर नष्टहोजावे और अमीरसे कहा कि बहराम के हाथ पाँवँबंधवादिये कि हिल न सके नहींतो टांके टूट जावेंगे उससमय यह न बचेगा औरमैं प्रतिदिन दोनोंकाल देखनेको आयाकरूंगा और मनलगाकर इसकी दवाकरूंगा यहकहकर बुजुरुच्चमेहर और बख्तक और हुरमुज ताजदार अमीरसेबिदा हुये और अपने घरकोचले अमीरबहरामको प्यारकरताथा अपने मिचोंसमेत वहींरहा बुजुरुच्चमेहरने यह सब समाचार बादशाहसे कहा बादशाहने कहा कि ऐ खाजेयहां बगदादसे अच्छा कोईस्थान नहींहै और उस मकानसे उत्तम नगरमें और

कोई मकान नहीं है मैंचाहताहूं कि हमजाकोवहां कुछदिनरक्खूं और अपनी सामर्थ्यभर उसका आदर और शिष्टाचार भी करूं और कुछवस्तु उसेदेवें कि उसके चित्तका शोचदूरहो ऐसा न हो कि हमजा समझे कि मेरी सलाह से यहकाम हुआ है और मुझेइतना दुःख दिया है और मैं ईश्वरकी सौगन्ध खाकर कहताहूं गुस्तहमके इसमनोरथका हाल मुझे कुछ नहींमालूमथाऔर मैंनेइसवृत्तान्तकोसुनतेहीप्रतिअस्थानउसके प-कड़ने के हेत मनुष्यभेजदिये हैं और सब ओरपरवाने और हरकारे भेजे हैं यहकहकर उसी समय अमीरपर पुण्य करने को सामानभेजा अपने आनेका मनोर्थभी किया दूसरे पहर बुजुरुजमेहर जो बहराम के देखने के लियेगये अमीरसे कहा कि बादशाहने आज्ञादीहै कि मैंने छः अधि-कारी गुस्तहम के पकड़ने के लिये भेजेहैं और छिपे हुये परवाने और हरकारेभी रवानाकिये हैं जिससमय वहदुष्टआवेगा उसी सायत उसका पेट फाड़कर भुसभराजावेगा और मैंईश्वरका अत्यन्तधन्यवाद करताहूं कि तुमको उसखलके हाथसे किसी प्रकार का दुःख नहीपहुंचा ईश्वर ने बड़ी कृपाकी और यहवस्तु आपको दीहै और कहाहै कि हमारी ओर से बहराम काभी समाचार पूंछना और मुझसे दवाकरने को बहुत ता-कीद कीहै ऐसा उपाय करो जिसमें बहराम का घाव जल्दी अच्छा होजावे और कहाहै किअबमेरी यहइच्छाहै किइससप्ताहभरहमजाको लेकर बुगदादकी सैरकरूं और वहीं मित्र और उमराओं समेत रहूं किन्तु बख्तक और अमर नहो क्योंकि येदोनों उपद्रवीहैं अमीरने मान-लिया दूसरेदिनअमीरको बादशाहने बुगदाद में जाकर बुलवाया और अपने मसनद केनिकट अमीरके लिये बैठका बनवाया साहबकिरांआदी और मुक़बिलको साथलेगये बादशाहके पासपहुंचे बाग़कोदेखा कि चार कोशका लम्बा चौड़ा औ बहुतसुशोभित है औरइसबागकीप्रशंसाइति-हासकेबड़े होनेके कारण संक्षेप वर्णनकीगई क्योंकि पहलेइसबागकी ता-रीफ होचुकीहै अमीर बादशाहके दायें ओर हुरमुक्ततालदारके गोदमें बैठेऔर मुक़बिल बुजुरुजमेहर कीबाईं ओर बैठे और नाचनेवालेसजधज से आये और सभा सबप्रकार से शोभित हुई मंगलाचार होने लगा पहिले दिन बादशाह ने एक बारादरीमें आनन्द किया जबदिनव्यतीत हुआ और सूर्य अस्तहुआ और चन्द्रमा उदय हुआ उस समय मदिरा के प्याले चलने लगे बादशाह ने एक प्याला मदिराका लेकर अपनेहाथ से अमीर को कृपा किया अमीर सलाम करके उसको पीगये फिर तो और लोग घूम २ कर और भर२ कर मदिरा देनेलगे यहांतक कि सबके सब नशेमें मग्न होगये और वेश्यादिक नृत्य करनेलगींऔरइसप्रकारसे गायाबजाया कि सबके सब चित्रसे लिखे होगये अब आगेका समाचार सुनिये कि जब अमर अय्यारने एक रातदिन तक अमीरको न देखा

घबड़ाकर मकान से बाहर निकला ढूंढ़ते और खोज करते हुये बाग के निकट पहुंचा वहां देखा कि आदी सजे सजाये कुरसीपर बैठा मदिरा पी रहा है और लोग सकल प्रकार की गज़कें उसके पास ले आते हैं वह प्रसन्न होकर खाता है और ऐसा प्रबन्धहै कि पक्षी भी बागकेदरवाज़े तक उड़ कर जा नहीं सक्ता है लोगों से पूछा कि यह बात क्याहै अमीर तो बाग़के भीतर है आदीक्यों बाहर बैठाहै किसीने कह दिया कि बादशाह की आज्ञा है कि अमर और वख्तक बाग़ में न आनेपावें इस निमित्तअमीरने आदी को दरवाज़े पर बैठाया है अमर आदीसे सलाम करके कुरसी पर बैठगया आदीने पूछा कि खाजे किस हेत से आपआयेहैं बलाकि दो दिनसे आपको न देखा था आखोंमें अंधियारा छा गया गिड़ता पड़ता तुम्हारे देखने को आया हूं यद्यपि आपमुझको भूलगये परंतुमैं नहीं भूला आदीने मदिरा और कबाब अमर के आगे खाने के निमित्त रखदियाअमरने एक प्याला पिया और आदीसेकहा कि आज मैंने एक लाल मोल लिया है देखो तो मैं ठग तो नहीं गया आदी अपने मनमें प्रसन्न हुआ कि अमर मुझे जौहरी जानता है तब तो लाल परखवाने आयाहै ऐसा रत्न मेरे देखने के हेत लायाहै आदी बोला कि खाजे तुमसे जौहरी कौन होगा तुमको कौन ठग सक्ता है अमरने जेबमें हाथ डालकर मुट्ठीमेंरेत निकाली और आदी की आखों में झोंकदी आदीतो आंखें मलने लगा और लोग घबरा कर आदीकी ओर देखने लगे और उसके मुंह और कपड़ों की राख झाड़ने लगेअमर कूदकर बाग़में गया आदीने झटआखें धोकर पोंछी और गर्द गुबार से साफ़ किया और सब लोगों से पूछा कि अमर कहां गया कोई न बता सका कि किधर को गया आदी समझा कि मेरे डरसे भागगया बाग़को अमर देखकर प्रफुल्लित होगया कि उमर भर ऐसा बाग देखा सुना न था सैर करता हुआ उसमहलकी ओर गया जहां बादशाह औरअमीर बैठे हुयेथे और उस महल के निकट एक सुन्दर नहरथी उसी स्थानमें एकवृक्ष लगा हुआथा उसके तले बैठ कर दुतारा मिला कर गाने लगा अमरका गानामृतकको जिलाताथा अमीरके कानमेंजो उसकी तानका शब्द गयातो कहाकि हमने आदीको मना कियाथा कि अमरकोबाग़में न आने देनाफिर यह यहां क्योंकर आयाजाओ आदी कोतोबुलालावो बादशाहने अमीर को क्रोधवान देखकर कहाकि आदीको बुलानाकुछ काम नहीं है हमने अमरका अपराध क्षमा किया अमरको बुलालाओ उसके बुलाने के हेतचोबदार भेजो जो अमरको बुलावेचोबदार अमीर के कहने से अमर के निकट गया और कहा कि तुमको बादशाह बुलाते हैं उसने उत्तर दिया कि जिस सभा में बादशाह और अमीर से लोग बैठे हैं वहां मुझ दुखिया का क्या कामहै जो चालाक हूं और ऐसीसभा

जहां विविधि प्रकारके राग और रंग और मंगलाचार होरहाहै वहां दीन दुखिया का क्या कामहै मैंने बुगदादकी प्रशंसा सुनीथी इस निमित्त मैंभी आयाहूं और एक कोनेमें बैठाहूं और फूलका खिलना और बुलबुलों का बोलना सुन रहाहूं मैंजो जाऊं तो कदाचित् किसीका चित्त मुझसे अप्रसन्न होजावे तो मैं उसकेहाथसे कष्टसहूं इससे अच्छाई और भलाई केवल अलगही बैठनेसे होतीहै ॥

दोहा ॥

इससंसारमें स्वर्गहै एकान्तहिके माहिं । मनुष्यति बुरीहै नर्कते तातें केहिविधि जाहिं ॥

चोबदार लाचार होकर फिरआये और उसकी बातें बादशाहके सामने बर्णनकी बादशाह सुनकर अत्यन्त हंसे और वहांक सबलोग हंसते २ लोटगये बादशाह अमीरका हाथ पकड़ेहुये महलसे बाहर आये और फुलवारीकी सैर करतेहुये उसओरको चले कि जहां अमर बैठा गारहाथा अमरने देखा कि बादशाह और अमीरसभासमेत इधर को आतेहैं एक फलांग मारकर बादशाहके चरण छुये और आशीर्बाद देकर कहनेलगा कि मुझको आपसे यह आश न थी कि मुझे सभामें आनेके हेतु मना करेंगे और हमजाको तो क्या कहूं यहतो बड़े मिच पालक औ सुशीलहैं कि अकेले मजे उड़ातेहैं और थोड़ेसे समाचार पर जीवारोंका भूल जातेहैं बादशाह हंसपड़े और अमरका हाथ पकड़ कर महलमें लेगये जब तख्तपर बैठे अमरको मदिरा बांटने के हेत आज्ञादी अमर प्याला भर २ कर पिलानेलगा रातभर तो मदिरा पानमें व्यतीतकिया जब सबेराहुआ उससमय अमर नये २ सम्बन्दको जोड़कर ऐसाबजाया और अति मृदुबैनसे गाया कि बादशाह और अमीर सभासमेत फूट २ कर रोनेलगे और रूमाल पर रूमालअमरपर बरषनेलगे और बादशाहने मोतियोंसे अमरका दामन भरदिया और बहुत कुछ पारितोषिक दिया और वह महल बहुत सुन्दर सुशोभित सजाहुआथा वहां अमीरको लेकर जाबैठ अब दोबातेंबख्तक की मैं बर्णन करके सुननेवालोंको हँसाताहूं वह बुगदादमें अमर के जानेकी खबर सुनके अचेत होगया पेट पकड़के फिरनेलगा कि यह क्या अन्धेरहै कि अमर बुगदादमे पहुंचा औरमैं न जासकाईश्वर जाने अमर जब मुझे वहां देखेगा तब मेरे निमित्त क्या करेगा यह शोच कर कुछ कमखाब आदिकेथान नावमें रखकर घरसेबाहर निकला दरवाजेपर पहुंचा आदीसे मिलाप करके मिचता बिदित करनेलगा आदीने पूछा कि आप किसहेत आयेहैं कहा कि आपके निमित्त कुछ पदार्थ भेंट लायाहूं इसे अंगीकार कीजिये और मुझे छपा करके बाग के भीतर जानेदीजिये आपकी मुझपर बड़ीदयाहोगी आदीने यहसुन कर अत्यन्त क्रोधकियाऔरजलभुनकरकहनेलगा कि बख्तकक्योंअभाग्य

दशा आईहै मुझेतूने लालची बनाया कि लालच देखाकर बागमें लाई जोतुझे प्रतिष्ठा समेत घरजानाहोतो अच्छीबात नहींतो अभी तुझे सिपाहियों से निकलवादूंगा बखतक मानहीनहोकर घरफिरगया दिन भरतो रोधोकाटा जबराचि हुई एकनमदा ओढ़कर और बगल में बकुचा अपने कपड़ों का चोरों की भांति छिपा बुगदाद की ओर गया और दीवारके नीचे पहुंचा और गठरी तोबागके भीतर फेंकदी और आप नाबदानके मार्गसेघुसा अब खाजेअमरका हालसुनिये कि उसेसजे हुये महलमें बादशाहकी आज्ञासे मदिरा देरहाथा कि पसुली फड़की और ढिठाईकी आग हृदयमें भड़की अर्थात् चित्तमें यहविचार किया कि इसभांतिसे गुस्तहमने भी अमीरका न्योता कियाथा ऐसानहो कि वही सामानयहांभीहो और जगह चलकरहाललेनाचाहियेइधर उधर देखातोकोईबहानाकरकेमहलसेनिकलाऔरबिछौंपरफिरनेलगाऔर फुलवारी की सैरकरता इधर उधर देखता हुआ दरवाजेकेनिकटजापहुंचा आदी उसीसमय किसीसे कहरहाथा कि आजबखतक मुझेघूसदेने का आयाथामुझेभीअपने बापकेसमान नमकहराम समझकरलालचसेबागमें लाया चाहताथा यहबात जबअमरने सुनी चौंकउठा जिससमय बखतक इसमनोर्थसे यहांतक आयाथा तो अवश्य किसी न किसी भांतिसे वहबागमें आवेगा अब अच्छी भांतिसे झाड़ी आदिसबदेखनेलगा और बागमें ढूंढ़ना आरम्भ किया एकदृष्टि उसकी गठरीपर जापड़ी दूरसेदेखा कि गठरीदीवार के तलेपड़ीहैउसेजोखोलातोउसमेंबखतककेकपड़े दीखपड़े उसका मनोर्थ पूर्णहुआ अति कृतकृत्य होगया फूला न समाता था गठरी तोएककोनेमें वृक्षों का पत्तोंसे छिपादी और आप ढूंढ़ने लगा कि इस बागमें किधर से आनेका रस्ताहै यहां कब किसीका निबाहहै जोध्यानलगाकर नाबदानमें देखा ताकोईमनुष्य शीशनिकालकर इधर उधर देखरहाहै और फिर शरको खीचलेता है समझा कि यहीबखतक है समझा कि यह वही निर्बुद्धीहै खाजे अलफपोश जो बागवानोंका मालिक था उसकेपास जाकर कहाकि तू सुख नींदें लेरहा है वहां बागमें एकचार नाबदानके मार्गसे घुसाचाहता है मैंने आहटपाकर तुझे खबर दीहै अब तू जान और तेरा कामजाने वा और जोकिसीप्रकारकीढील हुई तौ तूहै और बन्दीखानाहै वह घबराकर कुछमाली साथलेकरबेलचे समेत उठा और बाग़की दीवारकेनीचे लुकरहाज्योंहीबखतक नाबदान से बाहर निकला मालियोंने लिपटकर पकड़लिया यद्यपि उसनेबहुतसा कहा कि मैं बखतकहूं किसीने न माना औरएकदृढ़कीडालमेंलटकाकर मारपीट करनेलगे अच्छीभांतिसे उसकी खबरली जब अच्छीभांतिसे हड्डियां बखतक की नर्म होचुकीं और पीठऔरपसुलियां फूलचुकीं अमर खाजे अलफपोश से पुकारकर कहनेलगा किखाजेअलफपोशक्याहै यह

हल्लागुल्ला कैसाहोताहै उसनेकहा एक चोर पकड़ाहै और उसेटत्तमेंबां-धाहै बख्तक ने जो अमीरकी आवाजसुनी अमरको पुकारा और दूसरी जबान में कहनेलगा कि खाजे अमर इनदुष्टों के हाथसे छुड़ा मैं उमरभर तुम्हारा उपकारमानूंगा किसी काममें तुमसे मुह न फेरूंगाअमरने खाजे अलफपोशके निकट आकर कहा और बख्तकके छुड़ानेके लिये सिफारश करनेलगा कि सच यह बख्तक बादशाह का मंची है ईश्वरने इसे किस दुःखमें फँसाया शीघ छुड़ादोजितने बागवान थे सब कहने लगे किखाजे साहब यहआप क्याकहतेहैं बख्तककीक्या कमबख्ती है कि इस प्रकारसे नंगा होकरनाबदानके बीचमेंहोकरआवेगा वहबादशाहकेनिकटरहता है आपको क्यों चोर बनावेगा यहठीकजानो कि यहचोरहैऔर यहबड़ा पराक्रम करके आया है बाग में आनेका मजा तो चक्खे और जो तुमने कहा उसेभी हमने माना कि यह बख्तकहै तौभी इससमय नहीं छोड़ेंगे प्रातःकाल में बागसे बाहर न जानेदेंगे बादशाह के सामने जैसा होगा वैसा होगा बख्तक ने अमरसे कहा कि मेरेवस्त्र देते तो मैं पहिन लेता अमरने कहा कि मैंतेरेवस्त्र नहीं जानता कि कहांहैं और जो इनलोगों ने लिये भी होंगे तो इनसे मेलभी नहींहै जो उनसे दिलवादूं और तुझे पहिनादूं यहकहकर अमर बादशाह के समीपगया तमामरात मदिरा बांटतारहा जब प्रातःकाल हुआ तब बादशाहसे बिनय की॥

सोरठा॥

ऋतुबसन्तकी आहि बाग महक सबही रह्यो॥
सुमन लिये क्या क्याहि बुल २ मृदु बोलतबचन॥

ठण्ढी वायु चलरही है और प्रातःकाल फूलफूलरहे हैं बादशाहकेजी में आया कि अमीर का हाथपकड़कर सभासमेतबागकी सैरकरनेकेलिये चलें और अमरभी साथहोकर बादशाहको उसीओरलाया जहां बख्तक नंगा टत्त में बंधाहुआथा बख्तक बादशाह को देखकर गुलमचानेलगा कि कृपानिधान मालियोंने मेरा यहहालकिया और उधरसे खाजे अल-फपोशने आकर बिनयकी कि रातको एकचोर नाबदान के मार्ग होकर बागमें आयाथा नौकरोंने उसेटत्तमें बांधरक्खाथा जब चारचोट की मार पड़ी तब कहताहै कि मैं बख्तक बादशाह का मंचीहूं कुसमय के कारण यहां आनफंसाहूं बादशाह और अमीर ने जो ध्यानकरके देखा तो सच मुच बख्तक टत्तमें बँधाहुआ देखपड़ा अमरने बढ़कर कहा कि आजबाग में नया फूलफूला बख्तक तो बड़ासमझदार और बुद्धिमानहै उसकी क-म्बख्तीथी कि यहां आता और आपको आफतमें फंसाता शायद कोई भूत उसके भेषमें आपको दिल्लगी और तमाशादिखारहाहै और सन्देह नहींहै कि कुछदेरके पीछे उड़जावे फिर इसस्थानमें किसीको देख न पड़े अमर यह कहरहाथा और बादशाह सैरकरते हुये आगेबढ़े तोअमीरने

अपने मनमें बिचार किया कि देखनेसे जानाजाताहैकि इसमेंअमर कामी मेलहै आपकी यहांभी बुद्धिविशेष प्रगट है बख्तक को देखकर बादशाह खिलखिलाकर हँसा और जितने हाजिर थेसबहँसीमेंऐसेबेचैनहुयेकि हँसते २ गिरपड़े अमीरने उसकोखुलवाकरआफतसेछुड़ादियाऔरउसकी देहदेखी तो तमाम शरीरमें घावके सिवाय कुछ नज़र न आया शरीरसे रुधिर बहरहाहै चांदझंची होगई है बादशाह ने क्रोधवान होकर कहा कि इसीतरह से इसेयहांसे निकालदो अमीर ने उसका अपराध क्षमा करवायाऔरउसकेवस्त्र अमरसेतीनसौरुपये कोमोललेकरपहिनाये और दिलासा दिया बादशाह ने बागहस्त सुर्ग जोबुगदाद के बीचमेंनगके समान बनाहुआथा उसेदेखने की इच्छा की और उस बागमेंअमीरऔर बुजुरुक्षमेहर औरहरसुलतानदार औरमुक़बिलबख्तकऔरसबसरदारों समेतगये और कहने और देखने में वह नामके समानथा उसकी बनावट स्वर्ग के समानथी और अमरने अपनी किताबमें बख्तकका नाम सबसे पहिले लिखाथा बादशाहके सामने मसखरापन करने लगा कि कृपानिधान बख्तक बिचारे की हड्डियोंको मालियोंने बेलचों से मारकर अत्यन्तचूरकियाहै और शिरमें बालनहींरक्खे अच्छासाफकर दिया है और जहां२ फूला है वहां २ चमकरहा है जो उसको मोमियाई कृपाहोती तो उस पर बड़ीदयाकीजाती अबतो अपराधहुआ कि आपकी आज्ञाभंगकी कि बागमेंआयासोउसकाफलमिलाअबइससेऐसाअपराधनहोगाकभीआज्ञा भंग यह न करेगा यहकहकर फिर बख्तककीओरशिरउठायाऔरउससे कहने लगा कि हाथ जोड़कर प्रणकर कि फिरऐसाअपराधनहोगाअमर बख्तकको मसखरा सबजगह बनाताथा बादशाहने कहाकिआदी को तो बुलावो जब आदी आयाबादशाह ने कहाक्योंआदी हमने तुमको धीर्यवान् जानके दरवाजे का रक्षक किया तिसपर भी बख्तक बागके भीतर आगया यह सुन आदीने यह प्रार्थनाकी कि कृपानिधान बख्तकका क्या अपराधहै जो आपकी आज्ञाबिना बागमें पावँधरे मेरेनिकटआयाथा कि मुझसे भेटलो और मुझे बागमें जाने दो मैंने उसको झिड़कदिया वह लज्जितहोकर अपने घर चलागया बादशाहने कहाकि देखो तो वह कौन है बख्तक है या कोई और है आदी बख्तक को देखकर क्रोधयुक्त हुआ औरगर्दन पकड़कर बोलाकि बागसे निकलकर देखियेगा कैसी गत बनाताहूं और किस भांतिसे आपके साथ सलूक करता हूं अमीरने आदी को मनाकिया कि अब बख्तक से मत बोलना बादशाह ने उसका अपराधक्षमा किया है अब तुम अपने स्थानपर जहां बैठेथे वहीं बैठो आदी तो बागके दरवाजेपर गया और सभामेंप्याले चलनेलगे मदिराको लिये हुये लोग घूमने लगे इतने में सूर्य अस्तहुआ और चन्द्रमाने अपना प्रकाश बिदितकियासेवकदीपकऔरफानूसलेलेकर प्रकाशकरनेलगे औरमंगला-

चारीलोग आये गीत राग होनेलगे और बिबिधि प्रकारसे अमीर को प्रसन्न करतेथे जो कि बादशाह सोये न थे उसदम बादशाहकी आंख लगगईअमीरभी वस्त्र बदलनेके हेत उस महलसे बाहरआयेमित्रस्नेही भी उनकेसाथ सैर करतेहुये बागके एक कोनेमें आये एक नहर वहांपर देखी जिसकी स्वच्छताके आगे दर्पण लज्जित होताथा उसका पानी झझरियोंकी राहसे बाहर जाताथा मुक्तबिलसे कहा कि हम स्नानकर के वस्त्रबदलेंगेमुक्तबिलनेअमीरकीपोशाकउतारीऔरनई पोशाक बदलने केहेत मँगवाई अमीर उसहम्राममें नहानेलगे एकाएकीमलका मेहरंगेज नौशेरवांकी पुत्री जो महलके ऊपर झरोखोंमें बैठीहुई उधर दृधर देखरहीथी उसका रूप देखकर अचेत होगई ॥

दोहा ॥

रज समको शुभरूपने तारकीन्ह प्रकाश ।
पुनिखद्योत जोदेखही रविसमहोयहुलाश ॥
सकलबाग सो जरउठा रूपबिद्युतजानि ।
फूलवृक्षसेजो गहे सम चिनगारि निशानि ॥

अमीर पर जो उसकी दृष्टिपड़ी स्नेहरूपी बाण उसके कलेजेकेपार होगया स्नेहरूपी बाणखाकर चित्तमें बिचारकिया कि मुझकोतो इसके रूपने घायल किया बैठे बैठाये बिरहाका घावऔर दाग़ स्नेहका दिया इसका सावधानीसे जाना भलाई नहींहै गजरा गलेसे निकालकर अमीरकोओर फेंका वह अमीरके कांधेपर गिरा अमीरने जो उधर देखा तो ईश्वरकी रचनाकी शोभा दृष्टिपड़ी ढांढस न बांधसका ॥

चौपाई॥

चन्द्रबदनि देखोत्यहिकाला । परीते अधिक सजीनवबाला ॥
रूप स्वरूप कहैंकेहिभांती । कोइ उपमानहिंहृदयसमाती ॥

उसकोदेखकर पानीमेंगिरे मुक्तबिलनेकूदकरअमीरको सम्हाला और गोदमेंलेकरपानीसेबाहर निकाला अमीरने ऐसी बिरहकी आहखींची कि आनन्दरूपी खलिहानमें आग लगगई बिरहकी चिनगारियांचित में भड़कनेलगीं और डाहके आंसू नेत्रोंसे टपकनेलगे ॥

दोहा ॥

बिरहआग अतिहै कठिन उदधि होत भसमन्त । पाहनमें जो लागई पुनित्यहिमिलै न अन्त ॥

चौपाई॥

आवत याददिवस जेहिकाला । थेजो रहित शोक जंजाला ॥
रहा न आहलाहतनमाहीं । श्वासकठिनव्याप्योजगनाहीं ॥
आंसू नदीसरिस नहिंबहई । मुखनहिंप्रियरकतहुं रंगलहई ॥
तन बिभूति ऊपर नहिंलायो । खाकी सरिसन रूप बनायो ॥
कामन लीन कतहुं जगमाहीं । जो अपनेहि हेत लेलाहीं ॥

निशि दिनरहे अनन्द समेतू। कतहुं न देख्योशोकनिकेतू॥
जल बिनमीनचित्तनहिंभयऊ। सदाप्रफुल्लितबहुबिधिरहेऊ॥
रोना सेकन जायत जानेउ। भूतवश्यकतहुं न उरआनेउ॥
फुलहारी शरीर जगरहेऊ। सदा प्रफुल्लित ओमुखभयऊ॥
डाह आंशु अरु शोककलेशू। रहे कीन ताको उपदेशू॥
बाग जगतकीबायु न व्यापी॥ चितमेंचिन्ताकतहुं न कापी॥
गुच्छा मनकर सदाहुलासू। भयेनफूलकतहुंकुम्हिलासू॥
रोवतदेखि कहैं कसरोना। शोकआंशुतेकस मुख धोना॥
चन्द्रबदनकर बिरहबियोगू। कस उरधरैं जगतकेलोगू॥
मनचित धर्मबुद्धि अरुज्ञानू। कस परिहरैं बिरहबशजानू॥
मृगनयनी के बशहोय लोगू। सहैंअन्यायकठिनजगयोगू॥
बिरह बसत जगमेंकहअहई। बिरहकहतकाकोजगरहई॥
अबजो देखि यहैंजियजाना। कठिनबिरहनानाबिधिमाना॥
अतिहैअधमअगमबिरहागति। होजोबश्य हरैंताकीमति॥
बिरहा अति अमानकर हेतू। टूटै ज्ञान धर्म जेहि सेतू॥
पावक सम अहैबिरहनिकेतू। धर्म कर्म जरि ज्ञानसमेतू॥
मारग जेहि बतायजगकोई। होयबट पराधीनधनसोई॥
मिचकरैं बैरी होय जाई। असचरित्र जग अहै गुसाईं॥

दोहा॥

नेह रूप पावक बिषय लखो न कोनो भाव। सोपावक उर आइके ममतन कीनोघाव॥

चौपाई॥

रोदनवारि बहै मुखधारा। सूझैनहिं जग पारअपारा॥
जरोजात तन संशयनाहीं। कठिनसोपावकयाजगमाहीं॥
जलगोइसी आगके माहीं। सत्यकहौंनहिं यहै वृथाहीं॥
असप्रचण्ड जगमेंहै नारी। लाखों गृह फूंकेचिनगारी॥
विपिनमध्यफरहादबसायो। शीरी काजकठिनदुखपायो॥
वामिकपुनिउजगाबशभयऊ। सकलप्रकारदुसहदुखसहेऊ॥
सोपुनि कीन मोरअसहाला। डारेउकठिनहृदयजंजाला॥
नेहमांझआनन्दनहुलासू। नहिंसुखपुनिनहिंकछुकासुपासू॥
तरसरहाचितमोरसनेहू। जापर अहै न सुख कछुलेहू॥
हौंजेहिबशबिनवहिसुखनाहीं। बिरहवन्तकेहृदयसमाहीं॥
जिवघातकते पराहैपाला। कीजिवजाय किमिलिहैबाला॥
जानबूझके भयोबियोगी। बिरहकठिनताकरभयरोगी॥
सुमनसुचितहैफूलकोरूपा। देखो सदा सनेह अनूपा॥
नहिंकुछचाहयुवतिमनमाहीं। कुआंमध्य अबपरोअथाहीं॥
कुबरीकेरफेर वशभयऊ। अन्तपयोधिबिरहबिचगयऊ॥

कृष्ण रातते अधिक असूझा । भयो असहालजायनहिं बूझा ॥
धाम बंदि खाना सम लागे । काम सकलदेखत चित भागे ॥
कारण यह सुख नाशक केतू । और कछुक दूजो नहिं हेतू ॥
जुलफ के बदले वासकस्तूरी । थी किमि हीन भीनजोपूरी ॥
मृगनयनी चंद्रवत प्रकाशी । ताहि देखि नीथार गुणाशी ॥
था केवल मोहिं बिपतिबेसाहू । लीन्हमोल कीन्हेउ उरदाहू ॥
खड्ग बिचिच धारते मोहीं । मरन बदा सोई पुनि होहीं ॥
भौंहकटार फार उर दीन्हा । अगणित कष्टबास तन लीन्हा ॥
दुसहबियोग विछोह कलेशू । रहे सहन सब भांति भदेशू ॥

दोहा ॥

रहे बरावा उचित मोहिं दृष्टि कटीलीजान । नहिं कीन्हों फल पायऊं रुधिर करत ओपान ॥
मानुष केहित दृष्टि अस वेगि कटाकरि देय । मनो कटारी बाढ़िया शान धरेउ अबटेय ॥
ठचित रहे वातें मुझे भागों तीर समान । दुख कछु मोहिंन व्यापतो जो करतेउंपरमान ॥
चंद्र बदनिके नयन शुभ और कपोल प्रकाश । कतांसरिस चित झाड़ई मानत अधिक हुलाश ॥
मिसी जमीइनदशन पर जो मरतेहमनाहिं । तम निशिमें सब नखतको किमिदिखतेअकुलाहिं ॥

सोरठा ॥

चतुहीन की भांति चाह रूप मुख परगिरा । कूप मांझ धसिजात अच्छाथा जो बूड़तो ॥
तनपर थाकेबार सकल सुःख अपना दियो । बर्णों कौन प्रकार जस दुख व्याप्यो हृदय में ॥
होंअमान जेहिभांति असजगकोउ दूबरनहीं । अहे कठिन सब भांति अस बलायमें होंफँसा ॥
जेहिमें मेरबामार ईश कोय जनि फांसिये । दूसररोग हज़ार पै यामें नहिं होइ कोइ ॥
दिनव्यतीतजोहोय निशिआवतधड़काहिया । नेहको नाम जगोय जूड़ी आवत ताहि सुनि ॥

चौपाई ॥

यहि बिधि नेहकीन्ह उरघायल । पावक सरिस बागमोहिं थायल ॥
सुगन्ध फूल ब्रह्मागड नशावै । यहि बिधि नेहमांझ दुख पावै ॥
कतहूं रोदन कतहुं मसाना । कतहुं बिलाप सरीलगि ठाना ॥

कवित्त ॥

भावे न धाम न काम हमें नहिं बाग कि सैरको चित्त चले ।
नहिंनींद नभूख नप्यास कछू निशि वासर शोक हृदयमें हले ॥
अस नेहके मेहमें भीजो शरीर करेर नहीं केहि भांति टले ।
कबि कोविद लोग बिचार कहैं वह दृष्टि कटारी सदैव शले ॥
कोइ मित्र सनेही नहीं जगमें चित व्याकुलताको जो शान्तकरै ।
क्षणधाम औ जङ्गल मांझ क्षणै क्षण जाउं नदी तट धाइफिरै ॥
केहि भांति करों चित धीरजसों पुनि शोक कलेशहि कैसे हरै ।
कबि लोग कहैं कोउ न्यायकरै फिरयाद कहो केहि भांति सरै ॥

दोहा ॥

कुसमय का गिल्ला करों प्राप्त कछू नहिं होय । बैरीको बैरी कहे यहभी उचित न सोय ॥

मान अमान माशूक को आशिक ऊपर लेइ । वह गाली जो देइ त्यहि तेहि अशीषतूदेइ॥
रूप देश माशूकके जब तक रहे बसेर । करु सलूक यहि भांतिसे रहे यादिजेहिठेर ॥

मुक़बिल ने अमीर को समझाया कि यह स्थान वियोग का नहीं है नये वस्त्र पहिनिये और सभा में चलिये उस समय अमीरने मुक़बिलकी शिक्षा मानली औरवस्त्र पहिनके उसमहलमेंगये परन्तु चित्तमें औरही विचार था और उधर मलकामेहर निगारका हाल औरही था ॥

दोहा ॥

गिरी छार खटबीचमें ह्वै अचेत बहु भांति । जनु काहूके वश्य है बिकल परी अकुलाति ॥

दाइयां और लौंड़ियोंने घेरलियाकोई कटोराफकीरों कोपिलाती कोई फूक डालती कोई दुआ मांगती खाना पीना सोना सब बन्दहो-गया कोई हाथ पावँ सोहलाती मलकाको जब व्योरा हुआ अपने चित्त में बिचार किया कि कहीं यहभेद प्रकट नहोजाय यह नेहकोई दूसरा समाचार नउत्पन्न करैलौंड़ियोंसे कहा किचिन्ता करनेका कुछ प्रयो-जन नहींहै मुझे आपही आप मूर्छा आगई अब मैं अच्छीहूं हल्ला गुल्ला मतकरो चित्त में न घबरावो फिर इधर उधर अमीर देखतेथे कि दिन कहीं व्यतीत होवे तो शान्ति होनेका उपायकिया जावे फिर ज्यों त्यों करकेदिन काटा और पहर राततक धीर्य बांधे बैठारहा अन्त में व्या-कुलहुआ धीर्य न होसकाबादशाहसे प्रार्थनाकी आजछठीरात है पलक से पलक इसआधीनकी नहींलगी है जोआज्ञादीजिये तो आरामकरलूं किसी किनारे बाग़में जाकर सोरहूं बादशाहने कहाकि जाइये अमीर मुक़बिल समेत सभासे आये फिरभरोखे केतले पहुंचे कोईलगाव ऊपर जानेका न पाया परन्तु एकवृक्ष महल के निकट दृष्टि आया उसकी गली कोठेकी मुड़ेर से लगीहुई थी मुक़बिल को उस वृक्ष के तले खड़ा करके आप वृक्ष पर चढ़ गये और सतमहला पर पहुंचे ॥

मलिका मेहर निगारसे प्रथम मिलाप ॥

चौपाई ॥

नेह नयाकर नया सुभाऊ । औसर प्रति करै बिबिधि बनाऊ ॥
कतहुं रुदन अरु कतहुं बिलापू । कतहुं रुधिर करपानप्रतापू॥
कतहुं घाव कर लोन करेरा । कतहुं पतंगा दीप गसेरा ॥
कतहुं गहत कतहूं गहिजाई । दोनों भांति है अधिक भलाई ॥

अब इस वृत्तांतको इसभांतिसे वर्णन करते हैं सब प्रकार से संदेह को हरते हैं बिलाप का वृत्तांत काग़ज़ पर इस प्रकार से जमाते हैं कि अमीरने डेवढ़ी के ऊपर जाकर देखा कि मलकामेहरनिगार युवति योंके मध्यमें बैठीहै और बोतल मदिराकी भरीहुई सामने धरीहै शीशे का प्याला हाथमें चमक रहाहै ॥

दोहा ॥

मदिरा यत्नसमेतते धरीहै प्याला माहिं । शोभाबर्णत नहिंबनै बांटत मद सुखपाहिं ॥

परन्तु मोती रूपी आलुओं को लड़ो गूंधरहो है नेहकी धार हृदय में लहर लेरहीहै और बिरहको पावक उरमांझझारहीहै भारी श्वास मुंहसे लेतीहै दिनकोतो अमीरने दूरसे देखाजब निकटसे दृष्टि भिड़ाई तब औरही सूरत दृष्टिआई कि जिसके रूपका प्रकाश दृष्टान्त नहीं रखता है और पूर्णेन्दु उसके रूपको देखकर बलाय लेरहाहै और उसकी ठोढ़ीको जो हारूत मारूत देखतेतो मरजाते और स्तनोंको जोनींबू देखता तो दांतखट्टे होजाते और उसके शरीरको जो सरो देखता तो अपनेको देखकर लज्जित होजाताकपोलोंनेलालको दागदिया आंखोंने मृगोंको बिपिन में बासकराया और चोटीने संबुलकोलपेटदिया भौंहोंने कटार को मियानमें करवाया सुआके भांति जिसकी नासिका इसी प्रकारसे सकल अंगसजा हुआथा ॥

दोहा ॥

करै सूर्य जो दृष्टि वहि मोह होय अतिचार । चकाचौंध ह्वै जायपुनि असहे रूप अगार ॥

चौपाई ॥

पूरन चंद्र देख जो पावै । दाग खाय लज्जित ह्वै जावै ॥
यूसुफ जो बिलोक तो रूपा । तोनहिं जात छोड़ पुनि कूपा ।
देखत रूप जोलेखा जोई । यूसुफको न देखतो सोई ॥
यहिबिधि अहे नासिका शोभा । सोथिलकीर देखिजगलोभा ।
लज्जित हो शुकनिज उरदेखी । रूप प्रकाश नासिका लेखी ॥
करण जवाहिर खान लजाई । दर्पण रूप कपोल सोहाई ॥
अधर अरुण बिम्बाफल रूपा । दाड़िमदशन सुहात अनूपा ॥
मुख बरणों केहिभांति प्रकाशू । देखत मन आनन्द हुलाशू ॥
अस बिवेक जेहि मांझ निकेतू । उपमाकोउ न मिलेतेहिहेतू ॥
अति सुन्दर ठोड़ीकर रूपा । मनों सरूप रुचिर है कूपा ॥
चित धवराय देखि जो पावै । आपहि आप डूबिपुनि जावै ॥
जो गिरिपड़ै निकरि नहिंपावै । यूसुफ जाय देखि रहजावै ॥
ग्रीव ग्रीव केहिभांति बताऊं । देखेहि बनहि याहिमसझाऊं ॥
करमें अरुण लगीहै मेहदी । सोहत बिबिधि भांतिकी बेंदी ॥
देखिरूप व्याकुल तन भयऊ । रहातें अधिक अधिकह्वैगयऊ ॥
मन नहिंरहा हाथमें मेरा । नेहकीन्ह जब आय बसेरा ॥
शोक बिछोह धरों कसधीरा । तनअति बिकलअधिक उरपीरा ॥
बिथना निजकर हाथ संवारे । अंग अंग प्रतिगुण अधिकारे ॥
अंगुली चमक दमक छबिभारी । देखत अचरज अति हितकारी ॥
अस्तन छबि बरणी नहिंजाई । मनो अनार युगसुखित सुहाई ॥

यावन अतिरुचि करत शिकारा। मारत लोगन बिबिधि प्रकारा ॥
बस्त्र हटे छाती से जबहीं । लाजवन्त मिमिटत है तबहीं ॥
तनी ठनी यहि भांति बनाई। जनु नेहक बांधे सुख पाई ॥
बस्त्र स्वरूप रूप अस थानू । बरणों कैस उदय हैं भानू ॥
आगे लिखौं कवन मुख लाई। छबि बरणत बरणी नहिं जाई ॥
परदे कर परदे में हानू । लाजहेत नहिं करत बियालू ॥
कनकखम्भ समजंघ सोहाई । देखे नर जोसो बलि जाई ॥
मखमल सरिसनरमगतिजासू । छुवै जो होय शीघ्र वशतासू ॥
फीली रुचिर बनीअति गोरी । उपमा मलिन करै जेहि जोरी ॥
यहि प्रकारनखसहित सरूपा । रचना रची अनूप अनूपा ॥
नख तारा सम करत प्रकाशू । मेंहदी तापर करत हुलाशू ॥
अंजन अंजे नयन युगसोहैं । देखत तासु सृष्टि इक मोहैं ॥
छल बल क्रियशिङ्गार समेतू । चाल बिशाल मदन करहेतू ॥
कटिकेहरि समसोहत नारी । अति बलखात जात सुकुमारी ॥
अससुकुमारिबस्त्र जेहिभारू । चलन सकत शुभक्रिये शिङ्गारू ॥

दोहा ॥

नहिंसहि सकत भारकछु अससुकुमारि दुलारि । मेंहदी जेहि गरुईलगे आगेहि कहाबिचारि ॥

अमीर उसके मनोहर स्वरूपको देखकर आपमें नरहे और भी चिनगारी चित्तमें भड़की मलकामेहर निगार को सबसहेलियांसमझारहीं थीं अपने २ बुद्धिसंधीर्य्य देरहीथींकि इसशोक औररोनेसे नहींमालूम कि कोई दूसरा बखेड़ा न उठै इससेऐसी बिबशमत होजाओ और थोड़ा आपको संभालोजिसकेनिमित्त तुमऐसा बिरह धारण कियेहो उसने भी तुमको देखाहै उसकोभी चैनकहां होगा वहतुम्हारे बिछोह में फिरता होगा कोई न कोई उपाय मिलनेका करेगा इसकारणसे मलका कारोना पीटना दूरहुआ और फितनावानोने जो मलकाकी दाईकी बेटी थी मदिरा का प्याला मलका के हाथमें दिया कि इसको पियो ॥

दोहा ॥

करु मदिरा को पान तू शोक त्यागु सुकुमारि । वेटिन पहिले नहिंरहैं येकसरहैं दुलारि ॥

मलका ने कहा कि हमथोड़ी देरपीछे पानकरैंगी पहिले तुमतो अपने २ मिचोंका नाम लेकर पियो थोड़ीसी मेरेहेत भी रहनेदो सबसे पहिले फितनावानो ने प्यालाभर उठाकर अमरअय्यारका नामलेकर पिया यहसुनकर अमीर का चित्त घबराया कि अमर यहां क्योंकर आया यहशोचताथा कि दूसरी प्रिया मुक़बिल वफादार का नाम लेकर प्याला शराब का पीगई इसी भांति से सबसहेलियां अपने २ स्नेही का नाम लेलेकर प्याला पीगईं अमीरने मन में कहाकिइसभेदको हम नहीं जानतेथे इतने में मलकाने भी प्याला मुंहसे यहकहकर लगाया कि

जिसने झझ्झाम अल्झमके पुत्र खैबरीको माराहै और कठिन बिपत्ति और क्लेशसे तुमलोगोंको छोड़ायाहै उसकी यादकर पीतीहूं अमीर सुनकर मनमें कृतकृत्य होगया पहरभरतक इन सबकी सभा जारी रही और मदिरा पान करतीरहीं मलका जब प्यालाउठावे तबपहिलेसाहब किरांकानाम लेवे तब उसेपीवे जब दोपहरसे रात अधिक व्यतीतहुई वह सभा उठगई मलकाभी छपरखटमें जाकर लेटरही यद्यपि करौंटें लेती थी परन्तु चित्त उसका अमीरकेपासथा नींद क्योंकरआतीधाहैं मारकर रोतीजाती अन्तमें रोते २ थकगई साहबकिरां ने देखा कि मलका भी सोगई औरसखियांअपने २ स्थानपरजाकर सोरहींतोसीढ़ियोंकेमार्गसे महलके कोठेपरसे तले उतरा और दबेपावों मलकाके छपरखटकेनिकट गया देखा कि मलका सोरहीहै ॥

चौपाई ॥

नयन खुले सोवत सुकुमारी । ताहिबिलोकि भयोसुखभारी ॥
बिरहा सोवत ताकर पाटू । खुलेहैं सकल भांतिकर ठाटू ॥

देरतकउसके चन्द्रवत्मुखारबिंदकाप्रकाशविलोकाकिया औरचित्तमें विचार किया कि बड़े परिश्रमसे तू यहांतक पहुंचाहै अत्यंत कष्टसहा है तब तुझे यहांतक आनेका औसर मिलाहै मनकी हौसतौ अब किसी भांतिसे निकाल किसीहीलासे साहबकिरांनेअपनेदोनोंहाथ सुमनतकियोंपरधरेऔर चाहा कि उसकेओठोंकाचुम्मालेवेंऔरकपोलोंकोभीचूमें तो हाथ तकियोंसे फिसलगये और मलकाकीछातीसेलगगयेमलकाचौंक पड़ी अमीरका तो ध्यान न रहा आशक्त होकर चिल्लानी चोर २ कहने लगी चारों ओरसेलौंड़ियां जागपड़ींऔरहांकसुनकरदौड़ीआईंअमीर ने कहा कि मैं अल्झमके पुत्रका मारनेवाला तुम्हारे रूपका माराहुआ हूं मलका अमीरको पहिंचानकर अपने गुल करनेपर अति लज्जित हुई औरचेरियां बिन्तीकरनेलगी औरसाहबकिरांकोझटपट छपरखटके तले छिपादिया लौंड़ियोंकोयहकहकर बहिलादिया कि मैंने एक ऐसा नष्ट स्वप्नदेखाथा कि उससेमैं डेरागईइससे चीखमारउठीअच्छातुमलोग जाकर सोरहो अपने २ स्थानपर जावो वेतोनींदकीमातीहीथीं अपने २ स्थानपर जाकरसोरहींसाहबकिरां उनकेजातेही छपरखटके तलेसेऊपर आये और मलकामेहरनिगारके बराबरबैठेमलकानेदिनकोतोदूरसेदेखा था अब जो पाससेदेखा और भी अचेतहोगई साहबकिरां ने मुखसे मुख मिलाकर अपनी सुगंध जो सुंघाई तोथोड़ीदेरके पीछेहोशमें आईइतनेमें प्रातःकाल होगया साहबकिरांने औसकेसमाननेनोंमें जलभरके कहाकि ईश्वर जो निगहवान है अबमैं ठहर नहीं सक्ताहूं ॥

चौपाई ॥

देख्योरूप प्रात जब भयऊ । घाव हृदय महँ अति करिगयऊ ॥

तनमन सकल मोरहरिलीना । कठिनबियोग शोक तनकीना ॥

भेदविदितहो जाने का डरहै बादशाहसे सोनेका बहानाकरके आयाथा जो जीतारहूंगा तोफिररातको आऊंगा तुम्हारे बिछोहमें नाना प्रकारके क्लेश पाताहूं चित्त लगायेहूं ॥

दोहा ॥

बेधीरज कतहूंनहीं कीन्ह मिलाप अनेक । सोअब भयो सनेह बश रहो न कछू बिवेक ॥

किन्तु इस घायलकी सुधि न भुलाना मेरेऊपर कृपा कियेरहना चित्त में ध्यान रखना भूल न जाना मलका ने एक आह सर्दखींची औरनेत्रों मेंजलभरकरबोली कि देखियेइतना दिनकैसे व्यतीतहोगाचित्तकोधीर्य्य किस भांतिसे होताहै ॥

चौपाई ॥

ज्यों त्यों निशि बिछुरनि कटिआई । दिन कसकटै ईश दुखदाई ॥
बिरह बियोग कठिन जंजालू । बिकल अधिक तनमनदुखसालू ॥

यहकहकर कहा अच्छा ईश्वरको सौंपा ॥

चौपाई ॥

राउर निज स्वरूप लै जाऊ । कठिन अधिक तन मन पछिताऊ ॥
बितिहै सो मोपर बितिजैहै । शोक बिछोह कठिन दुखपैहै ॥

इसके पीछे अमीर बिदाहुये उसी भांतिसे कोठेपरसे तले आये और मुक़बिलको साथलेकर सभामें पहुंचे बादशाहभी सेजसे उठकर बाहर निकलकर सभाके मध्यमें शोभितहुये और सबलोगोंने दर्शन पाये जिस समय प्रातःकाल हुआ और सूर्यमुखीका फूल प्रफुल्लित हुआ बादशाह अमीरका हाथ पकड़हुये चमनमें आये और सभाकेलोग भी उसी स्थानमें आये अमीरका मन बिरहसे स्थिर न था ॥

चौपाई ॥

असमन भयो नेहबश मेरा । भावत उजड़ न मोहिं बसेरा ॥
उजड़े जाउं चित्त नहिंलागै । देखि बसेर बिरह उर जागै ॥

घड़ी २ उठ २ कर अमीर इधर उधर देखतेथे अपना चित्त मलका मेहरनिगार पर लगाये हुयेथे और बारम्बार उसके मकानकी ओर दृष्टि करतेथे ॥

चौपाई ॥

आदर अधिक नेहकर भारी । मिच सकल भूले इकबारी ॥
तनकी दशा कहों केहिभांती । अदब बिसारि दीन दुखथाती ॥
धीरज धरत रहत मनमाहीं । अबकह चैन शोक मनमाहीं ॥
रहत रहत बाढ़त उरशोचू । सबबिधि रहत हृदय संकोचू ॥

बुजुरुचमेहरने अमीरकाहाल देखकरताड़ा कि अमीरका चित्तकिसी पर लगगया तो अमरकी ओर इसारा किया उसने कहा कि मैं आपसे

प्रथम जानगयाहूं इसका चित्तकिसी न किसीसेलगगया चित्तकीअधीर्यता देख बख्तकने भी अमीर का शोच देखकर विचार लिया कि अमीर किसीको अपना मनदे आयेहैं इसकारण वेधीर्य नहींहैं बख्तकने बादशाहसे प्रार्थनाकी कि लोग हरघड़ी सभासे उठ २ जातेहैं और फिर लौटआते हैं इससे सभाकी शोभाजाती रहतीहै आज्ञादीजिये कि जो कोईबिना आवश्यकता सभासेबाहरजायगाउसकेऊपरसौरुपयेजुरमाना कियेजावेंगे बादशाहने इसबातको प्रसन्नकरकेअमीरसेकहा किजोकोई उठेगा उसपर सौरुपये जुरमाना कियेजावेंगे अमीरने कहा कि यहतो बहुत अच्छीबातहै उसपर आपदोबार अकुला २ करउठे और दोसौ रुपये जुरमाना दिये ॥

दोहा ॥

गाहक तेरीहाटमें टूटत अधिक विशाल । जोरहैं मारग तासुकी अतिशै कठिन कराल ॥
तेरी मूरत देखिके निजपद उठत न नेक । भीतसरिश ह्वै गयेमैं हे तिहार हितटेक ॥

बुजरुजमेहरने अमरसे कहा कि कुछऐसा उपाय किया चाहिये कि जिससेबख्तकसभासे उठजाय औरइससमयमेंफिरनआनेपावेअमरनेकहा कि यहकितनी बड़ीबात है अभीतो यहएकही बातके कहनेमें जाताहै यहकहकर बादशाहसेप्रार्थनाकीकि इससमयमें अद्भुतलीलाहै जोआप की आज्ञाहो तोमैं अपने हाथसे दोचारप्यालामदिराकेभरकरपिलाऊं बादशाहने कहा कि इससे अच्छी क्याबात है हमैंभी यहीमंजूरहै अमरने प्याला और बोतलकोहाथमेंलेकरदेवगुरूअकियाजबतीनचार प्याले बारंबार बादशाहकोपिलाचुकातबजुरमुजताजदारकोएकप्यालापिलाकरअमीरकोदिया तिसकेपीछे खाजेबुजुरुजमेहरको एकप्यालापिलाया इसीभांतिसे घूमताऊआ बख्तकके मुंहसे प्यालालगायाकिउसकामस्तक ठनक उठा किइससमयअवश्य कुछकारण है अमरसे कहनेलगा किमैंने कलसे मदिरा पीनेकी सौगन्दकी है यहसुन अमरने पुकारकर कहाकि यहअद्भुतबातहैकि सबसभाकेलोग और बादशाहनेमेरेहाथसेमदिरापीना स्वीकार किया परन्तु बख्तकमेरेहाथसेमदिरापीनामंजूरनहींकरता यहनहीं जानता किजो अबलीस मेरेहाथसे पीजाता तो अनेक भांतिसे हजरत आदमके चरणछूता अभिमानसे शिरनउठाताअमरकीइसबातसे बादशाह समेत सबलोग हंसपड़े और बख्तकसे कहनेलगे कि सबसृष्टिमें अमरके समान कोई मदिरा बांटनेवाला न होगा क्या तुमपर यहबात विदित नहींहै आश्चर्यहै कि तुमइनकारकरतेहोऔरपीनेमेंतकरारकरतेहो लाचारहोकर बख्तकनेअमरसे प्यालालेकरपानकियाऔरजोकि अमरने उसप्यालेमें कच्चाजमालगोटाबहुतअच्छाढूढ़केमंगाकेमिलायाथा एकघड़ीभीनबीतीकिबख्तककेपेटमें मिड़ोड़ाहोनेलगाबादशाहसेप्रार्थना करकेउठाकिसेवकआवश्यकतामिटानेकोजाताहैअभीफिराऊआआताहै

जबउससे निपटकर आया एकपलभीनगुजराथा कि फिरपेट में शूलहोने लगी लाचार होकर फिर उठचला अमर बोला कि अब कहां जातेहो अभीतो बाहरसे चलेआतेहो भलाईतो है अभीआप आयेहैं फिरभी जाया चाहतेहो बख्तकनेभी सौरुपये जुर्मानाकरअपनीहानतरफाकी दमभर न बैठेऊआथाकि फिरभी दिशाकी आवश्यकतामालूमऊईपरन्तु जुरमानेकेडरसेसाधेऊयेबैठारहाजबबऊतआशक्तऊआ तबतो साधनसका पाखानेके मार्गहोकर बहकर पायजामेकेतलेपांयचोंसे निकलपड़ाअमर तो इसीताकमेंथा प्यालेको हाथसेरखकरबादशाहसेप्रार्थनाकी कि इस समय ऊजूरको नशाहै जोबागकी सैरकीजिये तोदूनी खुशी प्राप्तहो बादशाहने कहा कि अमर मेरीभी यहीइच्छाहै बादशाह अमीरका हाथ पकड़कर चमनकी ओरचला सभाके लोगभी सबउठ खड़ेऊयेऔर बादशाह के साथचले बख्तक भी पाखानेकी आवश्यकतासेउठा लोगोंने देखा कि बख्तक की कुरसीसब पाखानेसे भरीऊईहै और उसके पायजामोंकी मोहरियोंके मार्गहोकर मैलाबहरहाहै किरमानीकाली न भी तमाम भरगईहै अमरने बादशाहसे इसबातकी खबरकी बादशाह का दिमाग पहिलेहीसे बदबूमें छागयाथा यहसुनकर और भी क्रोधकिया और आदीको बुलवाकर आज्ञादी कि इसमूर्ख अविवेकी को जो हमारी संगति के योग्य नहीं है बागसे बाहर निकालो आदीतो पहिलेसे उसपर बिघखायेऊयेथा आज्ञा पातेही बख्तक की दाढ़ी पकड़के घसीटता ऊआ बाहर लेगया खाजे बुजुरुच्चमेहर ने कहा यद्यपितूने बख्तक को उपायके सहित निकाला लेकिन अमीरको दम परदम बेकरारी अधिक होतीजाती है ईश्वरजाने किइसका क्या कारण है ऐसा नहो कि बादशाह कुछमनमें जानेतो बदगुमानहोवे फिरऔर ही सामानहोवे हाथबांधकर बादशाहसे प्रार्थनाकी कि हमजा ऊजूर की क़दरदानीसे बऊत यहसानमन्द ऊआ तमाम उमर आपका यहसानमन्द रहैगा अबआप चलके बादशाहत की गद्दीपर बिराजिये ईश्वर की सृष्टिन्याय करनेको आईहै वहआशा देखरहीहै सबआपकी प्रजा आपका दर्शन चाहतीहै बादशाह को बुजुरुच्चमेहर का कहना बऊत प्रसन्न आया अमीरकोशाही खिलत देकरबिदाकिया और आपन्यायशाला में आया ॥

मलकामेहरनिगार का अमीरके ऊपर अधीर होना और जाना अमीरके डेरेकी ओर अमीर की चाहमें ॥

लिखने वाला इसस्नेहके वृत्तान्तको इसप्रकार लिखता है कि साहब किरां तिलशादकाम स्थान पर जाकर घड़ियां पल २ गिनाकिया और बिछोह का दिनरात के मिलाप की आशसे व्यतीत किया जिस समय सूर्यने पश्चिम दिशामें बसेरा किया और चन्द्रमा आसमानपर प्रका-

प्रित हुआ अमीरने अपने रातके पहिरनेके वस्त्र मँगाये अतलसका जामा गलेमें पहिनकर कमरबन्द सुनहला काले रंग का कमरमें बांधा शिमला काला शिरपर लपेटकर तलवार और कटार कमरमें बांधी सूफ़ का पातावा पावों में चढ़ाया उसपर नमदी जूता पहिनकर कमन्द का घेराशाने से लगाया और काले रेशमकानकाब अपने मुंहपर डाला इस सजधज से मुकबिल को साथलेकर अपने खीमेसे निकला और मलका मेहरनिगार की ओरचले मार्गमें अमर छिपाहुआ खड़ाथा फलांग मारकर बोलाकि खबरदार हो चोरोंकी तरह कहांजाते हो क्योंमुझ से छिपाते हो तुम नहीं जानते हो कि मैं पहरादेता हूं अमीरने कहा कि क्यों मेराहर्ज करताहै उसनेकहा ऐ अमीर जानपड़ा कि मैंनहींजानता हूं और आपसे कुछ कपट रखता हूं तबतो मुझसे अपना भेद छिपाया मुझे अपनेसे फिरा और बदखाह ठहराया अमीरने कहा कि जो तू कोई गैरहोगा तो मेरासगामित्र और सनेही कौनहोगा किन्तु इस निमित्त मैंने तुझसे नहीं कहा कितू मुझे शिक्षादेगा और मैं अपने वशमें नहीं हूं मेरामनकाबूनहींहै क्या करूंलेआ तूभीमेरे साथचल अपने स्नेही के मार्गमें जाताहूं मनकी घबराहट उसके मिलापसे मिटाताहूं अमरने पूछाकि हुजूर वह कौनहै और कैसी है आदमी जादहै या अप्सरा है जिसकेहेत तुमसा धीर औरशान्तमनुष्यबेधीरजवऔर बेकरारहोअमीरने कहा कि सुननाभला कि दीखना चलकरअपनी आंखोंसे देख और बिधिकृत रूप पर दृष्टि करलो अमीर अमरसेये बातेंकरते बुगदाद की ओर चलेजातेथे और अतिस्नेहसे पावँ बेखटका बढ़ाते थे मल्लिकामेहरनिगार का हाल सुनिये कि अमीरकी चाहमें किस कष्टसे दिनकाटा दिन भर शोकमें गुजरा छपरखट में मुंह लपेटेपड़ीरही न उठी न बैठी और यह चौपाइयां पढ़तीरही॥ चौपाई॥

मांगत वह बर मित्र सनेहू । चरणाहट जगाय मोहिं देहू ॥
नरगिस सरिस बिकल मनमारे । देखत हित चित नयनउघारे ।

न मुंहधोया न खाना खाया न पानी पिया न तकिया पर से शिर उठाया नकंघी चोटीकी न पोशाक बदली तमाम दिन आंशुओंसे मुंह धोया की और अमीरकी चाहमें रोया की खानेके बदले अपना कलेजा खाया की और पानीके बदले आशुवोंकी नदी बहाया कीजो किसी को आतेदेखा तो आंशूपीगई कंघी चोटी के बदले नर्म पंजे से बाल बिखड़ा दिये पोशाक के बदले चादरसे मुहलपेट लिया जो अपने पास किसी को न देखा तो वहशियों की भांतिसे उधर जधर देखकर आशक्त होआहसर्द खींचकर यह चौपाइयां पढ़ने लगी॥

चौपाई॥

रोदनहेत मस्त चित अहई । मनघट धार नयनजलबहई॥

अधर अरुण कोमल मनजासू । बिकल अधिक तापर बिश्वासू ॥
दाड़िम दशन सोहात अनूपा । दीपक सरिस तपत तनकूपा ॥
मैं तब छबिपर सर्बस दीन्हा । खान पान त्यागन करदीन्हा ॥
मद मदिरा बिसारि सबदयऊ । केवल सभा एक उर रहेऊ ॥
मोह कठिन मंत्री दृढ़कीना । ज्ञान तमाम मोरहरिलीना ॥
तन हमार यह देश भुआरा । नृपति काम तन भयोरखवारा ॥
बिरह बिपति दुख कष्ट अनेका । कुमति कुकर्मशोकजेहि टेका ॥
सोये कटक लीन निजमाथा । केवल मोहिं बिचारि अनाथा ॥
दया क्षमा सन्तोष बिबेका । सब हरि लीन हंकारि अनेका ॥
लाजहीन अति दीन मलीना । बिरहबश्य तेहि मोहिंकरदीना ॥
कहु केहिभांति धरौं उरधीरा । व्याकुल अति पिय मोर शरीरा ॥
बेगि छुड़ाव तासुकर फन्दू । सुनो बचन पिय आनँद कन्दू ॥

दोहा ॥

बिरह आगि तनमें लगी जरोजात सबगात । बेगि छुड़ायो कृपानिधितनमन अति अकुलात ॥
जबसे मन हरगयो है तबसे नहीं करार । समा सरिस मुख जासु को भयो पतिंगावार ॥
नेह बारुणी के लिये नयन पाच कर दीन्ह । मापक सो वाको भयो जेहितनमन हरिलीन्ह ॥
नेह बीच ऐसी फंसी सर्बस दीन्ह गंवाय । रहे बसेरा उजड़भा ब्याकुल अहे सिवाय ॥
देखूं जी कैसे बचै जी घातक के साथ । यारी सो मैंने करी अगम अधिक है गाथ ॥
कहत सबै यारी बिषय चरन धरै जो कोय । स्वपनेहुंमांझनसुखमिले अधिक कठिनदुखहोय ॥

लौंड़ियों नेअलकाका हालदेख कर फितनावानो से कहाकि मालूम होताहै कि अलका ने अपना मन कहीं गँवाया कि जिससे खान पान छोड़ दिया न दिनको चैनहै न रातको आरामहै इस भेदको विदितकरो और उनसे जाकर समाचार कहो कि वहकुछउपाय और कोई तदबीर दुःखके दूरहोने की निकालें नहीं तो यह नेह और उसका बिरह दूसरा फूल खिलाने चाहता है इसमें किसी की लाज ढकी नहीं रहने पाती है यह गली २ के तिनके चुनवाता है लड़कों से पत्थर खिलवाता है होठों को सुखाता है आईमतभुलाता है दम परदमक्लेश औररोदनकरवाता है ठण्ढी सांसैं भरवाता है शिर से पाँव तक पत्थरों से शिर फोड़वाता है कानों में गफलत की रुई भरवाता है शिचासुन्ने नहीं देता है संसार में यहरोग बड़ा करालहै इसके हेत यह दोहे कहती हूं इसको सुनो ॥

दोहा ॥

नेहकेर पावक बिषय फूंका जात शरीर । आंशू से यह कहति हूं होय सहाय कमधीर ॥
अति करालगति नेहकीजगप्रति बदलतरङ्ग । अस पावकयह कठिनहै थिरन रहत जेहिअङ्ग ॥
यह जो सब संसार में सम्पति अङ्ग बनाय । तौ पपीच इक दीनहूं नृपति होय हरषाय ॥
सुन्दररूप औ नेह जो नहिंहोते संसार । भेदछिपा खुलता नहीं यहदृढ़ कीन्ह बिचार ॥
यहिजीके आरामका मिलता नहीं निशान । स्वाद कछू नहिं पावते तरुण वृद्ध सब जान ॥

नेह आपनी रीतिजो दिखलावत नहिंसोइ । तौ पुनियहि संसारमें रहताबशसबकोइ ॥
है यामें अतिकठिनता तातेकहों बिचार । नानाविधि दुखजाहिमें तनसे जातकरार ॥
कशिशअधिकयहिमांझहैखींचतविविधप्रकार । तनपाहनसमहोकठिनमोमहोत छणा सार ॥
असंकटमें प्राण हैं धीरज मिलत न नेक । रूपनेह ये युगुल पुनि जानलेन कीटेक ॥
बुद्धिवान जानत इसे जो सर्बज्ञ निधान । नेहबास आशिकहृदय आनोभाव नआन ॥
नयन देखने के लिये रूप सरूप निहार । कर्ण बोल के सुनन को निजनेही केद्वार ॥
हाथवाल सुरझन हितै पावंचलन के काज । दिलवरकेदरबारतक और कछूनहिं साज ॥
नेह जानते हमन ये अतिअन्याय निकेत । युग्म बेस के मध्यमें जीव हमारो लेत ॥
कबथी अस वृत्तान्ततें मुझको खबर सुजान । कठिनहृदयके बीचमें भई फफोला खान ॥
बड़ाजोड़ बांधतअहे असबिचारिगतिमोरि । काहकरों कासेकहों अपना चरितनिहोरि ॥
लाखजगह तन मन सबै उलझावेकरिहूक । नये पेच के बीच में देत नईसी लूक ॥
नेहकेर असहाल है सबके हृदय में बास । अधिक रसायन से अहै याकीबास सुबास ॥
अस मरहे संसार में जानबचा केहिकेरि । शक्ति सभी मिटजात है शूलदहै उर घेरि ॥
मौतघाट के सरित में इसने दीन्हउतार । जातेजी निजघाव ते मारे अधिक अपार ॥

चौपाई॥

अस है नेह जक्त बरियारा । फूंक कीन्हबहुतनको छारा ॥
ताते मानो कहा हमारा । समझो कठिन सकल संसारा ॥
तन गुणज्ञान धर्म हरि लेई । शोक सदा तनमन कह देई॥
भूले पैग कतहुं जनिदीजै । इतना कहा मोर सब कीजै ॥

दोहा ॥

यहसब कारणजानबोयहिमगकतहुं न जाय । लाजज्ञानगुण धर्मसब बेगिनाश होजाय॥

फितनावानो नेकहाकि मैंतोनहीं कहूंगी तुम अम्माजानसे यहहाल बयान करो मेरे कहनेसे तुम्हारा कहना अधिकहै देखो तो चसकाक्या मनोर्थहै अन्तको थोड़ी लौंड़ियोंने मेलकरके दायासे कहाइससमाचार को सुन दायाघबरा कर मलका के निकट दौड़ी आई देखा तो सच मुच मलका का अद्भुत हाल है न खाने पीनेका कुछख्याल है मुहलपेटे हुये कुपरखट में पड़ी है चेहरेसे वहशत टपकरही है दायाने चादरको मुंह से उठाकर कहा कि बेटी भलाई तो है आपका मिजाज कैसा है कुपरखट में पड़े रहनेका कारण क्या है मुझसे न छिपावो अपने चित्तका क्लेश निडरहोकरसुनावोछोटेपनसेमैंतुम्हारी छिपे भेदकी कुंजीजानती रहीहूं मलकाने कहा कि यद्यपि लाजआती है परन्तु बेतुमसे कहे भी काम नहीं चलता है कि मेरे कलेजे में आग लगने से तुम्हारा भी चित्त जलता है ऐसा अमीर का नेहरूपी तीर मेरे कलेजे पार होगया है मिलापरूपी मलहम लाकर किसी भांति से यह घाव अच्छा करती तो इसमें भलाई है दाया बोली कि मलका यह स्थान ध्यान करने का है कि कैसे २ शाहजादों का संदेशा आया और तुमने अंगीकार न किया

और यह मनुष्य मुसलमान दूसरी जात और दूसरेदीन काहै मेरे स-
मीप उचित तो नहीं है कि तुम उसकी गोदमें बैठो मलकाने कहा कि
एक नेहके धर्म और ग़ैरके धर्मसे क्या लगाव है उससे क्या सरोकार है
यह तुम अच्छी भांति से समझलो कि साहबकिरां के मिलाप बिनाजान
मेरी नहीं बचैगी हमारे मनने धीर्य्य को परित्याग करदिया है यह क
कर एक अम्बरीचा गलेसे उतारकर दायाको दिया जोतीन सहस्ररुपये
को मोलमँगायागयाथा औरउससेकहाकिदायाबज़तकुछसाहब किरांसे
और अपने पास से बज़त कुछ तुझे दिलादूंगी दाया लालच में खाजे
अमरसे कुछ कम नथी अम्बरीचा देखतेही लारमुंह में भर आई जो जो
मलकाने कहा सब मानलिया और यहभी शोची कि मलका को नसी-
हत क़बूल नहींहोगी तो अपना फायदा क्यों छोडूं मलकासे बोलीकि
जो यही मरजी है तो उठो हम्माम करके पोशाक बदल गहना पहिन
अपनेको बनावो जब यह रात गुजरैगी तब रातके बखपहिनाकर तुमको
साहबकिरां के पास लेजाऊंगी तुम्हारा मनोर्थ पूरण करूंगीकिन्तुधीर्य
को त्याग न करो नहींतोभेदखुल जायगा इसके जाहिरमें घाटाकेसिवाय
नफा न पावोगी मलका को धीर्य हुआ उस समय उठकर हम्माम में
स्नान किया और बस्त्र आभूषण धारण किया जब घड़ियालीने पहररात
का गज़र बजाया दायाने मलका को कालेबस्त्र पहिनाये और आप भी
मर्दानाभेष बनायाऔर कोठेपर जोबुर्जथा उससेकमन्दको लटकाकरम-
लकाकोलेउतरी और तिलशादकामका मार्गलिया थोड़ीदूर अमीरका
डेरा रहा था कि तीन मनुष्य कालेबस्त्र धारण किये हुये देख पड़े और
उसी ओर जिधर से मलका आतीथी आते दृष्टि पड़े मलका और दाया
उनको देखकर आड़मेंहोगई दोनोंकीदोनोंआपको छिपानेलगींअमीर
कीभीनिगाहइनदोनोंस्याहपोशोंपरजापड़ीऔर उनकीचालदेखकेमुक़-
बिलसे भारी आवाज़से कहा कि मुक़बिल देखनायेदोनोंस्याहपोशकौन
हैं कि जो इससमयमें बाहर निकले हैं अपनेघरवालों से छिपेहुये किस
ओर जातेहैं मलका ने अमीरकी आवाज़ पहिंचान करयहदोहा पढ़ा॥

दोहा॥

जेहिके हित योंजान यह निकलतहै घबराय। इस मारग से कौन विधि अनजाने निकलाय॥
जेहि के कारण बन गई सिड़ी बावरी हाय। पूछत है अनजान को यह दुखिया कोआय॥

मुक़बिल जो निकट आकरदेखाकि चन्द्रबदनी मृगनयनीमल्लिकामेह-
रनिगार है अमीर को वहींसे पुकारा और आशक्त होकर अलभ्यलाभ
पाकर चिल्ला उठा किआपयहां आकर पहिंचानें कि कौनहै और कहां
का मनोर्थ कियाहै किसके ढूंढ़नेकेलिये घरसेपावँ निकाला है किस२ को
यहढूंढ़ा नहींहै कि तेरीखबर मिले हम नंगेपावँ तुम्हारे कारण फिरते
हैं अमीर जो आकर देखा तो मारेखुशीके उछलपड़ा और ऐसे कृतकृत्य

हुये कि सातों द्वीपकी बादशाहत भूलगये और मलकाकाहाथ पकड़कर अपने खीमेकी ओर चले फिर अमरने आकर सलामकिया और शिर झुकाकर यहबातकी कि हक़ीक़तमें यहतो आपने बड़ा एहसान किया हम लोगों को इस समय मुखपर स्याहीसे बचाया हज़रतकी कशिश और स्नेह आपको ईंचलाई इनके बदौलत हमकोभी दर्शन होगये और मनो कामना पूर्णहुई लिखाभीहै कि ॥

चौपाई ॥

जापर जाकर सत्य सनेहू । सो तेहि मिले न कछु संदेहू ॥

मलकाने मुक़बिलसे पूछा कि यह कौनहै और क्यानामहै कहां रहताहै मुक़बिलने कहा कि खाजेअमर अय्यार यहीहै इस समयमें आप हीकी मक्कारीका चर्चा होरहाहै मलका उसको देखकरआश्चर्य किया और बारम्बार उसकी सूरत देखतीथी और यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

पूरबमें रबिहें उदय क्यों नहिं होत प्रकाश । कौन अहै यहि धाममें भौचक बिनाहुलाश ॥

अमीर जब अपने स्थानपर मलका मेहर निगारको लेकर पहुंचे मलकाको अपने गोदमें बैठाया और मदिराके प्यालेको भर २ कर अपने हाथसे पिलाया और मलका एक प्याला और बोतल लेकर अमीरको पिलाने लगी और अमर बैठाहुआ गायाकिया फिर अमीर दायाको बहुतसा धन संपति देकर प्रसन्न करदिया और एक किश्ती जवाहिरात की कृपाकी और बहुतसा पारितोषिक देनेकोकहा ॥

चौपाई ॥

निशिभरि रचो विविधि बिधि क्रीला । बरणि न जाय तासुकी लीला ॥
कीन्हेउं बहुविधि भोग बिलासा । पूजी हौस कीन्ह पुनि आसा ॥

प्रातःकाल होनेलगा अमीर अमर और मुक़बिलको साथलेकर मलकाको उसके महलतक पहुंचाआया औरदूरसे मिलापका वादाकिया ॥

दोहा ॥

मुखमिलाप काहे भला जो फिराक नहिं होय । नशा अधिक सुन्दरलमे जाय खुमार जोधोय ॥

जिससमय मलका दाया समेत महलमें पहुंचो कोई २ खाजे सरायजो मकानके पहरुआ जागतेथे दोनों स्याह पोशोंको देखकरचोर २ कहकर गुल मचाने लगे जबदिनहुआ कहीं चोरका नाम निशानभी न देखपड़ा नव्शावनाज़िरनेमलकामेहरअंगेजसेप्रार्थनाकी कि कौन किसके मनमेंबैठा है अच्छेके उरमेंबुरा और बुरेके भीतरअच्छा सबी क़ौम मेंहोताहै हाल यहहै कि कोई सर्दार शाहज़ादीके आसपास पहरा देनेको नियतहो कि वह होशियारीसे पहरा दियाकरे मलकाने यहबात पसन्दकी और बादशाहको इस समाचारकी इत्तिलादी बादशाहने अन्तर तेगज़न नामी पहलवान्को चार हज़ार सवारोंसे पहरा देनेको नियत किया

अब अमीरकी सुनिये कि आधीरातनक मलकामेहर निगार की आज्ञा देखी जब मलका न पहुंची और अंतर तेग़जन का नियतहोना पहरेके हेत सुना तो अति कष्टपाया ॥

दोहा ॥

नरगिस केरे फूलसम पलके मिलती नाहिं । ईश ढूंढ़ती कौन को कष्ट सहित मनमाहिं ॥

फिरअमीरनेकालेबस्त्रमांगेअमरअमीरका हालदेखकर रोनेलगाऔर हाथ बांधके पावोंपर गिरपड़ाऔरकहा कि ईश्वरकेहेतआजसेबाहर न निकलना चाहिये दिनको सम्हालना चाहिये सुनतेहैं कि अंतरतेग़जन को बादशाहने पहरा देनेकेलिये नियत कियाहै और उसको निगाहबानी को आज्ञादीहै कहीं अंतर तेग़जन देखपाये और तुमकोकुछक्लेश पहुंचाये तो प्रतिष्ठा भंगहोजायगीजो कुछआपने नाम व निशानपैदाकियाहै सबबरबादजायगाऔर बैरियोंकीबनआवैगी बनीबातबिगड़जायगी यहसुन यातोअमीररोतेथे याबेअख्तियारहँसपड़ेऔर कहनेलगे कि अमर क्या दीवाना होगयाहै जो मुझे मरने से डराताहै तू नहीं जानता कि मैं हुश्शाम अलकमके पुत्रका बधिकहूं उसदिनकोईश्वरकी कृपासे कबडरता हूं इन बकरियोंसे कब डरताहूं हां तुझको अपनाजी प्यारा है तोतूमेरे साथ न चल घरसे बाहर न निकल यह कहकर मुक़बिलको अपने साथ लिया और मलका मेहर निगार के महलकी ओर मनोर्थकिया अमरसे कब रहा जाताथा पीछे २ अमीरके साथ लगाहुआ चलागयाजबबुगदाद के निकटपहुंचे तो देखा कि अंतरका पहराहैऔर जागतेरहोहोशियार रहो कहताहुआ चला आताहै और उसकेसाथ हरकारेभी बहुत चले आतेहैं एक स्थानपर कुछ घने वृक्षथे अमीर साथियोंसमेतउनमें छिपगये जब पहरा निकलगया तोमहलके नीचे मुक़बिलकोखड़ाकरकेआपवृक्षपर चढ़गये और फिरभी कोठेपर अमर समेत पहुंचे तो देखा कि मलका बस्त्रोंसे सजीहुई बैठीहै और अमीरकी राह देखरहीहैमदिराकीबोतलें और प्याले आगेधरेहुयेहैं और काफूरके शमा जलतेहैं सब प्रकारसे सभा लैस कियेहुयेहैं एकतरफमें तरारखूबां मुक़बिलकी माशूका और दूसरेमें फितनाबानों दायाकी पुत्री अमरअय्यारकी आशना सजीबैठीहै सिवाय इन दोनोंकेऔर जो लौंड़ियांमलकाकी सहेलीऔर भेदजाननेवाली थीं गानेका साज लियेहुये आज्ञाकी राह देखरहीहैं औरमलकाउसी मार्ग की ओर आंखें कियेहुये देखरहीहै और अति आनन्दसे बैठीहै ॥

दोहा ॥

तीर यारके खोज का उरमेंगड़ा कराल । यहि कारण वह देखती नयनन किये विशाल ॥

दायानेकहा कि बलालूं आज साहबकिरांका आना कठिनहै चार सौ सवारों सहित अंतर पहरा देरहाहै और सबओर पुकारता है कि जागतेरहो होशियार रहो यह सुनके मलकाबोली कि ऐ दाया जो

साहब किरां सचमुच मेरा मित्र है तोयह क्या पहरा जो बादशाह की सबसेना पहरादेवे तोभी वह क्षणमात्र में आताहै मेरामन गवाही देरहाहै कि साहबकिरां थोड़ीदेर में पहुंचता है साहब किरां मलका की बातें सुनकर मनमें अति प्रसन्न हुये और ऊपरसे तलेउतरे मलिका ने दायासे कहा कि क्योंमैं न कहती थी देख वह साहबकिरां आये बेयहांके आयेकब उनको कलथी अन्तमें अमीर वहांपर पहुंचे ॥

दोहा ॥

मननिज आकर्षण समुझ असप्रचण्ड गतिजान । आपहि आय सनेहवश प्रीतम आयमकान ॥

चौपाई ॥

आये धाम प्रेमलखि मोरा । रचना ईश देखु कस जोरा ॥
कतहुं नहीं कतहूं निजधामा । अहे विलोकत जाकर नामा ॥

मलका ने उठकर साहबकिरां का हाथ पकड़कर तख्तपर बिठला लिया और दोनोंओरसे प्रेमकीबातें होनेलगीं मदिराकेप्यालेचलनेलगे मलका ने अपने हाथसे प्याले शराबके भर २ कर अमीर को पिलाना आरम्भ किया साहबकिरां मलका के गलेमें हाथ डालकर मदिरा पीने लगे होंठसे होंठ और छातीसे छातीमली केजोशमें मले फिर अमरगाने लगा तानेउड़ानेलगा उसके कामोंसे मलकाकाचित् अतिप्रसन्न हुआतो अमरकी ओर देखकर कहा कि इनयुवतियोंमेंसेकोईपसन्दहै किसीकी तूभीइच्छा करता है अमरबोला कि क्योंकर प्रार्थनाकरूं वह आपकी बड़ी सुसाहबहैं सबमहलवालियोंपर गालिबहैं मुझेकाहेको अंगीकारक-रेंगी मेरेनामपर गालियांदेंगी मलकाने सौगन्द देकर कहा कि इनमें से जो मंजूरहो उसकेगोदमें तूभी जाकर बैठ अमर कूदकर तरारखूबां की बगलमें जाबैठा और उसीस्नेह दृष्टिसे देखनेलगा वहअमरको गालियां देनेलगी और तिरछीभौंहें चढ़ाकर उठखड़ीहुईमलकाने कहा अमरवह क्या कहतीहै क्या कुछबुराभला कहतीहै अमरबोलाकिसकीरक्याकहै-गी लाड़ करतीहैऔरअपनेचोंचलेदिखातीहै इनकामनहीजानता होगा कैसा अच्छा जानपड़ा होगामलकाहँसते२लोट२ गईऔर कहनेलगीकि अमर सचकहोउसकोकौनसीबाततूभेपसन्दआईकिइसकेसाथस्नेह और मित्रता जमाई अमरबोला कि इसके पास गहना बहुतसाहै इसकासुझे लालच आयाहै इसबातपर फिर भी हँसपड़ी सबसभा लोटगई तरारखू-बां अप्रसन्न होनेलगीमलकाने कहाकितोतरारखूबां तूभीकितनी बेसमझ और नकचड़ी है कितनी आखिलखोरी और रूखीहै अरे अमर दूसरा अमीरहै चालाकों का गुरूहै इसकी माशूकासुझसे दर्जेऔर अंशोंमेंकम नहींइससेअच्छामनुष्यचातुरीमेंऔरनहींहै इसकेपश्चातअमीरने मलका से कौलकरार अपने दीनका ठीककियाऔरकुछबातेंसिखाईमलकानेसु सलमानी धर्मअंगीकारकिया औरअमीरसेकहाकि जबतकमैंजीतीरहूंग

अब अमीरकी सुनिये कि आधी
देखी जब मलका न पहुंची और
हेत सुना तो अति कष्टपाया ॥

नरगिस केरे फूलसम पलके मिलती न
फिरअमीरनेकालेवस्त्रमांगे
हाथ बांधके पावोंपर गिरपड़
निकलना चाहिये दिनको र
को बादशाहने पहरा देनेके
बानी को आज्ञादीहै कहीं
पहुंचाये तो प्रतिष्ठा भंगहो
याहै सबबरबादजायगा
यहसुन यातोअमीररोते
क्या दीवाना होगयाहै
हुआम अलकमके पुत्र
हूं इन बकरियोंसे क
साथ न चल घरसे व
लिया और मलका
कब रहा जाताथा
के निकटपहुंचे त
रहो कहताहु
आतेहैं एक
जब पहरा
चढ़गये
बस्त्रोंसे
और
लैस
फि

की आ

तीर यारके खोज का उ
दायानेकहा कि बस
सौ सवारों सहित अंतर पहरा
जागतेरहो होशियार रहो यह सु

ौर शाबाशीदेकर बख़्तप्रसन्न किया बख्तकनेबादशाह
कआज कारनबन्द को कि सासानियोंमें प्रतिष्ठित अधिक
ा आज्ञाकीजिये उसकीभी कारगुज़ारी औरपरिश्रमदेख
ाहने उसका कहनाअंगीकार किया और कारनको पह-
नियतकिया फिर बख्तकने कारनसे कहाकि ऐ पहलवान
बन्दके कुटुम्बमेंसे है बख़्त सुशीलता और सावधानीसेपह
ामनेआजाय पकड़लेना ख़बरदारजो देवभीहोतो उससे मत-
कहाकि तूख़ातिरजमारखतेरीमज़ीकेअनुसार कामकरूंगा
कसामनेभीप्रतिष्ठाप्राप्तकरूंगा जबदरबारउठाअमीरतिल-
आये और मिचस्नेहीभीसाथथे कारनदेवबन्दनेतीनसौपह-
दस्तेसे चुनकरशायंकालहीसेपहरादेने लगामलकानेजोकारन
नेकासमाचारपाया तोअतिव्याकुलहुई दायासेकहाकि आज
न्ह पहरादेनेपर नियत हुआ है अमीर अवश्य आनेकामनोर्थ
ऐसाहोता कि जो उनकोमनाकरआताकि आजतुमआनेका
करना इसमार्गमें भूलेसेभी न आना दायाबोलीकि अमीरऐसे
हीं हैं आजवह आप न आवेंगे उनकोभी तो अपनी प्रतिष्ठाका
अबअमीरकाहालसुनियेकिजबदोपहररातबीती कालेवस्त्रमांगे
पना शिरपीटा कि हमजा जाननहीं पड़ता है कि तुम्हैं क्याहो
करात भी धीर्यनहीं करसक्ते अमीर ने कहा कि ऐ अमर स्नेह
यसेक्या लागहै यहांतो नेहकीआगभड़कतीहै मेरेजानेका रोकने
ौनहोता हैकिकिसका कलेजाहूतनाहै अमरबोला कि कारनदेव
सापहलवान नहींहैकि समयपरबचायजायगाऔरआपपरधावान
अमीरने कहाकि जबमैं कारनसेडरातो किसीसेस्नेह और मित्रता
ा यहकहकर कालेवस्त्रधारणकिये और मलकाके कोठेका मार्ग
तम्बूकेबाहर निकलेमुक़बिलऔरअमर भी साथहुयेदेखाकिथोड़े २
ाशालेंजलायेहुये अलग २ पहरादेरहेहैं जबअमीरबाग़में पहुंचे तो
किकारनएककुरसीपरबैठाहुआहै और अपने साथियोंसे ख़बरदार
यारकी ताकीदकररहा है मुक़बिलने अमीरसेकहाकि आज्ञादी-
तो कमानकांधेसे उतारके एकतीर ऐसामारूं कि कारनकुरसी में
जाय जगहसे न उठनेपावे अमीरनेकहाकि मुझेकिसीके मारनेसे क्या
म है उसेबैठारहने दो वह प्रबन्धकरता है जबमेरा मार्ग रोकेगा तब
ं समझलूंगा उसी भांतिआगेआऊंगा यहकहकर छपते छपाते उस
दृष्टिसेअपनेको बचातेहुयेकोठेकी दीवारकेतलेपहुंचे मुक़बिलकोउसी
ांतितले खड़ाकरके कमन्द लगाकर अमरसहित कोठेपर चढ़गयेऔर
लकका को देखकर अतिआनन्दित होगये और दौड़कर गले में लपट
गयेतमामरात भोगविलासकरकेआनन्दमेंव्यतीतकी जब प्रातःकालहुआ

तबतक सेवकाई करूंगी आपकी आज्ञासे बाहर न हूंगी अमीरने कहा कि जबतक मैंभीतुमसे विवाह न करूंगा तबतक दूसरीस्त्री को आंखउठाकर न देखूंगा दोनोंसे यहठीक ठहराऔर इसीक़ौलकरारमेंप्रातःकाल का रंगदेखपड़ा अमीर मलकासे विदाहुये और अमर समेत उसीमार्ग से नीचे उतरे औरतीनों आदमी अपने डेरेकी ओरचले॥

दोहा॥

भोर भयो बीती रयन चन्द्रगयो तजि धाम। यहि सकारको सुख कलित सज्जनगये जेहिनाम

राहके बीचमें अन्तर का पहरा मिला उनलोगोंने चोर २ कहकर अमीर का पीछाकिया अमीर ने तलवार खींचकर दशबारहमनुष्यमारडाले और आप अच्छी भांतिसे अपने डेरेपर पहुंचे जबसूर्य निकले अन्तरने देखा कि सिवाय अपनेही आदमियों के और किसीकी लाश दृष्टि न पड़ी तोजाकर यहसमाचार बादशाहसे कहा और तमाम इतिहास रातका सुनाया जो उसदिन साहबकिरांदवीरमेंगयेबादशाहने कहा तुमनेकुछ औरभी सुनाहै कि बड़ा अद्भुत समाचार है मैंने अन्तर को महल की निगहबानी के लिये नियत कियाथा कारण यह उसकाहै कि मैनेचोरोंकागुलसुनकर यहप्रबन्धकियाथासोआज पिछली रातको दशबारा आदमी उसकेसाथ मारेगये और चोरों का पता न मिला यद्यपि आपको कष्टतो होगा परन्तुमहलकी निगहबानीकरतेतो बहुत अच्छाथा जिसमें चोरतो पकड़मिलेंतुम्हारेलोग अच्छापहरा देते हैं अमीरने कहा कि मैंआधीनहूं जो आज्ञाहोगी उसेकरूंगालोगोंने सुनकर कहा कि बादशाहने बहुतअच्छाप्रबन्धकिया जोसाहबकिरां को महलके पहरादेने को नियतकिया जो कोईसासानीहैतो अमीरकानाम सुनकर अभीसे उधरको पावँ न धरैगा और जो अरबीअथवातुर्कोंमेंसे है तौ भी मनोर्थ न करेगा किन्तुवक्तकनेअपनेमनमेंकहाकि यहवहीकहावत हुई कि (सैयां भयेकोतवाल अबडर काहेका) बादशाहनेबकरीकी रखवारीभेड़ियाकेआधीनकीक्याअच्छीबादशाहकी बुद्धिहै दरबारउठनेकेपीछेबादशाहसेविदाहोकरअमीरप्रसन्नहोकरअपनेडेरेमें आये और अच्छे २ सिपाहीऔर खासबरदार अपनेसामनेबुलवाये और सुक़्क़िलके साथदोआदमीकरकेपहरादेनेको आज्ञाकीऔर आपउसीरीतिसेपहर रातगये अमरछलीको भी साथलेकर मलकाके पासपहुंचे सारीरातमदिरापीते और गाना अमर कासुनतेरहे जबभोर हुआ लूकापड़नेलगा अमीर मलकासे विदाहोकर तिलशादकाम परगये अबतो किसीका डर न रहा तमाम रातखूब क्रीड़ाकी और दरबारकेसमयदरबारमेंगयेबादशाहसे प्रार्थनाकी कि सेवक आपकीआज्ञानुसार तमामरातपहरादिया परन्तु कोईचोरनदेखाबादशाहनेकहाकितुम्हारेडरसे कोई नहींआया किजोवहांकामनोर्थकरैगा तो माराजायगायहकहकरबादशाहनेअमीर

को खिलअतदी और शाबाशीदेकर बख़्तप्रसन्न किया बख्तकनेबादशाह से प्रार्थनाकीकिआज कारनबन्द को कि सासानियोंमें प्रतिष्ठित अधिक है पहरादेनेको आज्ञाकीजिये उसकीभी कारगुज़ारी औरपरिश्रमदेख लीजिये बादशाहने उसका कहनाअंगीकार किया और कारनको पहरादेनेके हेत नियतकिया फिर बख्तकने कारनसे कहाकि ऐ पहलवान तू तहिमूर्सदेवबन्दके कुटुम्बमेंसे है बख़्त सुशीलता और सावधानीसेपहरादेना जासामनेआजाय पकड़लेना ख़बरदारजो देवभीहोतो उससे मतडरना उसनेकहाकि तूख़ातिरजमारखतेरीमर्ज़ीकेअनुसार कामकरूंगा औरबादशाहकेसामनेभीप्रतिष्ठाप्राप्तकरूंगा जबदरबारछठाअमीरतिलशादकामपरआये और मिचस्नेहीभीसाथथे कारनदेवबन्दनेतीनसौपहलवानअपनेदस्तेसे चुनकरशायंकालहीसेपहरादेने लगामलकानेजोकारन के पहरादेनेकासमाचारपाया तोअतिव्याकुलहुई दायासेकहाकि आज कारनदेवबन्द पहरादेनेपर नियत हुआ है अमीर अवश्य आनेकामनोर्थ करेंगे कोईऐसाहोता कि जो उनकोमनाकरआताकि आजतुमआनेका मनोर्थ न करना इसमार्गमें भूलेसेभी न आना दायाबोलीकि अमीरऐसे अयान नहीं हैं आजवह आप न आवेंगे उनकोभी तो अपनी प्रतिष्ठाका ख़याल है अबअमीरकाहालसुनियेकिजबदोपहररातबीती कालेबख़्तमांगे अमरनेअपना शिरपीटा कि हमजा जाननहीं पड़ता है कि तुम्हैं क्याहोगया है एकरात भी धीर्यनहीं करसक्ते अमीर ने कहा कि ऐ अमर स्नेह और धीर्यसेक्या लागहै यहांतो नेहकीआगभड़कतीहै मेरेजानेका रोकनेवाला कौनहोताहैकिकिसका कलेजादूतनाहै अमरबोला कि कारनदेवबन्द ऐसापहलवान नहींहैकि समयपरबचायजायगाऔरआपपरधावान करैगाअमीरने कहाकि जबमैं कारनसेडरातो किसीसेस्नेह और मिचता करचुका यहकहकर कालेबख़धारणकिये और मलकाके कोठेका मार्ग लिया तम्बूकेबाहर निकलेसुक़बिलऔरअमर भी साथहुयेदेखाकियोड़े २ लोगमशालेंजलायेहुये अलग २ पहरादेरहेहैं जबअमीरबाग़में पहुंचे तो देखाकिकारनएककुरसीपरबैठाहुआहै और अपने साथियोंसे ख़बरदार होशियारकी ताकीदकररहा है सुक़बिलने अमीरसेकहाकि आज्ञादीजियेतो कमानकांधेसे उतारके एकतीर ऐसामारूं कि कारनकुरसी में मिलजाय जगहसे न उठनेपावे अमीरनेकहाकि मुझेकिसीके मारनेसे क्या काम है उसेबैठारहने दो वह प्रबन्धकरता है जबमेरा मार्ग रोकेगा तब उसे समझलूंगा उसी भांतिआगेआऊंगा यहकहकर छपते छपाते उसकी दृष्टिसेअपनेको बचातेहुयेकोठेकी दीवारकेतलेपहुंचे सुक़बिलकोउसी भांतितले खड़ाकरके कमन्द लगाकर अमरसहित कोठेपर चढ़गयेऔर मलका को देखकर अतिआनन्दित होगये और दौड़कर गले में लपट गयेतमामरात भोगविलासकरकेआनन्दमेंव्यतीतकी जब प्रातःकालहुआ

मलकासे विदाहोकर अपनेस्थानका मनोर्थकिया औरवहांसेचलेपहिले अमर उतरा जबबारी साहबकिरां के उतरने की आई कारन ने दौड़ करअमीर पर तलवार लगाई अमीर तो बचे परन्तु वहतलवार कमन्द पर पड़ी कमन्द के दोटुकड़े होगये यद्यपि साहबकिरां को सुक़बिल ने रोंका परन्तु अमीर का बोझा सुक़बिल से कब संभल सक्ता था साहबकिरां का शिर दीवार में टक्कड़खाकरफूटगया और थोड़ासा रुधिरभी निकला उससमय सुक़बिल और अमरने कई आदमीतीर और गोफनसे मारे कारनने जो देखा किहमज़ाहै पीछानकिया परन्तु उस कमन्दको बादशाहके सामने लेगया उसमें हमज़ाका नामखुदा हुआथा बादशाह देखकर अत्यन्त अप्रसन्नहुआ और उसीसमय बुज़ुरुज्ञमेहरको बुलवाया और कहा कि ख्वाजे हमज़ाने यह क्या चाल हमारे साथकी यही भलेमानसी का काम बिदित किया मेरी प्रतिष्ठा और शिष्टाचार का बदलादिया बुज़ुरुज्ञमेहरने कहाकि यह कमन्दजालीहै किसीने जालसाज़ी कीहै हमज़ाऐसानहींहै कि जिस्से ऐसी ख़राबचाल देखनेमेंआवे और शीघ्र महलकीओर उसका मन किसीभांतिसेजावे कारनबोला किहमज़ाका शिरभी दीवारमें लगकर फूटगयाहै और कुछरुधिरभी निकलाहै बुलाकर देखलीजिये बादशाहने अमीरको बुलाया अब अमीरका हाल सुनिये कि जबतम्बू में पहुंचा और अपने भेददारोंमें ठहरेचित्तमेंविचार किया कि अवश्य कारन मेरे घावका समाचार बादशाह से कहेगा तो अत्यन्त हलकापन और अधिकबुराईहोगी ईश्वरसेवरमांगनेलगाकिमेरे भेदको अयानों से छपा मेरी प्रतिष्ठा को बैरियों से बचा इतनापराक्रम तुझीमेंहै और यहबलमुझेतुझीनेकृपाकियामेहरीनियतबुरीनहीं है कुछ हराम मैंनेनहींकिया एककाफिरकोमुसल्मानकियाहैमेरेशिरके घावका चिह्न न रहै किसीपर मेराभेद नखुले अमीर यह आशीर्वाद मांगरहे थे कि एकाएकी एकझपकीसी आगई तोदेखाकि हज़रतइब्राहीम शिरपर हाथफेरकर कहतेहैं कि हमज़ा उठतेरेशिरका घावअच्छाहोगया किसी प्रकारकाचिह्नभी नहींरहाअमीरकीआंख जोखुलगईशिरकोटटोलकर देखें तोघावकाचिह्नभी नहींहै ख़बरहुईकिबादशाहनेयादकियाहैजल्दी हाज़िरहोनेकीआज्ञादीहै अमीर बादशाहके पासगया साथीमिलनेही पहुंचेबादशाहने साधारण जो अमीरका शिरदेखा तोघावक्यागुमड़ाभी शिरपर न मिला बादशाहने बुज़ुरुज्ञमेहरकी बात सचमानी औरकारन पर क्रोधकिया कि हमज़ापर तूने झूठक्योंलगाया एकभलेमनुष्यकी आबरूकी फिक्रक्योंकीयहकहउसे दर्बारसे निकलवादियाऔरअमीरको ख़िलअत कृपाकी कुछदिनकेपीछे बहिरामनेभीआरामहोनेका स्नानकिया और बादशाहकेपास फिरहाज़िर रहनेलगाएकदिन सरेदरबार बुज़ुरुज्ञमेहरनेप्रार्थनाकी किजबसेखुसरो हिंदुस्तानदेशका बासीलन्धौरसादान

शाह का पुत्र गद्दीपर बैठाहै तबसे हिंदुस्तानकाकर बादशाही खजानेमें नहीं पहुंचताहै अत्यन्तबलिष्टहै और बहुतहृष्टपुष्ट बनाहै और एकसहस्र सातसौ मनकीतबरेजीकी उसकीगदाहै और हजारों पहलवानों में एक पहलवान है और हाथीपर सवार होताहै अपना और गदा का चित्र बनवाकर खड़ा किया है किसी का घोड़ा उसके डरसे पास नहीं जाता और किसीभांति का घोड़ाअरबी होया तातारी या तुर्की या ईराकी उसकेआगे पावँनहीं बढ़ाताहै बादशाहने कहा कि इसका कुछ उपाय कियाचाहिये जो कि बुजुरुचमेहर बुद्धिमान और संसारीगति देखेहुये था शीत और उष्णसमय सब जाने हुये था अमीरके मस्तक से ताड़गया कि इनका चित्त महलमें किसी पर लगगया है और वहां मलकामेहर-निगारके सिवाय ऐसा कौनहै जो ऐसा कामकरे और चोरका पता न लगे तो उससे भी मालुम हुआ कि इसचालका आदमी सिवाय अमीर के और कहांहै मनमें शोचा कि इनकोतरुण अवस्थाका रंगदीखपड़ाहै और भलाबुरा कुछसमझता नहीं जोकोईबात देखनेमें आई औरकिसी दुष्टने खबरलगाई तो मुफ्तकी बदनामीहोगी और जोकि मैंसहायकहूं मेरेलियेभीबुराईहोगी इस कारण यहविचारके ऐसीसूरत निकालीकि इसलड़ाई पर सिवाय अमीरके कोईमनोर्थ न करेगा और कोईबीरान लेगा कुछदिनअमीरउधरजायेंकिइसनेहसेछूटजायें बुजुरुचमेहरनेप्रार्थना कीकिअमीरसेअच्छाऔरकोईनहींहै जबसबअमीरदर्बारमेंआयेबादशा-हसबकेआगेकहनेलगाकिखुसरोहिंदुस्तानदेशकाबासी लंधौरसादानशा हकेपुत्रको जो उसके अभिमानने मेरी आधीनता से फेर रक्खा है अपने मनमें समझताहैकि संसारमें मेरेसमान कोई बलिष्ठ और पराक्रमी नहीं है इस जगके बीचमें मेरी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है देखिये कि कौनउसकेसाथ लड़नेका बीरालेताहै कौनउसदुष्टको पराजय करताहै ॥

लन्धौर की शिकायतमें भाई सादानशाह को बिनयपत्र भेजना और उसके पराजय के हेत अमीरका मनोर्थ करना ॥

अबलेखनी इस इतिहास को इस भांति से वर्णन करती है कि अभी बादशाहलन्धौरकी सरकशीका बयान दरबार में तमाम न हुआथा कि हरकारे ने रच्चाकरो २ यह शब्द बादशाह नौशेरवां के कान तक पहुं-चाया बादशाह की आज्ञानुसार वक्तक दरबार से बाहर आया और सरंदीपके बादशाह के धावनके हाथसे बिनयपत्र ले हजूर के पासलाया और लिफाफाबन्दथासोखोलकर बिनयपत्र निकालाऔरदरबारकेबीच में भारी आवाजसेपढ़नेलगाकि आतशकदहनमरूद की सेवापहुंचकर सप्तद्वीप के बादशाहकी प्रकाशित बुद्धि पर प्रकाशहो कि मुझसे पहले सादानशाह मेराभाई गद्दीपर शोभितथा एकदिन आखेटखेलनेगया तो एक मृगके पीछे घोड़ाडाला सेनासे अलगहोगया तीनदिनतक फिरता

रहा औरअत्यंतप्यासाहुआतोपानीकोढूंढ़ताहुआ एकतालाबपरपहुंचा देखा कि एक स्त्री बड़े क़दकी तीन मश्क कोंपानीकी भरीहुई उठाया चा-हतीहै औरकिसीओरकोलेजायाचाहतीहैसादानशाहनेउससेकहा कि मैं तीन दिनका प्यासाहूं थोड़ापानी मुझे पिला मेरे कलेजेकी गर्मी मिटा उसने उनमश्कोंकापानी नाडाला और ताज़ापानीभरनाआरंभ किया सादानशाहइसबातसेउसपरअत्यंतक्रोधकियाऔरअप्रसन्न होकर अपने मनमें कहा कि पानी पीलूं तो जैसा इसने मेरे मांगनेसे पानी मश-कोंका बहादियाहै वैसा मैंभी इसका रुधिर बहाऊंगाफिरउसस्त्रीने एक पात्रमें भरकर पानीसादानशाहके आगेरक्खा जबवह पानी पीनेलगा तो एक दो चारघूंट पीनेकेपीछे हाथ पकड़लिया और पूछनेलगी कि तू कौनहै और तेरा क्या नामहै तू किसदेशमें रहताहै और तेरा कहां स्थानहै सादानशाहनेकहा कि अरी बदबख्त पानीतो मुझे प्यासभर पीलेनेदे फिरतू पूछना परन्तु उसने न माना अपने पूछनेसे न फिरी न उसकी बातसुनी बादशाह सादानशाहने दोचारघूंटपिये जबप्यास बुझी तो तलवार निकालकर उसके मारनेका मनोर्थकिया वह स्त्री बोली ऐ मनुष्यमैंने तेरा क्या अपराधकिया है कि तू मुझेमारता है सादानशाहने कहा कि पहिले मैं तुझसे कह चुकाथा कि तीनदिनका प्यासाहूं तूने तीन मश्कें पानीकी भरीहुई नादीं और मुझे खालीकरके देखाया और दुबारा पानी भरनेमें और देर करने लगी इतनी देरमुझे और प्यासा रक्खा जब पानीदिया और जबमैं पीनेलगा तोतूसांसभरकेपीने न दिया दो चार घूंटकेपीछे मुझे छेड़ना आरम्भकिया कि तू कौन है और कहांसे आयाहै कि ऐसा प्यासका सतायाहै यहसुन उस स्त्री ने हंसकर कहा कि नेकी बरबाद गुनह लाजिम पहिलेतू अपना नाम व निशान बतलापीछेसेइसकाउत्तर दूंगी और तुझेढाढ़सदूंगी सादानशाहने कहा कि इस देशकामैंबादशाहहूं सादानशाहमेरानामहै आखेटखेलने आया था मार्ग को भूलगयाहूं उसने कहा कि आपकी बुद्विपर धिक्कारहै जो बारह सहस्रद्वीपोंका बादशाहहोकरबुद्विसेखालीहै समझसेतूकोशोंदूरहै सादानशाहने कहा कि इसपर कोई वृत्तांतभीहै या केवलयोहीं मूढ़ बनारहीहै उसने कहा कि सुन जिससमय तूने मुझसेकहा कि मैं तीन दिनका प्यासाहूं दूरसे पानी ढूंढ़ता आयाहूं मैं उसी समय सुनतेही मश्कोंका पानी फेंका और दुबारा पानी भरकरदिया भी तो सांस भरकर पीने न दिया इस निमित्तसे कि तू कईदिनका प्यासाथा लोभ के मारे पानी बहुत पीजाता मैं शोची कि जोएकाएकीइसने पानी पिया और इसके कलेजेमें पानीलगा तो सहजहीमें मरजायगा जो कोई देख लेगा तो इसके अजाबमें मुझे पकड़ेगा जान छोड़ाना कठिन होजायगा आबरू पानी होजायगी सादानशाह यह बातसुनकर उसकीबुद्विमानी

परदीवाना होगया और उसके क़ायदे और होशियारी पर अचेत हो-
गया और पूछा कि तू कहां रहतीहै तेरा कोई मालिकहै या अकेलीहै
उसने कहा कि सिवाय ईश्वरकेमेराकोई पालकनहींहै अपनेहाथ पांवके
श्रमसे खातीहूं आखिरमेंमेराकोईखबरगीरनहींहैसादानशाहने उसको
नगरमें लाकर उससे बिवाहकिया कुछदिनके पीछे वह स्त्री गर्भवती
हुई और सादानशाहमरगया गद्दीपरमैंबैठा गर्भकेदिनबीतनेकेपीछे उस
स्त्रीकेलड़काउत्पन्नहुआउसलड़केका शरीरपांचगजकाथाकुछदिनकेपीछे
वहस्त्रीभीमरगईमैंनेनाम उसकालम्धौररक्खा और उसके पालनेमेंप्रवृत्त
रहा और जंटिनिउसकेदूध पिलानेकेहेतनियतकी और दूधपिलानेवाली
दाइयांवखिलानेवालीस्त्रियांउसकेखिलानेको नौकररक्खीं और जिसदिन
लम्धौर उत्पन्नहुआथा उसीदिन मेरेयहांभी लड़काउत्पन्नहुआउसका
नाममैंने जयपूररक्खाऔरदोनोंकोपालनेलगा जबदोनोंपांच २ वर्षकेहुये
तबएकदिन खलानेवालीने अदब सिखानेकेहेतएकतमाचा लम्धौरकेमारा
कि गला उसका सूजगया लंधौरने उस खेलानेवाली को उठाकर धरती
पर पटकदिया कि वह मरगई और जोलोगउसकेदेखनेवालेऔर नि-
गहबान थे डराकर भागे और मेरेनिकट आनपहुंचे मुझसे सब समा-
चार वर्णनकिया मैंने आज्ञादी कि लंधौरको मस्तहाथी के नीचेडालदो
और अभी घरसे बाहर निकालदो मेरी आज्ञानुसार हाथीआया ल-
म्धौरको उसकेआगे डालदियाहाथीजो सूंडसेउठानेलगा कि लंधौरने
एक झिटका ऐसामारा कि सूंडउसकी जड़सेउखड़गई वहचीखमारकर
भागाऔरपीलखानेमें जाकरएकखम्भाउखेड़करसबहाथीमारडाले और
तमामनगरमेंहलचलपड़गया फिरमैंनेआज्ञादी कि लंधौर को पकड़लावो
बंदीखानेमें बंदकरो किसी और ने तापराक्रम न किया किंतुएकमंची ने
कहा कि यह मेरा कामहै मैं लंधौर को पकड़ के आपके पास पहुंचाता
हूं यह कहकर एकप्याला हलवेका लंधौरकेआगेरखदिया जबवहहलुवा
खाचुका तोउसको मार्गपर लगाया और मेरेपासलाया लंधौरने मुझको
देखकर मंचीसे पूछा कि यह कौनहै और क्यानामहै उसने कहाकिये
आपके चचासाहब यहांके बादशाहहैं यह मुल्क इन्हींकाहै लंधौरबोला
कि इससे प्रथम कौन बादशाहथा मंचीने प्रार्थनाकी कि आपका बापथा
लंधौरने कहा कि तू गद्दीका कौनहै मैंतो मालिकहूं और यह मनुष्य
राज्यकरै और मैं बेकार बैठारहूं मंचीने प्रार्थनाकी कि यहबात सत्यहै
आपमालिकबादशाहहैं यहदेशआपहीकाहै यहसुन कहनेलगा कि इसे
गद्दीपरसे उतारदो मैं गद्दीपर बैठूंगा आजहीसे राज्य करूंगा मंची
ने मुझसे कहा कि भलाई इसीमेंहै कि आप गद्दीपरसे अलगहों और
इसे बैठने दीजिये मैं गद्दीपरसे उतरा और उसपर लंधौर बैठा एक
घड़ीके पीछेलंधौर ने मंचीसे खानामांगा मंचीने बेहोशी की दवाउसमें

मिलाकर उसके सामने खानालायावह बोला कि शहपालवजैपूरको भी बुलालो कि वहभी हमारे साथखावें खाने में मेरा साथदें कदाचित् इसमें तुमनेकुछ मिलादियाहो मेरीजानलेनेकामनोरथ कियाहोलाचार होकर मैंने जैपूरको बुलवाया उसने उसके साथ खानाखाया फिरतीनों थोड़ीदेरकेपीछे अचेतहोगये एक घड़ीकेपीछे मंचीनेमुझे और जैपूर को एक तेल सुंघाया और दोनोंकोफिरचेतमेलाया मैंनेआज्ञादी कि लंधौर को शिरसे पांवतक लोहेमें जकड़दो और औरंग व गोरंग जो दोनों लखनौटीके शाहजादेहैं उनकोसौंपदोमंचीनेमेरीआज्ञापातेही वैसाही किया औरउन दोनों शाहजादोंको बुलवाया और बादशाहके हुक्मसे खबरदी उन्होंनेशीघही उसे लेजाकर लखनौटी कुवांमेडालदिया और उसकामुंह बंदकरदिया पच्चीसबर्षतक वहउसीकूयेंमें बंदरहा औरउमर व्यतीतकिया किया जोकि लंधौरकीमाता सीसपैगम्बरके कुटुम्बमेंसे थी एकदिन औरंग और गोरंगकी बहनने स्वप्नमेंदेखा कि आकाश से एक तख्त पृथ्वीपर उतरा और उसपर हजरतसीसपैगम्बरबैठेहैं लंधौरका तमामवृत्तांतऔरपराक्रमबताके कहतेहैं कि मैंने तेरालंधौरकाजोड़ाकिया उससे तेरे एकपुत्र उत्पन्नहोगा वह बड़ाप्रतापीहोगावहजोस्वप्नसे चौंकी तो एक प्यालामें खानारखकरउस कुयेंपरपहुंचो निगहबानोंने पूछा कि तू कौनहै और क्यालाईहै और इससमय कहांसे आईहै उस ने कहा कि लंधौरके निमित्त खानालाईहूं और एक प्रतिष्ठित प्रतापीका शुभ समाचार सुनाने आईहूं वह चुपरहे और कुछ न बोले वहकुयें मे उतरगई और लंधौरको खानाखिलाया और लोहेकी बंद सोहनसे काटकर अपना स्वप्नसुनायाऔर घरकोचलीआई लंधौरनेजो बहुतदिन के पीछेसुखपाया सांकड़ोंको अपने सिरहानेरखकर निभयपड़के सोरहा निगाहबानोंने कहा कि लंधौरकी जीभ तालूमें तो किसोदम न लगती थी आज क्याहै जो उसके चिल्लानेका शब्द कानतक नहीं पहुंचता है यह क्या मामलाहै एकने जाकर देखा कि लंधौर चैनसे पांव फैलाये अचेत सोरहाहै और जिन सांकड़ोंमें जकड़ा हुआथा वह टूटीहुई सिरहाने पड़ीहैं वह आराम कररहाहै उसीसमय निगहबानों में खलबल पड़ी शीघ औरंग गोरंगको खबरदी दोनोंशाहजादेदौड़ेआयेऔरबहुत से पहलवान अपने साथलाये देखातो सचमुच लंधौर छूटाहुआ पड़ा सोरहाहै इच्छा की कि इसे सोतेही फिर सांकड़ोंसे जकड़देवें परंतु लंधौरने जागकर दोनों शाहजादोंको उठाकर देमारा और सबसमाचार वर्णनकिया कि तुम्हारी बहन आईथी मुझेखानाखिलागईहै और मुझसे विवाहका क़ौल क़रार करगईहै और सोहनसे सांकड़ोंको काटकर मुझे छुड़ागई है इसकारण मैंने तुम्हें जीदानदिया नहींतोतुम दोनोंकी जानजाती फिर उसके स्वप्नका समाचार सब वर्णनकिया दोनों

शाहजादे इस समाचार को जानकर मन में प्रसन्नहुये और लन्धौर को उस अँधेरे कुयें से निकालकर तख्तपर बैठाया और गद्दीपर बैठने की सब सामग्री इकट्ठाकी लन्धौर ने अपने निमित्त एकगदा सातसौ मनका बनवायाऔरउसगदाकोहाथमेंलेकर एक मस्तहाथीपरसवारहुवा और सरंद्वीपकामार्गपूछनेलगा औरंग कुरंगनेहाथबांधकरकहाकि कृपासागर कुछ दिन रहजाइये सेनाजोड़के सरंद्वीपकी राहलीजिये उसको यहबात अच्छी जानपड़ीऔर सेनाबटोरनेपरकमरबांधी जबएकफौजअच्छीचुनी हुई बनगई तोबड़ीधूम धामसे सरंद्वीपकी ओर कूचकियाकुछदिन कोपीछे समुद्रके किनारे पर पहुंचा वहांसे जहाजों पर सवार होकर सरंद्वीप के फाटक पर पहुंचा हरकारोंनेयह समाचार मुझे पहुंचाया मैंने जयपुरको दोलाख सवारकी भीड़से उसके मुक़ाबिले को भेजा और कईसौ पहलवान उसकेसाथ किये दोनोंओरकी सेनारीतसमेत जमाईगईं और जयपुर और लन्धौरका सामना हुवा जयपुरने देखा कि लन्धौर जबगदा मारता है तब दश २ बीस २ पहलवान पिसकर मरजाते हैं शरीर के फीहे फीहे अलग होजाते हैं तो भागकर गढ़ीमेंपहुंचा औरफाटक बन्द करलियाऔर किलापरसेग लालन्धौरकीसेनापरबर्षाने लगा लन्धौर ने किलाके दरवाजे पर पहुंचकर एक गदा फाटक में ऐसी मारी कि वह दरवाजा टुकड़े २ होगयाऔर क़िलादारजो फाटकपरथे उन सबकोमारडाला और दरवाजेके टूटतेही मौतकी हाट गर्मकी और क़िलेमें रुधिर की नदी बहाई मुझसे कुछ उपाय बन न आया फिर मैंने उसके सामने आकर जीदान मांगा लन्धौरने कहाकि किसबात परतू जीदान मांगता है किस मनोरथ पर मुझसे प्रार्थना करताहैमैंने कहाकि यह बादशाहत नौशेरवां जो सप्तद्वीप का बादशाह है उसके आधीन है जिसको वह आज्ञा देगा वह इसगद्दीपर बैठेगा आपकुछ दिन धीर्य धरें उत्तर मेरे विनयपत्र का आलेनेदें उसने उत्तर दिया कि जब तेरी फिरयाद नामे का उत्तरआवे और वहकुछ मुझे लिखवा भेजवावे तबतक तू एकद्वीप में बैठ मैं तुझे औरनौशेरवांको क्या समझता हूंक्या मैं तेरी तरह निर्बलहूं कितेरी या उसकी आधीनताकरूं अबमैंकिसीसे नहीं डरता मैं लाचार होकर जानबचा नगरसे बाहर निकला लन्धौर गद्दीपर बैठा जो किसुझे आपका खबरकरना उचितथी इसनिमित्त हुजूरसे प्रार्थनाकीआगेआप मालिक हैं जो लन्धौर को आप पराजय न करेंगे तो वह मुझेबहुतसतावेगा और अभीतो मेरे बालबच्चे मरनेसे बचचुकेहैं मैंआपसेक्या २ बेअदबी और अनुचित बातें न कहूंगा बादशाह ने इसहालको सुनकर बुजुरुचमेहर को अलग लेजाकर सलाह पूछीकि उपाधि के दूर करने का क्या उपायहै जो कोई उसकी बराबर न हुवा तोअत्यन्त छोटाईकीबातहोगी बुजुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि पहले गुस्तहम को सरंद्वीप की ओर

जानेकी आज्ञा दीजिये उसके पीछे दरबारके बीच में यह कहिये कि जो कोई लन्धौरको पकड़लावेगा मेहरनिगारकेसाथउसका बिवाहकरूंगा और वह बहुतसा देश व मालपावेगा सासानियों में से तो ऐसा पराक्रमी दृष्टिनहीं आता है कि लन्धौर का शिरलाने की हामी भरै परंतु हमजा नाम व निशान पर मरता है यक़ीन है कि वह अंगीकार करैगा और यह मंसूबा बहुत अच्छा है कि जो हमजा मारागया तो आपबदनामी से बचेंगे और जो लन्धौरको जीतलियातो हिन्दुस्तान का सबदेश उसी के आधीन होजायगा बादशाह अपने मनमें बहुत प्रसन्नहुआ और बुजुर्गमेहरको बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की और उसी समय गुस्तहम को जो बहरामको घायलकरके क़ाबुलमें भागकर बादशाह के डरसे रहाथा सांड़िनी सवार के हाथ उसको परवानाभेजाकि चालीससहस्र सवारजो तेरेसाथ हैं उन समेत सरंदीपपर जा लंधौर का शिर काटकर हुजूर में हाजिर ला तेरा अपराध क्षमाकियाजायगा और आगे तेरीख़ातिरदारी की जायगी और भारीइनाम भी पावेगा दूसरेदिन जब कि सब अमीर उमराव दरबारमें आये और अमीरभी आकर रुस्तमके स्थानपर बैठा बादशाह ने कहा कि ऐ पहलवानों नामदार समय के बादशाह हिंदुस्तान ने मेरेसाथ बैरकरने पर कमरबांधी है और शर्कशी करनेपर उतारू हुआहै जोकोई उसका शिर काटलावेगा मैं उसको अपना लड़का बनाऊंगा और मलकामेहरनिगार के साथ उसका बिवाहकरूंगा यह सुन जितने पहलवान सासानी आदिथे किसीने दमनमारा अपने २ मनमें बिचारनेलगे कि प्रथमतो समुद्रसे जीतेजाना कठिन काम है दूसरे ऐसे बलिष्टसे सामना करके किसको मजालहै कि बर आये जानबूझकर कौन अपने को मृत्युवश करै यह बात बुद्धिसे दूरहै परंतु साहबकिरांने दंगल से उठकर बादशाहको सलामकिया ॥

दोहा ॥

उमरतुम्हारी अधिकहो जबलगसूरज चन्द । हम तुमसे फल पावहीं तुम दुखहत सुखकन्द ॥

और प्रार्थना की किइस आधीनको जो आज्ञा दीजिये तो खुसरो हिंदुस्तान के बादशाहको जीताहुआ पकड़लावे मुझे केवलवहां पहुंचने की देरहै आपके पासतकबेड़ीपहिनाकरलाऊंऔर जोमारागयातो आप पर से न्यवछावर हुआ यहसुन बादशाहने तख्तसे उठकर उसकोगलेलगाया और कहा कि ऐ अब्दुलअलांदूरसे अधिक तुमसे मुझेआशाहै ॥

चौपाई ॥

राजस छत्र सदा बहुभांती । रहे कृपाल तोर सुखथाती ॥
प्रजासुखी हे बिबिधि प्रकारा । असप्रतापहे साथतुम्हारा ॥

बुरीदृष्टि दूररहै बादशाह ने कहा कि जो साल अच्छा होताहै वह बसंतहीसे दीखपड़ताहै जोयहहिम्मत तुममें नहोतीतो इस अधिकारपर

क्योंकर पहुंचते और क्यों जवांमर्दीकागुर्दाभरतेफिरउसीदम अमीरको खिलअत कृपाकी और तीसजवान जिनपरहजार२ मनुष्य सवारहोंबननेकी आज्ञादी अमीर विदाहोकर अपने डेरेमें आयाऔर कूच कासामान करनेलगा और मनको धीर्य्य देनेलगा और सेनाको आज्ञादी कि तुमलोग आजही कूच करजावो बसरेमें जाकर हमारी राहदेखो और अमरको बुलाकर कहा कि ऐअमर जो चलते२ एकबर दृष्टिसे मलकाको देखलेते तो डाह न रहता अमरनेकहा कि एकपत्र बुजुरुज्जमेहरको लिखिये यहबात उनके उपायसे होसक्तीहै वहतुम्हारी भलाईके चाहनेवालेहैं और सहाय करतहैं अमीरने अपनेहाथसे एकरुक्का बुजुरुज्जमेहरका लिखा अमरने खाजेके पासलेजाकरवहपत्र खाजेकोदिया खाजेनेउस रुक्केकोपढ़कर अमरकोअपनसाथलिया और बादशाहसेजाकरबयानकिया कि यहांसे हिंदुस्तानतक हमजा आपकादामाद जाहिरहोगापरन्तु यह कैसी दामादी कि सर्बतभीनपिलायागया और हमजा आपकी आज्ञानुसार जीन्यछावर करनेको चला नौशेरवांने हँसकर कहा कि क्याहै हमजाको बुलवावो पानीवालेसेकहकरशर्बतबनवाओ खाजेने बादशाहकी आज्ञानुसार शीघ्र हमजाका बुलवाया और कन्द व गुलाबकाशर्बत बनवाया अमीर शीघ्रही बादशाहकेपासआयेबादशाहनेअमीरकोप्यार समेत अपनेपास बैठाया और शर्बत मांगा खाजेबुजुरुज्जमेहर ने प्रार्थना की कि दामादीका शर्बत महलमें पिलवाना उचितहै और गिलोरियां पानकी भी वहीं खाना उचितहै मर्दानेमें इसबातका होना उचित नहीं है जनाब बेगम साहब के पीछे यहबात करना उचित नहीं नौशेरवांनेअंगीकार किया और खाजेबुजुरुज्जमेहरसे कहा कि तुमहमजाको महलमें लेजावो और शर्बत आदि पिलवाओमेहरनिगारकी माता अपने हाथसे हमजा को शर्बत पिलावेंगीऔर समझादेना कि जितनी रसमें विवाहकीहैं सबकीजावें कि शर्बत पिलानेके पीछे हमजाका शिष्टाचार आदर व्यवहारकरें औरकहें कि मेहरनिगार तुम्हारीधरोहर है और हमारी इज्जत तुम्हारीही इज्जतहै चाहियेकिजल्दीबादशाहकेबैरीको मारकर आवो याउस दुष्टको जीता पकड़ लाओ और मेहरनिगार से विवाह करो हमारे मनको आराम चैनदो खाजे बुजुरुज्जमेहर अमीरसे पहिले घरमें गये और बादशाहने जो कुछकहाथा मलिक मेहरअंगेज से कहा वख्तक यहखबर सुनकर अपने मनमें शोचा कि जिससमय हमजा महल में गया उससमय अवश्य मेहरनिगार को यहदेखेगा इससे तूभी चल कि उसकी इच्छामनहीमेंरहै मलकाकादेखना जिसमें नसीब न हो झटपट खच्चरपर सवार होकर चला और दरवाजेपर पहुंचा अमीर ने वख्तकको देखकर अमरसे कहा कि इससमय यह उपाधि टालाचाहिये दोसौ रुपया तुझेदूंगा और बहुतराजी करूंगा अमरने मक्कारी भाषा

में अमीरसे कहा कि आपमकान को जावें वहां आनन्दकरें मैं इस खल का वहांतक न जानेदूंगा खड़े २ अभी समझालूंगा उयोंहीं अमीर आगे बढ़े अमरने बख्तकके घोड़ेकी बाग पकड़ली और कहाकिखाजे बख्तक हम हिंदुस्तान को जातेहैं देखिये वहींकी मिट्टीहै याअच्छी भांतिसे लोट आवें इससे जो आपने तमस्सुक पांचसौ रुपयेका लिखदियाहै सो अब कृपाकरके रुपया देदीजिये तो राहका खर्चही होजावे और आपके ऊपरसे कर्जभीउतरजावेबख्तकबोलाकि तूभीबड़ामूर्खहैतकाजाकरने का यहकौन मौकाहै मैं हमजाके साथ कामको जाताहूं तेरेमालिक का साथी हुआहूं और तूमेरामार्ग रोकता है कि मेरेरुपये देदा तू जा मेरेनामसे अदालतशाहीं में नालिशकर जो मुझपर रुपये निकलेंगे तो लेंदूंगा तूमुझे मार्गमें क्यों रोकता है अमरने कहा कि साहब यहता उससे कहिये जो आपसे कमजोर हो जबमैं न लेसकूं तबतो अदालतमें नालिश करूं खबरदार आगेपांव न धरियेगा पहिलेमेरे रुपये मँगवादीजिये फिरजहां मनमें आवे जाइयेगा बख्तकने अप्रसन्न होकर अपनेसेवकोंसे कहा कि अमरको हटादो यहबात सुनकर अमरको बड़ा क्रोध हुआ और कूदकर खच्चरपर बख्तककेपीछेजाबैठाऔर कटारनिकालकर बख्तकको पीठपर धरा और कहा कि दुष्टका मृत्यु आई है तुझे अबमैं मार डालूं आंतें यहीं ढेरकरदूं बख्तक यह सुनकर कांपगया और हाथ जोड़ने लगा और विनती करनेलगा परन्तु अमरने एक दस्ताउसके ऐसा मारा कि बख्तकका सिरफूटगया रुधिर बहनेलगा बख्तक उसी भांतिसे लोहू में डूबाहुआ बादशाह के सामनेगया और पगड़ी देमारी कि अबसेबक का यहदर्जाहुआ कि छोटा मझार बजारके बीचमें मेरी प्रतिष्ठा भंगकरै नौशेरवांको भी बुरा मालूमहुआ औरअमरकोबुलवाया जब अमर आया पूछा कि बख्तकने तेरा क्या बिगाड़ाथा कि तूने उसके साथ ऐसाकिया अमीरने प्रार्थनाकी कि कृपानिधान आप न्याई हैं न्यायकरें जिसका अपराधहो उसेदण्डदें या क्षमाकरें इसका पांचसौ रुपये का तमस्सुक मोहरी सेवकके पासहै यहमेरेरुपयोंकेदेनेको इनकार करताहै गुलामने इससे कहा कि अबमैंहिंदुस्तानको जाताहूं जीतारहने के पीछे कब आन हो अपना तमस्सुक लीजिये मेरा रुपयादीजियेयहसुन करयह क्रोधवन्त हुआ और अपने सेवकोंसे कहाकि इसकोमारकरनिकालदो हमारे सामनेसे दूरकरो वे मुझेमारनेकोदौड़े और सैकड़ोंबातें अनुचित कहीं हुजूर इसका न्याय कीजिये कि मैंबाजारकेबीचमारखाऊं और पियादोंकी दौरदबक उठाऊं इसका न्यायकीजियेकिकिसकाअपराधहै और किसने झगड़ाकी जड़डाली यहकहकर तमस्सुकभीजेबसेनिकालकरडालदियाऔर न्यायमांगनेलगाबादशाहनेबख्तकसेकहाकिइस मुकद्दमे में तेरा अपराध है सरासर तेरी जबरदस्तीहीजान पड़तीहै और

न्यायके निमित्त हमारेपास दौड़ताहैजा इसतमस्सुक के रुपये अमरको दे नहीं तो अदालत तुझे अपराधी ठहरावेगी जो रुपये न देगा तो बक्त से कष्टपावेगा बख्तकने उसी दमखजानची सेसब रुपया लिया और अमर के हवाले किया और आप रोता अपने घरगया अमर मकानकी ओर चला अमरतो इसबखेडेमेंथा अमीर और मुक़ाबिल महलमें पहुंचे मलका मेहरअंगेज ने अमीर को बड़े आदर व्याहार से बादशाह के बैठका पर बैठाया और मंगलाचारकी सामग्री तुरंतही मँगाई गई और आपमेहर-निगार को एक कोठरी में लेजाकर बैठी मंगलाचार करने की सभा जमी शर्बत पीनेके शब्द बन्दीजनगानेलगे गुलशोरमचनेलगा शर्बतखानेके हेत मलकाने आज्ञा की अमर जो डेउठी पर पहुंचा चाहा कि भीतर को जावे दर्बानी तो पहिंचानता न था उसने लकड़ी उठाकर राका कि तू कौन है जो महल में चला जाता है बेपूछे हुये मकान में घुसता हुआ चलाजाताहै अमर दोनों आंखों परहाथ रखकर लेटगया और गुलमचा-कर कहनेलगा कि दरवानी तेराबुराहो तूने मेरी आंखेंफोड़डालीं यह हाल देखकर सिपाही जा दर्वाजे पर था घबरागया और उलटी खुशा-मद करने लगा मलका मेहर अंगेज ने गुलशोर सुनकर कहा कि देखो यह हल्लाकैसा होताहै कौन दर्वाजे पर चिल्ला रहाहै अमीर अमर का बोल सुनकर दौड़ अमीर के दौड़ने के साथहीख्वाजेबजुरुक्षमेहरभी दौड़े देखेंतो अमर आखें पकड़े हुये लोटरहा है अमीर ने कहा कि अमर आखें खोल मुंहसे कुछ बोल जो तेरी आंखो मेंचोट आईहोतोख्वाजेतेरी दवाकरें पर अमर आंखोको खोलतानथा औरहाय२गईआंखगई आंख के सिवाय कुछ बोलता न था अंतको अमीरने जबरदस्तीसे उसकीआंख को उघार कर देखातो आंखें साफ़तारासीचमकतीहैंकुछधक्कातो लगाहो न था अमीर ने कहा कि अमर यह क्या था कि जोहमको और ख्वाजे को बेकाम बैठेबिठाये उठाया और मलका साहबाको भी घबरायाअमर कहने लगा कि आपके सिरकी क़समहै इसदर्बानीने लक़ड़ी मेरेमारने के हेत उठाईथी जो लकड़ी मारतातो मेरी आंखोंमें लगती तो मेरी आंख फोड़ईडालीथीयहसुनअमीरऔरख्वाजेहँसपड़ेऔरअमरकोलेकरमहल में गये मलकामेहरअंगेज ने जो यहहाल सुना वह भी बे अख्तियार हँसने लगी जब अमीर मसनदपर बैठे और बादशाहों की भांति शर्बत पिलाया गया और मंगलाचारकी धूममची और मलकामेहरनिगारकी सहेलियों में दिल्लगीहोनेलगी औरमलकामेहरअंगेज की अज्ञानुसार प्रजालोगों को इनआम दिया गया मलका मेहरअंगेज ने कहा कि साहब किरां मेहरनिगार आपकी धरोहर है और जिससमय तुम विजय प्राप्त करके हिंदुस्तान से फिरोगे उस समय तुम्हारे साथ विवाह करूंगी आप का मनोरथ पूर्ण हो जायगा अमर ने बुजुरुक्षमेहर की ओरदेख कर कहा

कि वाह २ साहब यहतो बहुत अच्छा न्याय आप ने किया और बहुत अच्छीरीतिहैविदितहैकि हमतो बादशाहकी आज्ञानुसार हिंदुस्तान में शिरबेचनेके निमित्त जावें और आपमेहरनिगारकाएकदृष्टिभीनदिखायें जो ईश्वर ने हमका जीता फेरा और मनार्थ समेत यहांतक पहुंचाया तो हमनहीं जानत हैं कि आप किसके साथ हमजा का विवाह कर देंगे किसको इसके गले मढ़देंगे हमें क्या मालूम कि बादशाह की बेटी गारी है या काली है दुबली है अथवा मोटी है हम इस समय देख ता रक्खें जिसमें पीछे का खराबो में न पड़ें और हमें बादशाहके चरण की क़सम है कि जबतक हम मेहरनिगारको देख न लेंग कभी पांव इसमकानसे बाहरन धरेंगेयहसुन मेहरअंगेजने हँसकर अमर की बातों पर कहा कि कहीं मर्दों का दिखना उचित्त है यह रीति कहीं नहीं है कि लड़की को देखेंहां स्त्रियाँ मंगनीविवाहके हत आतीहैं वही देख जातीहैं अमरने प्रार्थनाकी कि हुजूर सत्य कहती हैं परन्तु मेरी यहां कौन माई मौसी बैठी है कि महल में आये और मलका साहब को देखजावे आपहो हमलोगोंकीबड़ीबूढ़ीहैं जा उचित होगा उसे करेंगी मलकाने कहा भला यहतो अब तुम्हारी हमारी प्रतिष्ठा और आबरू एकहुई जबचाहोदेखलो फिरकहाबहुत अच्छाखवाजेतुमअमीरको पर्दे के भीतर लेजावोऔर मेहरनिगारकोदिखलालावोबुजुरुचमेहरउनकोपर्दे केभीतरलेगया अमीर मलका मेहरअंगेजका देखकर सलामकिया और भेंटदी मलका अशीश देनेलगी मलकामेहरनिगार तलेमुंह कियेहुये अपनी माताकी गोदमें बैठीथी लाजके कारण शिर ऊपर न उठातीथी अमीर उसे देखकर अत्यन्त कृतकृत्य होगये मारे खुशीके फूले न समाते थे मलका मेहरअंगेजने जो अमीरका पाससेदेखा तो बड़े आनंदसे अंगी-कारकिया बुजुरुचमेहर ने मलका मेहरनिगारसे कहा कि अमीरका जाना बहुतदूरहै कुछ चिह्न अपना दीजिये कि सदा उसका अपनेपास रक्खें आपको यादमें ध्यान लगाये रक्खें मेहरनिगारने एक जमुर्दकी अंगूठी हाथ से निकाल कर अमीर को दी अमीर नेभी अपने हाथकी अंगूठी उतारकर मेहरनिगार को देकर कहा कि हमाराभी चिह्न आपके पासरहै कि जिससे हमको आप न बिसारें कभी २ यादकरती रहें फिर अमरनेभी हाथ बांधकरमेहरअंगेजसेप्रार्थनाकी कि जोअपराध क्षमाहो तो मैंभी कुछ प्रार्थनाकरूं उन्होंनेकहा कि कह क्या कहताहै तेरी क्या इच्छाहै अमरने कहा जिससमय अमीरकाविवाहमलकामेहर-निगारसे होगा तो सेवककाभी विवाह मलकाकीदायाकी पुत्रीसेहोसो मुझेभी चिह्नदिलवा दीजिये शर्बतदायासाहबासेपिलवादीजिये यहसुन मेहरअंगेजने कहा क्या अच्छादायाकुछ सुनतीहै कि अमर क्याकहताहै औरही मनोरथइसकाहैदायानेकहाकि ईश्वर मलकाकोसदाप्रफुल्लित

रक्खे जिनकी बदौलत यहबातें सुनने में आईं मलकाकोछोड़करयहकहां जायगी मलका की जो मर्जी होगी वहो यह भी करैगी यहसुन मेहर-निगारने ईशारेसे कहाउसने अंगीकारकरलिया फिरमलका मेहर अंगे-जने फितनावानो से कहा कि कुछतूभी अपना चिह्न अमर को देउसने कई सौरुपयेका अतरदान दिया फिर मेहर अंगेजने कहा कि फितना-वानो तूभी कुछ अमर से ले वहबोला देताहूं यह कहकर जेबमेंसे एक खुरमा और दो अखरोट निकालकर फितनावानों के हाथ में रखदिये और कहा कि इसको बहुत अच्छी भांति से रखना दीखनेवाले अमर के इसकामपर हंसते २ लोटगये फिर अमीर बिदाहुये और बादशाह की ओर चले खाजे बुजुरुच मेहरने अमरसे कहा कि बाबा तूमुसल्मानों की सेना में जाकर खबर दे कि अमीर आते हैं तो कोई संदेह और फिक्र नकरे मैं अमीर को बिदाकरवाने के हेत बादशाहको बुलवाता हूं और इच्छा के अनुसार पारितोषिक दिलवाताहूं अमर तो उधर गया खाजे अमीर और मुकबिल को अपने मकान पर बहलाकर बादशाह के पास पहुंचा और बिनय की कि मलका मेहर अंगेज ने भी अति प्रसन्नता से अमीर को दामादीसे अंगीकारकियाबादशाहअमीरकोनिकटबुलवाया और खिलअत दामादी की कृपाकीइसके पीछे खाजे अमीरको मकानमें लाकर बाज २ बातोंकी शिच्चादी और शर्बतपिलायाशर्बतपीतेहीअमीर अचेत होगयेतोखाजेनेअमीरकीजांघअस्तुरासेचीरकरशाहमोहराउसमें रक्खा और टांके देकर मरहम दारुदी उसमें मलदिया मुकबिलने पूछा कि हजरत यह कौन दवा है कहा कि हिंदुस्तानी एक मनुष्य अमीरको विषदेगा आपके मारने का उपाय करेगा और उसकी दवा इसकेसि-वाय और संसार में उत्पन्न नहीं हुई है खबरदार जबतक तू अमीर के हाथसे मारन खालेना तबतक उसको न बतानायहकहकरकिसी वस्तुका पानी अमीरके मुंहमे टपकाया अमीर शीघ होश में आये परंतु इतनी देरमें घावऐसाभरगयाथाकि अमीरपर इस भेदका हाल न खुला इतनेमें अमर भी डेरेसे आन पहुंचा खाजेने अमीरको बिदा किया और रीति भांति करके समुद्रकी ओर चले और बहुत से अमीर जोअमीरके अेही येभेजनेके हेतचले और नगर के बाहर पहुंचाकर रुखसत मांगने लगे अमीर ने सब को ईश्वर को सौंपकर आप वहांसे वेग कूच किया कुछ दिनबीते सेना समेत वहां बसरा नगर में दाखिल हुये और समुद्र के किनारे सेना समेत गये देखा कि तीस जहाज बादशाह की आज्ञा नु-सार बने खड़े हैं मेरे आनेका मार्गजे लोग दीखरहे हैं अमीर अपने तीस सहस्र सवारों से उन जहाजों पर सवार हुये और हिन्दुस्तान की ओर चलने को तय्यार हुये अमर जहाज से उतर कर अमीरसे कहने लगा कि मैं जिन्न और जादू और पानी से बहुत डरता हूं इस हेतुसे हिंदुस्तान

कि वाह २ साहब यहतो बहुत अच्छा न्याय आप ने किया और बहुत
अच्छीरीतिहैविदितहैकि हमता बदशाहकी आज्ञानुसार हिंदुस्तान में
भिक्षाबेचनेके निमित्त जावें और आपमेहरनिगारकाएकदृष्टिभीनदिखायें
जो ईश्वर ने हमका जीता फेरा और मनार्थ समेत यहांतक पहुंचाया
तो हमनहीं जानत हैं कि आप किसके साथ हमजा का विवाह कर
देंगे किसको इसके गले मढ़देंगे हमें क्या मालूम कि बादशाह की बेटी
गारी है या काली है दुबली है अथवा मोटी है हम इस समय से
ता रक्खें जिसमें पीछे का खराबी में न पड़ें और हमें बादशाहके
की क़सम है कि जबतक हम मेहरनिगारको देख न लेंगे कभी
इसमकानसे बाहरन धरेंगेयहसुन मेहरअंगेजने हँसकर अमर
पर कहा कि कहीं मर्दों का दिखना उचित है यह रीति
है कि लड़की को देखेंहां स्त्रियाँ मंगनीविवाहके हत आती
जातीहैं अमरने प्रार्थनाकी कि हुजूर सत्य कहती हैं पर
कौन माई मौसी बैठी है कि महल में आये और
देखजावे आपहो हमलोगोंकीघड़ीबूढ़ीहैं जो उचित
मलकाने कहा भला यहतो अब तुम्हारी हमारी
एकहुई जबचाहोदेखलो फिरकहाबहुत अच्छा
भीतर लेजावोऔर मेहरनिगारकोदिखलो
कैभीतरलेगया अमीर मलका मेहरअंगेज
भेंटदी मलका आशीश देनेलगी म
अपनी माताकी गोदमें बैठीथी
अमीर उसे देखकर अत्य
ये मलका मेहरअंगेज
कारकिया बुज
जाना बहुत
रक्खें आपको
अंगूठी हाथ से नि
अंगूठी उतारकर मेह
आपके पासरहै कि जिससे
रहें फिर अमरनेभी हाथ बांध
क्षमाहो तो मैंभी कुछ प्रार्थनाकरूं
तेरी क्या इच्छाहै अमरने कहा जिससे
निगारसे होगा तो सेवककाभी विवाह मल
मुझेभी चिह्नदिलवा दीजिये गर्वतदायासाहब
मेहरअंगेजने कहा क्या अच्छादायाकुछ सुनतीहै कि
औरही मनोरथइसकाहैदायानेकहाकि ईश्वर म

रक्खे जिसमें ...जाकाहेकोझंक्यों
जादगी ...ता हालपूछा उसने
निगारने ई... छोटासा छोड़कर
बने कितनाइज्जत के ... तसी सम्पतिपैदाकर
कई सौरुपयेक... को वायु बड़ुत जोरसे
वाहो तुमी कुछ ... उठनेलगीं जहाज यहां
खुरबा और ट... आदि जवाहिरात का
और कहः कि इस... सीचोटआईकिपैरभरतक
इसकाबदर ईमो... हताहैबड़ुत अच्छालोगउसे
और चले ह... ाना पीनाभीमुझेदेगये उसने
सेना में जाकर ... लेदिया और केचुओंकातेल
नकरे वे अमीर का ... अबनेसेयहांतकआयाहूंपरन्तु
इच्छा के अनुसार ... नहींसकाहूंपीरकेकारणहिच-
अमीर और सुबलिंग को ... जीचुराताहूंजोतूमुझे पीठपरलाद-
पहुंचा कौर ... रकरै किमैं घरतक बेपीर पहुंचजा
अमीर को ... और मैंभी एककिनारे जहाजपर
और खिलअत ... सुनकर समझा कि मेरीभाग्य उदय
जाकर बाद ... पड़ताहूं सेंतकी लक्ष्मी हाथआती है
अचेत ... उस लूलेलंगड़ेको अपनी पीठपर बैठा
रक्खा और ... या कि उसने अमर की कमरमें दोनों
कि ... तिकरकेलपेटाऔरघुटुओंसेएड़ियांलगा २
अपना कदम अच्छी भांतिसेबढ़ाकर दौड़तो
अमीर जकड़गया यद्यपिवाहा क हाथसेपावँ
उपाधिसे छूटे परन्तुउसनेहाथभीबांधलियेऔर
लेमारनेलगाऔरमुहपरथप्पड़पीठपर घूसेलगाने
है सहलहीमें माल लिया चाहताहै अमर सब
री भूलगयाअत्यन्तअचेतहोगयाऔरलाचार होकर
ड़ा जहाजको ओरका मार्गलिया किअमीर मुझेइससे
र देखा कि वहांभी अद्भुतलीला होरहीहै कि मिच
रभी इसीमें फँसेहैं अमीरने अमरको देखकर अय्यारी
क हमसमझतेथे तुमइस उपाधिमेंनफँसेहोगे हमलोगोंको
सेतुमभीइसीमेंफँसेअमरयहहाल देखकर लाचार होकर
ससे निराश होकर फिरा परन्तु इसके उपायमेंथा कि वह
पांवकभी तोकहताथा कि क़दमचल कभी झुकमदेताथा किकूद
ल उसनेसब अपने साथियोंको देखा कि सबसवार... यहसबके
निलगेकितुमभीअपना२ घोड़ादौड़ावोऔरसर्पट... ावो

की ओर नहीं जानेका मक्केमें जाकर आपकी बिजय केहेत ईश्वर से वर मागूंगा अमीरने देखा कि यह किसी भांतिसे मेरे साथ न जायगा उड़ान घातियां बतावेगा फिर अमीरने कहा कि अच्छा अमरमैंभी नहीं चाहता कि तू कष्टपावे परन्तु थोडीदेर थमजा तो एक बिजय पत्र अपने पिता को लिखदूं अमरने जाना कि सचमुच पत्रलिखदेंगे और मुझे यहीं से बिदा करेंगे तो जहाजपर सवार होकर अमीर के पासगया अमीरने एकपत्र लिखकर अमर के हाथ में सौंपा और कहा कि ऐ भाई आवो तो मिललें ईश्वर जाने अबकब मिलापहोगा अमर की आंखों में जलभर आया और बहुत से आंसू टपके अमीरने अमरको बगल में लेकर कहा कि यार तुमने हमारी बड़ी २ मुसीबतों में साथ नहीं छोड़ा इस समय तुम्हारा बिछोह कब मनको भाताहै॥

दोहा॥

जो कुछ लिखा लिलारमें होना वही जरूर। अबतो नाव चलाय दी ईशकरे भरपूर॥

केवट से कहा किजहाज का लंगर उठा आज्ञा देने की देरी थी लंगर जहाज का उसी घड़ी उठगया जबकिनारे से दूर निकल गया तोअमीरने अमर को छोड़दिया अमर हाथपावँ पटक २ कर जहाज पर दौड़ने लगा और बड़बड़ानेलगा किमैंनेतो इसअर्बवालेके साथक्यों प्रीतिकीरीति से मिलाप किया और यह मेरा बैरी जीवघातक होगया थोड़ीदेरचलके एकटापू तीस गज का चौड़ा दृष्टिआया अमर उसटापू को देखकरमन में विचारने लगा कि इसपर कूदकर घरतक पहुंच जाऊंगा परन्तु जिसको अमर टापू समझाथा वह मछलो थी धूप के खाने को पानी पर उतरा आईथी अमर जो उस पर कूदा मछलो अमर के कूदने की धमक से पानी में चलीगई तो अमर बूडनेलगा और बहुत घबरागया यह वृत्तान्त देखकर साहब किरांने केवटोंसे ताक़ीद अर्थात् धमकीदीकि खबरदार अमर बूडने न पावे दूसरा गोता न खावे जो इसे निकाल लावेगा वह भारी पारितोषिक पावेगा केवटों ने सांकड़े फेंक कर अमर को जहाज पर उठालिया अमीरके सामने लाकर बैठादिया सचहैकि जो मनुष्य दुःखमें फँसताहै वही आराम का हाल जानताहै अब जो अमर समुद्र से निकालागयातोभीगीमुर्गी की भांतिजहाजकेएककिनारेचुपकाबैठारहा कईदिनके पीछे एकटापूके किनारेपहुंचे जहाजों का लंगरपड़ा सबसे पहले अमर कूदकर वृक्षोंपर आया और खिलखिलाकर फिरने लगा दैव योगसे एक वृक्षके तले एक आदमी कमरमेंचमड़े की पेटीबांधे बैठाहुआ अमरको देखकर मनमें प्रसन्नहुआ कि मनोकामना पूर्णहुई अमर से कहने लगाकि ऐ मेरे भानजे तेरामिलनाभी दैवगतिसेहुआइसस्थानमेंतेरा पहुंचनाबड़ाआश्चर्य्यहैमैंनेतोजानाकि मैंमराऔरद्रव्यभीगईपरन्तुईश्वर नेहकदारको भेजदियाबड़ीदयामेरेऊपरकीअमरने जो मालकानामसुन

तोचुप होरहा नहींतो कहा चाहताथाकि मैंतेराभानजाकाहैकोहूंक्यों अजनबी आदमीसे प्रीति बिदेशमें करूं अमरने उसका हालपूछा उसने कहा कि तूनेमुझेनहीं पहिचाना होगा किमैंतुझे छोटासा छोड़कर सरंदीप को निकल गयाथा जिससमय मैंनेवहां बहुतसी सम्पतिपैदाकर चुका तबचाहा कि अबघरको चलिये तो एकाएकी वायु बहुत जोरसे चली समुद्रमें तूफान आया और बड़ी २ लहरें उठनेलगीं जहाज यहां पर आनकर बुड़गया मैं एकसंदूक हीरा मोती आदि जवाहिरात का लेकरकूदा और सूखेमें आपड़ा परन्तुपैरोंमें ऐसीचोटआईकिपैरभरतक चलना कठिन होगया इसद्वीपमें एकजरीहरहताहैबहुत अच्छालोगउसे बतातेहैं लोगदयाकर मुझेलेगये और कुछखाना पीनाभीमुझेदेगये उसने अपनेघरके निकट एकमकान किरायेकाभी लेदिया और कुछओंकातेल अपने घरसे लगानेको दिया पर आजमन ऊबनेसेयहांतकआयाहूं परन्तु बड़ीदेरसे मकानपर जानेका मनोर्थहै जानहींसकाहूं पीरकेकारणहिच-किचाताहूं चलनाकैसा खड़ेहोनेसेभी नीचुताहूंजोतूमुझे पीठपरलाद-कर लेचले तो मुझपर दोहरा उपकारकरै किमैं घरतक बेपीर पहुंचजाऊं और तुझेतेरी धरोहर भी सौंपदूं और मैंभी एककिनारे जहाजपर बैठलूं अमरने जो संदूकचोंका नाम सुनकर समझा कि मेरीभाग्य उदय हुई बेगानों के आगे अपना जानपड़ताहूं सेंतकी लक्ष्मी हाथआती है आवताव कुछभी न देखा झटपट उस लूलेलंगड़ेको अपनी पीठपर बैठा लिया उसका पीठपर पहुंचनाथा कि उसने अमर की कमरमें दोनों पांवलगाकर तस्मा अच्छी भांतिकरकेलपेटाऔरघुटुओंसेएड़ियांलगा २ कर कहनेलगा हांमेरेघोड़े अपना कदम अच्छी भांतिसेबढ़ाकर दौड़तो अपनी दिखा अमरका समझतीर नकड़गया यद्यपिवाहा क हाथसेपावँ को उसके छुड़ावे जिस्से उपाधिसे छूटे परन्तुउसनेहाथभीबांधलियेऔर अपने हाथसेअमरकोधौलेमारनेलगाऔरमुहपरथप्पड़पीठपर घूसेलगाने लगा कि दौड़ता नहींहै सहलहीमें माल लिया चाहताहै अमर सब चालाकी और मक्कारी भूलगयाअत्यन्तअचेतहोगयाऔरलाचार होकर अमीरकी ओरदौड़ा जहाजकी ओरका मार्गलिया किअमीर मुझेइससे छुड़ावेंगे वहांजाकर देखा कि वहांभी अद्भुतलीला होरहीहै कि मित्र स्नेही समेत अमीरभी इसीमें फँसेहैं अमीरने अमरको देखकर अत्यारी भाषामें कहा कि हमसमझतेथे तुमइस उपाधिमेंनफँसेहोगे हमलोगोंको इनसे छुड़ावोगेसोतुमभीइसीमेंफँसेअमरयहहाल देखकर लाचार होकर अमीरके पाससे निराश होकर फिरा परन्तु इसके उपायमेंथा कि वह तसमियां पांवकभी तोकहताथा कि क़दमचल कभी झकमदेताथा किकूद फिर उछल उसनेसब अपने साथियोंको देखा कि सबसवारहैं यहसबके सब कहनेलगेकितुमभीअपना२ घोड़ादौड़ावोऔरसर्पटपोइया दिखावो

और हमभी अपना घोड़ा दौड़ावें देखेंकिसकाघोड़ाआगेनिकल जाताहै और कौन पीछे रहकर मारखाता है इसके पीछे इन्हें मारकर कबाब लगाकर भून २ कर खाजावेंगे यहसुनकर सबकेहोश उड़गये ठंढीश्वासें भरनेलगे फिर वे अपने २ घोड़ों को एड़ी मारना शुरू की और अपने २ घोड़ोंको बागेंलीं आदीका सबसे अधिक नाकमेंदमझआया कि मुटापेसे कदम २ पर ठोकरें खाताथा यहदशादेख अमरने यहदोहा पढ़ा॥

दोहा॥

मानुषपर बीतत कबहुं अतिदुख दण्ड उरोत। कबहुंक सुखमेंरहत तनमन अति हर्षितहोत

और ऐसा दौड़ाकि कोई उसके आसपास तक न पहुंचा सबसे दो कोशआगेनिकलगयायहदेखबहदुष्टअतिप्रसन्नहुआ बोलाकि मेराघोड़ा सबसे अच्छाहै बायुके समान जाताहै अमरने एकस्थानपरदेखा कि कोशोंतक अंगूरकी वृक्षलगे हैं फलबहुतसे लटक रहेहैं और दानोंसे रस टपक रहाहै रसकीनदी बहतीहै उसके समीप कहू की बेलफैलीहै उसमें सैकड़ों कहू लटकते हैं दूरतक इसकीबेलें चलीगईहैं अपने मनमें अति प्रसन्नहुआ और कहू की बेलकेपास जाकरअपने सवारसे कहा कि बड़ा सा कहू तोड़दे इसको पीकर औरभी कदम निकालूं और अपनी चुस्ती व चालाकी तुझे दिखादूं उस बुद्धिहीन ने अमर के कहनेपर कामकिया और तोड़कर अंगूरकापानीउसमेंभराऔरथोड़े बूंद अमरकेमुंह में चुआये और दोचार फलभी तोड़कर खिलाये अमर छलांगेंफलांगें मारकरगाने लगा और उसको लेकर अति बलसेदौड़नेलगा वह दुष्टअतिप्रसन्नहोकर अमरसे कहनेलगा कि ऐघोड़ेमेरे जबतकमैं जीऊंगा कभीतुझे रानसे अलग न करूंगा कि तू हँसता और जी बहलाता है और कदमभी खूब जाताहै अमरनेकहा कि देखोयहपानीतूमनपीलेना मेरेनिमित्तरहने देना वह अपने मनमें समझा कि मालूम हुआ यहपानी बहुत अच्छी चीज है तबतो यहपीने को मना करताहै और इसरसके नामसे इसकेमुहमेंपानी भरताहै दोघूंट जोउसनेपिये और उसको स्वादमालूमहुआ तोकहू को मुहमें लगाकर सबपीगया अमरकेदौड़नेसे जोजंगलकी हवाउसको लगी सारी दुष्टता भूलगया औरअचेतहोकरअमरकीपीठपरसेगिरपड़ा अमर ने कटार निकालकर उसकापेट फाड़डाला और अमीरकेपास जाकर कहनेलगा कि ऐ अमीर तूने एककाफिर की बेटीकेहेत इतनेमुसल्मानों का अपराध अपने ऊपर लिया और मुझकोभी दण्डदिया देखाचाहिये अन्तमें तेरा क्या हाल होताहै और इसमार्गमें क्या २ फल मिलताहै अमीर ने कहा कि यहतो बिदितहै किमैं अपराधीऔर अज्ञानहूं परन्तु तुमतो इतनी पुण्य कमावो कि मुसल्मानों की जान बचावोअमरने कहा कि मुझे क्यागर्जहै कि बेमतलब इतने पंगुलोंको मारूं अपाहिजोंकाअपराध अपने ऊपरलूं अमीरने कहा कि इनका पाप हमारी गर्दनपर है

और एकआदमी प्रति दोसौअशर्फीदूंगा और आपकाउपकारमानूंगा अमरने अंगीकार किया और प्रत्येकको गोफनसे मारकर ढेरकरदिया जब सबोंने उन लंगड़ोंके हाथसे छुट्टीपाई तो सबोंके शरीरमें जानआई अमीरने शीघ्र जहाजपर सवारहोकर लंगर उठवाया जहाजको आगे बढ़ाया कि यह हिंदुस्तानका द्वीपहै ईश्वरजाने इसमें औरकोई उपाधि का सामान होवे कि सबसेना दुःखमेंफँसजायचलदियेदोमहीनेके पीछेएक द्वीपऔरमिलामल्लाहोंनेअमीरसेकहा कि जोआज्ञादीजियेतोजहाजों पर पानीभरलेवें और कुछ अन्नभी खानेकेहेत जमाकरलेवें अमीर ने कहा अच्छातोहै लोगोंके कपड़े भी मैले होगयेहैं खड़घाट कपड़े धुलवा लेंगे फिर आगेका मनोर्थ कियाजायगा केवटोंने जहाजका लंगरकिया औरसब सूखेमें उतरे अमरभी ठंढोहवा देखकर सैर करनेकोगया तो एक तालाब बड़तअच्छा दृष्टिपड़ा उसमें स्वच्छ मोतीसापानी लहराते देखाउसकाभीजीलहराया कि स्नानकीजियेतोकपड़े उतारकर किनारे पर रखदिये और तालाबमें गोतालगाया फिर जाशिर निकालकरदेखा तो कपड़ोंको घाटपर न पाया समझा कि अमीरने चकमा देनेकेहेत कपड़ा उठवा मँगाये होंगे किसीके हाथ चुरवाकर रखवाये होंगे हमजा हमजा कहकर अच्छीभांतिसे चिल्लानेलगा अमीरने अमरकी जोबोली पहिंचानी जाना कि किसीदुःखमेंतोनहींफँसा आशक्त होकर दौड़े और अमरसे कहनेलगे क्याहुआ भाई अमर भलाईतोहै क्या फिरकिसी उपाधिमें फँसा अमरने कहा कि यह दिल्लगीआपकी मुझे नहीं अच्छी लगतीहै नंगामुझे तालाबमें खड़ाकर रक्खाहै कपड़े मेरे दिलवादीजिये अमीरने कसमखाई कि में तेरे कपड़ों को नहीं जानता तबतो अमर घबड़ागया अपने मनमें कहनेलगा कि जो अमीरने कपड़े नहीं उठवाये तो कहांगये और कोई दूसरा मुझसे दिल्लगी नहींकरैगा एकाएकजो अमरकी दृष्टि ऊपरगई और वृक्षोंपर नजरपड़ी तो देखा कि वृक्षोंपर बन्दर बैठेहुयेहैं कपड़ोंको नोच खसोट रहेहैं किसीकेहाथमेंनीमताजहै कोई अंगाखोलकर दीखताहै कोई पायजामा लियेहुयेहै कोई कमरबंद अपने हाथमें लपेट रहाहै अमरने और बस्त्र मँगवाकर पहने और पहिले नीमताजको अपनेहाथसे उछाला बंदरका कायदाहै किजोदेखताहैवही आपभी करताहै उसनेभी अमरकी नीमताजकोउछालापरंतुरोक न सका धरतीपर गिरपड़ा अमरने उठालिया इसीभांतिसे अमरने अपना सब असबाब मांगलिया और वृक्षोंमें तेलमलकर आगलगादी जितने बंदर थे सब जलकर मरगये अमीरने शीघ्र सवारहोकर जहाजोंके लंगर उठवादिये जहाज आगेकोबढ़े कईदिनके पीछे एक बादलका टुकड़ा आसमानपर देखपड़ा फिर घरीभरमें तमाम आकाश पर छागयावायुने जोरकिया तूफानकी सूरत उत्पन्नहुई दिनकी रात होगई हाथपसारे

न देखपड़नेलगा केवटसब घबरागये और बड़ी भारी भारी लहरें उठने लगीं जहाजोंमें जोर २ से लगनेलगीं केवटलोग जिंदगीसे निराश होगये और आंशू बहानेलगे मनोर्थरूपी किनारातो न मिला मौतने आघेरा फिर फिर अमीरने कहा कि अधीर्य न होना चाहिये ईश्वरकी दयापर दृष्टि करना चाहिये ॥ दोहा ॥

प्रथम दुखित जो होत हैं सुख पावें ते अन्त । जो पहिले सुख लहत हैं पुनि पीछे दुखवन्त

अमर सबमें अधिक घबरागया और रोरोकर कहनेलगा कि ऐकेवट सब मुसलमानोंका बेड़ा तेरेहाथहै तू पार उतारेगा तो उतरेंगे कभी कहताथा ऐ हजरत अलियास जो इसबेड़ेको जो माझधारमें फंसा है किनारे लगावोगे और इस उपाधिसे बचावोगे तो यद्यपि इस समुद्र में बलनहोंहै परन्तु सवा दमड़ीकी खांड़की पुड़िया चढ़ाऊंगा और इसकी पुण्य तुमभी पावोगे इसके सिवाय तुम्हारेभाई हजरतखिजर तुमसे प्रसन्न होंगे कि मैं उन्हीका बरदानी हूं और इस आफतमेंफंसाहूं कभी अमीरसे कहताथा ऐ हमजा यहसब तेरी करनी करतूतहै मेरी भी मिट्टी तूने बेक़बर और बेकफन खराबकी जो कुछ किया सो तूने किया मैं इसीकारण समुद्रमें पांव नहीं रखताथा यद्यपिमैं तेरे स्नेह में बहुत फँसा था और तूभी जानता था कि मैं पानी से पहिले कोशों भागताथा किनारेकी भांति सदा अलग रहताथा इतनी उमर हुई कभी फौजमें भी न पांव धराथा नहाते समय शिरसे कभीपानीनहीं डालताथा तू अपने बलसे मुझेलाकर समुद्रमें डुबोया और समुद्रके बीचमें मुझेदोनों जहानसे खोया सुननेवाले यातो दुःखमेंथे या अमरकी बातें सुनकर खिल खिलाकर हँसपड़े फिर ईश्वर २ करते तीनदिनके पीछे उजाला हुआ औरसूर्यने अपनाप्रकाशकिया लहरोंकीधप्पड़ेंबंदहुईं समुद्रकाउलझना बंद होगया अधिकारी लोग प्रसन्न होनेलगे और परस्पर कहनेलगे कि हम तो जीने से हाथधोचुकेथे ईश्वरने बचाया कोईबोला कि डूबनेमें क्या कुछ बाक़ीरहाथा परंतुईश्वरने पारलगायाअमरने कहा कि यारोमेरे आशीर्वादने तुमसबकोडूबनेसे बचाया और दुःखसे निकाला क्या मैंनेमानता नहीं मानताहै हांकुछदेतेजावो कि मैं उनसबको अर्पणकरूंहर एकने कुछ २ दीनार अमरको दिये और बाजोंने देनेका वादाकिया अमरने कहा चाचा अलियास जब सरन्दीप में पहुंचलूंगा तब शक्कर मोलकेकर चढ़ाऊंगा इस खारीसमुद्र में शक्कर कहांसे लाकर चढ़ाऊं लोग उसकी बातोंपर हंसनेलगे और खुशहुये अभीमनका खेद न गयाथा कि इतनेमें समाचारमिला कि बहराम मक्कखाक़ान चीनके जहाजोंका पतानहीं लगता हजारों जहाज बेपतेहैं किसी भांतिसे जहाजोंका पता नहींपाते दूरबीनभी लगाई परंतु दृष्टि नहीं पड़ते अमीर सुनतेही शोकरूपीसमुद्र में डूबगया रो २ करकहनेलगा कि बड़ाभारी पहलवान् बूड़गया शिरसे

सेनाकी शोभाथी उसीका थलबेड़ा नहींलगता लोग बोले कि ईश्वर न करै जहाज किसी ओरको तबाह होगयेहैंकिसी बन्दरमेंलगेहोंगेईश्वर उसको किसीद्वीपके किनारे लगादेगा वह ईश्वर बड़ादयालुहै फिर अपनोंकेपास मिला देगा अमर बोला कि हमजा कुछ मानता मानो मैंने मानीथी उसीसे बचरहाऔर मेरेही पुण्यसे तूभी बचगया अमीरनेकहा यह जगह हंसने की नहीं है समय का पहिंचान मेरी ओर से तूही मन्नत मान जिस समय बहराम को सूरत देखूंगा जो तू कहैगा सामैं दूंगा अमरबोला कि बहुतअच्छा परंतुजोपारउतरे और बहराम मिले तबकहो कि थोड़ेसे खर्चमें काम निकाललोतोउससमय मैं क्याकरूंगा आपसे क्या भुनालूंगा अपनी गिरहसे मुझको करनापड़ेगा अमीरनेहंस कर कहा कि ऐसा न होगा जो तुमकहोगे वही देंगे ॥

अमीर के जहाजों का सिकन्दरी तूफान में फसना और उससे निकल कर सरद्वीपमें पहुंचकर शादानशाह के पुत्र लन्धोर से करलेना ॥

बुद्धिमान गुणवान इस वृत्तान्त को लोगोंको इस प्रकारसे सुनाते हैं कि तूफान बन्दहोने के पीछे थोड़े दिन बराबर अच्छी बायुमिलीकिसी भांतिसे कुछ चित्त स्वस्थहुआ केवट पाल उठाये चले जातेथे एकदिन जहाज के देखनेवालोंने गुल मचा कर कहा कि यारो बड़ाही तूफानआताहै इसके आगे जिसमें पड़े थे वह बहुत छोटाथा देखें परमेश्वर किसे बचाता है और इसमें कठिनता अधिक है कि सिकंदरी यहांसे बहुत निकट है ईश्वर बचावै कदाचित जहाज इसमें पड़गये तो चक्कर खाकर डुबजावेंगे अमरके तो हाथ पावँ ढीले पड़गये फूट २ कर रोनेलगा और घबरा २ कर जानअपनी खोनेलगाकभीकहताथा कि ऐअलियास चचा बचाना मैंनेतो पहिलेहीसे कहाहै किसरंद्वीपमें पहुंचकरतुम्हारा प्रसाद चढ़ाऊंगा कभी चिल्लाता किहजरतख्वाजे खिजर मेरी सहायता अपने भाई से करवावो ईश्वरसे बरमांगा कि जोमांतामानीहै वह सूखे में पहुंचकर करूंगा अमीरने हल्ला गुल सुनकर कहा कि अबयह रोना पीटना कैसाहै हजरत अलियास और खिजरसे क्यों फिरियाद होतीहै सक्कानियोंनेकहा कि हजरत तूफान बहुत उठाहै इससे ईश्वरही बचावे तो बचेंगे नहीं तो बचना कठिनहै यह बातें होरही थीं कि तूफान आपहुंचा और समुद्रमें लहरें उठीं और जहाज बात की बातमें सिकंदर के घेरे में जापड़ा चक्कर में आकर घूमने लगा तबतो सबकी बुद्धि घूमनेलगी चित्त घबराया अमीरने उस तूफानमें ध्यानकरके जो देखा तो उस भँवर के बीचमें एक खम्भा पत्थरका गड़ाहै वह लम्बा चौड़ाहै उसकेसिरेपर एक तख्ती सफेद पत्थरकी है और उसमें काले पत्थरके अक्षरकीले छिलाये बने हैं और वह अब्बी भाषामेंलिखेहैंउसकेपढ़नेसेजानपड़ाकि यह लिखाथा कि एक समयमें साहब किरांके जहाज इधर आवेंगे और

वहसब इस घेरे में फँसेंगे साहबकिरांको उचित है कि आपइस खंभेपर चढ़जावें उस दमामे को जो उसपर धरा है बजावें या अपने नायब को इसपर चढ़ावें कि उसके हाथ से यह दमामा बजायाजावे तो उसका जहाज निकलजायगा अमीरने अमर से कहा कि लो भाई हमतो इस पटंगपर जाते हैं और ईश्वर का नाम लेकर नक्कारा बजाते हैं जो केवल हमारे जोसे हजारों की जानबचेतो क्याकठिन है ईश्वरके बन्दोंकी जान तो बचावें अमरनेकहा कि आपकेनायब का भी तो नामलिखा है सो मैं आपका नायबहूं इस पटंगपर जाकर नगारा बजाता हूं और अपने मनमें सोचा कि इस पटंगपर चढ़कर मजसे बैठरहूं समुद्र के भयसे तो बचूंगा जबकोई जहाज इधर आवेगा तब सवार होकर किसी ओर को राहलूंगा बालबच्चे तो हैं नहीं अकेले किसी भांति से जिन्दगी निबाह लूंगा फिर सबसर्दारों की ओर देखकर कहा कि यारो तुमलोगों का बलिबकरा होताहूं इस समय तो गांठ खोलतेजावो कदाचित् जो बच जाऊं तो अपनी मेहनत की मजदूरी तो पाऊं सबोंने एक के स्थान पर सौ और सौके स्थानपर लाखरुपये का तमस्सुक लिखकर अमरके हवाले किया अमरने तमस्सुक लेकर यह सोरठा पढ़ा॥

सोरठा॥

यह समुद्र की धार अगम अथाह असोवहै। सोई लगावेपार नामजासुलेके थस्यो॥

और श्वास रोककरएकफलांग लगाई तोउस पटंगपरपहुंचकर श्वास टूटीतोसमुद्रमेंगिरपड़ा और अमरतलेको चलातोक्यादेखाकिएकनिहंग मुह खोले बैठा है खुराक की ताक में है अमर घबरागया कि यह बला कहांसे आईजो उस उपाधिसे बचेतो यहां जानगँवाई हवास सावधान करके उसकेदातोंपरखड़े होकर फलांग जो मारीतोऊपर जाखड़ाहुआ फिरउसखम्भे को चोटीपर जा पहुंचा अमर की यह तीव्रता देखकरसबों ने सराहा अमरने जो देखा तो सचमच एक नगारा रक्खा है और उस दमामेपर सिकंदर का नाम लिखाहुआ है अमरने ईश्वर का नामलेकर उसपर चोबलगाई तो बड़ी भयानक आवाज आई उसके शब्द से चौंसठ कोशतक समुद्र में लहरें पड़गईं अद्भुत भांति का शोरहुआ जितने जीव समुद्र में थे सब उतराआये और जो पक्षी उसपर रहते थे सबकेसब घबराये एकबारगी उड़े उनके परों की बायुसे जहाज चलनिकले परअमर उसी पटंगपर रहगया यद्यपि मनसे उसकी यही इच्छाथी कि मैं इसपर रहजाऊं परंतु अकेले से घबरागया कुछदिन के पीछे सरंदीप के टापू में जहाजों के लंगर पड़े और साहब किरां सेनासमेत सुखेमें उतरेउधर अमरका यह हालहुआ कि अकेले और धामकेमारेबेहोश होताऔर ईश्वर से हाथजोड़कर दुआमांगता था औररोता था कि एकाएकअमर के कानमें आवाज सलामकी आईतबतो अमरकी तबियतऔरभीघबराई

भवचक्का होगया और इधर उधर देखकर आश्चर्य मानकर कहनेलगा कि यहां मेरेसिवाय आदमी कहां कि जो मुझेजोहारकरेऔरमेरीखबर ले किन्तु कदाचित् अजराईल अर्थात् यमराज आयेहोंगे मेरीजानलेने का मनोरथ कियाहोगा अफसोस क्या बुरे स्थानपर मौतआई कि कफन तक न मिला इतनेमें हजरतखिजरआपहुंचेअमरनेदेखा कि बस्त्र हराप-हिने एकमनुष्यखड़ाहै औरचेहरेपरटोपीशोभितहै तबअदबसमेतसलाम करके पूछा कि आपकानामक्याहै और इसस्थानपर किसहेत आयेहो हजरतखिजरनेकहा कि मैंखिजरहूं और तुझेनिकालने आयाहूं ईश्वर चाहताहै तो अभीतुझेनिकालकर बाहर करूंगा अमर उनके पावोंपर गिरपड़ा जब उठा तबकहनेलगा कि ऐ हजरत मैंभूखाहूं आपकी कृपा चाहताहूं तब हजरतने एकरोटीका टुकड़ा दयाकरकेदिया और कहा कि इसेखा मैं पानीभी पीनेकोदूंगा और तुझे इसबलासे छुड़ाऊंगा अमर उसको देखकर जलगया कि इस टुकड़ेसेमैंकाहेको अघाऊंगाभूख की कठिनतासे बड़बड़ानेलगा कि ऐ हजरतजोआपपैगम्बर अर्थात्ईश्वर के दूतहैं यद्यपिआपकीबराबरीऔरअधिकारपरमैंनहीं पहुंचताहूंपरंतु मैंभी वलीअल्लाह का सेवक जानकारहूं आपहमसेऐसेसमयमें दिल्लगी करतेहैं यहांहम अपनीजानको मरतेहैं जब मनुष्यकापेट भरताहै तबउसे दिल्लगीसूझतीहै नहींतोउसेबातकरना अच्छानहींमालूमहोताहै हज-रतखिजरनकहा कि दिल्लगीकैसीतैंनेभूखकी शिकायतकी मैंने तुझे एक टुकड़ा रोटीका दिया और पानीपिलानेकाभी वादाकिया अमरबोला कि साहबयहबहीकहावतहैकि(ऊंटकेमुखकोजीरा) भलाइसटुकड़ेमेंमेरा क्या होताहै एक अंतड़ीभीतो न अघायगीआपने केवलप्रसादकृपाकिया है खिजरने कहा कि भलेमानुष प्रथमनीयत अच्छीकरकेखा देखतोइसे सब खासक्ताहै या अभीसेअधीर्य होकर अनायास बकताहै अमरनेवह टुकड़ा खाया परवह उतनाही रहा किंतु पेट भरगया और हजरत खिजरने सबावालिस्तका एक मशक निकाला औरउसे पानीपिलाया और कहा कि तूतो पहिलेहीसे अधीर्य होताथा अब क्योंटुकड़ाबचरहा अमरने जोदेखा भूखकीभूख जातीरही और प्यास बुझगई ईश्वरका धन्यवाद किया और कहा कि हजरत भूखप्यास आदमीके साथरहता है आपतो चलेजायंगे मैं फिर भूखा प्यासा मरूंगा तो किससे कहूंगा जो यह टुकड़ा मुझे कृपा होजाय तो जीते जिन्दगी रोटियोंकी चाह न होती आपकी अत्यन्त प्रशंसा करता हजरतनेअमरकीप्रार्थना अंगीकार की और वह टुकड़ाअमरकोदेदिया औरकहा कि ऐअमरयह वस्तुतुझे बड़े २ गाढ़ेमें काम आवेगी और यह सिकंदरी दमामा असबाब समेत हमलाको देदेना खबरदार इसमेंसे कुछ न लेना अमरबोला कि हजरत मैंइस बोझकोकिसभांतिसेलेजाऊंगा और इसकाबोझक्योंकरउठाऊंगा

हजरतखिजरने एक कमली देकरकहा कि इसमेंलपेटले तुझेकुछभी बोझ न जानपड़ेगा अमरने अपने मनमेंकहा कि कमलीभी अच्छी वस्तुहै समय पर कामआवेगी और जाड़ेमें आरामदेगी फिर सब सामान नकारेसमेत अपने शिरपर रक्खा औरपांव अपने हजरतके पावों की पीठपररक्खेफिर इस्मआजम अर्थात् ईश्वरकानामजो हजरतनेबताया था पढ़नेलगा और आंखेंबंदकरलींतोबक्षतहीशीघ्रकहींसेकहींपहुंचाहजरतने कहाकिअमर आंखेंखोल ईश्वरकी रचनादेख कि दमकीदममें कहांसे कहांतकपहुंचा है पहिले किसकष्टमें फँसाथा अबकहांखड़ाहैअमरने आंखेंखोलींआपको सूखेमेंपायातो ईश्वरका धन्यवादकिया और कोहिस्तानकी ओरचला औरअमीरकोढूढ़नेलगा अबसाहबकिरांका हालसुनिये कि जबबंदरसरं-द्वीपमेंपहुंचे और सेनासमेतउतरे हजरतखिजरऔर अलियासकाप्रसा-दजो मानाथा अच्छीभांतिसेचढ़ाया और कहा कि हमारा दोमहीने तक यहां रहनाहोगा दुखकष्टसे कामरहेगा और हमअमरका मातम करेंगे और उसके नामसे बहुतकुछ पुण्यकरेंगे जाहिर है कि मैं उसको अपनी जानकेबराबर प्यारा जानताथाऔर सबमित्रोंसेउसेअधिकजानता था उसने मेरेहेत अपनीजानदीऔरसदा मुझसेअच्छीभांति प्रीतिरखता था फिर जितनेलोग वहांथे सबने वस्त्र रंगाकर अमरका मातम किया रोने पीटने चिल्लानेलगे कुछदिनके पीछेअमरने उसवन में एक मसजिद देखी कि बहुतअच्छी बनीहुईहै जब निकटपहुंचा तबपांचआदमी नमाज पढ़ते दृष्टिपड़े अमरभी उनमेंमिलगया जब नमाज पढ़चुके तबचारमनुष्य तो अपने २ घोड़ोंपर सवार होकर चले और एकआदमी पैदलचला अमरने दयाकरके उससे हालपूछा उसनेकहाकि ऐप्यारेभाई हमपांचो शहीद हैं ईश्वरके मार्गमें जानदी है उसके बदले ईश्वरने ये पदार्थ कृपा कियेहैं चारोंआदमी ये घोड़ेसमेत मारेगयेथे इससे वे सवार हैं और मैं पैदल मारागयाथा इससे पैदलरहगया किंतु तू मेहरबानी करेतो मैंभी घोड़ा पाजाऊं तेरेनिमित्त दुआकरतारहूंगा अमरनेकहा कि मुझसेजो आपकीसेवा होसकेवहकरूं ऐसेलोगोंकीसेवाकरनामैंबड़ीपुण्य जानता हूं वह बोला कि यहांसे एकनगर थोड़ीदूरहै उसनगरकेफलाने महल्ले में मेराघरहै और मेरेघरके आंगनमें एक वृक्ष अमरूदकाहै उसकेथाल में दोसहस्र अशर्फियों अर्थात् मोहरोंकालोटा मुखढपा गड़ाहै तू नि-कालकर तिहाईतो मेरेलड़के बालोंकोदे और एकतिहाईतूले और एक तिहाईका घोड़ा और उसका असबाब खरीदकरईश्वरकेमार्गमेंमेरेनाम पर किसीकोदेदे किमुझे इस प्यादेपांवसेछुट्टीमिले अमरउससेबिदाहुआ और उसके घरपर जाकर उसके कहेहुयेको किया फिर आगेको चला कईकोश गयाहोगा किएक वृक्षडालीदारमिला उसकी छायामेंसुस्ताने के हेत बैठगया एकक्षण पीछे एक वृद्धमनुष्यको अपने दाहने खड़ादेखा

तोपैर छूके पूछा कि आपकौनहैं उसनेकहा मेरानाम अलियासहै तेरी धरोहरतुझे देनेआयाहूं यहजाल और कमलीले जालमेंतो जितनाबोझ बांधेगा सबइसका दिखाईदेगा और कमली जब ओढ़लेगा तब तू सबको देखेगा और तुझेकोई न देखेगा यह कहकर चलेगये अमर कुछ दिनके पीछे साहब किरांकी सेना के निकट पहुंचा पहिले मनमें प्रसन्न हुआ और ईश्वरकी प्रशंसाकी कि उसने सेनातो देखाई फिरदेखा किप्रत्येक मनुष्य काले वस्त्र धारण कियेहैं कोई २ शोक करते २ अचेत होगया है अमरने अपने मनमेंकहा कि ईश्वरहमजाको अच्छासुनवाये उसकीसूरत दिखावे फिरएक मनुष्यअजनबीसे पूछाकियहकटक किसकाहै और सेना तमाम मातमी क्यों होरही है वह बोला कि यह सेना साहब किरांकी है कुछ दिनोंसे यहीं पड़ीहै अमर अय्यारनामी एक अमीरका भाईथा अमीर उसका बहुत प्यारकरतेथे सोवह खारी समुद्रमेंएक शृंगकेऊपर चढ़के मरगया उसके शोकमें सबनेकालेवस्त्र पहिने हैं और अमीर आप बहुत दुःखकियाहै आज उसका चेहलम है फकीरों को खाना बटता है अमरने अपने मनमें कहा कि अमीर की प्रीति की भी परीक्षा होगई फिरदिनतोउन्हींफकीरोंमेंजिन्हें खानाबटताथाकाटारातकोकमलीओढ़कर मादीकर्बके तम्बूमें घुसादेखातो मादीकर्ब अचेतनिर्भय सोताहै तो उसकी छातीपरचढ़बैठा वहजागकर पूछनेलगाकि तूकौनहै और कहां से आयाहै मुझसे बैरका क्या कारणहै अमरबोला कि यमराजका दूतहूं आज अमर का जीवैकुंठ में भेजते थे वहांजाना उसने अंगीकार न किया और यमराजसे कहाकि मादीकर्ब मेराबड़ा मित्रहै बिनाउसके मैं बैकुंठ में न जाऊंगा ॥ दोहा ॥

वह मैं नहीं सुजान सुन इकले सैरहि जाउं । मित्रसहेही साथ ले तब बहु बिधि गुणगाउं ॥

यद्यपि उसेसमझाया कि इसके आनेमें अभी बड़ी देरहै अभी उसकी मियाद बहुतहै परन्तु तबभीउसनेनमाना मुझेआज्ञादी कि जावोमादीकर्बकोभी लेआवो सोमैं तुझेमारनेआयाहूं मादीकर्बने कहाकि मैं उसका मित्रकभी नहींहूं बल्किउसका बैरीजीघातक रहाकरताहूं और उसकी मौत ईश्वरसे मांगा करताथा बल्किउससेहमसे कभीमेलभीनथा अमरबोला कितुम मुझको कुछद तो छोड़करजाऊं और जो कुछतुमने कहाहै वह यमराजसे कहूं आदीनेकहाकि वह सामने एक संदूक़अशर्फियोंका रक्खाहै आपलेलीजिये मेरीजानछोड़दीजिये अमर वहांसे संदूक़लेकर सुलतानबख्तके तम्बूमेंगया और वहीबातेंउससेभीकहींउसनेभी एकसंदूक़ अशर्फियोंका दिया और अपनी जानबचाई संच्चे पयहकि उस रातको इसीभांतिसे तमामसरदारोंके पासगया औरअशर्फियांजमाकों उसीझोलीमें भरलीं फिरअमरके आनेकेपीछे सबको डरकेकारणसेजूड़ी ताप आई और किसीने डरके सबबसे रातभर चैननपाया जब प्रातःकाल

हुआ पहिलेतो आदीनेरातकाहालअमीरसेकहा अमीरनेजानाकि यह अच्छा स्वप्ननहींहैतोउसकीबातेंसुनकरबहुतहंसेसुल्तानबख्तनेभी अपना समाचारवर्णनकिया और२लोगोंनेआकरऐसाहंसबबयानकिया अमीर नेकहाकि जल्दयहांसे तम्बूउखड़ावो आगेसेनाकोबढ़ावो यहां शैतानका बासरहताहै नहींतो क्याकारणहै कि सबलोग स्वप्नएकसेदेखें ऐसानहो किलोगसिड़ीहोजायं दूसरेदिन अमरनेअमीरसे यही बातकी अमीरने कहाबड़ी अद्भुतबातहै किशब्दआताहै परंतु आदमी नहींदेखपड़ता है अमीरनेहाथसेटटोलातोउसकाशरीरहाथमेंमालूमहुआतो प्रेतसमझकर एकहाथसे उसकोपकड़ादूसरेहाथसे चाहाकि घूंसामारेंतोअमरने कहा कि खबरदार वो अर्बवाले घूंसा नमारना मेरे चोटलगेगी औरझटपट कमली उतारकर ऊपरसे फेंकदी अमीरनेबोली पहिचान कर गले से लपटालियाफिरअमरनेसब हालवर्णनकियाऔरसारीकहानीकहसुनाई औरनगाराआदिसिकंदरीअसबाबअमीरकोदियाऔरबहुटुकड़ा रोटी काऔरछोटीमशककापानी बहुत सुगन्धदेताथा और कमलीऔरजाल अमीरको दिखाकर अपनेपास रक्खा और कहाकि यह हजरत खिजर और अलियासने मुझे दियाहै इसमें और कोई साझी नहीं है अमीरने प्रातःकालहोतेही वहांसेकूचकिया और सरन्दीपकेतले तम्बूखड़ाकिया चारों ओर यहसमाचारबिदितहुआकि हमजानामी बादशाहनौशेरवां कादामाद लंधौरसे लड़नेकेहेत आयाहै सेनायद्यपि थोड़ीहै परंतु प्रति मनुष्यकीबीरताकी शाका रुस्तमआदिसे बढ़करहै और आप अमीरभी बड़े दमदावाका मनुष्य है सरन्दीप गिरिपर मेलेकेसमय अमीर पहुंचेथे और आसपासके लोगवहां जमाहोते जातेथे मेलाहोनेका कारण यहथा कि हजरत आदमको उन्हीं दिनोंमें ईश्वर के यहांसेप्रतिष्ठाऔरमुक्ति उसीस्थानपरहुईथी और उसपहाड़परउनकेपांवका चिन्हभीबनाहुआ था हिंदूऔर मुसलमानोंका पूज्यस्थानथा दो२ चार२ महीनेकी राहसे लोग जमाहोतेजातेथे औरजा दिनठीक होता उसमेंदर्शनकरते अमरने अमीरसे कहा कि आज्ञाकीजिये तापहाड़की सैरकरआऊं औरवहां जाकर कुछ खबर लाऊं अमीरने आज्ञादी अमरने अपनी राहली जो पहाड़के तलेआया तो एक वृद्ध मनुष्यकोतप करते देखा उस वृद्धने जो अमरका नामलेकरसलामकिया अमरनेदिवालपाव समझकर कटारपर हाथकियाऔरत्योरीचढ़ाईतो उसवृद्धनेहंसकरकहाकिऐअमरमैंदीवाल पावनहींहूं हजरतनूहअलेहस्सलामकेकुटुम्बमेंहूं तेराबैरीनहींहूंसालिम मेरानामहै रातको मुझे खबर हुई थी इससे मैंने तुझेपहिचाना नहींतोमैं तुझको और तेरेनाम कोक्या जानता यहकहकर एक गज दिया और कहाकि सामने जाकर इस गजभर धरती खोद जातेरी भाग्यमें होगा वहमिलेगा किंतु लालचको अपनेहृदयमेंनकरनाऔर जो कुछमिलजाय

लेलेना अमरने उस गजको नापकर धरतीजोखोदीतोएकदाना लालका अति प्रकाशवान निकला जबखोदते २ थकगया और कुछन निकला तब तोलज्जित होकर सालिमके पासआया औरवहलालकादाना दिखाया सालिमने कहा कि अबपहाड़परजावोअ दमकेचरणोंकादर्शनकर आवो अमरने कहा कि पहाड़पर जानेकी राहतो किसीओर दृष्टिनहीं आती है उसकी उचाईपर चढ़तेडरये मेरीबुद्धि चकराती है किसभांति से जाऊं सालिमने कहा इहगो पतली पगडंडीहै उसपरसीधाचलाजा अपनेमन में कुछ न घबरा अमर उसीराहसे पहाड़परगया परन्तुचलते २ थकगया फिर देखा कि एकहाता बहुत अच्छाबनाहैउसहातेकेभातर हरेरामई है उसके आसप स बहुतमाफतड़ाग बहताहै औरहरजगहवृक्षोंपरचिड़िया लहलहाती हैं जबऔर आगे गयातो एकसफेद पत्थरपर इसन आदमके चरणका चिन्हदेखा तो आंखोंकी पलकसे उसेचूमलियाऔरवहां की भभूतको आंखोंमें लगालिया उसचरणकेआसपास आदमीभरढेर जवाहिरातका देखकर मनमें लालच दुबाराआई सोचाकिआदमके चरण के दर्शन तोकरचुका इसजवाहिरातको अबले और बेगयहांसे सेना की राहले यहांकौन देखने आताहै तुझेजोबंधुवाकरकेलेजायगा फिर कमली बिछाकर सबजवाहिरातको उसमें समेटा औरचला परन्तुजबदरवाजेके पासगया तो दरवाजा आंखोंसेन देखपड़ाअमरने फिरउलटेपावोंआकर जहां जवाहिरात पड़ेथे वहीं डालदिये और दरवाजेपर जा दृष्टि की तो उसीभांतिसे जैसाका तैसादृष्टिपड़ा फाटककीचौखटआदि सबदेखी अमर ने फिर विचारकियाकि पहिले इसदरवाजे परकोई चिन्हबनाआवें तब जवाहिरात यहांसे लेजावें तो नीमताज अपना दरवाजेकी चौखटपर धरके जवाहिरातकेढेरोंकेपासखड़ाहोकर दरवाजेको ताकातोदरवाजा और ताज दिखाई दिया अमरने फिर उसजवाहिरातको कमलीमें बांध कर राहली जिससमय दरवाजेके पासपहुंचातबनीमताज और दरवाजा बेपतापाया जैसाकियाथा वैसाफिरभी आगे आया मन में कहने लगा कि दादा आदमभी बड़ेप्रबन्धीथे उनकामाल किसीकोनपचेगाउन्हींके आगे रक्खा रहेगा फिरउसी भांति जैसेकेतैसे जवाहिरात रखदिये तबताज दरवाजेपर दृष्टिपड़ा अमरने देखा कि नमाजका समयआयातो तालाबसे वजूकरके नमाजपढ़ी और धाहैं मारकररोनेलगाऔरउसजगहको पाक जानकर ईश्वरसे वरदानमांगनेलगा किएकाएकउसरोवाधोईमेंअमरकी आंख झपक गईतो देखाकईवृद्धसाहबकरामती मेरेशिरपरखड़ेहैं जिनका चेहरा अति प्रकाशित है और मेरी ओरकृपादृष्टिसेदेखतेहैं उनमेंसेएक वृद्धनेजोसबसेलम्बाथाएकजामादेकरकहाकिइसेतूपहिनइसको देवजामा कहतेहैंइसकेपहिननेसेसबप्रकारकीउपाधियोंसे बचारहेगा और किसी भांतिकाघाटाजिन्नप्रेतआदिसे नपावेगाऔरइसमेंजोजेबहैउसमेंजोतमाम

संसारकी वस्तु डालदेगा सबसमाजावेगीऔरइसकेसेवायजोवस्तुदरकार होगी वह इसमेंसे निकल आवेगीऔरइसपर हाथधरकेकहेगाकि दादा आदम मेरी सूरत ऐसी बनजाय शीघ्र उसीभांतिकीबनजावेगीयहइसकी करामातहैऔर जिसकी बोली चाहेगा बोलेगा और नाम मेराआदमहै अमरने सलाम करके चरणों पर शिर रक्खा दूसरे हव्व ने प्याला देकर कहा कि इस प्याले पर जो बड़ा नाम लिखा है उसको याद रखना तेरे बड़े काम आवेगा और इसमें तुझे लाभ बहुत होगा और मेरा नामइस-हाकनबीहै तीसरे ने अपना नाम दाऊद पैगंबर बताया और एक दुतारा देकर कहा कि जबतू इसकोबजाकर गावेगा तोतेरीबराबरी में कोईगंधर्व भी न आवेगा जो गानविद्याभी जानताहोगा तोभीतेरे गाने की चोट उसके हृदय में लगेगी चौथेने साहबे: पैगम्बर अपनानाम बताकर अमर की पीठ पर हाथ फेरा और कहा कि दौड़में तेरे बराबर कोईन होगा और कोई घोड़ाभी तेरी बराबर न जावेगा और कभी न थकेगा इजरत साहबे यह कह रहेथे कि एक तख्त आसमान से उतरा उसपर एक हव्व बैठे हुयेथे उनकी सूरत देखकर अमरकी आखोंमें चकाचौंध छागया फिर चारोंपैगंबरोंने उठके सलाम किया अमरने उनसेपूछा कियेकौनसाहब हैं उन्होंनेकहाकियेपैगम्बरअंतकेसमयकेहैंमुहम्मदसलेअल्ला हुअलैहसल्म इनका नाम है अमरने हाथबांधके बंदना की और पहले से प्रार्थना करने लगा याहजरतसबपैगम्बरों ने एक२ वस्तुअपनीआपसेभीमांगताहूंकि जबतक मैं तीनबेर मौतन मांगूं तबतक यमराज मौत मेरी जान न निकालेमुह-म्मद साहबने कहाकिऐसाही होगा इतनेमें अमरकी आंखखुलगईदेखा जोजोवस्तु पाईथी वहसब पासधरीहैं अमर इस प्रसादकोलेकर सालिम के पास गया और सबकहानी ब्यौरा समेत वर्णनकी सालिमने कहा कि अमर अबजाकर हमजाको भेजदे ता उसकेभी जोभाग्यमें बदाहोगा सो मिलेगा अमर वहांसे चला मार्गमें जेबपरहाथ रखकर कहनेलगा कि ऐ दादा आदमजैं बड़े कदका होजाऊं मेराकदबहुतभारीआदमीसेकईगु-ना बढ़जावे फिरदेखातो शीघकदबढ़गया फिरदर्पणमें अपनी सूरत देखी तो अपनी सूरतसे आपमनमें डरा कि ऐसा नहोजो ऐसीही सूरत बनी रहै फिरउसी परहाथ रखकर चाहा कि मेरी सूरत ज्योंकी त्यों होजावे फिरभी बहुत जल्दवैसेही सूरत होगई तबतो अमर प्रसन्न हुआ बगलबं-जानेलगा किमैं जैसी सूरत चाहूंगा वैसीही बनजायगी फिर सूरत बदल के मुसल्मानोंकी सेनामें पहुंचा और दुतारा बजाकर गाने लगा जिसने सुना अपना काम छोड़कर अमरके साथहुआ लोगोंने यहखबरसाहब-किरांको पहुंचाई किएक हिन्दू आदमी इस सूरतका सेनामेंआयाहै दु-तारा बजारहाहै कि सुनने वालोंका होशठिकाने नहीं रहताहै साहब-किरांने उसको अपने सामने बुलवाया देखातो जानाकि अजब सूरत का

आदमीहै कि स्वप्नमेंभी ऐसीसूरत कभी न देखीहोगी गानाबजाना जो सुनातो कानखड़े हुये अमीरने पूछाकिऐ भाईतू कहांका रहने वालाहै तेरानाम क्याहै अमरबोला किमुझे महमूद स्याहतन कहतेहैं और रहनेवाला हूंसो लगहका हूं हिंदुस्तानका बादशाह मुझ अच्छी भांति से जानताहै और बहुत कुछ इनाम उससेपाताहूं परन्तु मुझे कोई हौसिले भरनहीं देताहै जिससे अघाजाऊं और किसी रईसकेपास हाथनफैलाऊं साहबकिरांने कहाकि इसको हमारे खजाने में लेजावो जितना रुपया अशर्फीजवाहिरातइससेउठसकें दिलवादोसुल्तानबख्त अमरको अमीर के खजानेमें लेगया और इनआमके उठानेकोकहा अमरने जितनेखजाने मेंसंदूक थे सबएक२ निकालकर धरे सुल्तानबख्त बोलाकि यहतोसैकड़ों गाड़ोंका बोझहै तुझसे जितना उठसके उतना उठा और जितनी अमीरकी आज्ञाहै उतना माललेकर घरकोजा इतनालालच क्यों करता है जानाहक खजानेके संदूक उठाताहै अमर बोला हांहजरत वही करताहूं नहींतो क्यामेरे पासछकड़ा बहलेहैं जो उनपर लादके लेजाऊंगा या और लादनेवालोंको कहींसे बुलालाऊंगा सुल्तानबख्त यह समझा कि क्या यह बिक्षिप्त होगयाहै चुपहारहा औरभी लोग यहहालदेखते रहे सबकेसब चुपखड़े रहे अमरने उन सबसंदूकोंको तलेऊपररक्खा और उसजालमें खूबकसा और रस्सीसेबांध कांधेपर रख पहाड़की ओरजाने का मनोरथकिया देखनेवालोंकेहोश उड़गये सुल्तानबख्तने उसेरोंकर कहा कि थोड़ासा ठहरजा हमअपने हाकिमको इसबातकी खबरकर देवें अमर संदूकोंको कांधेपरसे उतारकर बैठगया सुल्तानबख्तने जाकर अमीरसे सबहाल कहा कि ऐ साहबकिरां वहतो मालूम नहींहोताहै कि जिन्नहै याप्रेत या कोईजादूगरहै या कोई आफत आसमानसे उतर आईहै उसने तमाम संदूक कांधेपरबांधके एकजालमें रक्ख और ऐसा हल्का चलनिकला कि उसके पांवतक न हिले इसआधीनने उसेरोंका है कि हम इसकीखबर अपने मालिकको करलेवें तब तुझेविदाकरेंसाहब किरांने सुनतेही तजवीजकिया कि यह बेशक अमरहै कोईतमाशा सीखकर आयाहै यह उसीकी चालाकीहैतो आपजाकरकहा कि क्योंभाई यहतो बहुत अच्छेतमाशे दिखातेहो पहिलेहमारेहीऊपरहाथसाफकर रहेहो अमरने हंसदियाअमीरनेउसेगलेलगालिया फिरअमरनेसारा समाचारकहाऔरकहा कि आपकोभी सालिमनेबुलायाहैकुछप्रसादआप के हेतभी रक्खाहै अमीरने रातको आरामकिया प्रातःकाल मिचस्नेहियों समेत अमरको साथलेकर पहाड़की ओरचलेऔर बाग व तालाब व नहरोंकी सैरकरनेलगे फिर एक स्थानदेखा कि धरतीवहांकीसपेदचंदन समान बनाईगईहै और अत्यंत सुंदर बराबर चबूतरेसी बनीहुईहै और आनंददायकहैकहींनीचीऊंचीनहींहैऔरउसकेकिनारेपरपत्थरकीनाल

औरमोगदरऔरलेजम व गदा आदिसबअसबाबरक्खेहैं कुछलोगउसके निगहबानखड़ेहैंअमीर ने उनसेपूछाकियहकिसकाअखाड़ाहै वेबोलेकि हिंदुस्तानके बादशाह जिसकानामलंधौरहै उसकाअखाड़ाहै उसकीक-सरत करनेकोयहीजगहहैअमीरनेअमरसेकहाकिमैंभी अपनाबलअजमा-ऊंअमरनेकहा किबहुतअच्छा फिरअमीरवहांपरजाकरसबमोगदरवबल्लम व लेजमकोबहुतहलकाउठालियापरन्तुगदानउठीतो अमीर कोअत्यन्त दुःखहुआ और कहनेलगा किऐईश्वरतूही प्रतिष्ठा व लाज रखनेवालाहै जबउसकीगदा नउठीतबलड़ाईमें कठिनताहोगी फिर आगेचले और सा-लिमकेनिकटगये सालिमने बगलगीरहोकर वहीगुर्ज अर्थात् गदादेकर कहाकि आपइसके प्रमाणउक्तस्थानकी धरतीखोदें जोकुछआपका भाग होगा वह मिलेगा वह आपमेरे पासलावें अमीर ने सालिमके कहनेसे जो कामकिया तो एक दाना हीरेका निकला अमरने सालिम को ले जाकर दिखलाया सालिमने कहाकि यहमाल आपका है इसकोअपनी जेबमें रखिये और इसपहाड़पर दर्शन करनेको जाइये आपकासहायक ईश्वरहै जबतक उधरसे सहायता नहोगी तबतक हिंदुस्तानके बादशाह सेजीत न पाइयेगा अमीरनेपहाड़पर चढ़केहजरत आदमके चरणकाद-र्शनकिया और उसी स्थानमेंतपकरने और ध्यानधरनेलगे औररोरोकर आशीर्बादमाँगनेलगे यहांतककि अमीरकोझपकीसी आगई तोदेखाकि एक तख्त आसमानपरसे उतरा औरउसीस्थानमेंस्थितहुआ उसपर क-ई वृद्धअतिप्रकाशवान् तेजस्वीबैठेहैं उनमेंसेएक वृद्ध बड़ेकदका आकेउनसे अमीरका नामले सलामअलेक किया और आशीर्बाद देकर कहा कि हमना यह बाजूबंदले अपने भुजापर बांध कभी तू किसीके साथनहीं हारेगा और जोतेरे बैरीकाशरीर हजारगज लम्बाहोगा तोभी इसी बाजूबंदके प्रतापसे तेरी तलवार उसपर पड़ेगी तुझे कभी किसीभांतिसे उसकेहाथसेकष्ट न पहुंचेगापरन्तुलड़ाईकेनगारापरकभीपहिले चोबमत लगदाना उसकेऊपर कभीपहिले वार न करना जबतकतेरेऊपरतीनवार न करलेवे अपने अच्छेस्वभाव को कभीबुरा न करना जो जीदानमांगे उसको जीदानदेना और जो तुझसेभागे उसकापीछा न करना कि तूइस संसारके काफरोंका सुख छीलेगा और मुसल्मानों का दीनबढ़ावेगा और अभिमान कभी न करना दीनपरदयाकरना ॥

दोहा ॥

अपनेको आधीनकर कि मेंतेछोट न कोय । सुन्दरहे यह राज्यते जेहिमद कबहुं न होय ॥

और देखनारणमें कभीअनायासशब्द न करना तेरेशब्दकीआवाजसो-लहकोसतक जावेगी सुननेवालोंका हृदय भयभीत होजावेगा यह सि-खाके हजरत आदमने अमीरको गले लगालिया और सबपैगम्बरोंनेअ-मीरकेऊपर कृपादृष्टिकी फिर खुशीकेमारे अमीरकीआंखें खुलगईं और

नींदसेजागा और उठकर खप्नकी नमाज़पढ़ी और नमाज़पढ़के सालिमकेपासआया और मंगलसमाचारकहा सालिमने अमीरको धन्यवाददिया औरयहकहा कि मुझको केवलआपहीको देखनाथा आपको पता बताने का बोझथालो ईश्वर सहायकहै मैं अबअपनी राहलेताहूं परंतु इतना कहे देताहूं कि इतना कष्ट अंगीकार कर लीजियेगा कि मुझे कफ़न और क़बर आप अपने हाथसे बनाइयेगा यह कहकर दुनियांसे हाथखींचलिये औरपांव फैलादिये ईश्वरका नामलेकर बैकुंठ में पहुंचे अमीरने इसक्षणभंग शरीरको देखकर आंसूबहानेलगा और उनको कफ़न और क़बर दोनों अपनेहाथसे बनवाया और उसमें रख दिया और वहांसे उठकर लंधौरके अखाड़ेमें आया वहजो एकसहस्र सातसौ मनकी गदाथी तृणके समान उठाकर एक कोने से दूसरे कोने में रखदी और आनन्दित अपनीसेनामें आया वहांपहुंचकरकईहजार रुपया फ़क़ीरों और भिक्षुकोंको दियानिगहवानोंनेयहसमाचार लंधौर को पहुंचाया लंधौर यह समाचार सुनकर अपने अखाड़ेमें आया गदा दूसरे स्थानपर देखकर अति आश्चर्य किया कि और दूसराभी कोई हमारी बराबरवाला आनपहुंचा और निगहवानोंपर ताकीदकी कि जिस मनुष्यने मेरीगदाको एक कोनेसे दूसरेकोने में रक्खाहै और अपना बल अजमायाहै जोवह फिरआवे तो मेरेपास उसको लेआना और बहुतशीघ मुझे ख़बरकरना अब अमरकाहालसुनिये कि अमीर से सैरके बहाने बिदाहुआ और वहांसे लंधौरकी सभाकीओर चला एक खुरासानीकी सूरतबनकर हाथमें वही दुतारा लिये हिन्दुस्तानके बादशाहकीचौखटपरजाखड़ाहुआ दर्वानियोंने पूछा कि तूकौनहै और तेरीजीविकाक्याहैऔरकिसदेशसेआयाहैबोला कि सातद्वीपके बादशाह के यामाताकेसाथ यहांतक पहुंचाहूं हिन्दके बादशाहकी उपकारता और उदारता देखकर यहांतक आयाहूं भाईजरा मेरासमाचार बादशाहसे कहदो औरमुझेवहांतक लेचलोदर्वानियोंनेदारोग़ाको ख़बरदी दारोग़ाने लंधौरसेप्रार्थनाकी हुक्महुआ कि हाज़िरकरो अमर उसकी आज्ञानुसारउनकेदरबारमेंपहुंचालंधौरअमरकोदेखकर आश्चर्यकिया कि इससूरतका आदमी उसनेकभी देखा न थाअमरसेपूछा कि तेरा नाम क्याहै और कहांका बासी है अमर आशीर्वाद देकर बोला कि मुझको बाबायज़दवरद कहतेहैं अर्थात्मारा और उठाया और कहा कि मेरे सब घरवाले खुरासानमें रहतेहैं अमरसे लंधौर ने कहा कि तेरानाम व तेरीबातें बड़ीअद्भुतहैं मालूम होताहै कि तूकिसीको मारे आताहै और उसकामाल उठा लेजाताहैअमर बोला कि सेवकतार को मिज़रावसे मारताहै और सुननेवालों और क़दर दानोंके चित्तोंको उठालेता हैलंधौरइसचुटकुलेपरबहुतप्रसन्नहुआऔरगानेकाहुक्म दिया

अमर सबलोगोंसे ऊपरबैठा औरदुतारेको मिलानेलगा जितनेगवइये बजवइयेथे अमरके ऊपर बैठनेसे कुनमुनाने और नाक भौंहैं चढ़ानेलगे इसमें क्या ऐसा बड़के गुणहै जो हमलोगोंसे ऊपरचढ़के बैठाहै दुनकी लेरहाहै लंधौरनेकहा प्रथमतो यह मुसलमानहै और एक शाहजादे तेजखीकेसाथआयाहै और इसका फ़क्कीरी सामानहै और इसका मनोर्थ मुझे करना अवश्यहै कि देश बिदेश जायगाऔरसबजगह यहांका जिकर आवेगा मैं इसकामन जोतोड़ूं तो दूसरे देशका रहनेवालाहै औरजगह मेरीनिन्दाकरैगा और जोशिष्टाचारकरूंगा तो इसे तमाम उमर यादरहे गा औरदूसरे निकटसे इसका गाना सुन्ना मुझेमंजूरहै तुम्हारे क्रोधकरनेका यह स्थाननहींहै और इन बातोंसे तुम्हैं कुछकाम नहींहै उनको समझाकर अमरको शानकी अमर गानेलगा जितने सुनने वाले थे सबके सब प्रसन्न होगये और कहने लगे कि इसके गलेमें कहीं हड्डीहै गलाक्या बांसुरीहै लोगतो अमरके गानेपर मस्तथेही अचेत होगये परंतु अमर जमुर्द के मोरों पर जो चारोंकोने तख्तके जड़ेथे दांतलगाये बैठाथा निगाहोंसे तकरहाथा लंधौरने प्रसन्न होकर कहा कि ये बाबायजदवरद मांग क्या मांगताहै तेरी इच्छा किस बस्तु पर अधिकहै अमर बोला कि आपकीउमर अधिकहो हुजूरकी कृपासे नौशेरवांके यामाताने बहुतकुछ दियाहै संसारकी आधीनतासे कुछ प्रयोजन नहींहै फिर लंधौरने कहा कि तू इस समयमांग मेरा मनतुझे कुछ देनाचाहताहै तुझसेअतिप्रसन्न हुआहूं अमरबोला कि आपकी कृपासे मुझे कुछभी नहींचाहिये सेवक रुपये पैसेका भूखानहींहै परंतु यह जीचाहताहै कि जोआज्ञाहो तो इससमयमदिराबांट एक प्याला बारुणी का पिलाऊं पहिलेजो बांटताथा उसकी ओर इशारा किया उसने प्याला और बोतल अमरके हवाले किया अमर गुलाबी मदिरा जड़ाऊ प्यालेमें भर २ कर पिलानेलगा जब दो तीन बारपिलाचुकादेखा कि लंधौर की आंखोंमें ललाईदौड़ी हवास बदले एकदफ़ाहाथबढ़ाकर उन मोरोंमेंसे एक उखाड़कर अपनी बग़लमें चुरालिया लंधौर कनखियों देखकर कहा कि यजदवरद यहक्या करताहै मोरको क्योंझोली में धरताहै आंखमारके कहनेलगा कि चुपरह ऐसा न हो कि जिसमें कोई सुनले या औरकोई देखे लंधौर इसबातपर बहुतहंसा कि यह तो अद्भुत मनुष्यहै कि मेराहीतो माल चुराताहै और मुझीको उड़न घाइयां बताताहै कि चुपरह ऐसा न हो कोई सुनले या कोई देखले बादशाह ने कहा कि सुनतो यजदवरद चीजतो मेरीहै दूसरेकेसुनने से क्या होगा मुझे चोरी किसकी है किंतु जोकि तेरी इसचोरी नेभी इससमय नयास्वाद दिखाया इसके बदले ये मोरभी तुझे मैंने दियाअब तो प्रसन्न हुआ अमरने सलाम करकेउनमोरोंकोअपने जेबमेंरक्खा और

कमलीकथरी के लेने के उपायमें हुआ खुसरोकी आंखबचाकर थोड़ी सी दारू बेहोशी की उसजेबसे निकाली और उसमदिरा में डालदी और उसमें से दो दो प्याला लंधौर समेत सबसभाके लोगोंको पिला दी एकक्षण न बीताथा कि सबकीआंखोंमें सरसोंफूलीसब अपने २ नशे मेंचूरहोगयेनशेकीतरंगमेंसबनेअपनेकोतालाबसमझकरभारीशब्दसेकहा कियारोतालाबबहुतबढ़ाहुआहैबुडडीलगा २ करकिनारेनिकलोझटपट तैर२कर किनारेपहुंचौ सबके पहिलेयहां तकलंधौरकूदाऔरमुंहकेबल गिरा उसकेपीछेसबसभाकेलोगअपने २ स्थानसेउछलेऔरतड़ाकपड़ाक अचेत होहो कर पृथ्वीपर गिरनेलगे अमरनेअपनाहाथ फैलायाजहांतक उसमें असबाबकि फर्शतकथाउठकेउसीझूलमेंभरीऔरअपनीराइलीबात कीबातमें अपनेडेरेपर आनपहुंचा और लूटका माललेकर गुप्तहोगया दैवयोगसेउससमयअमीरनेआज्ञादीकिदेखोतोअमरकहांहै कौनफिकर करता है देरसे गयाहै देखो तो लशिकर में है या कहीं बाहर गया है वेगजावो शिसकाम में मिलै उसेलेआवो लोग जो अमरके तम्बू में आये देखैंतो अधिकता से भांति २ का असबाब फैलापड़ा है उसमें पहिली दूसरीक्रिस्मचुनरहाहै उन्होंनेअमरसे कहा कि चलिये साहब किरांने यादकियाहैइसीभांतिसेआपको लानेकी आज्ञादीहै अमीर ने असबाब समेत बालायाहै बोला कि अच्छाभाई असबाब संभालूं तो चलताहूं तुम्हारेसाथही तम्बूसे निकलताहूं वह बोला कुछखबरहै मैं सबअसबाब समेत तुमको लेजाऊंगा नहीं तो साहब किरां तुमपर खफाहोंगे अमर असबाब समेत अमीरके पासगया अमीरने समझा कि इसका कहींवार लगगया हंसकर पूछाकि यह असबाब कैसाहै बोला कि हिन्दके बाद शाहने मुझे इनामदियाहै साहब क्रिरांको धीर्यहुआ उससमयतो असबाबको हवालातमें रक्खा प्रातःकालआदी सेकहाकिहिंदुस्तानकेबादशाहको हमारी ओरसे सलाम कहना और यह असबाब और जो मैं उसकेहित सौग़ाद देताहूं देकर यहसंदेशा कहना कि मालूम हुआ कि रातको अमर आपकी सभामें गया था उसका बयान यहहै किहिन्दुस्तानके बादशाह ने मुझेयह असबाब इनआम में दियाहै परन्तु जोकि उसकीबात और कामका मुझको विश्वास नहींहै कि उससे बढ़केकोई संसारमेंछली और मक्कार नहींहै इसनिमित्तसे इसअसबाबको मैंनेभेजा है और इससौग़ादको जो बहुतथोड़ीहै जोअंगीकार कीजिये तो मेरी बड़ी खुशीहोगी इसकालेलेना आपको उचितहै अमरनेजोकुछ बेअदबी कीहो तो मुझे खबरकरना कि मैं उसे दण्डकरूं आदी उस असबाबको छकड़ोंपर भरवाकर बादशाह हिन्दके निकटगया वहां लंधौरकीसभा का यह हाल हुआ कि जब सूर्य का प्रकाश हुआ तब सबलोग होश में हैआये अपनी सभाको उजड़ी देखकर पूछने लगा कि यजदवरद कहां

लोगोंने कहा कि हमको नहीं मालूम कि वह किधरको गया फिर लंधौर ने अपने गलेमें एक चिट्ठी बंधी देखी खोलकर जो पढ़ी मालूम हुआकि वह अमर था उसीसमय स्नानकरके पोशाक पहिनदरबारकी तय्यारी होनेलगी फ़र्शवालोंनेन्यायशालामें फ़र्शबिछाया नयेसिरसेफिर कमरे सजे इतनेमें हरकारोंने खबरदी कि मादीक़र्ब नामी नौशेरवांके यामाताका एलची आपकेलिये बहुत बस्तुलायाहै लन्धौरने कईसरदार आदीकी अगवानीलेनेके हेतभेजे वह सब जाकर आदीको साथ लेकर दरबारमें आये आदीने मस्तकझुकाके सलामकिया साहबक़िरानेजोकुछ कहाथा सुनाया और वह असबाब जो अमर उठालेगया था वह और सौग़ाद साहब क़िरांकीदीहुई बादशाहके आगे रखदी बादशाहआदी के विवेक पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अपने सिरदारों से सबके ऊपर बैठारा साहबक़िरांकी सौग़ाद भेजीहुई तो लेली और कहाकि हमने अमर का अपराध क्षमाकिया और हमारी ओरसे अमीर को सलामकरके कहनाकि अमरकी ओरसे हमको कोई कष्टनहीं पहुंचाहै बल्कि अमर की असली सूरत देखा चाहताहूं जो आप उसको असली सूरतमें मेरे पास भेजदेंगेतो मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा यह कह कर आदीको खिलअतदेकर बिदाकिया आदीने जो कुछ देखा सुनाथा अमीरके आगे वर्णन किया अमीरने कहाकि येबाबायज़दवरद तुमको बादशाहहिन्दने असलीसूरतसे बोलायाहैऔर असबाब तुम्हारेनिमित्त लौटादियाहै अमर अत्यन्त खुशहुआ और असबाब अपने तंबूमें रखकर लन्धौर की ओरचला मार्गमें अमरने देखाकि एकसमूह सौदागरों का जाताहै और उनकेपास बहुतअच्छे२ माल सौदागरीके हैं उनमेंसेएकके हाथमेंएकछुचलाखोंरुपयेका ऐसाहैकिकभीकिसीनेनदेखा नसुनाहोगा अमरभी सौदागरोंका भेषबनाकर उनके साथहोलिया जबवह समूह बादशाह की चौखट तक पहुंचा दर्बानोंने ख़बर की बादशाह उनका असबाब मांगभेजा लन्धौरनेजोकुछको देखातो बहुत प्रसन्नहुआ अपने दारोग़ाको बुलवाया और कहा जो मोल इसछुचकाहो इन सौदागरों को देदो और इनआम भी इसको दिलवादो इनको प्रसन्नकरके बिदा करो मैं अभी इसताजको अपनेशिरपर रक्खूंगा अमरने सुनकर कहा की पहिले ताजकी क़ीमत हमको मिले तब बादशाह ताज अपने शिर पर धरैं बादशाहने यह बात सुन ताज दारोग़ा को देदिया और कहा इसका मोल सौदागरों को देकर हमारे पासलावो मैं किसीकी बस्तु जबरदस्तीसे नहींलेताहूं मुक़ीम दारोग़ा ताजको सौदागरोंसे लेगया और मोलपूछनेलगा अमरनेउसके हाथसे लेकर कहाकि उजेलेमें देख-कर इसका मोलमैंकहूंगा बादशाहोंका दरबारहै यहां देखभालके लेन देनकी बातेंकरूंगा मुक़ीम बोलाकि बहुत अच्छाहै मैं तुम्हारीहीकही

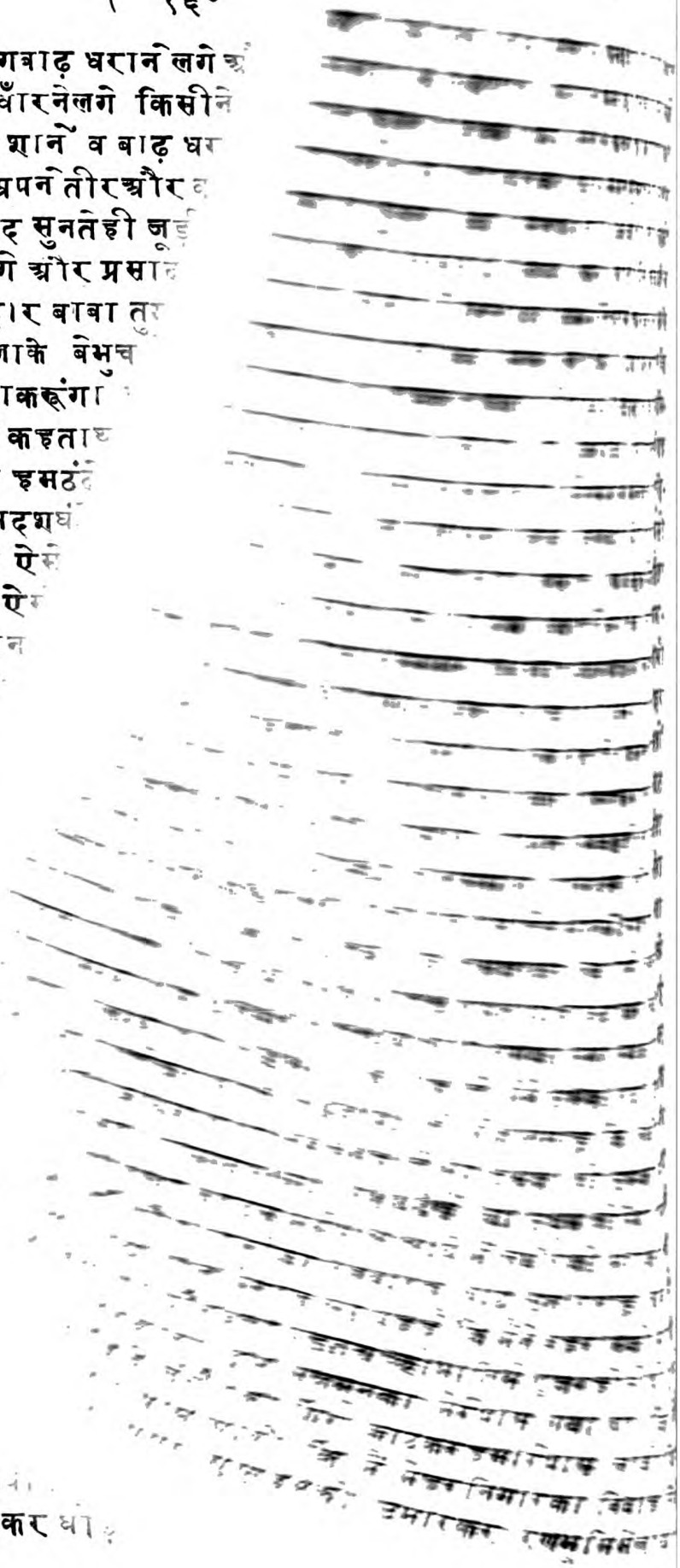
क़ीमतदूंगा अमर सभासे निकलकर आसमानकी ओर देखकर कहने लगाकि क्या बुराबादल उठाहै कुछ आंधी की अवाईहै धुन्धछारही है यहकहकर एक ओरचला और झटपट ताज लेकर भागा सौदागर और शाहीनौकर आसमानके चारों ओर देखकरकहनेलगेकि ये भाई कहीं चिह्नभी बादलका है इतना झूंठ क्यों बोलताहै फिरकरजो देखा तो जानाकि वह ताजलिये भागाजाताहै और बहुत दूर निकलगया है जल्द यह ख़बर बादशाह को पहुंची और सेनामें बिदितहुई बादशाह आप एक हाथीपर बैठकर उसके पीछे हाथी दौड़ाताहुआ चला और अमरको जाकर रोका अमर एक झाड़ी की ओर भागा उधर राह न थी अमर खड़ा होकर इधर उधर देखने लगा देखा तो एक झोपड़ा उसेसूझ पड़ा उसमें एक मनुष्य चक्की पीसरहा है झट पट उसके घरमें जाकर उससे कहनेलगा कि तुझे कुछ मरने जीनेकी ख़बर है हिन्द के बादशाहने एकस्वप्नदेखा था हकीमोंने उसे बिचार करकहाहै किजो किसी चक्कीवाले के शिरकी खाल नक़ारे में मढ़कर बादशाह अपने हाथसेबजावेतोस्वप्न केदुःखमें छूटजाय सोतेरेपकड़नेको दौड़ेआतेहैं वह बिचारा सुनकरघबड़ागया किमुफ़तमें जानगई घबराकर अमर से पूछने लगा किमैं किसभांतिसेइनअन्याइयोंकेहाथसेबचूं और थोड़ी जिन्दगी केदिनटेरकरूं अमरनेकहा कि अपनी धोती मुझेदे किमैं पहिनकरचक्की पीसनेलगूं तेरीजानबचनेकाउपायकरूं तूइसफौजमें बुड्डी लगाकर बैठ रह जो कोई आवेगा मैंउसको जवाबदेलूंगातेरेघरसे होलाकरके टाल दूंगाउसनेजानाकि मानोहमारा नयाजन्महुआ अतिशीघ्र धोतीछोरके अमरको देदी अमरने पोशाक अपनी उतारके चुरालो और वह चक्की वाला नंगाझटपट फौजमें कूदपड़ा और दबकर बैठरहा अमरने उस धोतीको बांधकर चक्कीपीसना शुरूकिया लंधौरहाथी परसे उतरकर उसचक्की वालेके घरमेंघुसा किऐसीही सूरतकाआदमी अभी तेरे घर में आयाहै सचबतावहकहांछिपाहै अमरनेकहा कि फौजमें बुड्डीलगा कर बैठाहै उससे देखरहाहै लन्धौरकपड़ाउतारकर फौजपर रखदिया और आपउस फौजमेंकूदा और अमरचक्की से उठकर लन्धौर के कपड़े उठाकर लेभागा ख़ज़ानची से जोमिलापहुंचा उससे कहाकि बादशाह यहचिह्न दियाहै कि दिखाकर वेगदोसौ रुपयेले आवो ख़ज़ानची ने दोसौरुपये उसके हवाले किये अमरने लेलिये फिर अपने डेरेकी ओर का मार्ग लिया और रुपये अपनी झोलीमें भरलिये अब वहां लंधौरका हालसुनिये कि उस चक्की केपीसने वाले को फौजसे लंधौर निकालने और ऊपर उछालने लगा उसने फौजके पत्थरोंपर अपने शिरकोदेमारा और शिरको घायल कर फिर कहनेलगा कि अब मेरे शिरकी खाल ख़राब होगई और किसी काम की न रही किसी दूसरे चक्की वालेको

ढूंढ़कर उसके शिरकी खाल का नक्कारा मढ़वाकर बादशाहको दे और अपनी इच्छापूर्वक इनआमले कि बादशाह उसको बजावे स्वप्नका दोष मिटावे लंधौरने आश्चर्य किया कि यह क्याबकताहै जान पड़ताहै यह विच्छिप्तहै जोऐसी बेमतलबकी बातेंकरताहै जबवह चक्की पीसने वाला फौजके बाहरआया लंधौरने देखा कि यहवह मनुष्यनहीं है इसमें और उसमें बड़ाभेदहै बाहर निकलकेलोगोंसे पूछा कि इधर कोई आदमी गयाहै इसघरसे कोईआदमी औरभी निकलाहै लोगोंने कहा कि औरतो कोईनहीं निकलाहै परंतु जिसमनुष्यको आपने अपने बस्त्र चिह्नदेकर भेजाथा और दोसौरुपयेदेनेको कहाथा सो खुजानचीसे रुपया लेकर इधर गयाहै नहीं मालूमहै कि कहांरहताहै बादशाह समझगया और उसकी चालांकी और मक्कारीपर प्रसन्न होगया पोशाक बदलकर अकेला सीधा अमीरके डेरेकी ओर चला अमीरको हरकारोंने खबरदी कि लंधौर हिन्दका बादशाह अकेला हाथीपर चढ़ाआताहै औरकोई मित्र स्नेही व अधिकारी सिपाही साथनहींहै साहब किरांने कहा कि आनेदो और सब चुपके होरहो जब लंधौर हाथीपरसे उतरा औरअमीरके तंबूकी ओर चला साहब किरां तंबूसे उठकर अगवानी करके लेआये और जड़ाऊ चौकीपर उसे बैठारा और उसकी प्रतिष्ठाके अनुसार उसको शिष्टाचारकिया और रंग बरंग की सभाकी लंधौर अमीरका शिष्टाचार देखकर तन मनसे प्रसन्न होगया और बड़ी प्रशंसाकी और पूछा अमर कहांहै उसको इससमय बुलवादूये परंतु अपनीही सूरतमें उसे मँगादूये कि जल्दआवे मुझे उसके देखनेकी लालसाहै मेरे निकटजब जाताहै भेष बदलके जाताहै और नया चुटकुलाकर आताहैअमीरने आज्ञाकीकि वेग अमरको लावो आज्ञा पातेहीअमरआया औरजो उसका रूपधा उसीरूपसे हाजिर हुआ लंधौरको सलामकिया और अपनीचौकी पर बैठगया मदिरा बांटनेवाले सज धजके सभामेंआये और प्यालोंमें मदिरा भरकर फेरनेलगे पहिला प्याला साहबकिरांने अपने हाथसे भरकर लंधौरको पिलाया फिर आपने पानकिया जबनशा जमीआखों में अरुणाई आई लंधौरने अमरको गानेकी आज्ञाकीअमरने दुतारा मंगाकर मिलाया और ऐसीसमयकी रागिनीगाई कि सकल सभा मोहगई और लंधौरने मोतियोंकी माला गलेसे उतारकर अमरको देदिया औरकहा कि वह ताजभी हमने तुमको दियाफिरसाहबकिरां और लंधौरसे मित्रताकी कुछबातें गुप्तहुईं जब सूर्य अस्तहुआ हिन्द के बादशाहने बिदाके समय अमीरसे कहा कि हमारी प्रार्थना आपके मनमें कुछ ठनी या नहीं कहा कि आप स्नेहकी रीतिसे करतेहैं मुझे अपनी मित्रतासे अहसान मन्द बखानतेहैंऔरमुझेसप्तद्वीपकेबादशाहने

आपसे लड़नेको भेजाहै यहस्थान बहुत लाचारी काहै लंधौरने कहाकि इस मनोर्थ को आप छोड़दीजियेमिलाप में भलाईहै या कि लड़ाई में नौशेरवां ने आपको मुझसेलड़ने नहीं भेजाहै या उसने आपसे छल कियाहै वह आपका शत्रुहै जब कोई उपाय न चला तब उसने आपसेयह उपाय कियाहै इसनिमित्त मैं आपसे आश रखताहूं कि मुझे अपने साथ लेचलिये कि मैं उसको मारकर आपको गद्दीपर बैठादूंगा चैनसे राज्य कीजिये और अपनी प्रियाको बगल मेंलेकर रात दिन आनन्द कीजिये अमीरने कहाकि मैंने तुम्हारे मारनेका बीरा उठायाहै मैं किस भांति से उसमें बुराई करूं लंधौर ने तलवार ईंचकर अमीरके आगे रखदी और शिर झुकाकर कहाकि जो यही मनोर्थ है तो मेरे शिरको काटलीजिये और बेअमके नौशेरवां के आगे रख दीजिये साहबकिरांने लंधौर को गलेसे लगालिया और उसके मदीनगी प्रशंसाकी और उसका मन प्रसन्न किया और कहा कि यह काम बधिकों काहै युद्धकी दुन्दुभी बजवाइये और रणभूमिमें आइये उसस्थानमें जो कुछ होगा वह होरहेगा लंधौर बोला कि अच्छा ईश्वर मालिकहै जो आपका यही मनोर्थहै तो नकारा युद्धके बजवाइये और सेनाको खबर पहुंचाइये अमीर नेकहाकि पहिलेआप अपने कटकमें युद्धका नक़ारावाजनेकी आज्ञादीजिये प्रथम आपही की ओर से सजधजकोजावे फिर मैंभी अपनी सेनासजकरदुन्दुभी बजानेकी आज्ञादूंगा लंधौरने लाचार होकरअपने यहांआकरनकारा बजवाया साहब किरांनेभी उसके धौसेका शब्द सुनकर अपनासिकंदरी नक़ारा बजानेकी आज्ञादी और कहा कि नक़ारा पर चोब पड़े हुक्म होतेही नक़ारावालेने नकारेपर चोब डाली उसके शब्दसेपृथ्वी डगमगा उठीजोलोग शूरबीरथे उनकेमन बढ़ गये कि कल तलवार बांधनेको मिलेगी लड़ाईमें अत्यन्त सुख पावेंगे किसीको मार किसीका उरबिदार लाशोंसे खाईं भर आवेंगे यह बिचार स्नानकरपोशाक बदलीपानचबा२ कर परस्पर में बातें करने लगे कि देखिये कल किस की बडाई प्राप्त होतीहै और सब बगलगीर होकर मिलने लगे कि भाई आजुफागुहै सब लोग गले मिल लीजिये कलमौत अपना बेड़ा सवाँरेगी देखिये मिलने का समय दे या न दे अभी स्नेहसे आनन्दप्राप्त कीजिये देखिये कौनघायल होताहै और कौन अपनी जान खोताहै बाजोंने अपनी तलवार में डोरा डलवाया कि शत्रुकी गर्दनकाडोरा न बचे बाजोंने तलवारकापट्टा चढ़वाया कि जिसमें शत्रुकी नस व पुट्ठालगा न रहै कोई कहताहै कि कल अपनी तलवार की चाल ढाल देखना है कोईबोलाकिअस्फहानकी तलवार का मुह लाल दिखाता है कोई कहता ईश्वर हमारी प्रतिष्ठा रखनेवालाहै दो सर्दारों की लड़ाई में उसीका भरोसाहै कोईकहताहै कि हिंदुस्तानकी तलवार और हिंदुओंका पराक्रम दीखनाहै औरअ-

पने २ अस्त्रोंपर लोगबाढ़ धरानेलगे और हथियारोंको देखने भालनेलगे बरछी आदि सब सवाँरनेलगे किसीने तलवार किसीने कटारऔरकोई भालाकोई बल्लम पर शानें व बाढ़ धरवाने लगे जिसमें शत्रु पर लागतेही बेगि प्राणहरे कोई अपने तीरऔर कमानदुरुस्तकरनेलगेऔरजोनामर्दथे उनको नकारेका शब्द सुनतेही जूड़ी आई और मुंहसूख गये रोरोकर आशीर्वाद मांगनेलगे और प्रसाद माननेलगेकि जोबिना युद्धके मिलाप होजावे तो आके मदार बाबा तुम्हारी छड़ियां चढ़ावेंगे कोई बोला कि मैंपीर जलीलोंपर जाके बेभुचड़ी की कड़ाही करूंगा किसीने कहाकि मैं पीर अलूलेका मेलाकरूंगा इसीभांतिसे प्रत्येक नामर्द मानता था और अपने साईससे कहताथा कि देखना भाई प्रातःकाल न होने पावे तुम घोड़े को कसना हमठंढे २ तारों कीछांह में सवार होकर अपने घरकी राह लेवेंगे हमदशघंटे सेनाके साथ युद्धक्योंकरैंअमीरकोतोमलिका सेलव लगीहै हमक्यों ऐसे स्थान में सुफत जानदें साईसने कहा कि साहब सिपाही होकर ऐसीबात जीभपर लातेहौ बर्षोंसे सुफतमें टरमहा खातेहो समय पर जान बचावोगे तो लोग क्याकहेंगे साथवालोंको क्या मुहदिखावोगे मरदोंकाकाम शत्रुको पीठदिखानानहीं इससमय बीरता दिखानेकाकामहैयाघरचलेजानेकाजोऐसाकरोगेतोसाथकेजवानआपको लज्जित करैंगे सभामें बैठनेसेठेनादेंगे आपका जीना उनके हाथोंसे कठिन होजावेगा और अप्रतिष्ठा होगी यहचर्चा सबजगह बिदितहोगई तो आपको चाकरी मिलना दुर्लभ होजायगाऔर किसी रईसके पास आपकी आबरू न रहेगी जो ऐसा हृदय रखते थे तो क्यों सिपाहगरी में नाम लिखवाया ऐसा समय क्यों अंगीकार करलिया यह आपको क्यों कर मालूमहुआ कि मैं माराही जाऊंगा जोआपके वैरीही मारेजावें देखिये घोड़ेको जो दना दिया जाताहै जिसको भाग्यमें दोटुकड़े होना नहींहै वह चना समूचा चक्कीसे निकल आताहै ईश्वरके हेत दृढ़ताको न त्यागिये बढ़ २ के तलवार मारिये मर्दाना वार बैरियों पर कीजिये काम बनपड़े तो मालिकसे पारितोषिक लीजिये आजएक घोड़ाहै तो कल दो घोड़े होजावेंगे और आगे जो और काम बनपड़ेगा तो आपकी नौकरी और अधिकार बढ़जावेगा झुंझुलाकर साईस कोगालियां देनेलगे और कहनेलगे कि अबे तेराक्या जावेगा बड़ासा जीतो हमारा जायेगा तुझ पर क्या कष्ट आवेगा तूभी तो चाहताहै कि जो हम लड़ाई में युद्ध करैं और वहां मारेजावें तू हमारा घोड़ा और बस्त्र लेकर सज धज बना के सवारोंमे नाम लिखादे और मजेसे तनखाहलेवे मुझसे कहताहै कि इस उत्तम देहको काटा करो अम्माजान और बड़ी भावी साहबाको बहका कर उनका गहना बेचवायाऔ अपनेपरोसीसेरुपयालेकर घोड़ामोललेंगे और बखशीजीसे मिलकर घोड़ेकेदागकरवाया हमको उपाधिमें फँसाया

यद्यपि हम कहते थे कि हमको लोहू देखकर जाफ़ आजातीहै चिड़ियां शिरपरसे उड़कर निकलतीहैं तो डरकेमारे जान सनसनाती और दम घबराता है कि कहीं गोली न लागै कि घोड़ा हथियार हाथसेजाय यह रणभूमि और लड़ाई भिड़ाई को हमकब जानतेथे लड़कपनसेतो हमको अम्माजान विविधप्रकारसे लाड़करके पालाहै कभी सिपाहियों की संगतिके निकट जानेकी इच्छा नहींकी सिवाय सितार व शतरंज व गंजीफ़ा व नाचरंग आदिके कुछकाम नहींरहा अब सवारोंमें नाम लिखवाकर घरके बाहर निकला अभी विवाहके दोचार वर्षनहींबीतेहैं जो सूरत औरही हुईतो वह बिचारी क्या कहेगी उठती जवानी किसके शिर रहेगी परिश्रम करके खाते बेलकाढ़ते और नैचा बांधते शामकोदो पैसे घरलाते माता औरभाभीकेपास बैठकरखुशहोतेरातको अपनीस्त्रीके पास टांग फैलाकर चैनसे नींदभरके सोते और शब्दतो कोई उससमय फेंकेगा जोहमको इससेनामें देखेंगे हमको अपनाजी भारू नहीं है कि यहांसे निकलकर फिर इस अभाग्य समूह सिपाहगरीमें नौकरी करें या फिर इसमें नाम लिखवानेकी इच्छाकरें और जो तूने मुझे पुरचक दी उसे मैंने समझली तू किसी भांतिसे जान बचनेदे तू नहीं जानता कि जबकभी ऐसी वैसीलड़ाई हुईहै तो हमभागके पछाड़ी रहेहैंकिसी ने हमारीसूरत देखीनहीं हां एकबातहै जोतू खैरखाही जानता है और नमकहलाली बतलाताहै तोतू अपना अगोंछा लंगोटी हमको देकल हम खारा खुरपा लेकर तेरे बदले घास छील लावेंगे शामको घोड़ेके आगे डालदेंगे और तुझे रोटी बनाकर खिलादेंगे तूहमारे कपड़े पहिन कर हथियार लगाके घोड़ेपर चढ़ और हमारे बदले नौकरीकर आ लड़ाईमें मर्दोंका साथदेना खिलअत और इनाम जोमिले उसे तुमहीं लेनासंक्षेपयहहै कि अर्थात् कायरकूरसब अपना २ उपायकररहेथे और जो योधा और बहादुरथे वे ईश्वरसे वर मांगतेरहे कि ईश्वर कल इस रणभूमिमें हमारी लाजरखना भलाईहै और कायर रातही को भाग निकले जब सूर्य्यके प्रकाश होनेका डंकाबजा इधरसे साहबकिरां नमाज पढ़कर योधों समेत और उधरसे लंधौर सेनालेकर रणभूमिसें आया और सेना जमाई और लड़ाईकरनेपरउतारूहुयेसफाईवालोंनेमैदानको झाड़ी दृक्षआदिसे साफकिया और बेलदारोंने ऊंचीनीची पृथ्वीको बराबर किया और सक्कावालोंने मसकोंसे धरतीको छिड़कदिया सब प्रकारसे चौदहपंक्ति होके दोनोंओर की सेना रणभूमिमें खड़ी कीगई अभी किसी ओरसे लड़ाई नहींमांगी गईथी कि सामनेसे बज्रतकाला एक बवण्डल उठा जब वायुने उस रेणुको स्वच्छकिया चालीस झंडे देख पड़े सम्मुखकेलोग सावधान हुये मालूमहुआ कि चालीश सहस्रसवार की इस सेनामें भीड़है जिससमय वह कटकसामनेआया साहब किरांने



पने २ अस्त्रोंपर लोगबाढ़ धरानेलगे अ
बरछी आदि सब सवाँरनेलगे किसीने
भालाकोई बल्लम पर शानें व बाढ़ धर
बेगि प्राणहरे कोई अपने तीरऔर क
उनको नकारेका शब्द सुनतेही जू
आशीर्वाद मांगनेलगे और प्रसा
होजावे तो आके मदार बाबा तु
मैंपीर अलीलोंपर जाके बेभु
मैं पीर अलूलेका मेलाकरूंगा
और अपने साईससे कहता
तुम घोड़े को कसना हमठं
घरकी राह लेवेंगे हमदग
सेलव लगीहै हमक्यों ऐ
हब सिपाही होकर ऐ
खातेहो समय पर जा
मुहदिखावोगे मरदों
दिखानेकाकामहैया
लज्जित करेंगे सभा
होजावेगा और
आपको चाकरी
पकी आबरू न
नाम लिखवा
कर मालूम
देखिये घो
नहींहै व
त्यागिये
बनपडे
घोडे
औ
क
र
आर
सवारों
उत्तम देहको
कर उनका गहना
और बखशीशसे मिलकर

के घोड़े के साथ किसी के भेषमें आया गुस्तहमने
आवाज़ दी कि लंधौर सादान का पुचकहां है
है मेरी तलवार का काट देखे मेरी मार अपने
हाथीको रेल कर गुस्तहम से कहा किया बेफा-
वार कर गुस्तहमने तलवार ईंचकर लंधौर के
या लंधौरने उसको गदापर रोंका तलवार ने दो
लंधौर ने गदा का एक वार उसपर लगाया गदा
पड़ने पाई पर गदाकी डांड़ी की झपट गुस्तहम की
थोड़ी पशुलियां उसकी टूट गईं सब बहादुरी धूरि में
औंधा मुंह होकर धरती पर गिरपड़ा और अचेत
वारोंने चालाकी करके गुस्तहमको उठालिया और
डंका बजा दिया लंधौर ने अमीर की ओर देखकर
कि अब कल आपसेभी समझलेंगे आपभी तलवार का
ारने कहाकि इससमय कौन मना करता है आज का
त छोड़ो ईश्वरका नाम लेकर लड़नेपर कमर बांधो वह
यही भलाई है कि कलही पर यह युद्ध उठ रहै दोनों
बनी फिरनेकामनोरथछआअमीर की सेना अमीर समेत
आई और लंधौर अपने घर गया और गुस्तहम रात को
ड़में छिपरहा और मनमें यह बिचारकिया कि जो हमजा
ारकर फिरैगा तोअवश्य इधरसे आवेगा उससमय गांड़ासे
मारलूंगा और उसकी सेनाको पराजय करूंगा यह न
हमजा बड़ाबली है हमारे मारने योग्य नहीं है ॥

हमज़ाके साथ लन्धौर कायुद्ध करना और लन्धौरका आधीन होना ॥

नी इस युद्धके वृत्तान्तका काग़ज़पर इस प्रकारसे वर्णनकरती
इतिहासयुद्धका हिंदुस्तानके दो सिंहोंकी लड़ाईका बयानहै
हमने लंधौर कीगदासे पशुलियां तोड़वाकर रणभूमिसे भागकर
खोहकी राहली परंतु साहबक़िरां रातभर अपनी प्रतिष्ठा
हेतु आशीर्वाद मांगता रहे एक योधा दूसरे को ललकारता था
परीक्षाका दिनहै यह रणभूमि योधोंके हेतु सोनेकी कसौटी है
कौन तलवारकी बाढ़सहताहै कौनअपना भेषबदलताहैकिसका
पराक्रमके देशपर जारीहोता है किसकी प्रतिष्ठा का पल्लाभारी
है कल सब क़लई खुलजायगी यहीचर्चा लन्धौरकी सेना में मचा
जिससे परस्पर में लाग डाट थी हांकमारता था कि कल बांको की
करतियां देखेंगे देखिये कौन नदीरूपी पराक्रम में ग़ोतामारता है
न तलवार के धारपर खड़ा रहकर उसनदी में ललकार कर तैरता
कौन शत्रुओंकेसाथकुश्तीकरके उनके शरीरकीमौतका तूफानदेखाता

देखा कि पहिली लड़ीमें गुस्तहम अस्फंजरी का पुत्र झंडा के तलेखड़ाहै सेनाका मार्ग देखरहाहै अमीरने अमरको दिखाया अमर अपने मनमें एक चुटकुला सोचकर अपनी सेनासे अलग होकरगुस्तहमकी कटककी ओरचला और वहांपहुंचकर अदब समेत गुस्तहम को सलामकी और अपना चुटकुला किया गुस्तहम बोला कि कहो खाजे अमर अच्छेतो रहे बहुत दिनोंकेपीछे देखपड़े अमर बोला कि अच्छे क्या खाकहैं न जीतेहैं न मरतेहैं जिन्दगीका दमभरतेहैंइस अरबवालेकी नौकरीकरके अपनी मिट्टी खराबकी सुफ्तमें बला अपने शिरपरलीगुस्तहमबोला कि भलाईतोहै आजकल हमजा नौशेरवांकी दामादीकेआशमें ऐसाअभिमानकरकेघोड़ेपर सवारहै कि किसीका आदरनहीं करताहै यह समझताहै कि संसारमें नतोकोई मेरेसमान मल्लहै न बलवान न बुद्धिमानहै यातो मुझे खुशामद करके दंगलपर बैठाताथा या अब कुरसी पर बैठने काभी मनोरथ नहीं रखताहै अब कुछभीमेरी वहां प्रतिष्ठा नहींहै मैंने जैसीभांतिसे परिश्रम कियाहै वैसा जब कोईकरैगा तब मालूमहोगा औरउसीसमयमेरीखैरखाहीकामजामालूमहोगाअबमेराभी यही मनोरथहैकिइसकीनौकरीछोड़दूं औरकिसीओरकीराहलूं ईश्वर की सृष्टि तंगनहींहै औरमेरा पैर लंग नहींहै एकनहींतो आधी कहीं मिलेंगी इस उपाधिसे मेरीजान तो बचेगी गुस्तहमबोला यह क्या बात है तुमजहां रहोगे वहां तुम्हारे निमित्त सबकुछहै जो मुझको प्रतिष्ठा प्राप्त करावो तो मैं तुमको जानसमान मानरक्खूं और तुम्हारी सेवा अच्छीभांतिसे करूंअमर बोला कि इसीहेतु मानमैंतुम्हारे निकटआयाहूं परंतु एक काम कीजिये कि हमजाको लंधौरसे लड़ने न दीजिये उचित यहहै कि आप सबसे पहिले अपनाघोड़ाकुदाकर लंधौरसेलड़ाई मांगे अमीर मुंह देखकर रहजाय और उसकी सेना सबकीसब लज्जित होजावे लंधौर को कुछभी बल नहींहै मैंने उसकी गदा देखली एक लकड़ीपर लोहेका खोल चढ़वाया है मैं जानताहूं कि लंधौरकेसमान संसारमें कोईकायर औरनिर्बलनहींहै सो हमजा जो उसको मारलेगा तो नौशेरवांका दामादबनेगा उसमेंदेखें क्या उधम होतेगा गुस्तहमने कहा कि अच्छाहुआ जोतुम मेरेपास आये मैं लंधौरको मारकर हमजाकोभी मारताहूं और दोनोंको तलवारके घाट उतारताहूं अब तुमसे छिपा क्याहै जो कुछ हाल मेराहै सो यहहै कि मैंने बहरामको मारकर जाबुलमें बासकियाथा औरवहां बहुतअच्छीभांतिसे गुजरहोतीथी इतने में नौशेरवां का परवाना इस मजमूनका मेरेपास गया था कि बेग सरंदीपमें जाकर पहिले लंधौरका शिर काटकरहमारेपास लावोफिर हमजाको मारकर मेरे पास आवो कि मैं मेहरनिगारका बिवाह तेरे साथ करूंगा अन्तको अमर गुस्तहमको उभारकर रणभूमिमेंलाया

और आपभी गुस्तहम के घोड़े के साथ किसी के भेषमें आया गुस्तहमने अपने घोड़े को बढ़ाकर आवाज़ दी कि लंधौर सादान का पुचकहां है यही गेंद यही मैदान है मेरी तलवार का काट देखे मेरी मार अपने ऊपर ले लंधौरने अपने हाथीको रेल कर गुस्तहम से कहा किया बेफायदा बकताहै अपना वार कर गुस्तहमने तलवार ईंचकर लंधौर के शिरपर एक वार किया लंधौरने उसको गदापर रोंका तलवार ने दो दांत निकाल दिये लंधौर ने गदा का एक वार उसपर लगाया गदा तो पूरी उसपर न पड़ने पाई पर गदाकी डांड़ी की झपट गुस्तहम की पसुलियों में लगी थोड़ी पशुलियां उसकी टूट गईं सब बहादुरी धूरि में मिलगई और वह औंधा मुंह होकर धरती पर गिरपड़ा और अचेत होगया साथके सवारोंने चालाकी करके गुस्तहमको उठालिया और जल्दीसे फिरनेका डंका बजा दिया लंधौर ने अमीर की ओर देखकर मुसकराकर कहाकि अब कल आपसेभी समझलेंगे आपभी तलवार का स्वाद देखेंगे अमीरने कहाकि इससमय कौन मना करता है आज का काम कलको मत छोड़ो ईश्वरका नाम लेकर लड़नेपर कमर बांधो वह बोला कि आज यही भलाई है कि कलही पर यह युद्ध उठ रहै दोनों ओरसे दुन्दुभीबजी फिरनेकामनोरथहुआअमीर की सेना अमीर समेत अपने डेरेपर आई और लंधौर अपने घर गया और गुस्तहम रात को भागकर पहाड़में छिपरहा और मनमें यह बिचारकिया कि जो हमजा लन्धौरको मारकर फिरैगा तोअवश्य इधरसे आवेगा उससमय गांड़ासे उठकर उसे मारलूंगा और उसकी सेनाको पराजय करूंगा यह न समझा कि हमजा बड़ाबली है हमारे मारने योग्य नहीं है ॥

अमीर हमज़ाके साथ लन्धौर कायुद्ध करना और लन्धौरका आधीन होना ॥

अब लेखनी इस युद्धके वृत्तान्तका काग़ज़पर इस प्रकारसे वर्णनकरती है कि यह इतिहासयुद्धका हिंदुस्तानके दो सिंहोकी लड़ाईका बयानहै कि गुस्तहमने लंधौर कीगदासे पशुलियां तोड़वाकर रणभूमिसे भागकर पहाड़की खोहकी राहली परंतु साहबक़िरां रातभर अपनी प्रतिष्ठा रखनेके हेतु आशीर्वाद मांगता रहे एक योधा दूसरे को ललकारता था कि कल परीक्षाका दिनहै यह रणभूमि योधोंके हेतु सोनेकी कसौटी है देखिये कौन तलवारकी बाढ़सहताहै कौनअपना भेषबदलताहैकिसका सिक्का पराक्रमके देशपर जारीहोता है किसकी प्रतिष्ठा का पल्लाभारी होताहै कल सब क़लई खुलजायगी यहीचर्चा लन्धौरकी सेना में मचा था जिससे परस्पर में लाग डाट थी हांकमारता था कि कल बांको की निकबतियां देखेंगे देखिये कौन नदीरूपी पराक्रम में ग़ोतामारता है कौन तलवार के धारपर खड़ा रहकर उसनदी में ललकार कर तैरता है कौन शत्रुओंकेसाथकुश्तीकरके उनके शरीरकीमौतका तूफानदेखाता

है संक्षेप यहहै कि रातभर यह गुलगपाड़ा दोनोंओरकी सेनोंमें इन्हीं बातोंका परस्परमें चर्चारहा जबसूर्य्यने प्रकाश किया साहबक़िरांने बख्त व अख्त सजधज के स्याहक़ैतास घोड़ेपर सवारहुये नक़ीब और चोबदार विजय का आशीर्बाद ईश्वर से मांगनेलगे कमान तरकश एक कांधेपर रखकर दूसरेकांधेपर रक्खा ईश्वर की रचना की शोभा प्रकटहुई लौक़ हैरानकापुंज झंडाकी छाया शिरपरकिये हुये चला अमीर उसकीछाया तलेहुयेअबदायेंओरमुक़बिलबफ़ादारऔरबायेंओरसुल्तानबख्त पराक्रम काकिनारा चला और अमरअय्यार बारहसौ मक्कारोंके बीचमेंबख्तअख्त पहिन कंतूरा सोनहला और पांतावें सकरलातीको सजेसजाये गोफ़ना को कमरमेंबांधे तलवारकटार छूरीआदिहथियारबांधकर छःशब्दबारह स्थानचौबीसखाने अढ़ाई कोने नीचेमें कहताहुआ छलांगेफ़लांगे मारता चला और तीससहस्र सवार लोहेसे सजेसजाये परीकापरीजमायेसाथ अमीरके हुये उधर से हिन्दुस्तान का बादशाह लंधौर सादानका पुत्र सातलाखसवार बड़ेयोधा खुमाची,संदली,बंगाली ,करनाटकी,मरहटा, दक्खिनी,गुजराती,रांगड़ा, भील,सियारखोरा,काईन ,भोजपुरी,बुंदेला, राजपूत, मंदराजी, आशामी, बनाकी, भूटिया, फ़ोलादलोहेको पहिने, वैसवाड़ेके बैस अवधदेशके क्षची, ठाकुर, दिक्षित, पवांर,ब्राह्मण, सुकुल, तेवारी, दुबे, पांडे,चौबे, और बहुतेरे गवांर हथिया, छुरी, कटारी, सिरोही, तलवार, पट्टा, बाना, शेरबचा, क़राबीन, फ़िस्तोल, बर्छी, सांगलगाये हुये बक्तरबरक्त लेकर मस्तमतंग पर सवार जब दोनों सेना पांति २ जमाईगई उनकेबीचोंबीचमें यमदूतोंने अपना तम्बू खड़ाकिया साहबक़िरांने अपने घोड़ेकी लगामली और सिंहसमान लंधौरके सौंह आकर कहा कि ये लन्धौरबादशाह मुझको तुमसे काम तुमको मुझसे कामहै और लोगोंके मारेजानेसे क्या प्राप्त होगा यह समझने का स्थान है निसगुण में तुमको दावाहो वह तुमकरो अपने मनका अभिलाष मिटालो लन्धौरने कहा कि येसाहबक़िरां जो मैंने पहिले तुमपर वार कियातो तुम्हारेमनकीअभिलाष मनहीमेंरहजावेगीतुम्हारी मनोकामना न प्राप्तहोगी पहिलेवार तुमकरो अपनी बाढ़ि दिखावो साहब क़िरांने कहा कि मेरे गुरूने यह नहीं बतायाहै ॥

रणभूमिमें युद्धहोनाअमीरऔर लन्धौरसेऔरतलवारमारना अमीरका लन्धौरकेशिरपरऔर तलवारकेघावसेलन्धौरके घोड़ेकीगरदनअलगहोकरधरतीपरगिरनाऔरघोड़ेका मरजाना ॥

साहबक़िरांने कहाकिजबतक तीन वारतुमनकरलोगे तबतकमैं अपनी वारनहींकरूंगा अपनाहाथभीतुमपर न लगाऊंगा जोकि लन्धौरसाहब क़िरांपर नेहकरता था इसमिमित्त गदापरहाथ नडालकरभालासाहब क़िरांपरलगायासाहबक़िरांने उसकेभालेकीनोकअपनेभाले परकीएक दूसरेसेभालाकीलड़ाईहोनेलगी जबसौ२नोकेंभालेकीचलगईं और चोट

किसीपरनआई और घोड़ाभीपसीनामेंडूबगयासाहबकिरांने उसके भाले को गांठकर एकडांड़ी ऐसीमारी कि भाला उसके हाथसे छूटकर दूर जागिरा और वायुकेसमान उड़गया यद्यपि भालाकी अनी लन्धौर की छातीमें पारहोगई लाजमें डूबकर अपने चेहरेको पीलाकरदिया परंतु अपनेकोसँभालकर प्रशंसाकरके बोलाकि ऐसाहबकिरांभाला लगानेका ढंग केवल संसारमें ईश्वरने तुम्हींको दियाहै जोमैं योधा और मर्दहूंगा तोफिर आजसे कभी भालेको हाथमेंनलूंगा यहकह गदालेकर बोलाकि साहबकिरां अबभी मिलापकापट खोलोदेखो युद्धसेसलाह अच्छीहोती है नाहक तमामउमर तुम्हारा शोक मेरे हृदयमें रहेगा मुझेरंज अपना न दो अमीरने कहा कि यहसमय लड़ने मरनेका है शीख वस्नेहकानहीं है मैं पहिलेही कहचुका हूं कि अपनी बातसे लाचार हूं नौशेरवां का अब तो आज्ञामानक हूं उसका हुक्मकरनेवाला हूं लावो देखूंतो तेरी गदा की कैसीमारहै लंधौर लाचार होकर दोनों हंधामिलाकर गदाको तोलकर दोहत्थड़ साहबकिरांके शिरपर मारी साहबकिरांने ईश्वरका नामलेकर गदाको ढालपर गांठा उसपर कुछ धमकभी न लगी यद्यपि अमीरकेशरीरमे पसीनानिकलआया परन्तु इजरतआदमके बाजूबंदकी तासीरसे बाजूटेढ़ी न होनेपाई लंधौरने अपनेमनमें कहाकि गदाजिसपर लगी उसकी हड्डियां चकनाचूर होगईं परन्तु साहबको कुछ धमक भी न मालूमहुई त्यौरीपर मैलभी न आया दूसरीवार अत्यंतबलके साथ गदा अमीरपर लगाई यद्यपि साहबकिरांने सिकंदर के समान उसकोरोका परंतु छठीकादूध यादआया लंधौरने तेहराई को फिर गदाझुंझलाय के लगाई और इस बलसे उसगदाको हनी कि जो कांसेके पहाड़पर पड़ता तो चूर २ होजाता और जो साधारण गिरिपर मारतातो उसमेंसे पानी बहनिकलता साहबकिरांने उसको भी रोका परंतु तुरंग स्याहकैतास धरणीपर चारोंपैर से चित्तगिरपड़ा और अमीर गर्दकेबगोले में पड़गये इसधमकसे जो शरीरमें गदापड़ी उससे गर्मी में अटगये लंधौर के मुखसे निकलगयाकि आपके मुखका रंगबदलगया कि वहमारा और तलेगिरा दिया बलवंत को निर्बलकिया परंतु अफसोसहै कि साहबकिरांकीयुवा अवस्थाका मैंने इसीकारणसे बार २ मनाकिया परइनकी मीचनेनमानने दिया यह कहकर अमीर के पास हाथीपर से उतरकेगया जाघें और हाथमलकर कहाकि ऐ बादशाह तेजस्वी जोजीताहो तोबोलकि जिससे मेरीजान में जानआये और जो मरगया होतो प्रलयके पीछे मेरा तेरा मिलापरहै मुझे तेरा अति शोक व्यापाहै साहबकिरां जो होश में आये ताजियानादाऊदी स्याहकैतासकेऊपरचमकाया घोड़ाचारों सुमझाड़ कर उसस्थान से अलग जाखड़ाहुआ और खच्छ निकलआया अमीर ने कहाकि ऐबादशाह हिंदुस्तानके किसकोमारा और किसको तलेकिया

और कौनबलवंत और किसको निर्बलकिया मैंतो अभीजीताहूं एकवार और अपना लगाले अपनेमनको हौसमिटाले अभी तो युद्ध का आरम्भ हुआहैईश्वरजिसकीलाजरक्खे उसकीरहै इतनाक्योंअधीरहोताहैकिसी मर्दसेकभी काम न पड़ाहोगा ॥ चौपाई ॥

द्विजदेवता घरहि के बाढ़े । परेउ न कबहुं सुभट रण गाढ़े ॥

लंधौर ने अचम्भा माना और हाथीपर से उतरकर घोड़ेपर सवार हुआ और तलवारबढ़ीनी बाढ़िदार खींचकर अमीरपर लगाई अमीरने लड़ाऊरेशम सप्तरंगमें गूंधीहुई ढालको आगेकिया और उसकीतलवार वाराल को उसपर गांठ लिया और कहा ये बादशाह लंधौर पांचवार मैंने तेरी रोंकी अब दौरमेरा है मेरे वारका अवसर आया खबरदार हो यह न कहना कि धोखेमें मुझेमारा और जानने न पाया यह कहकर रक्राबसे रक्राब मिलाकर तलवार ईंचकर अत्यंत चालाकी व होशियारी से लंधौरके शिरपरमारी बादशाहने ढालपर रोंककर चाहा कि रद करे और अमीर के हाथको गांठले परंतु तलवार ढाल को दो टुकड़ेकरके घोड़ेकी घींचके तले जानिकली घोड़ेका शिर गिरपड़ा बादशाहहिन्द ने जीन को खालीकिया और लज्जित होकर क्रोधमें आया और तलवार खींचकर अमीर पर दौड़ा अमीर ने अपने मनमें कहाकि ऐसा न हो कि स्याहकैतास घायल होजावे या अपनीजान दूसकेहाथसे खोवे तो बलमेरा आधा रहजावेगा और फिरऐसा घोड़ा कहांमेरेहाथ आवेगा चालाकीकरकेघोड़ेसे अलगहुये और बलकरके तलवारलंधौरके हाथसे एकाएकीनिकालली और छीनकर अपनीसेनामें फेंकदीलंधौरने अमीर की गर्दन हाथ से बांधी अमीरने उसकी कमर में अपना हाथ डालदियादोनोंओरसे जोरावरीहोनेलगी देखनेवालोंकामुंह फिरगया जबदिनबीतगया और रातहुई तबदोनोंओरसे मशालें बारीगईं रातभर बराबरजलाकींतीनरात व तीनदिनतकलंधौर औरअमीर मल्लयुद्धकरते रहेपरंतुकिसीकाकिसीसे लंगर न लगा चौथेदिन अमीरने ईश्वरकानाम लेकर लंधौर को छातीतक उठालिया परंतु शिरतक ऊंचा न करसका उस लंगर को जो बहुतभारी था रोंके रहा उसको छोड़कर चाहा कि जांघ के ऊपर कटारमारें जानको शरीरसे बाहर करके मिट्टीमें मिलावें लंधौरने अमीरकाहाथ पकड़लिया और हाथजोड़केकहा येसाहबकिरां आपके सिवाय और किसीने इतनीशक्ति पाईहै कि मेरालंगर धरती से उखाड़े और मुझेपृथ्वीसे उठालेवे मैंने तनमनसे आपकी आधीनताअंगीकार किया और आजसे मैंने आपका साथपकड़ा अमीरने लंधौरकोगले लगालिया औरउसीसमयईश्वरकाधन्यवादकिया औरकहाकिबादशाह तुममेरेबांहबलहोमैंतुम्हेंभाईकीभांतिजानूंगा और जानसेअधिकप्यारा रक्खूंगा परन्तु मेरी यह इच्छाहै कि तुम मेरेसाथ नौशेरवांके पासचलो

मुझे उससे सङ्गाकरो लन्धौर ने कहाकिमैंआधीनहूं जहां आज्ञाहोवहां चलें बिस्मिल्लःकहकरवहांचलिये आगेतम्बूमेंगिये अबतो मैं बातहारचुका इसबातमें वे उत्तरहूं लंधौरने उसीदम अपनीसेनाके सरदार बुलवा कर अमीरकी नौकरीकरवाई औरसबकेओहदोंअर्थात् अधिकारोंकाहाल अमीरको बताया और आप अमीरके साथहोकर अमीरके तम्बूमें गया साहबकिरांने बहुतकुछ रुपया पैसा लन्धौर के ऊपर न्यवछावर किया और सभा सबके मेहरनिगारके चिचको देखकर रोनेलगा आंसुओंकी नदी बहाने लगा लंधौरने देखकर मालूम किया कि अमीर को मेहरनिगार की सुधि हुईहै अपने रूमाल से अमीरके आंसू पोंछ कर समझानेलगा कि यह आंसू बहाना किस हेत है अब बिछोह का समय बीत गया और मिलाप का अवसर शिरपर पहुंचा साहब किरांने मनमें धीर्य बांधकर अमर को गानेकी आज्ञादी अमरने अदब समेत दोनांघोंको बांधकर मिज़राबकी टोपी अंगुलीमें पहिनाई और छेंड़ छांड़ की ठहरी और दुतारावजाकर पहिलेश्यामारागकी दिखाई फिरअच्छे स्वरोंसेदाऊदीरागकागानाआरंभकियाऐसागायाकिअमीरऔरलंधौर और सभामेंजो२लोगबैठेथे सबकेसबमोहितहोगयेऔरसबसेलंधौर और अमीर का मनबहुत आनन्दित हुआ दोनोंने अमरको हीरा रत्नदेकर मनभरदिया उसके पीछे लंधौर ने खजाने की कुंजियां अमीर के आगे रखदींऔरहिंदुस्तानकी अच्छी २ वस्तु आगे अमीर के धरीं लंधौरमुसल्मानहोगया बुतपरस्तीको त्यागदियादारोग़ाबावरचीखानेको बुलवाकर एक कमरे में भांति २ के खाने दस्तरखान पर चुनवाये अमीर ने लंधौरकोसाथलेकर खानाखाया लंधौरने खानाखानेके पीछे प्रार्थना की किमैं अभी आपसे आज्ञ बड़ाई की रक्खेहूं बहुतदिनों से यह इच्छामेरे मनमेंहै कि मेरे घरमें आपअपने चरण पधारिये और लवण रोटी खालीजिये और मेरेमनोरथको पूर्ण कीजिये और यह दोहा कहा ॥

दोहा ॥

मम गृहके जो मध्य में क्षणकमाच पगजाय । मिचतिहारे पैरते गृह काबा होजाय ॥

अमीरने कहाकि मुझे तन मन से यह मंजूर है और हिन्दुस्तान का रवाना होनाबहुतजरूरहैइसकेपीछे लंधौर बिदाहुआसाहबकिरांअपने साथऔर२ भी अधिकारियों को लेगया सभा आनन्द दायक सबीगई तबलेपरथाप पड़नेलगी अब लंधौर और अमीर दोनों को उस जङ्ग में रहनेदो थोड़ा समाचार गुस्तहमका वर्णनकरूं विदितहो कि गुस्तहम निर्बल मारखाने की निशानी जो लंधौर से पसुड़ियां तुड़वाकर भागा मंज़िलोंपीछे फिरके न देखा एकपहाड़ की खोह में छिपकर बैठा और रातदिन साहबकिरां के मारने के उपायमें रहाहरकारों ने उसे समा-

चार पहुंचाया कि अमीर ने उसे तले किया और मुसल्मानों की सेना-
विजय प्राप्तकी और आज कई दिन से लंधौर के साथ बिलासकर रहे हैं
सिवाय मुक़बिल वफ़ादारके और कोई दूसरा अमीरकी सेना में सिर-
दारनहीं सब मिच स्नेही अमीरहीके साथ हैं गुस्तहम ने देखा कि अब
इस समयमें अवसर घातका मिलाहै पड़ाव मारा चाहिये इन लोगों पर
वारलगाया चाहिये कहीं मलिका मेहरनिगार की दोलौंड़ियां साथ
लायाथा और साहबक़िरां ने भी उनको मेहरनिगार के पास देखाथा
गुस्तहमने बिष हलाहल दो बोतलों में जो अंगूरी शराब से भरीहुईथीं
चारमिसकाल अर्थमिलादिया जो एकबून्दभी उसका खारी समुद्र में
गिरता तो उसके जीवधारी एकभी न बचते डाट शीशों में लगाकर
मेहरनिगार की मोहर जालीकी और चेलियों को सूरत पथिकोंकीसी
बनादी और स्नेहपत्र मेहरनिगार की ओरसे लिखकरउनको देदिया
और उनको मजमून उसका अच्छी भांतिसे समझा दिया कि पहिलेमु-
क़बिलके पासजाकर हालवर्णन करना कि मलकामेहरनिगार नेहमको
भेजाहै वह तुमको अमीर के पास लेजावेगा अमीरसे बहुतसी बातें स्नेह
मय मलिकामेहरनिगारकीओरसेकहनाफिरये दोनोंशीशे देदेना और
यह पत्रभीदेना और उसका मन अपने हाथ में लेना जो यह उपाय कर
लावोगीतोतुमकोमैंअपनेमहलमेंरक्खूंगाऔरअपनीस्त्रियोंमें मिलालूंगा
वेदोनों सुरदारें मरदाना भेष बनाकेचलीं जबसेनाके निकटआईं पहरा-
वालोंने रोका बोलीं कि हम मलिकामेहरनिगारके पाससेआतेहैंऔर
उनकापत्रलिये तुम्हारेअमीरके पासजातेहैंवेलोगउनकोसाथलेकरमुक़-
बिलके पासलाये मुक़बिलने हालजानकर सभामेंजा अमीरके कान में सब
हालवर्णनकियाकिदोलौंड़िया मलिकामेहरनिगारकी भेजीहुईआईहैं
औरदोशीशेअंगूरीके पत्रसमेतलाईहैं आपके पासआनेकी आज्ञाचाहती
हैं अमीरको नशाथाही औरभी आनन्दमें लीनहोगयाऔरजल्दअपने
स्थानसे उठखड़ाहुआऔर बादशाहसे कहाकिआपतबतकसभामेंरहिये
मुझेएककामबहुतआवश्यकहैउससे निपटकर अभीआताहूं औरअमरसे
कहाकितुम मेरेबदले तब तक बादशाहकेपास हाज़िररहो अमीर अपने
तम्बूमेंआनकर एककिनारेबैठाऔरउनकेआनेकेलियेआज्ञादीउनदोनों
टहलुइयोंको बुलाकर हालसुनापत्रकेलिफ़ाफ़ेपरजो मोहरमेहरनिगार
कीथी उसको चूमा और आंखोंसे लगाया और बारम्बार मांथपर
रक्खा फिर उठाया सत्वर पत्रकी पत्रको पढ़कर ऐसे फूलेकि शरीमें
न समासकेबुराईभलाई समयकी भूलगयेएकशीशेकीमोहरको खोलकर
उजलेमें हलाया और मेहरनिगारका नामलेकर मुंहमें लगाकर पीगये
उसमदिरा का गलेसे नीचे उतरना था कि अमीर बेहोशहोगये मुंहसे
फेनाजारीहुआ हाथपांव मारनेलगे नेत्रोंमें जलभरआया ॥

दोहा ॥

यह मदवे उमयारके दुखित हृदय मंझधार । गर्दनमें जो छिड़किये होय नयनके पार ॥

लौंड़ियोंने जानाकि अमीरका काममसमाप्त होगया कोईदमकेपाछन हैं अब हमारा काम अच्छीभांति से बनगया किसीभांति से तम्बूकीमेखें उखाड़करउन्होंनेराहलीऔरखुशहोकरगुस्तहमकीओरचलीदैवयोगसे बादशाहने अमर से कहाकि अमीर केबिना सभा फीकीलगतीहै क्योंकि जिससभाके बीचमें पाछननहो उसका कुछढंग नहीहै ख्वाजे जो अमीर को इससमयलेआवोतो चारसौ रुपये तुमकोदेकरअभी तुम्हारा झोरा भरदूंगा अमरने रुपयाका नाम जबसुना तब कब ठहरताहै शीघ्र वहां से चलताहुआ तम्बूके दर्वाजेपर मुक़बिलको देखा उससेपूछा कि अमीर क्या करतेहैं मुक़बिलने कहा दो लौंड़ियां मेहरनिगार की आई हैं उनसे एक़किनारे बातेंकररहे हैं लौंड़ियों का नाम सुनतेही अमर का कलेजा धड़कासुरझागया बोलाकिईश्वरकुशलकरे तम्बूमेंजाकर दीपकको बुझापाया झटपट बातीबारकर दीवालायादेखाकि अमीरकेशरीरमें सब फफोले पड़गये हैं नीलारंगहोगयाहै फेनामुंहसे बहता है इसअचेती में हाथपावँ धुनरहे हैं बोतल चकनाचूर पड़ीहै और दूसरी वैसेही धरी हैं जहांतक उसके बूंदधरतीपर पड़ेहैं वहांकी धरती फटगईहै इधरउधर देखा तो किसीको न पाया परन्तु तंबूकी मेख एकओर की उखड़ी देख पड़ी जल्दी उसी ओरसे निकलकर लातलगाताहुआ उन लौंड़ियों के पीछेचला जाते २ उनकेसमीप पहुंचा और वे दोनों कहतीजाती थींकि क्याशुभशायत परचली थीं कि कुछ देरभी न लगी किअमीरकोमारकर चलीआईं चलो गुस्तहमसे वादा पूराकरादो और उससे पारितोषिक दिलवादोपीछेसे अमरबोला ये दुष्टनियों हम तुम्हारे यमदूत आपहुंचे भलेघरबैनादिया यह कहकर कमरसे कटार निकालकर दोनोंको वहीं ठिकानेलगादिया और उसीस्थानसे उलटेपावों फिरामुक़बिलकोतम्बूमें लेजाकर अमीर का हाल दिखाया और कहा कि यह तेरीहीग़फलतहै अबबता क्या करें क्या दवाकरें मुक़बिल शिरपीटनेलगा अमरने कहाकि चुपरहो ऐसा न हो कि हिन्दकी सेना इस समाचारको सुनकर फिर-जाय और हमारी सेना उनलोगों से नाहक घिरजाय तू अमीर की निगहबानी कर और यहां से पावँ बाहर न धर जब तक मैं न आऊं किसीको तम्बूमें न आनेदेना और इसस्थानसे हिलने का नाम न लेना लंधौरसे जाकर चुपकेसे कहा कि अमीर इस समय आ नहींसक्ते और आपकोभी वहां बुलाय नहीं सक्ते क्योंकि दो सर्दार नौशेरवां केपास से आये हैं और यह हुक्मलाये हैं किजो तुमको मुझसे अपना वादाकर-नामंजूरहै तो जल्द लंधौरको बंधवा करलेना किसीभांतिसे उसकोछोड़ न देनासो अमीरने आपसे कहाहै किजो तुमको बंधुआहोनाअंगीकार

हो तो मेरा काम निकलता है तुम्हारा किसीभांतिसे बालभी टेढ़ा न होगा बादशाहने कहा कि बंधुआहोना तो कोईबात नहींहै अमीरजो मेरा शिरमांगे तोहाजिर है इसमें मुझे क्या ढीलहै यहतो बात मेरी खुशीका कारणहै अमर ने कहा कि ऐसा न होकिआपकी सेनाबिगड़ै और कुछ झगड़ाकरे बादशाह ने कहाकिकिसमें इतनी शक्तिहै सर्दारों को समझादियाऔर अपने हाथबंधवा कर मुसल्मानों की सेनामेंआया अमर को एक किनारे बैठाकर शिष्टाचार करने लगा और एक प्याला चालाकी का पिलाकर लंधौरको बेहोश करदिया फिर उसे सांकड़ों में बांधकर एक ऐसा सन्दूक जिसमें बायुलगे रखकर बन्द करदिया और सेनाका प्रबन्धकरके वहां से मार्गलिया राहके मध्य में दो सवार देखे यद्यपि उनसे छिपा परन्तु छिप न सका और उनके सामने आया तोवे अपने २ घोड़े से उतरकर अमरको बग़लमें लेकर मिले और मिज़ाजका हाल पूछनेलगे अमरने पूछाकि आप कौनहैं वेबोले कि हम शहपाल हिंदके बेटे हैं तुम्हारी तलाशमें दूरसे आये हैं सबूरवसाबिर हमारा नामहै बाप हमारा ऊपरदरा मुसल्मान है परंतु अंतःकर्ण में कुमार्गी और बेईमान है रातसे अमीरको हलाहल पानकरनेका हाल सुनकर गुस्तहम की सहायताको गयाहै और उसदुष्टसे मिलगया है इसकारण से आयेहैं कि अमीरको लेजाकर अपने क़िलेमें रक्खें और अच्छीभांति से मनलगा कर दवा करें अमर ने खुशहोकर कहा कि अन्धा चाहै दो आंखें अमीरको साथलीजिये और ईश्वरको बीचमेंदीजिये किकुछ छल नहो और कोई झगड़ानखड़ाहोउन्होंने ईश्वरकोबीचमेंदियाऔर कहा कि जो ऐसा हमको मंजूरहोता तो क्यों इधर का मनोर्थ करते अमर उनको लेकर तम्बूमें आया और एक तम्बूमें अलग बैठायाजबआधीरात का डंकाबजा अमीरकोडोलीमें सवारकरके साबर और सबूरके क़िले में पहुंचाया और क़िलेमें अपना प्रबन्धकरके साबिर और सबूरसे कहा कि अबअमीरके अच्छे होनेकाउपायक्याहै वेबोलेकि यहांसे दशमंजिल नारबन नामी एक द्वीपहै उसमें हकीमअक़लीमून रहताहै दुनिया में केवल वही इनकी दवाकरने योग्यहै अपने समयका धन्वन्तरहै एकचिट्ठी लिखेदेते हैं उनको बोलालावो तो अमीर बेगिही आराम होजावेगा अमर ने पहिले अपने मनमें बिचारकिया कि जबतक हकीम आयेगा नहीं मालूम कि हमला का क्याहाल होजायगा फिरसोचा कि जोवैद्य न आयेगातो दवा कैसेहोगी बायुके सामने जानाचाहियेऔर साथही उसको लानाचाहिये यह अपने मनमें ठानकर चाहा कि जायें साबिर सबूरने उसके साथ दाराबनामी चालाक को राह बताने के हेत साथ करदिया अमर बाहर क़िलेके निकलकर बायु से कहा मामा बायु इस समय बड़ी आवश्यकताहै मुझे अपनेआगे जानेदेना और मेरेआगे इसका

पैरभी न बढ़ने देना दाराब पूरी मंजिलभी न गयाथा कि फूलगया अमर से कहनेलगा कि कहीं सवारी मिलती तो आगेको चलनाहोता यह सुन अमरबोला कि अच्छा सुस्तालो किसी दृक्षकेतले हवा खालो कि चलनेका जिसमें बलहो थोड़ाचलेथे कि एकबाग मिला एक दृक्षकेतले दोनों बैठगये अमरने चालांकीसे मक्करका खानादेकर कहा कि कुछ खालो कि चलनेका बलहो और मार्गकाहाल पूछनेलगा वहकहनेलगा कि सीधे नाककीसूत चलेजावो दाहिने बायें ओर न देखो उस द्वीपके निकट एक पगडण्डी दाहिने हाथकी ओर मिलेगी तुम उसीलकीर पर समुद्रके किनारेतक चलेजाना बीचमें औरभी उधरकी राहें मिलेंगी पर और तरफ न जानाचारकोशकेलगभग चौंड़ाउस समुद्रकापाटहैवहां नावपर सवारहो पार जाकर थोड़ीदूर जावोगे तो उसद्वीपकेमकान दिखाई देवेंगे वहांजाके तुमआप बुद्धिवान हो पतालगा लोगे अमर ने देखा किदाराबकीआंखोंमेंसरसोंफूलींअमरकेआगेचौकड़ीभूलीदाराबसे कहा कि लोभाई जल्दीचलोदूरजानाहै अपनीकमरकसो उसकाउठना था कि उसीस्थानपर मिट्टीकाथूहाबनकरगिरपड़ाअमरनेएकदृक्षमें उसे बांधदियाऔरआपचलताहुआशाम न हुईथी कि समुद्रकेकिनारेपहुंचा नावके आनेमें देरदेखी दरियामें अलियास पर सवारहोकरचलाबातकी बातमें पारजाकर शामके समय करामातद्वीपमें पहुंचा हिन्दूकी सूरत बनकर बाजारमेंगया एकआदमीसे पूछा कि हकीम अक़लीमूनकाकहां मकानहै भाई हमको पताबतादो वह बोलाकि इसबस्तीकेमालिक वही हैं यह फाटक जो देखपड़ताहै सो उन्हींका मकानहै अमरने दर्बानसे जाकर कहा कि साबिर व सबूरके पाससे आयाहूं हकीमसाहबके नाम का पत्र लायाहूं उनको ख़बरदो दर्बानीने हक़ीमसाहबसे सबहालकहा हक़ीमसाहबने कहा कि आनेदो ख़बरदार उसेकोई न रोके दर्बानी ने अमरसे कहकर उसेहक़ीमसाहबके पास भेजा अमरने निकट जाकर युक्ति समेत सलाम किया और वह पत्र दिया हक़ीमने अमर से पत्र लेकरपढ़ा क्रोधितहो भौंहें समेटकर कहा क्याअच्छा मुझको लिखाहै कि जो शीघ्रआकर हमजाको अच्छा करदोगेतो तुम्हारी थैली हीरा रत्नसे भरदेंगे बहुतखुशहोके तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे कहनेलगाकि क्या खूब मुझे लालची जानलिया जो यहबात लिखीहै जोयहबात न लिखते तामैं जाता परन्तु अब न जाऊंगा कभी उधरका मनोर्थ न करूंगा अमरबोला कि कृपानिधान उनसे अपराध हुआ जोऐसे निर्लोभी बेपरवाहीको यहबात लिखी क्षमाकीजिये और सवारी मंगवादिये हकीमजी बोले कि तू अपनेसे क्योंपैर बाहरधरता है तुझको इन बातोंसे क्या प्रयोजन है जबमैंने इनकारकिया तब इनकारहीजान इसमें विवाद से तुझे क्यालाभ होगा अमरने कहा कि बातें बढ़ानेको जाने दीजिये

संक्षेप यह कि आपके न जानेसे एक ईश्वरका सेवक मराजाताहै वहां जाकर अच्छाफल देखियेगा पुण्यलीजियेगा हक़ीमजी बोले कि जो हो मैं नहीं जाऊंगा अमरने कहा कि भारी छोटा तो मैं नहीं जानता यह बात किस क़ानूनमें लिखोहै कि हक़ीम बीमारका हाल सुनकर अपने स्थानसे न टसके यह क्या भलाहै कि एक ईश्वरके सेवकके इलाज में कि जिसके हेत सहस्रों आदमियोंको लाभ पहुंचे उसपर ध्यान न करे हक़ीम अक़लीमून बोला कि तू काजीहै या मुफ्ती या तेरीमौत आईहै क्यों खोपड़ी खाईहै जा अपनी राहले अमरने कहा कि आपका चलना मुख्यहै किसी भांतिसे चलनेकी सूरत निकालना चाहिये ऐसी बात आप क्यों कहतेहैं हक़ीमने कहा कि क्यातू बिच्छिप्तहै ऐसाबुद्धिमान् होकर मुझसे बतकही कररहाहै अपनी हैसियतभर बातें नहींकरताहै अमरनेकहा कि हज़रत किसीभांतिका सौदाईहो लड़कोंको उसके पीछे तालीबजाना उचितहै इतनी दूरसे आताहूं मेरेपीछेतो किसी ने चुटकीभी न बजाई तुम्हारी तरह सौदाई होतो उसकेपीछे ताली बजाना लड़कोंको उचितहै आप मुझे बिच्छिप्तीबनातेहैं यहबड़ाअन्याय है तबतो अक़लीमूनने अपने सेवकोंको आज्ञादी कि इस बीमारबेअदब को बांधो और घूंसोंसे इसकी ढिठाई निकालो यह सुनकर जब अमरने जाना कि हक़ीम न जायगा औरमैं दण्ड पाऊंगा तोरोनेचिल्लानेलगा औरकहनेलगा कि येबातेंजो मैंने आपसे कहीहै मानो साबिर वसबूरके मुखसे भाषीगईं भलाहै कि आप न जायें हां नाहकमें कष्ट बेफ़ायदा न उठावें परंतु साबिर व सबूर दोनों बड़े मसखरेहैं जो मुझे कालेकोशों दौड़ाया जो आजकीरात अंधियारीहै इहांसे जा नहीं सक्ताहूं और कोई आगे नगर भी नहींहै न रातकोकोईराहीमिलसक्ताहै आज्ञाहो तो इस संकटमें आपकेद्वारे पररहूं प्रातःकाल अपनामार्गलूं अक़ली-मूनने अपने सेवकको आज्ञादी कि इसको बावरचीखानेमें लेजाकर कछु खिलवाकर सोरहनेदो कल सबेरे यहांसे रवानाकरो अमरने अपने मनमें बिचारकिया कि हक़ीम अक़लीमून बड़ा नादानहै बुद्धिमानहो कर लाभहानि नहीं समझताहै यही मूर्खका चिह्नहै इसका कुछ इलाज करना चाहिये कोई होशकी दवा दियाचाहिये बावरचीखाने में जाकर बावरचीसे चिकनी२ बातें करनेलगा बावरची अमरकी मधुरबातें सुनकर दूध खांड़कीभांति घुलगया अमरने ख़मीर मिठाई के कई टुकड़े उस थैलीसे निकालकर उसेदिये कि थोड़ी इसकीभी चाशनी चखिये बहुत आपने रकाबदारी की और बहुतसी मिठाइयां बनाई होंगी बहुधा बुद्धिमानोंके साथ संगति रही होगी बावरचीने उसकी बातें सुनकर वह मिठाई अच्छी भांतिसेखाईऔर प्रसन्नहोकर सब पेड़े खा लिये बोला कि सच मुच इसकीमिठाईहोंठबंद करती है इस

स्वादकी मिठाई कभी नहीं खाई अमर बोला होंठ क्या कोई दम में श्वास बन्द करेगी फिर और ही स्वाद देखावेगी अन्तको उसके मज्जे में लाकर एक कोनेमें ले गया और बोला कि कुछ नमकीन काभी स्वाद चखिये बावरचीने कहा कि जब मिठाई में यह स्वाद नमकीन में इससे अधिकस्वाद देखावेगा अमरने अपनीझोरीसे एकटिकिया निकालकरदी उसमरभुक्खे ने उसकोभीखालियाफिरतो झूमनेलगा अमरनेअतिचिल्लाके एक गाली उसे दी वह आगबबूला होगया एक चैला लेकर मारने को उठा पावँ जो लड़खड़ाया खवाजेके चरणों तले आरहा अमरने बावरची खानेमें एक चूल्हेके पास गढ़ा खोदकर उसे गाड़ दिया ऊपर से लकड़ियां जलाकर रखदीं और हांड़ीमें पानी चढ़ादिया और आप उसकी सूरत बनकर हकीम के हेत बियारी पकानेलगा कलोचा की रोटी में अपना दाना खर्च किया और ऊपर से सौंफ़ लगादी और क़लिया व कुर्मा व पुलाव आदिमें अपने झोरे से घी निकाल कर डाला और सब सामान अपनीही झोरी से निकालकर डाला और सब प्रकारके भोजन बनाये प्रातःकाल होतेही हकीमसाहबके दस्तरख्वानपर सबबस्तु चुनदी और हकीम साहबको खिलानेलगा हकीमसाहबने जो बस्तु खाई उसमें प्रशंसा करते २ मुंह बन्द होगया अमर ने कहा कि कृपानिधान यह आपकी दवा कीगई और क़ानून से आंच दीगई है बनपड़ा होतो सदा ऐसाही खाना खाया कीजिये तो दिमाग़में बल अधिक हो जान बूझके काम करे और बीमारीको अच्छी भांति जानलिया करे कुछ छिपा न रहे हकीम साहब खाना खाकर बहुत खुश हुये थोड़ी देरके पीछे जोर से डकारने लगे और कहाकि तेरी बुद्धिबड़ी तीव्रहै हम और बातें भी तुझे खाना पकानेकी बतायेंगे अमर ने थोड़ी दूर पीछे हटकर कहा कि सृष्टिमें हकीम साहब आपभी बलिष्ट नुसखा हैं पढ़ लिखकर सब चौपट कियो कितने बेहूदाहैं अक़्लीमून झुंझुलाकर उठा और कहा ऐनिर्बुद्धी यहक्या बेहूदा दिमाग़ पकाताहै यह क्या बेअदबीकी बातें मुखमें लाता है अमरने पीछेको फलांगमारी और हकीम साहब फलांग के मारतेही अचेत होकर धमसे मुंह के बल धरती पर गिरपड़े अमर ने हकीम साहबको चादर अय्यारी अर्थात् चालाकीसे लपेटकर झोरी में लेटाया थोड़ीसी बेहोशी की दवा देकर सारे विद्यार्थियों को खिलादी जब सब बेहोशहुये अमरने कुतुबखाना व दवाईखाना और कुलघरके सामानको उसीझोरीमें भरकरउसके ऊपरहकीमसाहब को लेटाकर एक परवाना राहदारी हकीमसाहबके नामसे लिखकर उनके क़लमदानसे मोहर निकालकर परवानेपर करके प्रसन्नतासे अपनेस्थानको राहली उसका मज़मून यह था कि घाटके मांझीको उचित है कि शीघ्र बे तक़रार इस मनुष्य को नदीके पार उतार दे और एक पैसा भी उतराई का न ले जो

थोड़ीभी देर लगावेगा तो कठिन समुद्रमें डुबाया जायगा थोड़ी देर के पीछे अमर गठरीबांधेहुयेनदीकेकिनारे जापहुंचा औरघाटकेमांझीको राहदारीका परवाना दिया घाटवाला शीघ्र उतारने पर उद्यत हुआ पहिलेहीखेवेमें अमरकोपारउतारा अमरएकपहरके भीतरमेंवहांपहुंचा जहां दारावको दृष्टमें बांधगयाथादारावको खोलकरकोई दवादीउससे चेतहुआ दारावजो सावधान हुआ नींदसे चौंकातो बोलाकि बहुत सोये नहींतो आधीराह उसद्वीपकी लपेटजाते नींदने मंज़िलभी खोटी की अबचलिये द्वीपकी राहलीजियेअमरने आदिसेअंततक सब समाचार हकीमके लानेका वर्णन किया दारावके होश कहानी सुनकर उड़गये और गुरूकहकर अमरके चरणोंपर गिरपड़ा और अमरका चेलाहुआ अमरने दारावसे कहाकि तू हौले२ आ मैंतोलम्बीलेताहूं साबिर सबूर को यह सबसमाचार बताताहूंहवाको जोपछिले पावोंसे मारातोदारावकी नज़र से जातारहा थोड़ी देर के पीछे क़िला के पासपहुंचा देखै तो अद्भुत चरित्रहै गुस्तहम सेनालिये हुये क़िला के तले खड़ाहै और एक ओर सेना हिंदके बादशाहकी खड़ीहै क़िलेके धुस्सोंपरसे गोली बरसती हैं गोलंदाज़तोपों को महताबी देरहेहैं अमर घुसकर क़िलाके बुर्जके तले पहुंचा और कमन्दफेंककरबहुतजल्दक़िलेकी दीवार पर चढ़गयापरंतु तलेसे एकमनुष्य ने निशाना बांधकर उसकी गठरी में तीर लगाया वह तीर गठरी को तोड़कर गोलीसोनहली पर बैठा अमर फलांग मारकर क़िलेके भीतरगया और वह गठरी साबिर सबूरके आगे रक्खी जिसउपाय से हकीम साहब को लायाथा सब बयान किया साबिर सबूर अमर कीबुद्धिकीबहुत प्रशंसा की अमर ने सब असबाब हकीम साहबके आस पास चुनकर चेत होने की दवादी कि इतने में हकीम साहब की बेहोशी दूरहुई और उसीपियादेकी सूरतबनकर कहा कि आपको साबिरसबूर ने बुलायाहै और मुझे अतिकष्टमें आपकेपास भेजाहै हकीम अक़्लीमून मुंहसिकोडकर बोला कि यहां कोई है इसदीवाने को बांधकर मेरे पास लावो कि मैं फ़सूदखोलदूं बेफ़ायदा दिमाग़खारहाहै इसका इलाज करूं अमर ने कहा कि कृपानिधान मैं विक्षिप्त नहींहूं किनस्सार दीजियेगामैं दीवाना अपने कार्यका होशियारहूं क्योंदवा कीजियेगा हकीम साहब बोले कि शिड़ीके शिरपर क्या सींगलगे होतेहैं किजो तेरेनहींहैं तेरेका गुरूखाबकापर लगाहै लाखबार कहा कि मैं नहीं जाऊंगा तू अपनीरटे जाताहै जबकोई न बोला हकीम साहब देखकर खिन्न होगयेभवचक्काहोकर इधर उधर देखने लगे कि सभी असबाब मेरे मतलब का मेरे पास धराहै परन्तु मेरामकान नहींहैउसस्थान औरआदमियोंका कुछचिह्न नहींहैं इतनेमें साबिर सबूरने आकर मुलाकात की हकीम साहब का शिष्टाचार आदर पूर्वक किया हकीम अक्लीमूनने पूछा कि मैं असबाब

समेत यहां क्यों कर आया अमर बोला कि मर्ज नहीं है जोवे कहे तुझे जान लीजियेगा किसी बिच्छिन्न की अपनीही हड्डीसे फसदखोलदीजि-येगा यहपियादालायाहैइतनीदूरचलकरयहां पहुंचायाहैअक़लीमूनको नमालूमहुआकि अमरहै उठकर गलेसेलगालियाकिखाजेजोमैं जानता कि तुमहोतोमैं बेतकरार चला आता और कभी इनकार नकरताअमर बोला कि अबभी आपके उपकार का बोझा मेरेऊपर बहुतहै कि आपने मुझे देडाला परंतु शीघ्रकोई ऐसाउपाय कीजिये कि अमीरके शरीरसे विषदूर होजाय और इनको आराम होजाय हकीम अक़लीमूनने देख कर अफ़शोस करनेलगे और कहा कि इसकाइलाजनौशेरवां के सिवाय दूसरी जगह कहीं धरतीपर नहींहै अमरने कहाकि हजरत यह ऐसी वस्तुक्याहै किजो संसारमें दूसरे अस्थान में नहींहै अक़लीमूनने कहाकि शाहमोहरा उसदवाका नामहै कयानियोंके पीढ़ीदरपीढ़ीचलाआया है उसकेबिना अमीर को आराम न होगी विष नस २ में व्यापिगयाहै अमरने कहा कि कृपानिधान यह वही मसलहै कि जब तक दूराकसे जहर मोहरा लायाजायगा तब तक सांपका काटामर जायगा इसआने और जानेतक हमजा काहेको बचेगा उससमय तक इसका दम अच्छा काहेको रहेगा अक़लीमून ने कहा कि अबतो अमीरका अच्छा होना कठिनहै बहुत बड़ी बीमारीहै अमर रोता पीटता शिरपर धूल उड़ाता किलेके दरवाजेपर आया वहां मुकबिल खड़ाहुआथा कहाकि खाजे कहो हकीमने क्या इलाज ठीककी अमरने कहाकि क्याकहूं कि इस यमसेतो हकीमको लाया और उसकमबख्त को यहांतक पहुंचाया अब वह कहताहै कि इसका इलाज शाह मोहरा के सिवाय संसारमें नहीं है अब शाह मोहरा नौशेरवांके यहांके सिवाय और अत्तारखानो में कहीं नहीं और निकलेगा पृथ्वीपर उसकापतानलगेगा मुक़बिल सुनकर चुपहोरहा अमर दोचार क़दम आगेबढ़ा मुक़बिलने पीछे से पुकार के कहाकि खाजे जो मदायन जावोतो नौशेरवांके फाटकपर एकबुढ़िया रहतीहै उससे मेरा सलाम कहदेना अमर खिसिया कर पलट के एक सोटा मुक़बिल के शिर पर इस बलसे मारा कि मुकबिल खूनमें भीग गया चक्करखाकर धरतीपर गिर पड़ा उस समय मुक़बिल छोटे बोल से कहने लगाकि खाजे खफा क्यों होतेहो शाह मोहरा यहीं मिलजायगा तबतो और भी अप्रसन्नहोकर मुकबिलको गाली देनेलगा कि तुझे मेरा रास्ता खोटा करनेमें क्या मिलेगा मुक़बिल नेकहाकि खाजेहमजाकेशिर की कसमहै शाह मोहरा इसीस्थानमें है मुझसे लीजिये कोईदममेंहाथ आवेगा बुजुरुजमेहरने मेरे सामने अमीरकी जांघमें रखकर टांकेलगा दियेहैं और उसका लाभभी बतादियाहै अमीरने मुकबिल को छातीमें लगालिया और हमजाके पास पहुंचा अक़लीमून ने कहाकि खाजेअभी

यहीं हो मैं जानता था कि मदायन पहुंचेहोंगे शाह मोहरा कहीं से ढूंढेलाते होंगे अमर बोला कि हजरत मैं गयाभी और पतालगा करले भी आया अकलीमूनने कहा तुमसे कुछ दूर नहींहै लावो जो लायेहो तो दो अमरने कहाकि अमीरके जांघमेंहै अकलीमून ने अमीरकेशरीर को देखा तो सचमुच नीलकांच के समान होगयाहै परन्तु जिसस्थानपर शाह मोहराहैउतने शरीर का साधारणरंगबनाहै विषकुछअभी नहीं बेधाहै अकलीमून नेकहा यद्यपि अमीर का रंग नीला है परन्तु शाह-मोहरा जो अमीरकी जांघमें न होता तो अबतक अमीर मरगये होते फिर कईसौ मन दूधमंगा के रक्खा और छूरासे अमीर की जांघचीरकर शाहमोहरा निकाला और रेशम में बांधकर अमीरके कंठसेपेटमेंउतारा और कुछ काल के पीछे उसेनिकालकर दूधके कड़ाह में डाला उसी में उसको खूबगोतादिया दूधका रंग हराजंगालके समान होगया दूधका रंग बदलने लगा उसीभांतिसे मोहराको अमीर के पेटमें पांच २ छः २ मिनट रखकर कईबार दूधमेंडाला जबदूधने रंगनबदला और रंगत बदनकीबदलचली और अमीरको छींकआईअकलीमूनथोड़ीचादरेंकतां की अमीरकोओढ़ाईं और होशमें लानेका उपाय किया और लोगों से कहाकि खबरदार कोई मनुष्य अमीर के सामने जहर खाने का हाल बयाननकरे भूलेसे भी इस हालका नामनलेवे दोघड़ीके पीछे इतना पसीना अमीरके शरीर से निकला कि सब बिछौना डूबगया दूसरे दिन जब अमीर को कुछ होश आया खाना मांगा अकलीमून ने तीतर का शुरुआ अमीर को पिलायाजबअच्छीभांतिचेतहुआऔर अमीर तकिया लगाकर बैठा पूछाकि लंधौर बादशाह कहांहै और सभाका औरही सामानहै अमरने झटपट लंधौरको चेताके अमीरके पास पहुंचाया और राहके मध्यका सकल वृत्तान्त बयान करके तमाम समाचार कह सुनाया कि आपके फिरजानेके डरसे मुझसेयह अपराध हुआहै अमीर से इसका जिकर न कीजियेगा अब तो जो कुछ होनाथा सोहोचुका जिस समय लंधौरऔरबड़े २ सरदार अमीर के पासस्थितहुये प्रत्येकने अमीरके ऊपरसे बहुत कुछ न्यवछावर किया सब फकीरोंको माल से भरदिया अमीरने हकीम अकलीमून को देखकर कहाकि यह कौनहै और कहांसे आयाहै याकिसीके पासगाताहै या सौदागर है जोमाल बेचनेके हेत लाया है आदीके मुहसेवेसम्हार निकलगया वहजोलौंडियां शीशे शराब अंगूरोंके लाईंथीं वह आपका जानलेनेको विषहलाहल भर के लाईथीं गुस्तहमकी भेजी हुई थीं आपने जो एक शीशा शराब का पिया उसमें विषमिला हुआ था तमाम बदनमें बेधगयाथा साबिरवसबूर आप को जो शहपाल के बेटेहैं अपने किलेमें उठालाये औ आप की अत्यन्त निगहबानी करते रहे और हम लोगोंसेअतिशयादृष्टिसेपेशआये

और अमरको भेजकर नार्बनद्वीप से हकीम को बुलवाया जिससे ज़ख्म का इलाज हुआ ईश्वर ने आपको इस कराल विषसे बचाया और गुस्तहम क़िलेको घेरेपड़ाहै और बराबर लड़रहाहै यहबात सुनतेही लंधौर के तलुओंसे आगलगी शिरमें जाबुझी बोलाकि अभी उस दुष्ट को रसातलमें भेजताहूं अभीतो मैं उसका बधिक जीताबैठाहूं उस खलको थोड़ी हीबात में तोदफ़ा करताहूं अमीर ने मनाकिया कहा कि आप धीरज धरिये मैं समझलूंगा इसमें खबर पहुंची कि सहपाल भी उसका सहायक है क़िलेपर चढ़ने का मनोरथ किया था साबिर नामी उसके बड़े लड़केने मारकर स्वर्ग को भेजदिया गुस्तहमने यहहाल सुनकर क़िलेपर धावाकरने की आज्ञादी है और आपने भी मनोरथकियाहै थोड़ी देरमें खंदक उतरके क़िलेपर आयाचाहता है अमीर ने अमर से कहाकि तुम जावो और गुस्तहमको मेरी ओर से कहदो कि मैं नौशेरवां के कारण तरह देताहूं अभीतक चुपचाप बैठाहूं परन्तु तेरे हृदयमें यहबात नहीं आतीहै अपनी दुष्टताको छोड़ता नहीं उसपर झगड़ा फ़िसाद कररहा है जा यहांसे अपना मुंहकालाकर नहींतो अपनाकिया पावेगा अमर ने अमीरका संदेशा गुस्तहम से जाकर कहा उसदुष्टने हँसकर उत्तर दिया कि वो सबीनबच्चे तू मुझसे मक्र करता है हमज़ाको मरेहुये बहुत दिन हुये और हमज़ा का चिन्ह भी शेषनहीं रहा है मृतकों को जिलाता है जिसकी ओरसे संदेशा लाया है अमर ने झुंझलाकर कहा कि वोदुष्ट तू साहब किरांके निमित्त ऐसीबातें मुखसे कहताहै मौतकेदिन तेरे निकट आयेहैं जो ऐसीबातें सटांय पटांय की उड़ारहाहै क्या करूं अमीर का हुक्म नहींहै नहींतो गोफ़न से तेरे दांत तोड़करतेरी हलकमें डालदिये होते बढ़ २ के जो बातें करताहै और दावाकर रहाहै सब हौसले तेरे निकालदिये होते गुस्तहमबोलाकि अच्छा हमज़ाजोजीताहै तोजाकर पूंछ आ कि मेरे किस भेदसे आगाहहै अमर जोतू यहउत्तर सहीलाया तो भला नहीं तोतू ये बातें मुझसे करताहै कि उसका खैरख़ाहहै अमर अमीरके समीप आया और जो गुस्तहम ने कहाथा सम्पूर्ण कह सुनाया और कहाकिऐसाहबकिरांआश्चर्यहोताहैकितुम गुस्तहमऐसेदुष्टसेकि जिसने तुम्हारे मारडालने में उपाय न छोड़ाथा उसके भेदको अभीतक आप छिपायेहैंऔर उसखलसे जिसकेपानीवमिट्टीमेंखमीरहैभूलेहुयेहो पहिले उपाधि बहिरामके शिरपर सेटरी और अबतिष दिलवाया ईश्वर बुजुरुचमेहर का भला करे कि उसने शाहमोहरा जांघ में रखदिया था नहींतो जीनेकी कौन सूरतथी अमीरने उसके पादमारनेका हाल कह कर अमरसे कहा कि बस यही उसका भेद है तू जाकर उसे जिवा दे वह क्या करताहै और उसेमंजूर क्याहै अमीर ने गुस्तहमसे आकर कहा कि अमीर ने कहा है कि वो गूही भेंट के समय तूने तीन बार पादमारा था

जबहथियार लगेगा तब हग २ देगा गुस्तहमने इसभेदके सुनतेही जाना किहमजा अभी जिन्दाहैदेखियेअबक्या आफ़तआवेयहांसेचला जानाही उचितहै उसी समय सिन्धनदी की ओर भागाऔर वहांजाकर उसदुष्टने बड़ा फिसाद मचाया दो मतकों के शिर मंगाकर नौशेरवां के पास भेजे और अपनी बसीठी उनशिरों के साथभेजा और बिनयपचमें यह लिखा कि लंधौरने मैदानमें हमजा को मारा और मैंने आपके प्रतापसे लंधौर को मारडाला और उनदोनों के शिर आपके समीप भेजताहूं बड़ी २ लड़ाई बीचमें हुई हैं और एक पच बख्तक को ब्योरा समेत लिखा और उसमें यह दर्जकिया कि मैंने बादशाह के बिनय पचमें झूठ इस निमित्त लिखाहै कि नौशेरवां मेहरनिगार की शादी किसीसे करदेवै और वह मगनयनी अमीरके हाथ न लगे और नहींतो सत्य यहहै कि हमजा ने लंधौर को जीतलिया और लंधौर तनमनसेउसका आधीनहुआ औरअमीरके सामने गर्दनअपनी झुकादी मुझसे सिवाय हमजाको बिष देने के कुछ न बनपड़ी और कोईउपाय नहोसका सो हमजा बड़ाकड़ाजीवका निकलाकि बिषसेभी उसका कुछनबिगड़ा मैंलाचार होकर वहां सेभाग कर सिन्ध में आया अपनी जानवहांसे बचालाया इसकारणसे बारम्बार लिखताहूं कि बादशाहको बहकाकर मेहरनिगारका बिवाह किसी से करादेना और इस सलाहमें और लोगों को भी मिलालेना कि जिससे हमजासुनकर मरजाय शत्रुके मारनेका डरहै किसी भांति से जानगंवाये जिस समय वह बिनयपच और शिरनौशेरवांके पासपहुंचाऔर देखकर नेचों में जल भरके बुजुरुजमेहरसे कहा कि अफ़सोस हमजा की जबानी मैं जानता हूं कि हजार बर्ष आसमान घूमेगा तोभी ऐसा स्वरूपवान उत्पन्न करके न दिखायेगा बुजुरुजमेहर ने कहा कि मैं कुछ कह नहीं सक्ता अन्दाज से तो हमजा अच्छा जानपड़ता है परन्तु उसके शरीरको कष्टहुआ है आगे ईश्वर जाने॥

बिजयप्राप्त करनेके पंछे मदायनको और लन्धौर समेत बड़े सजधजसे अमीरकाचलना॥

सजधजसेअब अमीरके मार्गका समाचार वर्णनहैकि अमीरको जबकुछ बलहुआ तब माशूकाकी याद कर गहबर गति होजाती भई और तबियत अति घबरातीभई लंधौरसे कहा कि अब जी चाहताहै कि मदायन को चलैं बादशाह ने कहाकि जैसी आपकी मर्जी हो बहुत दिन राह चलते बीते बादशाहके मिलनेका मनोरथ हो बिसमिल्लः मनोरथ चलनेका कीजिये परहिन्दुस्तान में सिक्का अपना जारी करके किसी को अपना युवराजअपनी ओरसे छोड़जाइयेअमीरनेकहाकि ऐबादशाह तुम्हारा देश तुमको फलै मैं केवल तुम्हारे स्नेहका भूखाहूं बादशाह ने जयपुर में अपने भाई चचा जादको अपना नायब किया और आप सिपाह समेत साहबकिरांके साथहुआ आदीखीमालेकर पहिलेएक दिनआगेगया था

उसने एक रमणीकस्थान देखकर नदीके किनारे तम्बूगाड़दिये अमीर भी सेना और लंधौर समेत धूमधाम से चले और तम्बू में पहुंचेप्रातःकाल वहांसे कूच किया और इसी भांति से प्रतिदिन कूच मुकाम करते चले जातेथे यद्यपि अमीरकेशरीरमें केवल हाड़ व खालके कुछ न रहाथा परंतु मेहरनिगारके नेहवस मंजिलों मार्ग लपेटते चलेजातेथे अब वख्तकका हाल सुनिये कि गुस्तहमका पचपढ़के उसके उपाय करनेमें प्रवृत्तहुआ उसके मनमें आया कि खाजे जादा जौपीन मुर्जवां के वंश जो कैकाउसका है इसकेकुटुम्बमेंहै मेहरनिगारके विवाहके हेतउभारा चाहिये और किसी भांति बगिउसे बुलवाना चाहिये झटपट एकपत्र इसमजमूनका औलाद मुर्जवांके पुत्रके नाम लिखाकि मलिकामेहरनिगार सप्तदेश के बादशाह की पुत्री अबयुवा हुई हमजा नामी अरब वालेने उसकी इच्छा की थी बादशाह ने दूसरी कौम जानकर उसके साथ अंगीकार न किया और उसको हिंदुस्तान में लंधौरके साथ लड़नेको भेजदिया और वह सुनते हैं कि लंधौरके हाथसे मारागया सो मेरी इच्छा आपकी भलाईके हेत है कि आप बहुत जल्द जिसभांति होसकेयहांकामनोरथकरें औरअति शीघ्र अपने आपको मदायनमें पहुंचादूंये मैंउपाय करके आपका विवाह उसके साथ करादूं और नौशेरवांका पुत्र आपको बनादूं औलादमुर्जवां का पुत्र पत्रको देखकर अति आनंदित होगया तीससहस्र सवार लेकर जाबुलसे चला थोड़े दिनकेपीछे मदायन में पहुंचा बख्तकने खबरपाकर उसका प्रबंधकरना आरम्भकिया गोशेमें बादशाहसे प्रार्थनाकी कि औलाद मुर्जवांका पुत्र कैकावसी आपके मिलनेके हेत जाबुल से आया है अगवानी उसकी अवश्य चाहिये कि वहभी एक बड़े मनुष्यके घराने का है थोड़े सरदारोंको आज्ञादीकि अगवानीकरके तिलशाद कामपरउसे उतारें और उसकी पहुनई में आरूढ़ रहें बादशाह की आज्ञानुसार उसकी प्रतिष्ठाकीगई दूसरेदिन बख्तकने उसकी नौकरी करवाई और खिलअत दिलवाई कईदिनके पीछे अपनासमय पाके बादशाह से अलग प्रार्थनाकी कि हमजा तो मारागया मलिका मेहरनिगार के विवाहका उपायअवश्यकरनाचाहिये क्योंकिअबअवस्था बड़ीकठिनताकीआईऔर होशियार होचुकीहै और गुस्तहमके साथजो हुजूरने ठीक कियाथा सो वहबूढ़ाहै और उमरसे उतरगयाहै और विदितहै कि जवानअवस्थाकी स्त्रीका बैठनाबूढ़े मर्दके गोद में बहुत अनुचित है किसी ऐसे युवा और प्रतिष्ठित पुरुष और अच्छे घराने का हो उसके साथ विवाह करदेना उचित है और इस भलेकाम में जितनी शीघ्रता हो करदेना चाहिये क्योंकि समय बेढब है नौशेरवां ने कहा कि तुम्हीं किसी को प्रसन्नकरो इसकाम की कोई सूरत निकालो बख्तकने प्रार्थना की कि मेरे समीप औलाद मुर्जवां से कि कैकावसी है और सूरत और लियाक़त भी

अच्छी मालूमहोती है और तो इससे अच्छा कोई नहीं जानपड़ता है फिर आपकी जैसीसलाह हो और मलिका साहबाकी मर्जी वह सबसे अच्छीबात है बादशाह ने यह बात पसन्दकी और मलिकामेहर अंगेज़ को इस समाचार से प्रकाशित किया जो कि उसदिन तक अमीर का मरना बादशाह के घरमें किसी को मालूम न था मलिकामेहरअंगेजको यह वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुखज़्आ सबपर कड़ाईकी कि कोई अमीर के मरनेका समाचार मेहरनिगारको न बतावे और उसके सामने इसकी जिकर किसीभांतिसे न कीजावे परंतु उसे खबर पहुंचादी मेहरनिगार ने अपने को ऐसा दुखित किया कि देखने वाले हैरान होगये उसका यह हाल देखकर सब मुरझागये मलिकामेहरअंगेज़ ने आकर बहुत समुझाया परंतु उसने कुछ न माना मलिकामेहर अंगेज़ लाचार हुई बादशाह को खबर दी नौशेरवां ने बुजुरुज्जमेहर से कहा कि तुम जाओ मेहरनिगार को समुझाकर औलाद मुर्जवां के बेटे के साथ बिवाह करने पर राज़ीकरो बुजुरुज्जमेहर महल में गये और मलिकामेहरनिगार को इलाहदा करके कहने लगे कि मलिका अमीर की सब भांतिसे कुशल है और ईश्वरकी कृपासे अच्छीभांति है यह लोगोंने झूठमूठ उड़ाके उसके बैरियों के निस्बत जो खबर उड़ाई है निहायत झूठ है केवल इस मनोरथ से कि अमीर का गुज़र दूसराजधानी में न होनपावे यह उपाय कियाहै हांअमीरको गुस्सहमने ज़हरदिलवायाथा उससे तकलीफ़ बहुतपाईआप देखलीजियेगा आजके चालीसवेंदिन अमीरसे और आपसे बखूबी मुलाक़ातहोगी मेरे निकट मुनासिब है कि नामचार औलाद मुर्जवांके पुचको अंगीकार कीजिये परन्तु यह बात ठहरा लीजिये कि औलाद चाली सदिन जिसमें आपके सामने न आये और परदेके निकट तब तक पांव न धरे मेहरनिगार ने बुजुरुज्जमेहर के कहने से अंगीकार किया बुजुरुज्जमेहर ने बादशाह को शुभपूर्वक बात कहकर मेहरनिगार का संदेशा दिया नौशेरवां ने दरबारके बीच यामाचताका पारितोषिक देकर कहा कि चालीसदिवस के पीछे बिवाह कियाजावेगा बख्तकने मुर्जवांके पुचसे कहा कि यह मोहलत बुरीहै और उसके आनेका भी हाल सुनागया है क्योंकर कि हमका जीता है जो इतने में आजायेगा तो सब उपाय नष्टहोजायगा आपएककामकरें कि कलउठनेके समय बादशाहसे प्रार्थना कीजिये कि सेवक की यह इच्छाहै कि यह बिवाह जाबुलमें जाकर करे वहां पहुंचते २ चालीसदिन भी बीतजायंगे और मेरे कुटुम्ब परिवार के लोग भी सबजमाहोंगे और इस बिवाहसे आनन्द प्राप्तकरेंगे और मैंभी आपकी बातपर पुर्चकदेदूंगा और बादशाहको राज़ी करदूंगा औलाद इस बातसे अतिप्रसन्न हुआ खुशीके मारे चेहरा का रंगलाल पड़गया और मुलाक़ातके समय नौशेरवांसेकहा और बख्तकनेभी उसकीबातकी

सहायता की और अपनी ओर सेभी पुर्वकदी बादशाह ने अंगीकार किया और दाइज आदि देने का प्रबन्ध किया वख्तकसेकहा कि मेहर-निगारकीबिदाकाप्रबन्ध तुम्हारे आधीनहै इसकामसे निपटकेबेगिबिदा करनाअच्छाहै वख्तकनेएकके स्थानसौखर्चकरकेकईदिनमेंमार्गआदि का सामान तैयार करदिया बादशाह ने मेहरनिगार को बड़ी धूम धाम से बिदा किया और मंजिल तक मलिकामेहर अंगेज समेत गये और आपभी अधिकारियों समेत साथ चले औलाद मलिकाको लिये कूच करता हुआ मंजिलों प्रसन्न चला जाता था किन्तु तम्बू मलिकाके हुक्म से तीन कोस पर खड़ा किया जाता था बारह सहस्र टहलुये हबशी व तुरकी मलिका के तम्बू के आसपास रहते थे पक्षियोंको यह शक्ति न थी कि उड़ कर मलिका के तम्बू में जासकें जिस समय उन्तालीस दिन व्यतीत हुये वह समझी कि मिलापके दिनशिरपर पहुंचे औलादने एक पहाड़ अति रमणीक पर कि बायु वहां की चित्तको प्रसन्न करती थी वहांपर तम्बू खड़े करने को आयसु दिया और कहा कि कलह हमारा यहां मुकामहै मलिका का वादा पूरा होगा इसी मुकाम पर विवाह का मंगलाचार करूंगा मेहरनिगार अपने मनमें ठाने हुये थी कि जिस समय औलाद तम्बू में पांव रक्खे उसी समय अपनी तीव्रता देखावें अपने को मारडालें ॥

पकड़ा जाना औलाद मुर्जवां के पुत्र का और जाना बंधुअ होकर अमीर की आज्ञा से प्रतिष्ठा रहित होकर नौशेरवां के समीप ॥

चौपाई ॥

लागत देर छणक नहिं वेही । करत सकल बिधि सुख बहु जोही ॥
आशत्यागि आशक़ जनि देई । सेवा मन लगाइ करि लेई ॥

ईश्वर की रचना का तमाशा देखनाहै बिपिन में नया फूल खिला बुलबुल रूपी कलम यों चहकता है ईश्वर की छपासे साहब किरांभी वहां आपहुंचे और उसपहाड़के ऊपर तम्बू गड़वा दिया और कहाकि यहां की बायु ले कुछ मन तन को बल प्राप्त होता है और यहां के पास करनेसे मन भटकताहै एक सप्ताह इसी ठौर पर मुकाम रहे और इसी ठौर कुछ दिन डेरा रहे सबोंने अंगीकार किया कि बहुत अच्छाहै जो हुक्म आपका हकीम अकली मूनने अमर से कहा कि यह चराई का स्थानहै कि तुम शिकार का सामान लेजाओ और एक हिरन का तुम शिकार कर लाओ उसके कबाब की बास अमीर को सुंघावो ईश्वर के अकबालसे हमेश: अमीर को बल होगा पीछे उसके हम तुम साथ खावें अमरको आज्ञा होतेही कमंद गोफन लेकर वहां से चला चराई के स्थान में एक सुन्दर हिरन देखकर चौकड़ियों भागने लगा हिरनों ने करवटियां बदल कर चराई के स्थानसे भागकर जंगलकी राहली अमरने

एक हिरनके साथ फलांगें मारता हुआ उसके समीप पहुंचकर पहाड़ के निकट बांध हलका कमंदका इस चालाकी से हिरनके सींगों पर मारा कि वह कमंदमें फंस कर अपनी चौकड़ी भूल गया अमरने उसके चारों पाव बांधकर एक पत्थरके तले राहसे अलग दबादिया और आप पहाड़के देखने को जाबैठा देखे तो एक तम्बू ऊपर जोतना है उसकी शोभा बादशाही तम्बू के समान झलक रही है और दो आदमी सोने चांदीकी चिलमें और आफतावा लिये खड़ेहैं किसीके हुक्म को देखते हैं अमर एक हाथ को झुलाता और पावों से लंगराता उनके पासजाकर खड़ा हुआ और अति दीनता से उनसे पूछने लगा कि क्यों भाई यह डेरा किसका है और आप कौनहैं और आपके सिपुर्द कौन काम है वह बोले कि यहां डेरा मलिका मेहरनिगार काहै हम उसके सेवक हैं उसकी आधीनता और आज्ञा करलाने का हमारा कामहै पहिले हमजा नामी एक मनुष्य अरबवासीसे मलिकाका बिवाह ठीक हुआथा सो वह लंधौर के हाथसे मारा गया उसका मनोरथ पूर्ण न होने पाया कि वह बिचारा मरगया यद्यपि मलिकाने अपने को अति दुखित किया और बादशाह भी सशोकहै परन्तु मौतसेकिसी का कुछबलनहीं चलता वक्तक दुष्टने बादशाह को समझा बुझा के मलिका को औलादमुर्जवांके पुत्र कैकाबसी को दिलवायदिया है और वह बिवाह करने के हेतअपने साथ जाबुल को मलिका को लिये जाता है मलिका साहबाने बुजुरुचमेहर से सुना था कि आजके चालीसवें दिन तुम साहब किरां को मार्ग में पावोगी उससे मिलाप करके आनन्द उठावोगी इसनिमित्त से चालीस दिवसका कौल करार करलिया था कि जबतक दिन न बीतिलेवें तबतक वह तम्बूमें न आनेपायेगा सो आज चालीसवांदिनहै जो शामतकसाहब किरां यहां पहुंचे तो मलिका जीवेगी नहींतो जिस समय रात को औलाद तम्बूके निकटतक पहुंचेगा मलिका विषकी पुड़ियांफांकजायगी जो हाथमें लिये बैठीहै अफसोस मलिका काहै कि उसने अभीकुछनहीं देखाहै नाहकमें जानदेतीहै अमरने कहाकि बाबाईश्वर का स्मरणकरो आश्चर्य क्याहै जोसाहब किरां आजहीं आपहुंचें सब भांति ईश्वर मलिकाका मनोरथ पूर्ण करे फ़कीरका तुम से इतना सवाल है कि मेरा एकहाथ और एक पांव सुन्नहोकर रहगया है वैद्यने बताया था कि जो सोने रूपे की चिलमची और आफतावसेहाथ पांव धोवेगा तो तेरा हाथ पांव अच्छाहोजावेगा मुझको तोकहां प्राप्तहोता कि यह सेवक करता परंतु जानपड़ा कि कुछदिन अभी जीनेके शेषहैं जोतुमऐसेसाहब मनुष्यों के हाथ में चिलमची और आफ़तावा देखपड़ा अपने जीने का कुछ सहारा हुआ थोडी देर के निमित्त जो कृपा कीजिये तो आपके सामने इस नदीसे पानी भरके हाथपांव धोलूं नहींतो फिर कहां ऐसा

अवसर मिलेगा कौन ऐसी बड़ीमौल्यकी वस्तुमुझे देगा उनदोनोंमनुष्योंने तर्सखाकर सलाहकी कि एकफकीरका काम निकलताहै और हमारा इसमें घाटाक्याहै कहीं इसेलेकर सेना से भाग नहीं सक्ता अभी हमको लौटादेगा यह शोचकर चिलमची और आफतावा अमरको देदिया अमरने सलाम करके लेलिया और नहरसे पानीभरकेहाथपांवधोयेऔर उनको अपने पास रक्खा उनलोगों ने कहा कि लावो भाईअबतुम्हारा कामनिकल गया अब चिलमची आफतावा हमको देदेाअमर एकफलांग मारकर वहांसे बोला कि मैं ऐसानिर्बुद्धी नहीं हूं कि लेकर उलट पलट करूं और अपनी दवा तुमको देदूंहमने मानलिया कि जो मैं इससमय अच्छाहुआ जो इस बीमारीने फिर मेरेऊपर आकर झपटदिया तो मैं तुम को कहां पाऊंगा और यह चिलमची आफ़तावा किससे मांगता-फिरूंगा यह कहकर औलाद के तम्बूके ओर भागा उन दोनोंने पीछा किया अमर भला उनको कहांमिलता था हवाहोगया कहींका कहीं पहुंचा औलादके तम्बूमें जाघुसाछलकी चादर बिछाकरपंडितकीसूरत बनकर पांसालेकर बैठा उनदोनों मनुष्योंनेउसके आसपासभीड़ देखकर अपने मनमें कहाकि इससे पंडितावका पांसा फेंकवाइये इसकाज्योतिष देखिये और चोरका ठिकाना लगवाइये पासजाकरखड़ेहुयेऔरउसका हाल देखने लगे कि जो कोई उससे पूछताहै वह उसके मनकाभेद वर्णन करताहै यह बड़ी आश्चर्य की बात करता है यह भी जाकर बैठगये अपना समाचार उससे पूछनेलगे उसने कहाकि तुम्हारे कोई बरतन जातेरहेहैं और वहदोनों चांदीसोनेकेहैं यहबात सुनकर अत्यन्तउसका विश्वास माना और आपसमें सलाह करनेलगे तेहिकेपीछे एकतोअमर के पास बैठारहा और दूसरे ने मलिका के पासजाकर प्रार्थना करभेजी कि सेवक कुछ प्रार्थना कियाचाहताहै और बहुत अवश्यकामहै मलिका तो रातकी राह तकरही थी कि जब शामहो मैं विष हलाहल खाऊं इसजिन्दगी से छुटीपाऊं गुलामकी यह बात सुनकर शीघ्र उठखड़ीहुई कि कदाचित् कोईखुशीकी बातसुनावे उस प्यारेका समाचार बतावे पर्देसे लगकर पूछा कि क्याकहता है कोईखबर अच्छीलायाहैउसनेप्रथम हाल चिलमची और आफ़तावे का वर्णनकिया उसके पीछे पंडित का हालबताया मलिका अत्यन्त बुद्धिमान्थी मन में शोची कि इतनी शक्ति सेवाय अमर के किसीने नहीं पाई है कि मेरे डेरेके निकट इस चालाकी से वस्तु लेकर चलताहीजाय और सहस्रों मनुष्यों की आंख में धूलझोंक कर चलदे और आश्चर्य नहीं है कि वहां पण्डित की भी सूरत बनाहो यहभी तमाशा किया शीघ्र आदमी परआदमीभेजकरअमरकोबुलवाया और एक किनारे में चिलमन के निकट उसे बैठाला औरकहाकिऐ पंडित मेरे मनका भी तो कुछ हालकहो अमरने कहा कि साहब मैं

बिनामुंहदेखे कभी नहीं किसीका भी हाल कहताहूं और पर्देसे किसी का हालकहनामैंनेनहीं सीखाहै मलिकानेविचारकिया कि आखिरआज मरना है यह बूढ़ा मनुष्य मुझे देखेगा तो क्याहोगा किसपर मेरा भेद बिदित होगा पर्दा उठादिया और अपनी सूरत दिखादी अमर ने पांसे मेहरनिगारके हाथमें देकर कहा कि आप पांचसौको हाथमें लें और उनशकलों पर फेंकें मैं शकलोंका हाल देखकर आपका मनोरथकहदूंगा और बिचारके हाल बतादूंगा मलिकाने जो पांसेके चिन्हदेखे तो पंडित के पांसे न पाये औरही कुछ वाही तवाही पांसे दृष्टिपड़े क्योंकि मलिका तो इस गुणमें बुजुरुच्चमेहर की चेली थी किन्तु श्वास साधे रही कि देखे क्या करता है इसकी आज्ञा कैसीहै पांचसौको जो फेंका अमर ने सब आदिसे नेह बताना आरंभ किया और कहा कि आज आपको इमजा की खबरमिलेगी खुशीका समाचार सुनाईदेगा मेहरनिगार ने अपनी बुद्धिसे जाना कि यह अमर है यह वहां छली रंगकररहा है हाथ बढ़ा कर उसकी बनीहुई दाढ़ीको जोएंचा तो दाढ़ी अलगहोगई अमरकी सूरत दिखाईदी मलिका अधीर होकर गलेसे लिपटगई बाहें मारकर रोनेलगी और पूछनेलगी कि सचकह अमीर मेरा जीवनाधार कहांहैं अमरने कहा कि अमीर आज सवेरे से इसी पहाड़के तले तम्बू गाड़ेहुये हैं ईश्वरकी कृपासे अच्छेहैं परन्तु आपके शोकमें ग्रसितहैं ऐसा सुनकर मलिका तो मनोफूले नहींसमाई चाहती थी कि अमीर का हाल पूछे और अपनी बीती कहै कि इतने में आदमी परआदमीडेउढ़ीपर पहुंचे कि पण्डितको बिवाहकी सायत देखनेके हेत औलादने बोलाया है सब सामग्री बिवाहकी इकट्ठाहैं केवल इसी पण्डित का मार्ग तकरहा है अमरने कहा कि अब आप बेफ़िक्ररहें चैनसे बैठें देखिये तो इस बिवाहके बदले कैसा औलाद को दुखित करता हूं उनजातिउनागर केसाथ क्या२ करता हूं यह कहकर बिदा हुआ मलिका ने खिलत बिदाकी और बहुत से रुपये कृपाकिये अमर वहांसे लेकर चला और औलादके पास पहुंचा देखा कि एक अग्निका पुंज सजा सजाया जवाहिरकीचौकीपर बैठाहै और बिवाहकी सामग्री उसके आसपास धरीहैं औलादने पहले पूंछाकिमलिकाने तुझेक्योंबुलायाथा वह बोला कि एकमृतककी जिंदगी पूछतीथीं और बहुत अफसोस उसका करतीथीं मैंने कहदिया कि वह मरगया और आप को औलाद सुर्जवां से बहुत फलमिलेगा पहले तो राजी न थीं परन्तु मेरेकहने सुननेसे राजीहुई हैं यह बात सुनतेही औ-लाद बहुत कृतकृत्यहुआ और मंगलाचार होनेलगे अमरको भारी मोल की खिलअत देकर पूछनेलगाकि बिवाह कबकरूं उसचन्द्रबदनी से कब मिलाप करूं अमर ने कहा कि जितनी शीघ्रता इसमें होसके कीजिये औलाद इसबातसेऔरभीखुशहुआएकथैलीमेंहीरोंकी औरअमरकोदी

अमर उसको लेकर अशीस देने लगा और कहने लगा कि सेवक के चार लड़के हैं एकतो गदा अच्छी चलाना जानता है इस करतबमें दूसरे को नहीं समझता है और दूसरे ने पटेबाजीमें अपना दूसरा नहीं रक्खा और तीसरेको ढोल खूब बजा आता है और चौथा सहनाई बहुतअच्छी बजाता है जो आपउनकातमाशा देखें तो बहुतप्रसन्नहोवें औलादबोलाकि कल प्रातसमय तुम अपने सब कुटुम्बको हमारेपास भेजदेना अलबत्ता यह तमाशा देखनेयोग्यहै कि तेरा परिवार भी गुणी अपने गुणमेंहोगा कि तू आपभी होशियारहै अमर उससे बिदाहुआ और पहाड़के तले आकर अपने साधारण भेष में होकर हिरण को हकीम अक़लीमून के पास लाया उन्होंने मारके कबाब की बू अमीरको सुंघाई उससे शरीर अमीर का बहुत प्रसन्नहुआ और अमर सीधा राही हुआ लन्धौरके पासगया राहमें मुक़बिलसे जो भेंटहुई उससे कहा कि तू आदीको लेकर लंधौरके तम्बू में बेगि आ बादशाह लन्धौर ने पूछा कि खाजे किधर आये क्यों इतना घबराये हो बोला कि आपहीके पास आयाहूं कुछ हाल अपना कहूंगा आप जानतेहैं कि साहबक़िरां मलिकामेहरनिगार पर जान देतेहैं और उसके निमित्त यह सब कष्ट अपने शिरपर लेते हैं अफ़सोस है कि आप के होते मलिका को कोई दूसरा लेजाय और अमीर उसके नेहमें गरल खाय यह कहकर सब हाल बयान किया और कहा कि पहाड़के तले उसका डेरा गड़ा है और वहां सामान बिवाह का इकट्ठा है शामतक वारा न्याराहै लन्धौर इस वृत्तान्तको सुनतेही आग बबूला होगया गदा लेकर उठ खड़ा हुआ कि मैं अभी उसकी हड्डी पशुलियों का भी सुरमा करता हूं इसी समय उसका शिर फोड़ता हूं अब तो उसके रक्तका पियासा हूं अमरने कहा कि ऐसा मनोरथ न कीजिये कदाचित् अमीर को नागवार हो उसको जीता पकड़ लीजिये लन्धौरने कहा फिर जो तुम्हारी सलाह हो मैं राज़ीहूं जैसा तुम्हारा मनोरथहो वैसा करूं इतनेमें मुक़बिल भी आदीको लेकर आन पहुंचा अमरने उससे सलाह की और अपना मनोरथ वर्णन किया उन्हों ने भी लन्धौर की बात मानी जब दिन हुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश फैलाया अमर ने बड़ा ढोल तो आदीके गले में डाला और सहनाई मुक़बिलको दी लन्धौरसे कहा कि आप गदा सम्हारें और अपनी सूरत एक अच्छे छोकड़े की बनाकर पट्टा हिलाता हुआ औलाद की डेवढ़ी पर गया और औलाद ने सुना कि उस पण्डित के बेटे आये हैं अपने पास बुला भेजा और तमाशा करनेके हेतु आज्ञा दी अमर ने ग्यारह पट्टे अपनी झोरीसे निकाल कर ऐसी पटेबाज़ी कीकि औलाद ने सभा सहित आश्चर्यकिया और प्रशंसाकरनेलगे कि हमने अपनी उमरमें कभी ऐसी पटेबाज़ी नहीं देखी थी और ऐसा गुरू इस गुणका देखने में नहीं

आया औलादने बहुत कुछ इनआम भी दिया मुक़ाबिलने सहनाई और आदी ने ढोल बजाकर सभा को प्रसन्नकिया उनको भी इनआम दिया गया लंधौरभी जो गदागरी करनेलगा उसकी बायुसे लोग अखाड़ा और कुर्सीसे धरतीपर गिरनेलगे और सबओरसे एक हल्ला बस२का होनेलगा अमरने लन्धौरको इशाराकिया कि यही समय है ईश्वरका नाम लेकर अपनी गदाकी चोट दिखाइये और इन सबको अपना बल दिखाइये लंधौरने हिलाते२ उस गदाको औलाद के तम्बू पर मारा औलाद दरबारियों समेत तम्बू में दबगया और सेना से युद्ध होनेलगा लन्धौर ने गदा उठा कर ज़ोर से कहने लगा जो मनुष्य जानता हो सो जाने और जो न जानता हो वह भी जाने मैं लन्धौर हिन्दके बादशाहका पुत्र हूं उसका नाम सुनतेही बारह सहस्र सवार लन्धौर के जो गांड़ा बांधे घातमें बैठे थे तलवारें खींचकर शत्रुकी सेनाके शिरपर पहुंचे दश सहस्र सवार औलाद की सेनाके मारेगये और पांच सहस्र घायल हुये और दश सहस्र बन्दमें फंसे और शेष पांच सहस्र जीव लेकर भागे अब आदी का चरित्र सुनिये कि युद्धके समय विचार किया कि आज औलाद का मनोरथ विवाह करनेका था खाना अवश्य अच्छा २ बनाहोगा बावरची खाने की ओर चलकर खाना चाहिये यह सोचकर बावरचीखाने की ओर चला थोड़ी दूर गया था कि खीमेके तलेसे एक मनुष्य को निकलते देखा ढोल उसपर रखकर उसे नीचेको दबाया तो ढालका चमड़ा भारसे फटगया और वह मनुष्य उसके भीतर समागया ॥

आना अमर व मुक़ाबिल व आदी व लन्धौरका बाज़ीगरों के भेषमें औलादके तंबूके निकट और तमाशा से युद्ध करना और पकड़ना औलाद का ॥

अति शीघ्र उसके मुखको कड़ाबन्द करके बावरचीखानेमें घुसा खाना तो बहुत था1ही जो जो वस्तु जीमें आई निडर होकर खाने लगा हाथ अपना मुंह अपना भरने लगा अमर ने यद्यपि औलाद को तम्बूमें ढूंढ़ा परन्तु उसका खोज न मिला लाशोंमें ढूंढ़ता हुआ बावरचीखाने की ओर जा निकला देखा कि आदी बड़े २ कौर खारहाहै भांति२के भोजन निकाल कर अपने आगे रक्खा है अमर ने त्यौरी चढ़ाकर कहा कि तू हमज़ा की सेनामें प्रसिद्ध पहलवान कहलाता है और युद्ध के समय लुककर एक किनारे पेट पालन करताहै यह समय पेट भरने का नहींहै अपनी प्रतिष्ठा का भी ध्यान न रक्खा आदीने कहा कि मैंनेभी एक आदमी पकड़ा है मेरा खाना ठीक व उचित होगया अमरने कहा कि हम भी उसकी सूरत देखें आदी बोला कि वह ढोलके भीतर बन्द है उठकर देखले मुझे खानाखानेदे अमरने उसकी झलक देखकर कहा कि यह एक आदमी तो लाख आदमी के बराबर है सचमुच सबसे तूने बड़ा अच्छा काम किया कि इसे जो आधीन करके फँसाया यह कहकर प्रसन्न हो

आदीसेढोल उठवाकर लंधौरकेनिकट लेगया औरकहा कि ऐ बादशाह मैंने एकबड़ाशिकार फँसायाहै लंधौरनेकहा कि वहशिकार मुझेदिखावो ज्योंही आदीने ढालका मुंह खोला औलाद ढोलसे निकलकर कटार लेकर लन्धौरपर दौड़ा लन्धौरने कटार उसके हाथसे छीनकर उसको धरती पर दे पटका अमर ने कमन्दसे नख शिखसे उसे जकड़ा और यह शुभ समाचार मलिका को सुनाया मलिका ने ईश्वरका धन्यवाद करके अमरको इनआम दिया अमर वहांसे अमीरके पास पहुंचा आदि से अन्त तक जो हुआ था वह अमीर को सुनाया अमीर ने अमर को गले से लगा लिया और लंधौर से कहा कि सचमुच हमारी तुम्हारी एकही आबरू है तुम न रक्षाकरो तो और कौन रक्षाकरे और ऐसे अवसरमें मित्रोंके सिवाय और कौन काम आवे और सहायक हो और साथ दे सुलतानबख्तक पश्चिमीके साथ मलिकामेहरनिगारका भेजना ठीकहुआ और औलादको भी बेड़ी पहिनाकर भेजनेका मनोरथ किया नौशेरवां जैसा उचित जानेगा वैसा करेगा और एक विनयपत्र बादशाह सप्तद्वीप को इस मजमूनका लिखा कि मैं आपकी आज्ञानुसार सरन्दीपमें गया और मार्गमें जैसा २ कष्ट पाया उसका वर्णन नहीं होसक्ता और मैंने लंधौर को जीतलिया और ईश्वर ने सब भांति से प्रतिष्ठा रक्खी और उसको मैं अपने साथ लिये आताहूं आपके पास शीघ्र उसे पहुंचाता हूं और इस समयमें मेरे मरनेका समाचार शत्रुओं ने आपको पहुंचाया था उसको आप सत्य समझकर कुबुद्धियों की सलाहसे आपने मलिका-मेहरनिगार को औलादके आधीन करदिया कुछ उस असत्य समाचार को आपने नहींजांचा मार्गके मध्यमें मुझसे और औलादसे मिलापहुआ उसको पकड़के आपके पास भेजा इसमें मेरी हीनताई विदित हुई जो दण्ड आप उचित जाने इसेकरें और जो लोग इससलाहमें थे उनको भी जान्नाचाहिये और मलिकाको भी बिदाकिया अपनी धरोहरको आपके पास भेजा है ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र उपस्थित होकर बिवाह करूंगा और अपनेबैरियोंको समझलूंगा इसबिनयपत्रको लिखकर सुलतानबख्तक पश्चिमीको दिया और गुस्तहमने मुझे बिष दियाथा उससे जीवतो बचा परन्तु कष्ट अधिकहुआ और मलिका के साथियोंको अलग २ खिलअत कृपाकी मेहरनिगार ने अमरको बुलाकर कहाकि मैंने मंगलाचार की सभाकी तैयारीकी थी अमीरने मुझे अपने पासतक न बुलाया और सदा यनको बिदाकिया ऐसा क्या अपराध मुझसे हुआहै मि मेरा मुंह देखनेके योग्यनहीं रहाहै अमरने अमीरसे आकर कहा कि मेहरनिगार सशोक बैठीहै और इसभांतिसे कहती है अमीर ने कहा कि तुम देखतेहो कि मेरी सूरत बिषखानेसे कैसी होगईहै इसकारणसे मेरा जी नहीं चाहता है कि अपना मुंह मलिका को दिखाऊं अथवा मैं जाऊं या उनको यहां

बुलाऊं ईश्वर चाहेगा तो मदायन पहुंचतेही ज्योंकात्यों देह होजायगी वहां फिर मिललेयंगे मलिका को अच्छीभांतिसे समझा दो और मार्गके बीचमें तुम हमारेपासआवो और जितनीजल्दीहोसके मुझेमिलोहकीम अक़लीमूननेकहा खाजे तुम मदायन जातेहो नोशदारू लेतेआना परन्तु अमीरके नामसे किसीसे न मांगना नहीं कोई न देगा अमर अमीर से बिदाहोकर मेहरनिगारके पास पहुंचा और उसे समझाकर चुपका किया और डोलीपर सवार करके मदायनका मार्गलिया थोड़े दिनोंके पीछे मलिकाकी सवारी मदायनमेंपहुंची नौशेरवांअगवानीकरके लेगया सुलतानवख्तकपश्चिमीकोखिलअतछपाकीऔरअमीरकी आरोग्यतासुन कर बहुत प्रसन्नहुआ अब अमरका हाल सुनिये कि एक गवांर का भेष बनाकर एक कसाईकी दूकान पर गया और दो घिसुआ पैसा जिसमें अक्षरका चिह्नभी न था लेकर गया और उसकेआगे फेंककर कहा कि ये दोपैसेले और इसकी नोशदारूदे उसने कभी नामतक न सुनाथा वह बोला साहब नोशदारू किसजीवका नामहै उसकी सूरत कैसीहै अमर यह सुनकर एक बनिये की दूकानपर गया और उसके आगे पैसे फेंककर नोशदारू मांगनेलगा वह बोला साहब आटा दाल चांवल लोन लकड़ी घी तेल मछआ कोदों बाजराआदि मेरेयहां है जो लीजिये तो लीजिये दूकान आपकी है नोशदारू तो मेरेपास नहींहै कि जो मैं तुमको दूं मैंने तो कभी इस वस्तुका नाम भी नहीं सुना किसी पन्सारी से पूंछिये कदाचित् उसकी दूकान पर निकले अमर पन्सारी के समीप गया वह बोला कि केराने में नोशदारू किसी पदार्थ का नाम नहीं है हमने इस नाम का केराना नहीं सुना देखो कुंजरे के पास हो अमर कुंजरे के पास आया उसनेकहा कि साहब गाजरमूली साग पात आदि चाहो तो मेरे पास है नोशदारू नाम तो किसी तरकारी का भी नहीं है आगे किसी की और दूकान देखो अन्तको होते २ अत्तार की दूकान पर गया और उससे नोशदारू का नाम पूंछा उसनेकहा नोशदारू हमने कहां पाई कभी देखने में भी नहीं आई परन्तु तू एक काम कर बादशाह की न्याय शाला की सांकड़ खिला हां बादशाह के दवाईखाने में मिलेगी अमर ने जाकर उस सांकड़ को खड़ खड़ाया बादशाह ने बुलाकर उसका हाल दरियाफ़त किया अमर ने दो पैसे जेब से निकाले और नौशेरवां के आगे रख दिये कि साहब उसकी नोशदारू चाहता हूं मोरे बेटवा का संपवा काटेसि है गौआं का बैदवा कहेसि है कि मदायन से सवातोला नोशदारू लादे है तो तेरा बेटवा छिनमा नीकहोजैहै सो कसाई बनियां कुंजड़ा पंसारी से पूछत फिरेउंथा कोऊ नाहीं बतावत रहा आज एक मनई से बाटमें जो भेंट भई वह महिका कहेसि कि पादशाह के लगे मिलि है सो मैं तुम्हारे

पास हाजिर भयाहूं खामिन्द के चरनन ले पहुंच गया हूंयह टकौना लेउ और तीन मिस काल नोशदरुआ मोहिं का देउ मोल तोल जोख में कम होइ है तो काम न निकसि है मोरे दामो जैहैं सो मैं पूरेतीन मिसकाल लेहौं नहीं तो दाम न देहौं बादशाह सभा समेत उसकी बातें सुनकर बहुत हँसे और उसकी सकल देख कर बहुत प्रसन्न हुये और कहाकि पैसे उठा ले हुजूर से नोसदारू तुझे छपा होगी अमर बोलाकि साहब मैं ग़रीब मनई हौं बे कीमत कैसेउ नाहीं लेति हौं तब पांव छोहों से मुफ़त २ नोशदरुआ कबलेहौं नाहक में आपका यह सान अपने मूड़ पर धरौं बादशाहने बुजुरुजमेहर सेकहाकिइसको खजाने में ले जाकर तीन मिस काल नोसदारू देदो और किसी भांति से इसके देने में कमी न करना बुजुरुजमेहर से अमर को साथलेकर खजाने में आया और संदूक कोखोलकर एक अड़ाऊ हुक्का खोला और उसके उपर की ढट्ठी खाली उस मे से तीन मिस काल नोशदारू अमर को दी और तीन मिसकाल लेकर अपनी जेब में रक्खी इस कारण से कि रमल के बिचार से गुस्सहम का जहर देना अमीर को जान पड़ा था यह अच्छी भांति मालूम था कि अमर नोशदारू मांगने कोआवेगा अमर ने मार्ग में बुजुरुजमेहर से कहा कि वाह हजरत बादशाह के नौकर होकर साहब चोरी भी करते हैं ऐसे इज्जत दार मनई होकर कोई दमड़ी पर नियत बहंकावत है नोशदरुआ जो चोराके टेंटे में रक्खी है सो मोंका देदो इसमें भलाई है नहीं तो बे इज्जत होइ हौ बुजुरुज मेहर ने रुस वाई के डर से डर कर अमर को दे दी मनमें बिचार किया कि यह गवार अदमी है जो भेद बिदित करे तो कुछ बात नबनैगी अब बख्तक का हाल सुनिये उसको तो अमीर का बिष खाना मालूमथा अत्यन्त घबरा कर मन में शोचा कि बुजुरुज मेहर ने अवश्य हमला के हेत नोशदारू छिपाकर रक्खी होगी अपनी असालत का मार्ग जान कर बादशाह से प्रार्थना की कि बुजुरुज मेहर को देखिये और नोशदारू को देखिये बादशाह भी उसके कहने में आगया जो आवश्यकता थी तो हजूर से मांग क्यों न ली एक गंवार को हुजूर ने छपा की क्या इनको न मिलती कठिन आज्ञा दी बुजुरुज मेहर का मारा लिया जावे बादशाह की आज्ञा नुसार काम किया गया परन्तु कुछ भी न निकला उसी समय बुजुरुजमेहर को खिलअत दी गई और बख्तक पर जुरमाना किया गया और बुजुरुजमेहरसेबहुतकुछलल्लोपत्तो की बातें कहीं उस समय बुजुरुज मेहर का मालूमहुआ गवांर जो नोशदारू ले गया है वह अमर था अपने मनमें बहुत प्रशन्न हुआ कि अमर की बदौलत चोरी की जिल्लत से तो बचे अमर ने नगर से बाहर निकल कर अपना साधारण भेष बनाया और अमीर के ओर का मार्ग

लिया यहां अमीर एक दिन निर्बलता के कारण बहुत रोये और अपने आपको भला बुरा कहने लगे कि इस जीनेसे मरना अच्छा है रात के समय उसी शोक में हजरत इबराहीम साहब ने आकर अमीर को ढाढ़सदी अमीरने प्रातःकालउठकर स्मरणध्यानपरमेश्वरकाकिया और पलंगपर तकिया लगाके बैठे कि इतने में अमर पहुंचा अमर ने अमीर को न पहिंचाना और दूसरा कोई जानकर पूछने लगा कि आपकौनहैं और कहांसे आये हैं आपको मालूमहै कि हमजा कहांटिके हैं अमीरने कहा कि मैं औलादका भाई हूं बन्दसे छोड़ाने के हेत आयाहूं उसको तो नपाया परन्तु हमजाको संसारकी बन्दसे छोड़ाया ज्योंही यह बात अमर ने सुनी झटपट कटार निकालकर दौड़ा अमीर ने खंजर अमर से छीनकर गलेसे लगालिया और कहा कि मैं हमजा हूं आपने नाहक में इतना क्रोध किया अमर ने नोशदारू हकीम अकलीमून के आगे रखदी और उसके खाने का हाल कुछभी न कहा वह अमीर को कईमासे रोज खिलाने लगे कि उससे कुछ अमीर को बल व मन ठिकानेहुआअबथोड़ा हाल बहिराम मल्लखाकानचीन का सुनिये कि चार जहाज जो उसके पास तूफान में अमीरसे अलग होगये थे छःमहीने तक समुद्र में हलचल पड़ारहा सिंधुके किनारे लंगर जहाजों का देकर अनाज आदि लेने की नियत हुई गल्लाकेहेत सूखेमें उतरकरथोड़ी दूरगया देखाकि एकबड़े वृक्ष तले एकतख्त पर कमान और हजार मोहरों का तोड़ाधराहै बहरामने लोगोंसे पूछाकि यह कमान और तोड़ा क्यों चौकी पर रक्खाहै निगहबान बोलेकि सरकश हिन्दी जो यहां का बादशाह है उसका भाई कोहबख्त अत्यन्त बलिष्ट है उसने परीक्षा के हेत कमान मोहरों समेत राखवादी है और यहो सूरत बलकी परिक्षालेने के हेत रक्खी कि जो कोई इस कमान को चढादेवे मोहरों का तोड़ा लेलेवे बहराम नेविचार किया कियह माल ईश्वर का दियाहै इसको नछोडना चाहिये चौकी के पास जाकर कमान का चिल्लाचढ़ाया और उसके गोसेकोकानकीलौर तक खींचकर रक्खा और तोड़ा उठाकर अपने आदमियों कोदियाऔर मनोर्थ चलनेका किया निगहबानों ने यह हालकोहबख्त हिन्दीसेकहा कि एक सौदागरने आपकी कमानपर चिल्लाचढाया और तोड़ामोहरों का अपने लोगोंको सौंपा दैवयोगसे एकमक्कार भी यहतमाशादेखताथा कड़ीकमान के तीरके समान शरकश हिन्दी के निकट पहुंचा और यह सब हालबयान किया शरकशहिन्दी ने आज्ञा की कि अभी जावोऔर उसको हमारे पास लावो आज्ञापातेहीलोगचिल्लातेहुयेदौडे किसौदागरको कमान समेतइस नगरके हाकिमने यादकियाहै और उसे देखना चाहताहै बहराम मर्दों के समान शरकशहिन्दी के पास पहुंचा शरकशहिन्द अत्यन्त शिष्टाचार समेत आगे आया और उसके आदमी भी

कमान लेकर पहुंचे और अधिकारी भी उपस्थित हुये सरकशहिन्द ने बहरामसे पूछा कि इस कमान को तुम्हींने चढ़ाई है बहिराम ने कहा कि हां ईश्वरकी कृपा से मैंने चढ़ाईहै सरकशने कहा कि एकबार मेरे आगेभी खींचिये अपनाबलदिखाइये और देखनेवालोंकीभी यहीइच्छा है बहराम ने कमान को लेकर इस बलसे ईंचा कि कमान टूटगई सरकशने क़दरदानी की राहसे उसे बैठने की आज्ञा दी बहराम कुर्सी सोनहली पर जो सरकशके निकट पड़ीहुई थी बैठगया बहराम का बैठना हुआ कि इतने में कोहबख्त शेरबबरके समान पहुंचा कमान को टूटा और बहराम को कुर्सी पर बैठा देखकर आपे में न रहा कटार खींचकर यह कहताहुआ दौड़ा कि एकतो तूने मेरी कमानतोड़ी दूसरे हमारी कुर्सी पर बैठा तेरी यह प्रतिष्ठा कहांसे हुई बहराम ने कोहबख्तका हाथमिरोड़करकटारछीनलियाऔरकमरमेंहाथडालकरचारों खाने चित्त पृथ्वीपर गिरादिया औरकहा कि अब क्यामनोरथ है इतनी ही शानथी अथवाकुछ अधिक बल था सरकश ने बहरामसे उत्तर किया और कोहबख्तका अपराध क्षमा करवाया और कहा कि तुमको अपने दीनकी क़सम है कि तुम कौन हो और क्या नाम है और किस देशमें रहते हो बहराम ने कुल हाल अपना आदिसे अन्ततक कहा कि सरकश ने अमीर का नाम सुनकर एक आहसर्द भरी और कहा कि मुझको हमज़ाके देखनेकी बड़ीइच्छा थी परन्तु ईश्वर गुस्तहमका बुरा करे कि उसने ऐसे जवान प्रसिद्ध पहलवान को मारा और उसकी जवानीको धूलमें मिलाया बहराम यह बात सुनतेही चिल्लाकर अचेत होगया जब सुगन्ध सुंघानेसे उसे चेतहुआ उसने पूछा कि यह समाचार व्यवरावार कहिये इसको अच्छीभांति कौन जानताहै किसने आपको यह हाल बताया है सरकशने कहा कि गुस्तहम यहां आया था उसने यद्यपि मेरे मिलने की इच्छाकीपरंतु मैंने उसे अपने यहां आने न दिया उसने यहांसे लंघौर और हमज़ाके शिरको एक मिचके हाथ नौशेरवां के पास रवाना किया और यह फिर नहीं जानपड़ा कि आप कहांको गया परंतु मुझको उसकी बातका बिश्वास नहीं कि वहभी बड़ा झूंठा मालूमहोताहै इसनिमित्तमैंने कईमनुष्य सरंदीपकी ओरभेजेहैंकिठीकर हाल मालूम करें और इस हालसे मुझे इत्तिला दें बहरामने कहा कि आपने जो नामगुस्तहमका लिया मुझेबिश्वासहुआ कि उसकीदुष्टताको खूब जानता हूं निश्चयकरके उस खलने अमीरको छलसे मारा होगा वह उसके मारनेके उपायमें था अवश्य अवसर पाकर कुछ न कुछ छल किया होगा अब मैं यहां एक क्षणभी ठहर नहीं सक्ता मदायन को जाऊंगा और इसी चार सहस्र सवारों से नौशेरवां की सेना को न मारडालूं और नौशेरवांका गलाकटारकीनोकसे न पारकरूं तो संसार

मैंकिसीको मुंह न दिखाकर विष खाकर या कटार मारकर मरजाऊंगा जब सरकशनेदेखा कि बहिराम नहीं ठहरता शीघ्र छः महीनेके निमित्त ग़ल्ला जहाज़ों पर भरवा दिया और बहराम को बिदा किया बहराम रोता पीटता जहाज़पर सवार हुआ और जहाज़ोंके लंगर उठवादिये छः महीनेके कालमें जहाज़ बसरेमें पहुंचे बहराम चार हज़ार सवारों समेत सूखे २ मदायन की ओर राहली और सेना को आज्ञा दी कि जो गाँव नगर आदि मदायन के आधीन मिलें उनको लूट लो कोई स्थान बसा हुआ बचने न पावे सब को नष्ट कर दो यह ख़बर नौशेरवां को पहुंची कि बहराम ने अमीर के मरने का हाल सुन कर लड़ने भिड़ने पर कमर बांधी और तमाम गाँव नगर जो मार्ग में मिलते जाते हैं उनको उजाड़ता हुआ चला आता है नौशेरवां ने फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्र को भेजा कि तू जाकर बहराम को समझा दे कि अमीर जीते हैं मरने का बताने वाला बहुत झूंठा है शत्रुओं ने झूंठी ख़बर उड़ाई थी तुम को उचित है कि सीधे होकर और सत्य मानकर हुज़ूर में आवो और अमीर की ख़बर बद से किसी भांति शोक न करो फ़ोलाद गुस्तहम का पुत्र मार्ग के मध्य में बहराम के सामने हाजिर हुआ कि साहब क़िरां जीता है पर वह कब मानता था फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्र को देख कर जल कर बोला कि ऐ दुष्ट तेरी बातें ये हैं और तेरा बाप यह कुछ कर बैठा है तेरी बात क्यों कर मानें जो कुछ बीरता रखता हो तो मैदान में आ तू भी क्या याद करेगा कि किसी से काम पड़ा था फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्रने लाचार होकर सफ़ बांधी और मुक़ाबिला के समय उसने एक भाला बहिराम की छातीपर मारा बहिरामने हाथ बढ़ाकर भाला उसका छीन लिया और वही भाला उसकी छाती परमारा हनकाकर घोड़ेकोजो जांघोंसे दबायाफ़ोलादअपनेघोड़ेसेअलग होकर नट की भांति भाला के साथ उतरता हुआ चलाआया बहराम ने देखा कि फ़ोलाद का काम तमाम हो गया भाला को हाथ से फेंक दिया फ़ोलाद की सेना ने धावा किया बहराम ने उन्हीं चार सहस्र सवारों से सब को मार डाला कुल पांचसौ आदमी दश सहस्र सासानियों में बच रहे वे अपनी जान लेकर भागे और नौशेरवां से जाकर ब्यौरा समेत सब हाल वर्णन किया नौशेरवां को अत्यंत शोच हुआ कि क्या उपाय किया जावे कि इतने में बहराम चार सहस्र सवार लेकर क़िला के निकट पहुंचा यद्यपि लोगों ने कहा कि अमीर ईश्वर की कृपा से जीते हैं बादशाह से तू इस समय ढिठाई करता है अमीर सुन कर तुझ से ख़फ़ा होंगे परंतु उसको तो धीर्य्य न था समझा कि नौशेरवां अपने को बचाता है लाचार होकर क़िला की फसीलों पर से लड़ाई होने लगी हथियार बजने लगे बहराम चालाकी करके

क़िलेके तले पहुंचा नौशेरवां अत्यन्त शोकयुक्त था कि बहराम थोड़ी देरमें क़िले का दर्वाज़ा तोड़कर भीतर आवेगा सुफ्तमें सब मारे गये अभी तक बहराम ने क़िले पर गदा न लगाई थी कि नौशेरवां की दुआ ईश्वरने अंगीकारकी अमीरके आगमनका धुरिहर दूरसे देखपड़ा और सवारों का परी दिखाई दिया घिरेहुये क़िलेमें जो थे सब चिल्लाये कि साहबक़िरां आये बहराम ने जो फिरकर देखा तोसचमच अलम अज़दहा पैकर गर्दके ऊपर दिखाईदिया बहरामने घोड़ेको फिराकर दौड़ाया और अमीरकी रकाबको चुम्मादिया अमीरघोड़ेसे कूदकरबहरामको छातीसे लगाया और लन्धौरसे मिलाप जानपहिंचानकाकरवा के कहाकि मेरीबाहोंका बल एक आपहैं और दूसरा यहहै और अति बलिष्ट और सच्चामित्रहै अभी सवार न हुयेथे कि एक सवार नौशेरवां का पहुंचा अदब समेत आगे आया और सेवकाई कीरीति करताहुआ नौशेरवांकी ओर से बोलाकि बादशाहसप्तद्वीपने आपको आशीर्वादके पीछेकहाहै कि इसी स्थानपर तुमआज डेराकरो कल मैं आपप्रातःकाल आपकी अगवानी के हेत आऊंगा तुम्हें अपने साथ नगरमें लाऊंगा साहबक़िरां बादशाहकी आज्ञानुसार उसीस्थानमें तम्बूगाड़दिया और अपनासलामबादशाहकोकहलाभेजाजबसूर्य्यप्रकाशहुआतबसाहबक़िरां लन्धौर और बहराम समेत सवारहुये और बादशाहकी चौखटं चूमनेके हेतचले उधरसे नौशेरवां अधिकारियों समेत अमीरकी अगवानी लेने को चलाराहकेमध्यमें बादशाहका तख्तदेखकरअमीरघोड़ेपरसे उतरपड़े और तख्तके मचवाको चुम्मनकिया नौशेरवां नेभी अपनातख्त रखवाकर अमीरको छातीसे लगायाऔर सवारहोकरमीठी २ बातेंअमीरकेप्रसन्न करनेकेहेतकहीं और नगरकी ओरचला औरवहांजाकर कहाकिअमीर कीसेना अगली भांति तिलशाद कामपर उतरे जब कैखुसरोके तख्तपर नौशेरवां और अमीर सभा न्यायशालामेंपहुंचे बादशाहगद्दीशाहीपर बैठगया और अमीर उसी भांतिसे रुस्तम के दंगल पर बैठे नौशेरवां ने बहुतकुछ अमीरपरसे उतारकर पुण्य किया और सभाके उठनेके समय अमीरको खिलअत कृपाकी अमीर तो खिलअत लेकर तिलशाद काम पर पहुंचे और वहां जाकर आनन्दमय सभा रचित की और आनंद बधायेहोनेलगेबख्तकबदबख्तनेनौशेरवांसे प्रार्थनाकीकिजबहमजाअकेला था तब तो एक २ की औसान उससे खताहोतीथी सबका दम निकलता था अबतो लंधौर और बहराम उसकेदो मित्रहैं उससे कौन आंखमिला सक्ताहै मुझको डरलगताहै कि कहीं तख्त न छीनले और आपकोपराजितकरे बादशाह बख्तककी इसबातसे अत्यन्त डरगया और कहनेलगा कि फिरइसका उपाय क्याहै बख्तकने कहाकि एक २ की सफ़ाईकरलीजियेकल जिससमय हमजा आपके पासआवे तो उससे कहिये कि मैंने

लंधौरका शिर तुमसे मांगा था यह नहीं कहा था कि उसको जीता लेआवो और मेरी आज्ञानुसार काम न करो नौशेरवां ने कहा कि इसबात के कहने को तुझी को अधिकार दियाहै जिसभांति से उचित जानना उसभांति से हमजा से बातेंकरना उससमय तो तख्तक खुशी व खुशी अपने घरमें आया और अतिकठिनता से रात काटकर प्रात हो-तेही सभामें आया जब प्रातःकाल अमीर दरबारमें आये अभीकोई बात न हुईथी कि बख्तकने कड़ाईसे कहाकिऐअमीर बादशाह यह फरमाते हैं कि मैंने लंधौरका शिरतुमसे मांगाथा न कि यह कहाथा कि लंधौर को मेरे शिरपर लावो और एक उपाधि मेरेनगर में लगावो कि यह कहना उसका अमीरको बुरामालूम हुआ कहाकि मनोरथ आधीनता से है या मारनेसे शिरकाटने को वह सेनासमेत अधीनहै बख्तक ने कहा कि आधीनतासे कुछकाम नहीं इसका अच्छाअंजाम नहींहै आज इसने चरणोंपर शिररक्खा कलको फिर अभिमानकर फिरजाय तो उससमय क्याहोगा अमीरने कहा कि मेरे जीतेजी उसको क्याशक्ति है जो आपसे फिरजाय अगर बादशाह की यही मरजी है तो उसका शिरहाजिर है मुझे बादशाहकी खुशी सबभांतिसे मंजूरहै बख्तक बोला कि बादशाह को तो उसका शिरहीदरकारहै बादशाह कब उसकी सूरत देखसक्ताहै और यह मैं क्योंकर कहूं कि लंधौर आपके कहने से शिरदेदेगा और देनेमें किसीभांति से इनकार न करेगा अमीर ने कहा कि यह क्याबात है जो आज्ञा उसेदूंगा तो शीघ्र शिर देनेपर उपस्थित होजायागा और तलवार के तले शिरझुकादेगा बल्कि अपनेहाथ से अपना शिरकाटकर देदेगा बख्तकबोला कि फिर देरक्याहै लंधौरको बुलाइये जो कहना हो सोकहिये साहबक़िरां ने अमरको आज्ञादी कि लंधौरको बुलालावो अमर लंधौरके निकटआया और कहा कि चलिये बादशाह ने आपके मारेजाने की आज्ञाकीहै अमीर ने बादशाह की आज्ञानुसार आपका शिरकाटने के हेत बुलायाहै लंधौर यहसुनकर उठखड़ाहुआ और यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

सज्जननेह मदमस्तहूं सुधि नहीं कछु मोहिं । इस मारगमें जायशिर कछुचिन्तानहिं होहिं ॥

मुझे साहब किरांकी खुशीकी चाहना है कि मुझे अब शिर शरीर पर भारी जानपड़ता है ॥ चौपाई ॥

एकलालसा यह मन माहीं । चल तू बेग बधिक के पाहीं ॥
कांधपै अधिक बोझ शिरकेरा । सधत नहीं पुनि होतअबेरा ॥

और अबतू मेरे हाथ रूमाल से बांधदे और बादशाह की सभाकी राहले अमर लंधौरकी बातें सुनकर गलेसे लिपटगया और बीरताकी बातें कहनेलगा कि ऐ बादशाह लंधौर किसको इतना बलहै कि तुमको

बुरी दृष्टि से देखसके मेरे साथ आइये तुम्हारे शिरके साथ पहिले तो हमजाका शिर है उसके पीछे ये जितने पहलवान हैं उनका और मेरा शिरहै आप अच्छीभांति से हथियार बांधकर और हाथी पर सवार होकर चलिये बादशाह लंधौर हथियार बांधकर हाथीपर सवारहोकर और गदा कांधेपरधरकर बादशाहकी सभामें उतरपड़ा अमरदबाररमें जाकर अमीर को खबरदी कि लंधौर हाजिरहै उसेसबप्रकारसे अमीर की खातिर मंजूर है यहां लंधौर गदाको हवापर फेंकने लगा औरहाथों पर रोंकनेलगा चारोंओरसे शोरहुआ कि जो अभी गदा हाथसे छूटगई तो दश बीस मनुष्य बे अपराध मरजायँगे सैकड़ों की हड्डी टूटजायँगी बादशाहने गुल सुनकर कहाकि भलाई तो है यह हल्ला गुल कहां होताहै लोगोंने सब हाल बताया बादशाह चुपहोरहा अमीर ने कहा कि लंधौरको बुलालो अमर जाकर बुलालाया लंधौरने अमीरसे प्रार्थना की कि क्याआज्ञा होती है आपने क्योंयादकिया है अमीर ने कहा कि किबादशाह आपका शिर चाहतेहैं तुम्हारी ओरसे बदगुमान होगये हैं लंधौरने कहा कि मैं आपका आज्ञाकारकहूं जो आपकी मरजी हो मैं हाजिरहूं अमीर ने कहाकि अच्छा तुम हजरत से बिदाहो और जिलोंखान: के आंगनमें शिरझुकाकर बैठो जिसको बादशाहकी आज्ञा मिलेगी वह तुम्हारा शिरकाटने को आवेगा लन्धौर उसीतरह प्रणाम करके जिलोखान: के आंगनमें गया और गदासे तकिया लगाकर बैठा अमीरने आदीको आज्ञादीकि लंधौरका शिरकाटलाओआदीनेलंधौर से कहा लंधौरने शिरझुकादिया और यह दोहा कहनेलगा ॥

दोहा ॥

अलगशीश करु बेगितू चित न करहु भ्रमजाल । पूर्णकरूं इतिहास यह नहिंकलेश बिकराल ॥

और कहाकि धन्यवाद है उस ईश्वरकामेरा शिर अमीरकीआज्ञा से काटाजाता है मेरी आधीनता बालभरेका भेद नहीं होताहै आदी लंधौरकी आधीनता देखकर अचेत होगया और यह कहकर लंधौर की जांघोंपर जाबैठा और कहा कि कोई प्रथम हमारा शिरकाटलेवेगा फिर लंधौरका शिरकाटेगा अमीरने इसमाजरेको जांचकर बहरामको आज्ञादीकि तुमजाकरलंधौरकाशिरअपनेहाथसे काटलावोवहभीलंधौरकी बातोंपर भूलगया दूसरीओर जाबैठाकि हमारा शिरभी लंधौर केशिरकेसाथहै साहबक्रिरांने बहरामकीबातेंसुनकर सुल्तानबख्तपश्चिमी को भेजा वहभी लंधौर के पास आनकर बैठगया और कहनेलगा कि अमीरने अच्छी खूरेजीपर कमरबांधी है जोयही मरजीहै तोहमाराभी शिर इनकेसाथ है जब येबातें उनलोगोंकी बादशाहके कानमें पड़ीं इतने मेंबख्तक बोलाकि अल्लादबादशाहीको क्योंनहीं आज्ञा होतीहैकिवह जिस २ के शीशको कहियेकाटलावे एकदम में क़िस्सा पूर्ण करदे अमीर

ने कहा तुमकोअख्तियारहै जिसकोचाहो भेजो बख्तकने उसीसमय एक जल्लादकोआज्ञादी वहलन्धौरके शिरपरपहुंचकर पुकारा कि किसकी जिन्दगीकेदिन बीतगयेहैं अमरने देखा कि जल्लाद बाघकी खाल का अंगापहिने कंधवस्त्र लोहू से भराहुआ कटिकेऊपर एकखडग खोंसे हुये एकतलवार हाथमेंपकड़ेहुये लन्धौरकी ओरचला अमरभी उसजल्लाद अर्थात् बधिककी पीठपर पहुंचा कि इतने में एक भारीशब्दहुआ और होते२ यहआवाज बादशाह के मकानतक पहुंची देखें तो मलिकामेहर-निगार व मलिकामेहरअंगेज किसीओरसेझप्पानपरसवारआतीहैंऔर महलकीओर जातीहैं मेहरअंगेज ने चिलमन से देखकर मेहरनिगार से पूछाकि यह क्याहै कुछ गुलशोरकासा तौरहै मेहरनिगारने कहा कि यहीलन्धौरहै मलिका ने खाजेसराओं को आज्ञादी कि जानतो आवो यह क्याबात है मकानपर इतना जमाव क्यों हुआ है और वहीं से स-वारी धीरे२ चली खाजेसराओं से जानकर मलिका ने कहा कि मालूम होता है कि बादशाह के शिरपर खूनचढ़ा है नाहक निर्पराधियों के मारनेपर तय्यारहुआहै जावोलन्धौरको हमारेपासलेआवो खाजेसरां लन्धौरके लानेको गया जल्लाद रोकनेलगा मलिकाने सुनकर कहाकि इस जल्लादके काननाक काटकर सभासेनिकालदो जल्लादतो यहबात सुनकर चुपहोरहा लन्धौर को उसउपाधिसे छुड़ाकर मलिकाकेमकान पर लेगये मलिका ने लन्धौरको खिलअत देकर बिदाकिया लन्धौर तो बहराम व आदी व सुलतानबख्त प्रसन्नहोकर तिलशाद कामको रवाना हुये और यहखबर खबरदारों ने बादशाह को पहुंचाई कि मलिका मेहर अंगेजने लंधौरको बुलाकर खिलअतदी और बिदाकिया और उसे जीदानदिया नौशेरवांने कहामलिकाने यहकाम बेसमझेबूझे नहींकिया होगा कोई बात इसमें बिचारी होगी अंतमें भेद खुलेगा यह कहकर कचेहरी बरखास्तकी और महलमें पहुंचे॥

बिदितहोना मरना मलिकामेहरनिगारका सकरगारवानेा मा बख्तक की ज़बानी और यह हाल सुनकर अमीरकी परेशानी और मारना अमरका सकर-गार को और पत्तों में छिपाना उसी बदकार को॥

समयका समाचार बड़ा अद्भुत है नये नये रंग दिखलाताहै उसीपैयह इतिहास है लिखनेवाले का यह बयान है कि जब बादशाह घरमें पहुंचे मलिकामेहर अंगेज से पूछा कि तुमने क्या सोच के लंधौर की जानबचाई मलिका बोली पहिले तो लंधौर आपका अपराधी नहीं है और यद्यपि उसे इतनाबलहै परउसने कुछ शरकशीनहींकी अमीरके स्नेहसे नाचार है दूसरे लंधौर भी एक देश का बादशाह है बादशाह बादशाहों को इस भांतिसे नहीं माराकरते हैं तीसरे जिससमय देश प्रदेश यह खबर बिदितहोगी तुम्हारा बिश्वासजातारहेगा तमाम दुनिया आपकोदोष

देगी तुम्हारी बातपर कोई कानधरेगा चौथे जब लंधौर इसभांतिसेमारा जायगा हमज़ा सकल देशके दीपक लन्धौर के बदले बुझादेगाआपदेखते नहींहैं कि लन्धौर हमज़ाकी आज्ञासे शिरदेने को तैयार हुआनहींतो आपकी तमाम बादशाहत में कौन पहलवान ऐसा है जो लन्धौर का शिरलाकर आपकोदेता इस निमित्त मैंने खिलअ़तदेकरउसे बिदाकिया बादशाह मलिका की बुद्धिमानी देखर बहुत प्रसन्नहुआ परन्तु कहाकि अफ़सोसहै कि हमज़ा के मारने का कोई उपाय नहीं निकलता है उस समय सक़रवानो बख्तककी माता वहांपरथी हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि जो मुझे आज्ञाहोवे तो मैं एक उपाय करके हमज़ाको मारडालूं नौशेरवांने कहाकि क्योंकर तब उसने कहाकि कल आप दरबार के बीच में हमज़ा से कहेंकि एक सप्ताह के पीछे तुम्हारा बिवाह किया जावेगा तुमबिवाह की सामग्रीकरो औरसरकारसभीनौकरोंकोतुम्हारीसाहायताकेहित कहाजायगा और लौंड़ी मेहरनिगार को छिपाकर तहख़ाने में बैठावेगी दो दिनके पीछे मेहरनिगारकी बीमारी प्रसिद्ध करके उसके चौथे दिन जिस समय हमज़ा यह बात सुनेगा कि मेहरनिगार मरगई आप मरजायगा ॥ दोहा ॥

छल युवतिन कर कठिन है तनमन सब हरिलेइ । दोटुकड़ा मनकेकरे दुख नानाबिधि देइ ॥

यह सुनकर बादशाह को यह मंसूबा सक़रगारवानों का पसंदआया दूसरे दिन दरबार में हमज़ा से बिवाहकी तैयारी करने की आज्ञा दी अमीर खुश २ बिदा होकर अपने स्थानमें पहुंचे और बिवाहकीतैयारी करनेलगे और महल में सकरगारवानों ने मेहरनिगार को मंगलाचार देकर तहख़ाने में बिठलाया और कहा कि बन्नो इस तहखाने से एक सप्ताहतक बाहर न निकलना बिवाह मेंइसीतरहहोताहै औरउसकी हमजोलियां जमाहुईं दिल्लगी करनेलगीं और ईच्छा बिवाहके मिलापकी हुई और जो कुछ समझानाथा समझाया मेहरनिगार हर्षित हो तहख़ानेमें बैठी दो दिनकेपीछे लसकलिन ने प्रसिद्ध किया कि मेहरनिगर बीमारहै उसके चार दिनके पीछे मकान में सब रोने पीटने लगे कि मेहरनिगार मरगई अमीर उसकी बीमारीही सुनकर सहस्रों बीमारों के एक बीमार होगये थे मरनेका जो समाचार सुना कटार पेटमें मारनेलगे लन्धौर व बहराम ने पावोंपर शिररखदिया कटार अमीर के हाथसे लेलिया और धीर्य्य देकर बातें कहनेलगे कि आजतककोई मृतक के साथ नहीं मुआहै बीचसे कुछ बशनहींहै अमीर ने कहा कि मांशूक मरना आशिक का जीना नेहके विषयमें अनुचित है कुछकरो मैं अपनी जनदूंगा मुझें अब जीने से क्या काम है अमर ने देखा कि अमीर अब किसी भांति से मानते नहीं हैं बोला कि भला आप सुनते हैं कि किसी ने आपके मारने के निमित्त जो यह छल किया हो तो मेहर निगार तो

जीतीरहे और आप मरगये तो उसका कुछ घाटा न हो थोड़ा धीरज धरिये मुझे खबर लेआने दीजिये अमीर को यह बात अमर की पसन्द आई और उन लोगोंने भी सुनकर अमरकी बुद्धिको सराहा अमरशीघ्र चलकर मलिकाकी डेवढ़ी परपहुंचा और अपने आनेकी मलिका मेहर-अंगेज को बखुर की सकरगारवानों ने मलिकासे कहा कि इस समय अमर को महल में बुलालेना बहुत उचितहै कि वह यह रोना पीटना देखकर हमलासे कहेगा हमला सुनकर बहुत शीघ्र आप मरेगा मलिका ने अमर को महल में बुलाया जब अमर महल में पहुंचा देखा तो सबके शरीर में काले वस्त्र शोकके चढ़े हैं छोटे बड़े सब उदास हैं परंतु थोड़ी देरके पीछे सकरगारवानो ने आर कुछ मलिका के कानमें कहा और उल्टे पावों फिरगई अमरने शोचा कि इसमें कुछभेदहै यह सनक बे काज नहीं है इसी दुष्टाका यह छलहै शाम तो होगई तमाम महलमें रोने पीटने के कारण अँधेरापड़ाथाअमरधीरे २ सकरगारवानोकेपीछे२ चला इधर उधर देखकर एक बुढ़िया की सूरत बनगया जब वह अकेली पाई बागमें पहुंची आहट पाकर ठिठुकी बोलीकी कौन आताहै अमर ने धीमी आवाज से कहाकि मरीहूं कोई हममें मलकाके बदले यम-दूत आपको लिये जाताहै जबही सकरगारवानोने आगे पांवधरा अमर ने कमन्दका हलका उसकेगरदन में डालकर पीछे को झिटका दिया घटाचित होकर धरतीपर गिरी अमरने ऐसी गर्दन उसकी दबाई कि प्राण शरीरसे बाहर निकलगये उसको सूखे पत्तों के ढेरमें छिपादिया और आप उसकीसूरत बनकर रौसपरखड़ारहा परन्तु हैरानथा कि अब किधरकों जाऊं और मलिका का किससे पतालगाऊं इतने में एकलौंडी मोमकी बत्ती लियेहुये फुलवारीकी ओरसे आकरबोली कि बआसकर-गारबानो तुम्हें देर से मलका साहबा बुलारही हैं अमर ने उसके उत्तर में कुछ न कहा और उस छोकड़ीके साथ २ तह खानेमें गया देखे तो मलिका मेहरनिगार शृंगार कियेहुये अति प्रफुल्लित मसनदपरदुलहन बनी बैठीहै लौंडियोंसे दिल्लगी कररहीहै और मसनदके समीप बोतल और प्याला रक्खा है फितनाबानो प्याला भर २ देतीजातीहै मलिका साहबा किरांका नामलेलेकर पीतीजातीहैं मेहरनिगारनेकहाकि सकर-गारबानो तुम आजकल मुझपर बड़ी कृपादृष्टि रखती हो पहले इतनी कृपा न करतीथी अमर बोला इसडरसे कि कदाचित् आपको बदीका गुमान मेरी ओरसे होवे कि वक्तककी मांहै उस दुष्टकी भांतिसे बैरियों पर अदावत रखती होगी परन्तु आपके प्रताप से आपकेअशिरबाद देने में तनमन से प्रकटरहकर अलग २ पैरों से पड़ीथी अब आप मुझे अपने भलाकरनेके लिये समझिये देखिये किशादी के सामानमें कैसीदौड़रही हूं एक दम मेरा पांव नहीं लगता मेहरनिगार ने कहा कि जो कुछ

तुकनेकहा वह सत्यहै अब कहोकि बरातके आने में कितनीदेर है वहां का समान होरहाहै अमरने सबको अल करके कहा कि कैसी बरात तुम्हारातो महलमें रोनाधोना पड़ाहै कि मेहरनिगार मरगई हमारी सेनामेंभी एकबुरीगतिहोगईहै कि अमीरने यहखबर सुनकर अपनेको मारीहीडालाथा परंतु मुझेकुछ सूझगई कि मैंने अमीरसेकहाकि थोड़ा धीर्य धरिये मैं जाकर हाल पूछआऊं वेसाही आपको सुनाऊं ऐसा न हो कि शत्रुओंने आपके मारने के हेत यहहालकियाहो मैंने यहां आकर उस सांपिनको मारकर पत्तोंमें छिपादिया और उसकी सूरत बन कर आपतकपहुंचा लोअब बेगजाकर अमीरको तुम्हारी सलामती का हालसुनाऊं जिसमें उनकी जानबचे होश व हवास ठिकाने हो दममें दमआवे यहबात सुनकर मेहरनिगारका मनप्रसन्नहुआ और अमरको बहुतसी मोहरें देकर बिदाकिया परंतु अमरने चलते समय एक रुक्का मेहरनिगारके हाथसे अमीरके नाम लिखवालिया जिस्से अमीर को बिश्वासपड़े और जाकर यहरुक्का अमीरकेहाथमेंदिया अमीरने उसके पढ़ने से जिन्दगी दुबारापाई और दशहजार मोहरें उससमय अमरको पारितोषिकमेंदीं अमरने अमीरसेकहाकि अबमेरा कहना मानिये तो मैं बहुतअच्छी भांतिसे इसभेदको विदितकरूं हरामजादोंको जिन्होंने फिसाद उठायाहै अच्छीभांतिसे कष्टदूं और निश्चयहै कि तमामउमर बादशाह भी इसबात से लज्जित रहे और फिरकभी भलेमनुष्य के साथ ऐसा झूंठ न बोले अमीरने कहाकि इससेअच्छा क्याहै जो तूकहेगासो मैं करूंगा और तेरे कहनेको न छोड़ूंगा अमरने कहाकि आपलंधौर और बहराम और आदी और सुल्तान बख्तआदि जितने सरदारहैं तिनसमेत कालेवस्त्र धारणकरके बादशाहके पास जावो और बादशाह से ताकीदकीजिये कि अब शीघ्र लाश निकलवादीये जिससे लोग तानान करें कि बादशाह समुद्रीपकी लड़की मरीहुई इतनीदेर तक पड़ीरही अमीर ने यह मंसूबा अमर का बहुत पसंद किया और बहराम आदि जिनको कहाथा साथलेकर बादशाहके पासगये और सबकेसब सशोक होअपने२स्थानपरबैठेदेखातो बादशाहसबसासानियोंऔरकेयानियों समेत कालेवस्त्र पहिनेहुये है और सब ओर से रोने पीटने का शोरहै एकघड़ीपीछे अमीरने बादशाहसे प्रार्थनाकी कि अब जो होनाथासो तो हुआ अब बहुतदेर तक घरमें लाशरखने से क्या है आज्ञा दीजिये कि महलसे जनाजा निकालाजाय बाहर किसी स्थानपर रक्खाजाय बादशाहने मलिकामेहर अंगेज से कहलाभेजा तो उत्तरआयाकि दिन भर तो और मेहरनिगार पहुनईमें रहे रातको लाश निकाली जावेगी अलगजे वहदिन रोने पीटने में गुजरा महल में कोहराम मचारहा जब सांझहुई सैकड़ों ब्राह्मण शंख व घुंघरू बजाने लगे और अपने

देवतों के नाम लेनेलगे महल में सक़रगारवानों की तलाश हुई तो लाश उसकी पत्तों मेंसे निकली मेहरअंगेज ने उसी लाश को संदूक़ में रखकर महल से निकाला लाखों मशालें रोशनहोगईं और सहस्रों मनुष्य उस लाशके साथ होलिये अमर ने देखा कि मनुष्य शंख व घुंघरू बजाते और अपने क़ौमोंको गलेमें लगाते और पैर २ पर आतशबाजी छोड़ते जाते हैं अमर ने भी अपनी सूरत दल घुंघरू हाथ में ले प्रत्येक के गले से मिलना शुरूअ किया हाते २ बख्तक के पासपहुंचा एक छछूंदर जलाके बख्तक के गले में डालदी और दबाया बख्तक ने समझा कि यह काम सिवाय अमर के कौन करेगा अशक्त हो हाय जला हाय जला कहके बोला कि अमरइसजा के वास्ते मुझको छोड़दे सब छाती और पेट जलाजाता है और सब शरीर में फफोले पड़े छाते हैं अमर ने कहा आपकी मा मरगई हैं जो सरों के समान दीपकवत जलजायेगा तो नेकबख्त कहलावेगा यह कहकर बख्तक को छोड़दिया और आप आगे को बढ़ा और वह छछूंदर पेट व छाती बख्तक की जलाकर गर्दन से निकल गई बख्तक मार्ग में एक गढ़ा पानीका देखकर उसमें कूदपड़ा अपने शरीर का कुछ चेत न रहा जितनेलोग जनाजेके साथ याता रीते थे या हँसपड़े और थोड़े मनुष्यों ने बख्तकके शरीरकी आग बुझाई परन्तु बख्तक को ताब न आई अपने उस मतककोतो मनुष्योंको सौंपा आप रोतापीटता अपने घरकोफिरा जब नदी किनारे बख्तक की मा को दबाकर फिरे बादशाहको दीवान खासमें सशोक बैठे देखकर जो लोग हाजिर थे वेभी पीट २ कर रोने लगे अमरने ज्यों ध्यान लगाकर देखा त्यों बादशाह के रूमालमें पियाज का एक गट्ठा है जब आंख से लगाते हैं तब आंसू बहआते हैं अमर ने निकट जाकर चुपकेसे कानमें कहा कि तुझसा छली बादशाह देखने सुनने में नहीआया है कोई ऐसाछल भलेमनुष्यों से करता है यह सुनकर बादशाह ने हँसदिया और कहा कि जिसने मकर व छल किया था वह अपने फलको प्राप्तहुआ यद्यपि बादशाह ने यहबात तो कही परन्तु अपने मनमें बहुत लज्जित हुआ और लाजके मारे पसीना शरीरसे निकल आया अमीरने कहाकि बख्तक अपनीसजाको पहुंचा और जाननहींपड़ता अमर बोला कि हुजूर यहजनाजा उसकी माकाथा अपनीमाता छपाशालिनीके शोकमेंहै उसकाकियाउसकेआगे आया इससे वह घरमेंजाकर शोकमें बैठाहै नौशेरवांने अमीर से बहुत उजुरकिया और कहा कि मैं कुछभी नहीं इसछलको जानता था आप मुझपर गुमान न कीजिये यह मक्कारी जिसकी थी वह अपनी सजा को पहुंची अमीरने कहाकि मैं सबप्रकारसे आपके आधीनहूं यहकहियेकि अब बिवाह कबहोगा बादशाह ने कहा कि चालीसदिवसकेपीछे बिवाह

कया जायगा आपका मनोरथ पूर्ण होजायगा अमीर तो बिदा होकर तलशाद काम परगये परन्तु अमर रुकारहा जब बादशाहने दरबारबर-खास्त किया अमरनेबुजुरुज्जमेहरको ठीककरके बादशाहसे प्रार्थनाअमीर की ओरसे की कि अमीर को चालीस दिवसकी देरीमंजूर नहीं है भले कार्य्यमें ढील करना कुछअच्छी बात नहींहै बादशाह ने कहाकि अभी सामान बिवाह व दाइजका तय्यार नहींहैअमरबोलाकि आपबादशाह हैं आज्ञाकी देरीहै असबाबके न होनेमें क्या ढीलहै बारे कहने सुननेके पीछे बुजुरुज्जमेहरने बीसदिनका इकरारकराया अमर इसबातसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ अमरने कहाकि कृपानिधान इस मजमून का एक परवाना साहब किरांके नाम लिखदीजियेकि वे उसको देखकर सामानआदिसब तय्यारकरें बादशाहने एक परवाना इकरारनामा की भांति लिखदिया अमरने जो वह परवाना आनकर अमीरको दिया अमीर पढ़कर अमर कि बुद्धिमानी पर प्रसन्नहुये और गलेसे लगालिया और बहुतसीमुहरें अमरको दीं और आनन्दबधाये होनेलगे बादशाहका हाल सुनिये कि महलमेंजाकर मेहरनिगारको गलेसे लगाया औरबीसरोजका कौलजो अमीरसे कियाथा कहा इसकेपीछे अमरकी हरकतेंजो जनाजेके साथकी थीं बर्णन की मलिका मेहरअंगेज व मेहरनिगार अमर की बातों पर हँसते २ लोटगईं बख्तक का हाल सुनियेकि उसने जो सुना बादशाह ने हमजा को इकरारनामा लिखदिया है कि बीस दिवस के पीछे बिवाह करदूंगा और पांचदिन उसमें बीतभी गये पन्द्रहदिन बिवाहके शेष रहे हैं दोनों ओर बिवाहका सामान होरहाहै नगरमें इसका घर २चरचाहै यह सुनडाहकी चिनगारियों में फुंकगया यद्यपिउसके जलनेकेघाव अभी नहीं पूरेथेपरन्तु फफोला तोड़नेके हेत बादशाहके पासगया अलगकरके कहा कि मैंने सुनाहै कि आपने हमजा को पत्र लिखदिया है कि बीस दिवसके पीछे बिवाह करदूंगा और बिवाहकी सामग्री होरहीहै नगर में इसीकी धूम मचीहै अफ़सोसहै कि आपको अपनी बातका कुछ ध्यान नहींहै सेवाय इसके मलिका का बिवाह हमजा के साथ करना उचित नहीं सब देशोंमेंयह बातप्रसिद्ध होगईहै कि बादशाह समुद्दीपकोहमजा की यामाचता नामंजूर होगईहै जिसने सुना उसने कहा कि सचमच बादशाह दूसरीफ़ौज को जो बिनादेखे ईश्वरको पूजताहै क्योंकर अपनी पुत्रीदेगा और आप बिवाह करने पर मुस्तैद हुये हैं यह सब संसार क्या कहेगा नौशेरवां ने कहाकि मैं क्याकरूं बहुत हैरानहूं कोई बातभी बन नहीं आती यह सुन बख्तक ने कहा कि हुजूर हैरान न होवें मैंने एक बहुत अच्छी उपाय ठहराई और बहुत दूरकी बातसोची है नौशे-रवांने पूछा कि वह क्या तुमने सोचाहै बख्तकने कहा कि कल जिससमय हाली मोहाली सभा में हाजिरहों और हमजाभी उसी भांतिसे आ-

वेंगा मैं दोतीन आदमी नाक कान काटकर भेजूंगा वे न्यायशाला की जंजीर हिलावेंगे ज़रूरभी उसीभांतिसे उनकाहाल पूछें वे लोग प्रार्थना करेंगे कि हम ज़ूर के नौकर पुराने हैं सप्तद्वीपका ख़ज़ाना सालबसाल जमाकरकेज़ूरमें भेजतेथे इससालमें किसीनेएकपैसातक नहींदिया उस परनाककानकाटकर दुखितकिया औरकहतेहैं किबादशाह सप्तद्वीपका करदेने के योग्य नहीं है वह अग्निपूजक होकर हमजानामी मुसल्मान को अपनी बेटीदेगा और अपने कुल की रीतिछोड़दी अब बादशाह का यामाता आवेगा हमसे करलेलेगा सेवकोंने इसपर बिवाद किया उन्हों ने सेवकों की यह सूरत बनाकर अपनी हद्दसे निकालदिया जिस समय ये बातें हमजा सुनेगा तो अवश्य लज्जित होकर आपसे बिदा मांगेगा नौशेरवांको यह सलाह बख्तक नीचकीबज़तअच्छी मालूमहुई उसदिन तो बख्तक बिदाहोकर अपने घरगयादूसरेदिन जब बादशाहतख्तपरबैठे और हकीम व बिद्यावान् व बुद्धिमान सब अपने२ स्थानपर बैठे अमीरभी आकर अपने स्थान पर बैठे उसी समय किसीने न्यायशाला की जंजीर हिलाई जब सांकड़का शब्द नौशेरवां के कानमेंआयातोनौशेरवां नेफिर्यादियोंको बुलवाकर देखाकि थोड़ेलोग नाककान कटेहुये न्यायकराने के हेत घबरायेहुये अचेतआयेहैं दरबारके सबलोग उनको देखनेलगे कि किसनेऐसीसूरतइनकीबनाईकि नाककानजड़सेउड़ादिये फिरियादियों ने जो कुछ बख्तकनेसिखादिया था अच्छीभांतिसेबर्णनकिया लाजकेमारे अमीरके रोयें खड़ेहोगयेक्रोधसे वे अख्तियार बोलउठे किईश्वरकी सपा की कसमहै कि जबतकउनखलोंसे कर न लेलूंगा तबतक बिवाहनकरूंगा आदीकोआज्ञादी कि आपसप्तदेशकी ओर डेरा रवानाहो नौशेरवांने कहाकि ऐ अब्दुलअला जो यही मर्जीहै तो पहिले बिवाहसे निपटलो पीछे उनको जाकर दण्ड दो अमीर ने कहा कि मैंने क़समखाई है कि जबतक उनखलोंसे कर न लेलूंगा तबतक बिवाहका मनोरथनकरूंगाइस बातमें आप दखल न दें हँसीखुशी से बिदाकरें बादशाहने कहा कि जो यही मर्जीहै तो लंधौर या बहराम को मलिकाकी निगहबानीके हेत छोड़जावो अमीर इसबात से बज़त प्रसन्नहुये और बहरामसे कहाकि तुम बादशाहके पास रहो बादशाहने अमीरकोखिलअत देकरसातखत सातोंदेशोंके बादशाहोंकेनाम लिखकर अमीरको देकर बिदाकियाकि सब बादशाहों को भेजवादीजियेगा और जहांतक होसके उनसेसलाह कीजियेगा और कारन देवबंदकोबारहसहस्रसेना देकर अमीर के साथ किया कि जोकुछ अमीरकहेंउसेकरें किसीभांतिसे अमीरकी आधीनता व सेवकाईसे चूक न करे अमीर ने प्रार्थना की कि कारनके बदले और किसी सरदार को मेरे साथ कीजिये और इनको आप यहां रहने दीजिये क्योंकि एसासानियोंमें सबसे बड़े औरआपके नातेदार हैं और

इसके सिवाय कईबार मुझसे और इससे तकरारभी होचुकीहै कदाचित् मार्गमें किसीभांतिका कोई तकरार करै तो अच्छा न होगा मैंने जो छोंड़दिया तो मेरे साथियोंसे यह कभी न बचेगा कारन ने एक कौलपत्र आधीनताके हेत इस मजमूनका लिखाकि जो मैं कोईअपराध करूं तो अमीरको मेरे मारडालनेका अख्तियारहै अमीर ने कहा कि दो अपराध तक मैं क्षमाकरूंगा परन्तु तीसरेपर दंड दूंगा अमीरतो तिलग्राद कामपर विदाहोकर पहुंचे बादशाह सातपत्र सातों बादशाहोंके नामलिखेऔर कारनकेहवालेकिये और मजमून उन पत्रोंमें यहथा कि हमजाको हमने समय जांचकर उधरको भेजाहै कर क्या दखलतक न पावे इसका शिर काटकर हमारेपास भेजदेना औरसात मिसकाल अर्थात् साढ़े इकतीसमासे विषहलाहल कारनको देकर कहा कि जब अवसरपाना हमजाको खिलाना और खिलअत देकर बिदाकिया कारन अमीरकी सेनामें आया अमीरने हमामेपर कबकी चोब लगवाई और रवानाहुये उस समय अमरने अमीर से कहा कि आपने युद्धकरनेपर ध्यान लगायाहै मेहरनिगार का नेह कहने सुननेका है अब आपको अख्तियारहै जहां जीचाहे वहां को जावें देश प्रदेशफिरें और युद्धमें लड़ें सेना वो पहलवानोंकोलड़ाकरतमाशा देखिये बन्दा बहुतदिनोंसे आपकेसाथ खराब फिरताहै और किस २ उपाधियों से बचाहै अब मक्के को जाताहूं वहीं आप के निमित्त दुआ करूंगा जोकोई पत्र अपनेपिताको देनाहो दीजियेतो उनकी सेवामें पहुंचादूंगा अमीरने एक पत्र लिख हवालेकिया और अमर मक्के की ओर रवाना हुआ ॥

इति प्रथम भागः समाप्तः ॥



दूसराभाग ॥

अब लेखनी देश विदेशकी बातोंके हेत पधारती है दूसरी मंजिल रूपसादे पचके लपेटनेपर मुस्तैद हुई अमीरके मार्गका हाल जीभ पर लातीहै नये नये इतिहास सुनातीहै कि जब अमीर सप्तद्वीपकी ओर चलनेवाले हुये यहांतक कि सातमंजिलें जा चुकेथे कि कारन ने एक दुराहापर घोड़ा खड़ा किया अमीरने पूछा कि क्या कारण घोड़ा रोंकनेका हुआहै कारन ने कहा कि यहांसे सप्तद्वीपको दो राहैं गईहैं एकराहतो बहुत दूरहै इसमें दोसड़कें बड़ी २ हैं मार्ग बहुत कठिन है जो कूचकरते चले जाइयेगा तो कमसे कम महीने भरके पीछे उस स्थानतक पहुंचियेगा और दूसरा मार्ग समीपहै कि आजसे दश दिनतक चलना पड़ेगा और कष्ट किसीभांतिसे न होगा परन्तु इस मार्गमें तीन दिन तक पानी नहीं मिलताहै पियासका डरहै अमीर ने कहा कि तीन दिनके निमित्त पानी पखालोंमें भरवा लिया जावे अधिक चलना क्या जरूर है सेना को इतनाकष्ट क्यों दिया जावे सेनावालोंने तीनदिनका पानी ऊंटोंपर लादलिया और उसीराहसे जानेका मनोरथ किया जब तीनदिन बीतगये और पानीका एक बूंद भी पखालोंमें न रहा चौथेदिन सेना पियासमें बेताब हुई और अमीरकी भी जीभमें पियासके कारण कांटे पड़गये और इसमें भी कोई कारण है उसने कहा कि साहब किसी भांतिका ख्याल न कीजिये यद्यपिआस पास ढूंढ़ा परन्तु कोई तड़ाग नदीआदि दृष्टि न पड़ा कारननेकहा कि तूने कहाथा कि चौथे दिवस पानी मिलेगा वह पानी कहांहै इस बातमेंभी कोई मतलब ठीक नहींहै कहा ऐ साहब और किसीभांतिका ख्याल न कीजिये मुझको बारह वर्षका अर्सा हुआ कि मैं इस तरफआयाथा विदित हुआ कि इससमय नदी सोते बालूसे पटगये और कोई तालाब आदि बाकी न रहे परन्तु आपके पीनेलायक पानीमेरेछागलमें भराहै आज्ञा दीजिये तो मैं लेआऊं अमीरने कहा बहुत अच्छा कारन ने जलमें विष मिलाकर प्यालाभर अमीरके पासलाया अमीरनेप्यालेको हाथमें लेकर मनमें कहा कि पश्चात्तापहै कि मैं तृप्त होऊंऔरखुसरो मेरा मित्र प्यासारहे खुसरोको प्याला देकर कहा कि मैं अबीहूं तुमसे ज्यादा प्यास सहसक्ताहूं तुम्हारे देशमें जलमिलताहै तुमप्यासनहींसह सक्ते पीलो यह सुनकर खुशरोने कहा कि यह मित्रतासे अलगहै कि मैंतो पानीसे प्यास दूरकरूं आप प्यासेरहैं ऐसा कह उसपानीको न पिया और आदीको जो बहुत प्यासा था देदिया आदीने देखा कि थोड़ासा जलपीकर अधिकप्यास बढ़ाना है यह सोच उसपानीको न पिया मुकबिल को देकर कहा यहजल तुम्हारी प्यास दूरकरने के योग्यहै तुम पिवो यह सुन मुकबिलने कहा कि यह मित्रतासे अनु-

चितहै कि अमीर प्यासेरहैं और हमपानी पीवें इसीतरह विषका पानी अलग रहा किसीने न पिया अन्तको सबोंने उसप्याले को अमीर के हाथ में देकर कहा कि आपके प्यासे रहनेपै हमको पानी पीना उचित नहींहै यद्यपि अमीरने बहुतकहा परकिसीने नमाना ॥

हजरत खिजर अलेहुस्सलामकी आज्ञानुसार अमरका निषेध करना विषमिले जलके पीने से अमीर को और आकाशबाणी के सुननेसे अमीरका उसजलको न पीना ॥

इतिहासरूपी समुद्रकेगोतालगानेवाले उत्तम २ बातोंरूपी मोतियों को निकालकर व अर्थरूपी सुन्दरता को सन्मुख यौंप्रकट करते हैं कि अमर मक्केसे याचाकरके आताथा कि मार्गमें एकवृद्ध मनुष्यको देख कर इच्छाकी कि इससे बातेंकरते चलैं कि मार्ग सुखके साथकटे और थोड़ीदेर चित्त आनन्दमें रहे यद्यपि बहुत सीघ्रता की परन्तु पहुंच न सका तबतंग होकर सौगन्धैं देनेलगा कि हजरत सलामत आपको अपने दीन और धर्मकी सौगन्धहै अगर आप आगे पैरउठावें उसका ठहरनाथा कि अमरने जाकर देखा कि हजरत खिजरहैं दण्डवत करके हाल युद्धकरने का पूछा तबहजरत खिजरने कहा कि इससमय अमीर तृषावान्हैं और कारनने जलमें विषमिलाकर अमीरकोदियाहै अबतक वह गिलास अमीरके हाथमेंहै जल्दजाकर अमीरके हाथसे गिलास पृथ्वीपर डालदे और यहींसेपुकारता चलाजाकि खबरदार जलनपीना२ परमेश्वर तेराशब्द अमीरके कानोंतक पहुंचावेगा और उसधर्मिष्ठीकी जीवको पापीके हाथसे बचावेगा अमर बेहोशहोकर दौड़ा और हर कदमपर यहकहता चला कि खबरदार न पीना २ मैंभी पहुंचा अमीर की यहीइच्छाथी कि जलपीवें शब्दजल न पीनेका उसके कानोंमें पड़ा गिलास को मुखके पाससे हटालिया और इधर उधर देखने लगा कि किसने मुझे जलपीनेसे निषेध कियाहै जबमना करनेवाला दृष्टि न पड़ा तबफिर जलपीनेकी इच्छाकी परन्तु फिरवही शब्द सुनकर अचम्भित होकर चारोंतरफ देखनेलगा कि कोई मनाकरता है परदेख नहीं पड़ता कि किसका शब्दहै तीसरीबार अमीरने फिरगिलास को मुखसे लगाया कि फिरवही शब्द सुनाई पड़ा तबअमीरने गिलास को हटाकर बड़ेसन्देहमें हुआ कि यहक्याहै कि जबजलपीनेकीइच्छाकरतेहैं तभी मनाकरता है यहईश्वरकी रचनाहै और अनेक २ तरहके संदेह करहाथा कि सामनेसे एकबवण्डल आया और उसमेंसे अमर निकला देखा कि गरदके समान उड़ता चला आताहै और कहताहै कि जल न पीना जबअमीरके समीप गया तबउसगिलासको अमीरके हाथसे लेकर पृथ्वीपर पटकदिया और जहांतक उसकी छींटेंपड़ीं पृथ्वीजलनेलगीयह हाल देखकर लोगबड़े संदेहमें हुये उसमेंसे एकछींट अमीरके मुखपर पड़ी खाल और हड्डी काटती हुई पीठतक पहुंची अमरने अति शीघ्रता

से शाहमोहरा घिसकर लगा दिया कि विषका असर जाता रहा कारनने जो देखा कि भेदखुलगयाहै तबशीघता से अपनी सेनाको ओरभागा और सेनाकोतो पहिलेहीसे तैयार होनेकी आज्ञादीथी शीघही बारह हजार सवार अमीरके ऊपर आगिरे और एकबरछी लन्धौरको मारी उसने बरछी छीनकर जो एकडाटमारी तो कारन लोटपोट कर पृथ्वीपर गिरपड़ा और बाकी जो सवारथे उसे उठाकर बनकी तरफ हवाके समान लेभागे अमरने सेनाको उसी सोतेपर जो हिजरने बतायाथा लेजाकर जलपिलाया और खुदभी पिया अमीरने अमरको गलेसे लगाया और कहा कि तूने आकाशरूपी शब्द सुनाकर खूबमेरे जीवकी रक्षाकी नहींतो मैं मरचुकाथा पर अब मार्ग ढूंढ़ना उचितहै कि इसनिर्जल देशसे बाहरचलें तबअमर सेना सहित एकनगरमें गया तो सबमनुष्य अमरको देखकर भागे तबउसने दौड़कर एकमनुष्य को पकड़ा और भागने का कारण पूछा उसने कहा कि परसों एकसेना आईथी उसने हमलोगोंको बहुतसा मारा और रुपया लिया और हरएकाप्रकारका दुःखदिया है उसी कारणसे जीवकी रक्षाके लियेभागे जातेहैं अमरने उनको धीर्य देकर कहा कि हमलोग वैसेनहीं हैं और किसीको दुःखनहीं देते हमारा स्वामी दयावान् और धर्मात्मा है तुमको उससे बड़ालाभ होगा और बहुत प्रसन्न करेगा तुमहमारी ओरसे निर्भय होकर सबमनुष्यों को हमारे समीप लेआओ तबउसने जाकर सब मनुष्यों को अमीरके समीप हाजिर किया अमीरने उनकोबहुतसा धनदिया और उस पहिले मनुष्यसे पूछा कि यहबन कहांतक है और मीठाजल कितनी दूरपर प्राप्तहोगाऔर पहिले नगर और नगरके अधिपति का क्या नामहै वहबोला कि बारह कोसतक यहबनहै और इसके बाद एक मीठेजल की नदीहै और वहांसे एकदिनकी राहपर इलजावे नाम नगरहै और उसके स्वामी का नामहामहै और उसी से मिलाहुआ इलजलाक नाम नगरहै और उसके स्वामीसाममहउजरीऔर कामरूहैं और बेबड़े शूरबीर और युद्धकरनेवाले हैं और प्रत्येक मनुष्य दश सहस्र सवारों का समूह रखताहै आप कहेंगे तो मार्ग दिखानेको चलूंगा और आपकी आज्ञाबिना न फिरूंगा अमीरने सबसेअधिकद्रव्य उसको दिया और उसीतरफ चले जब बन बांधगये और नदीके किनारे पहुंचे नदीके जलका रंगहरा देखकर उस मनुष्यसे पूछनेलगे कि इसनदी का जल सदैव हराराहताहै याइन्हीं दिनों ऐसा बहताहै उसने कहा कि इसजल की सुन्दरता देखकर मोतीका भी पानी लज्जित होताथा सूर्य्यका कुण्ड इसकी स्वच्छताके संमुख मलिन था लेकिन विदित होता है कि जैसे इसमें किसीने विषघोल दियाहो जो जलका स्वभाव और

सूरत पलट गई है अब यह जल पीने के योग्य नहीं है मारक विषके तुल्य होगया है अमरने अमीरसे कहा कि यह काम उसी पापी काहैजिसने प्रथम आपको विषदिया है कहीं २ नये सोतों से सेनाकोजलप्राप्तहुआ और आवश्यकता के लिये पखालें और मशकों औरचंगुलोमें भर लिया दूसरे दिन ईश्वर २ करके ईप्सित स्थान पर पहुंचे और इलाजालिवाके क़िले के समीप वास किया कारन का वृत्तान्त यह है कि विषकी गांठें नदियों और सोंतो में घोरता हुआ हाम के समीप पहुंचा और नौशेरवां का पत्र देकर कहाकि हमजा सामी अरब का बादशाह ब्रम्हपूजक अपने दुष्ट मित्रोंको साथ लिये आता है जो कर मांगे तो न देना और जिस प्रकार उचित हो उसको और उसके सहायक लश्कर को मारडालो या बांध लो तो तुम्हारे राज्यका तीन साल का कर माफ करके और २ भी बादशाही कृपा तुम्हारे ऊपर होंगी ॥

यही कहते हुये साम और महबजरीं को भी जाकर समझाया और वहांसे आगेको चला और सेनाको आगे भेजदिया हामने जो देखा कि अमीर की सेना बहुतहै दश सहस्र सेना से मैं इससे जय न प्राप्त कर सकूं गा तब अपने दोनों भाइयों को लिखा कि सेना सहित तुम यहां आओ क्योंकि हमजाके साथ सेना बड़ीहै अगर कि मेरा क़िलालेलिया तो तुम्हारे किलों का लेना कुछ कठिन नहींहै इस देशमें इसके समान दूसरा कोई नहीं है साम और महबजरीं व कमर ए लोग अपने भाई साम का खत देखकर सेना सहित किले में आये प्रत्येक सलाह करने लगे सामने कहा हमजा के साथ सेना अधिक है इसे धोखा से मारना चाहिये महबजरीं व कमर बोले कि छलसे मारना नीचों का काम है उचित है कि तीस सहस्र सवार लेकर युद्ध करें बड़े भाई हामने कहा कि मैं तो इस बात को पसन्द नहीं करता उचित है कि सौगात लेकर हमजा के समीप चलकर मिलें जो वह प्रतिष्ठाके साथ सम्मुख हो तो उसकी ताबेदारी कीजिये और करदीजिये कदाचित्प्रत्येकके वार्तालाप में कुछ भेद होगा तो पीछे जैसा उचित होगा करेंगे हमारे निकट यह बात उत्तमहै और आश्चर्यनहीं कि हमजा बहुत प्रतिष्ठाके साथसंमुखहो क्योंकि सहस्रयार वगैरह बड़े २ अमीर उसके साथ हैं औरवहभीशूरता और उदारता आदिमें प्रसिद्धहै और शूरवीर लोग शूरवीरोंकीप्रतिष्ठा करतेहैं इससे वह तुम्हारी प्रतिष्ठा करेगा और हमजाकीवीरताप्रसिद्ध है कि जब सात देशोंके महाराजाधिराजसे कुछ न हो सका तो हमको पत्र लिखा कि किसीप्रकारसेहमजाकोमारडालनालेकिनयहबतीप्रसिद्ध है कि धोखेसे मारना नीचों का कामहै इसलिये यह बात हमको किसी प्रकार करना उचित नहींहै उनसबको हामकीसलाह पसन्दआईऔर युद्धकी इच्छा निवृत्तहुई दूसरेदिन सौगात लेकर अमीर केस्थानपरगये

सातदेशोंमेंसे इलजाबिया व इलाजकियाके अधिपति हाम, महज्जरी, कमर, और मामकी अमीरके हाथसे मुसलमान और आधीनहोना व करदेना और सेवा करना हामआदिक का ॥

शीघगति लेखनी जो लिखनेमें अति शीघ है वह अमीर के मंत्रियों और कूचका वृत्तान्त योंलिखती है कि अमीर उन तीनों अधिपतियों से बड़ी कृपाकरके संमुख हुआ और तीनदिन तक उनके लिये नाच और तमाशा करातारहा और जब देखा कि ये लोग हमारे वशहोगये हैं कहाकि बड़े संदेह की बात है कि तुम ऐसे बुद्धिमान होकर ईश्वर को नहीं पूजते और अग्नि और एक पत्थर की मूर्त्ति जोकि मनुष्यकीबनाई है पूजतेहो और उसमें किसी प्रकार की शक्तिभी नहीं है यह सुनकरवे तीनों भाई साफ मनसे कलमा पढ़कर मुसलमान हुये और अमीर ने प्रत्येक को खिलअत देकर कहा कि अब तुमलोग हमारे भाई हुये अगर खजाना तुम लोगों का खाली हो तो मैं अपने पास से दाखिल खजाने सरकारी मेंसे करदूं और तुमसे कभी एककौड़ी भी न मांगूंगाउनलोगों ने कहा कि आपकी कृपासे खजाना अशरफी और रुपयोंसेभराहै अगर आज्ञाहो तो पेशगी दाखिलकरें हमलोग हरएक प्रकारसेआपकीकृपा चाहतेहैं अमीर ने आज्ञादी कि पेशगी की कुछ आवश्यकता नहींहै मालवाजबीदेना उचितहैऔरदारोगादिवानखाने और दारोगाखजाने से दाखिला लेना चाहिये तब उन तीनों भाइयोंने उसपत्रको जोकारन देगयाथा दिखाकर पढ़वाया अमीर उसको पढ़कर प्रथम तो क्रोध किया पर फिर शोचकर कि शायदजाली हो किसी प्रकारका संदेह न किया और पूछनेलगा कि अब जो देश मिलेगा उसका और उसके स्वामीका क्या नामहै और यहांसे कितनीदूरपरहै और मार्गमेंकौनर शोभायमान स्थानहैं हामनेकहा कि यहां से पन्द्रह मंजिल पर अली नामनगरहै और उसकेस्वामीकानामअनीसशाहहैजोमहाशयऔर उच्च पदवीवालाहै अमीरने कहा कि ईश्वर मालिकहै तुमसबअपने २ देशमें राज्यकरो और मैं जाताहूं औरपरमेश्वरकीकृपासेविजयकरकेशीघही आताहूं तब उन लोगोंने कहा कि हमलोगआपकेसेवकहैंआपको माफ करनेसेभी करका रुपया हाजिर करेंगे खजानचीको आज्ञा हो कियह दाखिल करके दाखिला देवे और हमलोगोंको हमराहमें चलनेकी आज्ञादीजिये अमीरने बहुत उपदेश दिया पर किसीने न माना अपने २ मंत्रियोंको राज्यमें छोड़कर और करका रुपया देकर साथ चले जिससमय कि स्थान अलीना दोकोस बाकीरहा अमीरघोड़ेपर से उतरकर एक स्थान पर जो बड़ा शोभायमानथा डेराडाला जब अनीसशाहको खबर पहुंची तो वह अपनी सेना लेकर युद्धकरने को आरूढ़ हुआ परन्तु जबदेखा कि विजयनपाऊंगाअपने घोड़ेपरसे कूदकर अमीरके चरणोंपर गिरा और जावकी रक्षाके लिये मुसलमान

होकर कलमा पढ़ा तब अमीर उसको अपनी सेना में लेजाकर अनेक प्रकार के वार्तालाप करने लगा और वह पापी मनुष्य अमीरके समीप कई दिनतक रहा एक दिन संयोग पाकर प्रार्थना की कि महाराज सेवक ने एक स्थान नहाने के लिये तैयार करवाया है विनय करता हूं कि आप एकदिन उसमें चलकर स्नानकरें कि मार्गका श्रम दूर होजावे पहिले तो अमीरने न माना परंतु फिर उसकी प्रार्थना करने से गया तो उस स्थानको ऐसा बनवाया था कि जो कोई देखताथा वे इच्छाभी स्नान करनेकी इच्छाकरता था और यत्न यह कियाथा कि लोहे केपाये पर छत रक्खीथी और उनमें जंजीरें डालीं थीं कि चार आदमी चारों जंजीरों को छोड़ देवें तो वह छत नहानेवाले के ऊपर गिर पड़ै और वह दबकर मरजाय इसीप्रकारसे उसदिन चार मनुष्य अतिबलवान को नियतकरके आज्ञादी थी कि जबहम तासदैमारें तो तुम लोग उसका शब्द सुनकर छोड़कर भागजाना अमीरतोलंधौर औरमुक़बिल आदिक को साथलेकरस्नानकरनेकोगयापरअमरू औरआदीने अमीरकीआज्ञा को न माना पर अमरू वृद्ध मनुष्य का भेष धारण करके उस स्थान की पीछे गया तब उनचारों मनुष्योंने कहाकि ऐ बुड्ढे तू यहां से जल्दभाग जा हम अभीतास का शब्द सुनकर जंजीर को छोड़ देवेंगे नाहक तू भी दबकर मर जायगा और तेरा पाप हमलोगों के ऊपर होगा यह हाल सुनकर वह लौटा औरउस स्थानके दरवाजेपर जाकर सबहाल अमीर सेअपनी भाषा में कहा तब अमीरने बाहर निकलकर जंजीर की कांटी बढ़ाकर सब अपना बस्त्र पहिना तब अलीसशाहने कहा कि इसके पीछे एक स्थान पर कुछ मेवाआदिक आपके लिये रक्खा है अमीर ने कहा कि तुम चलकर प्रत्येक के लिये भागलगा कर रक्खो हम अपने साथियों समेत आते हैं खूब खावेंगे और खिलावेंगे अलीशशाह का उस में जाना था कि अमरू ने तास को दैमारा वे चारों मनुष्य जंजीर छोड़कर भागगये और वह छत अलीसशाहके ऊपर गिरपड़ी और वह आपही अपनी तदबीर से मारागया अमीर ने अमरू की बुद्धिमानी की बड़ी प्रशंसा की औरउसके पुत्रकोसेना समेत मुसल्मान करके महदजरीऔर कमरको सौंपा और आज्ञादी कि इसकीतालीमऔर रक्षाकरो और जब अमीरने सेनापतियों से सुना कि कारन एक पत्र बादशाहको देकर जिसमें यह लिखा था कि अमीर और लंधौर को किसी तरहसे मार-डालना देकर हलब की तरफ को गया है यह सुनकर बड़ा संदेह करके हलबकी तरफ कूच किया अब और कारनका हाल यहहै कि वहांपर जाकर हदीसशाह को एक पत्रदिया और कई एक दिनके बादकहाकि बादशाह ने मुझसे यहभी कहदिया है कि जो कोई हमजा और लंधौर को मारेगा उसके उपकारसे हम कभी उऋण न होंगे और यहएहसान

उसका हमारे ऊपर रहेगा ऐसी २ बातें कुछ बादशाहकी तरफसे और कुछ अपनी ओर से कहीं और बहुत तरहसे अमीरकी बुराई की यह सब कहकर यूनानकी तरफ जानेकी इच्छाकी तब हदीसशाहने कारनसे कहाकि अभी तुम यूनानदेश को न जावोहम तुम्हारे सामने हमज़ाको मैदान में मारेंगे कारन ने कहा कि यह कहने की बात है कि हमज़ा को मैदानमें मारेंगे हमज़ा ऐसा नहींहै कि वह तुम्हारीसेनासेहारजाय और माराजाय हदीसशाह ने कहा कि अगर यह तदबीर अच्छी नहीं है तौ हमने एक कुंवाँ खोदवाया है उसमें अनेक २ प्रकार के हथियार हैं और जोकि बहुत तेज़ और नोकीलेहैं वे खड़े हैं मैं हमज़ाकोचौगान बाज़ीके खेलमें कुयेंमें मारूंगा कारनने कहा कि यह यत्न अच्छाहै और इससे वह माराजायगा यह तदबीर करके जबसेना हमज़ाकी हलब के समीप पहुंची उसी समय हदीसशाह भी सौगात आदिक और तीन सालकापेशगीकरलेकर हाज़िरहुआऔर कलमापढ़कर मुसलमानहुआ अमीरनेउसको सबसे अधिकखिलअतदी चारपांचदिनतक नाचरंगहुआ किया एकदिन हदीसशाहने कहाकि मैंने आपकी शूरताकीबड़ी प्रशंसा सुनीहैचाहताहूं कि आपघोड़ीदेरकेलिये चलें औरमुझेविद्याचौगानबाज़ी की सिखलावें अमीरने कहा बहुत अच्छा सबेरे हदीसशाह अपने कोटमें जाकरमनुष्योंसेकहाकिखबरदारकुयेंपरइसतरहसेघासजमाना कि किसी कोकुयें और खन्दकका संदेह न होवे और जिससमय कि हमज़ाकुयें में गिरपड़े तुमलोगउसकीसेनापरचढ़ाईकरकेलूटपाटलेनाऔरसबको मार डालनाजब हदीसशाह अमीर को मैदानमें ले गया तो एक तरफहदीस की सेनाथी और एक तरफअमीरकी दोनों मैदानमें गयेऔरदोनोंतरफ के अफसरलोग तमाशादेखनेके लिये गये हदीसशाहने कहा कि आप चौगान लगाइये अमीरने कहा कि हमतो कोईकार्य पहिले नहींकरते और गुरूने यहबातनहींबताईहै प्रथमतुम चौगानको(गुयें)पर लगावो पीछे मैंभी हाथमें लेकरजो कुछ जानताहूं तुमकोदिखलाऊंगातबउसने सलामकरके घोड़ेको तेज़ किया और जबवह एक बाणकी दूरीपरगया तो अमीरने भी चौगान(डंडा)लेकर अपने घोड़े को तेज़ किया हदीस-शाह तो पीछे रहगया और अमीर आगे जिधर कुंआथा बढ़ गया और उसके जालपर नज़र न की स्याहकैतास नाम घोड़ा उसकेसमीप जाकर झुका अमीर ने कोड़ा उसके मारा तब उस घोड़े ने चाहा कि कूद जावें मगर पिछले पैर कुयें में जारहे तब अमीर उस परसे कूदकर अलग हो-गया और घोड़े की बाग थाम कर आगेसे झुका कर बाहरनिकालकर फिर सवार होते समय कारन को देखकर उसकी तरफ घोड़ा छोड़ा और वह पहाड़की तरफ भगा अमीरभी उसके पीछे घोड़ा दौड़ातेहुये गया हदीसशाह ने जाना कि अमीर कुयें में गिर कर मरगया अपने

बीस सहस्र सवार लेकर अमीरको सेनापर चढ़ाई की और बहुतसी सेना मुसल्मानों के हाथसे मारीगई और आपभी खन्धौरके हाथसे मारागया और सेना उसकी भागी खन्धौरने जबदेखा कि अमीर नज़र नहीं आता घबड़ाकर अमरूसे कहा कि उसका पताखगाना चाहिये अमरू स्याहकैतास नाम घोड़ेके पैरोंके पतेसे चला कारन एकसाधु की कुटीपर जाकर उसस्थानसे एकसेरवा लेकर और उसमें बिष मिलाकर उससाधुको दिया और कहा कि मेरेपीछे एकसवार आताहै यह उसको देना और वहजा कुछदे लेलेना अगर उसने खायातो सौ अशरफीमैं तुमको देऊंगा और अगर कार्य्यमेरा पूर्ण होगया तोमैं बहुतखुश करूंगा यहकहके खुदपहाड़ की तरफ चलागया पीछे से अमीर जोगया उसने वहसेरवादिया अमीरने उससेरवेको लेकर पूछा कि मेरे आगे २ एक सवार आयाहै वहकिस तरफको गयाहै उसने कहा कि सामने पहाड़की दरमेंगयाहै उसतरफराह निकलनेका नहीं है और वहांसेर लागहै मनुष्य का वहां जाकर लौटना अति दुर्लभ है अमीरने इच्छाकी कि उससेरवेको पियेउसी समय उससाधुनेकहाकिऐ जवान यद्यपिमुझे सौ अशरफी इसके बदलेमें मिलैंगी परतेरी सुन्दरता और स्वभाव देखकर लेनेकी इच्छा नहींहोती इससेरवेमें उस पहिले सवारने कुछ मिलाकर मुझेदियाथा कि पीछेजोसवारआताहै उसकोदेना अगरवह मरजायगा तोसौ अशरफीमैं तुमकोदूंगा तब अमीर ने उस सेरवेको फेंकदिया औरहजारअशरफीकेमोलकाजवाहर देकरपहाड़की तरफ घोड़ेको दौड़ाया ज्योंहीं पहाड़पर पहुंचा किएकबाघउसकेऊपर आगिरा अमीरने एकतेज तलवार जोमारी तो उसके एकके दोभाग होगये फिर अमीर पहाड़के दरमेंगया और देखा कि कारन एकदरमें दबका पड़ाहै चाहा कि खंजरमारें वहमरजावे कि इतनेमें उसने कहा कि अगरमुझे न मारोतो तीनबस्तु मैंतुमको देताहूं अमीरने कहा कि क्या देताहै देयाड़ी देदूसीसे जानबचा उसने एकखंजर निकालकर दिया और कहा कि यहदेवबन्दी की कमरका है बड़ेदुःख और यत्न से मिलाहै औरएक बाजूबन्द हाथसे खोलकर दिया जिसमें बारह लालये औरहर एक तीन २ किरोड़केये यहदो बस्तुदेकर बोला कि इस पहाड़में एकस्थान परबहुत खजानाहै चलोवहभी बतलादूं तुम्हारी भागकाथा मिला इतनेमें अमरू गया तबअमीरने कारन के हाथ बांधकर अमरू को सौंपा कि देखोकहां खजाना बतलाता है याकोईयत्नकरता है अगर सहीहै तो उसको अपने हाथ में करो और अगर झूठहै तो इसको लेकर आवो अमरूने कमन्दसे उसके हाथ और कमरको बांधकर उसेबाहर लेकरचला तबकारन बलकरने लगा कि रस्सी कमरसे टूटजाय और मैं उसके हाथसे निकल जाऊं

अमरूने कहा कि क्यों बलकरताहै खज़ाना बतलादे मैं तेरेलिये अमीर से कहकर छोड़वा दूंगा कारन ने कहा कि खज़ानेका नामतो मैंने अपना जीव बचानेके लिये लियाहै मगर तू मुझेछोड़देतोदोलाखअशर्फी मदाइनमें चलकरदूंगा अमरूने कहा कि अब मैं जीतेजी कब तुझको छोड़ताहूं कि कोईबात शत्रुताकी मुझसे और अमीरसे उठानहींरक्खी है ऐसी कायूंकर मैं तुझको क्यों छोड़ूंगा यह कहकर खंजर कमर से निकालकर मारडाला और अमीरके समीप जाकर सब हालकहा तब अमीरने कहा कि तूने अच्छा कार्यकियाकि रोजका झगड़ामिटादिया॥

अमीर का यूनानकी तरफ जाना और महद मरहीमके साथ विवाह करना ॥

पुस्तक निर्माण करनेवाले उत्तमअर्थको लेखणरूपी भूषणसे सुशोभित करतेहैं उत्तम वर्णको नये २ प्रकारसे अलंकृत करके यों वर्णन करतेहैं कि जब शाह जफ़र अमीर के शीशा रूपी चित्त में प्रकाशित हुये तो अमीर ने क़िले में जाकर सातदिन तक वास किया और वहींसे पांचों देशोंका कर और कारन पच आदिक संयुक्तहाल कारन के या और २ जो उसने कियाथा लिखकर मुक़बिल के हाथ बादशाह नौशेरवां के समीप भेजकर आप यूनानकी तरफ चलकर थोड़े दिन के बाद उसके समीप पहुंचकर वासकिया फरेदूंशाह बादशाह यूनान को अखबार के द्वारा पहिलेही मालूम हुआथा इस वृत्तांतके सुनतेही कर और अपने भाइयोंको साथलेकर चला और मार्ग में अमीर से भेंट आदिक देकर मिला और साफ मनसे कलमा पढ़कर भाइयों समेत मुसल्मान हुआ तब अमीरने अति प्रसन्न होकर उसको और उसके भाइयोंको खिलतदी और कई दिनतक उसी जंगलमें मंगल रहा फरेदूंशाह ने एकदिन संयोग पाकर अमीरसे प्रार्थनाकी कि सेवकको तीन कार्य करनेकी अति आवश्यकता है और प्रत्येक का होना अति दुर्लभहै अगर आप इन कार्योंको कर देवें तो बड़ीही कृपा होगी अमीर ने कहा वह कैसा कार्यहै कहो उसने बिनयकरके कहा कि प्रथम कार्यतो यहहै कि थोड़े दिनोंसे एक अजगर यहां रहताहै उसके कारणसे मन्जिलोंकी आबादी वीरान होजातीहै और लाखों रुपये का नुकसान होताहै और दूसरा कार्य यहहैकि कोटके समीप एक पहाड़है उसपर डाकू सैयदोंने अपने रहनेके लिये एक स्थान बनायाहै और सालभरमें एकबार लूट मार करतेहैं कई सहस्र मनुष्य उनके हाथसे मरतेहैं तीसरा कार्य इन दोनोंके होनेपर कहूंगा तब अमीरने कहा कि प्रथम हम अजदहे को मारेंगे और फिर कोटमें सोनेके लिये स्थान बनावेंगे प्रातःकाल हमारेसाथ चलकर अजदहे का स्थान बतलाकर तुमलोगअलग खड़े होकरतमाशा देखना खुसरो ने कहा कि आप सैयदों पर क्या जावेंगे अगर आज्ञा

होतो खड़ी सवारी जाकर उसका शिर काटकर आपके समीप लाऊं अमीरने कहा कि प्रातःकाल हम अजदहेको मारने जांयगे तो तुम उसके मारनेको जाना और मार यमपुरको पहुंचाना अमीर तो फरेदूंशाहको साथ लेकर अजदहेको मारने चला और खुसरो हिन्द असफ़भाई फरेदूंशाह को साथ लेकर उसजंगी सैयदों परगया जबकि अजदहेके समीप पहुंचे फरेदूंशाहने घोड़े परसे उतरकर प्रार्थना की कि आपदेखें कि कोईवृक्ष आदिक बेजला नहीं है और सब बनऔर पहाड़आदिक जलकर राख होगयेहैं और जब वह अजदहा निद्रा से रहित होकर जागताहै और सांस लेताहै तब यहांतक उसकी लपक जातीहै इस समय वह सुखनींद सोरहाहै नहींतो मनुष्यतो क्या जन्तु आदिकभी इस स्थानपरआना अति दुर्लभहै अमीरभी घोड़ेपर से उतरकर असरको साथ लेकर अजदहेके मारनेकेलिये आरूढ़ हुआ फरेदूंशाहभी साथचला समीप जाकर देखा तो एक बस्तु कालेरंग की दिखितहुई पर अतिनिकट जानेसे प्रत्यक्षहुआ कि अजदहापड़ाहैअमीर ने कहा कि निद्रामें मारना उचित नहींहै यहतो केवल एक कीड़ा है अमीरने उसको जगाया उसको देखकर अजदहेने अपना शरीर ताड़के वृक्षके समान करके फुफकारता हुआ अमीरके ऊपर चला उसकीलपक से जो वृक्ष कि रहेथे सूखगये और बहुतसे भस्म होकर कोयले होगये तब अमीरने जो एक तीरमारा उसके दोनों नेत्र फूटगये और पृथ्वीपर गिरपड़ा तब फिर अमीरने जाकर एक तलवार ऐसीमारी कि एकके दो अजदहे होगये औरउसस्थानसेउठ न सकातबफरेदूंशाह अतिप्रसन्न होकर अमीरकी परिक्रमा करके सलाम किया और अमीर जिस समय कि सवार होकर किलेमें पहुंचाथा उसी समय लन्धौरभी शिर लेकर पहुंचा और खजाना जो किलेके लूटकर लायाथा अमीरके समीप लेगया फरेदूंशाहने यह सब रुपया और जवाहर लन्धौरको देकर नाच व रंग करानेका आरम्भ किया और कईदिनतकखुशीरही अन्तको फरेदूं शाहने प्रार्थनाकी कि दोकार्य तो आपकी कृपासे पूर्णहोगयेऔर तीसरा यहहै कि मेरी बेटीके साथ बिवाह कीजिये कि सब बलवान मनुष्यों और आपके समीप मुझ सेवककी प्रशंसा रहे और सब शत्रुभी डरें तब अमीरने कहा कि यह कार्यतो अतिही कठिनहै यह तेरा विचार मिथ्याहै क्योंकि मैं मलिकामेहरनिगारसे प्रतिज्ञाकर चुकाहूं कि जबतक तेरेसाथ बिवाह न करलूंगा तबतक दूसरीस्त्रीकी तरफ दृष्टि न करूंगा यह सुन फरेदूंशाह अपनासा मुंह लेकर रहगया औरअपने भाई असफसे एकान्तमें कहा कि जो कदाचित् मैं अपनी बेटीकेबिवाह की बार्त्ता अमीरसे न कर्ता तो अति उत्तम होता और क्योंसभामें इस प्रकार लज्जित होता और सर्वत्र यह बार्ता प्रसिद्ध होती कि अमीर

ने फरेदूंशाह को अप्रतिष्ठित जानकर उसकी बेटी के साथ विवाह न किया ऐसे जीवनसे तो मृत्यु उत्तम है यह कहकर चाहा कि एक खंजर पेटमें मारें और मरजायँ तब असफने उसकाहाथ पकड़करकहा कि ऐसे कार्योंका परिणाम विचारना उचितहै और इसकी प्रतिज्ञा करताहूं कि अमीरके साथ माहद्मरहीम का विवाह करादूंगा और अवश्यहै कि आपका कार्य सिद्धहोगा और शत्रुओंकोलज्जा प्राप्त होगी अमरूको बुलाइये तब फरेदूंशाहने अमरूको बुलाकर अपने समीपअति प्रतिष्ठाके साथ बैठाया और पांच सहस्र अशर्फी देकर कहा कि यह मेरी प्रतिष्ठा तेरे हाथहै परमेश्वरकेलिये मेरी लड़की काविवाह अमीर के साथ कराके इस कठिन कार्यको सिद्धकरो तो दश सहस्र अशर्फी और बाद विवाह होनेके दूंगा कदाचित्ऐसा न होगा तो विषखाकर मरजाऊंगा अमरूने उसको समझाकर कहा कि यह कुछ बड़ीबातनहीं है आजही विवाह होजायगा आप संदेह न कीजिये चुपचाप विवाह का सामान कीजिये यह कहकरअशर्फियोंको लेकरअपनेस्थानपरजाकर अमीरसे एकांतमें महद्मरहीमकी सुन्दरता और स्वभाव की प्रशंसा की कि अमीरको उसके सम्मुख किया अमीरने कहा कि हम फरेदूं-शाहकी लड़कीसे विवाह अभी करते पर मलिकाको क्या जवाब दूंगा कि मैंने उससे प्रतिज्ञा कीहै जबतक तेरेसाथ विवाह न करूंगा तबतक दूसरी स्त्रीपर दृष्टि न करूंगा परीभी जो सम्मुख आवेगीउसको कुरूप जानूंगा अमरूने कहा कि ऐ अमीर कहीं जबानभी ऐसी बातों में सच्चा रहताहै स्त्रियोंसे इससे अधिकभी करारकरतेहैंऔर पूर्णनहीं होते फिर वह मनुष्य जो देश औरप्रजाका अधिपति होउसकी प्रतिज्ञा ऐसी होतीहै आपने तमाशबीनोंकी बातों नहींसुनी शेर(तुम नहीं औरसही औरनहीं औरसही) आपखुशीसे विवाहकीजियेऔरमलिका मेहरनिगार का वृत्तांत वह जाने या मैं अगर वह आपसेकुछ कहे तो आप मेरा नाम ले लीजियेगा मैं उसको समझा दूंगा तब अमीरने अमरूके कहनेपर उसकेसाथ विवाह करनेका करारकिया परन्तु कहा कि मैं जबतक मलका मेहरनिगारके साथ विवाह न करलूंगा तबतक उसकेसाथ न रहूंगा फरेदूंशाहने इसबातको अति प्रसन्नताके साथ मानलिया और उसीदिन तिलक हुआ और विवाहका सामान होनेलगा फरेदूंशाहने अमरूको दशसहस्र अशर्फीकेसिवायएकखिलत जड़ाऊ की देकर कहा कि ऐ ख्वाजः मैं तेरी सेवा सदैव इसी प्रकार से किया करूंगा अमरू तो अतिलुब्धही था फरेदूं शाहको भीदिलासा दिया और अमीर से इस प्रकार से उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की कि अमीर ने दूसरे दिन की रात्रिको सर्वपूजन आदिकरके महद्म रहीम के साथ विवाह करके पन्द्रह दिवस तक उसके साथ वास किया

सोलहवें दिन महदमरहीम को उन्हींबारह लालोंमेंसे जो कारनसेप्राप्त हुयेथे देकर महल से बाहर निकाला उसके दर्शन की इच्छा करनेवाले बहुतसे मनुष्य एकट्ठा हुये और फरेदूंशाहसे करका रुपयालेकर साथ उन वस्तुओं को जो लंधौर लूटकर लायाथा सब लेकर नौशेरवांकेसमीप भेज कर अमरूकोभी साथकिया और अपनेयाचकीआज्ञा मिश्रकीतरफदी ॥

जाना अमीर का मिश्र देश को और कैदहोना बादशाह के हाथ दगा से ॥

नगर के लेखकों के लिखने से प्रसिद्ध होता है कि जिस समय खुसरो अमरू के साथ मदाईनके समीप पहुंचा तब बादशाह नौशेरवां ने सुनकर सरदारोंको उसकीअगवानीके लिएभेजा और आनेकेसमय बड़ीप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर देर तक अमीर का वृत्तांत पूछता रहा तब थोड़े कालके व्यतीत होने पर सब कर का रुपया व पच और सौगात आदिक नौशेरवांके समीप रखकर सर्ववृत्तांत कारन व अनीसशाह और हदीसशाह आदिक की शत्रुताका बयानकिया और अमीर की ओर से प्रार्थनाकीकिअमीरने कहाहैकि बादशाहकी आज्ञासे बाहर मैं नहीहूं और जो बादशाह आज्ञा देवें तो मैं अग्नि में भी कूदपरूं पर प्रतिष्ठा में भेद न होवे तब बादशाहने कर का रुपया खज़ानेमें भेजकर खुसरो और अमरूको खिलतदेकर आज्ञादी कि तुमलोग बराबरहाज़िर रहाकरो और अपने२ स्थानपर बैठाकरो खुसरो तो अपने स्थानपर जाकरस्थित हुआ परन्तु अमरू उठकर सब सतानहरीम के दरवाजे तकगया था कि तुरन्तही मलकामेहरनिगारने सुनकरबुलाया और अमीरका वृत्तान्त पूछने लगी अमरूने अमीरका पचदेकर सर्ववृत्तान्त जोकुछ उसके सामने हुआथा कहा कि मलका अमीर का चित्त आपहीमें लगाहै जो समय व्यतीत होताहै वहआपही के यादमें गुज़रताहै मलका बोली कि ऐ खोजे अबतो बिरह ऐसा सताताहै कि दिन व राचि अति कठिनता से व्यतीत होतीहै ॥ चौपाई ॥

तेरे ध्यान मांहि दिन बीते । राचि स्वप्नमें तुहीं प्रतीते ॥

दोहा ॥

हमज़ा तेरे बियोग में प्रानन होत पयान : हृदय सेा बाहर जानको आठन करतहे थान ॥

चौपाई ॥

मृत्यु आजाय तोमैं जीजाऊं । अभय पददुःख बिरहसे पाऊं ॥

हेईश्वर यातो साहेब किरांको लेआवे यामृत्युदे कि इसदुःख से छूटूं अमरने कहा कि कि ऐमलकाबहुतगईथोड़ीरहीं अबकिसी प्रकार का संदेह करना अनुचित है जिस ईश्वरने उनको इतनी आपत्तियों से बचायाहै और तुमको एकपापीके हाथसे छोड़ायाहै वही एकदिन यह भी करेगा कि तुम और अमीर अति प्रसन्नता के साथ संयुक्त होगे अब केवलमिश्रकाकरलेनाशेषथा वहभी ईश्वरकीकृपासे अतिशीघ्रपूर्णहोगया

होगा और आश्चर्यनहींहैकि वह इसतरफ चलेहों इसीप्रकारसे मलका की दिलजमई करके बाहरनिकल कर बहराम, खाकान, और सुक़्बिल आदिक से मिलने को गया तब सुक़्बिल और बहराम अति प्रसन्नता के साथ मिलकर नाच रंग आदिक करवानेलगे इसके संपूर्णहोनेपर अमरू ने खसरो बहिराम और सुक़्बिल आदिक से कहाकि तुमलोग प्रत्येक दिन बादशाह की सभामें जायाकरना परन्तु अपनेकील कांटोंसेखबर दार रहना क्योंकि बादशाह की कृपा और शत्रुताकी कुछ ठीकनहीं है उसका मन स्थिरनहीं रहता और बुजुरुच्चमेहर के समीप सदैव जाया करना क्योंकि वह अमीरका एक मित्र और शुभचिन्तक है और उसकी बातोंपर ध्यान रखना यह सब उपदेश देकर कहाकि मैंतो अब मक्का को जाता हूं और अति शीघ्र अमीर की खबर लाता हूं सब वस्त्र जिस प्रकार से यात्री लोग पहिनतेहैं धारण करके मक्के की तरफ चला॥

अब और वृत्तांत अमीर का यह सुनाता हूं कि जब अमीर मिश्रके समीप पहुंचा तो नील नदी के निकट डेरा डालकर सब दिन बातों में बिताया और जब कि रात्रि हुई उस समय फर्राशों ने बिल्लौरी झाड़ और फरशीआदिक प्रत्येकस्थानपररक्खी और झाड़ व फानूश आदिक में मोम की बत्तियां लगवा कर प्रज्वलित करवाया और फिर जो नदी की तरफ चिराग़ उड़वा दिया तो उसके कारण करके और अधिक तमाशा होगया और उसकी परछाहीं जोजलमें पड़ीतो एक दूसरी सभा बनगई इसके पश्चात् अमीरने शराब और मांस अपने साथियों समेत खाकर रात्रिभर नाच और गाना आदिक देखताऔर सुनतारहा जबकि यहवृत्तान्त मिश्रके बादशाहको प्रगट हुआ कि अमीर हमला नौशेरवां बादशाह की ओरसे करलेने को साथ अपनी सेनाके आकर नीलनदीके निकट स्थितहै उसीसमय दरबारमें सेना पतिको बुलाकर सब वृत्तान्त कहकर सम्मति पूछने लगा कि हमला आयाहै क्या करना उचितहै सेनापतिने जो अति बुद्धिमानथा कहा कि उसकी शूरता आदि का वृत्तान्ततो आपको अखबारके द्वारा विज्ञात होचुकाहै वहअति बलवान और युद्ध करनेवालाहै ऐसे मनुष्यसे युद्ध करने का यत्न करना अपने हाथसे अपना गिरकाटनाहै इसकारणसे मेरी बुद्धिमें तो यही आताहै कि आप चलकर अगवानी मिल सौगात आदिक देवें और उसकी प्रबलता और शीलतातो जगतमें प्रसिद्धहै जो आप का स्वभाव और प्रकृति अच्छे प्रकारसे जान जायगा तो निश्चयहै कि आपके ऊपर अति कृपाकरेगा मिश्रके बादशाहने अति क्रोधित होकर कहा कि तेरी सलाह उत्तमनहींहै जोमैंने विचाराहै वही उत्तमहोगी तब उसने विचारा कि यहइससमय मिश्रका स्वामी होनेकेकारण यद्यपि यह बेसामानहै परन्तु अपनेको सहित सामानके जानताहै इससमय जो

परमेश्वर भी समुझावें तो अपनी बुद्धिके सामनेकुछ न मानेगा यहविचार कर चुपहोरहा और कहा कि अवश्य यह मारा जायगा ॥

प्रातःकाल मिश्रके बादशाह ने तीनसालका कर और सौगात आदिक लेकर अमीर के समीप जाकर मिला, और सब उस के समीप रखकर प्रार्थना की कि आपने नगरहोते बनमें क्यों बासकियाहै कि हर प्रकार से दुःख प्राप्त होताहै आप नगर में चलकर सेवक के स्थान में बासकरैं अमीरनेखिलअतदेकर कहाकि मिचोंकास्थान मिचोंहीकेलियेहैहमको किसी प्रकार का संदेह तुम्हारे स्थान परचलनेका नहीं है यह कहकर उठ खड़ा हुआ और सेनाको उसीस्थानपर छोड़कर साथ अफसरों के चला ज्योंहीं अमीर नगर में पहुंचा सब छोटे बड़े उसके देखने के लिये दौड़े और अमीर का रूपदेखकर सबलोग अशीर्वाद देनेलगे ॥

ईश्वर तोहिंयहि जगत में राखे संपति युक्त । सफल दृष्टि नव भूति अरु नवनय अरुउद्युक्त ॥

अन्त को अमीर यूनानमें जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठा और सरदारलोग कुरसियों पर बैठे तब मिश्रके बादशाहने साकियोंको शराब लेआने की आज्ञादी और नाच रंग को सभाकर के शराब पिलवानेका आरंभ किया और आप टहलू के समान सब कार्य करता रहा और यदि अमीर बैठनेको कहताती हाथजोड़कर बिनय करता कि आपकी टहलकरना मुझउचितहै और बड़ो भाग्यथीकिआपआये अमीरउसकी मीठी २ बातों से अति प्रसन्न होकर निसंदेह होगये ॥ रात्रिके समय उसपापी बादशाहने अपनेहाथसे बेहोश करनेवाली मदिरासाकियोंको देकर आज्ञादी कि अब जो मदिरा दीजावे वह इसीमेंसे देना तब उन लोगोंने वही शराब गिलासों और सुराहियोंमें भर २कर देनेलगे अमीर ने पहिलेही गिलास पीनेपर पूछा कि क्या यह दूसरी मदिरा है बादशाह मिश्र ने हाथ जोड़ कर कहा कि यह शराब आपही के निमित्त सेवकने मँगवाईहै और इससे उत्तममदिरा दूसरी नहींहोती परअमीर ने अपनी अवस्था भरमें दारू बदहोशीकी नहीं पी उसकी बातों को सत्यजाना चारपांच गिलास पीनेके पश्चात् अमीर के साथी झुक २ कर गिरनेलगे जब अमीर ने उनका यह वृतान्त देखा तब उठने की इच्छा की तो खुदभी पृथ्वीपर गिरपड़ा तब बादशाह मिश्रने अपने वजीर से कहा कि देखो हमने यही विचार किया था उसी समय आज्ञा दी अति शीघ्र जल्लादोंको बुलावो कि हमजाका शिरसाथ हमराहियों के काटकर शुतरसवारको दे कि वह अतिशीघ्र नौशेरवां बादशाहके समीप पहुंचावे तब फिर कारवां ने हाथ जोड़ कर बिनय की कि सत्य है कि आपने ऐसे बलवान् शत्रुको यत्नसे अतिशीघ्र अपने आधीन करलियाहै परंतु मेरी बुद्धि में यह आता है कि अभी हमजा का मारना उचित नहीं है क्योंकि हमजा के ऐसे २ मित्र हैं कि हमजा के मारने का

हाल सुनकर मिश्र की मिट्टीतक खोदकर उड़ादेंगे जिनमेंसे एक खुसरो जिसके साथ लाख सवार और बक्षत से पैदल जो अपने जीव पर खेलते हैं और सब बड़ेबड़े बली और शूरबीर हैं दूसरे बहराम शाह जिसके साथ कई लाख चीनी और खाकानी सवार और बक्षत पैदलहैं और हर एक तलवार बहादुर हैं तीसरे मुक़ाबिल जिसके साथ कई सहस्र तीरंदाज हैं चौथे अमरू जो सबसे बलवान् और शूरबीर है और ऊंट पर अकेला रहता है इन सब बातोंसे उचित है कि इन लोगों को क़ैद रखिये और बादशाह नौशेरवां को पत्र भेजिये जैसी वह आज्ञादेवे वैसा कीजियेगा जो बादशाह हमज़ाको मारने की आज्ञादेवे तो मारकर अपने हौसिलेको मिटादूयेगा मिश्रके बादशाह ने कहा कि यह बात अति उत्तम है और मैंने भी यही विचारा है परंतु केवल इतनीही बात का संदेह है कि जब तक दूत आवे जायगा जो इसी समय में अमरू आगया और हमज़ाको छुड़ा लेगया तो सबपरिश्रम वृथा जायगा और तब हमज़ा किसी प्रकार से हमको उठा न रक्खेगा और दुबारा फ़साद उत्पन्न होगा कारवां ने कहा मैं पत्र का जवाब दो दिनमें मंगा सक्ता हूं परन्तु जो बादशाह जवाब लिखने में विलम्ब न करें और किसी प्रकार से मार्ग में आपत्ति न पड़े मेरे घर में एक जोड़ा मदायनके कबूतर का है आप पत्र लिख दीजिये मैं उसके गलेमें बांधकर प्रातःकाल यहांसे छोड़ूंगा संध्या को वहां पहुंचैगा जो बादशाह ने शीघ्रही जवाब लिखा तो दूसरे दिन यहां लेआवेगा बादशाहने उसकी बुद्धिकी बड़ी प्रसंशा करके लुहारों को बुलाकर आज्ञा दी कि हमज़ा सहित उसके साथियों के पैरों में बेरियां डालकर चाह यूसुफ में क़ैद करो और सरहंग मिश्रके सरदार को बुलाकर आज्ञादी कि तुम साथ अपने सिपाहियों के इन क़ैदियों की खबरदारी में रहो और किसी से भेद और मेलकी बातें न कहना नहींतो अमरूआकर इनकोछुड़ालेजायगा और परिश्रमवृथाजायगाऔर लज्जाप्राप्तहोगी और नगरमें ढिंढोरापिटवा दिया कि जो कोई हमज़ाका नाम लेगा वहबिना बादशाह की आज्ञा के मारडाला जावेगा नगर बासियों ने डर के मारे मुसल्मानों कानाम लेना छोड़ दिया इस प्रकारसे प्रबन्धकरनेके पश्चात् दूसरेदिन एकपत्र नौशेरवां कीनाम लिखकर कबूतर के गले में बांध कर मदायन की तरफ़ उड़ादिया वह वायुके घोड़ेपर सवारहोकर उसी तरफको गया॥

कबूतर का मदाइन में पत्र लेकर पहुंचना और मुक़ाबिल आदिक के मारने का यत्न करनाऔर अमरू का आजाना॥

आशिकों ने जिनकी बाक्य रचना में समधुर भाषी पक्षियों कीऐसी माधुर्य है औ इश्क़बाज़ लोग कि जिनके विचारांश की उच्चता आकाशगामियों कीऐसी है बरदार रूपी पक्षी को पंक्तिरूपी पींजरे में बन्द

करके तमाशा देखने वालों को देखाते हैं और नई २ भांति के आशयों को यों वर्णन करते हैं कि कबूतर ने मिश्रसे छूट कर जो शन्नाटाभरा ता शाम न होने पाई कि मदाइनमें पहुंचकर बादशाह नौशेरवां के कबूतरों की ठाटपर जाकर दमलिया कबूतरबाज ने नया कबूतर देख करअपने कबूतरोंको खोलकर जाल फैलाकर दानाफेंका और कटोरे को पानी उछाला जोकि वह कबूतर तमाम दिन का भूखा प्यासा था सब से पहिले जालमें जारहा कबूतर बाजने दौड़कर उसको पकड़ा तो देखा कि एक पत्र उसके गले में बांधाहै पत्रको खोलकर बखतक के समीप लेगया और कहाकि इस समय मैंने एक कबूतर पकड़ा है उसी के गले में यह पत्र बंधा था सो उसको मैं आपके समीप लायाहूं बखतकने उस पत्रको जो कबूतर के परों से बंधा था पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बादशाह को दिया उस पत्रके पढ़ने से बादशाह भी प्रसन्न हुआ बखतक ने कहा अब अति शीघही हमजा के मारने की आज्ञा लिखकर पत्रको दीजिये कि जो मेरे निकट एक कबूतर मिश्र का है उसके गले में पत्र बांधकर प्रातःकाल उड़ादूंगा निश्चय है कि संध्या तक लिखनेवाले के पास पहुंच जायगा और इसमें किसी दूसरे की सम्मति न लीजिये नौशेरवांने कहा ऐसे २ कार्योंमें बुजुरुजमेहरकी सम्मति लेना अवश्य है क्योंकि मुझको पिताकी आज्ञा पालनी जरूर है तब वह बोला कि अति उत्तम है परन्तु बुजुरुजमेहर मुसलमानहै अपनी जाति का पक्ष अवश्य करैगा और हमजा ऐसे बलवान्का बार २ वशमें आना कठिन है बादशाह ने उत्तर दिया कि इसी बातमें बुजुरुजमेहर की भी परीक्षा होजायगी और विचार भी प्रकट होजायगा यह कह कर बुजुरुजमेहरको बुलाकर पत्रदिया पत्रको देखतेही विच्छिन्न होकर अपने चित्तमें कहा कि बड़े आश्चर्य कीबातहुई परन्तु खुशहोकरकहा कि परमेश्वर आपका कार्य सिद्धकरे कि आपभी अलग रहे और सब संदेह मिट जायगा परन्तु अभी हमजाके मारने की आज्ञा देना उचित नहीं है कदाचित् यह वृतान्त खन्धौर बहराम व मुकाबिल तक प्रकट होगा तो वे मदाइन के सम्पूर्ण जीवों का नाश करदेंगे और मिश्र की जो दशा करैंगे उसको परमेश्वर जानै प्रथम तो आप इन लोगों का यत्न कीजिये तत्पश्चात् हमजाके मारनेकी आज्ञा दीजिये बखतक बोला कि इन लोगों का मारना कुछ बड़ी बात नहीं है कल जिस समय वे लोग सभा में आवें उस समय उनको शराब बेहोशी की पिलाकर पकड़ लीजिये तत्पश्चात् मिश्र के बादशाह को हमजा के मारने के वास्ते आज्ञा लिखकर उसी कबूतर के गलेमें जो आपके पास है बांध कर उड़ा दीजिये ॥

———

और जब हमज़ाका शिर आवे तब लन्धौर आदिको भी मारकर सदैव के लिये अपने देशसे उपद्रव मिटादें नौशेरवां को यह सम्मति अतिप्रसन्न आई और बख्तकनेउसकी बुद्धिकी बड़ीप्रशंसा की जोकि बख्तक बुजुरुज्ज-मेहरको अति ईश्वरका भक्त जानता था न तो आप उस राचिको अपने स्थानको गया और बादशाहसे कहकर बुजुरुज्जमेहरकोभी न जानेदिया प्रातःकाल जब सभाजुड़ी तो लन्धौर बहराम व मुक़बिल भी यथोचित सभामें आके अपने २ स्थानपर बैठे बादशाह उसदिन अति प्रसन्नता से उनके संमुख होकर उनको विषमिली मदिरा पिलानेलगा तब पोर्तु-गालीय व फ़िरंगी बेहोशहोकर गिरनेलगे और बुजुरुज्जमेहर ने आखें छिपाकर लन्धौर आदिकको मदिरापीनेसे बज़त निषेधकिया परन्तुउन लोगोंने कुछ न समझा केवल मुक़बिल दो गिलास मदिरा पीकर शिर की पीड़ाका बहानाकरके सभासे उठगया और गिरता पड़ता बुजुरुज्ज-मेहर के स्थान पर जाकर पड़ा और लन्धौर व बहराम मदिरा पीकर अचेतहो कुरसियोंपरसे गिरपड़े तब बादशाहने अति शीघ्रता से पैरों में बेड़ियां गलेमें तौक़ कमरमें जंजीर आदि से बांध कारागार में भेजकर मिश्रके बादशाह को यह पत्रलिखाकि हमज़ा का शिर काटकर अति शीघ्रतासे हमारे समीप भेजदेयह लिखकरत बख्तकको दियाकि प्रातः-काल कबूतरके गलेमें बांधकर उड़ादेना और इस भेदको किसी से न कहना यह आज्ञा देकर बादशाह दरबारसे उठकर महल में गये और बुजुरुज्जमेहरने अपनेस्थानपर आकरदेखातो मुक़बिलदारुकीनशासेमुरदे के समान पड़ा है उसको चैतन्यकरके सब वृत्तान्त सुनाया तब मुक़बिल हाय २ करनेलगा तब बुजुरुज्जमेहर ने कहाकि हाय २ करने से कुछ न होगाइसका उपायकरना चाहिये तुम हमारी ऊटनी पर सवार होकर दौड़ो और मार्गमें किसी यत्नसे कबूतर को मारडालो उसीके मारने से सब बात है यही उपाय हमारे निकट उचित है मुक़बिल उसी समय सवार होकर निकला बुजुरुज्जमेहर ने रमल से प्रश्न उठाया तो मालूम हुआकि यह कार्य्य केवल अमरूही से पूर्णहोगा और बिना उसके कुछ न होगा तब बुजुरुज्जमेहर बड़े सन्देहमें होकर बाहर खड़ा था उसके बड़े पुत्रने कहाकि आप किस संदेहमें हैं तब बुजुरुज्जमेहर ने कहाकि तूकुरिया पहिनकर मुझको बतलाकि किस संदेहमेंहूं तबउसने बतलाया कि आप किसी मनुष्य के आने के संदेह में है वह शाम तक आपके समीप अवश्य पहुंचैगा तब खुद उसने सकल कुरियाको मिलाकर देखी और अति प्रसन्नहोकर नौकरसे कहाकि देख कौन मनुष्य दरवाजे पर खड़ाहै और उसकी सूरत सकल किसप्रकारकी है उसने आकर कहा कि एक मनुष्यरंगीन पोशाक पहिने और सफेददाढ़ी का खड़ा है और यह कहताहै कि खवाजेको मेरा सलामकहो और उसको यहां भेजदो

यह सुनकर नंगेपैर दौड़कर अमरूको घरमेंलाया और सब वृत्तांत कह सुनाया और कहा कि जो तूनेकबूतरको मार्गमें न मारातो अच्छा नहीं हमजा कल मारा जायगा यह सुनकर अमरू रोनेलगा और कहा कि ऐ खाजे मैं किस प्रकारसे सहस्रकोस एक दिनमें जासक्ताहूं और न कबूतरके समान बाल व परहैं कि उड़कर चलाजाऊं तब बुजुरुचमेहर ने कहा कि ऐ अमरू मैंने तेरी कुंडलीमें देखा कि तीनबार तू अपनी अवस्थामें ऐसा दौड़ेगा कि न कोई दौड़ाहै न दौड़सकेगा प्रथमतोइस कबूतर के साथ सहस्रकोस एक दिनमें जायगा दूसरेजब अमीरके शुचु लाग चौब अकाबीन पर खींचेंगे तो ग्यारह सहस्रकोस बारह दिनमें जाकर मुसल्मान सरदारोंको जमा करोगे तीसरे हमजाके पुचकेलिये सिकन्दरके बनमें सात सहस्रकोस सातदिनमें जायगा और किसीसमय मार्गमें न थकैगा अमरूने कहा कि ऐखाजे बड़े रंजकी बात सुनाई कि मुझेअवस्था भर दौड़तेही व्यतीतहोगाखाजेनेकहा कि प्रसन्नहो किइस दौड़ धूपमें इतनी द्रव्य प्राप्तहोगी जो किसीबादशाहनेभी न देखीहोगी इसके पश्चात् बुजुरुचमेहरने कहा कि अब देरी न कर मुक्तबिलको भी मैंने सांड़िनीपर सवार कराकर भेजाहै मार्गमें तुमको वह मिलेगा और निश्चयहै कि अतिशीघ्र तुम उसकेसमीप पहुंचोगे अमरूबुजुरुच-मेहरसे बिदाहोकर हिन्द और चीनकेअफसरोंके समीपआकरकहा कि तुमलोगोंको यहां बास करना उचित नहींहै तुमलोग जाकर बंगे फौज में छाउनीकरो और ईश्वरकी कृपा के आश्रित होकर देखो क्या २ रचना देखाई पड़तीहै यह कहकर कबूतर के मारनेके लिये चला ॥

जाना अमरूका मिश्रको कबूतरके पीछे और मारना उसका मिश्रके दरवाजे पर और छुड़ाना अमीरका कारागारसे ॥

लेखनीरूपी पक्षिणी कागदरूपी विस्तृत मैदानमें यों गूंजरहीहै कि जब सुबःका डंका बजा उसी समय अमरू उठकर बादशाह के कबूतर खानेके समीप जाकर खड़ाहुआ और जिससमय बख्तकने पच कबू-तरके गलेमें बांधकर मिश्रकीतरफ ठाटपरसे उड़ाया उसी समय अमरू ने बख्तक से कहा कि जो हमजा या उसके साथियों का एक बाल भी बिखरेगा तो तूतोक्या नौशेरवां तक मारे जायंगे और जो इसमें शरीकहैं उनके बालबच्चेभी न बचेंगे इस समयतो तेरे कबूतरके शिकार को जाता हूं देख तुझको क्या खराबदिन दिखलाताहूं और जिससमय बख्तकने कबूतरको मिश्रकीतरफ उड़ाया उसीसमय अमरूभी कबूतर के पीछे परमेश्वर २ कहता हुआ उड़ाचला जाताथा और जहां कहीं नदी नाले आदिक पड़तेथे कूदकर पारहोजाताथा और किसीरोधकवस्तुको कुछ न समझताथा बहरीके सदृश कबूतरके पीछे चलाजाताथा अबथोड़ा वृत्तांत छतत्र मुक्तबिलका इस प्रकार वर्णन करताहूं कि जब वह

साड़िनीपर सवार होकर चला तो सचह कोसतक निश्चिन्त चलागया परन्तु एक नहरका जल मोतीसेभी अति स्वच्छ देखकर साड़िनीसे उतरकर साड़िनीको बनमें चरनेकेलिये छोड़दिना और आप कमर में जो रोटी बांधीथी उसको खोलकर खानेलगा संयोगसेजोउस बनमेंघिया विषकी जड़ी बहुत जमीछुईथी ऊंटनीने जो खाई शीघही मरगई मुक्त-बिल अति बिकल होकर पैदरचला और कई कोसतकगया कि पांव उसके शिथिल होगये लाचार होकर एक वृक्षकेनीचे बैठकर रोते २ बिकल होगया इतनेमें अमरू जो कबूतरका पीछा किये चलाजाता था मार्गमें मरीछुई साड़िनी देखकर समझा कि यह वही साड़िनीहै जिस पर चढ़कर मुक्तबिल आयाथा ज्योंहीं थोड़ीदूर आगेगया देखा कि पैर सूजनेसे मुक्तबिल एक वृक्षके नीचे बिकल पड़ाहै अति शीघ्रता के साथ जल लेकर उसके मुखमें डाला तब मुक्तबिलके नेत्रखुलगये और रोने लगा अमरू ने कहा कि यह रोनेका समय नहींहै शीघ मेरे कन्धेपर सवारहो किसी प्रकार इस कबूतरका शिकार कर मुक्तबिलने तीरको कमानपर चढ़ाकर अमरूके कन्धेपर सवारछुआ तब अमरू अति शीघ्रताकेसाथ उड़ताछुआ वहांसे चला कभी तो कबूतर मुझ से आगे और कभी मैं कबूतरसे आगे होजाताथा अभीतक सूर्य न अस्त छुयेथे कि कबूतर मिश्रके क़िलेकी दीवारके समीप पहुंचकर चाहता था कि भीतर जाऊं कि मुक्तबिलने अपने सफल बाणसे मारकर गिरादियाअमरू ने उसके गलेसे पत्रखोलकर पढ़ा और अमीरके दिखलाने के वास्ते पत्रको अपने जेबमें रखलिया और कबूतरको मारकर उसका मांसमुक्त-बिलके खानेकोदिया और मुक्तबिल समेत जहां मुसल्मानोंकी सेना पड़ी थी जाकरपहुंचा तब सुलतानवख्त मग़रबी अमरू को देखकर रोने लगा अमरूने उसके आंसू अपने रूमालसे पोंछकर कहा कि अब कुछ सन्देहकी बात नहींहै परमेश्वर चाहताहै तो शीघ अमीरको छुड़ाकर लाताहूं और तुम सबको दिखाताहूं जो ईश्वरने चाहा तोमैं अमीर को इस दुःखसे छुड़ाकर मिश्रके मक्कार बादशाहको कैसे २ तमाशेदिख-लाताहूं जोकि अमरू मार्गका थकाथा रातभर बेहोश होकर पड़ा रहा जिस समय अरुणोदय छुआ और सूर्यप्रकट छुये उसीसमयअरबी का बेष धर मिश्र में जाकर देरतक फिरा लेकिन अमीरकी कुछ चर्चा कहीं न सुनी संध्या समयदेखा किएकभिस्ती कन्धेपर मशक रक्खेप्यासों को पानी पिला रहाहै मालूमछुआ कि यह मनुष्य बुद्धिमान और वृद्ध है अमरूने उससे जलमांगा उसने कटोराभर जल अमरूके पीनेको दिया अमरूने कुछ जलपिया और कुछ फेंककर कटोरेको अपने झोलेमें रखकर भागा भिस्तीभी उसकेपीछे यह कहताछुआ दौड़ा कि कहां का उठाईगीरहै जो मेरा कटोरालिये भगा जाताहै चौकसे निकल

अमरू खड़ाहे गया तबभिस्तीने अमरूके हाथसे कटोरा छीन लिया और चौक की तरफ चला तब अमरूने उसके दोनों हाथ पकड़कर एकान्तमें लेजाकर पूंछनेलगा कि ऐभिस्ती मिश्रके बादशाहने अमीर हमज़ा को कहां कैदकररक्खा है वह बेचारा किस आफ़त में फँसाहै तब उसभिस्तीने अमरूके हाथ पकड़कर चिल्लाना आरम्भ किया कि दौड़ो २ मैंने अमरूको पकड़ाहै चारो तरफसे लोग उसके पकड़नेको दौड़े अमरूने अपने चित्तमें बड़ाआश्चर्य किया कि इसभिस्तीने मुझको कैसे पहिंचाना अति शीघ्रतासे उसके हाथोंको अपने दांतोसे काटकर छुड़ाया और बलसे कूदकर एकऊंचे स्थानपर चढ़कर कोठों २ कूदकर दूर निकलगया जब यह खबर सरहंग मिश्रीतक पहुंची तबवह अपने शागिर्दों समेत चारोंतरफ ढूंढ़नेलगा जबपता न मिला तो अपने शागिर्दोंको आज्ञादी कि जोकोई नया मनुष्य मिले उसीको पकड़ लाओ वही अमरू नामवरहै आखिरको अमरूने चलते फिरते एकतरफ देखा कि एकतकिया लगीहै उसपर एक अन्धा फकीर बैठाहै अमरू एक खोटापैसा देकर बैठगया वह आशीर्वाद देनेलगा तब अमरू जाकर उससे हमज़ा का हाल पूछने लगा वहअमरू का दामन पकड़कर सरहंगमिश्रकी दोहाई देनेलगा तब अमरूने अपने चित्त में सन्देह करके बिचार किया कि इसअन्धेने किसतरहसे मुझेपहिंचाना वहांभी मनुष्य इसतरफ़से जमा होगये और अमरूके पकड़ने की यत्न करनेलगे अमरू वहांसे अपने दामनको काटकर भागगया इसीसमयमें जबरात्रि हुई और पहरा फिरने लगा तबअमरू मीरआशक़ के डरसे रात्रि भर एककंदरा में रहकर न कुछ भोजन किया न जलपिया सवेरा होतेही एकसौदागर का भेषधारण करके इधर उधर फिरते २ कोतवालीके समीप जानिकला उससमय सरहंगमिश्री पोशाकपहिनेकुरसी परबैठा हुआ अपने साथियोंके साथ तमाशा देखरहाथा अमरू भी मार्गमें खड़ाहोकर तमाशा देखने लगा सरहंग मिश्री और अमरू की दृष्टि एकहोगई समीप आकर पूछनेलगा कि आपकौनहैं और कहांसे आतेहैं और आपका नामक्याहै और इस नगरमें किसप्रकारसे आयेहैं अमरूने उत्तर दिया कि मैं सौदागरहूं चीनमें मेरास्थानहै आपकेनगर का नाम सुनकर आयाहूं नगरके दरवाजेपर उतराहूं नाममेरा (खाजे तयुफुसबिन मायूसबिन सरबोसबिन ताक़, बिनतमतराक़ बाज़रगानहै) सरहंगने कहा कि मैंनेआजके सिवाय और कभीऐसा नामनहीं सुनाहै अपने सिपाहियोंमेंसे दोको बुलाकर आज्ञादी कि इसके साथ जाकर देखआओ कि कौन २ वस्तु इनकी दुकानपरहै खाजेने कहा कि यह मसलसहीहै सहीदूर की ढोलसोहावनी होतीहै मैंअपने नगरमें सुनताथा कि मिश्र एकउत्तम स्थानहैऔर वहांहर प्रकारके मनुष्योंका

गुजरहै और माल व असबाबकी रक्षाहोतीहै परन्तुबड़े सन्देहकी बात है कि राजाके मनुष्य सौदागरों की तलाशी लिया करतेहैं और सौदागरों और याचियोंको वे प्रतिष्ठित जानतेहैं सरहंगमिश्रो ने कहा यह सत्यहै इसनगरमें हरप्रकारसे रक्षाजीव वस्तुकी होतीहै और मैं जो आपके साथ मनुष्य भेजताहूं तोइसकारणकरके कि राचिकोपहरेवाला आपके स्थानपर वास्तेरक्षा के भेजूंगा अमरूने कहा जो यहहै तो अति उत्तमहै यहकहकर दोनोंको साथ लेकर चला ॥

मिलता करनाअमरूका सरहंगमिश्रीके शागिर्दों केसाथ औरबाज़ीलेजाना उनदोनों मक्करों से ॥

अखबारनवीस और वकृतसे बुद्धिमानलोगयों लिखते हैं कि जबअमरू उनदोनों मनुष्योंको साथलेकर दोपहर तक इधर उधर स्थानोंपर फिराकिया तबउनलोगोंने कहा कि यहबतलाइये कि आपकिस स्थान परस्थित हैं और इसप्रकारसे आपक्यों सन्देह करतेहैं अमरूने कहा कि नामउस दरवाज़े का अमनहै और मैं उसकी रास्ता भूलगयाहूं ईश्वर जानेवह रास्ता कहांहै दोनों मनुष्य बोले कि आपने प्रथमही क्योंन कहा कि आपको पहुंचाकर हमभी अपने स्थानपर ठंढे २ चले जाते अबचलिये आपको उसस्थानपर पहुंचादेताहूं तबअमरूने कहा कि अबदोपहर हुआहै अभीतक न कुछ भोजन कियाहै न जलपियाहै मारेक्षुधाके मरेजातेहैं उनलोगोंने कहा कि यहांसे बहुत समीप बाज़ार है वहांचलकर भोजन लेकर खाइये और स्थानपर चलकरहमलोगोंको बिदा कीजिये अमरूने कहा कि तीन मनुष्यों का भोजनकितनेमेंहोगा उनलोगोंने कहा कि एकरुपयासे पूर्ण होजायगा तबअमरूने कहा कि एकरुपयेसे क्याहोगा पांचरुपयेका अतिउत्तम भोजन नानबाई की दूकान परसे लावो तबउन मनुष्योंने चित्तमेंबिचाराकियहकोईबड़ाधनवान मनुष्यहै तबअमरूने एकनानबाई की दुकानपर जाकर पांचरुपये का अति उत्तम भोजन उनलोगोंसे मँगवाया और उनके साथ बैठकर भोजन करनेलगा जबपूर्ण होगया तो उठकर टहलनेलगा और कहा कि मैंतो सन्तुष्ट होगया तुमलोग अच्छे प्रकारसेभोजनसबखालो और उन लोगोंसे कहने लगा कि हमारेपास इससे उत्तम २ भोजनहैं चलकर तुम लोगोंको झोलियां भर २ देवेंगे और हरप्रकारसे तुमलोगों को प्रसन्न करेंगे तबवेदोनों मनुष्य अति प्रसन्नहुये और अपने मनमें कहने लगे कि गुरूने आज अच्छे धर्मात्माके साथभेजाहै और प्रातःकाल किसीअच्छे का मुखदेखाहै अमरू उनके नेत्रोंकी तरफ देख देखकर टहलने लगा ज्योंहीं उनलोगोंने पलक बदली त्योंहीकोठेपरसेनीचेउतरकरचलदिया वहदोनों मनुष्य जबभोजन करके नीचेआये लोगोंसे पूछनेलगे कि वह मनुष्य जिसने हमसे भोजन मंगवायाहै कहांगया तबउस नानबाई ने

कहा कि क्या भोजन करके दाम देना कठिन मालूम होता है मैं उसको क्या जानूं जिसके हाथमें खाना दिया है उसी से रुपये लूंगा दुकान दारने कहा कि मैं वे पांच रुपये दिये तुम लोगों को यहां से आगे न जानेदूंगा और जो अधिक बातें करोगे तो इतना मारूंगा कि जो खायाहै वह सब भूलजावोगे वे दोनों बोले कि नानबाई होकर कैसी २ बातें कहताहै क्या मारखायेगा तब वह नानबाई बोला कि कबाब खाचु-केहो केवल चासनी बाक़ीहै भोजनकरते समयतो न बोले अब दाम देते समय दुःख मालूमहोताहै और इधर उधर टहलातेहो अबअच्छी बात इसीमें है कि पांचरुपये हमारे दे दो नहीं थोड़ी दममें मारमार के अचार निकाल दूंगा और अमचुरकी ऐसीसूरतलेकर रहजावोगे हेलुवा निकल आवेगा मामा की चपातियां नहीं हैं कि जब भूखलगी उठाकर घर में लेजाकर खालिया जब दूकानदार ने ऐसी २ बातें कहीं तब वे दोनों अति क्रोधवान होकर उससे लपटगये और मारने लगे तब नान-बाईने दोचार मनुष्योंको लेकर अच्छीप्रकारसे उनका हेलुवा बनायातब तो धीराहोकर प्रार्थना करनेलगे किजोकोई मेरा वृत्तान्त सरहंगमिश्री तक पहुंचादेवे तो मेरेजीव की रक्षाहो किसी दयावानने सरहंगमिश्री से जाकर कहा कि तुम्हारे दोसिपाहीऔर एक नानबाई से दालरोटी बटरहीहै जो अति शीघ्रही न जावोगेतो मारेजूतोंके उनका दमनिकाल देगा सरहंगमिश्री ने उस स्थानपर आकर सब वृत्तांत सुना और पांच रुपये नानबाईको देकर उन दोनों मनुष्योंको नौकरी से छुड़ादिया अब अमरूका वृत्तांत सुनिये कि उसदिन भी फिरफिराकर रात्रिको एक भुजवेके भारमें जाकरसोरहा और सुबहको साधुकाभेष धारणकरके दुकान २ शेर पढ़कर भीख मांगने लगा संयोग से सरहंगमिश्री अपने सिपाहियोंके साथ उसी मार्गसे आ निकला अमरूको देखकर पहिं-चाना कि अवश्यकरके यह वही यार अमरूहै उसके समीप जाकर एक अशरफी देकर उसके हाथको पकड़कर लोगोंको बुलाया कि दौड़ो यह अमरूहै और जो अमरू चरव थैली यारीका अपने हाथोंमें पहिने रहताथा जब सरहंगमिश्रीने अपने यारोंको पुकारा तब वह हँसकर हाथ अपना खींचकर सरहंगमिश्रीका ताज लेकर एक कोठेपर कूद गया और थोड़ेही समयमें छतों २ जाकर हवा होगया तब सरहंग-मिश्री पागलोंकी तरह अति लज्जित होकरशिर खोलेहुये कोतवाली पर आया और विचारनेलगा कि प्रतिष्ठाकी प्रतिष्ठागई व बादशाहकी दृष्टिसे अलग उठा और संसारमें बदनाम ऊपरसे हुआ लोगोंसे कहा कि जो कोई अमरूको लावेगा उसकोमैं अतिप्रसन्नकरके बादशाह से अपनी नायबियतकी खिलत दिलवाकर तरक्कीका आश्रित कराऊंगा तब सब सिपाही अपनी २ पोशाक पहिनकर सब जगहोंपर जाकर

ढूंढ़ने लगे परन्तु अमरू कब मिलता था दिन के समय तो एक नाले में पड़ारहा रात्रिको दोघड़ीरात्रि बीतनेपर एक साधुकाभेष धारण करके एक नानबाईकी दुकानपर गया उसने पूछा कि क्यों शाहसाहब कहांसे आनाहुआ औरआपका नामक्याहैअमरूबोला कि बाबाफ़क़ीरोंके नाम से क्याकामहै मैं तो तेरा मेहमानहूं इसनगरमें फिररहाहूं मेहमानका नाम सुनतेही नानबाई दुकानपर से उतरा और उसको अपने साथले-जाकर अतिप्रसन्नताके साथ कबाब और शराबखिलानेलगा थोड़े समयके व्यतीतहोने पर फिर पूछा कि जोनाम व निशान बताने में आपको कुछ दुःख न होतो बताइये क्योंकिदूसरे नगरकेमनुष्यसेनाम व निशानबताना उचित है तब अमरूने कहा कि फ़क़ीरका पुत्रहूं और मदाइन नगरकी तरफसे आताहूं नानबाईने कहा कि तूने कभी यार अमरूको भी देखा है वह जीताहै या मरगया अमरू बोला कि चलतेसमय कईदिन उसके स्थानपर बासकर आयाहूं और कईदिन तक मेहमानीखाआयाहूं उस नानबाई ने कहा कि वह बड़ा निमकहराम है जो मैं उसको देखता तो अवश्य दण्डदेता अमरू बोला कि उसने तेरेसाथ क्याबदी कीहै जो तेरामन उससे बिगड़ा है नानबाई बोला कि मेरेसाथ तो क्याकरसक्ता है परंतु मेरामन उससे यह बिगड़ाहै कि हमज़ाकी सहायता से उसने धन प्रतिष्ठा आदिप्राप्तकियाहै परंतु उसकी खबर नहींलेताहै कि आज इतने दिनोंसे वह बादशाह मिस्रकीबन्दमेंहै अमरू बोला कि जोअमरू आता तो क्या करतायहां जिस नवीन मनुष्य को पातेहैं अमरू जानकर पकड़ लेजातेहैं वह नानबाई बोला कि जोवह हमारे पासतक आता तो उसको हम हमज़ातक पहुंचा देते तब अमरू बोला कि मैं हीं अमरू हूं मुझे हमज़ाके समीप लेचल नानबाई बोला कि ऐ फकीर तुझे दोही गिलासमें नशा होगया कि सिड़ीहोकर बकनेलगा भला कहां तू और कहां अमरू और कहां मदाइन और कहां उसका आना यदिमैंने उसकी सूरत नहींदेखी परन्तु लोगोंसे उसका वृत्तान्त सुना है तब अमरू ने कहा कि अब मैं वृद्ध होगयाहूं इसकारणसे सब प्रकारके वस्त्रआदि का पहिरना छोड़दियाहै और नानबाईकीदूकान २ से रोटी मांगमांग कर भोजन करताहूं फिर अपने कपड़ेआदि पहन करके बोला कि देखो अब मैं अमरू हूं या नहीं नानबाई देखकर बोला कि हमज़ाकोबादशाह मिस्रने यूसुफीनाम कारागारमें रक्खाहै चलो मैं तुमको दिखलादूं कि वह बेचारा कैसे दुःखमें है यह कहकर नानबाई नेभी अपनेवस्त्रपहिन अमरूको साथ लेकर छिपता २ उसकीतरफचला थोड़ीहीदूरजाके देखा कि एक मनुष्य दूकानपर बैठाहै नानबाई ने कहा कि तू कौनहै जब वह न बोला तो तलवार लेकर दौड़ापरउसनेखड्गछीनकरउसनानबाई को उठाकर दैमारा तब अमरूभी खंजर निकालकर उसपर दौड़ाजबसमीप

पहुंचा देखा कि मुक़बिल है तोगलेसे मिलाकर पूछनेलगा कि तूयहां किस प्रकारसे आयाहै उसने उत्तरदिया कि मैंभीकईदिनोंसे इसीनगर में हमज़ाके लिये फिररहाहूं परन्तु पतानहीं मिलताहै उसनानबाई वे जो मिलतेहुये देखा तो कहा कि इसने तो हमको देमाराहै और तुममिलतेहो तब अमरूने कहा कि यहमुक़बिल वफादारहै जो कि हमज़ाका बड़ामित्र व शुभचिन्तकहै और उसीकी तलाशमें फिररहाहै तबवहभी मिला और तीनों मनुष्य उसक़िलेकी तरफ़चले औरधीरा २ जाकर उसके समीप पहुंचे अमरूने एक कमन्दफेंकी परन्तु उसकासिरा मुखपर आगिरा और दूसरीबार फिरजोफेंकी वहभी न लगी तब उस नानबाईने फेंकी परवहभी न लगी अन्तको मुक़बिलने फेंकी तो उसकी कमन्द दिवारपर चपकगई और तीनों मनुष्य उसपर चढ़कर नीचेउतरे तो देखा कि एकमनुष्य पोशाक पहिने खड़ाहै और किसी का आसरा देखरहाहै जबअमरू उसके समीपगया तो उसने अमरूकी तरफ़हाथ बढ़ाया तबअमरू सन्देहमें होकर कहनेलगा कि जो यहमनुष्य लोगों को बुलावेगा तो मैं तो किसीयत्नसें निकलजाऊंगा परंतु येदोनों मनुष्य फँसजायँगे इतने में उसने अमरू का हाथपकड़कर चूमा और कहा कि मैंबादशाहमिस्र की बेटीहूं जहरमिश्री मेरानामहै और दूसरा-हीम अलेहुस्सलामने मुझे मुसलमान करके मुक़बिलकेसाथ विवाह करने की आज्ञादीहै और आज्ञादीहै कि फ़लानेबुर्ज की ओरसे अमरू और मुक़बिल फ़लाने समय आवेंगे तूउसी स्थानपर खड़ीरहना जब वे आवें ता अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुखहोकरउनकीमेहमानीकरनाइसकारण सायंकालसे खड़ीहुई तुमलोगों का आसरा देखरही थी यहकहकर पांच सहस्र का हार गलेसे उतारकर अमरू को दिया अमरूने उसका मुखचूमा और उसको अपनेपास रखलिया और मुक़बिलसे कहा कि लीजियेशकुनअच्छाहुआईश्वरकाकार्य्यसिद्धकरेगा जहरमिश्रीनेपांचसहस्र अशरफ़ी और भी अमरू को देनेका इक़रार किया तब जहरमिश्री उन तीनों मनुष्यों को साथलेकर क़िलेकी दीवारसे नीचे उतरीऔर कारा-गारयूसुफ़ी जिस में अमीर अपने साथियों समेत क़ैदथा गई ॥

छूटना अमीर का कारागारयूसुफी से और बचना सरहंगमिश्री से ।

क़लम नवीन २ आश्रय अन्धकार अप्रकट कूपसेनिकालकर अंगुलियों की सहायतासे अपूर्व वृत्तान्त को साफ़क़ाग़ज़पर योंलिखतीहै कि जब वे चारों मनुष्य कारागार के समीप पहुंचे तो सामने से सरहंगमिश्री प्रकट होकर सलाम वालेकम् कहकर कहा कि ऐअमरू इससमयमैं सोरहाथाकि इबराहीम अलेहुस्सलामनेनरककुण्ड और बैकुंठ देखाकर मुसल्मान करके आज्ञादी है कि अतिशीघही जाकर उनचारों मनुष्यों के साथ होकर जो हमज़ा के छोड़ानेके लिये आयेहैं शीघही यत्नकरके

समझाआदिकोकारागारसे छुड़ादे और उसकार्यकोपूर्ण करके प्रतिष्ठा प्राप्तकर इतनेहीमें मेरीआंख निद्रासे खुलगई और उठकर दौड़ाआया हूं अब तुम थोड़े समय ठहरो मैं यत्न करलूं तब तुमलोगोंको ले चलूंतब अमरूने अति प्रसन्न होकर सरइंगमिश्रीकोगलेसेमिलायऔर उनचारों साथ्यों समेत एक स्थानपर छिपगया तब सरइंगमिश्री ने पहरे वालेको रोशकरके अमरूको साथियों समेत उसकारागार परलेगया तबअमरू ने उन पहरेवालोंका शिरकाट कर कुयेंका मुख खोलकर उसमें कमन्द डालकर उतरा वहांजाकर देखा कि वे बेचारे बैठेहुये परमेश्वरका ध्यान कर रहेहैं और अपनी मौतकीघड़ी गिनरहेहैं जब अमरूकी आहटपाई जाना कि बादशाहने मारनेकेलिये जल्लादकोभेजाहैअबजीनेसेहाथधोवें इतनेमें अमरूने जाकर पूछा किऐमुसल्मानो तुममेंसे आदीकिसकानामहै आदीने डरसेकहाऐ यहमुझे मारने आयाहै अमीरकी तरफ देखकर कहा वह बैठाहै तो सब क़ैदी आदीकीबातपर हँसनेलगे तब अमरू ने अपनी आवाज बदलकर कहा कि बादशाहने तुझे छोड़नेकी आज्ञादीहै तब आदी घबराकर बोला कि साहब आदी मेराही नामहै मैंनेहँसीकी थी अमरू बोला कि सत्यहै मुझेतेराही पतादियाहै कि वह लम्बाहैऔर भग २ कर क़ैदियोंको दुःखदेताहै और कुयेंकोभी नष्टकरता है सोउसे निकालकर मारो और उसकी लाशको दूरफेंकदो यहबातसुनकरआदी का दम निकलनेलगा और अतिलज्जितहुआ परन्तु अमीरनेनिश्चयकर के जाना कि यह अमरूहै औरउन्हींकी ऐसी २ बातें होरहीहैं फिर अमीरने ईश्वरका ध्यानकिया तोजंजीरेंडोरेकेसमानटूटगईं और अमरूके डरानेकेलिये जंजीरें लेकर दौड़े अमरूनेदेखा कि जो जंजीरलगेगीतोमर जाऊंगा बोल उठा कि मैं अमरू तेरा शुभचिन्तक और पुराना सेवकहूं अमीरने अमरूको गलेसे लगाकर सब साथियोंको क़ैदसे छुड़ाकर कुयेंसे बाहर निकाला तब अमरूने अपना सब वृत्तांत जो उस समय तक हुआ था कह सुनाया और ईश्वरकी रचनापरबड़ाआश्चर्यकरकेऊपरजोदृष्टि की तो देखा कि प्रातःकालके तारे अमीरकी भाग्यके समान चमकरहेहैं और प्रातःकाल होनेके निकटहै तबअमीरअमरूआदिके सहितबादशाह मिश्रकीतरफचले और जाकर तलाश किया परंतु उसका कुछ पता न मिला अमीरके साथी उसकेबागमें जाकर फल फूल तोड़कर खानेलगे आदीने जो अधिक मेवाखाया तो उसको दस्तकी आवश्यकता हुई तो बादशाही मकानमें जाकर दिशा फिरनेलगा संयोगसे उस स्थानपरबादशाह छिपाहुआ बैठाथा शिरसे पैरतक विष्टामें डूबगया जाना कि यहां भी जीव नहीं बचता तब आदीके फोते पकड़कर लटकरहा आदीके जो दर्द हुआ तो बेपानीलिये वहांसे उठकर भागा बादशाहमिश्रभी उसके साथलटकाहुआचलाआयाआदीने चिल्लाकरकहा कि इसनगरकीबाद

बड़े आश्चर्यकी है कि मनुष्यके पेटसे मनुष्य गिरता है तब शाहबनी आदि दौड़ देखेंतो शाहमिश्र आदीके बैजेको पकड़े हुये लटका है हँसते २ लोट २ कर गिरपड़े और बादशाह मिश्रको नहवाकर अमीरके समीप लेगये अमीरने कहा कि ऐ बादशाह जैसा तूने किया वैसा पाया अब मुसल्मान होकर कल्मा पढ़नेमें देरी न कर और तेरे देशसे मुझे कुछ प्रयोजन नहीं है तू राज्य कर परंतु मुसल्मान होना अवश्य पड़ेगा बादशाह मिश्र जो कि अपने सामने दूसरेको न डरता था कुछ और तौर बकने लगा और संयोगसे अमीर के समीप खड़ा था उसने एक तलवार जो लगाई तो शिर धड़से अलग होगया तब अमीरने जहरमिश्रीको राजगद्दीपर बैठाकर उसका कारोबारी सरहंग मिश्रीको बनाकर खिलतदी और मुक़बिलको जहरमिश्रीके साथ बिवाह करनेकी आज्ञादी मुक़बिलने हाथ जोड़कर बिनयकी कि जबतक आप मलका मेहरनिगारके साथ बिवाह न करेंगे तबतक सेवकभी न करेगा इतनेमें दूतोंने खबरदी कि नगरमें सबलोग मारेगयेहैं और जोबचे हैं वे जंगी२ कीदोहाईकररहेहैं अमीरने उनलोगोंको बसनेकीआज्ञादी और सबकाखून माफकरकेआप मिचोंकेसाथ बैठेकरनाच व रंग करानेलगे और मुबारकबादीके डंके बजने लगे और शब्दउसके आशमानतक पहुंचे पश्चात् इसके अमरूने खुसरोहिंद और बहरामकेक़ैदहोनेका सबवृत्तांत कहकर वह पचदिया अमीर उसपत्रको पढ़कर रोनेलगा और अफसरों से कहनेलगा कि देखोयारो मैंने नौशेरवांकेलिये बड़े २ दुःख सहेहैं और जोकुछ उसने आज्ञादी उसे पूर्णकिया परंतु वह सदैव मेरेसाथ शत्रुता करता चला आताहै अब मैंभी जो ईश्वरकी कृपाहोगी तो मदाइनमें पहुंचकर नगरको जलाकर उसकी बहू बेटियोंको सईसोंको दूंगा जो ऐसा न किया तो हमजा नाम मेरा न रखना और तुम सब गवाह रहना कि ईश्वरके समीप गुनहगार और संसारमें बदनामनहूं जितने सरदार लोग बैठेथे सब एक मुखहोकर कहनेलगे कि सत्यहै कि नेकीकाफल बदी मिलताहै तब अमीरने वहांसे सवार होकर अपनी सेनामें आकर कूचकी आज्ञादी तैयारी होनेलगी जहरमिश्रीने अमीरसे जाकर प्रार्थनाकी कि दासीको मेहरनिगार के देखनेकीबड़ी इच्छाहै और इसदेशमें गद्दीपर बैठनेसे उसकी टहलुई होना उत्तम जानतीहूं और उनकी टहलुईसे मेरी प्रतिष्ठाहै ॥

दोहा ॥

मेरेमन अभिलाषअस करि अंजन निज नयन । तवपदरेणुहि शुभग प्रद यशमुनियतहै बेन ॥

जो आज्ञाहोतो आपके साथचलूं और जबतकबिवाहमलकासाहबाका आपके साथ न हो तबतकमलकासाहबाकीसेवकाईमेरहूं अमीरनेउसकी बिनय मानकर साथ चलनेकी आज्ञादी और नगरका नायब कारवांको बनाकर जहरमिश्रीको साथलेकरमदाइनकीतरफकूचकियाअबनौशेरवां

का वृत्तांत सुनिये कि एकदिन सभामें बैठाथा कि एकबारगी बोलउठा कि लन्धौर और बहरामको कारागारसे निकालकर हमारे सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारो बुजुरुचमेहरने कहा कि अभी इनका मारना उचित नहींहै और आपकोकिसीकाडरभीनहींहै कि इनलोगोंकोमार डालिये परन्तु मैंने रमलमें बिचारा तो यह मालूम हुआ कि हमज़ा अभी जिन्दाहै और आपपर आजकल सितारे सखावतका घरहै और मेरे बिचारमें तो जोआप नगर छोड़करथोड़ेकालकेलिये बाहरचले जावें तो अति उत्तमहोगा और जिससमय हमज़ाके मारनेकी ख़बर आवेउस समय इन दोनोंकोभी अपने सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारियेगा तब नौशेरवांने बख़तकसेपूछा कि तेरी क्यासलाहहै उसनेभी कहा कि जो ख्वाजे कहतेहैं वही उत्तमहै क्यों कि कबूतर छोड़ते समय अमरू कह-आयाथा इसकारण करके मदाइनको छोड़ना अतिउत्तमहैऔरमिश्रके तरफ याचा कीजिये और रसदआदिकेलिये उसतरफको आज्ञा दीजिये और जो हमज़ा मारा न गया होगा तो आपउसको अपने सम्मुख मर वाइयेगा और वहांसे लौटकरलन्धौर और मुक़बिलकोधारपरखिचवा-इयेगा नौशेरवांको यहबात बहुत पसन्दआई और हारवतऔरमारवत को चालीससहस्र सवारकेसाथ नगर औरक़ैदियोंकी रक्षाकेवास्तेछोड़-कर आप सेना समेत मिश्रकीतरफ कूचकिया अब थोड़ा वृत्तांतअमीर का और सुनिये कि क्रोधकेकारण दोमंजिला तीनमंजिला कूचकरके अति शीघ्रही मदाइनमें आकर पहुंचा और वह सेना जो पसेफेयजमें छावनीकिये पड़ीथी अमीरके आनेका हाल सुनकर सम्मुख हाजिरहुई और सब वृत्तांत वहांका कहकर प्रार्थनाकी कि नौशेरवां मारवत व हारवतको चालीस सहस्र सवारकेसाथ नगर और दोनों क़ैदियों की रक्षाकेलिये स्थित करके आप नौशेरवां मिश्रकी तरफसेना सहित गयाहै और बख्तकभी उसके साथगयाहै अमीरने चाहा कि मुझे तो अपने कामसे कामहै देखो थोड़ेही समयमें नगरका क्या हालकरताहूं यह कहकर अमरूसे कहा कि तुम जाकर हारवत और मारवत से कहो कि लन्धौर और बहरामको हमारेपास भेजदेवें बादशाहको हम जवाब देलेवेंगे तुमपर किसी प्रकारसे दण्ड न होने पावेगा उन दोनोंने उत्तरदिया कि हमज़ा कौनहै जिसकी आज्ञा से शाही क़ैदियोंको छोड़देवें अमरू ने आकर उसी प्रकारसे अमीरसे कहा तब अमीरने आज्ञादी कि युद्ध की तैयारी कीजावे जो खड़ी सवारी जाकर विजय न किया तो हमज़ा नाम न रखना यह कहकर सिकंदरी डंकेपर चोब दिलवाया और उनको कहला भेजा कि युद्ध का सामान करो हमआतेहैं यह सुनकर नगरमें बड़ा तहलका पड़गया रात्रि तो अमीरने दुःख व क्रोधमें काटी प्रातःकाल होतेही अमीर ने क़िले

बादशाही को जाकर चारों ओरसे घेरलिया हारवत और मारवत ने जो देखा कि हमला बड़ेक्रोधसे चढ़ाचला आता है और नगरको लूट पाटकर हमारा क़िला लेलेवेगा तो उनदोनोंने सलाह करके लन्धौर और बहरामको लाकर क़िलेकी दीवारपर बैठाकर पुकार दिया कि जो एकपरग भी आगे बढ़ागे तोहम दूनदोनों का सिरकाट कर खन्दकमें फेंकदेवेंगे और मांसचील कव्वे खावेंगे पश्चात् जो होगा वह देखलेंगे अमीरने. विचार किया कि जो दून पापियों ने ऐसाही किया जैसा कहतेहैं तोहथा लन्धौर और बहराम की जान जायगी सेनाको आज्ञादी कि जबतक हम न कहैं आगेकोई न बढ़ना अमीर ने अमरूसे कहा कि मेरापैर कभीपीछे नहींहटा अबजो लन्धौर और बहरामके लिये लौटजांय तो अति लज्जा प्राप्तहोगी ऐसाजो कोई ऐसी तदबीरकर कि लन्धौर और बहराम मारेनजावें और क़िला छूटजाय तो तुझे मैंलाख अशर्फ़ी दूंगा खाजेने कहा यह कितनी बड़ी बातहै कि दूननीचोंने जो युक्ति बिचारीहै वहअतीव तुच्छहै खन्दक कूदकर हारवत व मारवत के निकटगये और कहा कि अमीर कहता है कि लन्धौर और बहरामको न मारो हमफिरे जातेहैं तुम्हारे नगर में किसीतरह का उत्पात न करेंगे और बहराम व खुसरो से चीनी व हिन्दी बोलीमें कहा कि अमीरने यहआज्ञादी है कि तुमदोनों बड़े आलसीहो कि हाथपर हाथ धरे बैठे हो आदी ने चाहयूसुफी में अपने बन्दकैदसे तार अनकबूत की तरह तोड़डाले और तुमऐसे बलवानहोके तार ऐसीदो बेड़ियां और जंजीरें नहींतोड़सक्तेलन्धौर व बहरामकोलज्जाआईऔरईश्वरकानामलेकेजोबलकियातोसबबन्द रस्सीके समान टूटगये तबहारवत वमारवत लन्धौरवबहरामकेमारनेको तलवार खींचकर दौड़ेउन्होंनेखड्गछीनकरऐसेमुकेलगायेकिवेमरगयेऔरजितने मनुष्य उसक़िलेकी दीवारपरथे सबको मारडाला इसीसमय अमरूभी कमन्द लगाकरउसकेपास पहुंचा औरवारहसहस्रहिंदुस्तानीमनुष्य भी क़िलेकी दीवारपर चढ़गये और युद्धहोनेलगा अमरूनेक़िलेकादरवाजा खोलदिया सबसेना घुसगई और बादशाही सेनाको पराजय देकर सबके मारनेकी आज्ञा देकर लूटको माफकिया और आज्ञादी कि जितनेभी पुरुष मिलें सबको पकड़कर कैदकरो व सम्पूर्ण नगरको लूटो यहआज्ञा देकर अमीर व अमरू बादशाहके स्थानकोगये वहांमलिकामेहरनिगार को ढूंढ़नेलगे जबउसका पतानलगा तो मेहरंगेजसे पूछनेलगे तो उसने कहा कि बादशाहआदी मेहरनिगारको बादशाह अपनेसाथ लेगयाहै यहसुन अमीरने उत्तरदिया कि इसबात कोबुद्धिनहीं ग्रहण करती कि तुमको छोड़ मेहरनिगार को जंगल २ फिराये तबउसने कहा कि मुझे असत्य बोलनेसे क्या लाभहै सबस्थानमें ढूंढ़लीजिये यहसुन अमीरने

अमरूसे कहा भाई यहकार्य्य तुम्हाराहै जोतुम उसको ढूंढ़लाओ तो बारहसहस्र अशरफ़ियांदूंगा तबअमरूनेजाकर बादशाहीस्थान व सम्पूर्ण बाटिकोंमें ढूंढ़ा परंतु उनक्का के समान उसका कहींपता न लगा अमरू अत्यन्तसंदेहमेंखड़ाथाकिसंयोगवसबाटिकाकेमैदानमें उसकीदृष्टिपड़ीतब अमरूने चित्तमें बिचारा कि ईश्वरकरै मलकामेहरनिगार इसीकुयेंमेंहो फिर उसके समीपजोगयातोदेखाकि उसकुयेंपरबड़ीभारीलोहेकीशिला रक्खीहै और चारोंतरफसेहवानानेकीसांसनहींथीऔर वहशिलाअमरू से न उठसकी तबउसने अमीरको बुलाकर कहा कि मलका मेहरनिगार इसीकुयेंमेंहै परन्तु यहशिला मुझसेनहीं उठसकती ईश्वरने आपही को ऐसाबल दियाहै तबअमीर उसको हटाकर कुयें में हलगया पहिले तो कुयेंमें उतरते समय अँधियारेमें कुछदृष्टि न पड़ा परन्तु थोड़े समय केबाद एकदालान देखाईपड़ी उसकी तरफ जोगया तोदेखा कि मलका सिरझुकाये बैठीहै और रोरोकर आंशूनेचोंसे पोंछरही है जबमलका ने अमीर के पैरोंकी खटक से जोनेच उठाये तो अमीरको देखकर दौड़कर लपटगई और रोरोकर सबवृत्तान्त कहने लगी ॥

चौपाई ॥

मैं अस समुझ करी नहिं प्रीति । प्रीतकरी नहिंकरी अनीति ॥
प्रिय संगम महबीती बययह । बिरह प्रवेशरहा न ज्ञानयह ॥

हेहमज़ा ईश्वरकेलिये अबमुझे अपने साथसे जुदा न करना क्यों कि काम देवके दुःखसे रहानहीं जाता ॥

दोहा ॥

प्रिय बिरहानल दाहको चिन्हजो भानु समान । ताके प्रगटन हेतुको हृदय पूर्व दिशमान ॥
प्रलय समयके प्रातके उदय करन जनुकाज । प्रिय बिरहिनको फटतभो शुभग गरेवाआज ॥

अमीरने अपने अँगरखेके परदेसे आंशू पोंछकर कहा कि हमेरी प्यारी अबतो हमको और तुमकोईश्वरने मिलादियाहै अबक्योंरोतीहो अबचलो इसकमन्दपर चढ़कर कुयेंसे बाहर निकलो और इसअँधियारे से निकलकर उजेलादेखो यहकहकर प्रथमतो मलकाको बाहरनिकाला तब और जो उसकुयेंमेंथीं सबको बाहर निकालकर आपभी निकला और उसीसमय सवार कराकर अपने स्थानपरलाया उससमय सबसरदारोंने भेंटआदि देकर आशीर्वाददिया फिर मलकाने अमीरसे बिनय की कि तुमको मुझसे कामथासो ईश्वरनेपूर्णकिया अबनगरबासियों को कारागारसे छुड़ाकर जानेदोअमीरनेआज्ञादीकि सबकैदियोंको छोड़ कर लूटकामाल फेरदो अतिशीघही उसकी आज्ञाकेमाफिक कियागया अब थोड़ा सा वृत्तान्त आदीका सुनिये कि जिससमय अमीरने नगर बासियोंको बधकरनेकी आज्ञादीथी उससमय आदी अपनेदरवाजेपर खड़ाथा कि इतनेमें एकबज़त खूबरूपवानस्त्रीजवान दशबारहसहेलियों के

भागीचली जातीथीपरन्तु अतिकोमलताके कारण चल न सकतीथीथोड़ी थोड़ी दूरपर ठहर जातीथी आदी उसकी सुन्दरता और कोमलतापर लोभित होकर दौड़कर अपने स्थानपर पकड़करलाया तो मालूमहुआ कि यह बख्तक की बेटीहै तो अतिप्रसन्न होकर कहनेलगा कि अमीरने बादशाह की बेटी पाई मैंने बख्तक की बेटी पाई कि जिसका बिवाह अभी नहीं हुआ यह कहकर उसे अपने डेरेमें लेगया और रात्रिको जब उसकेसाथ भोगकरनेलगा तो वह क्लेशसे चिल्लाई आदीने बिचारा कि जो इसकाशब्द अमीरतक पहुंचेगातोअतिलज्जा प्राप्तहोगी यहबिचार कर उसके साथ भोग न किया परन्तु युवा स्त्रीको देखकर कामसे पीड़ित हुआ तो बाहर निकलकर सिकन्दरी चोब बजाने की आज्ञा दी और डेरेमेंआकर उसस्त्रीके साथ भोगकरनेलगा और उसकी कोमलता और आयुका कुछबिचार न करके निर्मोहियों केसमान जोरकर दबायातो उसने पक्षीकी तरहमुख खोलदिया और मरगई डंका सिकंदरीकाशब्द जोसेनाके कानतकपहुंचा तो सबसेना और सवारोंकेरिसाले औरखुसरो हिंद वसुल्फबिल और बहराम आदिजितने सरदारथे कमरबांध २ घोड़ों पर सवारहोकर आपहुंचे उससमय अमीर मलकामेहरनिगारको लिये मसनदपर बैठाथा और अमरूशराब पिलारहा था और कुछगाताथाकि इतनेमेंजो सिकंदरी डंकेका शब्दउसके कानोंमें पड़ा तो घबराकर उठा और अमरूको आज्ञादी कि तुम जाकर देखो कि क्यों डंका सिकंदरी बजाहै और आपभीमसनदसे उठकर पोशाक पहिनकर बाहर निकला और खड़ाहोकर अमरूको देखनेलगा अमरू जोगया तोदेखाकिखुसरो हिंद सुल्फबिल बहरामआदि साथसब सरदार औरसेनाके कमरबंद होकर खड़ेहैं अमरूने लंधौर और बहरामसे पूछा कि कारण तुमलोगोंके तैयार होनेका क्याहै उनलोगोंने उत्तरदिया कि औरतो हमकुछ नहीं जानते केवल सिकंदरी तबलका शब्द सुनकर तैयारहुये और अमीर की आज्ञाकेआश्रितखड़ेहैंऔरवृत्तान्ततुमजानतेहोगेऔरअवश्यहै कितुमने कुछसलाहभीदीहोगी अमरूने संदेहमें होकर उसीमार्गसेडंकेके समीप जाकर पूछा कि तुम लोगोंको किसने डंका बजाने की आज्ञादीहै उन लोगोंने कहाकि आदी कहगयाहै तब अमरूआदीके डेरेमें जोगया तो देखताहै कि आदीने एक युवा स्त्रीको मारडाला है और उसको आगे रक्खे हुये शिरपर हाथ धरे बैठाहै आदी से उसका वृत्तांत पूछा तो उसने अपनासब वृत्तांत कहा तब अमरूने अमीर के समीप आकर सब वृत्तांत सुनाया अमीर ने आदी को बुलाने की आज्ञादी और कहा कि आदीका भी हम उसी स्त्रीके साथ गोर में गाड़ेंगे तब मेहरनिगार ने आदीकी बड़ीसहायताकी और अमरूनेभी प्रार्थनाकी कि आपनेक़िला विजय किया उसने एक गढ़ीही तोड़ी अमीर अपने महलसे निकलकर

सेनामें गया और सब वृत्तांत कहकर हरएक पहलवानोंसे विनय करके कमर खोलनेकी आज्ञादी और आप महलमें आकर आराम करनेलगा और सब सेनानेभी कमर खोली जब प्रातःकाल हुआ तो अमीरने सात दिन तक नाचरंग होनेकी आज्ञादी सबसामान इकट्ठाहुआ और अभी कूचकीआज्ञा न दीथी कि आदी एकपत्र जैपालहिंदीकाअमीरके समीप लेगया अमीर उस पत्रको पढ़कर बड़े संदेहमें हुआ और लंधौर को दिया उसने पढ़ा तो लिखाथा कि फ़ीरोजशाह खतानी साढ़ेतीन लाख सवार लेकर चढ़आयाहै कईबार युद्धहुआ परंतु उसकेपास सेनाबहुतहै इसकारण विजय नहुई और सबकक्लिेसाबरमेंबंदहैजोअमीर या लंधौर या खुशरोहिंद न आवेंगेतो इसदेशमें तुर्कियों का राज्यहोजायगा और हमलोगोंकोअतिक्लेश पहुंचेगा अमीरनेआज्ञादीकि तुमजाकरउसको विजयकरो तब लंधौरने रोनीसूरत बनाकर कहा कि मैं जानता था कि अपनी अवस्था आपही के क़दमोंके नीचे काटूंगा परंतु आपसेबक को अलग करने की इच्छा करते हैं अमीर ने कहा कि ईश्वर जानता है मैं तुमको अलग करनेकी इच्छा नहीं रखता परंतु जो इस समय न भेजूं तो साराहिंदुस्तान हाथ से निकल जायगा और जिस समय कि ईश्वर विजयका हाल सुनावेगा उसीसमय मैं तुमको बुलालूंगा और जबतक तुम न आवोगे मैं मलका मेहरनिगार के साथ विवाह न करूंगा यह कहकर चालीस सहस्र सवार समेत सुक़बिल को मेहरनिगार और जहरमिस्री को साथ करके मक्का की तरफ़ रवाना किया और बहुत रुपया और जिंसआदि मार्गके सामानसे परिपूर्ण किया और कहाकि हमभी खुसरोहिंद को सवार कराकर आते हैं जो ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द तुम लोगों से मिलते हैं यस कहकर आदीको अपनी यात्रा बसरेकी ओर करनेकी आज्ञादीऔरकहाकि ऐसी युक्तिकरो किअमरू और सुक़बिल मलका मेहरनिगार और जहरमिस्री को लेकरमक्के को जावें और अमीर लंधौर और बहरामकेसाथसेनासमेत हुये औरमीर बख़्शको बुलाकर जहाज मँगवाया और खुसरो हिंदको चढ़ाकर साथ सेनाकेजहाजखोलवादिया अमीरनेप्रातःकालहोतेहीबहरामसेकहाकि ऐबहराम मैं तुझे और खुसरो हिंदको अपने हाथ समझताहूं औरतुम लोगोंको जुदा करनेसे अतिदुःख होता है परंतुक्या करूं जो हिंदुस्तान के युद्धमें खुसरो को न भेजता तो क्या करता इसके सिवाय और कोई युक्ति नहीं थी और जो तुमको भी खुसरो की सहायता के लिये न भेजूं तो और कौनहै जिसेजानेकी आज्ञादूं क्योंकि फ़ीरोजशाहअतिबलवान है और उसके पाससेना भी अधिक है इस कारण उचित है कि तुम भी चीनमें जाकर फ़ीरोजशाहको विजय करके उसके देशको लूटमार करते हुये साथ लंधौर और आदीके चलेआवो और जब इस कार्यको

सिद्ध करोगे तो खुसरो के साथ तुमको भी बुलालूंगा और जबतक तुम दानों मेरे पास न पहुंचोगे तब तक मैं बिवाह मेहर निगार के साथ न करूंगा तब बहरामने प्रार्थनाकी कि मुझे आपकी आज्ञा माननी उचितहै परंतु केवल आपके कदमोंके छोड़नेसे दुःख प्राप्त होताहै जो आपके कदमोंकी कृपाहै तोजानेमें कुछ संदेह नहींहै तब बहराम सेनाके साथ उसीदिन जहाजपर सवार होकर चला और अक्सर लोगकहते हैं कि चीनमें एकअजु आयाथा उसके निवृत्त करने केलिये अमीरने बहराम को चीनकी तरफ भेजा था परंतु यह अवश्य है कि अमीरने बहरामको रुखसत करके सेनाके साथ मक्केकी तरफ़ कूचकिया है और जब कि सात मंजिल जाचुके थे साथके सरदारोंने कहा कि यहांसेदो कोसपर दाहिनी ओर एकबड़ी भारी नदीहै और उसके निकट एकस्थान जिसकानाम (अलंगजमुर्रद)हैअतिउत्तम देखने केलायकहै तबअमीरने आदीसे कहा कि हमारा खेमा उसीस्थान की तरफ़ लेचलकर खड़ाकरो आदीने अति शीघ्रही उसीतरफ़ चलने की आज्ञादी और थोड़ेही समयमें जाकर अमीर उस (अलंगजमुर्रद) पर पहुंचे और रात्रिको अपनेडेरेमें सोरहे परंतु प्रातःकाल होतेही जो उठकर देखातो अति उत्तम स्थान मालूम हुआ कि एकतरफ़ जहां दृष्टि पड़तीथी तो फ़रश हरा २ बिछाहुआ देखाई देताहै और कोसों तक हरी रंगत लहरा रहीहै दूसरी तरफ़ हजार गुलाला कैसा फूला हुआ नज़र आताहै कि नेत्रोंसे देखने में अति प्रसन्नता प्राप्त होतीहै और एकतरफ़ नदीसे मिलाहुआ पहाड़ परस्तीकोहहै जिसपर सैकड़ों तख्ते गुलबहारके खुलेहुयेहैं और अनेक प्रकारके वृक्ष और मेवेफले फूलेखड़ेहैं और बहुतसे हरिण पाढ़ी चीतल बारहसिंगा लीलगाय आदि घुट २ की छलांगें माररहीहैं और हजारों प्रकारके पक्षीवृक्षों पर मेवा खाखा कर चहचहा रहे हैं और पहाड़पर जो सोतेझील, आदिकहैं उनके किनारेपर झुण्डके झुण्ड करकरे, सुरखाबी, सुरखाब चकई, चकवा आदि अनेक प्रकारके पक्षी बैठेहुये हैं और पहाड़के कोनोंमें तीतर बटेर आदिक फिरते हैं अमीर इसस्थान को देखकर अति प्रसन्न हुआ और सर्वदिन शिकार करतारहा सायंकाल को डेरेपर आकर जोपक्षी आदिक लाया उसमेंसे कुछ अपनेलिये रखकर शेष सरदारों और पहलवानोंको भेजवादिया और रात्रिभर आराम के साथ सोया प्रातःकाल जबउठकर कुल्ला दतूनसे निश्चिन्त होकर वस्त्रपहिनकर बैठाथा और अभीकूचकीआज्ञा न दीथी कि दोसरदारोंने आकर सलाम करके विनय किया कि जोपीनकाजस सवह सहस्र सवार लेकर आपसे युद्धकरनेके लिये आताहै और बहुतसीसेना बलवान साथलियेआताहै और कारण उसके अनेकायहहै कि नौशेरवां जो मिश्र

की तरफ़ आपके मरवानेके लिये जाताथा उसने मार्गमें सुनाकि हमज़ा ने मदाइनमें आकर नगरको लूटलियाऔर नगरवासियोंको मारडाला है और हमारी सेनाको बिजयकरके मेहरनिगारको पकड़लेगयाहै यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां मदाइन को लौट आयाकौर जब अपने नगर को खराबदेखा और मलका मेहरनिगार को न पाया तो अति दुःखित होकर कहनेलगाकि यह सब बख्तकने खराबकियाहै कि नगरको लूट-लिया और मलका को निकाल लेजाकर मेरी आबरू मिटा दी और संसारमें लज्जा प्राप्तहुई और जोमैं बुजुरुचमेहर के कहनेपर करता तो आजकाहेको यह गतिहोथी इतनेमें बख्तकने अपने घरसे आकर पगड़ी दैमारीकि मेरी माताको तो अमरूने और बेटीको आदी ने मारडाला यह वृत्तान्त जो सात देशवासी शाहनशाहको पहुंचेगा तो आपकोक्या कहेंगेकि एक अरबके रहनेवालेको ऐसा सुंहलगायाकि उसने सबदेशों को बरबाद करदिया है और उसकी युक्तिनौशेरवांसे न चल सकी नौशे-रवांने रोनीसूरत बनाकर कहाकि जो कुछतूने कहा वह मैंने कियापरंतु हमज़ा किसी युक्ति से बशमें नहीं आताहै कि उसेमारूं और उसके साथियोंका मांस चील कौवोंको लुटादूं बख्तक ने कहाकि सिवाय गुस्त-हमके और कोई ऐसा नहींहै जिसेहमज़ाके साथ युद्धकर ने को भेजिये बादशाहने पत्रलिखकर गुस्तहम को बुलवाया उसीदिन खबरपहुंचीकि जोपीनका ऊस सवह सहस्र सवार लेकर आपसे मिलने को आता है और यहां से दोकोसपरठहराहैबादशाहने उसी समय बख्तकको और सरदारोंकेसाथ उसकी पेशवाईके लियेभेजा बख्तक ने मार्ग में सर्व वृत्तांत अमीरका बयानकिया वह बोलाकि तुम निश्चिंत रहोजो खड़ी सवारी हमज़ाको न मारातो मेराजीपीनकाउस नाम न रखना इसकेपश्चात्जब वह नौशेरवांकेपासपहुंचातबवहबहुतरोया और बादशाहकोबहुतसम-झाया और कहाकि मैं इसीसमयजानेकीआज्ञाचाहताहूं यहांमुझेएक क्षणभरबर्षकेसमानमालूम होताहै जबतक हमज़ाकाशिर और मलका-मेहरनिगारको नलादिया तो संसारमेंमुख न दिखलाऊंगा तबबादशाह नेप्रसन्नहोकर खिलतदामादीदेकर कहाकि तुमपहलवानऔर सेना के साथ जाकर हमज़ाका शिरलाओ तो मैं तेरा विवाह उसके साथ कर-दूंगा और अपना युबराज बनाऊंगा और अपने भी दो सरदार तीस हज़ार सवारोंकेसाथ करकेभेजता अमीरने हँसकर कहा कि आज इसी स्थानपर बास करो उसको आने दो जब तक कहोकि पहलवान लोग अपना डंडपेलें और नांचरंग जारीरहैयह आज्ञादेकरफिर अमीर अपने आरामगाह में चलेगये और उसका आसरा देखनेलगे सायंकालके समय एक गर्द उठी और सेनाके समान देख पड़ी और जब गर्द बंद हुई तब सवह अलम और कई हज़ार सवार परेटके परेट देखाई पड़े जोपीन

आकरसामने डेरा डालकर युद्धका सामान करनेलगा रातको मामियान और तुबियान ने आकर अमीरसेकहा कि जोपीनकी सेनामें युद्धका बाजा बजताहै अमीरने कहा कि हमारी सेनामेंभी युद्धका बाजा बजाओ और अतिशीघ्र लड़ाईका सामान जमाहोजावे आज्ञा देतेहीकबाबेचीनी और कलाबेचीनी ने अठारह मनकी तबरेकीकी चोबें जोड़के सिकन्दरीपर दैमारा तो उसके शब्दसे जोपीनकीसेनामें कितनेहीमनुष्यों के कानके परदे फटगये और सबसेना डरगई परंतु दोनों तरफ राचि भर युद्धका सामान झुआकिया और प्रातःकाल होतेही जोपीन सवह हजार सवार लेकर युद्धके स्थानपर आया और इस तरफसे अमीरपांच लाख सवार अति बलवान् लेकरचले जिस समय अरबी पहलवानोंने जाकरयुद्धका आरम्भ किया तोवे बेचारे डरनेलगेऔरभागनेकी इच्छाकरने लगे और बेलदारोंने मैदानको साफकिया औरभिस्तियोंनेमशकोंसेबात की बातमें हजारों बिगहे जमीनको सींचदिया नक़ीब औरजारचियोंने जोरसे चिल्ला २कर कहनेलगे कि जिसको युद्धकरनेकी इच्छाहो वहयुद्ध के मैदानमेंनिकलकर लड़े और प्रतिष्ठा प्राप्तकरे कि आज बलवानोंकी परीक्षाहै और यहीयुद्धकामैदानहै यह सुनकर सबके रोयें खड़े होगये और एक दूसरेका मुख देखने लगे और मृत्युने आकर अपना डेरा युद्धके स्थानपर किया मानो मंगलग्रह हरएक मनुष्यके मस्तकपर चमकनेलगा और हरएक मनुष्यका गला बन्दहोगया और एकदूसरेपर ताना देने लगे और कहनेलगे कि आजनेकोंकीनेकी बदोंकी बदी प्रसिद्धहोजायगी और देखें किसका पैर शत्रुके ऊपर बढ़ताहै और किसका पीछे पड़ता है ये बातें सेनाओंमें होही रहींथी की जोपीन काऊस ने घोड़ेको मैदामें बढ़ाकर ललकारा कि ऐ ईश्वरके पूजको तुममेंसे जिसको मरने की इच्छाहो वह मेरे सम्मुख होकरलड़े अमीरसे उसका हँसना सुनकर न रहा गया स्याहक़ैतास घोड़ेपर सवार होकर सेना से बाहर निकला और बाजे वालों की तरफ से जो पीनके समीप जाकर इस प्रकारसे कावादिया की उसका घोड़ा बीस क़दम पीछे चलागया जोपीन यह हाल देखकर बे हवास होगया और अमीसे पूछा कि मालूम होताहै कि हमजा तेराही नामहै तुहीं मुसल्मानी सेनाका सरदार है अमीर ने कहा हां महींहू और ईश्वर पूजकोंकी टहलुई करताहू जोपीन बोला कि ऐ हमजा किस लिये अपनी जानको दुःखमें डालताहै और तेरा चित्त कहांहै उत्तम यहीहै कि मेहरनिगारको मेरे साथ करदे मैं जाकर उसके साथ बिवाहकरूं और तू रूमाल से हाथबांधकर मेरेसाथ चल मैंबादशाहसे तेरी सिफारिश करके बचादूंगा अमीरनेकहा कि ऐ नामर्द तू क्या बकताहै जो नशा बहादुरीका रखता होतो अपना नशा उतारले और अपने हौसिलेकोपूर्णकरले फिर मेरी बार रोंकयह

सुनतेही ज़ोपीननेएक बरछी अमीरकी छातीमें लगाई उसकोउसनेछीन कर तोड़डालीतब उसने झुंझुलाकर गदाउठाई उसकोभीअमीरनेरोंका कोई वार लगने न पाई तो अतिलज्जितहोकर कई वारें बराबर चलाईं अमीर जब धूलमें छिपगयेतो ज़ोपीन कहनेलगा कि देखो हमने मारा पृथ्वी में हमज़ा धसगया और कहा कि जो कोई एक किरच हड्डी की निकालदे तो उसको पारितोषिक देकर सेनाकासरदार बनाऊं अमीर ने जो यह वार्त्ता उसकी सुनी तो स्याहक़ैतासको लेकर उसके समीप आकर ललकारा कि ऐपापी किस को तूने मारा और खाकमेंमिलाया है तेरा मारनेवाला मैं तेरे शिरपर खड़ाहूं देख अभी तुझे क्या दिखाता हूं एकवार और चलाकर अपने हौंसिलेको मिटाले तब उसने एकगदा चलाई अमीरने उसको छीनकर जिसतरह बहरी कबूतरकोझपटती है उसके गरदनपर खंजर रखकर कहनेलगा कि बतावो अब उस हँसने की मज़ा देखावें अभी कुछ हौसिला बाक़ीहै यहसुन ज़ोपीन गिड़-गिड़ानेलगा और ईर्षा मनमें रखकर मुसल्मान हुआ अमीर उसकी छातीपरसे उतरकर अलग खड़ाहुआ ॥

युद्धकरना ज़ोपीनका अमीरके साथ और दबाना अमीरका ज़ोपीनको और खंजर रखकर मुसल्मान होना ॥

ज़ोपीन फिरउठकर अमीरकेपैरोंपरगिरपड़ाअमीरनेउसको उठाया और अपनी सेनामें लेआकर गलेसे मिलाया और सेनामेंविजयका डंका बाजनेलगा और झंडावालोंने परचम खोलदिये और ज़ोपीनकी सेना अति लज्जित होकरलौटकरअपनेडेरेमेंआईअमीरमुज़फ्फर और मन्सूर के साथ ज़ोपीनको लेकर अपनी सेनामें पहुंचे मुबारकवादीके डंके बजनेलगे और बड़ी धूम धामसे नाचरंगहोनेलगा और उसीसमय भोजन तैयारहुआ अमीरने ज़ोपीनके हाथमुंह धुलाकर अपने साथभोजनकर-वाया और शराब पिलवाई तब उसने अमीरसे कहाकि अब सेनामें जानेकी मैं इच्छाकरताहूं कि जाकर सब सेनाको मुसल्मान करूं और कल सवेरे सब सरदारोंको आपके समीप लाकर मुलाक़ात कराऊंगा अमीरनेकहा कि जाइये और सबको मुसल्मान कीजिये तबवह सेनामें आया और मक्कर व जालकी युक्ति विचारनेलगा ॥

रातको लड़ाई करना ज़ोपीनका और जख़मी होकरन मिलना अमीरका ॥

सुहृद मनुष्यका चित्त जिससेएकवार साफ़हुआ तो साफ़ही रहताहै व्यतीत विरोधोंका विचार नहीं करताहै यहांतो अमीर उसपर वि-श्वास करके उसके आनेका आशित था उधर वह जाकर औरहीयुक्ति करनेलगा अपनी सेनासेकहा कि मैंतो जीवकी रक्षाके लिये मुसल्मान

हुआहूं और एकमुसल्मानको दमदे आयाहूं तुमलोग तैयारहो उसपर हम रात्रिको लड़ाई करकेमारेंगे हमारीविजयहोगी औरउसकी पराजय होगी यह सुन उसकी सेना तैयारहुई जबआधीरात्रिहुई तबसचह हजार सवार लेकर अमीरकी सेनापर धावाकरनेचला मार्गमें शेसयमन जो चार सहस्र सवारलिये पहरे पर घूमताथा घोड़ोंके पैरका शब्द सुनकर ललकारा कि कौन इस समय आताहै खबरदार आगे क़दम न बढ़ाना आकर समीप जो देखा तो मालूम हुवा कि जोपीन सचह सहस्र सवार और बहुतसे पैदल लियेहुये लड़ाई करनेकोचलाआताहै शहससे तलवारचली शहस उसकेहाथसे मारागया और जोपीन मुसल्मानीसेना पर जागिरा और जोसेना अमीरकी बेखटके सोरहीथी जबसचहसहस्र सवार जागिरे तो उनकी खरकसे जागउठे परन्तु उसके आमहुंचनेके कारण हथियार न लेसके जो जिसके पासथा वही लेकर दौड़ा तलवार चलनेलगी और चारोंतरफ शब्द होनेलगा अमीरभी सोते २ शब्दकी खरखराहट सुनकर जागउठाऔर पूछनेलगा कि क्याशोरगुलसुनाईदेता है दूतोंने विनयकी जोपीन धावा मारने आयाहै तो यह सुनकरअमीर स्याहक़ैतासके थानपरजाकरलगाम देकर बेक़ीनका सवार होकरआया उसीसमय अनासानमलक नामक तलवारजोउसके हाथ में रुधिरसेभरी थी उसके ऊपर चलाई अमीरनेवार खालीदेकरतलवार उसकीछीनकर उसे मारडाला दूसरे भाईने कहा कि हमजानेबड़े आश्चर्यकी बातकीजो मेरेभाई को बोधकियापरन्तुमैंभीउसेमारूंगाअमीरनेकहा कि चिन्तान कर तुझेभी उसीकेपास भेजनेका उपाय कर रहाहूं तब उसने अमीरके ऊपर हथियार चलाया परंतु अमीरने उसकी वारको रोंककर एक तलवारमारीकिउसकेदोभागहोगयेपरन्तुजोपीननेअमीरकेपीछे आकर एक तलवार उसके शिरपर सावधान होकर मारीतो चारअंगुलकाघाव होगया फिर अमीरनेपीछे हटकेमारातोउसकेभी उसीतरहघावहोगया और दोतीन तलवारें मारकर घोड़ेसेगिराया तब सेनाके लोगोंनेउसको उठाकर बहुत जल्दी मदादूनकीओरभागेजोपीनजोसचहहजार सवार लेकरआयाथा उसमेंसे केवल दश हजार मनुष्यबचे और सब मारेगये और उस रात्रिके धावेकेकारण मुसल्मानी सेनाभीबहुतमारीगई अमीर के शिरसेभी बहुत रुधिर बहा कि अमीरबेहोशहोगयाघोड़े स्याहक़ैतासने देखा कि सवार मेराजख्मीहै मैदानसे निकलकर बनकी ओर चला आदी आदिक सेनापतियोंने अमीरको बहुत ढूंढ़ा जब पता न मिला तो शोक करनेलगे जितने सर्दारथे सब अपनी सेना समेत काला वस्त्र धारण करके बहुत शोककरनेलगे तीसरेदिन आदी सबसेनाकोसाथ लेकर मक्के मेंपहुंचाऔर खाजे अब्दुलमतलबऔर अमरूसेसबवृत्तांतकहा यहहाल सुनकर मक्के वासियोंनेभी कालाबस्त्र धारण करके बहुत शोक

करनेलगे और चारोंतरफ़से रोनेकाशब्द सुनाई देनेलगा खाजेअब्दुल्लत-लबको सकताकी ऐसीबीमारी होगईअमरू और मुक़बिलने अपनागला काटडाला और मेहरनिगारने मारमारकर अपने कपोलोंको लाल करदिया और शिरके बालोंको इसप्रकारसे नोचडाला कि कंघी और चोटीकी आवश्यकता न रही और रांड़का स्वरूप धारण करलिया उससमय अमरूने कुछबिचारकर सबलोगोंको चुपकिया और कहा कि न डरो अमीर ज़िन्दाहै क्योंकि जो अमीरको कुछहोता तो स्याह-क़ैतास अवश्य अपनीसेना को भागआता जो अबतक स्याहक़ैतास नहीं आया तो तुमलोग ईश्वरको जपो मैं अमीरको जाकर ढूंढ़ लाताहूं यह कहकर क़िलेको बन्दकरके हरएद स्थानपर सेनामुक़र्रर करके और मुक़बिलसेकहा कि ख़बरदार कोई नवीन मनुष्य क़िलेके समीप उतरने न पावे आप अमरू अमीरके ढूंढ़नेको चला और उसीमार्ग होकरअलंग-जमुर्रद के तरफ़ पोशाकयारी पहिनेहुये जिसमैदान में युद्धहुआ था रवाना हुआ॥

आना अमीरके लेनेको अबुलरहीम नज़िनी
वज़ीर शहनशाह परदेक़ाफ़ क॥

अख़बार नवीस और नकल करनेवाले यों लिखतेहैं कि जिस समय दीवान रूस्याहने शहपाल पुत्र शाहरुख़शहनशाह परदे काफ़से सचुता करके नगर समीन, ज़रीन, वकम, काकुम, क़ैसरबिल्लौर, मीनाकाबन, कतर वयज़, क़ैसर गौहर, क़ैसर ज़मुर्रद, क़ैसर याकूब, क़ुल सितून, बाग़सदा बहार, बाग़संतुष्ट करनेवाली, बाग़हस्त बेहश्त, क़ैसर मीना बाग़ जिन्नात जिनको कि हज़रत सुलेमानने बनवायाथा छीनलिया और केवलबाग़ आराम उसकेपास रहगया जिसमेंकि अपनेलड़केवालों को लेकर क़िलेका दरवाजा बन्दकरके बैठेथे एकदिन बादशाहकोयाद आयातो वज़ीर अबदुलरहीम नज़िनीको बुलाकर कहा कि वहलड़का हमज़ानामी जिसको तुम मक्के से लाये थे और कहा था कि एक दिन ऐसाहोगा कि सब दूतलोग आप का देशछीनलेवेंगे केवल बाग़ आराम आपके पास रहेगा उसीमें बंदहोकरआप रहेंगे और यह लड़का आप को उनलोगोंकोमारकरआपका सबदेश देवेगातो अबवह लड़काकहांहै उसको ढूंढ़नाचाहिये बिचारो तो वह आजकल कहांहै औरकिसदेशमें उसका स्थान है तब उसने रमल से बिचारकर कहा कि आजकल वह एक बड़े युद्धमेंथा और उसके एक तलवार लगीहै जो आप आज्ञा देवें तो वह आसक्ता है तब शहनशाहने कहा कि इससे उत्तम और क्या है उसी दम मलहम सुलेमानी मँगवांकर और अनेक २ प्रकार के मेवे देकर कहाकि अति शीघही जाकर इस मलहमको उसके शिरपर लगा देना और जब घाव अच्छा होजायतो इनमेवोंको खिलाकर अपने साथ

लेकर हमारे समीपलावो उसी समय अब्दुलरहमान तख्त पर सवार होकर कईसौ जिन्साथ लेकर क़ाफपर्वतसे चला और थोड़ीही समय में जब उस स्थान पर पहुंचा तो चारोंओर दृष्टिकर के देखने लगा तो देखाकि हमजा रुधिर में डूबाहुआ उस सब्जेपर बेहोश पड़ाहै उसी समय जाकर हमजा को तख्त पर बैठा कर पहाड़ अबुलक़ैस के एक गढ़े में उठा लेगया और उसके घावको धोकर पट्टी मलहम सुलेमानी उसपर रखकर मेवोंकी डालियां चारोंतरफ लगादीं कि उसकी सुगन्ध से कुछ शिरमें बलहोजाय और जीवको आनन्द होजाय तीसरी पट्टीबदली थी कि अमीरने नेत्रोंको खोलदिया होश में आये तब उसने सलाम किया अमीर ने सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौन हैं और कहांसे आयेहैं और आपकानामऔर पताक्याहै औरक्याआपही मुझे इस तख्तपर उठा लाये हैं उसने कहा कि मैं शहपाल का पुत्र शाहरुख़ शाहनशाह परदेक़ाफ का वज़ीरहूं मेरानाम अब्दुलरहमान है और उसकी आज्ञासे यहां आयाहूं जिसने आपको जब आप सात दिनके थे तब आपको पलंग समेत अँगवालिया था और सातरोज अपने मकानपर रखके बज़त देव और भूत और जिन् का दूध पिलवाया था कि जवानी में किसीसे आंख न झपकै और सुरमा सुलेमानी आखों में लगाके घोड़ेपर लेटाके भेजवादिया था और बज़त क़ीमती साज आपके साथ भेजा था इस समय जो आपका चर्चा आया तो मुझसे पूछा कि विचार कर बतलावो कि वह आजकल कहां है मैंने जो विचारा तो मालूमहुआ कि आप इस सब्जेपर तलवारके घावसे रुधिरमेंडूबे बेहोश पड़े हैं और अपने दोस्तों और सेनासे अलगहोगये हैं यह सुनकर बादशाहने मलहम सुलेमानी और मेवे की डालियां देकर आपके समीप भेजाहै जो मैं यहांआया तो उसीप्रकारसे पाया जिसतरह कि विचार से मालूम हुआ था सो उसी समय आपको उठाकर इस तख्तपर रख कर इसस्थान में लायाहूं और मलहम सुलेमानी रखकर आपका घाव अच्छा किया अब केवल शरीर में बल आना बाक़ीरहा है सो इन मेवे को खाइये ईश्वर की कृपासे बल भी शरीरमें अतिशीघ्र आजावेगा तब अमीरने कहा तुमने मुझे किसतरह से पहिंचाना उसने बिनय किया कि अपनी बुद्धि और आपके स्वरूप को देखकर अमीर उसकी बातों से अतिप्रसन्नहुये और उसकी प्रशंसा करनेलगे तब अब्दुलरहमानने और जो कईसौ जिन् साथथे बुलाकर अमीर से भेंटकराई और कहा कि एकविनय मेरी भीहै जो आपहीके किये सिद्धहोगी ईश्वर जब आपको अच्छा करेगा तो कहूंगा अमीर ने कहा शिर और नेत्रों से आपका कहना करने को मैं आपके कहेहुये मुस्तैदहूं इसमें कुछ कहनेकी अवश्यकता नहीं है अब थोड़ा वृत्तान्त अमरूका यह है कि वह अमीर को

ढूंढ़ता २ उस सब्ज़े में आनिकला तो देखा कि स्याहकैतास चररहा है और इधरउधर नेचोंको उठाकर देखरहाहै जब अमरू उसके पास गया और पकड़ने की इच्छा की तो प्रथम तो उसने अमरू को न पहिंचानकर बाघके समान अमरू के ऊपर दौड़ा परन्तु जब अमरूने चिल्लाकर चुचकारा तब वह अमरूका शब्द सुनकर खड़ा होगया और कान हिलानेलगा तब अमरूने उसका मुख चूमकर पूछा कि तुम्हारा सवार कहांहै मुझे वहां लेचलो तबवह हिनहिनाकर गढ़ेकेतरफ इशारेकरने लगा परंतु अमरूने न समझा और सर्वत्र ढूंढढांढकर बिचारा किस्याह कैतास को अपने मकानपर लेचलो और लोगों के आंसू पोछावो फिर आकर अमीरको ढूंढेंगे यह बिचारकर स्याहकैतास को लाकर लोगोंसे कहा स्याहकैतास को मैं ढूंढलायाहूं अब अमीरको भी जाकरलाताहूं यह कहकर अमरू पहाड़के नीचे चला और उस गुफाके समीप गया तो मनुष्यों की घुनघुनाहट मालूम हुई उस स्थानपर ठहर गया और थोड़ेकाल सुनकर उसके भीतरगया तो देखा कि अमीर एक तख्तपर बैठा अनेक २ प्रकारके मेवे खारहाहै जाकर अमीरके पैरोंपर गिरपड़ा अमीर ने उसका शिर उठाकर छाती से लगाया और मलका मेहरनिगार की कुशल पूछनेलगा तब अमरू ने सब वृत्तान्तकहा और हाथ बांधकर अमीर के सम्मुख खड़ा हुआ अमरू की आंखों में सुरमा सुलेमानी न था इसकारण जिन्नातनदीखपड़े और जिन्नोंने जो उसको देखातो उसके साथ हँसीकरनेलगे एक जितनेअमरूके दोनोंपांव पीछेसे खींचलिये वह मुंहभड़ा गिरपड़ा और अमरूके शिरसे एक जिन्ने ताज उतारलिया परन्तु अमरूको कुछ देखाई न देता था क्योंकि उसके नेचों में सुरमा सुलेमानी न था अमीर ने जब पूछा कि अमरू तुम नंगेशिर क्योंखड़ेहो तब अमरूने शिरपर हाथफेरा तो ताज न पाया क्रोध करके झुलझुलाने लगा तब अमीर ने जिन्नोंसे ताज दिलवाकर उसके नेचों में सुरमा सुलेमानी लगादिया तब वहभी सब जिन्नोंको देखने लगा और कहा कि भाई शहपालका पुत्र शाहरुखनेअपने वज़ीर अब्दुलरहमान जिन्नोंको किसी प्रयोजन के लिये मेरे समीप भेजाहै और उसीने मेरा घाव अच्छा कियाहै और यह मेवाआदि भी लेआयेहैं उनही के साथ ये जिन्नहैं जोतुम्हारे साथ हँसी करतेहैं यहसब वृत्तान्तकहकर अब्दुलरहमानसे मुलाक़ात करवा कर आज्ञादी कि अब तुम मक्के में जाकर हमारे कुशल का हाल सब लोगोंसे कहो परंतु हमारे यहां रहने का हाल किसीसे न कहना अमरू तो मक्के की तरफ गया और अमीर ने अब्दुलरहमान से कहाकि जो कुछतुम्हारे स्वामीने आज्ञादीहै वहअब मुझसे कहो तब उसने कहा कि यहतो आपसे पहिलेही मैं कहचुका हूं कि जब आप सातदिन के थे तो मैंने रमलसे बिचारकर बादशाहसे

कहाथाकि मक्केमें एकलड़का पैदाहुआ है वहआपको किसीसमयमें जब सब जिन्नलोग शत्रुता करके सबदेश छीनलेंगे तो वहलड़का आकर सबको मारकर आपको फिरसे उननगरों को देकर बसावेगा तब बादशाहने मेरीमारफत आपको मक्केसे मँगवायाथा और सातरोज के बादफिर बहुत जवाहर आदिसाथ करके भेजवा दियाथा और आपको देवजिन्न पक्षी आदिका दूधपिलवायाथा कि जवानीमें कोई बराबरी न करसके और आपकेपिता जिनको आपके खोजानेका दुःख था मिटायाथा सोवहीदिन आपड़ाहै इफरीतनाम जिन्नने नगर आदि सबछीन लियाहै केवल बागआराम शाहनशाह के बशमेंहै उसीमें अपनीसेना औरलड़केबालोंकेसाथ दरवाजाकिलेकाबंदकरकेपड़ेहैं और उसकोभी कहताहै कि जल्द खालीकरो इसलिये मुझे आपके समीप भेजाहै और कहाहै कि मेरीदुआ कहकर कहना कि इसपापीसे जो मेरेपिता के समयमें एकप्यादाथा और अब एकसवार होकर बहुत से लोगोंको अपने साथकरके शतरञ्जके फरजीके तौरसे टेढ़ेचलना अख्तियार कियाहै और मुझेबड़ा दुःख देरहाहै और मुझेएक स्थानमें कि आराम गुलिस्तां उसका नामहै बन्दकर रक्खाहै और उसकोभी लिया चाहताहै मैंदहिने बायें आगे पीछे कहीं हिलनहीं सक्ता जो वहलड़का मेरी सहायता न करैगा तो नक्श उलट जायगा बाजीमेरी मात होचुकीहै शत्रुने नक्शमेरा बिगाड़दियाहै और बिसात उलटने की इच्छा कियेहै और प्रसिद्धहै कि मैंहजरत सुलेमान की सन्तान मेंसेहूं औरतुम हजरत इब्राहीम की औलादहो इससे उचित है कि एकपैगम्बर की औलाद के लोग दूसरे की सहायता करैं और अपनी काबूभर उसके कार्य्यको पूर्णकरैं अमीरने कहा कि जोवह देव मुझसे मारागावे और नगर आदि छीनकर शाहनशाह को मिलजाय तो मैं चलनेको मुस्तैदहूं अब्दुलरहमानने कहा कि मैंरमल से विचार चुकाहूं और निश्चयहै कि वहआपहीके हाथसे मारागायगा और सबदेश आपहीका है और आपहीके हमलोग हैं और ईश्वर चाहेंगे तो आपहीके हाथसे सबदुःख दूर होजायगा अमरू का हाल सुनिये कि अमीरके पाससे मक्केमें आकर सबलोगोंसे अमीरकी कुशलकाहाल कहकरकहाकि जो तुमलोग आजही हमकोकुछ न देओगे तो फिरकब देओगेतबसब लोगोंने अपनीप्रसन्नतासे जिसकीजोखुशीमें आयावहदिया और हरएक मनुष्यने अपने २ स्थानपरनाचरंग करवाया फिर प्रातःकाल अमीरके समीप आया और सबहालअपनेजानेऔर प्रसन्नताका सुनाया तबअमीरने अमरूसे कहा कि भाई एकसफर थोड़ेदिनों का और शेष रहाहै देखें ईश्वर उसमें क्या करताहै अमरूने कहाकि कैसाहै तबअमीर ने जोकुछ अब्दुलरहमान से सुनाथा बयान किया अमरूने कहा

अमीर यहतू कैसाविचार करता है कि ऐसा आराम और मलका मेहरनिगार को घरमें बैठाकर बाहर जानेकी इच्छाकरता है यह बात उत्तम नहीं है अमीरने कहाकि अब उनका एहसानमेरे ऊपर है कि उन्होंने आकर दवाकी और मेराशिरअच्छा करके मेंवाखिला कर शरीरमें बलका प्रवेश कराया है तबअबदुलरहमान ने कहा कि आपको तीनदिन जाते और तीनदिन आते और एकदिन वहां पहुंच कर स्वस्थहोने में और एकदिन उसके मारने में और पीछे एकदिन विजयकी प्रसन्नतामें सब नवदिन आपको लगेंगे अमीरने कहा चाहे अठारह दिन लगें परन्तु हमचलेंगे ऐसेसमयमें आंख छिपाना और न जाना अनुचितहै अब अमरूने कहा कि आपकी खुशीहै चाहे अठारह दिनरहो चाहे उन्नीसदिन मेहरनिगार को लीजिये आप जानिये आप का काम जाने मैं तो अपनी राहलेताहूं अमीर ने कहा बहुत अच्छा जाओ मेराक़लमदान लेआवो तो मैं मेहरनिगार औरसेनाके सरदारों को पचलिखदूं कि जबतक मैं न आऊं सबतुम्हारी आज्ञामें रहें परन्तु ईश्वरके लिये बहुत आज्ञा बारबार न देतेरहियेगा और सेनापति इत्यादि अधिकारियों पर हुकूमत न रखियेगा अमरू रोताहुआ उस गुफासे निकला और मक्केकी तरफचला जिससमय मक्के में पहुंचा खाजे अबदुलमुत्तलिबने अमीरके परदे काफपर जानेका हालसुना तो अधीर होकर अमरूसे कहनेलगा कि किसी युक्तिसे अमीरकोजानेसे मना करो और किसी युक्तिसे यहांतक लावो अमरूने कहा कि मैंनेबहुत समझाया परन्तु वहनहीं मानता अबजो आपके लिखनेको मानजाय तो अति उत्तमहै खाजेअबदुल मुत्तलिबने अमीरका क़लमदानमँगवाकर एक पच लिखकर अमरूको दिया अमरू वहांसे सेनामें आकर सेनापतियों को अमीरके जानेका हाल सुनाया वेलोग सुनकर रोने पीटने लगे तब मेहरनिगार के समीप आकर अमीरके जानेका हालकहा वह पृथ्वीपर गिरपड़ी और रोनेलगी अमरूने कहा कि ऐ मलका रोने पीटनेसे कुछ न होगा इसमें कोई युक्ति करनी चाहिये जिस तरहसे खाजे अब्दुल मुत्तलिब ने पचलिखा है उसी प्रकारसे तुम भी लिखो उत्तरमें आपही साफखुलजायगा मलका ने एक पच लिखा और उसमें यहभी लिखदिया कि जोतुम जावोगे तो फिर आकर मुझको जिन्दा न पावोगे नहींतो मुझेभी साथलेते चलो अमरू उस पचको भी उस पचके साथ रखकर चुप के अमीर का क़लमदान लेकर अमीरके समीप आकर क़लमदान को रख उनदोनों पचोंको भी समीप रखदिया अमीरने प्रथम एकपच अपने पिताके नाम लिखा और फिर एकपच सेनापतियों के नामलिखा कि जिसको २ हमारी आज्ञा माननीहै वहअमरू की आज्ञामेंरहे और हमपरदे काफको

जातेहैं अति शीघही उसके कार्य्यको पूर्ण करके आते हैं और तीसरा पत्र मलका मेहरनिगारको लिखाकि मैं अठारह दिनके वास्ते जाता हूं और ईश्वर ने चाहातो इससे अधिक न ठहरूंगा शाहनशाह परदे काफने अपने सेनापति को मेरे इलाज के लिये भेजा है उसी ने आकर मुझे अच्छा कियाहै इस कारण मुझे उसके कार्य्यके लिये जाना उचित है और मेरी आज्ञा जो तुम मानती हो तो अठारह दिन तक और सबर किये बैठी रहो और पुरुष स्त्रियों को युद्ध में नहीं लिये फिरते कि मैं तुझे साथ लेचलूं और हर स्थानपर तुम्हारा डेरा भी साथ रक्खूंहां जो केवल फिरने के लिये जाता तो लेजाने में सन्देह न था और जबतक मैं न आऊं अमरू को अपना शुभचिन्तक जानना इसमें बुराई कभी न होगी और इसीकी आज्ञा पर रहना अमरू को पत्रों को देकर कहा कि इनको पहुंचा कर हमारी सला (हथियार) लादो परंतु किसी को मालूम न हो अमरू अमीर के पास से नगर में आया परंतु पत्र किसी को न दिया हथियार लेकर अमीर के पास पहुंचा अमीर अति प्रसन्न हुआ चलने की तय्यारी होने लगी हथियार बदन पर लगाया ॥

मारा जाना गुस्तहम का अमीर के हाथ से और छुटना उसका सेनाके साथ में ॥

भागमें जो लिखा होताहै वही होताहै और जिस स्थान परजिसकी मृत्यु होतीहै वह वहींपहुंच जाताहै गुस्तहमके युद्धकावृत्तांत योंहै कि जिससमय अमीर मलका मेहरनिगार और सेनाकेबहादुरोंके साथ मक्के की तरफ चले थे उसीसमय नौशेरवां ने एकपत्र उसके बुलाने के लिये लिखकर भेजाथा वह बेचारा दोमनखिलैं चलकर मदाइन में पहुंचा नौशेरवां ने नगरके लूटने और मलका के लेजाने का वृत्तान्त कहकर कहा कि आज कईदिन हुये हैं कि जोपीनकाऊस चालीस सहस्र सवार लेकर आया था उसको मैंने ऐट्याशान मलिक को तीसहजार सवार साथ करके हमजा को मारने और मेहरनिगार के लेआने को भेजा है परंतु तुम भी जाकर उन दोनों सरदारों को साथ लेकर हमजा को मारो और मेहरनिगारको लेआओ गुस्तहम तीस सहस्र सवार लेकर मक्के की ओर चला जब समीप पहुंचातो मालूम हुआ कि अमीर को जोपीनने तलवार मारीहै उसका पतानहींहै कि मरगया या जिन्दाहै पर जोपीन और गुस्तहमसे मार्गमें मुलाक़ात न हुई क्योंकि जोपीन काऊस अलगनमुरदकी तरफसे गयाथा और गुस्तहम जंगल फौजकी तरफसे चलाथा और रास्तेमें यह खबरसुनी कि थोड़ेसे मुसल्मान मक्के में बदहवास होकर पड़े हैं यह सब वृत्तांत सुनकर गुस्तहम अतिप्रसन्न हुआ और मक्केसे तीन कोसपर डेरा डालकर डंका युद्धका बजवाया और अभीतक अमीर परदेकाफ की तरफ रवाना न हुयेथे कि तबलका

शब्द उनके कानोंमें पड़ंचा अमरूसे कहा कि देखो तो भाई यह तबल कहां बजा क्या किसीकी सेनातो नहींआती अमरूने यह सुनकर बाहर निलककरदेखातो एकसेना कईसहस्र सवारोंकीदिखाईपड़ीतबलोगोंसे पूछा तो मालूमहुआ कि गुस्तहम तीसहजार सवारोंसे लड़नेकोआया है नौशेरवांने अमीरके मारने और मलका मेहरनिगारके लेजानेके वास्ते भेजाहै पहिलेतो अमरू ने क़िलेपर जाकर लोगोंको दिवालों और बुरजोंपर मुक़र्ररकिया और तीरन्दाजऔर बरकंदाजोंको अपने स्थानपर मुक़र्ररकिया तत्पश्चात् अमरूने इच्छाकी कि यह वृत्तांत अमीर को सुनाऊं कि गुस्तहम तीस हजार सवार से लेकर क़िलेपर आपड़ंचा औरलोगोंको धावाकरनेकी आज्ञादी उसीसमय कईहजार सवारोंसे क़िलेपर धावाकिया और भीतर जानेकी इच्छाकी अमरू ने वह आतशबाजी मारी कि जितने आवेथे वे सब जलगये शेष डर से भागकर सेना में चलेगये तब गुस्तहमने लौटनेका बाजा बजवाकर आज्ञादी कि आज चलो कल एक दममें सबको पराजय करके नाश करदेंगे जब हमका नहींहै तो इस छोटेसे क़िलेको लेनाकौन बड़ीबातहै और यह थोड़ीसी मुसलमानी सेना कबहमसे बिजयपासक़ीहैप्रातःकाल खड़ी सवारी चलकर सेना मुसलमानी को मार मलकाको लेकर चलेंगे अमरू ने जब उसके युद्धसे छुट्टीपाई तब जाकर अमीरसे सबवृत्तांत कहा अमीर ने आज्ञादी कि तुमचलकर डंका युद्धका बजवावो और प्रातःकाल सेना लेकर मैदानमें जमावो मैंआकर ईश्वर चाहैंगे तो बिजय करूंगा और स्याहक़ैतासको मेरेपास भेजकर सेनाको समुझा देना कि अमीरभी आतेहैं अब्दुलरहमान ने बिनयकिया कि स्याह-क़ैतासको न मँगवाइये अगर जल्द चलनाहै तो इसी तख्त परबैठकर चलिये अमीरने उसकी प्रार्थना मानली स्याह क़ैतास के खाने को मना करदिया और अमरूसे कहा अच्छा भाई तुम जाकर प्रातःकाल सेनाकोजमाकर हमारा आसरा देखते रहना ईश्वर चाहैंगातोआकर उसको यहां आनेका फल दिखलादेंगे अमरू ने क़िलें में आकर हरएकको प्रसन्न किया और कहा कि प्रातःकाल तुम लोग अमीरको देखोगे हमने जाकर सबहाल गुस्तहमका कहाहै तब अमीरने कहा कि तुम इसी समय चलकर युद्धका डंका बजवावो लड़ाईकी तैयारीकरो प्रातःकाल मैदानमें परेट जमाके हमारा इन्तिजार करना हम आकर गुस्तहमको दण्डदेंगे उसका अभिमान धूलमें मिलादेंगे बिजयकरेंगे यह कहकर कबाबचीनी और कलाबचीनी तबल सिकन्दरी बजानेकी आज्ञा देकर युद्धका सामान करनेलगा यह हाल सुनकर सब लोग अति प्रसन्न हुये हर स्थानोंपर शब्बरात और शबईद होगईरात्रिभर दोनों सेनाओंमें युद्धका डंका बजाकिया और युद्धका सामान हुआ

प्रातःकाल अमरू एक ऊंटपर सवार होकर सेनाको युद्धस्थलमें लेजाकर श्रेणीबद्ध खड़ीकरदिया उधरसे गुस्तहमकीभी सेनाआईजबगुस्तहम ने देखा तो मालूमहुवा कि अमीर नहीं है अमरू सब सामाज कर रहाहै तबतो अति प्रसन्न होकर सेनाको बाहर करनेलगा इतने में अमीरका तख्त देखपड़ा तब अमरूने अपनी सेना से कहा कि देखो अमीरका तख्त आताहै सब उसीतरफ देखनेलगे और समीप आया तो देखा कि पलथीमारे सब हथियार धारण किये हुये बैठेहैं और मुख पर बीमारीका लक्षण कुछ नहीं मालूम होता देखकर सब लोग अपने २ घोड़े परसे उतरने लगे तब बहुतसे लोगोंका पैर रिकाब में फँसकर गिरने लगे तब गुस्तहम देखकर हँसनेलगा और कुछ अपनी सेनाके सरदारों से कह रहाथा कि अमरूने कहा कि तू क्या बकता है तेरे जीवका गाहक अमीर आपहुंचा वह इधर उधर देखने लगा इतनेमें अमीरका तख्त आसमान परसे पृथ्वीपर आ उतरा तब तो वे लोग दंग होगये और कहनेलगे कि कहांका शैतान चरखा आ पहुंचा इसका तो हमने औरही कुछ हाल सुनाथा यह जीताकहां से आया इतनेमें अमीरने तख्त परसे उतरकर ललकारा कि जो आया है तो सामनेआ वहतोईर्षा औरगरूरसेभराथा आतेही अमीरकीछाती में एक बरछीमारी अमीरने वहीं छीनकर उसको जोमारी तो उसका भेजा निकलआया और पृथ्वीपर गिरके मरगया जबगुस्तहम प्यादा हुआ तो एक तलवार का वार अमीर पर किया अमीर ने अपनी तलवार पर रोंका तो उसकी तलवारके दो टुकड़े होगये और केवल क़ब्जा उसके हाथमें रहगया फिर जब अमीर ने तलवार चलाई तो गुस्तहमने अपना शिर झुकाया अमीर ने ऐसा मारा कि दो टुकड़े होगया यह देखकर सेना जो उसकी दौड़कर आई तो अब्दुलरहमान ने अपने चारसौ दूतोंको जिनको साथ लायाथा आज्ञा दी कि अब क्या देखतेहो इनको मारो तब चारसौदूत दोदो मनुष्योंको उठा कर आसमान पर उड़गये इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना गुस्तहमकी मारीगई और तीन सहस्र पहिले दिन जब गुस्तहम ने क़िलेमें आने की आज्ञा दीथी अमरू ने अतशबाजीसे जमाकर मार डालाथा सात सहस्र सेना जो तीस सहस्र सेना मेंसे शेषरहगईथी उसने अपने प्राण के डरसे गुस्तहमकी लाशको लेकर मदाइनकी राहली तत्पश्चात् अमीर ने गुस्तहम के युद्ध से विजय पाकर अब्दुलरहमान को साथ लेकर परदे काफकी तरफ यात्राकी और अपनी सेनाको उसी स्थान पर रहनेकी आज्ञादी ॥

अमीरका परदेकाफ को जाना और उसका अठारह वर्षके बाद लौटना ॥

इस वृत्तांतके लिखने वाला पचरूपी बनको इस तरह से करताहै कि

सफर बहुत दूर दराज का पेश आने और गुस्तहम को साथसेनाकेमारे जाने और अमीरका परदेकाफ के जानेका वृत्तांत यों लिखता है कि जब अमीर परदे काफकी तरफ गये तो अमरू ने जो माल और असबाब गुस्तहमकी सेनाका लूटाथा उसको कुछतो सेनाको बांट दिया और कुछ आप लेकर खाजे अब्दुलमुत्तलिबके पास जाकर पत्र का उत्तरदिया और मेहरनिगारका मेहरनिगारको और सेनाका सेनापतियों को देकर अमीरके परदेकाफ जानेकी खबर सब छोटे बड़ोंको दिया तब खाजे अब्दुलमुत्तलिबने सन्तोष किया और अमीरके लौटआनेकीदुआ मांगनेलगा और विजयका हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ तत्पश्चात् सेना ने अमरूसे कहा कि ऐ खाजे हमलोग तो सदैवसे तुमको दूसरा अमीरहमजा समझतेहैं हमलोगों को हर प्रकार से आपकी सेवकाई और आज्ञा माननी उचितहै जोआप अग्निमें कूदने को कहैं तो कूद पड़ें यह सुनकर अमरूनेसबको छातीसे लगाया और सबको प्रसन्न करके कहा कि यह क्या बातहै तुम सबअमीर के मित्रहो मुझको उचितहै कि तुम लोगों के साथ भाईकी तरह रहूं और जान देने को तैयार रहूं और सब लोग मिलकर मलका मेहरनिगार की रक्षाकरैं क्योंकि नौशेरवां ऐसा बादशाह उसके लेजानेकी इच्छा रखताहै और अब जो अमीरके परदे काफ के जानेका हाल सुनैगा तो अवश्य करके कोई युक्ति मलका के ले जानेकी करैगा तब सरदारों ने कहा कि और तो क्या जो नौशेरवां खुद एक दफा मलकामेहरनिगारके लेनेको आवेगा तो वहभी लज्जितहोकर लौट जायगा अमरूनेकहा कि मुझेइससेअधिक तुमलोगोंका भरोसाहैऔर यही पहलवानोंऔर बुद्धिमानोंकाकामहै जो ऐसा न होता तो अमीर मलका को तुम्हारे भरोसे कब करजाते यह कहकर सेनाको क़िलेमें लेजाकर क़िलेको अच्छीतरह से बनवाकर खन्दक खोदवाके पनियासोतकरवायाऔरपुलकातख्ता उठवाकर उसी फाटकपर कारचोबीका एकडेरा खड़ाकराकर उसके चारोंतरफ कुरसियां पत्थरकी बराबरसे चुनवाकर बादशाही सामानसेअधिक सामान करके मलका मेहरनिगारके समीपगया और विजयका हाल सुनाया मेहरनिगार ने कहा कि ऐ खाजे तुमको मैं पिताके समान जानतीहूं और हर प्रकारसे तुम्हारा कहना मानतीहूं अमीरने पत्र लिखाहै कि अमरूकी आज्ञा मानना और कोई कार्य बेसलाह उसके न करना ईश्वर उस सायत मुझेभी न रक्खै जिस सायत मैं तेरी आज्ञा से बाहर हूं खाजा यह सुनकर अति प्रसन्नहुआ और कहने लगा कि ऐ मलका जोकुछ मैं कहूंगा वह तेरेलिये उत्तमहोगा और अमीर ने जो लिखाहै वह इसलिये लिखाहै कि हम जाते हैं और स्त्रियोंकी बुद्धि मर्दोंकी तरह नहीं होतीहै और स्त्रियोंको युद्ध करना अच्छा

नहीं मालूम होता और आपके पितासे सुनता है कि वह आपको ले जाया चाहता है और मैं तो आपका सेवकहींहूं मेहरनिगारने कहा कि ऐ खाजे यह कौनसी बात है मैं अमीर के आगे पीछे हर समय तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूं यह सुनकर अमरू अपने चित्तमें अति प्रसन्नहुआ और छः मासकी जिंस भोजनकेवास्ते लेकर क़िलेमें रक्खी और कहनेलगा कि अब छः मास चाहे सब देशकी सेना आवे तो क़िला न छूटेगा ईश्वरकी छायामें पनाहलीहै वही हरप्रकारसे रक्षा करेगा यह कहकर सरदारों और पहलवानोंको हर स्थानोंपर स्थित करके आप बादशाही कपड़े धारणकरके शामियाने के नीचे बैठकर अमीर के आनेके दिन गिननेलगा ॥

वृत्तान्त अमीर का जो क़ाफ के मार्ग में हुआ ॥

अमीर के आश्चर्यरूपी सफर का वृत्तान्त यों लिखतेहैं कि जिससमय जिन्नोंने अमीरको तख्तपर बैठाकर उड़ाया तो इस क़दर दूर ऊपर उड़ा ले गये कि पहाड़ और क़िलेआदि भी न दिखाई देतेथे सायंकाल के समय एक बनमें तख्तको उतारा अमीरने पूछाकि यह कौन स्थान है और इसका नाम क्या है अब्दुलरहमानने कहा कि अभी यहां तक मनुष्यहीका राज्यहै औरइस बादशाहका नाम रुस्तमपुत्र जालहै और यह उसीका अखाड़ाहै अमीरने जब निमाज पढ़कर छुट्टीपाई तब उस शहरके तरफ देखनेके लिये चलागया और दो एक जिन्न भी साथ गये उसमें एक गुम्बद देखाईदिया उसके भीतर जो गये देखा कि एकसंदूक़ बन्दकिया हुआ छतमें लटका है उसको अमीरने उतारकर खोला तो देखाकि उसमेंएककमरबन्द औरएकखंजरऔरएकफलका कमानरक्खा हुआ है और पत्थर पर लिखाहै कि यह असबाब रुस्तम का है और कोई इसको नहीं लेसक्ता है केवल वह मनुष्य जो साहब क़िरां और हमारे रुतबेका जाननेवाला होगा वही इसको उतारसकेगा अमीरने उसको सहजमें लिया और अतिप्रसन्नहोकर अब्दुलरहमान के पास आया उसको वह असबाब और तख्तीदिखाई उसने कहाकि आपको सफल हो यहसगुन अतिउत्तम अकस्मात् से मिलाहै उसदिन उसी स्थानपर वासकिया दूसरेदिन सबेरेचलकर एक मुक़ामपर आउतरे तो देखा कि एक दीवार लोहे की बहुत पुरानी कोसों तक खड़ी है और उसके दरवाज़ेका कहीं पता नहीं मिलता है मनुष्य क्या जानवरों की भी वहांतक पहुंचनहींथी आज्ञा दी कि दरवाजा तलाश कियाजावे जिन्नों ने ढूंढ़कर दरवाजे का पतालगाया अमीर उसके भीतर गये तो देखाकि सब घासआदिक उपजी है और एकगुम्बद है उसमें एक साधु बैठा पूजाकररहाहै उसने अमीरको देखकर नमस्कारकिया और कहा कि ऐ अमीर दो वर्ष से आप के आसरे में बैठाहूं अमीर ने भी सलाम

करके पूछा कि आपने मुझेकिसतरह जाना और क्योंकर पहिचाना कि साहब क़िरांहै उस साधूने कहा कि मैंने सुनाथा कि यह सरहद क़ाफ़ काहै यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एकमनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपा से मैंने आपको देखा और केवल इतनीही विनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान कराकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यहकहकर मंचपढ़कर प्राणको त्यागकर दिया यहदेखकर अमीरको आश्चर्य्य हुआ उसकीआज्ञानुसार उसकी मिट्टी स्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख्तपर सवार हुये एकरात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक बनमें उतरे अमीर ने अब्दुलरहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतरने का क्या कारण है अब्दुलरहमान ने कहा कि इस स्थानपर इसलिये उतरते हैं कि यहांसे थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को जो इसमार्ग से आते हैं देख कर मार डालता है और जिसको नहीं देखता वह बच कर निकल जाता है इसकारण मैं यहां उतराहूं कि आधी रात्रि को निस्सन्देह निकल चलेंगे कि उससे बचकर चलेजायंगे अमीर ने कहा कि हमको उसके स्थान पर लेचलो कि हमभी उसे देख लेवें और जो बन पड़ेगा तो उसको मारकर लोगों को आराम देवेंगे अब्दुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान देवहै वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बतावो कि वह जिन्नहै यामार्ग का डाकू केवल बलवान है अब्दुलरहमान ने कहा जिन्नके आगे राहदार क्या चीज़है वह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिन्नको मारने केलिये तो तुम हमको लिये जाते हो और इसके मारने को मना करते हो तब अब्दुलरहमानने माकूल होकर कहा कि एक बला इस राहमें और भी है जिसके डरसे कोई इस स्थान पर नहीं ठहरता अमीरने कहा कि वह क्या है उसका क्या नाम है उसने कहा एक व्याघ्र है बड़ा लागन है अमीर व्याघ्र का नाम सुनकर अति प्रसन्न हुआ और उसी दम चला व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनीमांदसे बाहरनिकलकर चारों तरफ देखन लगा अमीरने देखा तो साठहाथ का लंबाथा अति बलवान हज़ार व्याघों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो वह गर्जता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी कि साफ़ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिर पड़ा जिन्न अमीरके बलको देखकर दंग होगये अब्दुलरहमान ने अमीर के क़दमों को चूम लिया और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राहली अमीर तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा नहो कि मेरी जान के डरसे राह काटकर चलीजायं और उसके स्थान पर न लेचलें इतने में

प्रातःकाल होते उसके स्थानपर जापहुंचे परन्तु जिन्नोंके शरीर म फफोले पड़गये पैरफूलगये उसके डरसे उसके स्थानके समीप तख्त को रखकर सबजिन्न इधर उधर छिपगये अमीर तख्त परसे उतरकर राइदार की तलाशमें चले राइदार का हालसुनिये कि वहतीनसौ देवोंके साथ उसस्थानपर रहताथा और सदैव हाल मंगवाया करता था कि शाहनशाह परदेक़ाफ किसविचारमें है उसीतरहसे एक दिन एकदेवने आकर हालदिया कि शाहनशाह ने अब्दुल रहमान को मनुष्यके लानेके लिये दुनियामें भेजाहै सुनाहै कि वहबड़ा बलवान पहलवान और बहादुर है वहआकर क़ाफके देवोंको मारकर फिर शाहनशाह क़ाफको राज्य दिलवादेगा उसीदिनसे वह राइदार घातमें दिनरात बैठारहताथा संयोगसे उससमयभी बैठाहुआ देख रहाथा कि अमीर को देखा तोजाना कि वहआदमी आयाहै और यहउसका साथीहै उसीसमय एकदेव को आज्ञादी कि जाकर उस मनुष्यको जीता मेरेपास लावो देवजो अमीरके पास आया हाथ बढ़ाकर चाहा कि अमीरको उठाकर राइदारके समीप पहुंचावे अमीरने उसका हाथ पकड़कर एक झिटका दिया तोवह घुटनोंकेबल बैठगया तबअमीरने एकघूसा उसके शिरपर ऐसामारा किमग़ज उसकी गरदनमें घुसगया और वहमरगया राइदारने यहदेखकर जाना कि निश्चय करके यहवही मनुष्यहै जिसे अब्दुलरहमान लेने गयाथा यह विचारकर तीनसौ देवों समेत अमीरके ऊपर आया अमीरनेइससोरसे ईश्वरका नाम पुकारा कि सबबनकाबन हिलगया जिन्नोंका दमसा निकल गया राइदार अपने तीनसौ देवलेकर अलग खड़ाहुआ और एकतरफ जाकर युद्धकरनेको आरूढ़हुआ अमीरने जो देखा कि एक बलाखम्बी करीब तीनसौगजकेथी और पचास २ हाथके समान दृच्छकी दोडालियां ऐसी शिरपरहैं और बड़ाभारी मुख जिससे लार निकल रहीहै और नेचलालहोरहेहैं पलकें साहीके कांटा की तरह खड़ीहैं नाकएक ताबूतके समान नेचोंकेनीचे ओठोंके ऊपर रक्खीहै कमरमें शेरोंकी खालकसी हुईहै उसपरपूछ अपनी लपेटे जंजीरेंकेबल सोनेकी अपने हाथपैर गलेमेंडालेहुयेअमीरकेसामनेआकरकहनेलगा वे (स्याह शिरदाम्त सपेद) तूनेमेरे देवकोक्योंमारासुझसेकुछडरानहींअबतू किस तरह मुझसेबचकरजायगा यहकहकरएकतलवारअमीरकेशिरपर चलाई अमीरने उसकोरोका एकखञ्जर रुस्तमका ऐसेजोरसे उसके पहलूमें मारा कि दूसरे पहलूकी तरफसे वहखञ्जर निकलगया उसने एकही वारमें दांत निकाल दिये अमीरने खञ्जर निकालकर मियानमें किया तलवार निकालकर और जोतीनसौ देवखड़ेथे उनपर दौड़े और जिस पर एकवार चलाई वहफिर न उठा अब्दुल रहमानने जाकर जिन्नोंसे

करके पूछा कि आपने मुझेकिसतरह जाना और क्योंकर पहिचाना कि साहब क़िरांहै उस साधूने कहा कि मैंने सुनाथा कि यह सरहद क़ाफ़ काहै यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एकमनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपा से मैंने आपको देखा और केवल इतनीही विनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान कराकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यहकहकर मंचपढ़कर प्राणको त्यागकर दिया यहदेखकर अमीरको आश्चर्य हुआ उसकीआज्ञानुसार उसकी मिट्टी स्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख्तपर सवार हुये एकरात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक बनमें उतरे अमीर ने अब्दुलरहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतरने का क्या कारण है अब्दुलरहमान ने कहा कि इस स्थानपर इसलिये उतरते हैं कि यहांसे थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को जो इसमार्ग से आते हैं देख कर मार डालता है और जिसको नहीं देखता वह बच कर निकल जाता है इसकारण मैं यहां उतराहूं कि आधी रात्रि को निस्सन्देह निकल चलेंगे कि उससे बचकर चलेजायंगे अमीर ने कहा कि हमको उसके स्थान पर लेचलो कि हमभी उसे देख लेवें और जो बन पड़ेगा तो उसको मारकर लोगों को आराम देवेंगे अब्दुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान देवहै वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बतावो कि वह जिन्नहै यामार्ग का डाकू केवल बलवान है अब्दुलरहमान ने कहा जिन्नके आगे राहदार क्या चीजहै वह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिन्नको मारने केलिये तो तुम हमको लिये जाते हो और इसके मारने को मना करते हो तब अब्दुलरहमानने माकूल होकर कहा कि एक बला इस राहमें और भी जिसके डरसे कोई इस स्थान पर नहीं ठहरता अमीरने कहा कि वह क्या है उसका क्या नाम है उसने कहा एक व्याघ्र है बड़ा लागन अमीर व्याघ्र का नाम सुनकर अति प्रसन्न हुआ और उसी दम चा व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनीमांदसे बाहरनिकलकर चारों त फ़ देखन लगा अमीरने देखा तो साठहाथ का लंबाथा अति बलव हज़ार व्याघों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो गर्जता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी साफ़ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिर पड़ा जिन्न अमीरके बल देखकर दंग होगये अब्दुलरहमान ने अमीर के क़ब्जे को चूम लि और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राह ली तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा नहो वि डरसे राह काटकर चलेजायं और उसके स्थान पर न

प्रातःकाल होते उसके स्थानपर आपहुंचे परन्तु [illegible] समीप
फफोले पड़गये पैरफूलगये उसके डरसे उसके [illegible] अमीर
को रखकर सबजिन्न इधर उधर छिपगये अमीर [illegible] प्रशंसा
राहदार की तलाशमें चले राहदार का हालमालूम [illegible] ान को
देवोंके साथ उसस्थानपर रहताथा और सदैव [illegible] मीरको
था कि शाहनशाह परदेक्राफ किसविचारमें है [illegible] ाह सुले-
दिन एकदेवने आकर हालदिया कि शाहनशाह [illegible] ौर जवा-
को मनुष्यके लानेके लिये दुनियामें भेजाहै मगर [illegible] ड़े पोशाक
पहलवान और बहादुर है वहआकर क्राफके [illegible] रताकोदेख
शाहनशाह क्राफको राज्य दिलवादेगा [illegible] कि अमीर
घातमें दिनरात बैठारहताथा संयोगसे [illegible] शिर झुकाये
रहाथा कि अमीर को देखा तोजाना कि [illegible] क्राफके अंगूर
वहउसका साथीहै उसीसमय एकदेव [illegible] शराब न आवे
उस मनुष्यको जीता मेरेपास लावो देवों [illegible]
बढ़ाकर चाहा कि अमीरको उठाकर [illegible] सुनना और
अमीरने उसका हाथ पकड़कर एक [illegible]
बैठगया तबअमीरने एकघूसा उसके शिर [illegible] नौशेरवां जोपीन
सरदनमें घुसगया और वहमरगया [illegible] किइतनेमें गुस्तहमकी
निश्चय करके यहबड़ी मनुष्यहै जिसे [illegible] हमजा का उसे कहा
विचारकर तीनसौ देवों समेत अमीरके [illegible] युद्ध के लिये आरूढ़
शिखरका नाम पुकारा कि सबजनका [illegible] आकर उतरा हमजा
निकल गया राहदार अपने तीनसौ [illegible] से किसी ने उठा कर
एकतरफ जाकर युद्धकरनेको [illegible] ऐसे निशाने मारे कि
चलालम्बी करीब तीनसौगजकेथे [illegible] और इसी प्रकार से
डालियां ऐसी शिरपरहैं और [illegible] ाले दृष्ट न पड़े इस
हाहै और नेचलालकोरहैं [illegible] सब वृत्तांत उससे
एकएक ताड़तके समान नेजे [illegible] का बयान कियाकि
कीको खालकरी हुईहै उसपर [illegible] पनी सहायता के लिये
हाथपैर मलेमेंडालेहुयेहैं [illegible] के बुलाने के लिये आये हैं
दान्त सपेट तनेमेरे टेक [illegible] हमजा जो अठारह दिन
मुखमेंबचकरआवेगा [illegible] वहां रहेगा और काफ़ को
उसकोरोका [illegible] और कोई जिन्न उससे न
कि दूसरे पहलवान [illegible] प्रसन्नहुआ कि अठारह वर्ष
दांत निकाल [illegible] हमजा किसी जिन्नसे मारा
निकालकर [illegible] बदला लेना चाहिये यह
कवार [illegible] उसकी सेना के सरदारों

कहा कि अबतो राहदारमारागया और किसीका डरनहीं है अबचल कर अमीरकी सहायता करनी चाहिये जितने जिन्नथे देवोंपर कूदपड़े और खूबजी खोलकर लड़े बहुतसे देवतो मारेगये थोड़ेसे बचकर भाग गये अमीरने उनकापीछा न किया और उसीदम अब्दुलरहमान को लेकर उसके मकान परगया तो वहां बहुतसा जवाहर और अनेक २ प्रकारके असबाब देखकर अमरूको यादकिया कि अफसोस इससमय अमरू न हुआ और अब्दुलरहमान से कहा कि यहसब माल मलिक ग्रहपालका है उससे मुझेकुछ कामनहीं है इसको उठवाकर अपने ग्राहके समीप पहुंचावो कि उसका चित्त अपने मालको देखकर प्रसन्न हो जितने जिन्नथे अमीरकी बहादुरी औरहौसलेकीबड़ीप्रशंसाकी कि इसकदर मालको अपने हाथसे खोताहै राहदारका शिर चारजिन्नोंसे उठवाकर अमीर अपने तख्तपर सवार होकरचले और जिस समय क्लिेके समीप पहुंचे सुलासल जिन्नी चालीससहस्रलेकरसवारअमीरकी अगवानीके लिये आया और क्लिेमें जाकर ग्राहनी दावतका सामान अमीरको दिया दूसरेदिन अमीर सुलासलजिन्नीकोभीसाथलेकरगुलिस्तान आरामकी तरफ रवानाहुये लिखने वाला लिखताहै कि ग्रहपाल अमीरके आनेका हालसुनकर फूलकी तरह फूलगयाऔर आह्लादीकि सामान ग्राहनग्राही तैयारहो हमहमशा को अगवानी लेनेके वास्ते जायंगे अति शीघ्रही सामान ग्राही तैयारहुआ ग्राहनग्राहक्राफ बड़ेधूम धामसे अमीरकी पेशवाईके लियेचले अमीरका हाल सुनिये कि दाहिने बांयेतो अब्दुलरहमान और सुलासिलके तख्तथे और बीच में साहब किरांबातें करतेचले आतेथे कि सामनेसे सैकड़ों तख्त जिन्न परियां नाचतीं और गातीं जिन्नको देखकर मनुष्य मोहित होजाय दिखाईपड़े तख्त पश्चात् सैकड़ों तख्तोंपर हजारों परीजातके मनुष्यजिनकेकोमल शरीर और स्वभावको देखकर प्रेतलगेहुये मनुष्यों समान बेहोश होजावे और किसीके हाथोंमें गुलदस्ते ग्रहपालके गिरदा गिरद दिखाई दिये देखनेवालोंकोबड़ाआश्चर्यहुआबनसबखुशबूसेभरगयाथा अब्दुलरहमान और सुनासल जिन्नीने दूरसे देखकर अमीरसे कहा कि ग्राहनग्राह आपकी पेशवाई के लिये आतेहैं क्या आज्ञाहै जबतख्त समीप पहुंचा तख्तको पृथ्वीपर रखवाया और ग्रहपालने भी परीजादोंसे कहा कि हमारा तख्त साहब किरांके समीपरक्खो साहबकिरांनेतख्तपरसेउतर कर ग्रहपालको चूमा ग्राहनग्राहने भी खूबछाती से लगाया और मुखचूम करकहा कि हमने आपको बड़ादुःख दिया परन्तु यहप्रसिद्ध है कि बड़ेही मनुष्य बड़ोंका कामकरतेहैं अमीरने कहा यह कौन बड़ी बातहै जोमेरा प्राणजाताहो और आपकाकार्यहो तो मैं देने को तैयारहूं और उस में मेरीबड़ी प्रतिष्ठा होगी यहकहकर राहदारका

शिर और सब माल जो उसका ले आया था शाहनशाह के समीप रखदिया शाहनशाह अमीर से बहुत प्रसन्न हुये और सब लोग अमीर के बल और बहादुरी पर आश्चर्य करने लगे और अति प्रशंसा आपसमें करने लगे शाहनशाह ने उसीस्थान पर अब्दुल रहमान को खिलअत देकर उसका ओहदादूना करदिया फिर अपनेसाथअमीरको तख्तपर बैठाकर गुलिस्तान दूरमें पड़े अमीरको बारगाह सुलेमानीमें उतार कर एक जवाहिर लगेहुये तख्तपर बैठाया और जवाहिरआदि लाकर अमीरके सामनेरक्खा और परियोंको जोड़े पोशाक पहिनाकर खड़ा करवाया और अमीरका स्वरूप और सुन्दरताकोदेख कर प्रशंसा करने लगे और शाहनशाह का यह हाल था कि अमीर की तरफ देखनेके सिवा और कुछ न करता था और अमीर शिर झुकाये हुये बैठा था शाहनशाहने जब अमीरको चुप देखा तो क़ाफके अंगूर की शराब मँगवाने की आज्ञा देकर कहा कि जब तक शराब न आवे तबतक राकिम परदे दुनिया का हाल लिखा सुनावे ॥

नौशेरवां का अमीर के कोह क़ाफ की तरफ़ जाने का हालसुनना और उसका सेना भेजना मक्के को ॥

अब्बारनबीस लोग इस तरह बयान करतेहैं कि नौशेरवां जोपीन और अब्बासका वृत्तान्तसुनकर अतिव्याकुलहोयाकिइतनेमें गुस्तहमकी भी लाश आई और हमराहियों ने सब वृत्तान्त हमज़ा का उसे कहा कि जिस समय गुस्तहमने अपनी सेनाको लेजाकर युद्ध के लिये आरूढ़ किया उसी समय हमज़ा का तख्त आसमान से आकर उतरा हमज़ा ने तो गुस्तहम को मारा और सवारों को पृथ्वी से किसी ने उठा कर आसमान पर ले जाकर वहीं से ताक २ के ऐसे निशाने मारे कि जो सेना पृथ्वी पर थी वह भी दब २ कर मरगई और इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना मारी गई परन्तु उसके मारने वाले दृष्ट न पड़े इस वृत्तान्त को सुनकर बुजुरुजमेहर को बुलाकर यह सब वृत्तांत उससे पूछाउसने रमल से विचार कर सबवृत्तांत परदेकाफ़ का बयान कियाकि शहपाल शाहनशाह परदेकाफ़ ने अमीर को अपनी सहायता के लिये बुलाया है और उन्हीं जिन्नों ने जो अमीरके बुलाने के लिये आये हैं गुस्तहम के सवारों को मारा है और हमज़ा जो अठारह दिन के लिये गयाहै परंतु अठारह वर्ष तक वहां रहेगा और काफ़ के जिन्नों को नाश कर पृथ्वी पर आवेगा और कोई जिन्न उससे न जीतेगा यह वृत्तांत सुनकर नौशेरवां अति प्रसन्नहुआ कि अठारह वर्ष तक कौन जीता और मरताहै अवश्य करके हमज़ा किसी जिन्नसे मारा जावेगा इस समय में मुसलमानों से अपना बदला लेना चाहिये यह विचार कर बीलम और क़ीलम को जो कि उसकी सेना के सरदारों

में अति बलवान और बहादुर थे तीस सहस्र सवार देकर मक्केकी तरफ भेजा और कहा कि इस समय हमजा काफ़ की तरफ गया है और मैदान खाली है तुमलोग जाकर जिसतरह से उचित हो मक्के को वैरान करके मलका मेहरनिगार को मेरे सन्मुख लाओ तब वे दोनों सरदार बादशाह से बिदा होकर चले अब अमरू का वृत्तांत सुनिये कि जब अठारह दिन व्यतीत होगये और अमीर न आये तो बेहोश होकर रोते २ मलका मेहरनिगार के पास गया तो उसको भी बेताब देखा तब वह अमरू से कहने लगी क्यों अमरू बाबा अमीर तो अभीतक न आये अब उनका स्नेह मुझे अति व्याकुल कर रहा है और नहीं मालूमकि उनपर क्या २ दुःख पड़ते होंगे और मुझे सिवाय विष खाकर मरजाने के और कुछ नहीं सूझता और अबमैं मरजाती हूं जिस स्थान पर तुम्हारी इच्छाहो वहां गाड़देना तब खाजे ने कहा ऐ मलका तू यह क्या विचार करती है कोई जुदाई में विष खाकर मरजाता है और हरएक प्रकार से उसको समझा कर कहा कि अब मैं अमीर का वृत्तांत पूछनेके लिये मदाइन को जाताहूं बुजुरुच्चमेहरसे विचरवाकर जल्द आताहूं आप अपने मनमें ऐसा विचार न कीजिये मलका को समझाकर मुक़बिलके समीप आया और उससे कहा कि मैंतो बुजुरुच्चमेहर से अमीर का हाल विचराने के लिये मदाइन को जाताहूं और तुम अपने चालीस सहस्र तीरन्दाजों को लेकर मलका की रक्षा करना और क़िलेके हर स्थान पर पहलवानों को स्थितकरके रखना और आप अमरू भेष बदलकर फ़ैजजंग की मार्ग से चला थोड़े दिन में पहुंचकर एक बनिये की सूरत बनाकर बुजुरुच्चमेहर के दरवाजेपर जाकर खड़ाहुआ संयोगसे उसीसमय वेभी दरबारसेआते थे अमरूको खड़ादेखकरपूछा तू कौनहैअमरूने कहा कि आपकीजागीर का असामी हूं लोगोंने मुझे बड़ा दुःख दियाहै इसलिये तुम्हारे पास फ़िरयाद ले आयाहूं और जो आप न सुनेंगे तो बादशाह के पास जाउंगा बुजुरुच्चमेहर ने उसकी अरजी को नौकर से मँगवाकर जो देखा तो मालूम हुआ कि अमरू है बैठकमें बुलवाकर गलेसे मिला कर सब वृत्तान्त पूछा अमरू ने कहा क्या कहूं बड़ी आपदा में हूं कि हमजा अठारह दिन का वादा करके गया था उससे अधिक बीतगया परन्तु अभी तक न आया मालूम नहीं हुआ और मलका मेहरनिगार विष खाने पर तैयार है खाजे ने कहा सत्यहै कि अठारह दिन का वादा करके गया था परन्तु अठारह वर्ष के पश्चात् आवेगा और सब देवों का वध करेगा उसे किसी प्रकारसे दुःख न होगा और इस समयके वृत्तान्त होने में तुमको भी बड़े २ बादशाही पहलवानों से युद्ध करना होगा परन्तु सबमें तुमारीही विजय होगी आप अति शीघ्रही मक्के में पहुंच

कर अपने क़िले का सामान करो किसीसे डरना नहीं नौशेरवां ने बीलम और क़ीलम को तीस सहस्र सवार से तुम्हारे मारने और मलका को लेआने को भेजा है अमरू ने कहा कि जो हमज़ाकी मिचता में मेरा प्राण भी जायगा तो कुछ सन्देह नहीं है यह पहले से मैं विचार चुकाहूं जहांतक होसकेगा युद्धकरूंगा और बीलम और क़ीलम तो क्या जो जमशैद और खुरशैद फिर जी उठें और मेहरनिगार का नाम मुखसे लेवे तो फिरसे गाड़े जावें और इसपर क़ाबू न पावें परंतु आप एक पत्र मलका मेहरनिगार को लिखदेवें कि उनको तसल्ली हो और मेरे कहने पर रहें बुज़ुरुज्ञमेहर ने क़लमदान मँगवा कर एक पत्र जिसमें सब वृत्तान्त अमीरके अठारह वर्षके बाद आनेका और तसल्ली मलका को देनेकेलिये लिखकर अमरू को दिया वह उस पत्र को लेकर फ़ौज मंगल के मार्गसे मक्के में अति शीघ्र मंजिलें तै करके पहुंचा जब मलका मेहरनिगारने उसपत्रको पढ़ा तो रोनेलगी और कहने लगी कि किस तरह से अठारह वर्ष बीतेंगे अमरू ने हरप्रकार से मेहरनिगार को समझाया और कहा कि ये अठारह वर्ष अठारह दिन के समान बीतेंगे और साथ कुशल आनन्द के आते हैं तुम बैठ कर ईश्वरका भजनकरो और हमज़ाकी कुशल के लिये वरमांगो अपने दिल को स्वस्थ कीजिये ईश्वर हमज़ा को एक दिन लाकर आपसे मिलावेगा अमरू ने मेहरनिगार के समझाने के पश्चात् सेनामें आकर सब सेनापतियों और सिपाहियों से कहा कि अमीर अठारह वर्ष तक न आवेंगे बुज़ुरुज्ञमेहरने रमलसे विचार कर मुझसे कहा है सो जिसको जाना हो वह अपने घर अभीसे जाये और जिसको रहना हो वह हमारे भाई के समान हमारे साथ रहे और मलका की रक्षा करै तब सब सेनापति और सिपाहियों ने कहा कि हम लोग जब तक प्राण रहेगा हमज़ा को छोड़ कर कहीं न जायंगे और अब आप हमज़ा के स्थानापन्न हैं आप की आज्ञानुसार होकर रहेंगे और आपको छोड़ कर कहां जावें ये बातें अमरू सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सबको छाती से लगा कर कहने लगा कि तुम लोग सब हमारे भाई हो जब हमज़ा आवेगा तुम लोगों के साथ अति प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होगा और हर एकके ओहदे बढ़ावेगा यह कहकर सब पहलवानोंको क़िले की दीवारों पर स्थित करके रक्षा करनेकी आज्ञादी आप शामियाने पर आकर शाहाना पोशाक पहिन कर जड़ाऊ कुरसी पर बैठ कर उन दोनों का आसरा देखने लगा कि थोड़ेही समय पर क़िले के सामने एक गरद उड़ती हुई मालूम हुई और थोड़ेही समय पर बहुत से बीर बलवान शस्त्र धारण किये हुये दिखाई दिये अमरू ने जाना कि बीलम और क़ीलम यही हैं उन बेवकूफोंने आतेहीसेना

को क़िले के घेरने की आज्ञादी कि मुसल्मानों को मार कर मलका मेहरनिगार का निकाल ले आवो कि उसके बदले में ख़िलअ़त और पारितोषिक प्राप्त करके अति शीघ्रही मलकाको साथ लेकर मदायन में पहुंचें और जाकर बादशाह से अपना ओहदा बढ़वावें सवारों ने उसकी आज्ञा से घोड़ोंको दौड़ाकर क़िलेके समीप पहुंचाया जब क़िले की दीवार पर चढ़ आये तब अमरूने ऐसी आतशबाज़ी कि दृष्टि की कि जो आगे बढ़े थे उनको उस आगमें जलादिया और जो पीछे थे उन्होंने मारे डरके आगे को पैर न दिया बीलम और क़ीलम ने जो देखा कि दिन व्यतीत होआया है और सेनाभी घबड़ाईहै डंका लौट आनेका बजवाया और क़िलेके समीपसे हटकर डेरालिया और अपनी रक्षा के लिये सेना को चौंद घूमने की आज्ञा दी अब अमरू का हाल सुनिये कि वह जिस समय से अमीर परदेक़ाफ को गयेथे उसी समयसे मलकाके साथ भोजन करताथा और उसको रोज़ समझाता था शामके समय भोजन करने के लिये और भोजन करने के पश्चात् दो पहरतक हाज़िर रहता और मलका के समझाने के पश्चात् उठकर सरहंग मिस्री को बुलाकर आज्ञादी कि तुम मंज़रशाह यमनी की बेटी ज़ुमायूं ताजदारको जाकर लेआवो और इस कार्य्यके पूर्णकरने में बड़ी युक्ति करो कि वह और शहर मिस्री दोनों मलकाके समीप हर समय मौजूद रहकर दिल बहलावें और हरसमय हंसीकी बातें करतीरहें यहकहकर अपने महल में जाकर चैनसे सोरहा जबप्रातः-कालहुआ तो अपनी आवश्यक कृत्यसे निवृत्त होकर सबको अपने कार्य्यके लिये आज्ञादी और शामियाने के नीचे कुरसीपर शाहाना पोशाक धारण करके बैठा और हरएक मनुष्य उसकी आज्ञाके अनुसार कार्य्य करनेलगे इतनेमें बीलम और क़ीलम सिपाह लेकर क़िलेपर आपहुंचे और सेनाको भीतर जानेकी आज्ञादी तब अमरूने पहिले दिनकीतरहआतशबाज़ीपत्थरईंटतीरआदिक क़िलेपर से मारने शुरूकिये तोसेना बेहोश होकर लौटपड़ी बीलम और क़ीलम ने सेनाको ललकारा और जोभागे जातेथे उनको पुकारा कि आगे क़दम बढ़ाकर पीछे न हटाना चाहिये भागना नामर्दों का काम है और बहादुर और दिलावरों का लड़नेमें नामहै तबसेनाने फिरसे चढ़ाई की परन्तु आतशबाज़ी से आगे न बढ़सकी तबबीलम और क़ीलमने जबांमरदी करके अपने घोड़ेको कुदाकर क़िलेकी दीवार पर पहुंचाया सेनाने देखा कि सरदार हमारी दीवारपर खड़े हैं लज्जित होकर आपसमें सलाह करके घोड़ेको बढ़ाकर अपने सरदारों के पास पहुंचे तबअमरूने विचारा कि यहबात तो अच्छी न हुई कि शत्रु आपहुंचा तो अति शीघ्रही एकगोला दीवार तेलका भराहुआ

आगलगाकर तीनचक्कर देकर बीलमकी छाती पर मारा वह छाती पर लगकर फूटगया तो तमाम बदन जलने लगा तब हाथों से बुझाने लगे तो अंगुलियांभी बत्तीकीतरह जलनेलगीं और जो तेलकी छींटें दाढ़ी पर पड़ीं तो रुईकी तरह जलगईं और जब मुखपर हाथफेरा तो मोछें भी जलगईं जब कीलमने देखा कि बीलम जलताहै उसे कुछ और न बनपड़ी आकर हाथसे बुझाने लगा तो उसकाभी हाल वैसाही हुआ वहभी अतिक्लेश में पड़ा और दोनों भाई लोटन कबूतरकी तरह लोटने लगे सेना ने देखा कि सेनाके सरदार जले जातेहैं दौड़कर मिट्टी उड़ाने लगे इस युक्तिसे वह अग्नि बुझाई वे दोनों फुरसत पाकर डेरेकी तरफ भागे और जाकर इलाज करने लगे युद्धका सामान भूलगये अमरू चैनसे फिर कुरसी शामियाने पर डालकर बैठा जब दो घड़ी दिन बाक़ीरहा अमरू को अपने भेषका बिचार आया कुरसी से उठकर भेषकी पोशाक पहिनकर नौशेरवांके अय्यारकी सूरत बना कर बीलम और कीलम के डेरे में चला गया और बीलम और कीलमसे मुलाक़ात करके प्रीतियुक्त बातें करने लगा वे दोनों रोने लगे कि देखो भाई अमरू ने हम लोगोंका यह स्वरूप बनाया है उसके हाथसे हम लोगों को बड़ा दुःख प्राप्तहुआ आतिश बोला कि सुनो साहब अय्यार पर अय्यार जबरदस्तहोताहै नकिसिपाहीअय्यारसेबरा बरी करे आप जानतेहैं कि अमरू कैसा अय्यारहै कि आज पृथ्वी पर अपनी बराबर दूसरे को नहीं जानताहै इसी कारण से बादशाह ने मुझे तुम्हारी रक्षाको भेजाहै परन्तु तुम लोगोंने शीघ्रता कीहै कि मुझे न आने दिया जल्दी करके अपना कार्य्य ख़राब किया अच्छा जोहुआ सो हुआ अब देखो अमरूको कैसा मैं बनाताहूं जो तुम्हारेसाथ उसने ऐसा कियाहै उसका मज़ा उसे कैसा चखाताहूं तो वे दोनों दरदसे आह करनेलगे आतिश ने कहा कि इससमय दो चार पियाले अंगूर की शराबके पीजिये कि बलभी हो और दरद दूर होजावे उनदोनोंने कहा कि भला तुमसे बढ़कर कौन पिलाने वालाहै जो यही उत्तम हो दो चार प्याले पीलेंगे अमरू तो यह चाहताहीथा अतिहीघही गिलास और सुराही हाथमें लेकर दो २ गिलास बिष मिलीहुई शराब सबको पिलाई तीसरे दौरे में दो २ चार २ प्याले पीकर लोट पोट होगये सारा होश और हवास खो बैठे अमरूने बाहर आकर सब शागिर्द पेशोंको शराबदी और उनकी भी युक्ति अच्छी तरहसेकी जब हर तरहसे इतमीनान हो चुका तो प्रथमतो सबके वस्त्र उतार लिये और जितना असबाब उस डेरेमेंथा फरश तक उठाकर रखलिया और सब-की एक तरफकी दाढ़ी बनाकर दूसरी तरफ घुंघरूबांधा और गाल में एक तरफ चूने काजलके टीके देदिये और दूसरी तरफ काजल लगा

दिया तब उलटा करके खंभेमें बांधकर एक रुक्का लिखकर कि मैं अमरू था आजतो तुम लोगोंका प्राण छोड़ जाताहूं केवल दुःखही दियाहै उत्तमहोगा कि तुम कूच करके चलेजावो अपना कारखाना यहांसेहटा लेजावो नहींतो अबकी दफा प्राणभी न छोड़ूंगा बेलम के गले में बांध कर अपना रास्ता लिया क़िलेमें आकर पोशाक उतार करभोजन किया और आरामसे सोरहा अपने कार्य्य से छुट्टीपाई जब प्रातःकाल हुआ सब सरदार बेलम और क़ेलम के सलामको आये तो सब नंगे पांवये उस हालतको देखकर कोई मुखसे न बोलताथा सबलज्जा के मारे चुप होरहे अन्तको सबका मुख हाथ धोलाकर अपने पास से कपड़ा मँगवाकर दिया और पत्र जो बेलमके गलेमें बांधा था खोलकर पढ़ा तो मालूम हुवा कि आतिश नथा वह अमरूथा बेलम और केलम लज्जित होकर मुख बन्द करके मदाइनकी तरफ कूच करके भागे और उसी हालसे बादशाह के सामने आकर रोने लगे॥

भेजना नौशेरवांका हरमर पुत्र अकबर अमरूके बध करनेको॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जबबेलम और केलम घायलऔर लज्जित होकर मदाइनको चले तब अमरूने छः महीनेकेभोजनकेलिये जिन्समोल लेकर क़िलेमें रखवाली और युद्धका सामान इकट्ठाकरके बैठा बेलम का वृत्तांत सुनिये कि वेदोनोंगिरते पड़तेथोड़े दिनकेपश्चात् मदाइनमें पहुंचेऔरनौशेरवांकोअपनी सूरतखराबदिखलाकरअमरूकी शिकायत करनेलगेबादशाहउनकारूपदेखकरहँसनेलगे और कहा कि अमरू अति दुष्ट मनुष्यहै देखो किसयुक्तिसे वह पकड़ा जाताहै औरहमारीसेना क्या युक्तिकरतीहै यहकहकर हरमरकोबुलाया और आज्ञादी कि तुममक्के को जाकर अमरूको मारो और मलका मेहरनिगारको हमारे सम्मुख लावो और हरप्रकारसे समझाया कि ऐसायुद्ध बादशाहोंऔर शाहज़ादोंके पुण्य और प्रतापसे विजयपायाहै और सरदारोंने अपने नाम और निशानकेलिये बड़ी २ आपदा उठाईहैं इस प्रकार से समझा कर चालीस सहस्र सवार और बहुतसे पहलवान और बख्तियार के पुत्र बख्तक कोभी साथकरके सब लोगोंसे जानदेनेका इकरार करा कर भेजा जब तक येलोग मक्के में पहुंचें तबतक थोड़ासा वृत्तांत अमरू का सुनाताहूं कि एक दिन अमरूने बिचारा कि बहुत दिन हुये भेष का मज़ा नहीं उठाया लिबास शाहाना उतारकर बहुरूपी पोशाक पहिनकर मदाइन की तरफ चला बीसबाइस कोस गयाथा कि एक बवण्डल दिखाईपड़ा तो बिचार किया कि इसमें अवश्य कोई सेना होगी तो एक भिश्ती का भेष धरकर एक मशक लेकर उसी ओर चला समीप पहुंचकर देखा कि हरमर ताजियेदार एक बड़ीभारी सेना साथलिये चला आताहै जिसके धूम धामसे पृथ्वी कांप रहीहै

परंतु प्यासके मारे किसीके मुखसे बातनहीं निकलती है सबका प्राण प्याससे निकल रहाहै जबउनलोगोंने भिश्तीको देखा तो ऐसे प्रसन्न हुये कि मानो ईश्वर मिले नेत्रोंमें तरावट आगई एक २ जलके लिये दौड़ने लगे तब एक सरदारने कहा कि इसको पहिले शाहजादे के पास लेचलो कि वहसबसे अधिक प्यासाहै जब उसको हरमर के पास लेगये तो उसने पहिंचाना कि यहहरमर है और प्यासके कारण अति व्याकुल होरहा है अपना पराया किसीको पहिंचानता नहीं है और पृथ्वीपर पड़ाहुआ एड़ी रगड़रहा है और मुखका रंग बिगड़गया है बहुतसे मनुष्य चारतराने उसके मुखकी छायाकिये हैं और उसकी श्वास गिनरहे हैं अमरूने थोड़ीसी बूंदेंजलकी उसके मुखमें टपकाईं तो उसकेहोश और हवास ठिकानेहुयेऔर नेत्रोंको खोलदिया भिश्ती को पानीलिये देखकर अति प्रसन्न हुआ और जलपीने का इशारा किया और थोड़ेसमयके पश्चात् हाथमेंलेकर पिलाया फिरसे पिलाया जिससमय हरमर को जानमें जानआई तो उठकर बैठा और एक गिलास जलपीकर कहा कि ऐभिश्ती तूने इस समयमें ईश्वरका काम कियाहै इसमें तुझेबड़ा यशहागा और यहजल तूनेनहीं पिलाया मुझको मृत्युसे बचायाहै अच्छा अबथोड़ाजलमेरेलिये रखदे शेषहमारी सेनाको पिलादे कि वेभीजीजावेंअमरूकेपास ईश्वरकीकृपासेचाहे जितने मनुष्यपियें परंतु वहमशक भरीहीरहतीथीअमरूनेसबसेना को पिलाया और वहभरी कीभरीहीरहीइसबातपरईश्वरनेदयाकीजबसबसेनापानी पीचुकी हरमरने कईसौ अशरफ़ी इनाम देकर आज्ञादी कि तुम हमारे साथरहो और ऐसेमार्गसे मक्केको लेचलो कि राहमें जलमिले और हम मक्केको विजय करने जातेहैं जो विजय होगया तो तुमको वहां का सरदार बनावेंगे अमरू एकऐसे बनमें लेगया कि जहां मञ्जिलों तकजल न मिलसक्ताथा थोड़ीदूर जाकर हरमरसे कहनेलगा कि हे हरमरतू जो अमरूसे युद्धकरनेके लियेजाता है तोक्या बिचार कियेहै उससे तू क्योंकर जीतेगा वहएक बड़ीबला है देखना तुझेकैसी आपत्ति में डालेगा हरमर बोला हेभिश्ती अमरू एकसिपाही है देखना जो खड़ी सवारी उसे न मारलिया तो कुछ न किया भिश्ती यहसुनकर हँसाऔर कूदकर हरमरसे कहनेलगा हेहरमर तूक्या जो तेरापिता सातदेशों का शाहन्शाह है अपनी सबसेना लेकर आवे तो मेराकुछ नहींकर सक्ताहै और तूनहीं जानता कि मैंहीं अमरूहूं और इससमय तेरी सेनामें अकेलाहूं परन्तुकोईकुछनहींकरसक्तायह कहकरकूदकरहरमर के शिरका ताज लेकर चलदिया और उसको नंगेशिर करदिया तब बहुतसे सवार उसके पीछे दौड़े परन्तु किसीने उसकी गर्दतक भी न पाई सबव्याकुल होकर लौट आये और थोड़े से सवार जो बीलम

और कीलमके साथके टूटेफूटे आतेथे उन्होंने हरमरको अतिव्याकुल देख कर उनको उसबनसे निकालकर सीधीराह का पताबताया तो इसदुःख के पश्चात् चौथेदिन शामको मक्के में पहुंचे डेराडालकर युद्धका सामान करनेलगे सेनाने अपनी पंक्ति बराबरसे रक्खी राचिको जिससमय सब सरदार लोग हरमरके पास आकर बैठे तो मुसल्मानों का चरचा होने लगा हरएक सरदार अपना२ विचारकहनेलगा दजाशिरहपोशने हाथ जोड़कर विनयकिया कि हेमहाराज अमरूक्याहै और मुसल्मानी सेना क्या मालहै आपका बड़ा प्रतापहै एकदममें वे पायमाल होजायंगे जो आज्ञाहो तो इसबाणमें जो मेरेहाथमें है क़िलेका दरवाज़ा तोड़कर अपने सिपाहियोंसे सबमुसल्मानी सेना के साथ अमरूको मारकर मलका मेहरनिगार को निकाल लाऊं और आपको अपनी बहादुरी और बलवानी देखाऊं हरमर बोला कि मैंजानताहूं तुम ऐसे जवां मरद और बहादुर युद्धमें व्याघ्रके समानहो परंतु मैं कहताहूं कि सांपमरै परलाठी न टूटै यह ऊपरसे आसान भीतर कठिन है इसको बुद्धिमानी के साथसेकरो और अपनी कारवाई जगत में प्रसिद्ध करो क्योंकि एक बज़रूपियेसे युद्धकरना मेरेलिये अति लज्जा की बातहै कि एकछोटे मनुष्यसे बादशाही सामानसे युद्धकरना अति लज्जाकी बात है बख्तियारक इस बातपर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहज़ादों और बादशाहों को ऐसाहीविचार करनाचाहिये कि वे बड़े २ कार्य्य करतेहैं उनसे और कौन अधिक बुद्धिमान होसकता है और बोला कि जो आज्ञाहोतो सेवक उसको समझाकर प्रातःकाल आपके समीप लेआये और उसेअच्छे प्रकारसे सबवृत्तांत इसका समझा देवे हरमरने कहा इससे क्या उत्तमहै तूखुद बुद्धिमान और होशियार है इसी तरहसे राचितो इसी विचारमें काटी जबप्रातः कालहुआ बख्तियारक अपने खच्चरपर सवार होकर क़िले के खन्दक़पर गया देखा कि अमरू शाहानालिबास पहिनेहुये बड़ीधूमधाम से पत्थर की कुरसीपर शामियानेके नीचेबैठा है और उसके चारोंतरफ सबसरदार और नगरवासी हाथजोड़ेखड़ेहैं और हरएक मनुष्य उसकी आज्ञाका आश्रितहै और मुक़ाबिल बारह सहस्र तीरन्दाज सहित तरकश कमरमें कमान कांधेपर लगाये पीछेतैयार खड़ाहुआ है बख्तियारकने जाकर सलाम किया और कहा कि खाजे जोकिमैंतुझेअपनाबड़ाजानताहूं इसलिये मैंतुझे समझाने आयाहूं जिसमें आपको हरप्रकारसे उत्तम होगा वहयहहै कि हमज़ा क़ाफ़को गयाहै और उसका देवोंके हाथसे बच आना अनुचितहै उसके कुशलमें आनेकी कुछ आशनहीं है और तुम अच्छीतरहसे जानतेहो कि तमाम बादशाह और शहज़ादे मेहरनिगार के नामपर लोभित हैं तो कौन है कि चढ़ाई न करेगा और

इस [illegible] होगा सो इस कारण अपने को दुःख में डालना बुद्धिमानी नहीं और उत्तमहै कि मेहरनिगार को शाहज़ादे हरमर को देव और उसमें मक्केकी राजधानी लेवो अमरूबोला तूनहीं जानता कि जो नौशेरवां खुद सब अपनी सेनालेकर आवे तो भलका मेहरनिगारको नहीं लेजासक्ता और तू मेरे सामने बातें बनाने आयाहै अठारह वर्ष तो बात कहते में बीत जायँगे कौन बड़ी बातहै यह तेरी मीठी २ बातें मेरे चित्तमें कब आतीहैं और क़ाफ के देवों का क्या मजालहै कि वे अमीर को दुःखदें और उसपर ग़ालिब आवें मेरे सामने से हटजा नहींतो तलवार से मार डालूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखाऊंगा बख्तियारक की शामत जो आई कहने लगा कि देखना तेरा यह बलबला कैसा मिटाताहूं और कैसी आफत में डालताहूं जो तेरी नाकमें नकेला न लगाया तो कुछ न किया अमरूने उसकी ऐसी बातों सुनकर एक पत्थरका टुकड़ाउठाकर मारा जो दो अंगुल उसके माथेमें धँसगया तब अति शीघ्रही अपना खच्चर दौड़ाकर भागा कि ऐसा न हो कि फिर दूसराभी मारे रुधिरमें भरा हुआ हरमरके समीप आया और उसको अपनी खराब दशा दिखाई और मलहम पट्टी करनेके पश्चात् जब कुछ होश हुआतो अपनी और अमरूकी बार्त्ताका सब वृत्तांत हरमर से कहा हरमर यह हाल अमरू का सुनकर क्रोधित हुआ और गालियां देनेलगा ॥

साहब किरां (हमज़ा) के पीनेके लिये देवोंका अंगूरकी शराब लाना ॥

इस वृत्तांतको इस तरह बयान करतेहैं कि जिस समय परियोंने शराब अंगूरकी हाजिरकी तो उसी समय शहपालने एक गिलास शराब अपने हाथसे अमीरको पिलाया तो अमीरका चित्त अतिप्रसन्न हुआ उस गिलासको पीकर शहपालके तख्तको चूमा और बड़ी प्रशंसा करनेलगा तत्पश्चात् शराब अंगूरकी पिलाने वालों के हाथसे खूबअच्छी तरहसे पीकर अपने चित्तको आनन्दित किया नेत्रोंमें डोरे पड़गये और जिस समय नेत्र उठाकर देखा तो चारसौ परियां सजीहुई ऐसी दिखाई दीं कि होश हवास उनपर मोहित होकर सब भूलगये बुद्धि उनके देखनेसे दंग होगई और हर प्रकार से सभा शराब और कबाब की ऐसी बनाईथी कि जिससे बेपियेहुये मज़ा मिलताथा और अक्सर स्थानोंपर ऐसी पहलवानोंकी तसवीरें बनाईथीं कि मानो तसवीर हाथमें लिये युद्धकर रहेहैं और वृक्षोंपरपक्षी ऐसे २ बनाकर रक्खेथेकि देखनेवाले का चित्त अवश्य शिकार खेलनेको चाहताथा और हज़रत सुलेमानकी तसवीर सरदारों समेत बनाकर एक बड़ाज़ शामियाने के नीचे ऐसी सुन्दरता के साथ रक्खीथी कि मानो सब बैठे सभा में बातें कररहेहैं और प्रत्येक मनुष्य अपना २ कार्य्य कर रहा है और

उन शामियानों में लाल वा ज़मुर्रद वा याकूत वा एलमास के तकिये लगाकर जवाहिरों के खंभोमें बांधेथे और खंभोंकी गाढ़ोंपर सुवर्ण के गिलास बांधकर लटकायेथे और ऐसी सुन्दरता के साथ बनाया था कि देखनेसे चित्तअति प्रसन्न होताथा और बराबर से झाड़ लटकाई थीं और चारहजार चारसौ चालीस तख्त और कुरसियां सोनहली जवाहिरसे अलंकृत हुये क़ाफके प्रतिष्ठित लोगोंके बैठने के लिये उसस्थानपर बिछीहुई थीं और सबके मध्यमें एकतख्त अति उत्तम हज़रत सुलेमान के बैठने के लिये रक्खाथा उसीपर हज़रत सुलेमान बैठेथे और अब उसपर शहपालशाह बैठा है और वह तख्त सम्पूर्ण जादूका बनाथा और चारों कोनोंपर चारतख्त ज़मुर्रद के रक्खे थे कि देखनेसे बड़ा आश्चर्य्य होताथा कि किसीके मुखमें सर्प लटकायाथा कि वहकभी लीलता और कभी उगिलताथा और पीठपर फूलोंके गुलदस्ते बनाकर रक्खेथे उसमें ऐसी सुगन्ध आतीथी कि सूंघनेवालों का चित्त प्रसन्न होजाताथा और जब बादशाह उसपर पैर रखताथा तो वे बोलते और ऐसी रागनी छोड़तेथे कि सुनकर लोगोंको आश्चर्य होताथा और फूलोंमें यहबड़ा आश्चर्यथा कि जिस प्रकारके फूलथे वैसेही सुगन्धभी आतीथी और कठरोंके सब डँड़ोंपर कवल लगेथे और दोकवलों के बीचमें एकदीपक गिलास अति सुन्दरता के साथ रक्खाथा और हीरेके चारखम्भो पर एक नमगीरा जिसमें सुराही और मोतियों की झाड़ें लटकाई हुईथीं और छत्तमें माणिक दीप्यमान लगेहुये खिचाताथा औरतख्तकेचारोकोनोंपरअनेक प्रकारके पत्थरके गिलासथे उनपर भी जवाहिरात जड़े हुयेथे और हरएकमें गुलाब केबड़ा रक्खाथा और हरएकमें पिचकारियां लगी थीं कि उनसे लोगों का चित्त अति प्रसन्न होताथा और ऐसे फूलफूले थे कि जिसके नाकमें उनकी सुगन्ध पहुंचतीथी वह हँसते २ लोट-जाताथा और उसन्यायशालाके भीतर बारह सहस्र छःसौ सायबान और बारह सहस्र खम्भे और चारसहस्र डोरियां ऐसी सुन्दर उसके साथ लगीथीं कि देखनेसे अति आनन्द होताथा और जिस स्थानपर हज़रत सुलेमान की सवारी रहतीथी उसके आगे तीनकोस का घेरा था जिसमें नौबत बजतीथी मानोबादल गरजताथा और उस न्याय-शालाके पीछे एकस्थान ऐसा बनाथा कि जिसके देखनेसे चित्त अति प्रसन्न होताथा और उसके सामने एकबाटिका अतिसुशोभित बनी थी कि वृक्षोंपर जवाहिर के पक्षी बुलबुल पिड़की कोयल तूती अदिक बैठेहुये अपनी बोली बोलरहेथे कि सुनने वालोंका चित्त अति प्रसन्न होताथा और नहरें जो बाटिका के समीपथीं उनपर बकुले सुरखाब टिटहरी मछरंगे जवाहिर के बनाये हुये बराबर से

रक्खे हुये थे और देखने से यही विदित होता था कि मानो पक्षी जानदार फिर रहेहैं और तीतर बटेर कबूतर आदिक न्यायशाला की दीवारों पर बराबर से फिर रहे थे अमीर इन सब तमाशों को देखकर बड़े आनन्द में हुये और यह सुनिये कि एक शहपाल की बेटी आसमान परी नामे शहपाल के तख्त के पीछे परदा डाले हुये अपने तख्त पर बैठी थी उसने जो परदे के आड़ से अमीर की सूरत देखी तो अति लोभित होकर उसके साथ विवाह करने की इच्छा की तत्-पश्चात जब एकदिन और रात्रिव्यतीतहुआ तो अब्दुलरहमान ने शह-पाल से कहा कि मैं केवल नौदिनको कहकर अमीरको लायाहूं इससे अधिक लगे तो मेरे शिरपर बदनामी है शहपाल ने अमीर से कहा कि साहबक़िरां जैसामैं इन देवोंके हाथसे दुःख उठारहा हूं ऐसा दुःख कभी नहीं पड़ा जो आप कृपा करके इन लोगों को मारकर मेरे दुःख को छोड़ायें तो सदैव का दुःखदूर होजावे और आपकी सेवामें मैं सदैव प्रवृत्त रहूंगा अमीर ने कहा यह क्या बातहै जो ईश्वर की कृपा होगी तो दमभर में एक एक का शिरकाट कर आप का देश आपके आधीन न कर दिया तो हमज़ा नाम न रक्खूंगा और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है आप युद्ध का डंका बजवाइये तो आपको ईश्वर की रचना का हाल देखाऊं शहपाल ने अति प्रसन्न होकर अब्दुल-रहमान को आज्ञादी कि वे चारों तलवारें जो सुलेमान के कमर की रक्खीहुई हैं उनको उठालावो और अमीरकेसम्मुख रखदेओ जो इनके पसंदहो वह लेलवें अब्दुलरहमान ने लाकर हाज़िर किया शहपाल ने अमीर के सामने रखकर कहा कि जिसको आप पसंद करलेवें और हरएक का नाम बतलाया कि एक का नाम समसाम दूसरी कमकाम तीसरी अक़रब चौथी जुलफ़िनाम है अमीर ने अक़बर सुले-मानी को लेकर अपनी कमर में लगाया तब सब जितने परीज़ात खड़े थे हँसकर शहपाल को मुबारिकबादी देनेलगे अमीरने यह हाल देखकर अब्दुलरहमान से पूछा कियह क्या बातहै उसने कहा कि सुलेमान ने आज्ञादी थी कि जब देवोंको मारना तो इसी अक़बरको लेकरमारना सो आपने भी उसीको लिया तो लोगोंकोखुशी हुईकी देव अबअवश्य करके मारे जायँगे आपने भी बेजानेही उसी तलवार को उठाया तब अब्दुलरहमान ने कहा कि एक बात और शेषरही है उसको भी तैकर लीजिये अमीरने कहा वह क्याहै उसनेकहा कि चनार का वृक्ष है वह सर्वत्र परदे काफ में प्रसिद्ध है कि जोकोई इसवृक्षको अक़बरसुले-मानीसे एकबार से काटेगा वही इनदेवों को भी मारेगा अमीर ने उस वृक्षके नीचे जाकर एक वार जो लगाया तो साबुन के तारकी तरह से तलवार पारहोगई परंतु वृक्ष गिरके पृथ्वी पर न आया तो अमीरने

विचार किया कि वृक्ष नहींकटा अति संदेह में हुये अब्दुलरहमानने अमीर को मुबारकबादी देकर कहा कि वृक्ष सब कटगया है इसको हिलाकर देख लीजिये अमीर ने एक धक्का जो मारा तो वृक्ष बड़ा शब्द कर पृथ्वीपर गिरपड़ा शहपाल ने अमीर के हाथोंको चूमा और अति प्रसन्न होकर स्थानपर लाये और कहनेलगे कि निश्चय है कि तू हज़रत सुलेमान है और तेरे सिवाय और किसी की ताक़त नहीं है कि देवों का बधकरै और ऐसे प्राणजाने के स्थान पर ऐसी बहादुरी और हौसिले से पैर रक्खे अमीर ने कहा कि जो ईश्वर ने आपकीकृपा से चाहा तो केवल देव तो क्या है सब देवों का शिर काट कर इस मैदान को पाटता हूं परन्तु अब आप अपनी सेना को आज्ञा देवैं कि वह गुलिस्तानअरम से निकल कर बाहर मैदान में पड़ै और युद्धका डंका बजावे और अपने युद्ध करने की युक्ति हमको देखलावे शहपाल के आज्ञा देतेही सब सेना गुलिस्तानअरम से बाहर निकल कर डेरा डाल कर पड़ी और शहपाल भी उनहोंके साथ आया अबयह वृत्तान्त देवको पहुंचा कि शहपाल ने परदे दुनिया से एक मनुष्य अति बहादुर और बलवान हम लोगों के मारने के लिये बुलाया है वह आकर मैदान में पड़ा है और युद्ध का डंका बजवाता है देव ने जब यह हाल सुना एकबारगी कहकहा मार कर हँसनेलगा कि चलो इसी बहाने से वह नगर से निकला और कहां मनुष्य कहां देव कहीं वह बराबरी करसकता है यह कह कर अपनी सेनाको तैयार करा कर युद्ध का डंका बजवाने की आज्ञादी तब शहपाल शाहने भी अपनी सेनामें डंका युद्ध का बजवाया दोनों तरफ लड़ाई का सामान सब राचि कोहुआ किया जब प्रातःकाल हुआ वह देवकई लाख देव साथ लेकर निकला तो देखा कि कोई देव तो शेर की खाल कोई अजदहे की कोई हाथी की खालें गले में डाले हुये है और शिर पर फौलादी खोल दिये है जंजीर तोड़ फौलादी कमर में बांधे हैं और गलों में खोपिड़योंके हारडाले बलछी तलवार चकमाक आदि शस्त्र धारण किये हुये युद्ध के लिये तैयार हैं परन्तु शहपाल को देखकर दंग होगयेकि एक तख्त परआप सवार और एक पर साहब क़िरांको सवार करके देवकी सेना की तरफ चला कि देव इस सामान को देखकर डरे और अपने जीवनसे हिरास हुयेदेवोंने जो साहब क़िरांको देखातो बड़े आश्चर्यरूपी खेल करने लगे कि कोईतो मैदानमें आकर चूतर पीटने की कला करता है कोई अपनी दाढ़ीपकड़ कर बैठकैं करता है कोई कूद कर आसमान की तरफ जाता है और वायुमें उड़ता है और वहां से कला मारते हुये पृथ्वी पर आता है और कोई दांतनिकालकर अमीर को दिखाताहै यह सब देखकर अमीर हँसनेलगे कि देखोये कैसे पागल

पनका काम करते हैं इसके पश्चात् एक देव अहरमन अफरेत का पिता जो पांचसौगज का लंबा था मैदान में आकर ललकारा और ऐसा चिल्लाया कि तमाम परदेक्राफ हिल गया और कहा कि वह कोचक सुलेमानी कहां है जो अपने को अति बलवान और बहादुर समझकर हमसे लड़नेको परदेदुनिया से आयाहै हमारे सामने आवे कि उसको मौतका मजा चखाऊं अमीर अहपालसे आज्ञालेकर मैदानमें निस्सन्देह होकर आये और एक बार ईश्वर का नाम इस जोर से लिया कि सबलोग कांप गये अहरमन बोला कि तू इतने से रूपपर ऐसाचिल्लाताहै कि हमको इसशब्दसेडराताहै अच्छा शस्त्रकोमारदेखअमीरनेकहाकिमैं तो पहिले कुछकार्य नहीं करता और यहीहमारेपुस्तापुस्तचलीआतीहै प्रथम तू वारचला पीछे हमचलावेंगे और अपनी बहादुरी तुझेदिखलावेंगे वह बोला कितुझपर जोमैं पहिली वारलाऊं तो सब देव आदि हंसेंगे और तू कब बचैगा कि फिर तू मुझ पर वार चलावेगा अमीर ने कहा क्या जिस समय डीलडौलकी बांट होती तू वहां था और सिवाय इसके तू नहीं जानता है कि मैं तेरे मारनेके लिये परदे दुनिया से आया हूं और तेरेलिये मौतलाया हूं यह सुनकर हरमनने एकतलवारअमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोककर अकरब सुलेमानी कमर से निकाल कर कहा वो नापाक खबरदार हो कि मैंभी वार चलाता हूं और नापाक रुधिर से अपनी तलवार को डुबोताहूं यह कहकर एक हाथ उसकी कमर पर ऐसामाराकिदो टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शहपाल ने ईश्वर का गुणानुवाद किया और परीजादों को बाजन बजाने की आज्ञादी अफरेतने एक आहकरके कहा कितूने बड़ागजब किया कि मेरे पिताको मारडाला देख तुझे भी कैसा दिखलाता हूं यह कह कर एक देव को जो हरमन से भी बलवान था अमीर के सामने भेजा इसकिरों ने उसको भी मारा यहां तक कि थोड़े समय में नौ देवोंको जो अतिबलवान थे मारडाला तब तो अफरेत ने कांपकर डंका लौटजाने का बजवायाऔरअपने पिताकीलोथ उठाकरअपनीराहलिया शहपाल जवाहर और अशरफी अमीर की नेवछावरमें लुटाते हुये गुलिस्तान अरममें आये और अमीरकीबहादुरी की बड़ीप्रशंसा करनेलगे॥

वृत्तान्तखाजे अमरूका॥

अब थोड़ासा वृत्तान्त खाजे अमरू का सुनिये कि जब बखूतियारके अमरूके हाथसे घायल होकर हरमनके पासगया तो दज्जादजहपोश ने कहाकि जो आज्ञा हो तो तबलजंग बजवाया जावे अभी चलकर अमरूको मारें कि फिर ऐसाकभी न करे हरमनने कहाकिमुझे किसी को मारने की इच्छा नहीं है और युद्धकरने की कुछ आवश्यकता नहीं है केवल यह किया जावे कि पहरा किले के चारों तरफ फिरा करें कि

कोई वस्तु क़िलेमें न जाने पावे कि भूख और प्यास से दुःख उठावें और बन कटाकर रणगढ़ा और सीढ़ियां बनवाई जावें जब संयोग मिले क़िलेपर लगाकर चढ़ चलें यह बात सबको पसन्द आई और सीढ़ी और रणगढ़े बनने लगे चार महीनेके बाद तैयार हुये तब हरमर ने आज्ञा दी कि रणगढ़े क़िलेके समीप गड़वादेा और सीढ़ियांभी उस स्थानपर रखकर तबलजंग बजवावो काल हम क़िलेपर चढ़ाई करके क़िलेवालोंको अपनी तलवारसे मारेंगे यह सब वृत्तान्त अमरू ने सुना कि हरमर ने रणगढ़ा क़िलेके समीप रक्खा है और सीढ़ी भी बनवाई हैं सब तय्यारी युद्धकी करचुकाहै कलसेनाको लेकर हमारे क़िलेपर चढ़ेगा तब अमरू ने आदीसे कहा तुमभी डंका सिकन्दरी बजवावो मैं थाड़ी देर सैरको जाता हूं अभी थोड़ी देरमें आऊंगा यह कहकर पोशाकघाड़ी उतार कर बज़रूपियोंकी पोशाक पहिनकर एक सिपाहीका भेष धारणकरके रणगढ़े के पास गया तो देखा कि चार सौ सिपाही हथियार बांधे उसके चारों तरफ फिर रहेहैं जाकर कहाकि हरमरने हमको भेजाहै कि जाकर देखआवो रणगढ़ेके पास कौन२ सिपाही ग़ाफ़िल है और कौन होशियार है तुम सबके नाम लिखलावो जोग़ाफ़िलहै उनको दण्ड मिलेगा और जो२ होशियारहैं उन लोगोंको कुछ इनाम मिलेगा सब लोग अमरू के पैरों पर गिरने लगे कि आप जाकर कह दीजियेगा सब अपने२ कामपर होशियार हैं अमरू वहां से अपने क़िलेमें आया कईसौ मन मिठाई दारू बेहीमें मिलाकर बज़रूपियोंकीसी सूरत बदला कर उनके ऊपर रखाकर लेआया और कि यह शरबत हरमरने तुम लोगोंके वास्ते भेजी है परंतु मैं तुम्हारे सरदार को नहीं पहचानताहूं वही आकर सबको भागलगादेवे एकने आकर कहाकि मैंहीं सरदार हूं हर एक का हाल जानता हूं और शातिर मेरा नाम है और यही मेरा कामहै यह अंगूठी फीरोजेकी निशानी देना आपका क्या नाम है और क्याकार्य्य आप करते हैं अमरू ने कहा कि मत हर अक़ीक़ मेरा नाम है और मैं दारोग़ा फरशख़ाने का दामादहूं बहुत से लोग मेरी आज्ञा में हैं यह कहकर वह अंगूठी उसने लेली और शरबतके घड़े देदिये सरदारने वह सबको देदिया और आप भी खाया जितने प्यादेथे सभोंने अच्छीतरह से ओठ चाटचाट कर मिठाई खाई पहिले तो बड़ा मज़ामिला परंतु थोड़ीही समयमें सब लोटगये अमरू ने जैसे हाल सुना जाकर सबका शिर खड्ग से काटकर रणगढ़े और सीढ़ियोंको बटोरकर अग्निमें भस्मकरके अपने क़िलेमेंआकर निस्सन्देह होकर सोरहा और रात्रिभर में जितनी सीढ़ियां और रणगढ़े थे सब जलकर राखहोगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर चारहाथी के तख्तपर सरदारों और सेनाके साथ इस विचार से कि आजचल कर सीढ़ीलगा

कर क़िले में सरदारों को और से नाको चढ़ाकर मुसल्मानी से ना को मारकर मलकामेहरनिगार को निकाललावें थोड़ीदूर जैसे आगे बढ़ा था कि दूतों ने आकर हालदिया कि रणगढ़ा और सिढ़ियां जली पड़ी हैं और सब चौकीदारों के शिरकटे पड़ेहैं यहसुनकर हरमरअति क्राधित हुआ और बख्तियारक से कहने लगा देखते हो अमरू ने चार महीने की मेहनत मेरी सब मिट्टी में मिलादी बख्तियारक बोला कि आप अच्छीप्रकार से जानते हैं जैसा वह है कि उसकी युक्ति को कोई नहीं पहुंचता है अब सवार तो होचुके हो चलके क़िलेपर युद्धकरो शायद बिजय होजाय हरमर ने क़िले के समीप आकर दश सहस्र सवार क़िलेके चारों तरफ घेरने की आज्ञा दी अमरूनेजो देखा कि बड़ी सेना है इससे इस युद्धसे बिजय न पावेंगे तो उसने भी चारों तरफ से तीर क़ारूरे कंकर पत्थर मारने का आरम्भ किया और ऐसा आतशबाजी का मेह बरषाया कि उसकी सेना अग्नि से घबड़ा गई और हजारों जलकर राखहोगये और शेष पीछेको हटी तब हरमर हजाजिरापोश से कहा कि तुम जो उसदिन कहते थे कि जो आज्ञा होतो अभी जाकर इसी तीरसे मुसल्मानों को मारकर मलका मेहर निगार को निकाल लेवें सो आज जावो और मुसल्मानी सेनाको मार कर मलका को ले आवो तब उसने कहा कि आपने कब आज्ञा दिया है और मैंने नहीं किया तुरतहो अपने चारसौ सवार लेकर क़िलेकी खन्दकपर जापहुंचा आप वह घाड़े को कुदाकर दरवाजे पर होरहा परंतु शेष सवार अग्निके कारण न जासके तब अमरू ने आतश-बाजी छुड़ाकर सिपाहियों को तो हटा दिया परंतु हजाजिरहपोश अपनी जवांमरदी से दरवाजे पर खड़ारहा और पैर पीछेको न हटाया बख्तियारक ने कहा कि हजाजिरहपोश बड़ा बहादुर और दलेर हक़ीक़त में हैं उसने जो कहा था सो किया परंतु क्या करै वह अकेला उसकी सेना अमरू की आतशबाजी से आगेनहीं बढ़सक्तीहै यह उन्हों ने अच्छीबात नहीं की अब आप अपनीसेनाको आज्ञादें कि वहजाकर उसकी सहायता करैं और इससमय मरनेसे न डरैं नहींतो वहमारा-जायगा और जो आपकी सेना सहायता करेगी तो अभी क़िला बिजय होजायगा हरमरने अपनी सेनासेकहा देखोवह कैसा अपनीबात पर अड़ाहै तुमलोग जो सहायता करो तो अभी क़िला बिजयहोजाय यह सुनकर जितने सरदारथे सबोंने घोड़ोंको दौड़ाकर खन्दक़ परपहुं-चाया परंतु उससे आगे न बढ़सके अमरू दीवार के ऊपर आकर हजारह से कहनेलगा कि हे बहादुर तू क़िला तो लेचुका और हमारी बिजय हुई अब मैं तुमसे बिनय करताहूं कि मुझे शाहजादेके पास लेचल और मेरा अपराध क्षमा करादे तो मैं तेरा बड़ा गुण मानूंगा और क़िला

खालीकरके मेहरनिगार को तेरे साथ करदूंगा इसाहनेउत्तर देनेकेलिये ढालको मुखके आगेसे हटाया और घोड़ेको थोड़ासा बढ़ानाचाहा कि अमरू ने एकपत्थर का टूकड़ा नोकीला बरछीपर घुमाकर ऐसा मारा कि उसका प्राणनिकलगया और मरकर खन्दक्रमेंगिरपड़ा तबजोउसके सिपाही खड़े थे उसकी लोथ लेकर हरमरकेपास पहुंचे तब वह देखकर अति व्याकुल होगया कि बड़ा बहादुर सरदार मारागया और व्याकुलहोकर बख्तियारक से कहनेलगा अब क्या करूंकि अमरूसे बिजय पाऊं बख्तियार ने कहा इससमय सेना व्याकुलहोगईहै लौट चलिये कलफिर कोई उपाय बिचारकर बिजय कीजियेगा तब हरमर ने डंका लौटनेका बजानेकी आज्ञादी सारी सेनाने रास्तालिया औरहरमर भी गिरता पड़ता अपनेडेरे में आकर एक पत्र में सब वृत्तान्त लिखकरबादशाह नौशेरवां के पास भेजा जब वह पत्र बादशाह के पास पहुंचा पढ़कर बुजुरुजमेहर से कहनेलगा कि देखते हो अमरू ने मेरे कैसे २ पहलवानों को माराहै और मुझे जराभी नहीं डरता बुजुरुजमेहर ने कहा कि सत्यकरके वह बड़ा दुष्टहै वह इसबातको कुछनहींबिचारताहै परंतु आप शाहजादेको लिखभेजें कि तुमलड़ोभिड़ोनहीं किसीतरहसेअमरू को पकड़लावो यह बातचीत होहीरही थी कि सरदारों ने नौशेरवांके सामने आकर कहना शुरू किया कि देखिये बीलम और क्रीलम और दज्जाह पहलवानों को बध करना और हर प्रकार से लज्जित करना उचित नहींथा अब जबतक हम इसकाबदला न लेंगे और उसको दण्ड न देलेंगे तबतक हमको नींद न आवेगी बादशाह ने उनलोगोंको समझाकरकहा कि देखो अखजारफैलगा शत्रुमल्लोगोंकाअतिबलवानसरदार है सत्तर सहस्र सवार के साथ हरमरकी सहायताके लिये भेजाहै और हरमर को लिखदिया है कि तुम घबराकर लौटने की इच्छा न करना और किसी तरहसे न डरना हमने तेरी सहायताके लिये अखजारफैलगोशको भेजा है और उनको हर प्रकार से समझा दिया है तत्पश्चात् नौशेरवां दरबार से उठकर रात्रि के समय महलमें गया तो महर अंगेजने बादशाह को व्याकुल देखकर पूछा कि आप क्यों व्याकुलहैंतब बादशाह ने कहा कि तुम्हारी बेटी के कारण सदैव व्याकुल रहता हूं कि हरमर को हमने भेजा है उसे अमरू तीनबार पराजय करचुका और कैसे २ पहलवानों को उसने मारा है कि मेरा जीव जानता है महर अंगेजने कहा कि बादशाह यह युक्ति उसके बध करनेकी उत्तम नहीं है खाजेनिहाल को सौगात लेकर जिसने मलका को पाला है भेजिये और एक पत्र उसको लिखिये कि बड़े रंजकी बात है कि तुम्हारे माता पिता तुम्हारी प्रीतिसे मररहेहैं और कुछनहीं सूझता कि एक हफ़ा हमलोगोंको अपनी सूरत देखलाजावो कि हमारीजानबचे और

अमरू के लिये कुछरुपया भेजो कि वहलोभमें आकर किलेमें जानेदेवे और जिससमय किलेके भीतर पहुंचे कुछदिन रहकर उससे मिलकर विषदेवे और दरवाजा किलेका खोलकर सनाको बुलाकर मुसलमानों को मारडाले और मेहरनिगारका लेकर चलेआवें और हमको तुमको इसजुदाई के दुःखसे छुड़ावे बादशाहने इसबात को पसन्द किया और खाजेनिहाल को ताहका और नकदरुपये मक्के को रवाना किया ॥

खाना खाजे निहलका मलकामेहरनिगारके लानेको मक्केकी तरफ और उसका माराजाना अमरू के हाथसे ॥

लेखक लोग लिखते हैं कि जिससमय बादशाह ने खाजेनिहाल को मक्केकी तरफ भेजा उसीसमय एकपत्र लिखकर कि ऐपुत्र हरमर परसों मैंने अखुजर फैलगोशको सत्तर सहस्र सवारके साथभेजा है और आज खाजेनिहाल को इसप्रकार से समझाकर भेजता हूं इसप्रकार से पत्रलिख एकसिपाही के हाथ हरमर के पास मक्केका भेजा और उसमें यहभी लिखदियाथा कि किसीयुक्ति से खाजेनिहाल को किलेके भीतर पहुंचादेना और जबवह पहुंचजावे ता तुमअखुजर फैलगोश को साथलेकर किलातोड़कर मलका को निकालकर चलेआना अब खाजेनिहाल का वृत्तान्त सुनिये कि वहअखुजरफैलगोशकेएकदिनपीछे चला परन्तु अतिशीघ्र चलकर अखुजरफैलगोश से जाकर मिला और उससे सबवृत्तान्त बयान किया और दोनोंसाथ मिलकर चले और तीनमहीने के बाद मक्के में पहुंचकर हरमर से मुलाक़ात की और सब पत्र बादशाह को देकर जबानीभी सबबयान किया हरचन्द कि वह सब वृत्तान्त उसपत्रसेजो सिपाही के हाथ बादशाह ने भेजा था सुन चुकेथे परन्तु इनपत्रों को पढ़कर उनलोगों को खिलअत देकर अति प्रतिष्ठा के साथ बैठाकर बहुत प्रसन्न किया और वेलोग जो मार्गके थकेथे शीघउठकर अपने डेरेमें आकर आराम करनेलगे यह वृत्तान्त अमरू के दूतोंने उसजगह पहुंचाया तबअमरू ने अपने दिलमें विचार किया कि देखें कौन अबकी बार सरदार सेनाका है जोबी की सूरत बनाकर हरमर की सेनामें गया और जहां दोचार मनुष्य बातें करतेथे वहांखड़ा होकर सुनने लगा यहांतक कि एकस्थान परचार पांच सिपाही बातेंकरतेथे कि अबकी दफा नौशेरवांने अखुजर फैलगोश को सत्तर सहस्र सेनाके साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है निश्चय है कि अबकी किला विजयहोकर अमरू मारागावे एकने कहा कि खाजेनिहाल भी आयेहैं दूसरेने कहा कि वहयुद्ध करने को नहीं आया परन्तु बादशाह ने उसेभेजा है कि तुम किसी तरहसे किलेमें जाकर अमरूको मिलकर विषदेकर मारडालो औरमलकाको निकाल लावो तो तुमको बहुत इनाम और खिलअत दीजायगी तबसब

सिपाही कहने लगे कि यहयुक्ति अमरू के मारेकब होनेपावेगी वह ऐसा असामी नहींहै कि किसीके जालमें आकर माराजावे और अबुलफैलगोश चाहेकुछ युक्तिकरे परन्तु खाजे निहालकी युक्ति न होने पावेगी यहसुनकर अमरू आगेबढ़ा और धोबीका भेषबदलकर साईस का रूप धरकरके लोबड़ा हाथमें लेकर पुकारनेलगा कि भाई खाजे निहालका डेरा बतादो घोड़ेको दानालेने आयाथा अबराचिको रास्ता नहीं पाता घोड़ादाने के लिये टापताहोगा कोई कृपाकरके मुझेवहां पहुंचादेवे एकमनुष्यने कहा चलभाई तुझे खाजेका डेरा बतादूं उठ कर थोड़ीदूर जाकर बतला दिया कि देख वहडेरा खाजेनिहाल का दिखाई देताहै जिसकी तालाशमें तू व्याकुलथा अमरू ने अपना असली रूप धरके खाजेनिहाल के डेरेपर जाकर चोबदारसे कहा कि खाजे को खबरदो कि अमरू तुम्हारी मुलाक़ात को आयाहै और एकपैग़ाम तुमको लेआयाहै खाजेयह सुनकर अति व्याकुल होगया कि इससमय अमरू क्यों आयाहै परन्तु उठकर अमरू को लेआया और अपनेबराबर मसनदपर बैठाकर कहा कि आपने बड़ीकृपाकी है कि इसनीच मनुष्य के पास आये परन्तु जो आप आज न आते तो कलमैं आपकी मुलाक़ात को क़िलेमें आता और आपका सबसामान देखकर प्रसन्न होता क्योंकि ठिकाना ज़िन्दगीका कुछनहीं है मित्रोंसेमिलनाउचितहै अमरूने रोनी सूरत बनाकर कहा कि क्याकरूं खाजेमैं बड़ेदुःखमें पड़ाहूं कि प्राण जाया चाहताहै खाजेनिहालने कहा क्याहै बतलादूयेतो अमरू बोला कि कृपाकरके मेराहृत्तान्त सुनियेऔर इसकेदूरहोनेकीकोईयुक्ति बतलादूये वृत्तान्त यहहै कि हमजा अठारह दिनका वादाकरके परदे क़ाफ़को गयाहै परन्तु उसको इतने दिनहुये मालूमनहीं होता कि वह मारागया याज़िन्दाहै और अब मलका मेहरनिगार अकेली व्याकुल रहतीहै अबमुझे कुछनहीं सूझता उसेहरमर को सौंपदेताहूं तो डरताहूं कि मैंनेबहुत से लोगोंको माराहै बादशाह काहेको जीता छोड़ेगा और जोबादशाह अपनी दयालुतासे मेरा अपराध क्षमाभी करेगा तौभी बख्तियारक और बख्तक के मारे काहेको मेरा प्राण बचेगा सो आज बिचारकर आयाथा कि चलकरहरमर के पैरोंपरगिरकर अपना अपराध क्षमाकराकर मलकाको उनको सौंपदेवें और हम जिधर सुभीता होगा उधर चलेजायंगे परन्तु सेनामें आकर आपके आनेका हालसुना सो आपके समीपआयाहूं सोअबआप मेहर निगार को लीजिये मैंजिधर सुभीता होगा उधर जाऊंगा खाजे निहाल यहबात सुनकर अति प्रसन्नहुआ और खाजे अमरूको छातीसे लगाकर कहने लगा कि किसीकाजोरहै कि हमारेतुम्हारेविषयमेंबादशाहसे बुराई करे और बादशाह को तुम्हारे तरफसे नाराजकरै और

यह मैं जिम्मा करताहूं कि तुम्हारा अपराध क्षमा कराकर मक्के की गद्दी तुमको बादशाह से दिलवाऊंगा और मुझे इसपर सत्य समझना अमरू ने कहा आपसे मैं इससे अधिक भरोसा रखताहूं यह कहकर झोली से खुरमे निकालकर दिये और कहा कि यह मक्के का परसाद है तुमको आपखाइये खाजे निहाल को जो मौत आई तो बेसन्देह खागया और यह कहकर कि मैं घरजाताहूं और मलका मेहरनिगार को तुम्हारे पास ले आताहूं बाहर आकर सब शागिर्द पेशा के लोगोंको मक्के का परसाद देकर उसी जालमें फंसाया खाजे निहाल अपने चित्तमें कहने लगा कि तेरा बड़ा प्रताप है कि घर बैठे सब कार्य सिद्ध होगया थोड़ी देरके बाद बाहरतो सिपाही और डेरेमें खाजे निहाल बेहोश होगये अमरू ने जेबसे छुरी निकालकर सब संदूक़चोंको तोड़कर जो रुपया था अपनी जेबमें रक्खा और छोटासा संदूक़ जो अच्छीतरह से बन्दथा उस को जो खोलातो उसमें एक पत्र बादशाह की तरफसे मलका के नाम था उसको भी लेकर जेबमें रक्खा और सब संदूक़ बन्दकर के तालेलगा दिये और खाजे निहाल को एक गढ़ा खोदकर जीता उसी में गाड़ दिया और आप उसीकी सूरत बनकर उसके पलंगपर सो रहा और सब अपना कार्य पूर्ण करलिया हरमर का हाल सुनिये कि प्रातःकाल उठकर बख्तियारक से कहा कि आज मैं अखूजरफैलगोश और खाजे निहालकी मेहमानी करनेको विचार करताहूं उसने कहाकि इससे क्या उत्तमहै यही आपको उचितहै तब हरमरने भोजनकी तैयारी की और मेहमानी का सामान इकट्ठा करने की आज्ञादी और अखूजर फैलगोश और खाजे निहाल को बुलवाया तो अखूजरफैलगोश साथ अपने सरदारों के गया और थोड़ी देरके बाद बनाऊआ खाजे निहाल भी आकर साथ अदबके शाहजादे के सामने सलाम करके खड़ा हुआ हरमर उसकी बातोंसे अति प्रसन्न हुआ और खिलअत देकर बड़ी कृपासे कहा कि हे खाजेनिहाल अदब तू अब करचुका अब आकर सभा में बैठो तब फिर उस बनाऊ पिये ने कहा कि मेरा मुंह है कि आप के सामने बैठूं हरमर ने हाथ पकड़ कर खींचकर अपनी बराबर कुरसी पर बैठाला और कहा इससमय अदबको ताक़के ऊपर रक्खो तब गाने बजानेवालोंने अपने२ नाचरंग करनेका आरम्भकिया और सभावालोंको अपने शब्द और गतिसे लोभाने लगे और सबका मन उसी नाचरंग में लगारहा और जब रातहुई मशालचियों ने मोमकी बत्तियां दो साखों तिसाखों पन्साखों में चढ़ाकर रोशन किया तब हरमन ने एक गिलास शराब का अखूजरफैलगोशको अपनेहाथसे उंड़ेलकरदिया उसनेभी एक गिलास हरमर को दिया उसदिन यह था कि जो एक मनुष्य दूसरे को पिलावे तो दूसरा भी उसको पिलावे इसी तरह से प्रत्येक दूसरे को

लोगों ने जाकर सब लोगोंको खोला परंतु मारे लज्जाके कोई मुखसे न बोलता था तब उनके मकानों से कपड़े लाकर उनलोगों को पहिनाये और उनके हाथ मुख धाये तब आदमी की सूरत हुई बख्तियारक भी हाथ मुंह धोकर अखुजरके पास आकर कहनेलगा कि यह सब अमरू के सिवाय और कोई नहीं कर सक्ता है अखुजर ने क्रोध करके मुख पर हाथ फेरा कि अमरू है कि मैंहूं देखो तो मैं अब उसे कैसे सिखाता हूं जो उसने हम लोगोंके साथ ऐसा काम किया है इतने में धुंधरू बोला और मालूम हुआ कि मुंह पर एक तरफ मोछ दाढ़ी नहीं है और एक मोछमें घुंघरू बंधा है तो वह और क्रोध में हुआ तब बख्तियारकने कहा देखना चाहिये कि हमारी तुम्हारी तो यह गति है हरमर और खाजेनिहाल का क्या हाल है और जो राचिको शराब पिलाताथा वह अमरूथा यक़ीन है कि खाजेनिहालको मारकरउसकी सूरत बनाकर अमरू आयाथा ढूंढ़ा तो नतो अपने डेरेमें खाजेनिहाल है और न उसका कुछ असबाब है और हरमर को भी उठा ले गया है यह बड़ा दाग़ हमको दे गया है अखुजर ने झुलझुला कर तलवअंग मंगाने की आज्ञादी और कहा कि जो क़िलेकी ईंटसे ईंट न बजवाई और उसकी लोथ काटकर चील कौवोंको न खिलाई और मुसल्मानों को काट कर रुधिरकी नदी न बहवाई तो अखुजर मेरा नाम न रखना और मुझको एकदम बे इसके कियेकल न आवेगी आखिरकार दूसरे दिन सवेरे सत्तरसहस्र अपने और तीस सहस्र हरमर के सवारों को लेकर क़िलेको घेर लिया और सेना से प्राण तक देनेका वादा लिया अमरू ने उस समय जनबिल से हरमरको निकाल कर देखा तो बेहोश है तब दो तीन बूंद शिरके की शरबत की उसके मुखमें डाले जब वह पेटमें पहुंचे तो नेत्रोंको खोल दिया देखा कि अमरू शाहाना लिबास पहिने बैठा है और उसके चारों ओर सरदार लोग और नगर बासी हाथ जोड़े खड़े हैं और मुक़ाबिल बारह सहस्र तीरन्दाज़ लैस किये अपने पहरेपर खड़ा है और हरएक स्थानों पर पहलवान लोग मुरचों पर खड़े हैं और बरक़न्दाज़ आदिक क़िले की दीवारोंपर खड़े हैं और अपने को गिरफ्तार देखकर जीवका न भरोसा देखकर रोनेलगा और डरसे व्याकुल होकर इधरउधर देखने लगा जब अमरू ने उसको व्याकुल देखा तोउसको समझाने लगा कि हे शाहज़ादे तू न डर मैंतेरे साथ किसीतरहकी बदी न करूंगा तुझे किसीतरहका दुःख न दूंगा परन्तु तीन प्रश्न मैं करता हूं उसमेंसे एककोभी तू मानेगा तो मेरेलिये उत्तमहोगा उसने कहा वहक्याहै बतलावो तो मैं सुनकर उनकाउत्तर दूंगा अमरूने कहा प्रथम तो यह है कि तू मुसल्मान होकर मुसल्मानी सेनाका सरदार बनकरतूने हरमरनेकहा वहमुझसे नहोगा कि पुराने

पिलाने लगे जब पहर रात्रि बीती बने हुये खानेनिहाल ने विनय करके कहा सेवक इस समय सब लोगों को शराब पिलाया चाहता है यह सभा इस समय अति उत्तम है हरमर ने कहा आपही को मुबारक रहे तुमही साक़ी बनकर सबको पिलाओ खानेनिहाल अमली ने गिलास और सुराही हाथमें लेकर प्रथम हरमरको एक गिलास पिलाया और अपनी युक्तिसे उसे बेहोशकिया तत्पश्चात् सभा में घुसकर सबको दोबार तक ता वही शराब पिलाता रहा तीसरी बार बेहोशी दारू पिलाकर सबलोगों को बेहोश किया जब उसने देखा कि अब सभाभर बेहोश होगईहै गिलास और सुराही लेकर बाहर निकला और सब शागिर्दपेशों को पिलाकर बेहोश किया तब डेरेमें आकर सब असबाब शागिर्दपेशे की बोरीतक उठाकर अपने डेरेमें किया और अखज़र फैलगोशकी दाढ़ी मोछ मूड़कर सातरंग के टीके जिसतरफकी सुंड़ीथीदेकर दूसरीतरफ माछमें घुंघुरू बांधदिया और गालोंमें स्याही मालगाकर एकखाल उढ़ादिया बख्तक की मोछ दाढ़ी मूंड़कर सेंदुर की टिकुली देकर स्त्री का स्वरूप बनाकर दोनों पैर गले में बांधकर अखज़रफैलगोश का एक पलंगपर लेटाकर उसको भी उसी के गोद में लेटादिया और सब सरदारों को दाढ़ी मोछ मूंड़कर मुख में करिखा लगाकर सतनों में बांधकर आप खानेनिहाल की सूरत बनाहुआ अपने कार्यसे छुट्टी पाकर निःसन्देह होकर अपने क़िले में आकर बैठा अखज़रफैलगोश का हाल सुनिये कि जब उसकी नींद से आंख खुली तो देखा कि एक स्त्री नंगी उसकी गोद में सोरही है और अपने हाल से बेख़बर है उसने विचारा कि शायद हरमर ने कृपा करके मेरा थकौ उतारने के लिये इसको भेजा है मैं रातभर सोकर ऐसी अच्छी वस्तु को हाथ से खो दिया प्रातःकाल सबके सामने कहूंगी कि अखज़र हिजड़ा है जो स्त्री की चाह नहीं है अभीतो सवेरा नहीं हुआ इस मज़ेको चखना चाहिये ऐसा विचार करके अखज़र ने जो धरकर दबाया तो बख़्तियारक ने एक ऐसी चीखमारी कि सब जो सोतेथे जागकर उठे और अपना रूप देख कर अति लज्जित हुये और जो दरबार के लोग खंभों में बँधे थे वेतो न उठ सके पर चोबदार आदि दौड़कर डेरेमें आवे तो देखा कि एक मर्द स्वरूपवान स्त्री के ऊपर चढ़ा भोगकर रहा है और किसी तरहसे डरतानहीं वे लोग उनदोनोंको मारनेलगे कि यह शाहज़ादे का डेरा है तुमने ऐसा काम इसमें क्यों किया तुमको अवश्यदण्ड मिलेगा इस प्रकार से शागिर्द पेशेके लोग दौड़को बख्तियारक का प्राण बचा उठकर भागा और अखज़रसे मारपीट होने लगी कोई मनुष्य अखज़र मुक्कों से मरगये जब उजाला हुआ लोगों ने देखा कि अखज़र है और सरदार लोग डेरोंके खंभोंसे बांधे हुये उलटे लटके हैं तब उन

लोगों ने जाकर सब लोगोंको खोला परंतु मारे लज्जाके कोई मुखसे न बोलता था तब उनके मकानों से कपड़े लाकर उनलोगों को पहिनाये और उनके हाथ मुख धाये तब आदमी की सूरत हुई बख्तियारके भी हाथ मुंह धोकर अखज़रके पास आकर कहनेलगा कि यह सब अमरू के सिवाय और कोई नहीं कर सक्ता है अखज़र ने क्रोध करके मुख पर हाथ फेरा कि अमरू है कि मैंहूं देखो तो मैं अब उसे कैसे सिखाता हूं जो उसने हम लोगोंके साथ ऐसा काम किया है इतने में धुंधरू बोला और मालूम हुआ कि मुंह पर एक तरफ मोछ दाढ़ी नहीं है और एक मोछमें धुंधरू बंधा है तो वह और क्रोध में हुआ तब बख्तियारने कहा देखना चाहिये कि हमारी तुम्हारी तो यह गति है हरमर और खाजेनिहाल का क्या हाल है और जो राचिको शराब पिलाताथा वह अमरूथा यक़ीन है कि खाजेनिहालको मारकरउसकी सूरत बनाकर अमरू आयाथा ढूंढा तो नतो अपने डेरेमें खाजेनिहाल है और न उसका कुछ असबाब है और हरमर को भी उठा ले गया है यह बड़ा दाग़ हमको दे गया है अखज़र ने झुलझुला कर तलबजंग बजानेकी आज्ञादी और कहा कि जो क़िलेकी ईंटसे ईंट न बजवाई और उसकी लोथ काटकर चील कौवोंको न खिलाई और मुसल्मानों को काट कर रुधिरकी नदी न बहवाई तो अखज़र मेरा नाम न रखना और मुझको एकदम बे इसके कियेकल न आवेगी आखिरकार दूसरे दिन सवेरे सत्तरसहस्र अपने और तीस सहस्र हरमर के सवारों को लेकर क़िलेको घेर लिया और सेना से प्राण तक देनेका वादा लिया अमरू ने उस समय जनविल से हरमरको निकाल कर देखा तो बेहोश है तब दो तीन बूंद घिरके की शरबत की उसके मुखमें डाले जब वह पेटमें पहुंचे तो नेत्रोंको खोल दिया देखा कि अमरू शाहाना लिबास पहिने बैठाहै और उसके चारों ओर सरदार लोग और नगर बासी हाथ जोड़े खड़े हैं और मुसल्लिह बारह सहस्र तीरन्दाज़ लैस किये अपने पहरेपर खड़ा है और हरएक स्थानों पर पहलवान लोग मुरचों पर खड़े हैं और बरक़न्दाज़ आदिक क़िले की दीवारोंपर खड़े हैं और अपने को गिरफ्तार देखकर जीवका न भरोसा देखकर रोनेलगा और डरसे व्याकुल होकर इधरउधर देखने लगा जब अमरू ने उसको व्याकुल देखा तोउसको समझाने लगा कि हे शाहज़ादे तू न डर मैंतेरे साथ किसीतरहकी बदी न करूंगा तुझे किसीतरहका दुःख न दूंगा परन्तु तीन प्रश्न करता हूं उसमेंसे एकको भी तू मानेगा तो मेरेलिये उत्तमहोगा उसने कहा वहक्याहै बतलावो तो मैं सुनकर उनकाउत्तर दूंगा अमरूने कहा प्रथम तो यह है कि तू मुसल्मान होकर मुसल्मानी सेनाका सरदार बनकरतूने हरमरनेकहा बहमुझसे नहोगा कि पुराने

धर्म्मको छोड़कर नया बख़्तियारकरूं अमरूने कहा कि तुम मुसल्मान होना उत्तम नहीं समझते कि इस संसारमेंभी अच्छी तरहसे रह कर बाद मरने के भी क़बरमें जाकर आरामसे सोवें दूसरा प्रश्न यहहै कि तू जाकर बादशाहको समझादे कि जबतक अमीर हमज़ा परदेशाफ से न आवे तबतक वह मुझसे युद्धकरने को किसीको न भेजे क्योंकि हमज़ा मलकामेहरनिगारको मुझसौंपगयाहै मैं उसके आनेतक उसकी रक्षा करने में किसीप्रकार से कोताही न करूंगा जब वह आवेगा तब जैसा जी बादशाह का चाहेगा वैसा करेगा और जो न मानेगा तो नहीं मालूम कि क्या मुझसे बदख़ाही होजावे कि बादशाह नाराज़हों और इससमय तेरे साथ जोजीचाहे वह करूं किसीका डर नहीं है हरमर ने कहा दूसरा सवाल तेरा होसक्ता है बादशाह मानलेवे अमरू ने कहा मैं जानताहूं कि बादशाह इसको न मानेगा औरजो बादशाह माने भी तो बख़्तक और बख़्तियारक न माननेदेवेंगे और क्यों अपनी बदज़ातीसे बाज आवेंगे इसलिये इसको भी मैं छोड़ताहूं तीसरासवाल मेरा यह है कि अब तुम मुझसे कभी युद्ध करने का नाम न लेना और जो करोगे तो फिर शिकायत न करना हरमर ने कहा कि मैं सौगन्ध खाकर कहताहूं कि तुझसे कभी युद्धकरनेका नाम न लूंगा इतनीबातें होरहीं थीं कि अख़ज़रफैलगोश सिपाही लेकर क़िले के सामने आ पहुंचा अमरू ने देखकर हरमर को क़िलेकी दीवारपर खड़ा कराकर अख़ज़रसे कहा कि जो एकसिपाहीभी क़दमआगेबढ़ावेगा तोमैं हरमर का शिर काटकर इसी ख़न्दक में डालदूंगा पीछेजोचाहे वह होगा बख़्तियारकने अख़ज़रसे कहाकि जो वह करताहै उसका कुछ आश्चर्य नहींहै जो हरमरको मारडाले इससे उत्तमहै कि डंकालौटका बजवा कर फिरचलें नहीं तो हरमर के मारडालने का डर है तब वह डंका बजवाकर अपने डेरेकीतरफ फिरगया अमरूनेएकख़िलअत उसके योग्य पहिना कर घोड़ेपर सवार कराकर उसकीसेनामें भेजदिया और आप अमरू मेहरनिगारकेपास आकर सबहाल उससे कहा मेहरनिगार ने प्रसन्नहोकर कहा कि ऐबाबा मैं रात दिन तेरी बिजय का वरमांगा करतीहूं कि मैं उनलोगोंकी अधिक सेनासे डरतीहूं हरमर का हाल सुनिये कि सेनामें जाकर अख़ज़र और बख़्तियारक से कहा कि मैंने अमरूसे वादाकियाहैऔरउसनेमुझसेइसबातमेंसौगन्धलियाहै कि आज से मैं तुझसे युद्धकरनेकी इच्छानकरूंगा और बादशाह को भी समझा दूंगाकि जब तक हमज़ा न आवे तब तक आप अमरू से युद्ध न करें पसतूभी बख़्तियारक अपनी दग़ाबाज़ी छोड़दे उसने कहा मैं आप की आज्ञामें हूं जैसी आज्ञा हो वही मैं करूंगा और आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगा परन्तु अख़ज़र ने कहा कि हम तो क़िला तोड़ने

और मुसल्मानोंको मारकर मलका मेहरनिगारको लेजानेकेवास्ते आये हैं जबतक कार्य्य पूर्ण न होगा तबतक न जायंगे हरमरको उसकी बातें प्रसन्न न आईं और उसका कहना न माना और बोला कि मैं अच्छी तरह से देख चुकाहूं कि जिसका बदन बाहीहोताहै मोटाई के कारण कोई काम बहादुरी और जवां मरदी का नहीं हो सकता है ऐसा मनुष्य जोकाम करताहै उसमें धोखा पाताहै अख़ज़र हरमर की यह बातें सुनकर बहुत नाराज़हुआ और कहनेलगा कि शाहज़ादे बहादुरोंकी आवाज़ जिससे न सुनीजाय और दिलावरोंकी तलवारोंकी चमक जिससे शत्रुके नेत्रोंमें चकाचौंध लगे आपको दिखाई नहीं पड़ती इस कारणसे आपके दिलमें यह बात नहीं समाती है और शाहज़ादों और बादशाहोंको सिपाहीसे नाराज़होना उचित नहींहै हरमर ने उसकी बातों से नाराज़ होकर उसी समय डंका बजवाकर मदायनकी तरफ कूचकिया परन्तु अख़ज़रने डंका युद्ध का बजवाया और बदज़ाती से बाज़ न आया अमरू तबलजंग की आवाज़ सुनकर व्याकुलहुआ कि यह क्या बातहै कि अभी हरमर मुझ से वादा करगया और जाकर फिर तबलजंग बजवाया यह हाल क्याहै अमरू क़िलेसे निकलकर जो हरमरकी सेनाकी तरफगया तो मालूम हुआ कि वह अपनी सेना समेत मदायन को कूच करगया परन्तु अख़ज़र हरमर से बिगड़कररहगयाहै उसनेयहतबलजंगबजवायाहै और मुझ से युद्ध करेगा अपने सिपाहियों से वादा लियाहै कि कल या मरेंगे या क़िला विजय करेंगे अमरू ने यहहाल सुनकर दिनतो इधर उधरमें बिताया रात्रिको एकसिपाहीकी सूरत बना कर अख़ज़रकी सेनामेंगया तो देखा कि हरएक सरदार युद्धका सामान कररहा है तब अमरू छिपता २ अख़ज़रकेडेरेके पासपहुंचा तो देखा कि कई मशल दरवाज़ेपर रोशनहैं परन्तु सब चौकीदार बेहोश होकर सोरहेहैं एकतरफसे परदा उठाकर अन्दरडेरेके गया तो अख़ज़र को सोताहुआ पाया और चिराग़ बराबरसे जलरहे थे चिरागोंको चहरसे बुझादिया केवल एकही रोशन रक्खा बगल में बैठकर आठबन्द जोड़कर अबीर बेहोशी उसमें भरकर नेत्रोंसे लगाकर जो फूंका तो सब अबीर बेहोशीकी उसके दिमाग़में समागई एक बार चीख मारकर बेहोश होगया अमरू ने वहांसे उठकर टहलुवोंको भी बेहोश किया और सब असबाब की गठरी बांधकर जनीलको दिया और अख़ज़रको गठरी बांधकर कन्धेपर उठाया और एक डेरेका खम्भा लेकर बाहर आया और उस खम्भे को सेना के चौराहेमें गाड़कर अख़ज़र का कान काटकर उसीमें बांधकर और तमाम बदन उसका कालाकर सातरंग के टीके देकर

लटका दिया और एक बीते भरकी मेख पूछकी तरह लगादी फरे के स्थानपर एक ताव कागजपर सातरंगका कुछ लिखकर उस पर चपका कर अपने क़िलेकी राहली फिर कुछ उसको शंका और सेना का डर न किया क़िलेके दरवाजेपर आकर देखा कि कुछ लोग शोर गुल कररहेहैं यह देखकर व्याकुलहुवा कि क्या मामिला है फिर खन्दकके पार कूदकर गया तब पहरे वालेने पुकारा कौन है अमरूने कहा मैंहूं अमरू ने पूछा कि खन्दक के उसपार भीड़ कैसीहै पहरे वाला बोला कि सरहंग मिश्री सत्तर सहस्र तमन और बहुतसी वस्तु तीनसौ सिपाहियोंके साथ तुम्हारेपास सौग़ातलेकर आया है अमरू यह हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुवा और सरहंग मिश्रीको बुलाकर मिला और सब माल और असबाब लेकर क़िलेमें आकरदाखिलहुआ इसकी मुलाक़ात और माल असबाबके लेआनेसे अति प्रसन्न हुआ प्रातःकाल होतेही सरहंग मिश्री को एक बड़ी खिलअत जिसमें जरबफ्ती और ताज जड़ाऊ जिसमें दोमोती लगेथे देकर साथ उस असबाबके जहरमिश्री के पास भेजा और जहरमिश्री उन असबाबों को मलकामेहरनिगार के पास लेगई और हरएक चीज उसको पृथक् २ दिखलाई मेहरनिगारने अमरूको बुलाकर सब असबाब उसको सौंपा और जो लिबास और जेवर पहिनेथी वह सबउतार कर जहरमिश्रीको दिया अमरूने अखजर फैलगोशका हाल जो मलका से बयानकिया तो मलका हंसकर बोली कि ईश्वरने तुझे मुसलमानी सेनाका सरदारकिया है और तुझपर चालीस वलियोंका साया रहता है तुम्हारी सदैव बिजयहुआ करैगी और कभी किसीसे अबिजय न पावोगे तब अमरू इन बातोंसे प्रसन्न होकर मेहरनिगार को आशीर्वाद देनेलगा और मेहरनिगार से कहा कि मैं चाहताहूं कि इस सत्तर सहस्र अशर्फीमेंसे तीस सहस्रकी जिन्स मोल लेकर क़िलेमें रखदूं कि सब लोगों के भोजनके लियेरहे और चालीस सहस्र देकर सरहंगमिश्रीको बारह हजार हब्श के गुलामोंके सामान युद्धके लिये गोली बारूद आदिक मोललेनेको भेजूं उनसे बड़े २ काम निकलेंगे और उनको मैं सबतरहका फन सिखलाऊंगा फिर देखना कि इस सेनासे बढ़जायंगे मेहरनिगार ने कहा बाबा तुम्हारी राय बहुत अच्छीहै तुमसे अधिक कौन बुद्धिमान्है अब थोड़ासा वृत्तांत अखजर फैलगोशका सुनिये कि वहतो सब रात्रि पूछ लगाये बंधापड़ा रहा और वह सूतन उसी तरहसे खड़ारहा और सेनामें युद्धका बाजा बजाकिया प्रातःकाल होतेही सेना तैयार होकर डेवढ़ीपरप्राप्त हुई कि सम्मुख देखातो चौराहेपर एक मनुष्य खंभेमें उलटा लटकाया है निकट जाकर देखातो शिरसे चरणतक कारिख लगी है और

पीलेश्वेत कालेरक्त टीकेदियेहै एक आश्चर्य्यरूप मनुष्य बनाहुआ है और एक कान कटाहै बहुत ध्यान करके देखा कि पहिले कभीइसे देखा है परंतु न पहिचान सके पर एक कागज जो उसके शरीर में चिपका था उसमें लिखाथा कि अखजरतू इरमर से बहस करके मुझे तोरने और किला तोड़के मेहरनिगार को लेजानेके वास्ते रह गया है इसकारण यह दण्डतुझे दियाहै कितेरा एक कान काट लिया और तेरीगुदा में पूंछलगाकर ऐसा आश्चर्य्यरूपी मनुष्य बनायाहै देख सावधान होदुष्टता छोड़कर मेरेहाथ से अपने जीवकी रक्षाकर नहीं तो मुझे सब मनुष्य मिचघातक कहेंगे ऐसेही सबलोग मुझसे डरतेहैं कदाचित्तू अपने ऐसे कामोंको न छोड़ेगा तो इससेभी अधिक दंडपावेगा उस पचके जो उसके देहमें चिपकाथा पढ़नेसे विदित हुआ कियह अखजरफैलगोश है अति शीघ्रतासे उसे खोलकर खीमेमें लाये और उसके शरीरके सबदाग़ छुटाकर उसे कपड़े पहिनाये तब वह कहने लगा कि अब क्योंकर मदायन में जाकर लोगोंको मुंह दिखलाऊंगा यह कह करएक खंजर अपने पेटमें मारकर मरगया और संपूर्ण सत्तर हजार सेना अखजरकी लोथ उठाकर मदायनकी तरफ चली गई जबयह हाल अमरूको पहुंचा कि अखजर अपने हाथसे खंजर मारकर मरगया और उसकी सेनालोथ लेकर मदायनको चली गई तो अति प्रसन्न हुआ और उसी समय कावेमें जाकर निमाज पढ़ी और क़िलेका दरवाजा खोलकर यह वृत्तांत मेहरनिगार से जाकर कहा उसने भी सुनकर अति प्रसन्न होकर अमरूकी विजयकी मुबारकबादी देनेलगी तब अमरूने नगर बासियोंको बुलाकर सबकी मेहमान दारी की और कहा कि आपलोग कृपाकरके तीसहजार अशरफी की जिन्स भोजन के लिये मँगवादेवें उन लोगोंने कहा ईश्वर आपको सदैव विजय किया करै जिन्स हम लोग अति शीघ्रही मँगवादेवेंगे परंतु हम लोगोंको इतना डरहै कि जिस समय नौशेरवां अखजर फैलगोश की लाश देखेगा नहीं मालूम कितनी सेनाभेजेगा या खुदचढ़ आवेगा उस समय हम लोगोंको सिवाय प्राण देनेके और न सूझेगा उससे कौन युद्धकरेगा इसकारण से आप किसी दूसरे क़िलेमें जिन्स रखवाकर रहिये और हम लोगोंका प्राण बचाइये कि सब लोग आपको आशीर्वाद देवें और छिपे २ सहायता भी जो होसकेगी करते रहेंगे तब अमरूने अब्दुल मुत्तलिबसे कहाकि इसप्रकार से नगरबासी कहतेहैं उसने कहाकि जो कुछ ये बिचारे कहतेहैं वह सत्यहै उनको हर प्रकारसे दुःख होगा अमरूने बिचारा कि खाजेकी भी यही सलाहहै कि इस नगर से दूसरे स्थान पर चलकररहैं कि मक्के के बासी नौशेरवां से छुट्टी पावें तब अमरूने अपने सेनापतियों से वृत्तांत कहकर पूंछाकि कहां चलना

चाहिये आदी ने कहाकि अभीतो चलकर क़िले तंगमें बास कीजिये फिर और कोई दूसरा क़िला देखकर लेलिया जावेगा अमरूने उसी समय सेनाको क़िलेसे बाहर किया और दोपहर रात्रि व्यतीत होनेपर मुहरनिगार को सहाकेमें बैठाकर क़िलेसे बाहर किया और सर-दारोंऔर नगर बासियों को उसकेसाथ करके रवाना किया और स-रात्रि वह सेना मलकाकी रक्षा करतेहुये चली गई प्रातः काल होते सेनाको अमरूने एक स्थानपर उतारकरदानाघासपानीघोड़े बैलोंकेलियेऔर सेनाके भोजन आदिक के लिये सामान बटोरा और उस बनमें डेढ़ पहर दिनचढ़े तक वह सेना ठहरीरही और मुक़बिल और सरदारों को मलकाकी रक्षामें करके आप एक साधु का रूपधर कर क़िले तंग कीतरफ चला और दोपहर होते क़िलेके समीप जाकर पहुंचा परन्तु बालू धूपसे जलरही थी उसीमें धूपके कारण अति व्याकुल होगया और प्यासके मारे इधर उधर घूमने लगा परन्तु जाते जाते एक स्थान अरदूरसे कुछ वृक्ष सायेदार दिखाई दिये तो अति प्रसन्न होकर उनकी तरफ दौड़ा जाकर समीप देखा कि एक चरवाहा कमरी बिछाये उस स्थानपर बैठाहै उसने इनको देखकर सलाम करके पूछाकि आपकहांसे आतेहैं और क्या प्रयोजनहै अमरूने उत्तर दिया कि माता पिताके पेट से आयाहूं आदमी का स्वरूपहूं उसने कहा कि वहांसे तो सब आये हैंकेवल आपहीने यह मरतबा नहीं पायाहै परन्तु बतलाइये तो कि आप कहांसे आतेहैं और कहां जाइयेगा साधुबनकर ऐसा दुःख क्यों उठातेहैं अमरूने कहा बाबा मैंसे आताहूं मदायन को जाता हूंवहां पहुंचकर आराम पाऊंगा पर इस समय क्षुधाके मारे अति व्याकुलहूं और प्राण निकल रहाहै उसने थोड़ीसी बकरियोंका दूध दुहकर कहा कि बाबा यही इस समय मेरेपासहै और कुछ नहीं है अमरू बोलाकि बाबा साधु हरदम ईश्वरके भजनसे युक्त रहताहै और ईश्वरही का दिया हुआ भोजन करताहै केवल तेरी परीक्षा लेताथा कितू साधु मिजहै या नहीं ईश्वर तेराभला करै और इसका बदला देवे थोड़े समयकेपश्चात् उससे एकअज्ञान मनुष्यों की तरह पूछने लगा कि भला इस क़िलेमें कौन रहताहै और उसके अधिपतिका क्यानाम है वहसाधुओं को मानताहै या नहींचरवाहेनेकहा कि ऐ बाबाआगेतो इसमें ईश्वर पूजकों का राज्यथा परन्तु जबसे अमरू नाम एक मनुष्य बागीहुआहै तबसे बादशाहने सब स्थानोंपर अपने सरदारभेजेहैं उसी तरह यहां भी एक सरदार है जिसका नाम हमरा जर्रीहे अमरू यह हाल सुनतेही व्याकुल होगया और कहनेलगा कि ईश्वरनेबचाया कि मैं मलका को यहां नलाया नहीं तो मुफतही हाथ से जाती यह विचार कर एक नैनिकाली और उस चरवाहेके आगे रखदी चरवाहा

उसको देखकर कहनेलगा कि शाह साहब मेरेपासभी एक मथी परन्तु वह ऐसी उत्तम न थी और वह अबथोड़े दिनोंसेगुमभीहोगईहै अमरू बोला कि कृपाकरके बताइयेतो और वह अबमैं आपको अपनी निशानी देताहूं परन्तु आपका बनानातासुनेंकि चित्त प्रसन्नहोवे देखेंकिस प्रकार बनातेहोतब उस चरवाहे ने निःसन्देह होकर अपने मुखके समीप उसने को लगाकर जोर से फूंका तो सब जहर उसके मुखमें चला गया और बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू ने उसी स्थान पर एक गढ़ा खोदकर उसको गाड़दिया और आप उसकी सूरत बनाकर किले के दरवाजे पर जाकर रोनेलगा और अपना ऐसा हाल बनाया कि सबको आश्चर्य मालूमहुआ और बहुत से मनुष्य उसके समीप आकर जमाहो गये और एक सिपाही ने जाकर हमरा से उसका हाल कहा वह उसे बहुत मानता था आज्ञादी कि जल्द मेरे पास लावो उसका हाल मुझे देखावो कि उसको धीर्य दें कि वह अपनी बीमारी से छुट्टी पावे करीब शामके सिपाही लोग उसे उठाकर लाये हमरां उसे देखकर रानेलगा तबतो अमरू ने अपनी और खराब सूरत बनाई और पृथ्वी पर लोटने लगा तब हमरांने पूछाकि सत्य तू बता तुझे क्या बीमारी है उसने कहा क्या बताऊं मैंने अपनी बकरियां चरा रहा था और बनकी ठंढ़ी २ वायुकी सुगन्ध ले रहाथाकि तीसरे पहर को एक सेना कावेकी तरफ से आई और उसमें एक डाली थी जिसके चारों तरफ बहुत से सरदार लोग पहरे पर मुक़र्ररथे आकर मेरे पास कहनेलगे कि हम मक्के से आतेहैं और भूखहैं तुम्हारी बकरियों को खायंगे जब हमने मनाकिया तो हमका बहुत पीटा कि थोड़ी देरतक बेहोश पड़ा रहा और बोटी २ में दरद होरही है हमरांने पूछा कि फिर वे मनुष्य किधरगये बनेहुये चरवाहे ने कहा कि वे अमन की ओरगये हैं तब तो हमरां ने प्रसन्न होकर कहा कि अमरूथा मक्के के वासियोंने नौशेरवां के डरसे अपने नगरसे निकाल दिया होगा अब वह मेहरनिगार को लेकर किले अमनकी तरफ जाताहोगा यहविचार करके कि चलकर मलका को छीनकर बादशाह को देकर प्रतिष्ठा प्राप्तकरें यह कहकर अपनी सेनाको साथ लेकर दौड़धाया तब अमरू ने किले से निकलकर अपनी राहली और सेनामें जाकर सुलतान बखतमगरबी को हामरां की सूरत बनाकर सेनासमेत किलेमें प्रवेश करके किले वालों को मारकरके अपना प्रबन्ध करके और पुलका तख्ता उठाकर आराम से बैठा और बहुरूपियेपन में अपना नाम प्रसिद्ध किया अब हमरांका हाल सुनिये कि बीस बाईस कोसतक धावा किये चला गया और कहीं पता न मिला तो लाचार होकर पलटकर अपने किलेके समीप जो आयातो किलेपरसेआतशबाजीऔरतीरआदिक छूटने

लगे तो बहुतसे सिपाही मारेगये हमरां बड़े आश्चर्य में होकर कहने लगा कि यहक्या बातहुई कि किलावाले हमारेशत्रु होगये तबकिले के समीप से हटकर दूरबीन लगाकर देखा तो कोई अपना सिपाही न दिखाई पड़ा सबनवीनही मनुष्य दिखाई पड़े पीछे को विदितहुआ कि कलजो चरवाहा हमारेपास आकर रोताथा वहअमरू था उसने इसयुक्तिसे हमको निकालकर किलेको लेलिया और अब अपना प्रबन्ध करके बैठाहै तबसरदारोंने कहा कि अब आप धीरज धरके किलेको चारोंतरफसे घेरेपड़े रहिये और जिन्स कहींसे न जाने पावे जबजिन्स किलेमें नहींहोगी तोआपहीकिलाछोड़कर भागजावेगा क्योंकि कोई मनुष्य बिना भोजन के एकदिनभीनहीं रहसक्ता है तब हमरांने कहा कि इतने दिनोंतक कौन आसरा देखेगा उत्तम यहीहै कि नौशरवां के पास चलकर सबवृत्तान्त उससे कहैं जैसीवह आज्ञा देवे वहफिर आकर करेंगे यहविचार करकेमदायनकी तरफ चलाऔर थोड़े दिनोंके पश्चात् जाकर पहुंचा तो उससमयबादशाहअपनीसभामें बैठाहुआ देशोंका प्रबन्धकररहा था अबहरमरका हालसुनिये कि वह सभामें जाकर बादशाह के पैरोंपर गिरपड़ा तोबादशाहनेउसकोछाती से लगाकर सबवृत्तान्त पूछा तबउसने सबवृत्तान्त कहकर विनय किया कि मेरेनिकट यही उत्तम है कि जबतक हमला न आवें तबतक आप अबचुप रहिये बादशाह क्रोधित होकर कहने लगा कि तुझ ऐसा नपुंसक मैंनाबनूं तो चुपहोकर बैठरहूं तबबुजुरुजमेहर ने कहा कि ऐसेमहाराज यह नपुंसक नहीं है परंतु अति बुद्धिमान् है और दो कार्यों के कारण पलट आयेहैं एकयह कि एकसिपाही से युद्ध करके अपनी प्रतिष्ठा राज कुमार होकर क्यों खोवें दूसरे बहुत दिनोंसे गये थे आपके स्नेहके कारण चलेआये हैं तबबादशाह ने बखतक की ओर सम्मुख होकर कहा कि बखतियारक जो गयाथा उसकी भी कोई युक्ति न चलसकी उसनेभी अमरू के हाथसे धोखा उठाया तब हरमर ने कहा कि उसकी दाढ़ी मोछें पेशाबसे मूड़कर स्त्रीका स्वरूप बनाकर बेवस करके फैलगोश की गोदमें बांधकर लेटा दियाथा उसने नशे की उतारमें बेजाने हुये उसके साथसो जानकर भोगकरने को इच्छा की थी बादशाह इसको सुनकर बहुतहँसे और अमरू की चलाकी परबड़ा आश्चर्य किया तबबुजुरुजमेहरने कहा कि महाराज फैलगोश ऐसा पहलवान आपकी सेनामें कमहोगा और वहां ठहरा है ता अवश्य अमरू को दंडदेगा दूसरे सरदारों ने सुना कि बुजुरुजमेहर फैलगोश की प्रशंसा करताहै तब वे लोगभी मिलकर खाने की प्रशंसा करनेलगे और बादशाह जबसभासेउठकर शबिस्तान हरम में हरमर समेत गया तो तीन दिन तकनाच रंग करवाता रहा

और चौथेदिन महलसे न्यायशाला में आकर सबसरदारों के आनेको आज्ञादी कि थोड़ी समय में किसीने अदालत की जंजीर को खट खटाया और दोहाई देनेलगा बादशाह ने कहा कि देखो तो कौन है उसको यहां बुलालो आज्ञा पातेही सिपाहियों ने उनको लाकर हाजिर किया तो देखा कि एकमुरदा उनके पासहै और सब दुखित हैं बादशाह ने पूछा कि क्याहुआ तो उनलोगों ने कहा कि यहअखु-नर फैलगोश की लोथहै और इसीसे सेनाने कालावस्त्र धारण किया है तब बादशाह ने पूछा कि यहक्योंकर मारागया तब साथियों ने सब वृत्तान्त वर्णन किया तो बादशाह ने क्रोधित होकर कहा कि इस पापीने बड़ा दुःखदिया है और अपने को बड़ा बहादुर समझता है अच्छा अब हमारा अगुवानी खेमाचले और सेना एकट्ठी की जावै हम आपही अब जाकर उसको मारेंगे तबनौलाख सेना समेत अगुवानी का खेमा रवाना हुआ और बादशाह ने कूच न कियाथा कि इतनेमें खबर आई कि जोपीन काबुली फिरसेना लेकर आता है तो थोड़ेसे सरदारों को आज्ञादी गई कि अगुवानी लेकर हमारे समीप लावै कि हमभी उसको देखकर चित्तको प्रसन्न करें इतनेमें हामरा जरीने सन्मुख आकर सबवृत्तान्त क़िलेके छूटनेका सुनाया बुजुरुजमेहर ने कहा कि विदित होताहै कि मक्केके वासियोंने अमरू को निकाल दिया अब अमरू को पराजय करना कुछबड़ी बातनहीं है जो जायगा वही विजय पावेगा बादशाह आपखुद अब अपने ऊपर दुःख न देवें बाद-शाहने बुजुरुजमेहर से कहा कि उत्तम है हमारा खेमा लौटा लिया जावे और सबसेना अपने २ स्थानपर जाकर आराम करे परन्तु तुम शाहजादों को लेकर जावो और अमरू को परास्तकरोउसनेकहा मैंतो आपका सेवकहूं जानेको आरूढ़हूं तबबादशाह ने बुजुरुजमेहर को चालीस सहस्र सेना देकर सबशाहजादों समेत अमरू को पराजय करने को और मेहरनिगार के लेआने के लिये खिलअत देकर भेजा जिस समय यहसेना क़िलेतंग रवाहिलपर पहुंची तो जोपीन ने देखा कि क़िलेके दरवाजेपर एकनमगीरा अतलस का जड़ाऊ खींचाहै और सब बादशाही सामान उसमें रक्खाहै और उसके नीचे अमरू एक जड़ाऊ कुरसीपर शाहाना पोशाक पहिने बैठाहै और सबछोटे बड़े यथा उचित खड़ेहैं और मुक़ाबिल भी बारह सहस्र तीरन्दाज लिये बराबरसे पीछे खड़ाहै और सब सरदार लोग कुरसियोंपर बैठेहैं और सब सिपाही बराबर से हथियार लियेहुये क़िलेकी दीवारोंपर युद्ध करने को तैयार हैं शाहजादों ने बुजुरुजमेहरसे पूछा कि कौनसी युक्ति करनी चाहिये कि यहहाथ आवे खाजेने कहा कि इससमय युद्ध क-रना उचितनहीं है क़िलेको चारोंतरफ़ से घेरकर पड़े रहिये जबइन

के पास जिन्स न रहेगी तो युद्धकरके किला लेलेना होगा तबशाह-
जादों ने बख्तियारक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है उसने कहा
कि जो खाजे कहते हैं वहअति उत्तम है परन्तु इतने दिनोंतक कौन
पड़ा रहेगा इससेयही उत्तम है कि क़िलेपर धावाकिया जावे तब
शाहजादों ने जोपीन से धावाकरनेकीआज्ञादीजोपीननेसेनाको धावा
करने की आज्ञादी तबतक अमरू बैठातमाशा देखाकिया जबसेना
शाहजादों की क़िलेपर पहुंचगई तबअमरूने ललकारकर कहा कि अब
दौड़कर मारलेवो एकभी न जानेपावे तबअमरू की सेनाने आतशबाजी
और तीरमारकर हजारहींसेनाकेमनुष्योंकोमारडालापीछेशाहजादों
की सेना भागकर चली आई तबशाहजादों ने बख्तियारक से पूछा
कि अबक्या करना उचित है तबउसने कहा कि अबडंका लौटका बज-
वाकर चलकर क़िलेको घेरकर पड़ेरहिये जबक़िलेमें जिन्स न रहेगी
तो कुत्तोंकी तरह बुलाकर सबको मारलेवेंगे तबशाहजादों ने डंका
लौटका बजवाकर सेनाके पलटनेकी आज्ञादी औरबख्तियारककेकहने
पर पलटकर अपने खेमोंमें आकर उतरे अमरू का हाल सुनिये कि
जिससमय शाहजादों ने युद्धकरना बन्दकरके क़िलेको घेरलिया तो
अमरू ने अपनी सेनाके सरदारों को आज्ञादी कि इसक़िलेमें रहकर
शत्रुसे बचना दुर्लभ है क्योंकि सेना शत्रुकेपास अधिक है इससे तुमलोग
इसक़िलेको रक्षाकरो मैंदोतीन दिनमें दूसरा किला ढूंढ़कर आता
हूं तो तुमकोभी लेचलूंगा यहकहकर भेषबदलकर क़िलेसेनिकलाजाते २
दूसरेदिन क़िलेश्रिकोहपर पहुंचा जो कि क़िलेतंगखहिलसे सातकोश
पश्चिम था जाकर जो देखा तो क़िलेमें जानेका कहींरास्ता न दिखाई
पड़ा जानेकी युक्ति शोचरहा था कि इतनेमें एकघसियारा क़िलेमेंसे
घासलिये निकला तो अतिशीघ्रही आप घसियारा बनकर उसके
पासगया और पूछनेलगा कि तूघास बेचेगा उसने कहा कि साहब
मेराकाम क्याहै अमरूने पूछा कि तूइसो क़िलेमें रहता है उसने
कहा कि हांसाहब इसीक़िलेमें रहताहूं फिर अमरूने पूछा कि इस
क़िलेका स्वामी कौनहै और उसका स्वभाव कैसाहै उसने कहा कि
दाराब और सोहराब दो भाई हैं परंतु बड़े नोकटोक के मनुष्य हैं
अमरू घसियारेसे यहबातेंकररहाथा कि इतनेमें एकओरसे सोहराब
की सवारी आनिकली अमरूने देखकर पूछा कि यहसवारी किस
कीहै उसने कहा कि सोहराब मियां यहीहैं अमरू सोहराब का
नाम सुनकर अति प्रसन्न होकर कहने लगा कि तूयहीं खड़ारह मैं
अभी आताहूं यहकहकर एकवृक्ष के ओटमें जाकर अपना असली
रूप बनाकर सोहराब के पास जाकर अति नमता के साथ सलाम
करके खड़ाहुआ और रोनेलगा तबसोहराब ने उसके स्वरूपको देख

करजाना कि कोई प्रतिष्ठित मनुष्य है दुःखके मारे रोरहा है घोड़े को खड़ाकरके पूछाकि आप कौनहैं अमरूने हाथ जोड़कर कहा कि आपने सुनाहोगा अमरूका नामसो मैंहीहूं आपके समीप आयाहूं कुछ प्रयोजन है मलिका मेहरनिगारने मुझको आपके पास भेजाहै आज्ञाहोवे तो आपसे कहूं सोहराब मेहरनिगार का नाम सुनकर अति प्रसन्न होकर सब लोगोंको हटाकर कहनेलगा कि जो कुछकहना हो अबकहो अमरूने रूमाल से आंसूपोंछकर कहा कि आपने सुना होगाकि हमजा नाम एकअरब के रहनेवालेने मेहर निगारको तलवार केबल से नौशेरवां के घरसे निकालकर अपने घरमें रक्खाथा लेकिन हौसिला पूरा न होने पायाथा कि एक प्रयोजन ऐसापड़ा कि अठारह दिनके लिये परदेशको मलकामेहर निगार कोमुझे सौंपकर गया था और मुझको आज्ञादे गयाथा कि जब तक मैं न आऊं मलका की रक्षा करनेमें कोताही न करना परन्तु अब कईवर्ष व्यतीत होगये और उसका कुछपता नहीं मिला कि मारागया या जीताहै सो अब मेहर निगारने मुझसे कहाहै कि अब तुम मुझे किसीके पास करदेना नहीं तो कोईतुमसे छीनकर लेजावेगा मुझको भीलज्जाहोगी और तुमकोभी सोमैं उसकी तालाशमें आयाहूं और आपका स्वरूप हमजाके समान देखकर स्नेहसे रोआई आगईहै और पांचहजार अरबीमेरी तलाश में फिररहेहैं कि मुझको मारकर मेहर निगार को छीनकर नौशेरवां के पास लेजावैंसोजो आपमेरी रक्षा हमजाकी तरहकरें और यह इकरार करें किपीछेसे तुमको पकड़कर नौशेरवां के पास न भेजेंगे तो मैं मलकाको लाकर आपको सौंपकर आपकी आज्ञामें होकर रहूं सोहराब मेहर निगारका नाम सुनतेही घोड़ेपर से उतरपड़ा और अमरूको छातीसे लगाकर कहनेलगा कि नौशेरवां क्या मालहै जो सारी दुनियां चढ़ करआवे तौभी मुझसे मेहरनिगार को न पासकेगा और तुमको मैंहमजा सेभी अधिक मानूंगा किसीप्रकारसे दुःख न होने पावेगा और यह किला सिकन्दर कावनवायाहै ऐसा पुष्टबना है कि कोईइसमें प्रवेश नहीं पासक्ताहै चलो हम तुमको सब क़िलाके स्थानों को देखा देवैं यह कहकर अमरू कोसाथ लेकर क़िलेमें आया जब अमरू क़िलेमें पहुंचा सो ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा और कहनेलगा कि अब ईश्वर के प्रतापसे क़िला मिलजावैगा और सोहराब को भी धोखा दूंगा क़िलेके स्थानोंको देखकर अति प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि ऐसा क़िलामैंने संसारमें कहीं नहीं देखाहै तब सोहराबने अमरू को दीवानखाने में लेजाकर बैठाकर सब सामान उसके लिये इकट्ठा करके अपने भाई दाराबसे अमरूके आनेका हाल कहा और कहने लगा कि मेरी बड़ी भाग्यहै कि मेहर निगार ऐसी स्वरूपवान स्त्री और अमरू

ऐसा सिपाही मिला दाराब उससे बुद्धिमान था उसने सुनकर कहा कि विदित होताहै कि तेरी भाग्य उलटगई है कि तू अमरूके जाल मेंआगया देखना अमरू तुमको कैसा धोखादेगा परन्तु सोहराब अमरूके दममें ऐसा आया था कि उसका समझाना उसके चित्तमें न आया और अपने नेकबद पर दृष्टि न की और अमरू की बातोंसे सब सत्यही मालूम करके कहा आपभी बुलाकर पूछ लीजिये और उसके असत्य और सत्यको विचार लीजिये दाराब ने कहा कि अच्छा बुलवावो हमभी देखलेवें सोहराबने अमरूको दाराबके सन्मुख बुलाया अमरूने दाराबके समीप आकर नमताके साथ सलाम करके प्रशंसा करनेलगा तो दाराब भी उसके दममें आगया और उठकर अमरू को गलेसे मिलाया अमरूने जब देखा कि दाराब भी मेरेदममें आगया है उठकर सलाम किया और कहा कि अब आज्ञाहोवे तो जाकर मलका मेहरनिगार को लेआऊं परंतु द्वारपालकों को आज्ञा दीजिये कि जिस समय मैंआऊं चाहे दिनहो या राचि मना न करें तब दाराब ने द्वारपालकोंको बुलाकर आज्ञादी किखबरदार जिससमय अमरू आवे बिना हमारी आज्ञा सेनासमेत आनेदेना और आजसे क़िलेका स्वामी अमरूहै जोइसका कहना न मानेगा वह दण्डपावेगा नौकरों को क्या चारा प्रासवानोंने स्वीकार किया और एकदूसरेको आज्ञा सुनादिया तब सभोंने स्वीकार किया और बाहर निकलकर सोहराब ने दाराबसे कहा कि हमभी अमरूके साथ जायँगे नहीं तो कोई रास्तेमें मलका को छीनलेवेंगे हाथसे ऐसी उत्तम वस्तु निकल जावेगी दाराब ने कहा कि तुम्हारे जानेकी कुछ आवश्यकतानहींहै अमरू बड़ायलीहैवहकिसी युक्तिसे लेआवेगा परन्तु उसने न माना पश्चात् जब अमरूके साथ चला और पांचकोश क़िलातंग वाहिल बाकीरहा तबहीं सोहराब को ठहराकर कहा कि आप यहीं रहिये हमजाकर मलिकाको लेआते हैं उसको धोखादेकर क़िलेमें पहुंचा और सब वृत्तांत सरदारों सेकह करविचारकरने लगा किसी युक्तिसे सोहराब कोमरवाडालना उचित है परंतु कोईयुक्ति बिचारमें न आई पीछेको बिचार करके जासूसों की सूरत बनाकर हरमर की सेनामें कोतवाली चबूतरे से होकर जा निकला सिपाहियोंने जासूस समझ कर पकड़ लिया और उस से पूछने लगेकि तू कौनहै और कहांसे आताहै वह भायँ २ करने लगा कुछ उत्तर न दिया तब कोतवाल ने जाकर बुजुरुचमेहर से कहा कि एक जासूस आयाहै सिपाहियोंने उसको गिरफ्तार किया है परंतु कुछ बोलता नहींहै बहिरोंकी तरहभायँ २ करताहै और पूछनेसे कुछउत्तर नहीं देताहै खाजेने बुलवाकर अरबी फारसी तुरकी कश्मीरी आदि भाषाओं में पूछा कितू कौनहै और किसने तुझको यहां भेजाहै मुझ

सत्य २ बतातो मैं तुझको पारितोषिक देऊंगा और अनेकप्रकारसे प्रसन्न करकेछोड़दूंगा जबकुछ न बोला तो पहलवान जो ख्वाजेके समीप बैठे थे उन्होंने कहा कि सीधी अंगुलीसे घी नहीं निकलता है मोम बे अग्नि पिघलता नहीं टिकठी में बंधवाकर मरवादूये तो अभीसब बतला देगा ख्वाजेने कहानहीं जो यहबतलादेवे तो यही खिलअत जो हमबादशाह की दीहुई पहिनेहैं उतारकर देदेवें और पांचतोड़े अशरफी और देंगे यहकहकर उसकोप्रसन्नकिया और कहाकि अबतू सत्य २ हमसे कहदे मैं नौशेरवां के शिरकी सौगन्धखाकर कहता हूं कि तुझको छोड़दूंगा और अनेक प्रकार से तुझको प्रसन्नकरूंगा यहकहकर खिलअत और अशरफियां देकर अमरूके मुंहमें पानी भरआयातब उसनेपश्चिमीभाषा में कहा कि मैं क़िलेकरगिस्तान की लेनेकी युक्तिमें हूं किवहां जाकर आराम पाऊं इसलिये सोहराबको यहांलेआया हूं और मैं अमरू हूं भेषबदल कर आपसे कहने आयाहूं कि आजवहआपकी सेनापरछापा पड़ेगा सो किसी युक्तिसे उसको मारडालिये या पकड़लीजिये कि मेरा कार्य सिद्ध होजावे ख्वाजे ने अमरू को सहस्र अशरफी और देकर जाने की आज्ञादी और हरमर से जाकर कहाकि आज एक भेदिया हमने पकड़ाथा तो मैंने उसको लोभ देकर पूछा तो विदित हुआ कि अमरू सोहराबको अपने जालमें फांसकर लायाहै सो आज वह हमारी सेना पर छापा मारैगा तब बादशाहज़ादों ने पूछा कि आपने कौनसी युक्ति विचारीहै उसने कहा कि सरदारोंको बुलाकर आज्ञादीजिये किआज सवेरे खा पीलें और चारघड़ी रात्रि व्यतीत होने से जाकर पहाड़ के निकट छिपकर बैठरहें जब छापा पड़े और लूटने लगे तो निकल कर शत्रुको मारलेवें या सोहराब और अमरूको ज़िन्दापकड़लेवें तो अति उत्तमहैहरमनने उसी सायत सरदारोंको बुलाकर आज्ञादी कितुमको जो कुछ ख्वाजे आज्ञादेवें वही करो अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि क़िलेमें जाकर अपनी सेना के सरदारों को आज्ञादी कि सवारियां सायंकाल से तैयार होकर आवें और सब कमरबांधे तैयाररहें जब मैं आऊं उसीदम सबको लेकर चलूंगा सब युक्तिकरनेके पश्चात् सोहराब के समीप मुंहबनाकर गया तो उसने पूछा कि कुशलतोहै क्यों दुःखी हो अमरूने कहा कि क्याकहूं कुछ कहनहींसक्ता कि क्या हालहै कि जब मैंने जाकर सब हाल आप का मलिका से कहा तो वह भी आप का हाल सुनकर अति मोहितहुई और जोंहीं मैंने इच्छा की थी कि मलिका को मियाने में सवार कराकर आपके समीप लेआऊं इतने में एक सिपाही ने आकर खबर दी कि एक सेना क़िले के बाहर पड़ी है परन्तु विदित नहीं होता कि क्यों आई है और किसकी सेना है मैंने जाकर लोगोंसे पूछा तो विदित हुआ कि बादशाहने बुजुरुजमेहर को

मलिका के लिये भेजाहै कि तुमजाकर समझाकर लेआवो सो उसी समयसे मैं बड़ेसन्देहमेंहूं कि ऐसा नहो कि मलिकाउसके कहने पर चलीजावे सो मेरे पास हजार सिपाही भी होंतो मैं उसको छापा मारकर हटादेता सोहराब ने कहा कि तुम सन्देह न करो मुझको चलकर उसकी सेना दिखादो तो मैं उसको हटादूंगा यह सुनकर अमरू प्रसन्नहोकर और उसकी प्रशंसा करने लगा कि बड़ी भाग्य मलिका की हुई कि आप ऐसा पुरुषमिला तबतो सोहराब और भी फूलगया और सेना को साथ लेकर अमरू के साथ हुआ जब क़िले के समीप पहुंचे तो अमरू सोहराब को उसीस्थान पर ठहराकर हरमर की सेनामें गया तो देखा कि सब खेमे खालीपड़े हैं वहां से पलट कर सोहराब को बुलाकर हरमरकी सेना के खेमे दिखाकर आप चला गया सोहराब ने जो जाकर देखा तो सब असबाब पड़ाहै और कोई मनुष्य नहीं दिखाईपड़ा तब उसने विचारा किमेरे डरसे सुनकर कहीं जाकर छिपेहोंगे सब लूटलाट के चलने की इच्छा कीथी कि हरमर की सेनाने आकर चारोंतरफ से घेरकर बहुतों को मारकर सोहराब को थोड़े सरदारों समेत पकड़कर क़ैदकिया अब अमरू का हाल सुनिये कि वहां से आकर मेहरनिगार को स्त्रियों समेत डोलियों में सवार करवाके सेनाके साथ क़िलेसे निकाल कर क़िलेकरगिस्तानकी तरफ जो पश्चिम की ओरहै चला मैंभी थोड़े समय में आताहूं यह कहकरसेना को तो भेजदिया और अपनी सूरतका एक पुतला बनाकर अपने स्थान पर खड़ाकर कईसौपुतला और बनाकर क़िलेकी दीवारोंपर खड़ेकरके हाथोंमें तीर रखदिया दोकुत्ते एक स्थानपर बांधदिया कि एक दूसरे को देखकर भुकरताहै औ एकगधा क़िलेके दरवाजे पर बांधकर उसके ऊपर झूलडालदिया और बहुत से सुर्ग़ ताज़ों पर बराबरसे बैठाकर आप क़िलेके खन्धकका तख़्ता उठाकर वायुकेसमानकूदके पार चला गया और अपनी सेना की तरफकी राहली कईकोश जाकर सेना से मिला और रात्रिहीको सेनाको भगाकर लेगया और दोघड़ीरात्रि बाकीथी कि क़िलेकरगिस्तानके दरवाजे परपहुंचकर सरदारोंसे कहा कि मैं जाके क़िलेका दरवाजा खोलवाताहूं और तुम को यह युक्ति बतलाताहूं कि जिससमय क़िले का दरवाजा खुलजावे तुम लोग स्त्रियों को लेकर भीतर चलेजाना और सब लोगों को एक तरफ से मारना केवल उन लोगोंको छोड़कर जो मुसल्मान होजावें और किसी प्रकार से डर नहीं है सरदारों से यह कहकर आप क़िले पर आया और दरवान से कहा कि मैं अमरू आयाहूं मलकामेहरनिगार दिल प्यारी सोहराबको साथलेकर दरवाजा खोलदेव वहतो पहिलेही से जानेथा क़िलेका दरवाजा खोलदिया सब सवारियां साथ सेनाके क़िले

के भीतर चलीगई तब अमरू अपनी इच्छा पूर्वक कार्य्य करके मलकाको एक स्थान में बैठाकर सरदारों का पहरा करके आप सेना लेकर किले वालोंको मारने लगा और केवल उन्हीं लोगोंको छोड़कर जो मुसल्मान हुये दाराब ने यह हाल देखकर जाना कि अमरू आया किलाहाथ से गया देखें सोहराब का क्या हाल हुआ अमरूने जबदाराब के मारनेकी इच्छाकी तब उसने कहा ऐख्वाजे मैं मुसल्मानहोताहूं मुझे न मार मैंने कलमा पढ़ा अमरूने उसको छातीसे लगाया और कहाकि मुझे तेरे देश क़िलेसे कुछ प्रयोजन नहीं केवल जबतक हमला परदेकाफ़र से न आयेगा तबतक मैं मलकाकी रक्षाके लिये इस तेरे क़िलेमें रहूंगा तत्पश्चात् मुझसे तेरे किलेसे कुछ वास्तानहीं है तुम अपना किलालेना मुझसे तुमसे कुछ शत्रुता नहींहै तब दाराब उसी समय कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ और क़िलेवालोंका बलहीन होकर किला अमरू के हाथमें आगया अब थोड़ा वृतान्त सोहराब का सुनिये कि वह हरमर की सेनामें कैदहोने से अमरूकी चालसे बचरहा था बख्तियारक और जोपीन ने हरमर और बुजुरुच्च मेहरसे कहा कि अब अमरूने क़िलेकर-गिस्तानमें पहुंचकर उसको अपने आधीन करलिया होगा प्रातःकाल होतेही सिपाहियोंको भेजाकि जाकर देखआवोकिक़िलातंग खालीहै या उसमें कोईहै सिपाहियोंने देखकर जाकर कहाकि आदमी बराबर क़िलेकी दीवारोंपर फिररहे हैं और सबप्रकार के पक्षी कबूतर मुर्ग आदि बोलरहे हैं और एकगदहा दरवाजेपर बांधाहै कुछ आसार खालीका नहीं पायाजाता क्योंकर कहें कि खालीहै बख्तियारक ने हरमर से कहा यहझूठ है आप तबलजंग बजवाकर देख लीजिये जोमैं कहताहूं वहसत्य है यहझूठ हरमर ने बुजुरुच्चमेहर को क़ैदियों की रक्षाके लिये छोड़कर आप तबलजंग बजवाकर चला समीप पहुंचकर जोपीनने बख्तियारक से कहा कि देखकहां किला खालीहै वहांसब सामान मौजूद है सबलोग किलेपर खड़ेहैं अमरू शस्त्रलिये खड़ाहै और हरएक निशानगड़े हैं बख्तियारक ने फिरदेखकर कहा कि यहअमरू नहींहै यहअमरूने पुतले बनाकर खड़ेकिये हैं वहदेख वायुसे हिल रहे हैं फलाखनकेपत्थरकी डोरियांएकदूसरेसेलगरही हैंजोपीनके आगे बढ़ा संयोग से एकपत्थर का टुकड़ा उसके उसीघावपर जहां अमरू ने मारा था फिरलगा तबतो उसे और निश्चय होगया कि येपुतले नहीं परन्तु अमरू है जोपत्थर माररहा है उसस्थान से रुधिर में डूबाहुआ भागा बख्तियारक ने कहा ऐजोपीन क्यों भगाजाता है और लोगोंके सामने लज्जा उठाता है तुमऐसे डरपोक मनुष्य कपकाबिस के कुलमें उत्पन्न न होना चाहियेथा कि उनकी बहादुरी का नाम डुबाता है और मरद होकर तुझेलज्जा न आई जोपीननेकहा कि यहभी आश्चर्य

कीबातहै कि अमरू सामनेसे पत्थर मारारहाहै और तू कहताहै कि अमरू नहीं है तो बतावो कि किसने यह पत्थर मारा है बख्तियारक बोला यहभी एक संयोगकी बातहै कि बायुकेबहनेसे पत्थर गिरके तेरे शिरपर पड़ाहै और तेराशिर टूटगया और जो अमरूहोतातो अबतक ऐसे पत्थर बरसाता कि हमलोगोंके दमफूल जाते और भागते न बनता और दीवारों परसे ऐसी आतशबाजी की दृष्टिकरता कि लोग बे मारे मरजाते और भुनवेके भाड़की तरह चनेके समान जलजाते जाकर दरवाजेको तोड़मेरे कहनेपर यक़ीन जान पसलाचार होकर जो पीन खन्दक के पार गया और दरवाजेको तोड़करहरमर जाफरां मरजको बख्तियारक और २ सरदारों को साथलेकर क़िलेके भीतर गया तो देखाकि दरवाजेपर एक गधा बांधाहै और अंदरताखों पर बराबर से कबूतर व मुरगावी चुनेहैं और बोलरही हैं और क़िले पर बराबर से कागज के पुतले खड़ेहैं जोपीन ने जाके अमरूके पुतलेके पेटमें एक बरछी मारी तो उसमेंसे एक गीदड़का बच्चा निकलकर भागातो जो पीन ने बख्तियारक से कहा कि इस क़िलेमें तो बड़े २ तमाशे दिखाई देते हैं बख्तियारक ने कहा कि यह अमरू का प्राणहै कोई जाकर पकड़ लावे यह सुनकर सबलोग हंसनेलगे और जबहीं याद आवे तभी हँसने लगें तब पश्चात् हरमर ने सेनामें जाकर बख्तियारक से पूछा कि अब क्या करना उचितहै यह दोबड़े आश्चर्य की बातें हुई कोई युक्ति करनी चाहिये उसने कहाकि अमरूकापीछाछोड़ना उचितनहींहै औरसिवाय इसके अभी वहनये क़िलेमें गयाहै अभी अच्छेप्रकारसे उसका सामान जुदा होगा हरमरने कहायही उत्तमहै तबतो हरमरने बुजुरुजमेहर कोबुलाकर कहा कि खाजेतुमतो सोहराबको लेकर बादशाह के पास जाकर जो कुछ देखा बयानकरो और मेरीपत्री देकर कुछआज्ञा लेना बुजुरुजमेहर सोहराब को लेकर मदायन को रवाना हुआ और हरमर जाफरांमरज जोपीन और बख्तियारक अस्सी सहस्र सेना लेकर क़िले गुरस्तान परगये वहां जाकर क़िलेको घेरा और रसद न जाने की आज्ञादी अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसनेछः महीने भोजन के लिये जिन्समोल लेकर क़िलेमें रखवाली और क़िलेको अच्छी तरह से बनवाकर बन्दकरके दरवाजेपर एकशामियाना खड़ाकर के उसी में जड़ाऊ कुरसियां बराबर से रखवाकर बादशाहसे भी अधिक लिबास पहिनकर बैठा कि इतनेमें हरमन जाफरांमर्ज सेनालेकर पहुंचे और बख्तियारक की सलाह से क़िलेपर चढ़ाई की अमरू ने जो देखा कि सेना समीप आगई है अपनी सेनाको आज्ञादी कि देखना जाने न पावे हरएक को इसी स्थानपर मारो इतनेमें हरमर की सेना परतीर कारूरा पत्थर आतशबाजीका मेह बरसाने लगे कि हर

एक मनुष्य प्यासके मारे मरने लगे कई सहस्र सवार मारेगये शेषके पैर आगे न उठसके पीछेहीको हटनेलगे बख्तियारक हरमनजफर-मर्जसे कहने लगा कि यहयुक्ति युद्धकरने की नहीं है जो इसप्रकार से युद्ध कीजियेगा तो सबसेना मारी जायगी और कभी बिजय न पाइ-येगा तबतो दोनों शाहजादे नाराज हुये कि क्या बकता है तेरेही कहने से चढ़ाई की और तूही अबयह कहता कितू क्षमाबिल दण्ड पानेके है वहबोला अच्छा बुराई क्याहुई यही न कि हजार सवारमरे आप उनके पालन करनेसे बचे और किलेवाले को मालूम हुआ कि शाहजादा बड़ीसेना साथलेकर हमसे युद्धकरने को आयाहै और वे सीधे अपने बैकुण्ठ को चलेगये अबइस समय डंका लौटका बजवाकर चलकर किसी बराबर पृथ्वीपर डेरालेकर घोड़ोंको दाना और साथ वालों को कुछखाने पीनेको दीजिये और जबकिलेमें जिन्स न रहेगी और बाहरसे भी न जाने पावेगी तो आपही किला खाली करके चले जायँगे शाहजादे ने डंका लौटका बजवाकर डेरा डालकर इसी आ-सरेमें पड़ारहा बुजुरुजमेहर का वृत्तान्त सुनिये कि जिसदिन मदायन में पहुंचा उसीदिन सीधासोहराब को साथलियेबादशाह के दरबारमें जाकर सलाम करके बैठा और सोहराब को सामने करके सब हाल खराबी का कहकर हरमन की बिनयपत्री दी पढ़िले बाद-शाहने सोहराब से कहा कि तू जो अपना प्राण बचाना चाहताहै तो सच २ अपना हालकह मैंतुझे दण्ड न दूंगा सोहराबने अमरूके बह-काने और अपने कैदहोने का सत्य २ हालकहकर बिनय किया कि जो यह अपराध बादशाह मेराक्षमाकरके प्राणको छोड़दीजिये तो अब सदैव आपकी सेवामें रहूंगा बादशाह ने उसका अपराध क्षमाकरके हरमन की बिनय पत्रीको पढ़वाकर सुनातो उसमें लिखाथा कि मुझे आपकी आज्ञासे चारबरस से अमरू से युद्धकरते हुआ और एक दिनभी बिजय की सूरत नजर न पड़ी इससे निश्चयहै कि अमरू के युद्धमें हमलोगों को बिजय न मिलेगी और दिनराचिही डररहता है कि कहीं अमरू सोतेमें मार न डाले या पलंगपर से उठाकर किसी और दुःखमें डाले इसकारण से आपका इसतरफ आना अवश्य है और आपके आनेसे अधिकसेना देखकर उसके सहायक लोगभी न आवेंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि वहखुद आकर आपके पैरोंपर गिरे और अपना अपराध क्षमाकरावे और इसतरहसे वृथासेना मारीजाती है और हमलोग भी हलाक होतेहैं आगे आप मालिक हैं जिसतरह से आज्ञा दीजियेगा वैसा हमलोगकरेंगे बादशाह ने पहिले यहपत्र पढ़-कर बख्तक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है उनको बुलालेना अच्छा है या नहीं बुजुरुजमेहर से पूछा कि तुमक्या कहतेहो उसने कहा कि

जो पहिले मैं कहचुकाहूं कि आपका अमरूसे युद्धकरने के लिये जाना आपकी प्रतिष्ठा से बाहर है और जो शाहनशाह सुनेगा तो वहभी नाराज होगा कि एक सिपाही से युद्धकरने के लिये खुद बादशाह गया और सिवाय इसके हरएक मनुष्य आपकारोष न करेगा और जो संयोग से हरमर की तरह आपको भी उठालेगया तो जो उसने आप को जीताभी छोड़दिया तो बड़ेलज्जाकी बातहोगी और जो मारडाला तो सातोंदेश अनाथ होजायँगे और जिसतरह का वहबदबला है वह तो आप जानतेही हैं इससे आपको जाना उचित नहीं है यहबातें सुनकर बादशाह कांपगया और आज्ञादी कि बख्तक को मेरे सन्मुख से गरदन पकड़कर निकालदेव यहइसी तरह से सदैव मुझको बहकाकर खराब करता है और आपभी बदनामी लेता है बख्तक को तो गरदन पकड़कर निकला दिया और बुजुरुजमेहर की सलाहपर कारन फीलगरदन जो बड़ा बहादुरथा और अकेला हजार सवारोंसे सामना करताथा एकलाख सवार साथकरके आज्ञादी कि तुम जाकर अमरू को साथ उसके सहायकों को जीते पकड़ लावो ॥

कारनफील गरदन का अमरू को पकड़ने को जाना और
उसका मारा जाना नकीब टारके ।।.से ॥

लिखनेवाले लिखते हैं कि जब कारनफीलगरदन ने हरमर की सेनामें पहुंचकर उससे मिला उससमय उसको अति प्रसन्नता प्राप्तहुई तब रात्रिको दोनों सेनाके सरदारों को बुलाकर शराबपिलाना शुरूकिया और ज्योंहीं एक गिलास शराब भरकर शाहजादे को दिया उसी समय कारनने हरमरसे कहा कि आप जो बहुत दिनोंसे इस स्थानपर पहाड़के समान पड़ेहैं परन्तु एक सिपाहीको न मारसके न पकड़सके किसीतरह की क़ाबू उसपर तुम्हारी न चलसकी जो कोई सुनेगा वह क्या कहेगा हरमरने कहा कि अबतो तुमभी लाख सवार और पैदल साथलेकर आयेहो और तुमभी जैसे बहादुर और बलवानहो वहभी जगतमें प्रसिद्ध है जबतुम उसको मारलेना या पकड़ लेना तबहम तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुमभी ऐसी २ बातेंकहना और अभी तो मार्गके थके थकाये आयेहो थोड़े दिनतक आराम करलो तब हम तुमदोनों मिलकर देखेंगे तबकारनने नाराज होकर कहा कि हमतो सिपाही हैं हमको क्या सुखानेका कामहै केवल इतनीरात्रि व्यतीत होजाने दीजिये सवेरे सवार होकर आप दूरसे तमाशा देखिये हम खड़ी सवारी क़िला खाली करालेते हैं या नहीं यहकहकर अपनी सेना में तबलजंग बजवानेकी आज्ञादी और आपयुद्ध का सामान करने लगा और तुरन्तनफीरी, कुनजनफरी, गावदुम, शेरदुम, कोसहरवी बजनेलगे तब सिपाहियोंने तबलजंग का शब्द सुनकर जाकर अमरू से कहा उस-

नेभी आज्ञादीकि तबलसिकन्दरी बजे कि इसकाशब्द सुनकर कुछउसके भी कान खड़ेहों इसीतरह से सबराचि दोनोंसेनों में तबलजंग बजा किया और पहरे फिराकिये प्रातःकाल होतेही हरमर और जोपीन जो अमरूके हालसे आगाहथे क़िलेसे दूर अपनी सेनालेकर खड़ेहुये कि हमपर और हमारी सेनापर किसी तरहका दुःख न होवे और कारन अपना दलेरीका फलपावे परंतु कारनने अपनी सेनाके चारभाग करके घोड़े दौड़ातेहुये जाकर क़िलेको चारों तरफ से घेरलिया अब अमरूने देखा कि बड़ीसेना क़िलेके चारोंतरफ आगई और बड़ी बहादुरी देखा रहीहै तब सरदारों को बुलाकर आज्ञादी कि आज शत्रुबड़ी सेनालेकर आयाहै आज तुमलोगों का भी इमतिहान् है देखें कौन जवांमरदी और बहादुरी देखलाताहै उचितहै कि सिवाय कदम आगे बढ़नेके पीछे न हटनेपावे चाहेवही मरजावे यह आज्ञा पातेही उसी स्थानपर मुक़ाबिलने अपने बारह हज़ार तीरन्दाजों को तीरचढ़ानेकी आज्ञादी और लेकरआगे पड़कर तीरका छोड़ना शुरूकिया तोएकएक बार २ पांच २ मनुष्योंको मारा एक सायतभरमें कईहज़ार सिपाही मारेगये और जो शेषरहगये थे वे उलटे पीछे को भागे और फिरयुद्ध का नामतक भी न लिया दूसरी तरफसे पत्थर फेंकनेवालोंने जो पत्थरके टुकड़े काटेहुये बरछियों पर घुमाकर मारनेलगे तो एकबारगी दश दशलोट जानेलगे इसीतरह से कई हज़ार मारेगये और बाक़ी व्याकुल होकर उलटे पैरफिरे और तीसरी तरफसे बरकन्दाजों ने इसीप्रकार से मारकर हटादिया और चौथी तरफसे आतशबाजों ने ऐसा आतिश कामेह बरसाया कि कई हज़ार मारेगये और शेषभागगये और इसी-प्रकार से कारनकी कई सहस्र सेनामारी गई और घायल हुई परंतु तिसपर भी कारनफ़ौज गरदन ढालसे अपना मुहबचाता हुआ क़िलेके दरवाजे पर आपहुंचा और प्राणका न भरोसाकरके क़िलेका दरवाजा तोड़नेलगा अमरू यहहाल देखकर व्याकुल होगया परंतु थोड़े समयके पीछेसरदारों कोबुलाकर आज्ञादी कि जाकर दरवाजेपर छिपेखड़ेरहो जिससमय वह दरवाजा तोड़कर हाथभीतर खोलनेको डाले उसीसमय हथियार पकड़ खींचलो अच्छीतरह से सारो कोई प्राणजानेको न डरे इसमें ईश्वर सहायहोंगे सबलोग एक चित्त होकर उससे वरमांगो जो आकर सबकी सहायक भेजें तो निस्संदेह विजयहै गी नहीं तो केवल मरने और मारनेके और कोई उपाय नहीहै ज्योंहीं सबलोग एकचित्त होकर ईश्वरका नाम लेनेलगेथे कि सामने से एकसेना आते देखाई पड़ी इतनेमें अमरूने सबसे कहा कि तुम्हारी मनसा पूरीहुई कि ईश्वर ने सहायता केलिये भेजा और नीचेझुकाकर कहनेलगा देखतेरे प्राण का गाहक आपहुंचा वह अभी तुझेमारकर नरककुण्ड में पहुंचावेगा तब

उसने शिर उठाकर देखा तोचालीश निशान दिखाईदिये उसको देख कर तो वहभी व्याकुल होगया इतनेमें एक नक़ाबदार अपने घोड़े को कुदाकर खन्दकपार आकर उसके सामने खड़ाहुआ तीसबलोग डर गयेपूछा कारन फौलगरदन और अमरू इसक़िलेमेंकौनहैऔरतोक़िलेके दरवाजे पर क्योंखड़ाहै कारनने कहा इस क़िले में ज़ातका मुसल्मान मुजरिम बादशाह नौशेरवांकाहै और इनको न कुछडरहै न पापहै क़िलेका दरवाज़ा तोड़कर मारा चाहता हूं अब आप बतलादिये कि कौनहै और किसको डराताहै नक़ाबदारवालोंमें मुसल्मान की सहायता के लिये यह सेनालेकर आयाहूं सो पहिले हमसे युद्धकरलेव तब दरवाज़ा तोड़कर क़िलेके भीतरजाना और जब हम मारेजायँतो उनसे बदलालेना कारनने कहा भलातू लड़का होकर मेरीतलवार कीवार कब सम्हाल सकेगा तब नकाबदारने झुंझलाकर कहा ऐपापी तूक्या बकता अभी खन्दकपार आकरतुझे दिखलाऊंगा तबतोकारन लज्जितहोकर कूदकर खन्दकपार खड़ा हुआ तब नकाबने कहाला अपनी वार चला अभीतो तेरेआनेका मज़ाचखाताहूं तबतो कारनने क्रोधकरके एक बरछी उसके ऊपर चलाई बरछीको आड़कर एक तलवार अपनी कमरसे निकालकर उसके शिरपर चलाई कि नेचों में अँधियारी छागई तिसपर भी उसने एकतलवार चलाई परंतु उसकी तलवार ने दम न लेनेदिया शिरसे काटती हुई घोड़ेके तंगतक पहुंची कारन चारटुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेनाने यहहाल अपने सरदार का देखकर चारोंतरफ से कारन को आकर घेरलिया नक़ाबदार की सेनाने भी तलवार मियान से निकाली तलवार चलनेलगी अमरूने देखाकि नक़ाबदार के पास केवल चालीश हज़ार सेनाहै और हरमरके पास पौनेदोलाख इससे अपनी सेनाको भी क़िले के बाहर निकालकर नक़ाबदार की सहायता के लिये भेजदिया तब उस दिन ऐसा युद्धहुआ कि सत्तर हज़ार सेनाहरमर की मारीगई और नकाबदार की सेना में किसी के एक हलका घावभी न लगा और हरमर की सेना व्याकुलहोकर भागगई तब अमरूने नकाबदार से पूछा कि आपका क्यानाम और निशानहै अपना हाल बतलाइये कि हमला जिससमय परदेक़ाफ से आवेंगे तो आपका सबहाल उनसे कहेंगे कि इससमय क़िलेके तोड़ने और हमलोगों के मारे जाने में कुछसन्देह नथा परंतु आपने आकर हमलोगों का प्राण बचाया नक़ाबदार ने कहा जिससमय हमला आवेगा वह खुद मेरा नाम और निशान जान लेयँगे अभी बताना कुछ अवश्य नहीं हमको कुछ अपनी नामवरी की आवश्यकता नहींहै तुम प्रसन्नता के साथ क़िले दारी करो और किसीप्रकार से अंदेशा न करो जिससमय प्रयोजन

पड़ेगा उसी समय हमको ईश्वर तुम्हारी सहायता के लिये भेजेगा यह कह कर नक़ाबदार तो जिसतरफ से आया था उसी तरफ यह कह कर चला गया और अमरू सब जिन्स खेमा और डेरा आदिक लूटकर अपने क़िलेमें दाखिल हुआ और ईश्वर की कृपासे उसको सब तरह से आराम प्राप्त हुआ अब थोड़ासा वृत्तान्त हरमर का सुनिये कि वह जो नक़ाबदार से विजय न पाकर भागा तो बारहकोश तक भागता चलागया और कहीं एक दमभी आराम न किया उस स्थानपर ठहर कर वख्तियारक की सलाह से एक विनय पत्र बादशाह को लिखा कि हमको इस प्रकार से दुःखपड़ा है कि नतो हमारेपास वस्त्र है न खेमा आदिक रहनेको है तब नौशेरवां ने एक पहलवान नामी के साथ डेरा और ख़ज़ाना बेटोंके वास्ते रवानाकिया और एक रुक्का भी लिख कर दिया कि इस कदर रुपया तुम्हारे पास भेजाहै और थोड़े दिनके बाद बहुतसी सेना और ख़ज़ानाभी तुम्हारे पास भेजते हैं ख़बरदार अमरूका पीछा किसी तरह से न छोड़ना हरमर को बादशाह के पत्र के पढ़ने से धीरज हुआ चालीश सहस्र गिरे पड़े सिपाही बटोर कर फिर अमरूके क़िलेके समीप आकर डेरा गाड़कर पड़े अब मुसलमानी सेना का वृत्तान्त सुनिये कि जब क़िलेमें ग़ल्ला बाकी नरहा तो सब सेनाने मिलकर आदी अकरब से कहा कि ग़ल्लातमाम होचुकाहै जोअब भोजनको नमिलेगा तो हमलोगोंका भी काम तमाम होजायगा अब जो अन्नहै वह चारदिन सेअधिक न होगा फिर सब लोग भूखोंमरेंगे इससे पहिले चलकर अमरू से कहना चाहिये आदीने कहा तुम सब लोग आवो तो हमभी साथ चलकर अमरू से कहैं और जो मैं अकेला जाकर कहूंगा तो उसको बिश्वास न आवेगा और जानेगा कि कुछ मेरा प्रयोजन है वृथा मुझसे नाराज़ होगा तब सब सेना आदी के समीप आई और वह भी साथ होकर अमरू के पास गये औरसब वृत्तान्त विनय करके कहा यातो ग़ल्ला मंगवाया जावे या क़िला खोल दीजिये कि हमलोग जाकर शत्रुकी सेनापर धावा करके यातो मारें या मर जायँ अमरू ने सेना से कहा कि अभी जो चारदिन के वास्ते है उसको खावो और ईश्वर का भजन करो मैंने खेत बोया है उसमें बहुत रुपया ख़र्च कियाहै थोड़ेदिनमें उसमें बहुतसा गल्ला पैदाहोगा सेना जाकर अपने स्थान पर बैठी अमरू के कहने का बिश्वास जाना अमरूने थोड़ी देरके बाद एकबस्त्र धोचकर बहुरूपियेवस्त्रपहिनकरउठा और एक तरफ की राहली और सेना को होशियार करके एक पहाड़ के दरमें गया और जंबील पर हाथ रखकर करामात तलबकिया तो उसका चालीश गज़ का कद होगया और दो हाथ की दाढ़ी सुपेद बनगई तब अपनी खड़ाऊं पहिन कर हरमर की सेना की तरफ

बकता हुआ चला और बगल में एकशेर की झोली डाल ली इसीतरह चारों तरफ देखते हुये जोपीन के खेमे के समीप जानिकला तो अमरू का क़द और सूरत देखकर बड़े आश्चर्य में होकर बहुत डराक्योंकि उसने कभी ऐसा मनुष्य न देखा था कांपते २ पास आकर सलाम कर बड़ी आधीनता के साथ हाथ जोड़कर पूछने लगा कि आप कहां से आते हैं और इसतरह किस प्रयोजन से आये हैं और सेना की तरफ को क्या आप बार बार देखते हैं अमरू ने कहा तूकौन है कि पूछता है तुझ को पूछने से क्या प्रयोजनहै और तेरा क्या नाम है उसने कहा फरमर की सेना का सरदार और बादशाह नौशेरवां के दामाद का भानजा कनार काबुली करके प्रसिद्ध हूं और बादशाह की बड़ी कृपा रहती है अमरू ने कहा मेरा नाम सादजुलमाती है और मैं सिकन्दर जुलमाती बादशाह जुलमातका छोटा भाई हूं और इसतरफ एक बड़े प्रयोजन के लिये आया हूं कि जो हमजा नामी मनुष्य शहपाल बादशाह परदे काफ की सहायता को गयाथा वहां अफरेत नामे देव से युद्ध करके मारा गया है उसीकी हड्डियां शहपाल ने हमारे भाई के पास एक चमड़े की थैली में रखकर भेजी थीं कि तुम्हारे राजसे मनुष्यों का देश मिला है तुम इसको नौशेरवां बादशाह के पास भेज देना कि वह इस की मिट्टी खार्थ कर देवे सो यह बहुत दिनों से रक्खी थीं कि कोई मनुष्य उसतरफ से आवेतो भेजदेवें परंतु अब तक कोई मनुष्य इस तरफ का आने वाला न मिला तोभाई ने हमसे कहा कि लेकर जावो तुम को बड़ा पुण्यहोगा इसकारणसे मैं उसकी हड्डियां लेकर आया हूं और इधर उधर देखताहूं कि यही मद यन का क़िला है और हमजा की यही सेनाहै या नहीं इसी सन्देहमें कई दिनोंसे व्याकुल इधर उधर घूमताहूं कनार इसहालको सुनकरअति प्रसन्नहुआ और कहनेलगाकि हज़रत यह नौशेरवांके दामाद और बेटोंकी सेनाहै चलिये आपको ले चलकर मुलाक़ात करादूं वह बोला इससेक्या उत्तमहै अन्धा बसदो नैन चाहताहै कनार ने उसको अति प्रसन्नता के साथ जोपीन के समीप ले आकर सब वृत्तांत बयान किया जोपीन उसको अति प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होकर जवाहरकी कुरसीपर बैठालकर सब वृत्तांत पूछने लगा तब उसने जो कनार से कहा था वही फिर बयान किया जोपीन ने उस पर बड़ी कृपाकरके कहा कि कहांहै वह थैली मुझेदीजिये और मुझसे उसकी रसीद लीजिये मैंयह सब वृत्तांत लिखकर वह थैली बादशाह के समीप अति शीघही भेजदूंगा अमरूने वह थैली अपनी झोली से निकालकर जोपीन को दिया और उसने कहा कि आपने एक बड़ा भार मेरेशिर से उतारा अब आप उसको बादशाह के पास भेजदीजिये गा मैं अब जाताहूं तब जोपीन बहुत प्रकार से कहने लगा कि आप

कुछ दिवस यहांवास कीजिये कि मार्ग की थकावट भी दूर होजाय और हमलोगों के ऊपर कृपा कीजिये परन्तु उसने न माना वहां से चलकर अपना असली स्वरूप बनाकर क़िलेमें आया तबसरदारों ने फिर जिन्सके लिये कहा अमरूने कहा कि बीज बोआयाहूं दो तीनदिन में जाकर काट लाऊंगा तबतुम लोग अपने आराम से बसर करोगे जोपीन का हाल सुनिये कि उसथैली को लेजाकर हरमर जाफरांमर्ज को दिखलाकर सबवृत्तान्त बयानकिया हरमर यह हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ परन्तु बख़्तियारक हँसकर बोला कि मुझे अमरू को चालाकी मालूम होती है कि उसके क़िलेमें ग़ल्ला नहीं रहाहै इसीसे वहयह जालतुम लोगों परफेंक रहाहै और जो हमला मारागया होता तो निश्चय है कि परीज़ादें आकर अमरू को ख़बर देते और यहतो चालीस हाथका मनुष्य था परन्तु अमरू हज़ार गज़ तक कदबना सकता है जोपीन ने कहा कि इसपर चारसौ बादशाह काफ़ की मोहरें हैं क्योंकर तेरा कहना मानें बख़्तियारक ने उत्तर दिया कि मुझे तो सत्यनहीं मालूम होता और तुम जो चाहे वहकहो तब जोपीन ने कहा अभी चुपरहो मैं क़िलेसे हाल मँगवाताहूं वहां जो मालूम होगा वहीठीक जानना उसीसमय सिपाही को बुलाकर आज्ञादी कि तुमलोग जाकर क़िलेके चारों तरफ़ घूमकर देखो कि अमरू और उसके सरदार लोग किस हालतमें हैं प्रसन्न हैं याहमज़ा के मरने के कारण सन्देहमें हैं अमरू का हाल सुनिये कि उसने उसी दिनसे नौबत का बजाना बन्दकर दियाथा और क़िलेमें सन्नाटा होरहाथा जोपीन के सिपाही तीन दिनतक क़िलेके चारों ओर फिरा किये नतो नौबत बाजते सुना न और कोई प्रसन्नता का कार्य्य होने पाया नहीं तो सदैव पांचबार नौबत बजती थी और हर एक मनुष्य प्रसन्न रहते थे यहसब हाल सिपाहियों ने आकर जोपीन से कहा बख्तियारक ने कहा जो यहहाल है तो अवश्य करके कुछहुआ है यह सुनकर हरमर जाफरांमर्ज बख्तियारक जोपीन और सबसरदारों को ईदकी तरह खुशी होगई और सबदुःख दूर होगया अमरू ने उसीदिन आधीरात्रि को सबसेना से कहा कि तुम लोग ज़ोरसे चिल्लाकर रोवो कि हायसाहब किरां हायसाहब किरां इसी तरह से सबसेना आधीरात्रि को चिल्लाकर कहने लगे और हरमर जोपीन बख्तियारक तो कान लगायेथे इनलोगों का रोना सुनकर अति प्रसन्न हुये और डंकाखुशी का बजवाने लगे और सबलोगों को प्रसिद्ध हुआ कि अमीर मरगये उसीदिन अमरू रोते पीटते सिरपर राखडाले हुये जोपीन के डेरेके समीप जाकर चोबदारों से कहा कि शहज़ादे को ख़बर देव कि अमरू आपकी मुलाक़ात को आया है चोब-

दारों ने जाकर जोपीन से कहा कि अमरू शिरपर खाकडाले नंगेपैर आपकी मुलाक़ातको आयाहै जोपीनने कहा उसको हमारे पास ले आवो अमरू जाकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा जोपीनने पूछा यह क्या हालहै कौनसा दुःख तुझपर पड़ा बतला तो अमरू ने रोकर कहा क्या कहूं अब मैं बेखानीका होगया और मेरा सब सामान आराम का खोगया पांच दिनहुये कि परीज़ादोंने आकर हाल कहदिया कि हमज़ा काफमें अकरेत देशके हाथसे मारागया चार दिनतक तो मैं छिपाये रहा परन्तु कल सबपर ज़ाहिर होगया उसी समय से सब छोटे बड़े दुःखसे दुखी होरहेहैं और क़िलेमें हरएक प्रकार से तहलका पड़ा है इस कारण से अब मैं आपके समीप आयाहूं कि मलका कोतो आपको सौंपदूं और मैं जाकर किसी पहाड़ पर शिर देमारकर मरजाऊं और शाहज़ादे के पास मैं मुख दिखलानेकेलायक नहींहूं कि उसके समीपजाऊं क्योंकि हमज़ा के साथ रहनेसे कोई ऐसी बुराई और बेअदबी नहींहै जो मुझसे नहुई होगी और अब हमज़ा ऐसा मिल कहां पाऊंगा कि उसके पास जाकर रहूंगा इससे मरना उत्तम है जोपीन ने अमरू को गलेसे लगाकर कहा ऐ अमरू कहां तेरा ध्यानहै मैं तुझे अपने गलेका ताबीज बनाकर रक्खूंगा किसी तरहसे तेरी सहायता करनेसे उठा न रक्खूंगा अमरू ने कहा मुझे इससे भी अधिक आपका भरोसाहै कि आप बादशाहीकुलके हैं परन्तु आपको बहकाकर मुझसे नाराज़ करा देवें और अपनी कारगुज़ारी वक्तक और बख्तियारक की शत्रुता से डरताहूं कि ऐसा न हो कि दिखावे जोपीन ने कहा वाह क्या करसक्ताहै जो कोई तुम्हारी तरफ बुरी दृष्टिसे देखेगा उसको उसी समय मैं मारडालूंगा तुम जावो और अति शीघ्रही मेहरनिगारको मेरेपास लेआवो अमरू ने कहा कि मैंतो अभी जाकर लाता परन्तु सरदार सेनाके कहेंगे तुमतोमलका को देकर शाहज़ादेसे अपने प्राणकी रक्षा करालोगे और हम लोग हर प्रकारसे दुःख उठावेंगे इस कारण वे लोग न जाने देवेंगे जोपीन ने कहा तुम जाकर उन लोगोंसे कहो कि हम उनको हमज़ा से अधिक मानेंगे समझाकर हमारेपास लावो अमरू ने कहा वेलोग मेरे कहनेपर यक़ीन न करेंगे आप एक पत्र सरदारों का नाम लिखदीजिये कि हम लेजाकर उन लोगोंको देकर साथलेआवें जोपीन ने कहा एक क्या दश पत्र कहिये लिखदेवें उसी समय कलमदान मंगवाकर एक पत्र लिखाकर अमरूको दिया अमरू उस पत्रको लेकर अपनेकिले में आया और उस पत्रको सरदारोंको दिखाकरकहा कि अबखेतपका है काटनेवाला चाहिये अबतो पहिले चलकर मेहमानी खावो फिर देखलिया जावेगा सब सरदार अमरूके साथहुये केवल मुकबिल

मुक़बिलचालीस सहस्र सवार लेकर क़िलेको रक्षाको रहगया और सब लोगोंकोजवाबदिहीअपने ऊपरकी अब जोपीनेका हालसुनिये कि उसने जाकर हरमर जोफरांमर्जसे यह सब वृत्तांत कहा बख्तियारक सुनकर बोला कि जो ऐसी बात है तो बड़ी ईश्वरकी कृपाहै परन्तु जो अमरू सब सरदारों के साथ आवेगा अवश्य करके कोई न कोई दुःख हम लोगोंपर डालेगा वह बड़ा जालिया और मक्कार है जो थोड़ीसी देरभी क़िलेमें सांस पावेगा तो बड़ा दुःखदेगा यह कहकर जोपीन को समझानेलगा कि जोपीन वह चलाक फरेबाहैउसके फरेबमें तुम नआना औरउसकीचालाकीसेथ खान खानानिश्चयकरकेजाना कि उसकेक्रिसे में जिन्स नहींरही इसीकारणवह अबअपनी युक्ति कर रहाहै कि आपको मिलाकर हमलोगोंको दुःखदेवे और अपना कार्य पूर्णकर लवे जोपीननें क्रोधित होकर कहा कि ऐ बख्तक तू चुपरह मैं जानूंकि अमरू जाने वहपहिलेसे कहचुकाहै कि बख्तियारक के मारे यह न हाने पावेगा बख्तियारक ने कहा यह क्यों न वहकहे मेरा और उसका एकही मन है अच्छा मैं कुछ न बोलूंगा तुमजानो और अमरू जाने उससे क्याकहे जो किसीका कहना नहीं मानता जब कुछ बुरा कार्य होते देखूंगा उसी समय यहांसे चलाजाऊंगा जोपीन ने डेरेमें जाकर सामान मेहमानीका बटारा और सिपाहियोंको भेजा कि जाकरदेखो अमरू मलकामेहरनिगारको लेकर आताहै या नहीं सिपाहियोंने जाकर देखा अमरू चारसौ पहलवान साथलिये जिनको देखकर डर मालूम होताहै आताहै सिपाहियोंनेआकरजोपीनसे कहा कि चार सौ पहलवान लिये आताहै जोपीनने सुनकर शाहजादेके पास जाकर कहा कि अमरू चारसौ पहलवान मेराआज्ञामें करनेके लिये लेकर आताहै मालूम होताहै कि सत्यहै बख्तियारक तो सुनतेही सुन्न होगया कि देखें क्या होताहै अमरूका इतने मनुष्योंके साथआना बेढ़ब है इतने में अमरू साथ सरदारोंके जोपीनके डेरेकेसमीप आपहुंचा तब जोपीन अगवानी लेकर सरदारोंको अपने डेरेमें ले आकरबैठाला और अमरूको कुरसी अपने समीपबिछवाई और सबलोगोंसे बड़ी प्रतिष्ठाकेसाथ सम्मुखहुआ और थोड़े समयके पश्चात् साकियोंको आज्ञादी कि सबलोग शराब लेआकर सब सरदारोंको पिलवावो इतनेमें आदी अकरब बोला कि ऐ शाहजादे एक मसलाहै कि प्रथम भोजन उपरान्त बात्तीसोपहिले भोजन कराइये पश्चात् शराबपिलाइये तब शराबभी स्वाद देयगी आज्ञा होतेहीबावर्चीने खानासामनेलाकर रक्खा और सबसे पहिले आदी अकरबको दिया तब उसनेकहा और रखदेव काबलने क्रोधकरके कहा कि केवल आपहीको परसूं या और कोई है तब आदीने कहा पहिले मैं अपनापेट भरलूंतो औरको देना

कोबलने आदीके आगे ढेरका ढेर रखदिया यहांतक कि सब उसी के आगे रखदिया और आदी खानेलगा जब सब खागया तब उठकर खड़ा होगया जोपीन बैठा देखरहाथा बोला कि और कुछ मंगवाया जावे या नहीं आदीने कहा अबतो खाचुका परन्तु मुझको साधूका शापहै कि कितनाही तूखायगा तेरापेट न भरेगा और खानेसे हाथ न उठावेगा जोपीनने और खाना मँगवाकर आदीके आगे रखवाया आदी वहभी सब चखगया और पानीतक न पिया जोपीन ने फिर पूछा कि और मंगवायाजावे या आप खा चुकेआदीने कहा जो कलिया रोटियां हों तो थोड़ासा और मंगवादूये जोपीनने कहा आप खूब खादूये मेरे यहांसे भूखे न जादूये यह कहकर कईमनकी रोटी और कलिया मंगवाई उसकोभी आदी चखगया जोपीनने फिर चाहा कि पूछे इतनेमें बखतियारकने जोपीनसे कहा भला तू इसका पेटभर सकेगा और हरमर ने भी आंखमारी बखतियारक कहनेलगाकि अमरूने यहीतो युक्तिकीहै कि सब जिन्स चलकरखालेवे जबउसकीसेना भूखों मरने लगेगी तो आपही भाग जायगी तबतोजोपीनने कहा कि अभीतो खाना होरहाहै कहिये तो जबतक बाजारसे कुछ मँगवादूं आदीने कहा मैं ऐसा मरभुक्खा भी नहींहूं कि आपसे बाजारसे मंगवाऊं उठकर हाथ धोकर पलंगपर जाके लेटगया तब जोपीनने दूसरा खाना बनवाकर और बाकी लोगोंको खिलवाया जब सब खा पीचुके तब शराब मँगवाकर पिलवानेलगे और नाच रंगकीभी सभा गरम हुई और जब सबलोग प्रसन्नहुये जोपीनने कहा अब मलकामेहरनिगारके लेआने में क्यादेरीहै अमरूने कहा सरदार लोग कहतेहैंकि इसतरहसे मलका मेहरनिगारको देना उचित नहींहै शाहजादा विवाहका सब सामान करे किलेमें चलकर विवाहकरे तब जोपीनने कहा इसमें क्या देरीहै अमरूने कहा कुछ रुपया चाहिये क्योंकि इसमें सब रुपयेही का काम होताहै जोपीनने कहा सब मौजूदहै जो आपका जी चाहै वह ले जाइये और अपने दिलसे इसका सामान कीजिये तब अमरू तीन दिनतक साथ सरदारोंके जोपीनके मेहमान रहे और सहस्र रुपया अमरूको दिया और थोड़ा २ रुपयासरदारों को भी दिया सब लेकर अपने किलेमें आये और किलेको अच्छीतरह से चनवाकर छःमहीने के लिये जिन्स मोल लेकर फिर उसीसामान से बैठे जोपीनका हाल सुनिये कि सात दिनतक उबटना लगवाया किया और मोटे होनेकेलिये अच्छे २ भोजन किया किये और हरप्रकारसे नाच और रंगमें मजबूत रहे और सब सेनाको मेहमान रक्खा और अपना मन मलकाके पानेको प्रसन्न रक्खा जबसात दिन व्यतीत होगये और अमरू एकदिनभी जोपीनके पास न आया तब

तो व्याकुल होगया बख़्तियारक ने जोपीन से पूछा अबतो लगन बढ़ चुकी अबविवाह करने को बरात कब लेजाइयेगा कि मलका मेहर-निगार को लाकर मज़ेउड़ाइये जोपीन ने तब बहुतसी गालियां बख़्तियारक को दीं और सिपाहियों को अमरू के पासभेजा कि जाकर देख आवो अबक्या देरीहै यहांतो सबसामान बटोरा है और सातदिन भी व्यतीत होगये हैं जबसिपाही वहांगये तो देखा कि क़िलाभी पहिले से चुनाहै और सब सरदारलोगभी अपने २ कामपर पहरा देरहे हैं और अमरू उसीतरह से शामियाने के नीचेकुरसीजड़ाऊपर शाहाना लिबास पहिने बैठाहै सिपाहियों ने दूरसे जाकर सलामकिया और जोपीन का सँदेसा कहा तबअमरूने जवाबदिया कि अबतो छः महीने तक तुम्हारी और हरमर की सेनाक्या मालहै जोशमशेद और अफ़रासिया भी कबर से जीकर युद्धकरने को आवे तो हमभी कुछनहीं डरते हैं यहसुनकर सिपाही वहांसे उलटे पैरफिरे और सबहाल आकर जोपीन से कहा तबतो जोपीन अतिलज्जित होकर दांत चबाने लगा कि इसचालाक ने मुझको बड़ा धोखादिया और यहांसे मदायन तकलज्जा हुई परन्तु क्याकरैं चुपहो रहा नतो उससे बदला लेसक्ता था न दण्डदे सकताथा अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि क़िलेको बन्दकिये हुये दरवाज़े परबैठकर चारोंतरफ की सैरकररहाथा कि संयोग से एक बनकी ओर दृष्टिगई तो देखाकि बड़ाबनहै और वहांबहुत से जीव बास करते हैं दारोग़ से पूछा कि इसबनमें व्याघ्र आदिक बहुत होंगे उसने कहा केवल व्याघ्रकई सहस्रहोंगे और इससे अधिक और किसी बनमें व्याघ्रनहीं हैं और पक्षी आदिक भी इसकदर हैं जैसाकहींनहोंगे अमरूको जो चालाकी सूझी तो सिपाहियों को बुलाकर आज्ञादी कि इसबनसे लकड़ी काटकर तीनोंतरफ जमाकरो और केवल एकतरफ से हरमर की सेनामें जाने का रास्ता रहने देव और वृक्षोंके ठूंठोंमें नफ़ज रोगन लगाकर अग्नि लगादेव कि सबलोग तमाशा देखैं सिपाहियों ने उसकी आज्ञानुसार वैसाही किया सबसिपाहियों ने दोपहर राचि गये जाकर उस बनमें तीनतरफ घेरकर ठूंठोंमें रोगन लगाकर अग्नि लगादी सबजानवर अग्निसे व्याकुल होकर एक स्थानपर बटुर कर हरमर की सेना की राहसे भागे जो सामने मनुष्यपड़ा उसका शिकार किया इसीतरह से सैकड़ों मनुष्य मारेगये और सब व्याकुल होकर इधर उधर फिरने लगे और जिरापहिनकर घोड़े कसने लगे तो कोई किसी को पहिंचान न सके आपसमें युद्धकरने लगे इसविचार से कि अमरू आकर छापा मारेगा ऐसे सबराचि आपसमें कुछ युद्धकर के और कुछ व्याघ्रोंसे मार खाकर बराबर होगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर जोपीन बख़्तियारक साथ सरदारोंके जो इस आफत

से बचेथे लोगों को देखने के लिये गये तो देखा कि सबअपनीही सेना कटीपड़ी है और कहीं जंगल के जनावर भी कटेपड़े हैं और दूसरी तरफ के एकभी नहीं हैं तोज़ोपीन हरमर और सरदार लोग देख कर बड़े आश्चर्य में डूबे कि क्यामाजरा है बख्तियारक ने कहा यह अमरू की एकछोटीसी चालाकी है कि उसने जंगलमें तीनतरफ आग लगादी है और केवल दूसरफ को निकलने का रास्ता रक्खा जब जानवर अग्निकी गरमी से भागेहैं वे इसीतरफ होकर आपकी सेना पर आगिरे हैं और उनहीं से सबमारे गयेहैं यह कहकर सिपाहियों को जा तलाश करने को भेजा ला सत्यपाया अमरू का हाल सुनिये कि उसने जो दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि हरमर की सेना बड़ेदुःखमें है तबउसके दिलमें यहबात समाई कि आज रात्रि को शत्रुकी सेनापर छापामारें आदी अकरबको बुलाकर कहा उसने कहा मैं आपका सेवकहूं जो आज्ञाहोवे वहीकरूं अमरूने सरदारों से सबहाल कहकर आदीसे कहा कि तुमजोर से चिल्लाकर लन्धौर२ पुकारना तबतो सबसरदार लोग अपने कीलकांटे से होशियार होगये और जबआधी रात्रि बीती तबअमरू अपनी सेनाको लेकर किलेसे बाहर आया और शत्रुपर छापामारा आदीने तलवार खींचकर पुकारना शुरू किया कि लन्धौरपति सादान कहां है हरमर जोपीन आकर मेरीतलवार की चासनी चक्खें अपना शिरमेरे पैरपर रक्खें तबतो बहुतसे लोगजो डरपोकनेथे वे घोड़ोंके आगे जो घासके गट्ठे रक्खेथे उसमें नेचदबाकर छिपगये और बहुतसे लोगखेमें जाछिपे सब इधर उधर प्राण बचाने के लिये छिपगये हरमर जोपीन भी जागकर बख्तियारक से पूछने लगे कि लन्धौर इस समयकहां से आया उसनेकहा यहभी अमरू की चालाकीहै और लन्धौर कहांहै हजारों सेना हरमर की मारीगई चारघड़ी रात्रिबाकीथी कि अमरूके सिपाहियों ने हालदिया कि ऐभाई जोपीन के जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली बादशाह की आज्ञासे हरमर की सहायता के लिये बड़ीभाड़ी सेनालेकर आतेहैं कि सामने से देखिये कि गरद के मारे दिखाई नहीं देते हैं अमरूनेच उठाकर देखा तो उसीतरह बहुतसी सेना आती हुई दृष्टिपड़ी तो देखतेही अमरूके भी छक्के छुटगये और कहने लगा कि आज इससेना से बचना अति कठिन है भलामैं हमजा को क्या उत्तरदूंगा और इसमें उससे क्या कहूंगा परन्तु अमरू बड़ायुक्ती और प्रतापी था जबकोई युक्ति न चलसकी तब ईश्वरको स्मरण करने लगा चालीसवार स्मरण करने के पश्चात् तीनसौ पहलवान आपहुंचेतोउसी समय डंकाबजवाकर अमरूने पुकारा कि ओपहलवानो आज शत्रुकी सेना एकभी न बचे ऐसी बहादुरी से अड़कर युद्धकरना इसमें पह-

लवानों का नाम होता है और यह जो सामने गर्द दिखाई देती है यह सेना बहराम बादशाह खाकान और चीन की मेरी सहायता के लिये आरही है शत्रुकी सेना यह वृत्तान्त सुनकर अति व्याकुल होगई और कहने लगी कि इससे प्राण बचाना दुलभ है यह विचार करके सब सेना भागी और किसी का पैर युद्ध में न अड़ा यह हाल देख कर बख्तियारक डंका बजवा कर सेना से कहने लगा कि थोड़े समय और ठहरो प्रातःकाल हुआ जाता है कौन जानता है जो यह सेना हमारी ही सहायता को आती हो परन्तु किसी ने उसकी बातों को न सुना सब भागगई तब फरमर जोपीन बख्तियारक भी उन्हीं के पीछे फेरने को दौड़े तब अमरू ने जाकर अच्छी तरह से लूटकर अपने क़िले में आकर सब वृत्तान्त कह कर क़िले को फिर से मरम्मत करवा कर सब सामान युद्ध का करके सब सेनाको आराम से बैठने की आज्ञादी और आपभी लिबासयाहीपहिनकरशामियानेकेनीचेकुरसी डालकर बैठा ॥

बादशाहनौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार बाबुली और जहांगीर बाबुली भाई जोपीन शाहज़ादे जहांगीरका जाफरामर्ज की सहायता को ॥

लेखक लोग लिखतेहैं कि सब सेना व्याकुल हुई भागी चली जाती थी कि दूतोंने आकर खबर दी कि जिसको अमरू ने बहराम की सेना जानकर भरोसा किया था वह जहांदर और जहांगीर काबुलियोंकी सेनाहै जिसकी बराबरी करनेवाला इस संसारमें दूसरा नहीं है बादशाहने शाहजादे को सहायताके लियेभेजाहै अब ईश्वर की कृपा से विजय होगी इतने में जहांदार और जहांगीर काबुली भी आपहुंचे जापोन से मिलकर शाहजादे के पास जाकर उनको बड़ा भरोसा दिया और कहने लगे कि इतनी दे आपन अड़सके कि हम पहुंचकर शत्रुको परास्त देत बखतियारक ने कहा मैं बहुत समझाता और मना करता रहा था परन्तु किसीने मेरा कहना न माना मुझको भी लज्जित करवाया और सब असबाब भी लुटवाया और आपभी लज्जित हुये तब जहांगीर काबुली और जहांदार काबुलियों ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ अब हम चलकर खड़ी सवारी क़िलेको विजय करके सब मुसलमानों को मारकर मलका मेहर निगार को निकाल लातेहैं यह कह कर क़िले की तरफ फिरे और ज्योंहीं क़िले के समीप पहुंचे अमरू अग्नि की वृष्टि करने लगा और अति शिघ्राजीबाणआदिकचारों तरफ से मारने लगा और अतिशघ्राजी न बढ़ सकी परन्तु जहांदार और जहांगीर ढाल को सुख से लगाये हुये खन्दक पार कूदगये और चाहते थे कि बलछी लगाकर दरवाजा तोड़कर क़िले के भीतर जावें कि इतने में नकाबदार साथ चालीस सहस्र सेना के आपहुंचा अपना

घोड़ा कुदा कर खन्दक पार होकर ललकारा कि ऐ जवान पहिले मुझसे युद्ध करले ता क़िले का दरवाज़ा तोड़ नहीं तो अभी वह गति बनाऊंगा कि सब भूल जायगा यह सुनकर वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर दोनोंकी तरफ तलवार लेकर दौड़े नकाबदार ने दोनोंकी तलवारें छीन कर उनकी कमरके पटके पकड़कर उठालिया परन्तु उनकी मृत्यु न थी पटके टूट गये और वे दोनों हाथ से छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े तब सेना ने उनको उठाकर भागना उत्तम जान कर भागी और नकाबदार भी साथ अपनी सेना के उनको सेनापर जागिरा और निश्चय था कि सब सेना शत्रुकी मारी जावे कि बख्तियारक ने लौटका डंका बजवा कर उस समय चला जाना अच्छा जाना तब नकाबदार जिधर से आया था विजय करके चला गया शत्रु की सेना भी रोते पीटते अपने स्थान आकर उतरी और अमरू अपने विजय के डंके बजवाने लगा और सब लोगोंने मुबारक बादियांदीं दूसरे दिन भंडारी ने आकर आदी से कहा कि अब किलेमें जिन्स भोजन को नहीं है तब आदीने आकर अमरू से कहा अमरू ने कहा कि अब चलकर कोई दूसरे क़िले में रहना चाहिये दारोगने कहा कि यहांसे एक मंजिल पर एक क़िला रश्कगुलिस्तां है और वह ऐसा बनाहुआहैकि जोबादशाह अपनी सेना लेकर आवे तो न विजय पासके और उसके स्वामी का नाम निसतान है तब अमरू ने सरदारों और सरहंगमिश्री से कहा कि तुम सब लोग क़िले की रक्षा करो मैं जाकर कोई युक्ति करूंगा और जिस दिन तुम को हम बुलावें उसी रात्रिको थोड़ी से लंगूर बन्दर पकड़ कर पीनसों पर बैठाकर हरमर की सेना की तरफ से निकलना और मलका मेहरनिगार के साथ और स्त्रियों के पिछवारे के रास्ते से निकाल कर अति शीघ्रही लेकर चले आना और इस बातको कोई जानने न पावे यह कह कर अमरू दो सिपाहियों को साथ लेकर किले निसतान की तरफ चला और किसी से अपने मनकीबातनकही दोघड़ी दिन शेष रहे उस क़िले के समीप जापहुंचा देखा तो ऐसा बनाहुआ है कि ऐसा किला उसके समीप और कोई नहींथा चारो तरफ फिर कर जो देखा तो सब दरवाजे बन्दपाये और खन्दक पनिया सोतकिसी तरह से भीतर जानेका रास्ता न पाया इसी सन्देह में दोघड़ा रात्रि बीततक इधर उधर घूमा किया संयोग से पांच छः कुत्ते उसक़िले के भीतर से निकले और क्षुधा के मारे व्याकुल थे तब अमरू ने उन कुत्तों को अच्छे प्रकार से रोटीखिलाई जबवे अपने स्थानकी तरफ फिरे अमरू भी उन्हीं के साथ चला और सुरंग में घुसकर किले के भीतर गया तब उस समय केवल पहरे वाले जागते थे और सब आराम से सोरहे थे तब तो अमरू उनसे छिप कर एक वृक्ष जो दीवार के समीप था उसपर

चढ़कर कोठेपर गया और सीढ़ीसे उतरकर बारादरी में गया तो देखा कि बादशाह ने सतान पलंगपर सोरहा है और खिदमतगार भी फरशपर बेखबर सन्नाटे मारहे हैं परन्तु बत्तियां मोमकी बराबर जलरही हैं चादर से सब बत्तियों को बुझादिया केवल एकबत्ती बलने दिया और उसको पलंग के पास बैठाकर बिष बेहोश करने वाला लेकर उसकी नाकमें लगाकर फूंका तो वह चिल्लाकर बेहोश होगया उसको तो उसस्थान से उठवादिया और आप उसका भेष धारणकर के उसी पलंग पर सोरहा और प्रातःकाल उठकर हाथमुख धोकर जबगद्दीपर आकर बैठा तो सरदारों से कहा कि आज मलका मेहरनिगार नौशेरवां की बेटीकापत्र मेरेनाम आया है कि वह मुझपर आसिक है इसलिये मैंनेआज उसको बुलवायाहै सो उसके आनेमें किसी तरहसे रोक न करना सब दरवाजों का खोलकर हमारे पास ले आना कि हमारी मुलाकात करके प्रसन्नता उठावे तब बक्तों ने तो मानलिया और बक्तोंने कहा कि उसके साथ अमरू एकबड़ा मक्कार और जालिया है वहइसी तरहसे किलेको लेलेगा और आपको निकाल देगा तब अमरू ने सबकड़ों को कैद करलिया और दारोगा को अपने मकरसे दरवाजाखोलाकर मलकाके आनेकी आज्ञा दी और अमरू जो दोसवारोंको दरवाजेके बाहर छोड़ आयाथा उनसे यह सबभेद बता आया था जबउन दोनों यारोंने दरवाजे खोलने की खबरपाई तो मालूम किया कि अमरू किलेपर काबिज होगया तब उन दोनोंने कहाकि बादशाह से कहा कि दो सिपाही मलका मेहरनिगारके पाससे आप को कुछ पैगाम लेकर आये हैं अमरू ने हाल पाकर उनको अपने पास बुलाकर एकान्तमें लेजाकर यह सब वृत्तान्त कहकर उन दोनों सिपाहियों से कहा कि तुम जाकर सरहंगमिश्रो और सरदारोसे कहोकि जिस तरह से हम बताआये थे उसी तरह से आजरात्रि को चलकर यहां आवें और किसी प्रकारसे देरी न करें और अब मैं किलेपर काबिजहूं किसी तरह से देर नहीं है यह सब समझाकर उनदोनों को भेजा तब वे दोनोंआकर किलेमें पहुंचे और अमरूकी आज्ञानुसार सरहंगमिश्रो और सरदारों से सब वृत्तान्त कहा तब वे लोग तुरंतही तैयारी करनेलगे और सब सन्देह दूर होगया रात्रि होतेही बक्तसे पीनसों में व्याघ्र लंगूर के बच्चे बांध कर जोपीनके डेरेकी राहसे सिपाही साथ करके रवानाकिये और मलका मेहरनिगार को उसी तरफसे जिधरसे अमरू कह गया था लेकर सब सरदारों के साथ चले महाफा के किलेसे निकलतेही एक सिपाही ने देखकर जोपीनके पास दौड़कर खबरदी कि मलका मेहरनिगार को लिये जातेहैं यह हाल सुनकर जोपीन बड़ी प्रसन्नताके साथ डरे स

निकलकर दौड़ा और देखनेलगा एकव्याघ्र का बच्चा उसमें बँधा देखकर चिल्लाकर भागापरन्तु सिपाहियोंको आधादीकिसवर्दीनसोंको अच्छी तरह से देखना तबसब सिपाही खोलकर देखने लगे तो सबमें व्याघ्र लंगूर आदिक बंधेपाये और चिल्लाकर भगे इतनेमें एक सिपाही ने आकर ख़बरदी कि क़िला खाली मालूम होताहै यहहाल सुनतेही घोड़ा भगाकर सवार हुआ और दौड़ाकर मेहरनिगार के महफे तक पहुंचाया मेहरनिगार का हाल सुनिये कि वह मार्गमें जाकर महफे से निकलकर मुखपर सेहरा डालकर घोड़ेपर सवार होकर चलीजाती थी कि जापीनउसके समीप जाकर घोड़ेपरसे उतरकर मलका का घोड़ा पकड़कर खड़ा होगया और अपनी मुहब्बत कीबातें करने लगा तब मलका ने हटादिया परन्तु उसने न माना तबदिक होकर एकतमँचा निकालकर मारा तो वहभगकर अलग खड़ा हुआ और एकतीर निकालकर फिरमारा तोवह भगा परन्तु वह भी लगा तबचिल्लाकर भगा इसीसमय में सेनाभी पहुंच गई और मलका को साथलेकर अति प्रसन्नता के साथ क़िले नेसतानी में दाखिल हुये अमरू को अचम्भों से इसप्रकार से इतमीनानहुआ तब जिसने कि मुसलमान होना कबूल किया उसके तो प्राण छोड़दिये नहीं तो सबका मारडाला इसी तरह थोड़े समय में सबक़िलेपर क़बज़ा हो गया तत्पश्चात् खुसरो नेस्तान को अपनी जनबील से निकाल कर सब हाल दिखाया फिर कहा कि तुम मुसलमान न होगे प्राणदोगे उसने विचारा क़िलाता अबहाथ से जाचुकाहै अब सिवाय मुसलमान होने के और कोई युक्ति नहीं है कि प्राण बचें तब कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ और अमरूने अपने गलेसे मिलाया और कहा कि बाबा तुम्हारा क़िला तुमको ईश्वर बनाये रक्खे मुझका तुम्हारेदेश और क़िले से कुछ प्रयोजन नहीहै मैं तो थोड़े दिनका मेहमानहूं तत्पश्चात् जहां ईश्वर लेजायगा वहां जाऊंगा अब तो हमारा आपका कुछ दिन का साथहै फिर कभी मुलाक़ात कहूंगा यह कहकर क़िलेको अच्छी तरहसे चारों तरफसे बन्दकरके दरवाज़े पर शामियाना खड़ा करा कर जड़ाऊदार कुरसियां बिछाकर बैठा और सब सन्देह दूर होगया जापीन का हाल सुनिये कि वह घावसे व्याकुल होकर घोड़ेपर से पृथ्वीपर गिरपड़ाऔर उसकाघोड़ा छोड़कर बनकी तरफभागगया औरअपने मालिकका साथ न दिया और इरमर जाफरांमर्ज भी क़िलेके खाली होने और जोपीन के पीछा करनेका हाल सुनकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली के साथ सेना समेत मुसलमानी सेना का पीछा करनेको गये तो मार्गमें जोपीन को घायलपड़ा देखकर बड़े सन्देहमें हुये और कहनेलगे कि देखो अमरूने कैसा दुःख इसको

दियाहै आखिरकार उसको उठाकर पीनसमें बैठाकर ले गये कि उसकी दवा करके अच्छाकरें तब सिपाहियोंसे मालूम हुआ कि अमरू अपनी सेना समेत क़िले निस्तानमें आकर रहा है तब आकर क़िले से दूर डेराडालकर पड़े कि आतशबाजी वहां तक न पहुंच सके जबअमरू ने देखा कि बड़ी भारीसेना आकर पड़ीहै तब उसके दिलमें आया कि कुछ चालाकी करनी चाहिये जब जर्राह की सूरत बनकर किस्बत बगलमें लेकर जोपीन केखेमेकी तरफसे जानिकला सिपाहियों ने उसको देखकर जोपीन से जाकर खबरकी कि एक जर्राह इधर से जा रहा है जोपीनने कहा कि अतिशीघ्र उसको हमारेपास लेआओ सिपाहीलोग अमरूको बुलाकर जोपीनके पासलेगये उसनेअपना घावदिखलाकर सब वृतान्त कहकर कहा ऐजर्राह जितनाही शीघ्र तू अच्छाकरैगा उतनाही अधिकमैं तुझे इनाम दूंगा और अच्छीतरह से प्रसन्न करूंगा अमरू ने कहाघाव तो शीघ्रही अच्छा होजायगा परंतु दूसरे में बड़ी युक्ति है जो आप थोड़े समय केलिये दुःख उठावें तोमैं पांच पहर में आप के घावको अच्छा करदूं जोपीनने कहा इस दुःखसे थोड़ी देरके लियेक्या करूंगा तब अमरू ने कहा जो आपकी ऐसीही इच्छा है तो आप अपने नौकरोंको आज्ञा देदेवें कि पांच पहर तक हम कैसेही बुलावें और चिल्लायें परंतु कोई मनुष्य समीप न आवे जोपीन ने सब लोगों को अपने खेमेसे हटादिया तब अमरू ने डेरेका परदा डालकर जोपीन को उलटा टांगदिया और उस घावको छुरेसे चीरकर बड़ा किया और उसमें हरताल और चूना बत्ती में लपेटकर भर कर ऊपर से हरताल और चूनेका मलहम भरदिया तबतो जोपीन क्लेशके मारे चिल्लाने लगा बाहरके लोगोंने जाना कि जर्राह अपने कार्य्य में होगा इस समय वहां जाना उचित नहीं है और पहिले से मना करचुके हैं आखिर-कार जोपीन बेहोश होगया तब अमरू सब असबाब लेकर डेरे का परदा काटकर बाहर चलाआया यह सब असबाब लेकर अपने क़िले में आकर बैठा जब पांच पहर व्यतीत होगये तो लोग खेमे में गये देखें तो जोपीन टँगाहै और बेहोश होरहा है बड़ेआश्चर्य्य में होकर जल्-दीसे छोड़कर घावोंको धोकर काफूरकी बत्तियां उसमें लगाकर नवीन मलहम बनाने लगे फिर दूसरे दिन जब जोपीन को कुछ होश हुआ सबहाल बयान किया बख्तियारक ने सुनकर कहा वह जर्राह न था अमरू था जो शाहजादे की ऐसी गति बनागया है इतने में खबर पहुंची कि हकीम मजदक को बादशाह नेखजाना और अच्छी वस्तु लेकर भेजाहै सो आया चाहता है हरमर जाफरांमर्ज ने अति प्रसन्न होकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुलीको बहुत से सरदारों के साथ अगवानी लेनेके लिये भेजा अमरूको जो यह खबर पहुंची तो वह भी

कोपीन के सिपाहियों की सूरत बनाकर अपने मनमें विचारा कि चल कर इसको भी कुछ अपना मक्कर दिखला कर लज्जित करूं पांच कोश तक गया होगा कि उसकी सवारी दिखलाई दी और उधरसे ये दोनों भी पहुंचे तब तीनों मनुष्य उतर कर मिले और प्यारी २ बातें करते हुये खीमेकी तरफ चले तब अमरू ने देखा कि सिवाय सवारियों के कुछ माल असबाब दृष्टि नहीं पड़ता निश्चयहै कि माल असबाब पीछे आता होगा यह विचार कर उसी स्थानपर ठहरगया और किसी से कुछ न कहा पहर राचि बीतेउठा और छकड़े खजानों से लदेहुए पांच सौ सवारोंके पहरे में आपहुंचे जिस समय वेलोग अमरू के समीप आये अमरू ने अति प्रसन्न होकर एक सवार से पूछा कि तुम्हारा सरदार कौन है और उसका नामक्या है उसने कहा यह जो काली पगड़ी बांधे चलाआता है वही हमलोगों का सरदारहै अमरू ने उसके समीप जाकर सलाम करके कहा कि मुझे शाहजादे ने भेजाहै मैं बड़ी देर से आप लोगों के आसरे में खड़ा हुआहूं और कहा है कि खजाना और असबाब आताहै उसको रक्षाके साथ लेआना और जो राचि अधिक होजाय तो वहीं रहजाना सबेरे उठकर आना सबलोग बोले अच्छा तो है आज यहीं बास कीजिये सबेरे चलना होगा और किसी तरह से डर चोर आदिकका नहींहै तब सरदारने उसीस्थान पर बास करने की आज्ञादी अमरू ने कहा मैंजाकर शाहजादे से खबर करूं सबलोगों ने कहाकि उत्तमहै आप जाइये अमरू जंगलमें अपने यारों को बैठाये था उनके पास आकर कहारों की सूरत बनाकर थोड़ासा भोजन जिसमें शराब बेहोशी मिलीहुई थी उनके ऊपर रखवाकर आप वैसेही बनकर उनके पास लेगया और उनलोगों से कहा कि शाहजादे ने यह भोजन तुमलोगों के वास्ते भेजाहै इसको भोजन करो सरदार ने लेकर सबको दिया और आपभी भोजन किया और किसी तरह से संदेह न किया और कोई उसके खानेसे न बचा जब सबके सब उसके खानेके पश्चात् बेहोशहुये तबअमरू ने सब खजाना और असबाब संदूकों में से निकालकर जनवीलमें रक्खा और कंकर पत्थर जानवरों की हड्डियां भरकर बन्दकरदीं सब असबाब और खजाना लेकर अपने किले में आराम से आकर बैठा प्रातःकाल जब वेलोग चैतन्य हुये और सब लेकरवहां से चले तो पहर दिन चढ़े शाहजादे की सेनामें आकर पहुंचे तब हरमरजाफरां मर्जीने संदूकोंको भँगवाकर हकीम मजदूक से कुञ्जीलेकर खोला तो उसमें खजाने सोगात के बदलेमें कंकर पत्थर भरे जानवरोंकी हड्डियां भरीथीं देखकर बड़े आश्चर्यमें हुआ तबबख्तियारकने कहा कि अमरूसा चालाक भी संसारमें न होगा यह चालाकी और मक्कर में ईश्वर की बराबरी करताहै कि सेनाकी वह सूरत बनाई

जोपीन को ऐसा दुःखदिया हरमर ने पहरेवालों से पूछा कि तुमको कोई मनुष्य मार्ग में मिलाथा और कुछ बातचीत हुईथी उनलोगों ने कहा कि केवल वही सिपाही मिलाथा जिसको जोपीन ने भेजा था और उसीसे हमलोग कहकर उस स्थान पर रहगयेथे और दूसरे जो आपने कुछ खानेकेलिये लेकर भेजाथा उसके साथ कहार सब होशियारथे तब बख्तियारक ने कहा जो पहिले गयाथा वह भी औरजो कहारों के ऊपर खाना रखवाकर गया था वह भी दोनोंवार अमल था उसीने यह चालाकी कीहै और दंडदेने के लायक था तब शाहजादों और सरदारों को बड़ारंज हुआ परंतु क्याकरैं कुछ बश नहीं आखिरकार सब वृत्तान्त लिखकर बादशाह के पासअपना विनय पचीकोभेजा ॥

अफरेत पिशाच का महरिस्तान में पहुंचकर पनाहलेना अपनी माताकी मतिसे ॥

प्रथम उन वृत्तान्तोंके सिवाय अब थोड़ासा वृत्तान्त अमीर हमजा का सुनाताहूं कि प्रथम बयान करचुके हैं कि अफरेत का पिता अमीर के हाथसे बधकिया गया था और अति लज्जित होकर उसके शोक में बैठकर रोदन किया था कि एक नदी उसक आंसूसे बही थी उसके पश्चात् शहपाल ने सातदिन तक उसीकी प्रसन्नता से नाचरंग कराया था और इसतरह से उसने सामान कियाथा कि सब मनुष्य प्रसन्नहो जातेथे आठदिन के पश्चात् अमीर ने पूछा कि इनदिनों मालूम नहीं होता कि अफरेत किस विचारमें है कि वह युद्ध करैगा या नहीं जो वह युद्धकरना नहीं चाहता तोआपही डंका युद्धका बजवाइये और उसका आपरोब दिखलाइये मैंकेवल अठारहदिन कावादाकरके आया था परंतु मुझे इतनाकाल व्यतीतहोगया नहीं मालूम क्या हाल होगा और बादेपर न पहुंचने से हर एक मनुष्य को बड़ा दुखःहोगादूसरे यह कि नौशेरवां बादशाह से शत्रुताहै वह भी युद्धकरने के लिये आरूढ़ है तब शहपाल ने युद्धका डंका बजवाने की आज्ञादी बाजेवालों ने आज्ञा पातेही बारह सौ जोड़ी सोनेकी और बारहसौ चांदी की निकालकर बजाने का आरम्भ किया परंतु नगारा सुलेमानी था उसका शब्द तीन मंजिलतक सुनाई देताथा और अफरेत तो नजदीकही था उसने भी डंके का शब्दसुना तो अपने यारोंको बुलाकर कहने लगा कि देखो भाई अभी पिताके काम काज से छुट्टी न पाईथा कि वह फिर लड़ने को आरूढ़हुआ और आपलोग निश्चय करके जाने कि वह मेरे मारने को आयाहै यह कहकर बहुतरोया और एक पिशाच को बुलाकर एक पत्र अपनी मांके बुलाने के लिये लिखा और कहा कि बहुत शीघजाकर बुलालाओ वह दुष्टा कि जिसका नाम मलामूनाजादू था हाल सुनतेही वायुके समान उड़ी और तुरन्तही आकर उसके निकट पहुंची अफरेत उसके गलेमें लगकर रोया और अमीर का हाल सब उसको

सुनाया उसने बिचारकर कहा कि सत्यहै वह सब पिशाचों के मारने के लिये आयाहै इसलिये उत्तम है कि जादूका मकान जो मैंने बनवायाहै उसमें चलकर कुछदिन बासकर और जब वह मनुष्य परदे दुनियांको चला जायगा तब शहपाल से समझलेना होगा अफरेतको अपनीमाता की सलाह बहुत पसन्द आई और उसीसमय अपनी माताके साथ तिलस्मात सहरिस्तानजरींकीराहली और इस भेदको किसीसेन बतलाया सब सेना उसकी बहुत व्याकुलहुई इधर उधर ढूंढ़कर बहुतों ने तो अपने घरकी राहली और बहुतोंन आपसमें यह सलाहकी कि शहपाल हमलोगोंका पुराना स्वामीहै चलकर उसीसे अपना अपराध क्षमा कराकर रहैंजिस प्रकारसे वह रक्खे उसीतरहसे रहैं अबसिवाय इसके और कौनहै जहां चलकर रहैं किसी न किसी प्रकारसे शहपाल को प्रसन्न रक्खें शहपाल और साहबकिरां तख्तों पर सेना समेतसवार होकर युद्धकेलिये चले किमार्गमें पिशाचोंने आकर खबरदी कि अफरेत तबलजंग का शब्द सुनकरसाहबकिरां औरबादशाहपरदेकाफ के डर से भागगया और अपने पिताके मारे जानेसे बड़े दुःखमेंहैऔर उसकीसेना थोड़ीसी तो आपके दरवाजे पर आकर खड़ीहै औरशेष इधर उधर चलीगई औरजोसेना आपके दरवाजे पर खड़ीहै वह आप से अपराध क्षमा कराकर आपके समीप रहा चाहतीहै औरहाथबांधे शिर झुकाये दरवाजे पर खड़ीहै बादशाह इसको सुनकर अति प्रसन्न हुआ और रुपये अशरफी लुटातेहुये किले गुलिस्तानमें आयाइसखबर से कि अफरेतकी सेना बादशाहके आधीन होने आई है नगर बासियों ने भेंटदिया और बहुतसा खजाना लुटाया और कई दिनतकनाचरंग हुआकिया जब सबसे छुट्टीपाई अमीरने शाहपालसे कहा कि अबमुझे जानेकी आज्ञा दीजिये मेरा बड़ा हरज होताहै और दुनियांकाहाल न मिलनेसे मुझे बड़ा दुःखहै शहपाल शाहने कहा कि ऐसाहबकिरां आपका और मेरा यही इकरारहै कि आप अफरेतको मारकर तब दुनियांको जाइये और अफरेत अभी मारानहीं गया जोआप बेमारे जायँगे तो फिर वह आपके जानेपर मुझे दुःख देगा तब फिर आपको बुलाना पड़ेगा इससे यही बात अच्छीहै कि आप उसको मारकरतब दुनियांको जाइये अमीरने शिर नीचेकरलिया थोड़ी देरकेबाद शहपालशाहसे कहा कि आपका कहना हमको मानना हर प्रकार से उचितहै परन्तु यहभीतो मालूमहो कि वह कहां भागकर गयाहैवहीं चलकर मारें शहपालशाहने कहा कि उसकापता कसरबिल्लौरजाने से मालूम होगा अमीरने कहा वहां चलनेमें देरी क्याहै मैंतो तैयारहूं शहपालने उसीदिन खेमा आगे भेजा और दूसरेदिन अमीरकोसाथ लेकर उसीतरफ को चले जब कसरबिल्लौरमें पहुंचे वहां के बासियोंने

शहपालशाह को भेट आदिक देकर हर प्रकार से सेवामेंसंयुक्तरहेऔर कहाकि अफरेत अपनी माता जादूगरनी के साथ आकर तिलस्मात नदी में जो सहरिस्तान में उसने बनायाहै उसीमें छिपाहै और उसमें सब कारखाना जादूका है केवल बायुका बनाहुआ है अमीर ने कहा मुझको जाने की आज्ञा दीजिये ईश्वरमालिकहैदेखलियाजायगा जाकर उसको उसकी मासमेत मारूं और जो वह वहां अकेला है मैं भी अकेला जाऊंगा और ईश्वर की कृपा से विजय पाऊंगा बादशाह ने वह बातें सुनकर अबदुल रहमान की तरफ देखा तब उसने कहा आपकिसी तरह से सन्देह न कीजिये इनको खुशी के साथ जाने की आज्ञा दीजियेमैं अच्छी तरह से विचार चुकाहूं जातेही उसको मार कर विजय पाऊंगा तब बादशाहने चार परीजादों को जो उड़ने में अतिशीघ्र और बहुत तेज थे बुलाकर आज्ञादी कि अमीर को तख्त पर बैठाल के बहुत आरामके साथ लेजाकर वहां पहुंचावो परीजादोंने उसीसमय तख्तउड़ायाऔर तीन दिन राचि उड़ाये चलेगये जाकर एकबनमें उतारा अमीर ने पूछा यह कौन स्थानहै यहां क्यों उताराहै उनलोगोंने कहायह एक पहाड़ जहर मोहरा नामहै औरयहांएक प्रकारके नवीनमनुष्य रहतेहैं अमीरने पूछा कि तुम जानतेहो किइससस्थानसेसहरिस्तानकितनीदूरहैउन लोगों ने कहाकि छः कोश यहां से है तब अमीर ने कहा यहां क्यों उतरे वहीं चल कर ठहरते उन लोगों ने कहाकि इस पहाड़ के नीचेसे छः कोशतक सब जादूका कारखाना है जो हमलोग जायँ तो जल जायँगे और जो सामने देखाई पड़ता है उसीमें वहहै तब अमीर उसरात्रि को उसी बनमें आराम से रहे जब सबेरा हुआ निमाज पढ़कर परीजादों को उसी स्थान पर छोड़कर उन लोगों से कहाकि किसीतरह से सन्देह न करना हमारी आवाज सुनते रहना हमजातेहैं परन्तु तुमलोगों को एकबात बताजाताहूं कि मैं तीन बार चिल्लाकर शब्द करूंगा एक जब युद्ध करने को चलूंगा, दूसरा उसके मारने पर तीसरा विजय का, जब तासरी बार न सुनना तो जानना किमैं अफरेत केहाथसे मारागया शहपाल शाहसे मेरे मरने की खबरकरना यहकह करनदीपहिनकर अकरबसुलेमानी को हाथमें लेकरआंसू रूमालसे पोछता हुआ पहाड़से नीचे उतरा परन्तु अँधियारे के कारण आगे न बढ़सका इसी तरह से कई बार ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आया गया परन्तु जब नीचे गया तोअँधियारा मालूमहुआ और ऊपर चढ़ आवे तो फिर रोशनी तब परीजादोंने पूछा कि क्या आपके दुनियामें युद्धके पहिले इसीप्रकार से कसरत करते हैं अमीर ने कहा मैंकसरतनहींकरताहूं परन्तुजबपहाड़के नीचे जाताहूं तो अंधियारे केकारण आगेनहीं बढ़सकताहूं लाचारहोकर लौट आताहूं और जब ऊपर जाताहूं तो फिर रोशनी दिखाई देतीहै

इसी सन्देह में पड़ा हूं कि क्या ईश्वर की रचना है परीज़ादोंने कहा यह अफ़रीत की माता ने यहांसे अपने स्थानतक इसी तरह से जादू बनाये हैं यह सब उसीकोकरामात है जिसके देखनेसे आपको आश्चर्य मालूम होता है अमीर ने यह सुनकर कहा अच्छा ईश्वर मालिक है मैं इसी अँधियारेमें जाऊंगा यहकहकर पहाड़ के नीचे उतरा और थोड़ी दूर गया था कि आकाशवाणी हुई कि ऐअमीर खड़ाहोजा मुझको आनेदे तबचल अमीर यह सुनकर खड़ाहोगया कि इतनेमें सलासल परीज़ादने एक तख्तहाथ में लिये आकर सलाम करके कहा कि यहतख़्ती अबदुलरहमान ने दी है और कहाहै कि वे इसके देखे कोई काम न करना नहींतो बड़ा दुःख उठावोगे यह सबकहकर सलासल तख्ती देकर शिखरसे आया उधरीको चलागया अमीर ने उस तख्तीको जोदेखाईश्वरकेनामके पीछे यह लिखाथा कि ऐ अमीर ईश्वरने तेरे ऊपर कृपा की है कि यह तख्ती तुझे दीहै अबतेरी विजय होगीतूइसकोपढ़ताचलाजातबअमीरने उसको पढ़करआकाश की ओर मुख किया तो सब अन्धेरा जाता रहा और रोशनी प्रगट हुई तब अमीर को निश्चय हुआ कि अब मेरी विजय होगी तब अमीरने ईश्वर की रचनापर गुणानुवाद कियाऔर उस तख्तीको हाथमें लेकर आगेचला जब क़िलेके दरवाज़े पर पहुंचे तब देखा कि एक अजदहा मुखनीचे और पैरऊपरकियेपड़ाहै उसको देखकरबड़े सन्देहमें हुआ इतनेमें आकाशवाणीहुईकिऐअमीर तो किसीतरहसेसन्देहनकर अजदहेके मुखमें चलाजा अमीर ने तख़्तीको निकाल करदेखाता उसमें लिखाथा कि निस्संदेह अजदहे के मुखमें कूदपड़ना वह अजदहा नहींहै केवल धोखेका अजदहा है ज्योंहीं अमीर आखकोमूंदकर अजदहेकेमुखमें कूदा त्योंहीं शोरगुल होने लगा थोड़े समय केपीछे जब आंखको खोला तोन तो अजदहा निकला कुछभी न देखाई दिया सिवायएकबागके जो अति शोभायमान दिखाई दिया कि जिसमें हरप्रकार केफलफूलथे और मेवोंके वृक्ष मेवोंसे लदेथे और हर प्रकार के पक्षी बनेहुयेमीठे २ बाणी के शब्द बोलरहेथे उसी बागमें अमीर एक नहरपर बैठकर सैर करने लगे इतनेमें बागकी बारादरी से एकशब्द सुनाईदियाकि कोईईश्वरका जन नहींहै किमुझे इस कैदखाना से छुड़ाकर प्राणको बचावेअमीरयह शब्द सुनकर बारहदरी में गया देखा तो एक अति खूबसूरत युवास्त्री तख्त पर बैठीहै हाथ और पैरोंमें लोहेकी जंजीरें पड़ीहुईहैं और बड़े दुःखमें बैठी है अमीर को उसको देखकर बड़ी दया मालूम हुई समीप जाकर उससे पूछा कि ऐ सुन्दरी तू कौन है और किसने तुझे यहां कारागार में डालाहै उसने कहा प्रथम आप अपना नाम और निशान और किस उपाय से आप यहां आये हैं बतलाइये तो मैं अपना हाल बतलाऊं अमीरने कहामैं सहायक ग्रहपाल बादशाह परदेकाफ का

अमीरहमजा नामे ईश्वर पूजक अफरेत के बध करनेको आया हूं उसने कहा मैं सोसन परी सलीमकाही की बेटीहूं अपने दुःखका हाल क्याकहूं कि अफरेतने मेरे ऊपर अति मोहित होकर मेरेपितासे मेरा विवाह अपने साथ करनेको कहा जब उसने न माना तब अफरेत ने मेरे पिताको सेना लेकर पराजित किया तब मैंने अपने पितासेकहा कि आप मेरा विवाह उसके साथ करदें मैं धोखा देकर बांध लूंगी तो तुम पकड़कर शहपालशाहके समीप भेज देना वह शत्रुके क़ाबूमें आनेसे तुमसे बहुत प्रसन्न होगा और तुमको और बहुतसारुपया और देशदेगा परन्तु मेरा मकर उसकी माताको प्रसिद्ध होगयाउस ने मुझे बांधकर यहां डालदिया है तबसे मैं यहां पड़ीहूं इससे मरना उत्तमहै अबजो आप मुझे इस कारागारसे छुड़ा देवें तो मैं चलकर अफरेतका स्थान जहां वहरहताहैदिखादूं औरअच्छीतरहसेआपको बतलादूं अमीरने उसको कारागारसे छुड़ाकर मानो फिरसे प्राणदान किया तब वह अमीरको साथ लेकर एक दूसरे बागमें आई और अफरेतका स्थान दिखलाया अमीरनेदेखा तो बारहसौ पिशाच पहरे पर बराबरसे खड़ेहैं एकबारगी सोसनपरी अमीरके सामनेपृथ्वीपर गिरकर इसमसहरा पढ़कर आकाश पर बायु के समान उड़गई अमीर का गुन न माना और जब थोड़ीदूर ऊपरगई तो पिशाचोंसे पुकारकर कहनेलगी कि क्या देखतेहो अफरेतका मारनेवाला और जादूका बिगाड़नेवाला तुम्हारे सामने खड़ाहै इसे किसी युक्तिसेमारो तब अमीर उसके छुड़ानेसे अति लज्जित हुये और उसकी बेवफाई पर बड़ा आश्चर्य किया इतनेमें सबदेव चारोंतरफसे अमीरकोमारने के लिये हथियार लेले दौड़े अमीरने अक़रब सुलेमानी को मियान से निकालकर जिस देवपर एकबार चलाई उसका शिरअलगऊआपरंतु जितनी बूंदें रुधिरकी गिरतीथीं उतनेही नयेदेव बनजातेथे अमीरका हाथ मारते २ थकगया इतनेमें तख्ती याद आई उसमेंदेखातोलिखाथा कि सोसन जादूको कैदसे न छुड़ाना जो छुड़ावोगे तो बड़ादुःख पावोगे और जो शायद ऐसा होजाय और देव तुमसे लड़नेलगें तो इसको पढ़कर तीरसे मारकर सब दूर करदेना तब अमीर ने वैसाहीकिया सब थोड़ी देरमें दूर होगया जो शोर गुल होरहाथा सबबन्दहोगया और एक नयाशब्द सुनाईदिया कि लेनाचाहिये मैंभी आपऊंचा बाद इसके अमीरने देखा तोन सोसनपरीहैं न कोई देवहै औरबाग़की दीवारके पीछेसेक़ाफकेलोगोंकाशब्दऐसासुनाईदेताहै अमीरनेउसतरफ जाकर देखातो एकनईबागहैउसमेंएकस्त्रीयुवाअतिस्वरूपवान और एक मनुष्य दृढ़ काफकी सूरतका बैठाहै और चारसौदेवउसके साथसबक़ैदमें पड़े हैं अमीरको उसस्त्रीने देखकर कहा ऐजवान तुमुझकोइसक़ैदसे छुड़ा

दे बड़ा सबाबहोगा अमीर उसे पहिलेकी तरह जाना कि शायद यह भी वैसाही हो कि पीछेको मुझे दुःखदेवे (और सत्यहै कि दूधका जला माठा फूक २ पिये) तलवार निकालकर दौड़े कि इसको अवश्य मारिये यह न जानेपावे तब उसबृद्ध ने रोकर कहा हेअमीर मारे हुये को क्या मारना है पहिले मेराहाल सुनलीजिये तब चाहे मारिये चाहे छोड़दीजिये मेरा नाम जनीदशाह सबजपोश है और शहपाल शाहका बड़ा भाईहूं और यह मेरी बेटीहै रश्कियानपरी इसका नामहै औरकाफमें मेरा स्थानहै जब अफरेत ने शहपालको पराजय कियाथा तो मुझसे कहाथा कि अपनीबेटीका विवाह मेरेसाथ करो मैंने जब न माना तो मुझे पराजय करके मुझे मेरी बेटी और इन चारसौ देवों समेत पकड़कर यहां लाकर कैदकियाहै अबतुझे अख्तियारहै चाहे मार या जिला अमीरने तख़्ती देखी तो उसका कहना सत्यपाया तब अमीरको दया आई और उनको क़ैदसे छुड़ा कर जानेकी आज्ञादी और कहा कि शहपाल से मेरा सलामकहनेके पश्चात् कहना कि मुझे दुःख बड़ापड़ा परन्तु अबबहुतजल्दअफरेतको मारकर आताहूं और कहना कि सब संदेह छोड़कर ईश्वर से मेरे विजय पानेका बरमागें लिखा है कि जिस समय जनीद सबजपोशको अमीरने क़ैदसे छुड़ाकर जानेकी आज्ञादी उसके पश्चात् आगेको चले तो एक अति शोभायमान स्थान दृष्टि पड़ा उसकेसहनमें जलभरा हुआ तालाब मालूम हुआ उसको देखकर बड़े संदेहमें हुये फिर एक संदूक दिखाईदिया अमीर ने पैर आगे बढ़ाया कि देखें कि यह जलहै पैर रखनेसे मालूमहुवा कि जल नहींहै परन्तु तख़्ती बिल्लौरीहै और यह जलसेभी अधिक साफहै अमीर ने चाहा किइस संदूकको देखें कि इसमें क्याहै अवश्यहै कि इसमें भी कुछ जादूका कारखाना होगा ज्योंहीं अमीर संदूककी तरफ झुके त्योंहीं एकदेव जो उसमें लेटाथा कूदकर अमीरके गलेमें लिपटगया और अपना बल दिखानेलगा अमीर ने एक हाथसे संदूक का किनारा पकड़ा दूसरे हाथसे लंगर जमाकर तख़्तीको देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ अमीर ख़बरदार २ इस संदूकमें न जाना इस दुःखसे अपने प्राणको बचाना जोगया तो जीता न निकलेगा इस देवके शरीरमें एकरसन वालहै वह रस्सी नहींहै एक जनजालहै उसमें एकतख्ती बन्दी है उसको सीनेसे तोड़कर बहादेना तो उससे तेरा प्राण बचेगा और तेराकार्य सिद्धहोगा तब अमीरने एकतीर ईश्वरका नाम लेकर जो मारा तो उसमें से बड़ा तमाशा मालूमहुवा और सब संदेह ईश्वरकी कृपासे दूर होगया अमीरने तख़्तीको बालसमेत छातीसे जुदाकिया उसके टूटने पर ईश्वरका धन्यवाददिया और एकतीर संदूकमेंमारा

तो उस देवने सीधे जङ्गुम की राइली तीरके लगतेही एक बड़ा शोर गुल होनेलगा और वह संदूक जलने लगा और ऐसा शोर और गुल हुआ कि उसका शब्द आकाश तक पहुंचा और सबच शब्द होने लगा कि मनुष्य पिशाचों का मारने वाला आपहुंचा इस शब्द के पश्चात् जो अमीरने देखा तो न कहीं तख्ताहै न मकान केवल एक मैदान दिखाई पड़ताहै और उसमें एक रुधिर का तालाब है और उस तालाब के बीचमें एक वृक्ष खड़ा है और उसमें से रुधिर होकर एक दरार में जाता है परन्तु उसका कुछ हाल नहीं मालूम होताहै उसे देख कर बड़े संदेह में हुये थोड़ीदूर और गये तो देखा कि एक बाग़ दिखाई पड़ा और उसके दरवाजे पर एक लड़का खड़ापाया तब अमीर ने कई बार उससे पूछा कि तूकौन है अपना हाल बता परन्तु वह न बोला तब अमीर अन्दरचला तो उसलड़के ने पुकारकर कहा कि ऐदेव खबरदारहो मारने वाला देवोंका और बिगाड़ने वाला जादूका आपहुंचा तब अमीर ने फिरकर एक तलवार मारी वह दो टुकड़े होगया और ज्योंहीं अमीर थोड़ीदूर आगे गया त्योंहीं उसका शिर उड़कर अमीर के पैरमेंलगा तब वह फिर जीउठा तब अमीरने बड़े सन्देह में होकर तख्ती में देखा तो उसमें लिखा था कि दरवान को कभी न मारना वह कभी न मरेगा उसपर तेरीवार न चलेगी परन्तु जो छाती में तीर मारोगे तो अलबत्ता मारा जायगा और फिर न जियेगा और सुबारक हो कि अफरेत तक आपहुंचा अमीरने जो उसको पढ़कर एक तीर उसकी छातीमें मारा तो सबच अँधियारी छागई और चारोंतरफ से लूक और बाण गिरनेलगे और बड़ा शोर गुलहोने लगा तब अमीर तख्ती को नेचोंपर रखकर बैठगये कि नेचों को कुछ दुःख न पहुंचे इन सब आंधी आदिक के दूरहोने के पश्चात् जो नेच खोलकर देखा तो कोशों तक मैदान दृष्टि पड़ा और हर स्थान पर ऐसे २ शोभायमान फूलफूले हैं कि देखने से चित्तको बड़ा आनन्द प्राप्त होता है और उसमें बहुत से परीजादे गा बजा रहे हैं और अनेक २ प्रकार के अपूर्व तमाशा कर रहे हैं अमीर जो समीप उस स्थान के पहुंचे तो एक परी शराब और गिलास लेकर दौड़ी और कहने लगी कि लो साहब किरां इसको पीकर मार्ग के श्रम से रहित होकर थोड़ी समय हम लोगों के साथ बैठ कर गाना बजाना सुनकर चित्तको प्रसन्न करो अमीर ने तख्ती में देख कर शराब उसके हाथ से लेकर उसीके शिर पर छोड़ दी जैसा तख्ती में लिखा था वैसाही किया तब उसके बदन से लव निकलने लगी और बड़ा शोर हुआ कि सिकन्दर तिलस्मने असरार जादूगरनी कोभी मारा और उसके साथियोंकोबड़ा दुःख दिया तत् पश्चात् अमीर ने जो देखा तो एक बड़ा भारी पहाड़

दिखाई पड़ा और उसके आगे एकटीला निराधार खड़ाहै और उसके भीतरसे नौबतके शब्द अतिप्रिय सुनाईदिये तब अमीर उसके भीतरगया तो अफरेतको देखा बेखबर सोरहाहै और उसके श्वासका शब्द अति प्यारा मालूमहोताहै परंतु देखनेसे अतिभयानक मालूम होताहै अमीर ने अपने मन में विचारा कि सोते को मारना एक नामरदी है इसको उठाकर मारना चाहिये तब एक खञ्जर उसके पैरमें मारीतो उसने पैर देमारा कि मच्छरों के मारे निद्रा नहीं आनेपाती नहीं मालूम इतने मच्छर कहांसे आये तब तो अमीर बड़ेसंदेहमें हुये कि इसवार को तो यह मच्छर समझता है तो और क्या असर करेगा तब दो हाथोंसे उस पत्थर को दबाकर एकबार ईश्वर का नाम लेकर ऐसा चिल्लाया कि पहाड़ और जंगल हिल गये अफरेत ने भी उसके सुनने से जाना कि पृथ्वी या आकाश फटगया है उठकर जब खड़ाहुआ तो अमीर को सामने खड़ा देखकर व्याकुल होगया और कहने लगा कि मैं तो अब माराही जाऊंगा परंतु तेरा भी प्राण न बचेगा और मैं तो वहां से भागकर यहां छिपा था तूने यहां भी मेरा पीछा न छोड़ा तो अब तेरे युद्धसे क्या भागूं यह कह कर एक तलवार जिसमें पत्थर भी लगे थे लेकर अमीर के ऊपर चलाया अमीरने उसकी वारको रोककर अक-बसुलेमानी को निकाल कर मारा तो दो टुकड़े होगया और फिर हिल न सका परंतु थोड़ासा प्राणबचा था॥

मारा जाना अफरेत शाहदेवों का अमीर के हाथ से और शीश काटने से सैकड़ों देव बनकर अमीर से युद्धकरने को आना॥

तब अफरेत ने कहा अब तो मैं मारागया हूं यह भी जो श्वास रह गईहै इसको भी एक तलवार मार कर निकाल देव अमीर ने उसके कहने पर एक तलवार और लगाई तो ज्योंहीं उसका धड़ जुदा हुआ त्योंहीं दो टुकड़े आकाश पर उड़कर दो देव बनकर अमीर के सामने आखड़ेहुये इसीप्रकारसे दो पहरमें हजारों देव उत्पन्नहुये तब अमीर इस आश्चर्य को देखकर बड़े सन्देह में हुये और मारते २ हाथ भी थक गया इतने में दाहिने तरफ से शब्द ऐसा आया कि कोई सलाम कर रहाहै अमीरने फिरकर देखा तो हजरतअखजर अलेहुस्सलाम हैं तब तो सलाम करके कहने लगे कि मारते २ हाथ थकगया है परंतु बड़े आश्चर्य की बातहै कि जिसको मारता हूं एकका दो होकर युद्धकरने को आरूढ़ होताहै और एकभी इनमें नहीं मरता है तब हजरतअख-जरने कहा कि तुम अपने हाथसे यह सब दुःख सहरहे हो कि यहां जादूहै और हरएक कार्य बेतख्ती में देखे हुये करते हो और जादूको नहीं डरतेहो अब मैं एकबात बताऊं इसके अनुसार तुमकरोतो अभी सब बला दूर होजावे कि यह मंत्र जो मैं तुझे बताता हूं पढ़कर

तीरसे उसदेवके शिरपर जिसके माथेपर खाल चमकरहीहै मार तो सब बला अभी दूरहोजाय तब अमीरने उनकी आज्ञानुसार किया तबकेवल वही अफरेत पड़ाहुआ दिखाईदिया और सर्वत्र मैदान बड़ापायापरंतु शिर अफरेत का उस स्थानपर न था हजरत अखजर ने साहबक्रिरां से पूछा कि तुम इन देवों के उत्पन्न होनेका कारण जानते हो अमीर ने कहा मैं क्याजानूं ईश्वरजाने या आप पैगम्बर हैं जानें दूसरा कौन जान सक्ता है उन्होंने कहा अफरेत की माता उसका शिरलिये इसी घरमें बैठीहै वह जादूसे धविये की पत्नी उसके रुधिरमें डुबोकर आकाश में फेंकती है उससे दोदेव बनकर तुझसे युद्ध करने को आतेहैं अब गार में चलकर उसकोभी मारकर नरककुण्ड में पहुंचावो तब दोनों मनुष्यसाथ होकर उसगारमें गये उस दुष्टाकी माता जादूगरनीने जो हजरतअखजर को अमीर के साथ देखा तो क्रोधितहोकर बोली कि यहसब तूही करारहाहै कि मेरेपुत्रको मरवाकर अपनी ईर्षा मिटाई परंतु मैंतुझको भी जीता न छोड़ूंगी यहकहकर जादू करनेलगी तब हजरतअखजर ने एक मंत्रपढ़कर फूंका तो सीधी नरककुण्ड को सिधारगई ॥

आना ख्वाजेहज़रतअलेहुस्सलाम का अमीरके पास और उनकीआज्ञानुसार
तोड़ना जादू का और माराजाना अफरेतकी मालाका
हज़रत के मंत्रसे और लूटना तिलस्मका ॥

तत्पश्चात् सब जादू दूरहोगई और दोनोंमनुष्यों के चित्तप्रसन्नहोगये और हजरत अमीरकोविजयकी मुबारकबादी दी बल और हिम्मत की बड़ी प्रशंसा की और आज्ञादी कि अफरेत के शिरका मुकुट उतार ले और ऐसाही तुझे एक और मिलेगा जब सपेद देव तेरे हाथसे मारा जायगा तू इनदोनोंको अपने ताजमें लगाना इनसे बड़ाफल प्राप्तहोगा और एक गिलास जिसमें साढ़ेतीनमन शरबत अमाता था दिया कि यह तेरी सभामें काम आवेगा और इससे बड़े २ आश्चर्यरूपी तमाशा देखोगे तब अमीरने कहा हजरत इससमय मैं अति क्षुधावन्त हूं कुछ भोजन को दीजिये कि खाकर भूख मिटाऊं हजरत ने एक भोजन का पात्र निकालकर दिया अमीर ने उसमेंसे निकालकर खाया परंतु वह पूराही रहा तब हजरत ने एकबिलहरा पान का दिया कि पान खाकर चित्तको प्रसन्नकरै और कहा कि इनदोनों वस्तुओं को अपने पास रक्खो कि जबतक काफमें रहो भूखप्यास से दुःख न उठावो कि दूसरेसे मांगो और जब ये दोनों वस्तु तुम्हारेपास खोजाँ और ढूंढ़े न मिलेंतो जानना कि अब थोड़े दिनोंके उपरान्त दुनियांको जायँगे और तुमकाफ से बहुतदिनोंके पीछे जाओगे यहकहकर हजरत तोचलेगये और अमीर ने जो कईदिनों के बाद भोजनकिया आलस्य आगई और उसी चट्टान पर जहां अफरेत सोता था जाकर लेटगये और थोड़ीही समयमें सोगये

इस कारण से तीसरी बार शब्द न किया तो परीज़ादोंने जो ज़फ़रमो-हरापर खड़े शब्द सुननेके आशित थे जब शब्द न सुना तो शहपालकेपास जाकर अमीर के मारेजानेकी ख़बरदी और सब वृत्तान्त अमीरकाशह-पाल को सुनाया तब शहपाल अमीरके मारेजानेका हाल सुनकर रोने लगा और अब्दुलरहमान से कहा कि मैंने इब्राहीम के पुत्र का पाप अपने ऊपर लिया कि उसको वहां जानेदिया तब अब्दुलरहमान ने विचारकर कहा कि अमीरअफ़रेत और उसकी माताको मारचुके हैं थोड़ासा कार्य और बाकी रहाहै उसको भी पूरा करके अति शीघ्रही आतेहैं और इसीसे तीसरीबार शब्द नहींकिया चलिये उनको लेआवें कि सबलोग देखकर प्रसन्नहों और आप किसी तरह से सन्देह न कीजिये यह सुनकर शहपाल ने बड़ी खुशी की और सफरका सामान करकेसहरिस्तान को चला इस प्रसन्नतासे परीज़ादोंने ऐसे सिंहासन से तख्तको उड़ाया कि अति शीघ्र जहां अमीर सोरहे थे आपहुंचे तो देखा कि साहबकिरां एक ग़ारमें सोरहेहैं और मुखपर धूपआगई है और धूपसे स्वरूप बदलगया है असमानपरीने एक परसे छांह करली और दूसरे परसे वायु करनेलगी और हरप्रकार से सुख देनेलगी अमीर को जो आराम मिला आंखको खोलदिया और दृष्टि उठाकर देखातो असमानपरी एकपरसे तो छांह किये है और दूसरेसे वायु कररही है तबतो उठकर उसे गलेसे मिलाकर मुखको चूमा और हरप्रकार की प्रिय बातें करनेलगा और उसपर अति मोहित होकर अपने गोद पर बैठालकर बहुतप्यार किया और पूछा कि इस समयको तेरेयहांआनेका क्या कारणहै मुझे बड़ाआश्चर्य मालूमहुआ किंतु यहांआई उसने कहा आपकी विजयका हाल सुनकर अति प्रसन्नहोकर दौड़ीआईहूं तबतो अमीर औरही अधिक प्रसन्नहुये उसने फिर कहा कि एक खुशखबरी भी लाईहूं कि शहपालशाह भी पीछे आतेहैं और आपके विजय और शत्रुओंके वधकरने से अति प्रसन्न होकर आतेहैं यह सुनकर अमीर अति प्रसन्नहुये थे कि उसीसमय शहपालकी सवारी आपहुंची अमीर तख़्त देखकर उठकर खड़ा होगया शहपाल भी तख्त परसे उतरे और अमीरके हाथ मुखको चूमकर तख्तपर बैठाल कर क़िले गुलि-स्तानको लेआये और अपने सब कार्यसे रहित होकर नाचरंगकी सभा करके हरएक सरदार और नगरवासियों ने अमीर की न्योछावर में बहुतसा रुपया अशरफी पुण्य की और हरप्रकार से खुशी करने लगे तब बादशाह ने अब्दुलरहमानसे कहा कि तुम कहते थे कि हमको असमानपरीके साथ विवाह करने के योग्य है सो अब क्या देरी है और इस समयसे उत्तम समय न आवेगा कि सब सरदार और नगर वासी इस अपूर्व वस्तु के देखने को आये हैं और सब छोटे बड़े हमको

की प्रबलता से अति प्रसन्न हैं तो अब विवाह करने में देर न करो तब तो अब्दुलरहमान ने उठकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अति नमता के साथ सलाम किया अमीर ने पूछा यहक्या कारण है कि तुमऐसे प्रसन्न हुये तबउसने कहा कि आप बादशाह के जामाता हुये और हमलोगों के स्वामी अमीर ने कहा कि मैं ऐसी बात मुसाफिरत में नहीं करता क्योंकि जोहम आसमानपरीके साथ विवाह करेंगे तो दुनियाको न जासकेंगे और दूसरी स्थानपर काम के लोभसे रहजायँगे और दूसरी बात यहहै कि हम मलकामेहरनिगार नौशेरवां की बेटीसे प्रतिज्ञा करचुके हैं कि जबतक तुम्हारे साथ विवाह न करलेंगे तबतक दूसरी स्त्रीके साथ विवाह न करेंगे इस कारण से मैंअपनी प्रतिज्ञासे विपरीत नहीं करसक्ता तब अबदुलरहमान ने कहा कि आपने वहप्रतिज्ञा परदे दुनियां में कीथी यहां नहीं की इसमें किसी प्रकार से आपकी प्रतिज्ञासे अनुचित नहीं होता और दुनियां में पहुंचाने का तोमेरा कार्यहै मैंआपको दुनियां में पहुंचादूंगा अमीरने पूछा कबतक पहुंचावोगे तबफिर अबदुलरहमान ने कहा कि आपयह कुछ सन्देह न कीजिये यहपरदेखाफहै जोहम कहते हैं मान लीजिये परन्तु हमयह कहसक्ते हैं कि एक वर्षके पश्चात् आपको परदे दुनियां में पहुंचादेवेंगे और सबलोगों को आपको दिखला दूंगा अमीर ने विचारा कि बिना इनकी सहायता हमदुनियां को जानहीं सक्ते आखिरकार मान लिया और शहपाल शाह विवाह की तैयारी करनेलगे और बादशाहों को नेवता भेजने लगे थोड़े समय के पश्चात् सबबादशाह लोग अपने अपने नेवते लेकर गुलिस्ताम अरम में आये और उसविवाह की सभामें मिलकर प्रसन्न हुये और अफरेत देव और उसकी माता जादूगरनी के मारे जाने की खबर सबदेवों को पहुंचगई थी उसीमेंदेव समन्दर जिसके हजार हाथथे सुनकर अति क्रोधित होकर कहनेलगा कि देखो बादशाह शहपाल ने एकमनुष्य परदे दुनियां से बुलवाकर अफरेत और उसकी माता जादूगरनी को मरवाकर हमारी हजारों वर्षकी मेहनत जादू के कारखाने को तोड़वाकर हत्या करवा डाला और मुझसे कुछ न डरा और उसको गुलिस्तान अरममें लेआकर अपनीबेटी का विवाह किया यह कहकर सपेददेव को बुलाया और आज्ञादी कि तुम चारसौ देवों समेत अतिशीघ्र जाकर बादशाहसे कहो कि उसमनुष्य को हमारे पास भेजदो कि उसको मारकर अफ़रेत का बदलालेवें और उसकी हड्डियों को काटकर देवों और कौवोंको बांटदेवें यहसब बातें कहकर भेजा संयोग से उसीदिन विवाह की तैयारीथी कि बादशाह सभामें सुलेमनी तख्तपर बैठेथे और सबसेनापति आदिक यथा उचित अपने २

स्थान परबैठे थे और अमीर उस तख्तपर जो हजरत सुलेमान ने अति उत्तम शोभायमान और विचित्र अपने वजीर के लिये बनवाया था बैठेथे और उसमें हजारों प्रकार के जवाहिर जड़ेथे और सब सरदार लोग अपने २ स्थानोंपर यथा उचित बैठेथे और इसप्रकार के नाचरंग के तमाशे होरहेथे कि इतनेमें सपेद देव चारसौ देवों समेत अस्त्र सबप्रकार के धारण कियेहुये निडर होकर बराबर चला आया और बादशाह से सलाम करके कहनेलगा कि ऐबादशाह समन्दर सहस्रकर ने कहा है कि बादशाह ने देवोंको एकमनुष्य परदे दुनियांसे बुलाकर बड़ादुःख दिया है और अफरेत ऐसे सरदार को उसके मातापिता समेत मरवाडाला यहबात अच्छी नहींकी है परन्तु अब उचित है कि उसमनुष्य को हमारे पास भेजदेव कि उसके बदले में उस मनुष्यकी हड्डियां और बोटी २ काटकर देवोंको बांटदेऊं अमीर यहबातें सुनकर अति क्रोधित हुये और कहने लगे कि ऐपापी क्या बकता है अधिक बोला तो तुझेभी दण्डदूंगा और तेरी बातों का मजा चखादूंगा और उससे जाकर कहदे कि जो अफरेत से मुलाकात करनी हो तो मेरेपास आवे उसेभी वहां भेजदूं सपेददेव अमीर की बातें सुनकर क्रोधित हुआ और कहा कि मालूमहोता है कि तुही है यचारसौ देव तेरेही पकड़ने को लिये आये हैं तुझको मेरे सरदार ने बुलाया है यहकहकर अमीर की तरफ हाथ बढ़ाया कि अपना बलदिखावे अमीर ने ईश्वरको स्मरण करके उसका हाथ पकड़ कर ऐसा झिटकादिया कि वहदोनों पैरोंकेबल बैठगया और कमर से खंजर निकालकर उसके पेटमें ऐसामारा कि एकबार आह करके प्राणको त्याग करदिया ईश्वर की कृपासे मनोरथ पूरा होगया तब तो सबदेव व्याकुल होकर भागगये और सबजितने उसस्थान परबैठे थे अमीर के बलको देखकर बड़े आश्चर्य में होकर प्रशंसाकरनेलगे और बादशाह ने बहुतसा रुपया और अशरफी कंगालों को अमीर की नेवछावर में लुटाया और सपेद देवकी लोथको बनमें फुंकवादिया कि मरने के पश्चात भी उसको इसप्रकारसे लज्जितकिया और उसदिन विवाह होने के कारण से कई कोशोंतक रोशनी की और सड़कोंपर आतशबाजी गाड़कर छोड़वाते थे और एक फुलवाड़ी फूलोंकी ऐसी बनवाई कि जोकोई देखताथा वही जानताथा कि फूलोंके वृक्षलगे हैं और देखकर अतिप्रसन्न होताथा और जिससमय अमीरको खिलअत बादशाही पहनाई गईथी और बारगाह सुलेमानी से हरम सराबशाही की तरफ लेचले और सामान उत्तम एकट्ठाथा और सरदार और नगर बासी काफके अमीर के चारों तरफ मिलेहुये चलेजाते थे और गाने बजाने वाले आगे गाते बजाते और परियां हाथोंपर नाचती

हुई चली जातीथीं और गुब्बारे आकाश से छूटकर पृथ्वीपर गिरते तो यही मालूम होताथा कि सितारे टूट २ कर गिररहेहैं इसीप्रकार से अपूर्वतमाशे होतेथे परन्तुअब अधिक लिखनेसेबड़ाकाल व्यतीतहोता है इसलिये संक्षेपमें लिखाहै इसीधूम धामसे दुलहा दुलहिन के स्थान पर पहुंचा और अबदुलरहमान ने बहुतरात्रि व्यतीत होनेके पश्चात् विवाह किया और दोनों से प्रतिज्ञालीं और दोनोंका मनोरथ पूरा हुआ ग्रहपालशाहने आसमान परीके दहेज में कईदेश दिये और भी उत्तम २ वस्तुएं और जिससमय अमीर महलमेंगये तो सबकार्यसंछुट्टी पाकर असमानपरी को पलंगपर लेटालिया और उसकेसाथभोगकिया ईश्वरकी कृपासे उसके उसी रात्रिको गर्भ रहगया देव और मनुष्यका स्वभाव मिलगया प्रातःकाल जब अमीर स्नानकरके पोशाकें पहिन कर सभामें जाकर बैठे तब उसदिन से और अधिक प्रतिष्ठा होनेलगी और हरप्रकारका सामान उनकेलिये आनेलगा परंतु अमीर रात्रिदिनगिना करतेथे कि कब वर्षसमाप्त होगा कि हमजाकर दुनिया में सबसे मिल-कर यहांकी बातें कहेंगे और बहुतसी अपूर्व वस्तु यहांसे लेजाकर देकर प्रसन्नता उठावेंगे॥

अबअमीरकाहत्तान्तछोड़कर थोड़ासाहत्तान्तसेनापति सख़रोहिन्द मलिक लन्धौर घुचसादानका संक्षेप पूर्वक लिखतेहैं कि जब लन्धौर अमीरसे आज्ञालेकर नवकापर सवार होकर चलेउसके दूसरे दिन बहरामसे भी मुलाक़ात हुई तो बातोंसे मालूम हुआ कि अमीरने इसकोभी हमारी सहायताके लिये भेजाहै यह सुनकर अति प्रसन्नहुये और अमीरने ईश्वरका धन्यवाद किया पांचवेंदिन एक तूफानआया उसके कारण तीनदिनतक नवका इधर उधर फिराकी चौथे दिन जाकर तीरलगी और लोगोंका प्राणबचा परंतु जिसनौकापर बहराम सवारथा उसका पता न मिला तबतो लन्धौर बड़े सन्देहमें हुआ कि अमीरने हमारी सहायता के लिये भेजा है उनसे क्याकहेंगे हमको बड़ी लज्जा प्राप्तहोगी बहराम का हालसुनिये कि नौका जो तूफानसे बढ़तीर२टूटगई तो बहराम एक पटरेपर बैठहुये बहकर तीरलगेऔर पृथ्वीपर जाकर ईश्वरका धन्यवाद किया और एकतरफको पैदलचला और कई दिनोंसे अन्नजल न पाया था तीनकोश जाके एक सौदागरका डेरा पड़ाया उसीके समीप जाकर एक वृक्षके नीचे चुपचाप जाकर बैठा कि ऐसानहो कि इसमें कोई मुलाक़ाती मिले कि इस मेरीबुरी हालत को देखकर लज्जित करे परंतु संयोग से सरदार उस डेरेका घूमताहुआ बहरामके समीप आनिकला तो बहराम से पूंछा कि तू कौनहै और कहांसे किसकार्य के लिये आताहै और कहांजायगाबह-रामने कहा सौदागर हूं मेरी नाव तूफानमें डूबगईहै परंतु मेराप्राण

बचगया कि एक पटरेपर बहकर किनारेलगाहूं और वहांसे उतरकर यहां आयाहूं अबदेख जो ईश्वर देखावेगा वह और देखूंगा उसनेकहा ऐप्यारे पासद्रव्य अधिकहै परंतु पुचनहींहै इसीसेउदास रहताहूंअब तू मेरे साथ चलतुझे अपना पुचवनाऊं और सब द्रव्य और असबाबका स्वामी करूं और मेरे पास इतनी द्रव्यहै जो किसी बादशाह के पास भी नहीं है तब बहराम उसके साथ गया उसनेस्नान कराकर अच्छीपोशाक पहिना कर सब द्रव्य और असबाब दिखलाया और अपने साथ लेकर वहां से कूचकिया और सब माल असबाब का उसे मालिक किया बहराम ने सौदागर से पूछा किसतरफ जाओगे और किसनगरमें बास अपना करोगे उसने कहा मांड देश में जो सरनद्वीप के समीप हैऔर राजधानी मलिक शवांकी है वहीं चलकर मार्ग के श्रमसे आराम लेंगे तबतो बहराम अति प्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा होगी तो खम्भौर से अति शीघ्रही मुलाकात होगी पस कई दिनों के बाद मांड नगर में पहुंच कर सराय में असबाब उतारकर उतरे और दूसरे दिन सौदागर ने बहरामकासाथ लेकर स्नान किया और पोशाक बदलकर बाजार की सैर को गया तो वहां उसको एक तमाशा दिखाई दिया कि चौराहे में एक चौकुण्ठा चबूतरा है उसपर एक चौकी पर एक कमान और अशरफियों के तोड़े रक्खे हैं बहराम ने पहरेवालोंसे पूछा कि यह कमान और तोड़े कैसेहैं इसका हाल मुझसेबतलावोउनलोगों ने कहा कि जगीम नाम हमारे बादशाह का एक सेनापति बड़ा बुद्धिमान और बलवानहै यह कमान उसकाहै और वह इसे खींचनहीं सक्ता इसलिये तोड़े और कमान यहां रखवादिया है कि जो कोई इस कमान को खींच लेवे वह इन तोड़ों को लेजावे और जो जी चाहे वह करे बहराम ने पूछा कि कहोतो मैं इस कमानको खींचूं और अपना बल दिखलाऊं उन पहरे वालों ने कहा भला तू बेचारा इसे क्या खींच सकेगा तुममें ऐसा बलकहांहै बहराम ने कहा ऐ यारो बल ईश्वर का दिया हुआहै इसमें अमीर और गरीब का कुछभाग नहीं लगाहैऔर न किसी के इच्छा से मिलता है यह तेरी बातें वृथा हैं बहराम से पहरेवालों से बात चीत होतीथी कि नेकराय वजीर शईब शाह की सवारी बड़ी धूम धाम से आनिकली बहराम देख कर बड़े आश्चर्य में हुये दूतोंने जाके नेकराय से बहराम की तरफ सन्मुख होकर पूछा कि ऐ जवान तू इस कमान को खींचेगा बहराम बोला (कि हाथ कंगन को आरसी क्या) परीक्षा लेकर देख लीजिये नेकराय ने कहा अच्छा खींचो हम भी देखें बहराम ने ईश्वर का नाम लेकर कमान को उठा कर कबजे के अपने कमर में कर लिया और कमान को उठाकर खूब बल दिखलाया लोगोंने उसके बलको देख कर बड़ी प्रशंसा की परन्तु

जगीम के नौकरोंको अच्छा न मालूम हुआ आपसमें बकनेलगे और सिड़ियोंकी तरह हाहू करनेलगे बहरामने क्रोधित होकर कई एक को मुक्कोंसे मारडाला तब नेकरायने उनको वहांसे धमकाकर हटा दिया और बहरामको लेकर अपने स्थानपर चलाआया जगीमने जब यहसुना कि सौदागर कमान खींचकर अशरफियोंके तोड़े भी उठा लेगया और मेरे कई नौकरोंको मारडालाहै तिसपर नेकरायउसको अपने स्थान पर लेगये हैं और मेरा कुछ भी विचार न किया कि उसको अपने स्थान पर लेगया यह कहकर हथियार धारण करके बहरामको मारने के वास्ते चला और जब बहराम उसेदिखाईपड़ा तोअतिक्रोधित होकर उसे मारनेको तलवार लेकर दौड़ा और यह कहनेलगा कि ऐ गजी बेचने वाले तुझेभी बलशुआ कि मेरा कमान खींचकर अशरफीके तोड़े उठा लेगया और मेरे नौकरोंकोभी मारडाला अबलेतुझेभीमार कर बदला लेताहूं यह कहकर दौड़ा कि इसे मारकर बदलालेलूं कि बहरामने तलवार उसके हाथसे छीनकर एक ऐसा घूंसामारा कि वह मरगया यह खबर बादशाहको पहुंची उसने तुरन्तही नेकराय समेत लेआनेकी आज्ञादी जब बहराम सामनेगया तो बादशाह शईब ने क्रोधित होकर बहरामसे कहा कि तूने हमारे इतने बड़े नामी सरदार को क्योंमारडाला बहरामने कहा आपने क्यों ऐसानिबल वजीररक्खा है कि एक घूंसेके मारनेसे मरगया बादशाहको बहरामकी बातें बहुत पसन्दआईं और उसी समय खिलअत वजारतकी देकर जगीमके स्थानपर बैठनेकी आज्ञादी बहरामने दो तीन बार उस कमानको बादशाहके सामने खींचकर सिपाहियोंको आज्ञादी कि इस कमान को उसी स्थानपर तोड़ों समेतलेजाकर रक्खो औरजो कोई इसेउठावे उसे हमारे पास ले आवो बादशाह इनबातोंको देखकर अतिप्रसन्नहुये और अपनी बेटीकाबिवाह उसके साथ करदिया और बिवाह में बड़ी धूमधामकी और आधा देश अपनाउसको देकर कहा कि दोपहर तक तुम तख्तपर बैठकर हुकूमत कियाकरो और दोपहर भर हमहुकूमत राजसिंहासनपर बैठकर करेंगे अब थोड़ासा वृत्तांत सन्धौर खुसरो हिंदुस्तानका सुनिये कि जब सन्धौर बन्दर सरनद्वीपमें पहुंचा तोवहां पर नावको लंगर डालकर आपसेनासमेत पृथ्वीपर उतरकर एक शो-भायमान स्थानपरडेराडालकर पड़े और कुछदिन वहां रहकरसेनाको आरास्ताकिया और जिस मनुष्यकोजो लायकसमझावैसीआज्ञादेकर किले सवर सबूरकी तरफ रवाना हुआ और वह हालसबपर प्रसिद्धहै॥

पहुंचनासुलतान हिंदुस्तान मलिक सन्धौर पुत्र मादान का क़िले सवर सबूर पर ॥

लिखनेवालालिखताहै कि जैपूरशाह जिसको मलिक सन्धौरखुसरो हिंदुस्तान राजगद्दीपर बैठालकर अमीर के साथ मदायनकी तरफ चले

गयेथे और उसको अपना स्थानापन्न बनाआये थे परन्तु बहुतदिनों से मलिक सारिज फीरोज तुर्क और अहबूक खारजमी और महलील सगलियार इन सबलोगोंके मारे क़िला अपना बन्दकिये हुयेबड़ दुःख में पड़ेरहे आखिरको सेनासे कहा कि क़िलेमें बन्द होकर कबतकदुःख उठावें बाहर निकलकरयुद्ध करनेको आरूढ़ होवें मरें यामारेंदोमेंएक होगा इसमें बैठरहना मरदानगी का कामनहींहै जैपूरशाहने कहा कि जैसी तुम लोगोंकी खुशीहो हमको हरप्रकारसे मंजूरहै तब उसी समय शत्रुकेपास एकदूत भेजा कि क़िलेसे हटकर पड़ो हमारा तुम्हारा युद्धहोगा तबतो उन लोगोंमें अति प्रसन्न होकर जैपूरकी आज्ञानुसार किया और दोनों तरफ युद्धका सामान होकर डंका युद्धका बजनेलगा औरप्रातःकालकोदोनोंतरफकीसेनायुद्धकेखेतमेंआकर युद्धकोआरूढ़हुई और प्रथममहलीलसगलियार खेतपर आकर युद्धकरनेकोआरूढ़ हुआ और उधरसे जैपूरशाहभी युद्धके खेतमें घोड़ा बढ़ाकर खड़े हुये परन्तु किसीकी वार न चलीथी कि एक बवंडर सामनेसे ऐसा उठा कि सर्वत्र अँधियारा होगया और उसकेदूरहोनेके पश्चात् एकसेना सत्तर सहस्रकी दिखाईदी कि जिसके देखनेसे सबलोग व्याकुल होगये आगे लन्धौर हाथीपर सवार सब शस्त्र धारण किये हुये भयानक रूपबनाये बैठाथा कि जिसके देखनेसे लोगोंको बड़ा आश्चर्य होता था जब उस स्थानपर आ पहुंचा तो उतरकर महलील संगसारको ललकाराऔर ईश्वरका नामलेकर बोला कि मैं तेरा प्राणकागाहक आपहुंचा देखअभी मैं तुझको मारताहूं उसने यह सुनकर गुरज लन्धौर परचलायालंधौरने रोककर एक वार ऐसीमारी कि फिर उसने शिर न उठाया औरफिर लोगोंको ललकारा कि जिसको युद्ध करनेकी इच्छाहो वहआकरखड़ा होवे और अपनी बहादुरी दिखावे परन्तु यह हाल देखकर किसी ने कुछ उत्तर न दिया और किसीका मन न हुआ कि इसके सम्मुखजाकर खड़े होवें तब लन्धौरने एकबारगी हल्ला बोलदिया और सब सेना शत्रु की सेनापर जागिरी बहुतसी सेना शत्रुकी मारीगई और शेषसेनामें भागकर अपना प्राण बचाया और लन्धौरकी सेनाको बहुतखजाना और मालमिला कि हरएक मालदार होगया और खुसरोहिंद अति प्रसन्नता केसाथ क़िलेमें गया सब सन्देह मनसे दूरहोगया और सभा नाचरंगकी करवाई तब फिर मलिकसारिज और अहबूकखारजामी दो पहलवानोंको तीनलाख सेनासमेत लेकर युद्ध करनेको आकर पड़ा एक पहलवानका नाम हिरासफीलदन्दां था दूसरेका मंगल वकील जोरथा और वे दोनों ऐसेथे कि हरएक मनुष्य देखकर डरताथा युद्ध का डंका बजवाकर युद्धकरनेको उपस्थित हुये लन्धौरने भी डंकेकाशब्द सुनकर अपनी सेनामेंभी डंका बजानेकी आज्ञा देकर युद्धका सामान

इकट्ठा करने लगे और प्रातःकाल होतेही दोनोंतरफ की सेना युद्ध के क्षेतपर आकर खड़ीहुई तो हिरासफील जोर से आगेबढ़कर ललकारा तब लन्धौर ने भी अपने हाथी आगे बढ़ाये और उसके सन्मुख आकर बहादुरीके साथकहाकि लाअब वारचला देखूं कैसा बलतेरेहै तब उसने एक तलवार जो चारसौ मनकीथी निकालकर लन्धौरके शिरपर मारी खुसरो ने उस वारको बचाकर अपनी तलवार म्यानसे निकाल कर ललकार कर कहा कि खबरदारहो नहींतो पीछेसे कहो कि धोखे से मारा अबमैं तलवार चलाताहूं रोको ऐसा कहकर वारचलाई तब उसने ढालसे रोका और अपना सिपाहपना देखलाया परन्तु वहढाल काटतीहुई कलेजे के पास जानिकली और उसने फिर शिर न उठाया एकही वारमें प्राण निकलगया उसके भाईने जोदेखा कि भाई हमारा मारागया उस समय अपने घोड़ेको दौड़ाकर लन्धौर के सामने आया और अति दुःखित होकर कहा कि तूने बड़ा गजब किया जो मेरे भाईको मारडाला देख तेरा प्राण अबकब बचताहै तेरी हड्डियों को कैसा काटताहूं लन्धौर ने कहा कि सन्देह न करो तुम को भी उसीके पास भेजतेहैं कि तुम दोनों साथजाकर रहो अब वार चला उसने एक तलवार खुसरो को खूबजोर करके मारी खुसरो ने उसको रोककर वही रुधिरसे भरीहुई तलवार कमरसेनिकालकर जोमारी तो दोटुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और तलवार साफ अलगहोगई अहबूकऔर सारिजने जो देखा कि दोनों पहलवान मारे गये सब सेना लेकर एक-बारगी शत्रुकी सेनापर आगिरे और उधरसे हिन्दकी सेनामें धावा किया दोपहर बराबर तलवार चलाकी तब अहबूक और सारिज ने विचारा कि सेनामारी जातीहै और शत्रु दबाये चलाआता है इस समय यहांठहरना अनुचितहैतब डंका लौटनेका बजवाकर वहांसे भाग कर और अपनी पराजयसे लज्जित होकर अपने स्थानपर चलेआयेऔर मलिक लन्धौरभी विजयका डंका बजवाते हुये अति प्रसन्नता के साथ किलेमें दाखिल हुये और मलिकसारिजअतिव्याकुल हुआ महलमेंजो गयातो उसकी स्त्री और बेटीने कारण व्याकुलताका पूछा उसने कहा कि लन्धौरके हाथसे प्राण नहीं बचा चाहता और किसी सरदार का दिल उससे युद्धकरनेकोनहीं चाहता कि प्रथम वारतो उसने उसप्रकार से परास्तकिया कि जिसकी प्रशंसा नहीं करसक्ते ऐसी बहादुरीकीकि हम चारबादशाह मिलकर युद्ध करनेको गयेथे परन्तु विजय न पासके और बहुतसी सेनामारीगई और दूसरे युद्धमें किमैंने तीनलाख सिपाही लेकर चढ़ाई कीथी परन्तु लाख सेना और दो पहलवान मारे गये कि उसके कारणसे अब एक सिपाही भी युद्धकानाम नहींलेताहै तिसपरभी विजय न मिली सो अब पेटमारकर मरजानेके सिवाय और कोई युक्ति

नहीं सुभाती है इनबातोंके सुननेसे उसकी बेटीको बड़ादुःख हुआ और कहने लगी कि जो आज्ञा होतो मैं लन्धौर को अपनी युक्तिसे बांधलाऊं और आपको अपनी युक्तिदिखलाऊं सारिजने पूछा तुक्योंकर ऐसेकाम को कर लावेगी उसनेकहा आपसे इससे क्या वास्ता जोमेरा जी चाहेगा वहकरूंगीपरन्तुउसको पकड़लाऊंगी उसनेकहा कि इससेक्या उत्तम तूजा मुझे मंजूरहै तूने मसलानहीसुनाकि(अन्धाकेवलदोनेत्रचाहताहै) तब उसने एक खेमा जंगलके समीप खड़ा करवाया और अपने बदन को अच्छीतरह से साफकरके अनेक २प्रकारके कपड़े और जेवरपहिन कर चारसौ सहेलियों समेत उसखेमे में जाकर परी की तरह बैठी और सब सहेलियोंको गाने बजाने की आज्ञादी और मलिक लन्धौर केदिलमेंयह बात आई कि शत्रु तो अब पराजय पाकर चला गया है जब तक वह फिर न आवे तब तक जंगल में चल कर शिकार में चित्त को बहलावें इस विचार से क़िले से निकल कर जंगलकी तरफ़ गया तो वहां जाकर देखा कि एकबड़ा भारी खेमाखड़ाहै और उसमें स्त्रियां गारही हैं समीप जाकर पूछा कि यह किसका खेमाहै लोगोंने कहा किसारिजकी बेटी चित्त प्रसन्न करनेके लिये आईहै लन्धौर उसके देखने के लिये एक पत्थर पर जो उसी स्थान पर पड़ा था बैठगया और उसी की तरफ़ देखने लगा उसने परदेके आड़से लन्धौर की सूरत देखकर एक अतिखरूपवान युवा स्त्री के हाथ एक गिलास में शराब उसके पीने केवास्ते भेजा तब लन्धौरने पूछा कि उसने मुझे क्योंकर पहचाना उस स्त्रीनेकहा कि जिस दिनसे युद्धस्थल में देखाहै उसी दिनसे आपके ऊपर मोहितहै यह सुनकर लन्धौर अतिप्रसन्नहुआ इतनेमें एक दूसरी लौंड़ीआई कि आपको मलका साहबा बुलातीहैं जल्दी चलिये नहींतो वेखुद आवेंगी तबतो लन्धौर अति प्रसन्न होकर खेमेके भीतर गया तोवहांदेखा कि एकस्त्री चौदहवर्षकी जवान अपना स्वरूप बनाये हुये तख़्त पर बैठी शराब पीरही है और चारसौ सहेली चारों तरफ जिस प्रकारसे चन्द्रमाके चारोंतरफ तारे चमकते हैं उसी प्रकार से वे चारसौ सहेलियां बैठीथीं और परियां नाचगारहीथीं और हर प्रकार की प्यारी २ बातें करतीथीं लन्धौर यह हाल देखकर चारों तरफ देखनेलगा तब उसनेउठकर लन्धौरको तख़्तपर अपनी बगलमें बैठालिया अर्थात् फसानेका जालबांधा और कईगिलास शराब अपने हाथ से पिलाया और हरबार अपना लोभित होना उसको जिताया तब लन्धौर ऐसा कामके बश होकर बेहोश होगया कि किसी का कुछ बिचार न किया और उसके गले में हाथ डालकर कहनेलगा कि ऐ प्राणप्यारी तूमेरे क़िलेमेंचल वहांतुझको बड़ा सुख मिलेगा यहां क्यों दुःख उठारही है उसनेकहा इस समय दिनहै रात्रिको मैंचलूंगी और

सबरात्रि आपके पास रहकर सुखको प्राप्तहूंगी लन्धौर ने मंजूर किया और रात्रिको अपने पास बुलाया और हरचन्द वहां से दिल उठने को न चाहताथा परन्तु लाचारीसे उठकर अपने स्थानपर आया और अपने खेमेको सजाने की आज्ञा दी और आप रात्रिके आनेकी आशामें बैठा जब रात्रिहुई लिबास पहिन कर उस सत्कारके पासगया और काम से लोभित होकर व्याकुल होगया तबउसने दोशिलास शराब बेहोशीकी पिलाकर बेहोश किया तब चाहा कि बांधकर पिता के पासभेजें कि वह अपना बदलालेवे परन्तु उसकी मृत्युनथी ईश्वरने उसके मनको फेरदिया कि संदूकमें बन्दकरके खारी समुद्र में जो वहांसे समीपथा उस संदूकको डालदिया और अपने पितासे आकर कहा कि मैंने तुम्हारे शत्रुको मार कर नदीमें फेंकवादिया और उससे तुम्हारा बदलालिया तबतो उसने अतिप्रसन्न होकरयुद्धका बाजाबजवाने कीआज्ञादी और युद्धकासामान इकट्ठाकिया और प्रातःकाल जब दोनों सेना युद्धके खेतमें आकर खड़ी हुईं उससमय हिन्दकी सेनाने लन्धौर को जो उसस्थानपर न देखा तो सब अतिव्याकुल हुये और लड़नेसे भी टूटगया और सारिनने युद्धमेंविजय पाकर बहुतसे मुसलमानों को मारडाला और और सेनासे अपना बदला लिया और जैपुरशाह ने देखा कि सेना लन्धौर के न होने से व्याकुल होरही है कि विजय नहीं मिलसक्ती लौटनेका डंका बजवाकर फिरअपनेकिलेका दरवाजा जाकर बन्द करलिया औरलन्धौरको ढूंढ़ने लगे लन्धौर का हाल सुनिये कि वह संदूक जलपर लहर के धक्केखाता हुआ इधर उधर बहता चलाजाता था संयोगसे एक सौदागर की नावको सिन्ध से आतीथी मल्लाहोंने उस संदूकको पकड़लिया और बेखोले सौदागर के हाथ बेचडाला उस अहमक़ने लेकर जो खोला तो उस में एकमनुष्य बेहोशपाया उसको निकालकर पलंगपर लेटाकर चैतन्यकिया तब लन्धौर ने आंखखोलकर देखा तो नावपर एक पलंग पर बहुत से कपड़े बदनमें लपेटे पड़ाहै और न तो वह खेमाहै न वहखी देखकर बड़े आश्चर्यमें होकर उस मनुष्यसेपूछा कि तूकौनहै और यह कौन स्थानहै और यहां मुझको इस नावपर कौन लेआया तबउसने कहा मैं सौदागर हूं सिन्धसे माल बेचनेके लिये लेजाताहूं और आप संदूकमें बहेचलेजाते थे मल्लाहोंने संदूक पकड़लिया हमनेउससेलेकर खोलातो आपको उसमें बेहोशपाया निकालकर पलंगपर लेटाकर चैतन्य किया इतनाशुश्र मैंने आपके साथ कियाहै अब आपबतलाइये कि कौनहैं और किसने आपके साथ यह सलूककिया है लन्धौरने अपना सबवृत्तान्त उससे कहा तबवह भी मुसलमान अपने धर्ममें पक्काथा उसके पैरोंपर गिरपड़ा और कहा कि मैं आपको बहुत जल्द सरन्दीप पहुंचादूंगा और आप को किसी प्रकारसेदुःख नहोने पावेगा लन्धौरने पूछाकिअबतुम कहां जावोगे और

नहीं सूझती है इनबातोंके सुननेसे उसकी बेटीको बड़ादुःख हुआ और कहने लगी कि जो आज्ञा होतो मैं लम्धौर को अपनी युक्तिसे बांधलाऊं और आपको अपनी युक्ति दिखलाऊं सारिनने पूछा तुक्योंकर ऐसेकाम को कर लावेगी उसनेकहा आपसे इससे क्या वास्ता जोमेरा जी चाहेगा वहकरूंगीपरन्तुउसको पकड़लाऊंगी उसनेकहा कि इससेक्या उत्तम तूजा मुझे मंजूरहै तूने मसलानहींसुनाकि(अन्धाकेवलदोनेत्रचाहताहै) तब उसने एक खेमा जंगलके समीप खड़ा करवाया और अपने बदन को अच्छीतरह से साफकरके अनेक २प्रकारके कपड़े और जेवरपहिन कर चारसौ सहेलियों समेत उसखेमे में जाकर परी की तरह बैठी और सब सहेलियोंको गाने बजाने की आज्ञादी और मलिक लम्धौर केदिलमेंयह बात आई कि शत्रु तो अब पराजय पाकर चला गया है जब तक वह फिर न आवे तब तक जंगल में चल कर शिकार में चित्त को बहलावें इस विचार से क़िले से निकल कर जंगलकी तरफ गया तो वहां जाकर देखा कि एकबड़ा भारी खेमाखड़ाहै और उसमें स्त्रियां गारही हैं समीप जाकर पूछा कि यह किसका खेमाहै लोगोंने कहा किसारिनकी बेटी चित्त प्रसन्न करनेके लिये आईहै लम्धौर उसके देखने के लिये एक पत्थर परजो उसी स्थान पर पड़ा था बैठगया और उसी की तरफ देखने लगा उसने परदेके आड़से लम्धौर की सूरत देखकर एक अति खरूपवान युवा स्त्री के हाथ एक गिलास में शराब उसके पीने केवास्ते भेजा तब लम्धौरने पूछा कि उसने मुझे क्योंकर पहचाना उस स्त्रीनेकहा कि जिस दिनसे युद्धस्थल में देखाहै उसी दिनसे आपके ऊपर मोहितहै यह सुनकर लम्धौर अतिप्रसन्नहुआ इतनेमें एक दूसरी लौंड़ीआई कि आपको मलका साहबा बुलातीहैं जल्दी चलिये नहींतो वेखुद आवेंगी तबतो लम्धौर अति प्रसन्न होकर खेमेके भीतर गया तोवहांदेखा कि एकस्त्री चौदहवर्षकी जवान अपना खरूप बनाये हुये तख़्त पर बैठी शराब पीरही है और चारसौ सहेली चारों तरफ जिस प्रकारसे चन्द्रमाके चारोंतरफ तारे चमकते हैं उसी प्रकार से वे चारसौ सहेलियां बैठीथीं और परियां नाचगारहीथीं और हर प्रकार की प्यारी २ बातें करतीथीं लम्धौर यह हाल देखकर चारों तरफ देखनेलगा तब उसनेउठकर लम्धौरको तख़्तपर अपनी बगलमें बैठाल लिया अर्थात् फसानेका जालबांधा और कईगिलास शराब अपने हाथ से पिलाया और हरबार अपना लोभित होना उसको जिताया तब लम्धौर ऐसा कामके बश होकर बेहोश होगया कि किसी का कुछ विचार न किया और उसके गले में हाथ डालकर कहनेलगा कि ऐ प्राणप्यारी तूमेरे क़िलेमेंचल वहांतुझको बड़ा सुख मिलेगा यहां क्यों दुःख उठारही है उसनेकहा इस समय दिनहै रात्रिको मैंचलूंगी और

सबरावि आपके पास रहकर सुखको प्राप्तहुंगी लन्धौर ने मंजूर किया और रावि को अपने पास बुलाया और हरचन्द वहां से दिल उठने को न चाहताथा परन्तु लाचारीसे उठकर अपने स्थानपर आया और अपने खेमेको सजाने की आज्ञा दी और आप रावि के आनेकी आशमें बैठा जब रावि हुई लिबास पहिन कर उस सरदारके पासगया और काम से लोभित होकर व्याकुल होगया तबउसने दोगिलास शराब बेहोशीकी पिलाकर बेहोश किया तब बांधा कि बांधकर पिता के पासभेजें कि वह अपना बदलालेवे परन्तु उसकी मृत्युनथी ईश्वरने उसके मनको फेरदिया कि संदूकमें बन्दकरके खारी समुद्र में जो वहांसे समीपथा उस संदूकको डालदिया और अपने पितासे आकर कहा कि मैंने तुम्हारे शत्रुको मार कर नदीमें फेंकवादिया और उससे तुम्हारा बदलालिया तबतो उसने अतिप्रसन्न होकरयुद्धका बाजाबजवाने कीआज्ञादी और युद्धकासामान इकट्ठाकिया और प्रातःकाल जब दोनों सेना युद्धके खेतमें आकर खड़ी हुई उससमय हिन्दकी सेनाने लन्धौर को जो उसस्थानपर न देखा तो सब अतिव्याकुल हुये और लड़नेसे जी टूटगया और सारिजने युद्धमेंविजय पाकर बहुतसे मुसलमानों को मारडाला और और सेनासे अपना बदला लिया और जैपूरगाढ़ ने देखा कि सेना लन्धौर के न होने से व्याकुल होरही है कि विजय नहीं मिलसक्ती लौटनेका डंका बजवाकर फिरअपनेकिलेका दरवाजा आकर बन्द करलिया औरलन्धौरकोढूंढ़ने लगे लन्धौर का हाल सुनिये कि वह संदूक जलपर लहर के धक्केखाता हुआ इधर उधर बहता चलाजाता था संयोगसे एक सौदागर की नावको सिन्ध से आतीथी मल्लाहोंने उस संदूकको पकड़लिया और बेखोले सौदागर के हाथ बेचडाला उस अहमक़ने लेकर जो खोला तो उस में एकमनुष्य बेहोशपाया उसको निकालकर पलंगपर लेटाकर चैतन्यकिया तब लन्धौर ने आंखखोलकर देखा तो नावपर एक पलंग पर बहुत से कपड़े बदनमें लपेटे पड़ाहै और न तो वह खेमाहै न वहको देखकर बड़े आश्चर्यमें होकर उस मनुष्यसेपूछा कि तूकौनहै और यह कौन स्थानहै और यहां मुझको इस नावपर कौन लेआया तबउसने कहा मैं सौदागर हूं सिन्धसे माल बेचनेके लिये लेजाताहूं और राम संदूकमें बन्दलेजाती थी मल्लाहोंने संदूक पकड़लिया हमनेउससेलेकर खोला तो इसमें यही बेहोशपाया निकालकर पलंगपर लेटाकर चैतन्य किया इतने में आकर आपके साथ कियाहै अब आपबतलाइये कि कौनहै कौन जिसने आपने विश्वासघात साथ यह सलूककियाहै लन्धौरने अपना बदलालेने के लिये कहा देवों का भी मुसलमान अपने धर्ममें पक्काथा उसके [illegible] बहादुरी कि मैं आपको बहुत जल्द सरन्दीप [illegible] भेजा बहु-प्रकारसेदुःख नहोने पावेगा लन्धौरने यह [illegible] धीरजदिया

वहांसे फिरकर कबआवोगे सौदागर ने कहा मैंमान्डू देशको जाऊंगा और वहां कुछदिन रहूंगा इसप्रकारसे कईदिनों केपीछे नवका मान्डू में जाकर पहुंचो नावको नदीमें लंगरडाल उतर कर सौदागर मान्डू नगरमें जाकर ठहरा संयोगसे एकदिन बाजारमें खुसरो सैरके वास्तेगया तो उसी रास्तेसे जहां वह कमान और अशरफियोंके तोड़े रक्खेथे और सिपाही पहरेपर थे जानिकला तो सिपाहियों से पूछा यह कमान किसकाहै और यहां क्योंरक्खाहै सिपाहियों ने कहा यह कमान बहरामका है जो कोई इसकमान को खींचेगा वह इनतोड़ों को पावेगा और संसारमें प्रसिद्ध होगा लन्धौर बहरामका नाम सुनकर अति प्रसन्न हुआ और पहरे वालोंसे कहा कि बहराम जिसका नामहै वहमेरा नौकरहै बहुतदिनों से उसका पतानहीं मिलाथा आज उसका पता मिला यह कहकर कमानको उठाकर दोतीन बार घुमाकर अशरफियोंके तोड़ोंको लेकर उसीस्थान पर कंगालों को लुटादिया पहरेवालों ने जाकर सबहाल बहरामसे कहा बहरामने यह सुनकर कि वह कहताहै कि बहराम हमारा गुलाम है क्रोधित होकर कई सिपाहियों को भेजा कि जाकर उसको हमारेपास पकड़लावो जब वेलोग थोड़ीदूर गये तोदेखा कि वह आपही आताथा तबतो लौटकर बहराम से कहा कि वह खुदी आरहाहै आपका इक़बाल उसको खींचलाता है बहराम बैठकेसे निकलकर थोड़ीदूर आगेगया तो देखा कि लन्धौर चला आताहै दौड़कर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख हुआ खुसरोने उसको छातीसे लगाया और अतिप्रसन्नताके साथउसके पेशानी को चूमलिया और दोनोंखुशीसे बेहोश होगये मलिकशर्दूब यह सुनकर कचहरीसे निकलकर उनकेपास आयातो देखा कि दोनों बेहोश थे तब गुलाब आदिक छिड़क उनको होशमें किया तबबहरामसे सबहाल पूछा बहराम पहिले तो अपनाहाल छिपाये था परन्तु उस समय सब अपना और खुसरो का सत्य बयान किया और उस छिपे हुयेभेदको खोलदिया शहंशाह ने जो खुसरोका नाम सुना तो उसके पैरों को चूमकर अति प्रतिष्ठाकेसाथ अपने बैठके में लेआकर खुसरोको तख़्त पर बैठाला और आप एक कुरसी पर अलग बैठा और नाचरंग का सामान इकट्ठा करके सातदिन तक करवातेरहे सातदिन के पश्चात् खुसरो बहरामको साथलेकर और बहुतसी सेनाभी साथलेकर सामान के साथ सरन्दीपकी तरफ रवाना हुये ॥

वृतान्त साहब क़िरां (हमज़ा) का जिस समय में परदे काफ को गयेथे ॥

कि जब वर्षपूराहुआ तब असमानपरीकेएककन्या उत्पन्नहुई जिसका स्वरूप सूर्य्यके समानथा उसे देखकर बादशाह और सब सरदार लोग अति प्रसन्नहुये परंतु अमीर कन्याके होनेसे अतिलज्जित हुये तब

बादशाह ने खिलअत सुलैमानी देकर अमीर से कहा कि यह ईश्वर की रचना है इसमें मलाल की कुछ बातनहीं पूंछा कन्या दोमेंसे एकईश्वर देता है यह आपका विचार बुद्धिसे विरुद्ध है तबअब्दुलरहमाननेकहा कि ऐसाहबकिरां यहकन्या बड़ा प्रतापी होगी कि सबदेव इसकी आज्ञामें रहेंगे और यहसाहब किरां काफकहलावैगी और बड़ानाम होगा इन बातोंके सुनने से अमीर का सबमलाल दूरहोगया और चित्त अति प्रसन्न हुआ और बादशाहनेनातिनके होनेसे कई महीनेतक नाचरंग करवाया और कंगाल फकीर आदिको रुपया अशरफी लुटायाऔरजबयहलड़की छःमहीने की हुई तो एकदिन अमीरने बादशाह से कहा कि जोकुछ आपने अबतक कहा उसको मैंनेकिया अब कृपाकरके मुझे परदे दुनियां को भेजकर अपने वादेको पूरा कीजिये तबबादशाह ने कहा ऐसाहब किरां आपकी आज्ञासे हमबाहर नहीं हैं और हरप्रकार से आपकी खातिरदारी हमको उचितहै और तुम्हारे रुखसत करनेमें कुछ इनकार नहीं है परन्तु किलेसईमें जो काफसउत्तरतरफहैऔर हमारा कदीम किला है उसमें दोदेव खरचाल और खरपालनामे दशसहस्र देवों समेत रहते हैं और दोनों बहादुर हैं जोमेरी बिनय मानिये और आपका चित्तचाहे तो उनको मारकर मेराकिला छोड़ातेजाइयेनहींजैसीआज्ञा आपदेवें वैसाहम लोगकरें हमलोग आपके सेवक हैं और किसी तरहसे बाहर नहीं हैं अमीरने कहा कि हमआपके सेवक और मित्रहैं आपका कहना हमको हरतरह से मानना उचित है लाइये सवारी मँगवाइये ईश्वर मालिक है वहांभी जाकर उनपापियों को मारकर आवें कि वहभी अपने ठिकानेलगें बादशाहने तख्त मँगवाकर सबसामान इकट्ठा करके दशसहस्र देवों समेत तख्तपर सवारकरवाकरसब देवोंको अमीर की सेवाकरने की आज्ञा देकर भेजा अमीर वहांसे चलकर एक मैदान उत्तम देखकर जहांसे पांचकोश वहकिला बाकीथा उतरपड़े और कहा कि यहमैदान युद्धकरने के योग्यहै जबयह खबर खरचाल और खरपाल को पहुंची तबवेदोनों बीससहस्र देवोंकी सेनालेकर युद्धकरने को आये अमीरने जबसेना देखी तो उसमें दोदेव सेनासे हटकर खड़े थे जिनके रूप देखनेसे आश्चर्य मालूम होताथाकिएकका काक्षान तो गधेकी तरहथा और दूसरे का रूपही गधकाथा पीछेसे मालूम हुआ कि यही दोनों सेनाके सरदार हैं इतनेमें खरचालने गदाधारणकरकेखेतमेंआकर ललकारा कि वहअमरेत को मारनेवाला कहांहै मेरेसम्मुखआवेअपनी बहादुरी दिखावे कि मैंउसे एकहीबार में मारकर काफके देवों का बदलालूं तबअमीरने उसके सम्मुख जाकर कहाकि तू अपनी बहादुरी दिखला तबतो वहहंसकर कहनेलगा कि तुमपर पहिले मैंअपना बहादुरी दिखाऊं कि लोग देखकरहँसें और मुझे लज्जितकरें अमीरने कहा

इसीछोटे रूपपर तोमैं अकरेतका और उसके मातापिता का मारने वाला कहताहूं और तूनहीं जानता कि मैं तेरे प्राणका गाहकहूं और इसी तरवार से तुम्हारा प्राण जायगा यही बात तेरीभाग्य में है तबतो उसने झुलझुलाकर एक तलवार अमीर के शिरपर मारी अमीर ने तलवार को रोककर एक अकरब सुलेमानी की ऐसी वार मारी कि वहदैव तलवार समेत चारभाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा खरचाल अपने भाई को मरा देखकर तलवार लेकर अमीर को मारने को दौड़ा अमीर उसकी तलवार छीनकर कमरबन्द पकड़कर दैमार कर उसकी छातीपर खड़ा होगया और चाहा कि इसको भी मारकर यमपुरी को पहुंचावैं परंतु उसने प्रार्थना की किजो आप मेरा प्राण छाड़देवैं तोमैं सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीरने उसका प्राणछोड़ करकहा कि ऐखरचाल तूमुझे परदे दुनियामें पहुंचा देगा यानहीं उसने कहा कि आपकी आज्ञाशिर आंखोंसे मंजूर है परन्तु आपथोड़ी समय के लिये किलेसमीन में चलकर आराम कीजिये फिरजहां आज्ञा दीजियेगा वहींपहुंचादूंगाऔरजोआपकहियेगावहीकरूंगा अमीरतब वहांसे चारदेवों के द्वारा बादशाह के समीप विजय पानेका हालभेजकर आपशेष देवों समेत किलेसमीन को गये तोवहां देखकर अति प्रसन्नहुये और एकबागको नहरमेंजाकरस्नानकियाऔर उसीमें तलवारका रुधिर धोया और फिरजाकर तख्तपर बैठकर कुछमेवे खाये और उसबाग के मेवोंको देखकर अति प्रसन्न हुये आलस्य जो आईतखतपर पैरफैलाकर बेखबर होकर सोरहे खरपालने देखाकि अमीरइससमयबेखबर सोरहा है अब मारना सलाह है यहबिचारकर तलवारसुलेमानी अमीरकेबगल से उठाकर मियानसे निकालकर अमीरपर एकहाथ मारा परंतु वह तलवार किनारे परलगी जैसाएक मसला है (कि जिसको ईश्वर न मारे उसको कौन मारता) और जिसे ईश्वरनजिलावे उसेकौनजिलासक्ता है और अमीरने उसीसमय करवटली तबखरपालने जाना कि अमीर उठते हैं तलवार मियानमें करके अमीरके डरसेभागा अमीरजब जागेतो देखा कि वहांनतो कोई देवहै और अकरबसुलेमानी भी नहीं दिखाई पड़ता और हालमुरा मालूम होताहै व्याकुल होकर देवोंको बुलाकर पूछाकि खरपाल और खुरदचाल कहांहैं बतलाया कि जगल मोना में हैं परंतु वहांकोई जानहीं सक्ता बहुत प्रकारसे अमीरने देवोंसेकहा कि मुझको वहां पहुंचादेव परंतु किसी ने न माना और उसकिलेका पता न दिया आखिरकार सब देवोंको छोड़कर अकेले पैदल उसकी तरफ चले सातवें दिन वहांजाकर पहुंचेतो देखाकि एकपहाड़ बड़ाऊंचाहै जिसपरकोई चढ़नेकी शक्तिनहीं रखता उसके पत्थरोंका रंग पुखराज की तरहलाल है सूर्य्य की रंगत उसके सामने लज्जित होती है और हरियाली ऐसी

शोभादेतीहै कि जिसतरहसे किसीने बराबरसे बनादीहै और देखनेमें चित्तको अति आनंद होताहै और उस पहाड़के नीचेकोशोंतकमैदानहै और उस मैदानसे एकचबूतराबिल्लौरकाहै और उसकी सफाई जलसे भी अधिकहै उसपर खरचाल बैठकर बगलमें अक्करब सुलेमानी रक्खेहुवे सोरहाथा गोया उसकी मौतकीनिशानी रक्खीहुईहै पहिलेतो जाकर अक्करब सुलेमानीको उठाकर हाथमेंलिया तत्पश्चात् एक शब्द ऐसा किया कि पहाड़ आदिक हिलगये और खरचालभी जागकरमारेडरके कांपनेलगा और काहा कि भागकर अपनाप्राण अमीरके हाथसे बचावे लौंडी अमीरने एक हाथ बढ़ाकर ऐसामारा कि दोभाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और प्राण वायुकीतरह उड़गया तब अमीर उसको मार-कर तलवारकी तकियारखकर उसीचबूतरेपर बैठरहा और उधर जो देशोंने यह वृत्तांत बादशाहसे जाकर कहातो बादशाह ने अति व्याकुल होकर अब्दुलरहमानसे कहा कि ऐसेसमयमेंअमीरकी सहायताकरनी चाहिये तब वहांसे कईदेश तख्तपर सवार होकर अमीरको ढूंढ़ते २ कई दिनोंकेबाद उस स्थानपर पहुंचे तो देखा कि खरचालकीलोथ दो भागहोकरपड़ीहैजाकरअमीरसे सलामकियाऔर बादशाहका संदेशा देकर हाथ पैरको चूमकर तख्तपर बैठालकर गुलिस्तान अरमको ले आये बादशाह ने अति प्रसन्नता के साथ अपने गलेमें लगाकर अमीरसे कहा कि अबछःमहीनेके बाद आपको अच्छीतरहसे दुनियाको भिजवा देंगे अमीर महल सरायमें गये और बादशाहके कहनेपर सबर करके दिन गिननेलगे ॥

वृत्तान्त अमरू और हरमरजाफरांमर्ज़का ॥

लेखक और बड़े २ बुद्धिमान लोग उन लोगोंका वृत्तांत योंलिखतेहैं कि जब क़िलेनिस्तानमेंभी जिन्सचुकगई अमरू बड़े सन्देहमें होकर कि अब किसी युक्ति से कहींसे भोजनकी तदबीर करनीचाहिये खुशरो नेसानीसे पूछा कि कोई और भी क़िलाहै कि वहां चलकर इन लोगों के हाथसे बचकर अपने साथवालोंके बचानेकी कोई युक्तिकरूं उसने कहा कि यहांसे पचास कोसपर एकरेहतासगढ़ क़िलाहै और उसकेदो स्वामीहैं एकका नाम तहसुरसवाह है और दूसरेका साबित है और वह क़िला ऐसा मजबूत बनाहै कि उसमें कोई क़ाबूनहीं पासक्ताहै और वेदोनों सरदारभी बड़े बहादुर और लड़नेवालेहैं तबतो अमरूने सुक्रबिलसे बुलाकर कहा कि तुम क़िलेकी रक्षाकरना मैं क़िले रेहतास के लेनेकी तदबीरमें जाताहूं कोई युक्तिसे उसको लेताहूं यह कहकर लिबासशाही उतारकर और बड़रूपियोंकी पोशाक पहिनकर क़िलेसे निकलकर उसीतरफकी राहली डेढ़पहरमेंक़िले रेहतासके समीपपहुंच कर कईबार क़िलेके चारोंतरफ फिरा परन्तु भीतर जानेकीकोई युक्ति

न पाई तब वहांसे हटकर एकटिकुरी पर बैठकर क़िलेमेंजानेकी तदबीर विचारने लगा कि किसयुक्तिसे क़िलेमें जानेका रास्तापाऊं इतने में एक घसियारा कमरमें जाली खुरपा बांधे एक टट्टूपर सवार क़िलेसे बाहर आया तब अमरू साधुका भेषधारण करके उसके पीछे २ चला गया और कुछ न बोला जब वह घसियारा दोकोश पर जाकर टट्टूपरसे उतरकर घास छीलनेलगा तो अमरूने पीछेसे ईश्वरका नाम लिया तब उसने फिरकर सलामकिया और पूंछा कि आपक्यों ऐसादुःख उठाते हैं और कहांसेआतेहैं अमरू ने कहाकिमुझको इसीमें आराम है तुझसे इसके पूछनेसे क्याप्रयोजनहै हमको जहां ईश्वर आज्ञा देताहै वहीं जातेहैं ईश्वरने तेरेपास आनेकीआज्ञादीहै अमरू तुझपरईश्वरकीबड़ी कृपा हुईहै अब सबतरहसे तुझे सुखप्राप्तहोगा यहकहकर दो खुरमे झोलीसे निकालकर उसकोदिये और कहा कि ईश्वरका नामलेकर इसको पाना इससे तुझे बड़ासुख मिलेगा उससादे मनुष्यने उसकोखालिया दोघड़ीकेबादउस खुरमेने बेहोश करदिया तबअमरूने औरदारू बेहोशीकी उसकोदी कि तीन चार दिनतक होश न आवे और घास के ढेरमें छिपाकर आप उसी टट्टू पर सवार होकर जालीखुरपाकमरमें बांधकर क़िलेकी तरफचला और जब दरवाजेके समीप पहुंचा तो थरथराकर कांपनेलगा थके मांदेकी तरह हांफनेलगा तब दरवाननें दरवाजा खोलदिया औरउसकोकिसीतरहसे न रोंका तबअमरूने टट्टू की बागढीली करदी कि वह अपने घरकीराह पहिंचानता होगा तब वह टट्टू घसियारोंके महल्लेमें जाकर एक झोपड़ीकेपास खड़ा हुआ तब अमरू टट्टूपरसे गिरपड़ा औरकांपनेलगा घसियारेकीजोरू झोपड़ी से निकलकर पूछनेलगी कि सुनवाके बाप खैरतोहै तब अमरूनेकहा कि जूड़ीआईहै तब उसने अमरूको उठाकर बोरियेपर लेटाकर हाथ पैर दबाना शुरूकिया अमरूने दिनको तो सोकर काटा रात्रिको प्रसावनपीकर नवीनरूप धरा और आधीरात्रि तक वहांरहकर औरभेषधर कर पहरे वालोंसे छिपता २ कैसतहसुरसहाइको दीवारके समीपपहुंच कर कमन्द लगाकर महलमें दाखिलहुआइतनेसमयकेदुःख और फरेबसे अपना मनोरथ पूराकिया जाकर देखा कि तहसुरसहाइ दुशाला ओढ़े एकपलंगपरसोरहाहै (सत्यहै किसोताऔरमुरदाबराबरहोताहै) और चिराग़ बराबरसे जलरहेहैं अमरूने केवल एक चिराग़ रहनेदिया और सब बुझाकर उसके समीप जाकर दुशालेका आंचर जो उसके मुखपरसे उठाया तब उसने अमरूका हाथ पकड़लिया अपना बदन न छूनेदिया अमरूजो अपने हाथोंमें सदैव भालेमचरब पहिने रहताथा इसीलिये उसका दुःख सहताथा हाथ खींचतेही भाला तहसुरसहाइके हाथमें रहगया अमरू हाथ छुड़ाकर दश कदमपर जाखड़ा हुआ तब तहसु-

इसग़ाहने कहा ऐख़ाजे अमरू तू मुझसे किसी प्रकार से सन्देह न कर मेरे पासचले आवो कि अभी स्वप्न में हज़रत इबराहीमने मुझको मुसल्मान करके तुम्हारे आनेकी ख़बरदीहै और तुम्ही अपने दिल में विचारो कि मैं क्योंकर जानता और कौन तुमको इस रूपसे पहिंचान सक्ताहै वे बतलावे तुम्हारानाम जान सक्ताहै तब अमरू उसके पास गया मिलकर उसने कहाजो आप्ताहै वहमैं करूं कि आपकी क्षपा मेरेऊपर होवे तब अमरूने सब अपना वृत्तान्त उससे कहा तब उसने कहा कि आप बेख़बर मेहरनिगार को इस क़िलेमें लेआइये और किसीतरह से सन्देह नकीजिये यहक़िला आपहीकाहै सबरात्रि इसीप्रकारकी बातों में काटदी और जब प्रातःकाल हुआ तबतहमुरसग़ाहने अपने सरदारों से कहा कि आज मुझको हज़रत इबराहीमने मुसल्मानकिया और यह क़िला मैंने अमरूकोदिया जिससमय उसकी सेना आवे कोई मना न करे हमारी आज्ञासे दरवाजा खोलदेवे तब अमरू अति प्रसन्नता केसाथ विदा होकर अपने क़िलेमें आया और सब हाल सरदारों से कह कर मलका आदिक को सवार कराकर सुरंगकी राहसे निकलकर क़िले रहतासकी तरफचला परन्तु तहमुरसग़ाह को मुसल्मानहोने की ख़बर और अमरूके बुलाने का हाल साबित ग़ाहने जबसुना तो समीम वज़ीर को बुलाकर सब वृत्तान्त पूछा तो उसने भी वही सब हाल बयान किया तबतो तहमुरस ग़ाह का मुसल्मान होनेके कारण मारडाला और वज़ीर समेत दरवाजेपर सेनालेकर अमरूके आनेके आसरे में बैठा कि जब वह आवेतो मारकर मलका मेहरनिगार को छीनलेवें अमरू इस हालसे बेख़बर सवारीपर मलका आदिक को सेना समेत क़िलेके दरवाजे तक चलाआया जब अति समीप पहुंचगया तो आप अमरू आगे दरवाजा खोलने के लिये जोगया तो क़िलेके दरवाजेपर से बलछी तीर तलवार बाण आदिक मारनेलगे तब अमरूने कहा मैं अमरूहूं तहमुरसग़ाहने मुझे बुलायाहै और मेरेसाथ सुलह किया है समीम ने पुकार कर कहा कि ऐ दगाबाज यहां भी मेरेसाथ फरेबकरने आया है तहमुरसग़ाह तो तेरेफरे ब में आकर मारागया ख़बरदार जो आगे क़दमबढ़ावेगा तोतू जानेगा जो मेराकहना न मानेगा तो तूभी मारा जायगा अमरूबड़े सन्देहमें हुआ किपहिला क़िला भीहाथसेगया और यहभी हाथ न आया लाचार होकर पलटा और बिचारा कि जो हरमरजाफरांमरज अभी पीछाकरे तोइतने दिनोंकी मेहनत वृथाजावे और शत्रुको प्रसन्नता प्राप्तहो लाचार पलटनेके सिवाय और कुछ न बनपड़ा बीचमें मेहरनिगार काखेमाखड़ा कियाऔरसिपाहियों कोसरदारोंसमेतउसकेपहरेपरमुक़र्रर किया दूसरेदिनशमीमने साबितग़ाहसे कहा कि एकपत्र हरमरजाफरां मलकको लिखकर इसहाल को जनाइये कि वहभी

आवैतो हम और वह दोनों मिलकर अमरूको मारकर मलका मेहर-निगारको छीनलेवें कि उसकी प्रशंसा होवे साबितशाह को उसकीबात पसन्दआई और एकपत्र हरमरकेनाम लिखकर सैयादनाम सरदारको दियाकि इसकोलेजाकरहरमरसे अतिशीघ्रही उत्तरलेआवो संयोगसेवह सरदार तेहसुरसकाथा तहसुरसनेलड़कपनसे लेकर उसकोपुत्रकीभांति पालाथा इस सबसे जिससमय से वह मारागया था सोझूके घूंटपीकर रहताथा परन्तु साबितशाहके डरसे कुछन कहता था वह पत्रलियेसीधा अमरूके पासचला आया उसपत्रको देकर सलामकिया अमरूने पत्र को पढ़कर उसको गलेसेलगाया और अतिप्रतिष्ठाके साथसंमुख होकरकहा कि डरोनहींहम साबितशाहको मारकर तुमको इस क़िलेका बादशाह बनावेंगे और सब देशतुम्हें देंगा अमरू ने हरमर नाफरां मल्लकीतरफसे पत्रका जवाबलिखा कि आपनेबड़ा कठिन कार्य्यसिद्ध किया इसके बदले में बादशाह नौशेरवांसे हम आपको बहुत कुछ दिलावेंगे और आजहम कतारह काबुली को भेजतेहैं कि यह राचिको क़िलेकी रक्षाकरें क्योंकि अमरू बड़ा होशियार और करेबीहै उससे बचाले और थोड़े समय में मैंभी आताहूं इसप्रकार से लिखकर शाहजादोंकी जाली मोहरकरके उसपत्रको सरदार को देकर आप कतारह काबुलीका भेषधारण करके उसीके साथ क़िलेमेंजाकर सलामकरके साबितशाह केसामने बैठा और जब उस सरदारने पत्रसाबितशाह को दियातो साबितशाहने पूछाकि यह कौनहै जो तुम्हारे साथ आयाहै और तुमतो इसको ले आथा है उसने कहाकि यह शाहजादोंके सिपाहियोंका सरदारहै और शाह-जादेकाबुलका भानजाहै और कतारह काबुलीइसकानामहै औरयह बड़ाबहादुर औरलड़नेवालाहै तबसाबितशाहने उसकोअपने गलेसेलगा कर अपने समीप बैठाकर यथा उचित मेहमान्दारी कीजबराचिहुईतो उसने साबितशाहसे कहाकि शाहजादोंने मुझसेकहाहै किराचिकोतुम आपक़िले की रक्षाकरना सोअब मैंजाकर दर वाजे पर बैठकर राचिभर रक्षाकरूंगा और कलतोशाहजादे आपही सेनासमेत आवेंगे यहकहकर सब्बाद सरदारको अपने साथलिया और जाकर दरवाजे परबैठा जब आधीराचिहुई तोसबपहरे वालोंकोमारकर अपनी सेनाक़िलेमेंलेआया और सबको मारना शुरूकियाजो मुसलमान हुआउसका प्राणबचा शेष मारेगये ग़नीम और साबितशाह को मारकर उसक़िले कीराज-धानी सब्याद सरदार कोदी और आपचारों तरफसे जिन्स मँगवा-कर आरामके साथ क़िलेके बुरजों और दीवारो पर सिपाही रख कर साथ आरामके निःसन्देह होकर बैठा हरमरका हालसुनिये कि जब सिपाहियों ने खबरदी कि क़िलाखाली पड़ाहै कोई सिपाही दर वाजे पर भी नहीं देखाईदेता नहीं मालूम आपही मरगये या काढ़ये अमरू

सुरंगकी राहसे क़िले रहतास की तरफगया है तबग्राहजादे क़िलेमेंगये वहां किसीको न देखा तबवहां से पलटकर खेमेमें आकर एक बिनय पत्र बादशाह के नामलिखा कि हमको आठवर्षसेअधिकहुआकिअमरूके पीछे खुराब हैं अबयातो आपखुद आइये याकिसी औरको भेजिये कि अमरूको उसके साथियों समेत आकर मारें और मलकाको लेजावें यह समाचार लिखकर बादशाह के पास सासनीको लेकर भेजा और आप क़िले रहतासकी तरफ चला कि चलकर अमरूसे युद्धकरें वहां जाकर देखा तो ऐसाबनाथा कि पक्षीभी उड़कर नहीं जासक्ता और मनुष्य क्याहै लाचार होकर चारोंतरफ से क़िलेको घेरकर उतरपड़े कि थोड़े दिनयहां रहकर अमरूका पतालेवें परंतु अमरूके डरसे सेनाके लोग दिनको बारी २ से सोतेथे और राचिको सबजागते रहतेथे और उसके छापा मारनेसे बहुत खबरदार रहतेथे एकदिन हरमर बख्तियारका सरदारों समेत सराब पीरहेथे क़तारह सरदार गश्तघूमता हुआ उसी तरफसे आनिकलाबख्तियारकानेउसेकहाकिअमरूइसप्रकारसे चालाकी करता है तुमसे यहभी नहीं होसक्ता कि अमरूकोपकरकर के बांधलाओ उसने कहा कि आजमैं अवश्य अमरूको बांधकर लाऊंगाजबराचिहुईतो क़िलेके पासगया परंतु कहीं जानेकी राह न पाईआखिरकारएकबुर्जकी तरफ गया तोवहां किसी का शब्द न सुना तोजाना कि पहरेवालेसो रहेहैं उसीतरफ कमन्द लगाकर ऊपर चढ़गया तोदेखा कि सबपहरे वाले सोरहेहैं सबको मारकर नीचेउतरकर बरामदे में गया तो अमरू का पलंग बिछाथा परंतु उससमय अमरू मलका मेहरनिगार के साथ खाना खानेगयाथा आकर पलंगपर सोरहा और बहुत रूपिया पलंगके पायेमें लिपटा पड़ाथा जबअमरू अच्छी तरहसे सोगया तो निकलकर अमरूके पास आकर दारू बेहोशीदेकरअमरूकोबेहोशकिया और एक गठरी में बांधकर उसीरास्ते से जिधरसे आयाथा लेकर उतरा और हरमरके पास लेजाकर रखदिया और कहा कि देखोमैंआजचालाकी करके अमरूको बांधले आया अबतो मुझे शाबाश दीजिये तबतो हरमर बीनऔरबख्तियारकाकोबड़ीखुशीप्राप्तहुईऔरमारेखुशीकेकूदने लगे और उसकोखिलअतदेकरबड़ीप्रतिष्ठाऔरमानसम्मानसेआदर किया और उसीसायत लुहार को बुलवाकर अमरू के पैरोंमें बेड़ियां और जनजीर से बंधवाकर कारागार में डालदिया और प्रातःकाल तककोई न सोया जबअमरू सबेरा होतेहोश में आया अपने को क़ैदमें पाया देखकर कहनेलगा रामराम कैसाबुरा स्वप्न देखताहूं हरमरने सुन करकहा ऐपापी यहस्वप्न नहीं है सत्यहै तू जागता है यहतेरी मक्कारी का फलहै हजारों मनुष्यों को तूने दुःखदिया है देखकैसा बदला पाताहै अबतेरा प्राणकब बचता है अमरूने कहा आपजानते नहीं

किमैं बलीहूं मैंकब कैदमें रहताहूं और कौनमुझे कैदकरसक्ताहै तू अपने वास्ते कांटेबोता है आराम से बैठानहीं रहाजाता अबजब मैं छूटूंगा तो एकको भी जीता न छोड़ूंगा हरमरने कहा अबभी तुझे बचने और छूटने का भरोसा है कौनतुझे मेरेहाथ से छोड़ावैगा अमरू ने कहा मैं ईश्वर के भरोसेहूं वही आकर मुझे छोड़ावैगा मैंतुमलोगों से किसी तरह से नहीं डरता जो तेरेजीमें आवे वहतूकर कुछ मेरे साथनेकी न कर हरमर ने अमरू की ऐसीबातें सुनकर क्रोधित होकर जल्लादों को बुलाकर आज्ञादी कि इसको अभी लेजाकरमारोऔरइस का शिरका बोझा उतार देवो ॥

आना नारंजीपीश देवका और अमरू को कैदसे छुड़ानो ॥

लिखनेवाला लिखताहै किजिससमय जल्लादअमरूको मारनेके लिये चबूतरेपर लेगया और तलवार मियानसे निकालकर उसके समीप आया तबअमरू ने देखा कि अबकोई सूरत बचनेकी नहींहै तबमनमें हजरत खिज्र का स्मरण किया और कहा कि इससमय जो मेराप्राण बचावो तौपांच कौड़ीकी रेवड़ियां लेकर नदीकेतीर जाकर चढ़ाऊंगा बख्तियारकने जो अमरूके ओंठ हिलते देखे तो हरमर से कहा कि आप जल्लाद को शीघही आज्ञा दीजिये कि अतिशीघही उसको मारे नहींतो मंचपढ़कर छूटकर भागजावेगा फिरहमलोगों को बड़ादुःख देगा देखिये वहमंच पढ़रहाहै उसके मंचमें बड़ागुण है फिर उसको किसी का दुःख न रहजायगा हरमरने जल्लादों से दूसरीबार आज्ञा दी तबजल्लाद ने जाकर अमरूसे पूछा किजो कुछखाना पीनाहो खा पीले थोड़ी देरमें तू माराजायगा मारनेवाला आताहै अमरूने कहा कि हमखाने के बदले दुःख और क्रोध खाचुके अबकुछ खानेपीने की इच्छानहींहै तुमअपना कार्य्यकरो और कुछबातें न करो जल्लादतीसरी बार आज्ञा लेकर अमरू के मारने को आया अमरू तो शिरझुकाये बैठाथा उससमय कहा कि ऐजल्लाद तीक्ष्ण तरवारसे मुझेमारकि एकही वारमें कटजावे कि मुझको दुःख न होवे तेरीतलवार की धारतो मुड़ी है तूझे मुझे मारेगा जल्लाद अपनी तलवार देखनेलगा अमरूने सांस पाकर हाथ पृथ्वीपर टेककर दोनोंलात फैलाकरऐसीदोलत्तीमारीकि लोटन कबूतर की तरह लोटगया औरउसकेदुःखसेउठनसकाऔरचारों तरफ से शब्द होनेलगा कि मारा २ हरमरने जानाकि अमरू मारागया बख्तियारक ने कहा नहीं साहब अमरूने जल्लादको माराहै जल्लाद हारकर मारागया हरमरने कहा कि बड़ादुष्ट और चालाक है कि मारते २ एकको लेडाला देखोतोजल्लादको कैसाबनायाहैहरमरने दूसरे जल्लाद को भेजा वहतलवार लेकर अमरू को मारने आया और तलवार मारने के लिये उठाई तबउस समय प्राणसे निराश होकर नेत्रोंमें

आंसू निकलआये और मुख सपेद होगया इतनेमें एक सिपाही हरमरके पास आया और सलामकरके कहा किमैं खामजीम सुलतान पुचजाल शमाम जादू बादशाह तुरकिस्तान का सरदारहूं नौशेरवां ने हमको खबर देनेको भेजाहै कि बादशाह हमारे आपकी सहायताके लिये अति शीघही आतेहैं तबतो हरमर बहुत प्रसन्नहुये और उसकी बड़ी प्रतिष्ठाको यहसब बातें कहकर उसने अमरूकी तरफ देखकर पूछा कि वह कौनहै जो तलवारके नीचे शिर झुकाये हुये अपने प्राण को देकर बैठाहै हरमर ने कहा यहीअमरू मक्कारहै जिसका तुमने नामसुना होगा इसने हमलोगोंको बड़ादुःख दियाहै कल कतारह सरदार चालांकी करके इसकोबांधकर मेरेपासबहुतदिनोंके दुःखउठाने के पश्चात् लेआया परन्तु इस समयभी जल्लादका प्राण एक दो लक्ती मारकर लियाहै अब दूसरे जल्लादको भेजाहै कि उसको मारे तब उस सरदारने कहा उसकेमारने मेंभी बड़ी युक्तिहै कि न तो कोई हथियार इसके पासहै न औरकोई वस्तु परन्तु प्राणके देनेका वचहै इससे जो बनपड़ेगा वही करेगा परंतु मैंने ऐसे मनुष्योंको माराहै कि हजारों मनुष्योंने देखकर बड़ा आश्चर्य कियाहै मुझे आज्ञा दीजावे तो एकहीबारमें मारकर अपनेबल और युक्तिका तमाशा आपको दिखाऊं हरमरने कहा बहुत अच्छा उस जल्लादको अमरूके पाससे बुलालिया और उसको मारनेके लियेभेजा उस सरदार ने अमरू से कहाकि शिरझुका अमरू ने कहा कि शिरतो मैं झुकाये बैठाहूं तू समीप आकर मार उसने कहा क्यामैं भी उस जल्लादकी तरह पागलहूं कि तेरेपास जाकर प्राणदूं तू उसीतरह मुझेभी लातोंसे मार तो मैंक्या करूंगा तब अमरू बड़ेदुःख में हुआ कि यह अवश्यकरके मारेगा यह विचारकरके प्राणसे अति निराश होकर रोनेलगा तब उससरदार ने यूनानी भाषामें कहा किमैं नक्षावदार की सेनाका सरदारहूं तुझे छोड़ाने के लिये आयाहूं दुःख न करमैं अभी तुझको छोड़ाकर लेचलताहूं पहिले तो पैरोंको फैलाकि तेरी बेड़ियां काटकर इस दुःख से छुड़ाऊं फिर तुझेगरदन पर बैठालकर यहांसे निकालले चलूं और देख कैसी युक्तिसे लेचलताहूं यह सुनकर अमरूके प्राणमें प्राण आया मानों फिरसे उत्पन्नहुआ अमरूने ईश्वरका धन्यवादकरके पैरकोफैला दिया उस सरदारने एक तलवार ऐसी मारीकि दोनों पैरों की बेड़ियां एकदफा कटगईं और औरफिर अमरूकोगरदन परलेकरभागा इस शीघ्रता से भागाकि उसका चिन्हभी न विदित हुआ सेनामें बड़ा शोरहुआचारो तरफसे सवार औपैदल तलवार खींचकर दौड़े परंतुउस सरदारने खड्गलेकर जिसको एक हाथमारा फिर उसनेशिर न उठाया और अमरू को इसतरह शत्रुकी सेनासे लेभागा कि उसकी गर्दभी न

मालूमहुई जिससमय जंगलमें आया अमरूको कन्धेसे उतारकर कहा कि अब ईश्वर मालिकहै तुम अपनेक़िलेमेंजावो और मैंअपनेघर जाताहूं और प्रणाम करताहूं अमरूने कहा थोड़ीदेर ठहरो मैंभी तुम्हारेसाथ चलताहूं वह बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धिनहीं जो तुम्हारेपास एकक्षण भी ठहरूं अगर थोड़ीदेरमें तू नकाबदारका पता पूछे तो मैं कायतका दूंगा तुमसे अपना पीछा क्योंकर छुड़ाऊंगा यह कहकर जंगलकीतरफ चलदिया और अमरूको वहींसे विदाकिया अमरू अपनेक़िलेमें निस्सन्देह पहुंचा देखैतो सब छोटे बड़े ईश्वरसे प्रार्थना कररहेहैं कि हे ईश्वर अमरूको कब दिखलावेगा इतनेमें तो सबकी दृष्टि अमरू पर पड़ी तो ईश्वरको धन्यवादकरके जोजो मानतामानीथी पूरीकीमस्कामेहरनिगार जो अमरूके पकड़ जानेसे अत्यंत दुखीथी इसकेआनेसेइस तरह प्रसन्नहुई जिस तरह मुर्दा सजीवहो मानो यहांतो देशकाराज्य पागई अमरूको निकट बुलाकर रोनेलगी और उसके ऊपर जवाहिर नेवछावर करके ग़रीबोंको बांटे और एक सप्ताह तक खुशीका नाचरंग करवाया फरमर ने बख्तियारक से पूछा कि वह कौनथा जो अमरूको लेगया और मुझको धोखा देगया बख्तियारकने कहा कि अमरूसत्य कहताथा कि ईश्वरके भक्त मारेनहीं जासक्ते और किसीके बंधन मेंभी नहीं आसक्ते उनकी सहायता ईश्वर आपकरताहैऔर प्रत्येकस्थानपर उनके रक्षक रहतेहैं तब फरमर चुपहोरहा क़िलेवालों का वृत्तान्त सुनिये अब उनके पास भोजनमात्र को भी न रहा तब आदी सरदार के साथ होकर अमरूसे कहाकि हमारे पास अब कुछ नहींहै तब अमरूने कहा अब और कोई क़िलालेना चाहिये सरदार ने कहा कि यहां से सलासल क़िसारनामे एक क़िलापांच मंज़िल पर अति उत्तम है और वहांके बादशाह का नाम सलासल शाहहै बड़ा शूरवीरहै अगर जीचाहै तो वहां जाकर रहिये अमरूने कहाकि अच्छामैं जाताहूं तुम इसक़िले में होशियार रहनामैं विचार करके उसके लेनेकी कुछ युक्ति निकालता हूं यह कहकर पोशाक बादशाही उतारकर और पुराना पहिनकर क़िलेसे बाहर आया और ऐसी शीघ्रतासे चला कि एकरात्रि दिनमें सलासल क़िसारमें जापहुंचा देखा तोक़िला बहुत उत्तमहै और असबाब क़िलेमें इकट्ठाहैतबविचार करनेलगाकिकिसयुक्तिसेइसक़िलेको पावेंइतनेमें एकजवान चौदहपन्द्रहवर्षकाघोड़ेपरसवार शाहानालिबास पहिनेहुये हाथपर बाजलिये निकला और सौ सवार और पैदल और सरदार आदिसबसाथ अच्छी२बातेंकरतेचलेजातेथे अमरूनेबुद्धिसेविचाराकि अवश्य यह यहांका शाहजादा है जब देखाकि सवारी दोकोश क़िलेसे बढ़गई अमरूने साधूका भेष धारणकिया और सुनहरीकी टोपी देकर चारपांच छड़ी हाथमें लेकर सवारी के पीछे लंगोट बांधकर चल

और शाहजादेके सामने जाकर यों कहा कि आजईश्वरकी बड़ीकृपा हुई कि उनके भक्तोंसे मुलाक़ातहुई आज कुछ साधुको भी मिलजायगा शाहजादा साधुको देखकर अति प्रसन्नहुवाऔरघोड़ेकोरोंककर पूछने लगा कि आप कहांसे आतेहैं और कहां जाइयेगा साधूनेकहा न पृथ्वी से न आकाशसे एक नवीन दुनियांसे साधूकाभी कहींस्थान होताहै आज यहां कल वहां जो कुछ ठिकाना होतो बाबा आपको बताऊं शाहजादे ने कहा जो आपने अपने मुखारबिन्दसे कहा वह सबसत्य है परंतु संसारमें आकरकोईअवश्य स्थान होताहै रात्रिको वासकेलियेदो हाथ पृथ्वी अवश्य चाहिये बनेऊये शाहसाहब बोले कि साधूतो सदव बेनाम और निशानके होतेहैं इन बेचारोंको स्थान कहां प्राप्त होताहै परंतु नामकेलिये बुंदादमें मेरी कुटीहै तब शाहजादे ने पूछा आपका नाम क्याहै उसने कहा कि मुझेलोग शादानीकलन्दर कहतेहैं परंतुमैं सौदाई कलंदरहूं तबतो शाहजादा साधुकी बातों से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहसाहब आप चलकर कुछदिन मेरे स्थानपर रहिये यह देशभी देखनेकोयोग्यहै साधूने कहा बहुतअच्छा साधूकोक्या जहां चित्तलगजावे वहीं रहजाताहै तब पूछा कि बाबा तूनेतो मेरा नामनिशान पूछलिया अपनाभी बतलाइये उसने कहा कि मेरानाम महमनहै सलासलशाहका पुत्रहूं उसीकी कृपासे यह सबहै तबतो साधुने कहा कि बाबा तू सैर और शिकार करआ मैं चलकर क़िलेके दरवाज़ेपर बैठूंगा और तेरा आसरा करूंगा महमनतोउसीजगहसेउस साधुको लेकर पलटा और क़िलेमें आकर अपने दीवानखानेमें साधूका आसन लगवाया और बड़ी प्रतिष्ठाके साथ सम्मुख होकर कहा कि आप बैठिये मैं एक कार्यको जाताहूं अभी थोड़ी समयमें आताहूं आपको हुक्का पानीकी आवश्यकता होतो मेरे नौकर आपकेपासरहेंगे इनसे मांगलीजियेगा साधूनेकहा बहुत अच्छा आप जाइये परंतुआनेमें अधिक काल न व्यतीत कीजियेगा और ऐसा कौनसा कार्यहै कि साधू सेभी नहीं बतलानेके योग्यहै जोकुछ संदेह न हो तो बतलाइये कि मैंभी उसे जानूं महमन ने कहा कि मैं इस समय दो चार गिलास शराबके पीताहूं और आप जानतेहैं कि अमल एक शबुहै परन्तु आपके सम्मुखपीना अनुचितहै इसलिये जाताहूं और अति शीघ्रही पीकर आताहूं तब उस बनेऊये साधुने कहा कि बाबा यहींमँगवाइये मैंभी दोचार गिलास लेऊंगा और अपने चित्तको प्रसन्न करूंगा और साधुकेलिये तो दूधहै कभी २ उसको पीलेतेहैं तब उसने शराब मँगवाकर दो एक गिलास उस साधुकोदिये और शेष उसने पियेसाधूने पीकर मनमें आया तो अपने दुतारेको झोलीसे निकालकर गाने और बजानेलगा और सबको लोभाने लगाऔर प्रसिद्धहैकि अमरूकागाना

सुरदेको जिलादेताथा सबलोग अति प्रसन्नहुये और हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करनेलगे संयोगसे मनसूर सरदार दो सिपाहियों समेतउसी रास्तेसे आ निकला शाहजादेको सलाम करके पूछा कि ऐ साधु कहां से आतेहो और कौनहो और किस देशसे आयेहो बहमन ने सबहाल बयानकिया तब पूछा कि इनका नामक्याहै और यहां क्यों ठहरेहैं बहमनने कहा कि शयदानी कलन्दर इनका नामहै साधुहैं जहां जो चाहताहै वहां रहतेहैं मनसूर दौड़कर उससे लपटगया और अपने सिपाहियोंसे कहा कि सुशकै इसको बांधलो और इसको अपने आधीन करकेहमारेसाथलेचलोऔरउनसिपाहियोंने अपनेस्वामीकीआज्ञामान कर उसको बांधलिया साधु जालीने बहमनसे कहा क्योंबाबासाधुको घरमें टिकाकर ऐसेही मेहमानी कीजातीहै वाह बड़ी कृपा आपने की इसीकानाम इन्साफहै तब शाहजादेने क्रोध करके मनसूर से कहा कि इस साधुने तेरा क्या बिगाड़ाहै जो इसको पकड़कर यह दुःखदे रहाहै मनसूर ने कहा कि नहींजानते यह वह साधुहै कि जिसने सैकड़ों अमीरोंको फकीर कर दियाहै आपने सुनाहोगा अमरूमक्कार यहीहै नौशेरवां बादशाहका नाकमें दमहै आखिरकार बादशाह सलासलके पास लेजाकर कहा कि अमरूमक्कारहाजिरहै जोआज्ञाहो वह कियाजावै सलासलने कहा उसको मेरेपास लेआवो जब अमरू आयातो सलासल शाहने कहा कि ऐ अमरू मैं तेरे गानकी बड़ीप्रशंसा सुनताहूं बहुतदिनोंसे तेरागाना सुननेकी इच्छारखताथाअबतोसुना अमरूने कहा कि मेरे हाथतो बँधेहैं क्योंकर दुतारा बजाऊंगा बादशाहने हाथ खुलवादिये तब अमरूने दुतारा बजाकर ऐसागाया कि सबमोहित होगये तब बादशाहने मनसूरको आज्ञादी कि इसको अपने पास रक्खो कुछ हाथ बांधने की जरूरतनहीं और इसकोदुःख न देना कल जब हम इसको बुलावें तोलेआना मनसूरने अमरूको लेजा-कर एक कोठरीमें बन्दकिया तब अमरू अपने चित्तमें बिचारने लगा कि हमारी तो यह गतिहै कि जिसमें सेनाकी नहीं मालूम क्यागति होगी इसी बिचारमें था कि आधीरात्रिको मनसूरने दरवाजाखोल कर अमरूको निकाला और उसके पैरोंपर गिरपड़ा कि क्षमा कीजिये गा मैं आपको पहचानता न था परंतुजिसदिनसेइबराहीम ने मुझे मुसलमान कियाहै और आज्ञादीहै कि अमरू यहां आवेगा और तू उसके देखनेसे बड़ा सुख पावेगा इसलियेतू उसकी सहायता करना तभीसे आपकी तालाशमें रहताथा और जो मैंने यह दुःख आपको दियाहै केवल इसीलिये कि अच्छीतरहसे जानलूं किअमरू है या और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आपका सेवकहूं जैसी आज्ञादीजिये वह करूं तब अमरूने उसको छातीसे लगाकर कहाकि

किसी युक्तिसे यह क़िला लेनाचाहिये कि सेना मुसल्मानी यहां आकर थोड़ेदिन आराम सेरहे तब मनसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाहका पकड़कर क़िलेको अपनआधीन करलीजिये अमरू मक्कारी लिबास पहिनकर मनसूरके साथहोकर सलासलशाह के सोनेके स्थान परगया और उसको बेहोशकरके मनसूरको सौंपा और आज्ञादी कि ख़बरदार इसका अपने पासरख भागन न पावे यह सोनेका पक्षीहै और आप उसका रूपधारण करके छपरखट पर सोरहा मानोखुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहिले महमन से कहा ऐ पुत्र आज रात्रि को हज़रत इब्राहीम ने मुझको मुसल्मान कियाहै तूभी मुसल्मान हो तेरेलिये अच्छाहोगा परंतु उसने न माना तब अमरू ने उसको शूलीदिया तत पश्चात् सलासलशाह को एकान्तमें बुलाकर कहाकि तू मुसल्मान हो तेरेलिये अच्छाहोगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरीसूरत का मनुष्य गद्दीपर बैठाहै और मुझको बेधर्म करताहै शायद मेरी राजधानी लेनेकी इच्छा रखताहै अमरू से कहने लगा कि तू कौन है अपना वृत्तान्त बतला और मेरीगद्दीपर क्यों बैठाहै किसने तुझेयहां आनेदिया है अमरूने कहा और तामैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मान होकर अपना प्राणबचा तबतो वह बुरी २ बातें कहनेलगा तब अमरूने उसको भी उसी समय शूलीदी और मनसूर को अपना नायबबनाकर गद्दीपर बैठाया और छोटेबड़ोंसे नज़रें दिलवाकर आज्ञा दी कि जाकोई मनसूरशाह की आज्ञामें न रहेगा वह माराजायगा तब सब मनसूरके बशहोगये और अमरूने सब राजधानी मनसूर को देकर आज्ञादी कि तुम चारोंतरफ से गल्लामोल लेकर क़िलेमें इकट्ठा करामैं जाकर मलका मेहरनिगार को सेना समेत लेकर आताहूं अमरू तो अपने क़िलेकी तरफगया मनसूरने अमरूकी आज्ञानुसार गल्लामोल लेकर क़िलेमें रक्खा अमरूने क़िलेमें आकर सब सरदारों से क़िलेलेनेकी खुशख़बरी सुनकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रिगये सब सनासमेत क़िलेसे निकलकर क़िले सलासल हिसार की राहली पांचदिन की राहदोदिन रात्रिमें जाकर पहुंचे और क़िले में दाख़िल होकर क़िलेका बन्दकरके आरामसे बैठतीसरे दिन हरमर के सिपाहियोंने हालदियाकि अमरू मलकाका सेनासमेत क़िलेसलास-लहिसार में दाख़िलहुआ और इसक़िले का छोड़दिया हरमरने इस हालको सुनकर बड़ादुःख किया और मुन्शीको बुलाकर अपना सब हाल और अमरूका किले सलासलहिसारमें जानेका लिखवाकर एक सिपाहीके हाथबादशाह नौशेरवां के पासभेजा और अति शीघ्रहीजाने की आज्ञादी॥ अमीरका आना परदेशाफ मे दुनियामें॥

पहिले इसक़दर बयान होचुकाहैकिअमीरने [illegible] औरखरचालेके

सुरदेको जिलादेताथा सबलोग अति प्रसन्नहुये और हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करनेलगे संयोगसे मनसूर सरदार दो सिपाहियों समेतउसी रास्तेसे आ निकला शाहजादेको सलाम करके पूछा कि ऐ साधु कहां से आतेहो और कौनहो और किस देशसे आयेहो बहमन ने सबहाल बयानकिया तब पूछा कि इनका नामक्याहै और यहां क्यों ठहरेहैं बहमनने कहा कि शयदानी कलन्दर इनका नामहै साधूहैं जहां जी चाहताहै वहां रहतेहैं मनसूर दौड़कर उससे लपटगया और अपने सिपाहियोंसे कहा कि मुझकेइसको बांधलो और इसको अपने आधीन करकेहमारेसाथलेचलोऔरउनसिपाहियोंने अपनेस्वामीकीआज्ञामान कर उसको बांधलिया साधु जालीने बहमनसे कहा क्योंबाबासाधुको घरमें टिकाकर ऐसेही मेहमानी कीजातीहै वाह बड़ी कृपा आपने की इसीकानाम इन्साफहै तब शाहजादेने क्रोध करके मनसूर से कहा कि इस साधूने तेरा क्या बिगाड़ाहै जो इसको पकड़कर यह दुःखदे रहाहै मनसूर ने कहा कि नहींजानते यह वह साधुहै कि जिसने सैकड़ों अमीरोंको फकीर कर दियाहै आपने सुनाहोगा अमरूमक्कार यहीहै नौशेरवां बादशाहका नाकमें दमहै आखिरकार बादशाह सलासलके पास लेजाकर कहा कि अमरूमक्कारहाजिरहै जोआज्ञाहो वह कियाजावै सलासलने कहा उसको मेरेपास लेआवो जब अमरू आयातो सलासल शाहने कहा कि ऐ अमरूमैं तेरेगानेकी बड़ीप्रशंसा सुनताहूं बहुतदिनोंसे तेरागाना सुननेकी इच्छारखताथाआजतोसुना अमरूने कहा कि मेरे हाथतो बँधेहैं क्योंकर दुतारा बजाऊंगा बादशाहने हाथ खुलवादिये तब अमरूने दुतारा बजाकर ऐसागाया कि सबमोहित होगये तब बादशाहने मनसूरको आज्ञादी कि इसको अपने पास रक्खो कुछ हाथ बांधने की जरूरतनहीं और इसकोदुःख न देना कल जब हम इसको बुलावें तोलेआना मनसूरने अमरूको लेजा-कर एक कोठरीमें बन्दकिया तब अमरू अपने चित्तमें विचारने लगा कि हमारी तो यह गतिहै क्लिमें सेनाकी नहीं मालूम क्यागति होगी इसी विचारमें था कि आधीरात्रिको मनसूरने दरवाजाखोल कर अमरूको निकाला और उसके पैरोंपर गिरपड़ा कि क्षमा कीजिये गा मैं आपको पहचानता न था परंतुजिसदिनसेइबराहीम ने मुझे मुसलमान कियाहै और आज्ञादीहै कि अमरू यहां आवेगा और तू उसके देखनेसे बड़ा सुख पावेगा इसलियेतू उसकी सहायता करना तभीसे आपकी तलाशमें रहताथा और जो मैंने यह दुःख आपको दियाहै केवल इसीलिये कि अच्छीतरहसे जानलूं किअमरू है या और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आपका सेवकहूं जैसी आज्ञादीजिये वह करूं तब अमरूने उसको छातीसे लगाकर कहाकि

किसी युक्तिसे यह क़िला लेनाचाहिये कि सेना मुसल्मानी यहां आकर थोड़ेदिन आराम करे तब मनसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाहका पकड़कर क़िलेको अपनआधीन करलीजिये अमरू मक्कारी लिबास पहिनकर मनसूरके साथहोकर सलासलशाह के सोनेके स्थान परगया और उसको बेहोशकरके मनसूरको सौंपा और आज्ञादी कि खबरदार इसका अपने पासरख भागने पावे यह सोनेका पक्षीहै और आप उसका रूपधारण करके छपरखट पर सोरहा मानोखुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहिले महमन से कहा ऐ पुत्र आज रात्रि को हज़रत इबराहीम ने मुझको मुसल्मान कियाहै तूभी मुसल्मान हो तेरेलिये अच्छाहोगा परंतु उसने न माना तब अमरू ने उसको शूलीदिया तत पश्चात् सलासलशाह को एकान्तमें बुलाकर कहाकि तू मुसल्मान हो तेरेलिये अच्छाहोगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरीसूरत का मनुष्य गद्दीपर बैठाहै और मुझको बेधर्म करताहै शायद मेरी राजधानी लेनेकी इच्छा रखताहै अमरू से कहने लगा कि तू कौन है अपना वृत्तान्त बतला और मेरीगद्दीपर क्यों बैठाहै किसने तुझेयहां आनेदिया है अमरूने कहा और तामैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मान होकर अपना प्राणबचा तबतो वह बुरी २ बातें कहनेलगा तब अमरूने उसको भी उसी समय शूलीदी और मनसूर को अपना नायबबनाकर गद्दीपर बैठाया और छोटेबड़ोंसे नजरें दिलवाकर आज्ञा दी कि जाकोई मनसूरशाह की आज्ञामें न रहेगा वह माराजायगा तब सब मनसूरके बशहोगये और अमरूने सब राजधानी मनसूर को देकर आज्ञादी कि तुम चारोंतरफ से गल्लामोल लेकर क़िलेमें इकट्ठा करामैं जाकर मलका मेहरनिगार को सेना समेत लेकर आताहूं अमरू तो अपने क़िलेकी तरफगया मनसूरने अमरूकी आज्ञानुसार गल्लामोल लेकर क़िलेमें रक्खा अमरूने क़िलेमें आकर सब सरदारों से क़िलेलेनेकी खुशखबरी सुनकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रिगये सब सेनासमेत क़िलेसे निकलकर क़िले सलासल हिसार की राहली पांचदिन की राहदोदिन रात्रिमें जाकर पहुंचे और क़िले में दाखिल होकर क़िलेको बन्दकरके आरामसे बैठेतीसरे दिन हरमर के सिपाहियोंने हालदियाकि अमरू मलकाका सेनासमेत क़िलेसलास-लहिसार में दाखिलहुआ और इसक़िले का छोड़दिया हरमरने इस हालको सुनकर बड़ादुःख किया और मुन्शीको बुलाकर अपना सब हाल और अमरूका किले सलासलहिसारमें जानेका लिखवाकर एक सिपाहीके हाथबादशाह नौशेरवां के पासभेजा और अति शीघ्रहीजाने की आज्ञादी ॥ अमीरका आना परदेकाफ मे दुनियामें ॥

पहिले इसक़दर बयान होचुकाहैकिअमीरनेखरपाल औरखरचालके

मारनेके पीछे बादशाहकी बिनयसे लाचारी दरजेछः महीने और रहना क़बूलकिया था एकदिनरात्रिको आसमानपरी के साथ महलमेंपलंगपर सोरहेथे स्वप्नमें देखाकिमलका मेहरनिगार सूखकर कांटाहोगईहै और सबस्वरूप जातारहाहैऔर उसकीआंखसे नदीबहरहीहैरोरोकरअमीर से कहती है कि क्यों साहब मैंने कौनसा अपराध किया था जो आप मुझे दुनियामें छोड़कर परदेक़ाफ पर जाकर परियोंके साथ मज़ाउठाते हो अफसोस कहां पृथ्वी कहां आसमान जो परहोते तोमैंभी उड़जाती और इस दुःखसे आरामपाती अमीर उचककर जागउठे और कहनेलगे देखोकहां परदेक़ाफ और कहांदुनिया औरमैं मेहरनिगार यहकहकर जोरसे चिल्ला २ कर रोनेलगे और प्राणको देनेलगे आसमानपरी भी अमीरका रोना सुनकर चौंककर जागउठी और अमीरसे पूछनेलगीकि क्या हुआहै जो इसतरह से रोतेहो और दुःख उठातेहो अमीरने कहा मैं अपना हाल क्याकहूं ऐसा दिलचाहताहै कि अपना गला काटकर प्राणको त्यागकरदूं तब उसने कहा कुछतो बतलाइये क्यादुःखआपकोहै अमीरने कहा ऐ आसमानपरी ईश्वरकेलिये अतिशीघ्र मुझेपरदे दुनिया को भेजदे जिस सरतसे हो मुझे वहांपहुंचादे इस समय मैंने मेहरनिगारको अति व्याकुल पायाहै और मेरी जुदाई से उसे बड़ादुःखहै आसमानपरीने पूछाकि मेहरनिगार कौनहै उसकाहाल तो मुझेबतावो अमीरने कहा कि नौशेरवां बादशाहकी बेटीऔर मेरी प्राणप्यारी है जो स्वरूप और नम्रतामें संसारमें एकहै और मेरेऊपर मोहितहै तबतो आसमानपरी ने कहा यह बातहै किसी औरसे भी आपफँसेहैं तब क्यों न जाना २ पुकारिये और उसकेलिये क्यों न प्राण दीजियेगा सुनोतो अमीर सत्यकहना क्या मेहरनिगार मुझसे भी अधिक स्वरूपवान और सुन्दरहै तुमसेरहोते उसकी इच्छाकरते हो और हर प्रकारसे उसपर मोहितहो अमीरके मुखसे निकलगया कि उसकी तो सहेलियां तुमसे अधिक स्वरूपवानहैं और महासुन्दर हैं तबतो आसमानपरी क्रोधितहोकर कहनेलगी क्यातू मुझे मेहरनिगारकी सहेली सेभी निकृष्ट जानताहै भलातूयहांसे जायगा तो जानूंगी अबतू किसी तरह से मुझसे छूटकर जानेपाताहै तब अमीर नेकहा जोतू मुझेरोकेगी तो तुझको मारकर किसी न किसी तरहमें मैंवहांजाऊंगा आसमानपरीने कहाकि यह घमण्ड आप न कीजिये कि मैंइबराहीम पैग़ंबरकी औलादहूं मैंभी हज़रत सुलेमान की औलादमेंसेहूंतुमसे किसीप्रकार से कमनहीं हूं अबतुमसुझे मारनेकी इच्छाकरोगे तो मैंभी तुम को मारूंगा अमीरको इसबातके सुननेसे बड़ाक्रोध हुआ तलवार खींचकर आसमानपरीपर दौड़े वहभी तमंचा खींचकर अमीरके ऊपर आई और मारनेको हाथउठाया सहेलियोंने बीचबरावकरके दोनोंको हटादिया

यह हाल बादशाहको पहुंचा बादशाह व्याकुल होकर दौड़कर आये और अपनी बेटीपर क्रोधितहुये कि तू उसकी बराबरी करतीहै ईश्वर सेभी नहीं डरतीहै और न मेराही डरहै सामनेसे दूरहो बेटीको डाट कर अमीरको अपने महलमें लेगये और कहा कि आपको सबेरे दुनिया को भेजदूंगा जब प्रातःकालहुआ बादशाहने सब सामान मार्गका देकर अमीरको तख़तपर बैठालकर चारदेव अति शीघ्र उड़ने वालोंको बुला कर आज्ञादी कि अतिशीघ्र अमीरकोपरदेदुनियामें लेजाकरपहुंचाओ यह हाल आसमानपरीको पहुंचा कि बादशाहने अमारको परदेदुनियांमें जानेकी आज्ञादीहै और सब सामान समेत यह अभीजाता है तब वह बेटीको गोदमें लेकरआई देखा कि अमीर तख्तपर सवार है रोरोकर कहनेलगी कि ऐ अमीर आपको मेरा मोह नहींहै तो इस बेटीकाभी मोहनहीं लगता ईश्वरकेलिये मेरा अपराध क्षमा करो अब ऐसा कभी न होगा अमीरने कहा मैं तुमसेभी नाराज़नहीं और बेटीसेभी मोहब्बतहै परन्तु मुझे दुनियामें जाना बहुत अवश्य है कि मैं केवल अठारह दिनका वादा करके आयाथा और यहां इतनेवर्षव्यतीत होगये और इसी कारण मैं किसी को साथभी नहीं लेआया सब लोग बड़े संदेहमें होंगे कि अमीर मरगये या जीतेहैं और फिर जब तुमबुलवा आगीतो आवेंगे और तुमतो आपहीमेरेपास आसकतीहो जबदिलचाहे तभी मेरेपास चलीआना और अपने साथ बेटीको भी लेती आना यह कहकर सबकोसलामकरके रवानाहुआ आसमानपरी मकानपर आकर रोने पीटनेलगी संयोगसे उसीसमय सलासल परीज़ाद उसके पास आया और आसमानपरी को व्याकुल देखकर पूछनेलगा कि क्योंतू ने ऐसी सूरत बनाईहै उसने रोकरकहा कि आज बादशाहने हमज़ा को परदेदुनियाको भेजदियाहै जो तुमजाकर देवोंसे धमकाकर कहदेवो कि अमीर को लेजाके बियाबान हैरतमें छोड़देवें और दुनिया को न लेजावें तो मैं बहुत खुशहूंगी और जो मेरीआज्ञा न मानेंगेतो खाना पीना छोड़दूंगी और जो हमज़ा तुम्हारे आनेका कारण पूछै तो कहना कि आपसे बिदाहोने आयाहूं आपकी कृपाने खींचलिया है सलासल ने वैसाही किया देवोंको समझादिया और देवोंनेआपसमें सलाहकी कि जोआसमानपरीकी आज्ञान मानेंगेतो परदेकाफ में रहनाकठिनहोगा और इसकी आज्ञा न माननेसेलोग लज्जित करेंगे राचिहोते बियाबान हैरतपास तख़तको उतारकर सबने आरामकिया अमीरने पूछा यहां क्यों तख़त उताराहै देवोंने कहाकि भूखे प्यासेहैं कुछखापीलें तोचलें अमीरने कहा अच्छा तुम कुछ खापीलो और हमभी निमाज पढ़लेवें कि ईश्वरके कामोंसे छुट्टीपावें अमीरने हाथमुंह धोकर निमाज पढ़ कर तख़्तपर बैठकर देवोंका आसरा देखनेलगे कि आवें और तख़्त

को उठाकर लेचलें परन्तु देवोंका पता न मिला राचिभर बैठेदेखा किये जबप्रातःकालहुआ निमाजपढ़कर फिर बैठकर देवोंकाआसरा देखनेलगा जबपहरदिनआयातबअमीरनविचारकियानिश्चयहै कि आसमानपरीके डरसे मुझे यहां छोड़कर भागगये अब नसीबमें पैदलही चलना बदाहै किसी प्रकारसे दुनियामें पहुंचना चाहिये जैसे एक मसला है कि (जैसी पड़े अवस्यावैसीसहैगरीर) यहकहकर वहांसेचलेऔरउसबनसे बाहरआये तो दोपहरके समय ऐसेमैदानमेंआये कि जहां न तो वृक्ष थे न जल मिल सक्ताथा और मनुष्य तो क्या पक्षीआदि का उस समय आना दुर्लभथा बालूसे हर स्थानपर लौरें निकल रहीथीं और लूकइस प्रकारसे चल रहीथी कि उसका हाल लिखूंतो जबान और कलममें फफालेपड़जावें और किताबकेसफे जलजावें औरसूर्यकी तपनसेवहमैदान जल रहाथा कि सब हथियार अमीरके ऐसे गरम होगयेथे कि छूने से हाथमें छाले पड़तेथे औरनामलेनेसे शीभ जलतेथी अमीर ने सबहथियारोंका फेंकदिया और उस भारसे अपनेको बचाया और प्यास इस प्रकारसे लगी कि प्राण ओठोंपरथाऔरनिकटथा कि प्राण निकलजावें और बैकुण्ठमें जाकर बास करें कि बालूका गढ़ा खोदकर उसीपरपेट रखकर लेटगया तो कुछ तरीपाकर चित्त ठिकानेहुआ जबवहभी गरम हुआ इच्छाकी कि और खोदकरबैठरहें कि फसफसाकरबैठगया और अमीरके हाथ पावँ उसीमें दबगये निकल न सका संयोग से एक दिन बादशाहने अब्दुल रहमान से पूछाकि बिचारोतो अमीर परदेदुनिया में पहुंचकर सबलोगोंसे मिलेहोंगे और देखकर प्रसन्न हुयेहोंगे अब्दुल रहमान ने बादशाह के सामने तख्त रखकर बिचारातो मालूम किया कि अमीर बालूमें दबगये इसके सुनने से बड़ेदुःखमेंहुआ और अफसोस करके कहनेलगा कि हमजाकी जबानी हुयीगई बादशाह से कहा कि अबकईआपका इतबारन करेगाऔरकाहेको आज्ञामानेगा कि हमजा ऐसे मनुष्यकोजिसने आपकेशत्रुओंको मारकर फिरसेबादशाह बनाया आपने बेसबब ऐसी बुराईकी कि इसफलको प्राप्तहुआ बादशाहनेजिन देशोंपर तख्त रखवाकर भेजाथा उनकाबुलवाया और उससे क्रोधकरके पूछाकि तुम हमजाका कहां छोड़आये उन्होंने कहाकि आसमान परी की आज्ञासे बियाबान हैरतमें छोड़आये हैं और जो दुनिया में पहुंचाते तो शाहजादो को आज्ञासे सब जनबच्चों से मारेजाते या निकाल दियेजाते इसबातके सुननेसे बादशाह बड़े क्रोधमें हुये और आसमानपरी की तरफ देखकर कहाकि तूबड़ी दुष्टिनहै उसने कहाकि मुझे हमजाका दुनियामें भेजना मंजूनहींहै उसकी जुदाई में मुझसे दमभर भी नहीं रहाजाताहै और मैं अभी आप जाकर हमजाको ढूंढ लाताहूं बादशाहने कहातूअपना शिरढूंढ़लावेगी तूकहांपावेगी यहकह

कर बादशाह खुदाने को तैयार हुये और सवार होकर बियाबान है रतमेंजा पहुंचेवजिनऔरपरियोंको आज्ञादी किइसमेंढूंढो जिस स्थान परवह फंसा है उसको वहांसे छुड़ाना चाहिये जाकाइ ढूंढलावेगा उसको जवाहिर के परदूंगा और उसका ओहदा बढ़ाऊंगा सबढूंढते २ इसजाके हथियार इधर उधर पड़ेपाये वहलेकर बादशाह को दिये बादशाह ने देखकर बड़ाशोचकिया और फिर उनलोगों को ढूंढने के लियेभेजा जिससमय सबलोग ढूंढकर हारगये और कहीं पता नहीं लगा तो आसमान परी रोनेलगी और मोतीसे आंसूबहानेलगी संयोग से एक परीजाद उसगढ़े के पास जानिकला जिसके नीच अमीर दबेहुये पड़ेथे और ईश्वरकी कृपासे वायुसे उससमय वहांकी बालू उड़कर और तरफ होगईथी मानो अमीरके निकलने की राह बनाईथी परीजाद ने अमीर को चमक की तरह देखलिया उसढेर के तलेदबे हैं तबउसने बालूको हटाकर देखा तो अमीर बेहोश आंखोंको बन्दकिये पड़ेहैं और उठनेकी शक्ति नहींहै कि उठें तबउसने पुकारकर कहा कि ऐबादशाह काफ़यह मुसाफिर यहां बालूमें दबापड़ा है उसका शब्द जो शहपाल ने सुना तुरन्तही नंगेपांव दौड़कर उसस्थानपर आया और अमीरको गढ़से निकालकर हाथोंहाथ लेजाकर अपने तख़तपर लेटाया और सुगन्धित वस्तुअमीर केचारोंतरफरखवायाऔरहरप्रकारकीसुगन्ध सुंघाई थोड़ीदेरके बाद होशमें आया तो अमीर ने बड़ा आश्चर्यकिया देखा कि तख़तपर लेटाहूं और बादशाह मेरे सामनेबैठा है और बहुत उदास है जुईत करके उठा और बादशाहसे कहाकि ऐबादशाह मैंने आपके साथ कौन बुराकाम कियाथा जो आपने मुझे यह दण्डदियाहै शहपाल ने कहां ऐ साहबक़िरां मुझको आपके प्राण और हजरत सुलेमान की सौगन्धहै मैंने इसमें कुछभी सहाराहदियाहो आपकेदुःखदेनेसे क्या मिलेगा आपने तो बड़ी नेकियां मेरेसाथ कीहैं मैं आपका सेवकहूं यह सब आसमानपरी ने कियाहै यह उसीका पागलपनहै कि आपको यहदुःख पहुंचा आसमानपरी दौड़कर अमीरके पैरोंपर गिरी और कईबार फिर कर परिक्रमाकिया और हाथ जोड़कर कहाकि सत्यहै मुझसे बड़ाअपराधहुआ अबको और मेराअपराध क्षमाकरो मुझसे अपनादिल साफ करो और सहरस्तानजरींमेंचलकर कुछदिन आरामकरो क्योंकिआप को बड़ादुःख पड़ा छः महीने केपीछे आपको अवश्य परदेदुनियाको भेज दूंगी इसकहनेको पूराकरूंगी अमीरने कहा तेरेकहनेका कुछ विश्वास नहींहै तू अपनी बात कभीनहीं रक्खेगी आसमान परीने हजरतसुलेमान अलेहुस्सलामकीसौगन्धखाईऔरछः महीनेकेवादे सहरिस्तानजरींमेंले आई शहपालको सेना वहींपड़ीरही अमीरका शरीर हृष्टपुष्टहुआ और जब छः महीनेव्यतीतहोगये और जानेकीरुख़सत न पाईतो फिरएकदिन

राचिको वैसाही स्वप्नमें मेहरनिगारको देखा कि व्याकुलहै और रोरोकर कहती है कि ऐ साहबक़िरां अठारह दिनका आप वादाकरके गयेथे अब अठारहवर्ष व्यतीत होगये अबइससे अधिक मुझसे नहीं रहाजाता आप अति शीघही आइये नहींतो मुझको जीता न पाइयेगा पीछेको पछताइयेगा अमीर यहस्वप्न देखकर चौंके तोदेखा न तो मेहरनिगार है न वहमकान है परदे क़ाफ़में बैठाहूं और दूसरे कैदमेंहूं रोकर ठंढीसांस भरनेलगा आसमान परीकी जो आंखेंखुलीं तो देखा कि अमीर रोरहे हैं उठकर रूमालसे अमीरके आंसू पोंछनेलगी और पूछा कि क्याहुआ क्योंइसप्रकारसे दुःखितहो अमीरने कहा कुछनहीं सब अच्छाहै आसमान परीने हरएक भांतिसे पूछा परन्तु अमीरने कुछ जवाब न दिया एकबारगी चुपहोरहा और प्रातःकाल तकरोया किया और वहरूमाल से आंसू पोंछाकिया और जबबादशाह महलसे आकर बैठकें में बैठे तो अमीरने जाकर सलाम करके कहा कि यह वादा भी आपका पूरा होगया अबतो सेवकको जानेकी आज्ञादीजिये बादशाह ने उसीसमय अमीर को तख्तपर बैठाकर चारदेवों को बुलाकर आज्ञा दी कि अमीर को परदे दुनियामें पहुंचाकरमोहरीरसीदअमीर की ले आओ और इनको अच्छीतरहसे पहुंचाना तब वेतख्तको लेकर उड़े और आसमान परीने फिर अपना हाल वैसाही किया और सलासल परीज़ादको बुलाकर आज्ञादी कि किसी युक्तिसे जाकर देवोंको मेरी आज्ञासुनाओ कि वे अमीरको रास्ते में छोड़कर चलेआवें इसीमें उनके लिये अच्छाहोगा कि तीनदिनतक अमीर उसी बनसे इधर उधर घूमा करें नहीं तो मैं उन देवोंको बाल बच्चोंसे मारडालूंगी सलासल उड़कर अमीरके पास पहुंचा और सलाम किया जाहिरमें बहुत दुःखित हुआ अमीरने पूछा कि तुमयहां क्यों आयेहो तुम्हारा आना अच्छा नहीं हमारे पास न आवो अपना मुख हमको न दिखावो उसने कहा मैं तो आपको बिदाकरने केलिये आयाहूं अब ईश्वरजाने कब आप से फिर मुलाक़ात होगी तब अमीरनेकहा अच्छा अब मुलाक़ात हो चुकी आप जाइये दुःख न उठाइये सलासलने फिरती समय उन देवों को शहज़ादी की आज्ञा सुनाई और उन देवोंने छोड़नेका इकरार किया सब दिन देव उड़े चले गये जब सायंकाल हुआ तो एक स्थानपर तख़्तको उतारा शाहज़ादी की आज्ञानुसार किया अमीरने कहाकि इस बनमें तख़्तको क्यों उतारा उन देवोंने कहाकि राचि अँधियारी है इस समय चलनेके योग्यनहींहैऔर कुछ भोजन पानभी करेंगे इस राचि को आरामसे सोइये दिनको फिरचलेंगे अमीरने कहाकि आगेके देवों कोतरह न करना कि तुमहमको छोड़कर चलेजावो और हमखराबहों उन्होंने कहा नहीं साहब ऐसी नमकहरामी हम लोगोंसे न होगी

अमीर चुपहोरहे देवोंने तख्त वहां रखदियाऔरआप शिकारकेहीले से गुलिस्तान अरमकी तरफ चलेगये और अमीर राचिभरतख्तपरबैठे रहे सबेरे मालूमहुवा कि वेभी दग़ा देकर अपने देशको चलेगयेअमीर ने अपने दिलमें बिचारा कि बादशाह काफ मुझको इसी तरह से घुमावाकरेगा और परदेदुनियां में न जानेदेगा अबतू चल जो ईश्वरकी कृपा होगी तो गिरता पड़ता दुनियांमें पहुंच जायगा यह बिचार कर वहांसे चला जब थकजावेतो थोड़ी समय वृक्षके तले बैठकर सुस्ता लेवे और फिर उठकर चलताथा और बादशाह काफकी दग़ाबाजी और अपनी नेकीपर अफसोस करताथा इसीप्रकारसे दिनभरचलाकियेपरंतु राचिको फिर उसी स्थानपर पहुंचगये जहांदेवोंनेछोड़ाथा अमीर बड़े सन्देहमें होकर आश्चर्य करनेलगे कि मैंनेतमामदिन क्लेश उठायाचलने से थकगया परन्तु जहांसे सबेरे चलाथा वहीं शामकोफिर पहुंचायहबात क्याहै आखिरकार लाचार होकर उसराचिकोभी वहींरहेऔरदूसरे दिन दूसरी तरफ कोचले परन्तु उसदिनभी वैसाही हुआ इसीतरहसे तीनदिनतक खराबरहे चौथेदिन दोपहरतक चलकर थकगया और धूपनेसताया एकओर दो चार वृक्षदेखे चाहा कि जाकर उनके नीचेबैठ कर आरामकरे जाकर देखातो एकसंगमरमरका आठकोनेकाचबूतरा बनाहै और वायुभी ठंढीआतीहै जोदमभर वहां ठहरता है उसका चित्त प्रसन्न होजाताहै अमीरउस चबूतरेपर तकिया लगाकर जाकर बैठे कि थोड़ीसमयकेबाद बनमें शोर गुल होनेलगा इतनेमें एक बड़े भयानकरूपका मनुष्य उसबनसे तलवार लियेहुये निकला और अमीर से कहनेलगा कि किस बबंडलमें तू उड़कर यहां आयाहै और कौन ले आयाहै अब तू भला मुझसे बचकर जानेपावेगा यह कहकर एक वार तलवारकी चलाई अमीरनेभी अक़रब सुलेमानी उठाकर एकवार उस पर मारा परन्तु उसके न लगा तब वह देवभागा और थोड़ी समयके पश्चात् एक अजगर हाथमें लेकर आया और एकवारगी ललकार कर कहा कि खबरदार होजा मैं वार चलाताहूं यह कहकर अजगर उठा कर अमीरकोमारा अमीरने उसकोभीएकतलवार से मारकर दोभाग करदिये और उसकी कमरपर मारा परन्तु उसके यह वारभी न लगा और तलवार उसके बदनसे ऐसी उछलतीथी जैसे खलियान में मुगरी उछलतीहै तब वह देव फिर भागगया तीसरे वार फिर वह देव आया तो अमीरने अपनी शक्तिभर तलवार उठाकर मारी परन्तु उसकेकुछ न मालूमहुवा तब अमीरने लाचार होकर ईश्वरका स्मरणकियाइतने में हजरतखिज़र एक तरफसे आकर प्राप्तहुये और उसदेवकोमारकर जिस तरफसे आयेथे उसीतरफको चलेगये अमीर उसदेवके मारेजानेसे अति प्रसन्न होकर बैठे और सब सन्देह दूर होकर नदीकेतीरलहरें

देखनेलगे एकबारगी जो ठंढी वायुआई तो अमीर उसी चबूतरेपर सो-गये उस आरामसे सबदुःख भूलगये तब अमीरने स्वप्नमें देखा कि मेहर-निगार खड़ी रोरहीहै अमीर चिल्लाकर जागउठे आहमारके रोनेलगे तो देखा कि उसी बनमें बैठेहैं तब नदीकी लहरें देखकर अपने दिल में कहने लगे कि देखें क्योंकर ईश्वर दुनियांमेंपहुंचाताहैऔरमेहरनिगार को दिखाताहै तत्पश्चात् अमीरने अपने चित्तमें विचार किया कि अब किसी युक्तिसे इस बनसे निकलनेकी युक्ति करनी चाहिये यहविचारकर वृक्षोंकीलकड़ियांतोड़करएकठाटबनायाऔरउसीपरसवार होकरनदी में चला जब आधीदूरतक गया तो लहरसे धक्काखाकर फिर किनारेपर लौटआया इसीप्रकारसेलिखनेवाला लिखताहै कि एकसप्ताहमें१२बहत्तर बारवहठाटछोड़ाऔरपलटआयातबअमीरनेनदीकेतीरउतरऔरनिमा-जपढ़कर ईश्वरका स्मरणकिया और बड़ी देरतक ध्यान करके ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे ईश्वर मुझको किसी प्रकारसे इसबलासे बचा संयोग से उसी समय अमीरको निद्राआगई तो स्वप्नमें देखा कि एकवृद्ध हरे वस्त्र पहिनेहुये आकर कहतेहैं कि बेटेमैं नूहपैगम्बरहूं और इसनदीमें मेरा नेजाहै इसलिये वह अपने ऊपरसे जानेनहीं देता जो वस्तु इसमें जातीहै उसे रोकलेताहै तू आधी नदीमें जाकर इस मंचको पकड़रहनेना तुझको प्राप्तहोगा और इस मंचसे तू इसकेपार उतरजायगा अमीर अति प्रसन्नहुये और उसी समयमें हजरतनूहके पैरोंपरगिरे और जिस समय जागे तो दिल अति प्रसन्नहोगया था सुगन्धित स्थानपर सोनेसे उठकर उसी ठाटपर सवारहोकर चले और उस मंचको पकड़नेलगे जब आधी नदीमें पहुंचे तो जल उठा मानो लहरें बढ़ीं तत्पश्चात् एकसंदूक नीचेसे निकलकर ठाटके समीप बहकरआयालहरनेउसकोअति समीप करदिया अमीरने संदूकको उठाकर निस्सन्देह रखकर खोलातोदेखा कि एक नेजा लपेटाहुआउसमेंरक्खाहैफिरअमीरनेउसकोअच्छीतरह से विचार करके देखकर संदूकमेंसे निकाल कर उसकेबन्द काटकर सीधाकिया तबतो बहुतबड़ा होगया अमीर अति प्रसन्न होकर उसी नेजेसे खेतेहुयेचले और जब क्षुधा लगती तो उसीकालीचेमेंसे जो हजरत इब्राहीम देगयेथे निकालकर खातेथे और जब निमाज की समय आवे तो तीरपर ठहरकर निमाज पढ़तेथे और फिर उसीपर सवारहो-कर चलतेथे परन्तु न लेटतेथे न सोतेथे पर इसी भांतिसे बीसदिन बरा-बर चलेगये इक्कीसवेंदिन एक अति शोभायमान बनमें जाकर पृथ्वीपाई तब ठाटसे उतरकर पैदलचले दो तीनकोश न गयेथे कि सात भेड़िये दिखाईपड़े जो कि अति बलवान और भयानक रूपकेथे और उनमेंसे एक भेड़िया सपेद रंगका और सबसे बड़ाथा और पशमें उसकीपृष्ठी तक लटकीथी लोग कहतेहैं कि वे सातों भेड़िये सुलेमानी कहलातेथे

और जो कुछ उस बनमें मिलताथा वहीखातेथे उन सातों भेड़ियों को हज़रत सुलेमानने पालकर छोड़ाथा और उसी बनमें रहनेकी आज्ञा दीथी भेड़ियोंने जो अमीरको देखा तो चारोंतरफ से दौड़कर अमीरको घेरलियाअमीरने एक वृक्षके आड़में होकर अक़रब सुलेमानी मियानसे खींचकर जो सामने आया उसको दोभाग करदिया इसी प्रकार से सातों को मार कर उनकी खाल खंजर से निकाल कर मृग-छाला की तरह गलेमें डाल लिया और अपने चित्तमें बिचारा कि अब सफरकाफ़काहै इसमें यहबड़ा गुण करेगा यह बिचार करके वहां से छालोंकालेकरचले रात्रिको एक पहाड़की खोहमें लेट कर सो रहे जब प्रातःकालहुआ उठकर निमाजपढ़ी और वहां से चले गरमी के दिनथे दोपहरके समय सूर्यकी तपन से व्याकुल होकर छाया ढूंढ़नेलगे संयोगसे एकबाग़की दीवार दिखाई पड़ी अमीर दौड़कर उसके पास पहुंचा परन्तु उसका दरवाजा बन्दपाया तब चारोंतरफ रास्ता उसमें जानेकी ढूंढ़ने लगे जब कहीं न पाया तो ताला खंजरसे तोड़कर उसके अन्दरगये तो देखा कि बाग़ अति शोभायमान है हर प्रकारके मेवे और फूलके वृक्ष लगे हुयेहैं और दो चार स्थान भी रहनेकेलियेबनेहैं और सब सजेहुयेहैं अमीर एक स्थानमें गया देखा कि संगमरमर के तख्तपर गद्दी लगीहै और मसनद तकिया रक्खीहुई है अमीरउसपर जाकर बैठ मानो उनहींके वास्ते बिछाया ईश्वर ने उन्हींको भेजा था अमीरअपनेमनमें कहरहेथे कि यहमकानहज़रतसुलेमानके बनायेहुयेहैं जबसे वे यहांसे चलेगये तबसे जिसका दिलचाहा वह इसमें आकर रहा इतनेमें बाहरसे शब्दआया अमीर व्याकुल होकर बाहर आया किदेखूं कैसा शब्द होरहाहै तो देखा कि एकदेव लोगोंको सतारहा है जिसने मेरेबाग़का दरवाजा खोला है उसेपाऊं तो जीता खाजाऊं अमीर ने ललकारकर कहा इधरआ तूनहीं जानता कि मैंने अफ़रीत और उसके माता पिताको मारकर सबदेवोंका नाशकरदिया है तू कब मेरे सामने आसक्ता है उसराक्षस ने अमीरको देखनेकहा कि ऐमनुष्यतूकाफ़केबाग़ और देवोंको बिगाड़कर मेरे बाग़में आयाहै मैंनेसुनाहै कि तूने हज़ारोंदेवोंको मारकर यमपुरी को भेजाहै अब देखें जो तू लाखपावँभी रखता होगा तो इससे स्थान से तेरा प्राणनबचेगा यहकहकर एकतलवार फेंकादी जो उसके हाथमें था अमीर के शिरपर मारी अमीर ने वह उसराक्षसशिरके हाथसे छीनलीऔरऐसीदिलावरी और बलदिखाया कि वह अमीर के आगेसे भागा और युद्धकरनेकी शक्ति न रही अमीर दौड़कर उसके पास पहुंचे तब उसने बिचारा कि यह मनुष्य बलवान भीहै दौड़ताभी अधिकहै राहमेंएककुआं था उसीमें कूदपड़ा औरउस समय उसे कुछ न सूझा तब अमीरभी उसकेपकी जगतपर बैठगये कि

कभीतो इसमेंसे निकलेगा तीनपहर तक बैठेरहे तबतो उनका चित्त न लगा इतनेमें अलसाकर सोगयेतो अमरूने स्वप्नमें आकर कहा कि ऐ हमजा इसतरह जातू उमरभर बैठा रहेगा तो वह न निकलेगामैं एक उपाय बताताहूं कि यह जो तालाबहै इसकाजल कटाकर कूपको भरदे तब वह व्याकुल होकरनिकलकर भागेगा यहस्वप्न देखकरअमीरकीआंखें खुलगईं खंजरसे एक नाली खोदकर कूपको तालाबके जलसे भरा तब वहघबराकरनिकलाऔरचाहा किअमीरकेआगेसेभागजावे कि प्राणबचें परंतुअमीरनेदौड़करएकतलवारऐसीमारी कि कटकरदोटुकड़े होगया एक घायत न बीतीथी कि एकदेवज़ादबुढ़ियारोती हुईआईऔरअमीर से कहनेलगी कि तूनेमेरेपुत्रकोजिसकीउमरकुलतीनसौ वर्षकीथी और अभी दूधकेदांत भी न उखड़ेथे तूने मारडाला बड़ा गज़बकिया तूने यह न विचारा कि इसका औरकोई वारिसहै अबतेरा प्राणभी मुझसे नबच कर जावेगा यह कहकर जादूकरनेलगीअमीरने जोमंत्रपढ़ातोवह अपनी जादू भूलगई अमीरने कदमबढ़ाकर उसकेभी दोभाग करके यमपुरी को भेजा और स्नानकरके निमाज दोबार पढ़ी जो ईश्वरने ऐसेपापियों के हाथसे उसकाप्राण बचाया और दिलमें विचारा कि सफर बहुतदूर काहै आज इसी स्थानपर ठहरकर आराम करें उस रात्रिकोवहींरहे प्रातःकाल वहांसेचलेतो चलते २ तेरहवें दिन अमीर के पावोंमें छाले पड़गये तब छालोंके दुःखसे चल न सके एकवृक्षके नीचेबैठगये और मन में विचार करने लगे कि अभी दिल्लीदूरहै और हम थक गये इतने में एकगरद सामने दिखाईदी जबवह गरदबन्द होगई तो देखा कि एक घोड़ा दौड़ाचला आताहै और अमीरकेसमीप आकर खड़ाहोगया तब अमीरने यहविचाराकियह सवारी ईश्वरने मेरेवास्तेभेजीहै यहकहकर ईश्वरकाधन्यवादकियाऔरउठकर ज्योंहींघोड़ेपरसवारहुये त्योंहींवह वायुकेसमानलेकरउड़गयाकितनाहीअमीरनेरोका परन्तुवहनरुकातीन दिन रात्रि बराबर चलागया कहीं एकघायत दम न लिया चौथे दिन अमीरको एकबाग़की दीवारदिखाईपड़ी तबतोकुछ अमीरका चित्त ठिकानेहुआ वह घोड़ा उसके अंदरगया तो वहां वैसे बहुतसे घोड़ेचर रहेथे वह भी उन्हींके साथ चरनेलगा अमीर इसहालको देख करबड़े आश्चर्यमें हुआ फिरजोदेखा तो एकस्त्री चौदहवर्षकी अति स्वरूपवान घोड़ेपर सवार फिररहीहै और नवाफिर लगीहुई छड़ी हाथमें लिये घोड़ोंको चरारहीहै और कभी हँसतीहै और कभी रोतीहै हरसमय एक नवीन भेषधारण करती है अमीर को देख कहने लगी कि क्या तू बहुत थकाथा जो इस घोड़ेपर सवार होकर चला आया उस ने कहा कि मैं इस तरहसे थकाथा कि उठभी नहीं सकाथा इसको मैंनेजाना किईश्वर नेमेरेऊपर कृपाकरके भेजा है तो सवार हुआ परन्तु यह

घोड़ा मुझेऐसा लेकरउड़ा कि यहां लाकर डालदिया तबअमीर ने पूछा अब तुमतो बतावो कि तुमकौनहो और यहकिस की बाग है उसने कहा कि यहसुलेमान का जादूघर है इसमें केवल जादू है जिसके देखने से तुमको आश्चर्य मालूम होता है और आजतक यहां आकर कोई जीता नहीं बचकर गया जो आया वह मारागया इतना कहने पाईथी कि घोड़ालेकर दूसरी तरफ चलागया और गायब होगई कि फिर दिखाई न परी दहिनी तरफ फिरकर जो देखाहजरत खिज़र खड़ेहुये हैं तबतो सलाम किया हजरत खिजरने भी सलाम का उत्तरदिया और कहा कि ऐअमीर जिसघोड़े परतुम सवारथे उसके गलेमें एकतख्ती बँधीहै उसकोतुम खोलकर अपनेपास रक्खो और उसीको देखकर सबकाम करना खबरदार भूलना नहीं यह जादूघर है जबइसमें मनुष्य फंसजाता है तोकभी नहीं छूटकर जानेपाता हजरत खिज़र यहकहकर चलेगये अमीरने घोड़ेके गलेसे तख्ती खोल कर देखातो उसमें लिखाथा कि ऐमुसाफिर ईश्वरने बड़ीकृपा तुम्हारे ऊपरकी कि यहजादू की तख्ती तेरेहाथ आई तूने अपूर्व वस्तु पाईहै यहस्त्री जोकभीहँसती और कभी रोती है जिससमय हँसने लगे उसीसमय एकतीर मंचपढ़कर मारदेखना कैसी अपूर्ववस्तु दिखाई देती है अमीरने जबवह हँसनेलगी तो मंचपढ़कर तीरलेमारा तीर तो निकलकर पारहोगया और उसके शरीरसे एकलौ निकलने लगी और घोड़ोंके अयाल और पूंछोंमें आगलगादी तो सबघूमकर गिर-कर जलगये और सबनाश होगये केवल वहीघोड़ा जिसपर अमीर सवार होकर आयेथे रहगया तबअमीरने देखा ता न वहबाग है न घोड़ेहैं चारों तरफ से शब्द सुनाई देताहै जिसके सुन्नेसे बड़ा आश्चर्य मालूम होताहै और एकबन बड़ाभारी देखाई पड़ा जिसका कहीं वार संभार नहीं मिलता तबवह घोड़ा अमीरको लेकर निकला थोड़ी दूर आगेगया कि एकबाग की दीवार दिखाई पड़ी जोकि पहिले से भी उत्तमथी अमीर जो उसके अंदरगये तो देखकर अति प्रसन्न हुये और इसप्रकार से मेवे आदिक के वृक्षथे मानो बैकुण्ठहीहै और उसके मध्यमें एक ऐसावृक्ष जादूका मोटाथा कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर रंग २ के पक्षी बैठेहुये अपनीबोली बोलरहेथे और अपनी भाषासे लोगोंको मोहित कररहेथे और मध्यमें एकपक्षी गलेमें हार डालेहुयेबैठाथा जबउसने अमीर को देखा तो सबपक्षियों को लेकर पांचसौ गजऊंचा उड़कर चारोंतरफ से अमीर को घेरलिया और रोरो कर शब्द करनेलगे कि मनुष्य क्याजो पत्थरहो उसको भी अवश्य दया आजातीथी अमीर उनका रोना सुनकरआपभीरोनेलगेऔरउनकेदुःख परबड़ा रंज किया परंतु मसलाहै कि दूधका जला माठा फूंक २ पिये

अपने चित्तमें विचारा कि शायद येपक्षी भी जादूके हों और मुझको किसी दुःखमें डालें तख्तीको निकाल देखा तो उसमें लिखाथा कि खबरदार २ इसवृक्ष के नीचे खड़ा न होना नहीं तो फँस जाओगे ये पक्षी जादूके बने हैं फिर यहांसे कभी न छूटने पावेगा इसमंत्र को पढ़कर तीरसे जादूकी झुमाको मारडाल अमीरने मंत्रपढ़कर तीर का कमानसे लगाकर ज्योंहीं मारना चाहा त्योंहींजादूकी झुमा वृक्षसे उड़कर जाया चाहताथा कि अमीरने मंत्रपढ़कर तीरमारा कि उसके सीनेमें लगा वहतड़पकर गिरपड़ा और उसके बदनसे लपट निकली और वहबाग सबपक्षियों समेत जलगया तबतो सबसन्देह अमीर का दूर होगया और शोर गुलके पश्चात् अमीर एकदूसरे बागमें पहुंचे तो वहांभी अपूर्व तरह के तमाशे दिखाई दिये कि एकसेना सानेकी बलछी लियेहुये खड़ीहै और उनका रूप देवोंकी तरह अपूर्व तरहका था अमीर को देखकर कहने लगे कि ओमनुष्य देशघूमने वाला तू यहां क्यों आया और कौनसे आया यहकहकर सबबलछी लेकर दौड़े अमीर ने रोककर एकतलवार ऐसी लगाई कि सब एकबारगी मारे गये प्रत्येकके दो २ भाग होगये परन्तु जो पृथ्वीपर गिरते एकके दोहो गये पहिलेसे दूने होकर अमीरपर दौड़े और चारोंतरफसे घेरलिया इसीप्रकार से दोपहर में देवोंसे बाग पूर्णहोगया तबतो अमीर बड़े सन्देहमें हुये परन्तु ईश्वरकी कृपासे किसी का वार अमीरके न लगता था और एकबड़ा आश्चर्य यहमालूम हुआ कि हरएक अपना भेष बदल २ कर आवे कि शिरतो पेटमें और दोनोंहाथ दो सींगकी तरह ऊपर को उठेहैं पश्चात् अमीर के चित्तमें आया कितख्ती में देखेंतोक्या है जब देखातो उसमें लिखाथा कि यहसेना तलवारसे न मरेगी गोल सपेद के मस्तक में एकखाल लालहै वहजादू है तीरके लगनेसे दूरहो जायगी और तू इससे बचकर चलाजायगा अमीरने देखातो उसमें एक गोल सपेदथा और उसके मस्तकपर एकखाल लालरंगकी थी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर एकतीर उसके खालपर मारातो चारों तरफ से शोरगुल होनेलगा और आकाश से पत्थर गिरने लगे और बादल गरजने लगा थोड़ी समयके पश्चात् वहसब फसाद दूरहे गयाफिरदेखा तो एकस्थान अपूर्व दिखाई दिया तब अमीर उसके भीतर गये तो एक बाग अतिशोभायमान दिखाई पड़ा और उसके मध्यमें एकहौज जल से भराहुआ और उसमें लहरें उछलरही हैं और उसके किनारेपर एक तख्त बिछाहै उसपर एकदेव तकिया लगाये बैठाहुआ है और उसके आगे एकस्त्री बँधीहुई पड़ीहै उसके ऊपर एकजिन खन्जरलिये बैठाहै और उसको बड़े जोरसे दबाये है वहस्त्री अमीर को देखकर बड़े जोरसे चिल्लाकर रोने कहनेलगी कि ऐजगत के घूमनेवाले मुझे इससे

हाथसेबचा तबतो जिनने उसस्त्रीका शिरकाटकर देवके गोदमेंफेंक दिया और उसने जलमेंडालदिया। उसबेचारीको इसतरहसे दुःखदिया इतनेमें वहशिर फौजसे निकलकर फिर उसस्त्रीके धड़में जुड़गया। और वह स्त्री फिरवैसेही कहनेलगी जिननेफिरशिर काटकरदेवकी गोदमें डालदिया देवने उठकर फौजमें डालदिया तब वह शिर फिर उड़कर उस स्त्री के धड़में लगगया और वहस्त्री उसीतरहसे फिर अमीरसे रोरोकर कहने लगी अमीर ने इसको देखकर बड़ा आश्चर्य किया और कहनेलगे कि बड़ा तमाशाहै तब तख्तीको निकालकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि जिससमय यह जिनस्त्री का शिरकाटकर देव की गोदमें दे उसी समय उस देवके गलेमें तीर मार इसमंच से सबजादू दूर हो जायगा अमीर ने वैसाही किया झट एक तीर उसदेव के गलेमें मारा तो उसी समय एक बड़ा शोरगुल होनेलगा उसके पश्चात अमीरने देखा कि एक बन है जिसकी हद्दका कहीं पतानहीं है अमीर उस तरफचले थोड़ी दूरगये तो एक क़िला स्याहपत्थर का दिखाई दिया और एक नवीनप्रकारसे बनाहुआहै अमीर जबदरवाजेपर गयेतो दरवाजा क़िलेका खुलापाया और कोई दरबानभी न था परन्तु बोलचाल मनुष्यों की सुनाई पड़ी तब अमीर क़िलेके अन्दरगये तो देखा कि बराबर से दूकानलगी हुई हैं और सबलोग बैठेहैं परन्तु न कोई हिलसक्ताहै न बोलसक्ताहै बहुत प्रकारसे अमीर ने पुकारा परन्तु कोई भी न बोलातब बाज़ार की सैर करते हुये नगार खानेकी तरफगये तो वहां भी बहुतसे लोग बैठेपाये परन्तु वही हाल उनका भी था आगे जो गये तो स्थान बनेहुये पाये और उसमें पहरेवाले चोबदार खिदमतगार आदि दरवाजे पर बैठे हैं और सबको चुपचाप पाया जिससे अमीरने पूछा कि यह क़िला किसकाहै उसने जवाब नदिया और न कुछ बोला थोड़ीदूर आगे गये तो दीवान मिला उसमें एक मकान बड़ाऊ बनाथा उसके भीतर जो गये तो देखाकि एक तख़्त् बड़ाऊ बिछा है उसपर बादशाह शिवासशाही पहिनेहुये बैठाथा और औरपास सरदारलोग बराबरसे बैठेथे अमीर ने बादशाहके समीप जाकर सलामकिया और जब जवाब न पाया और कोई न बोला तो अमीरने क्रोधितहोकर कहाकि क्या तुम्हारे यहां को यही चालहै कि जो कोई आवे उससे न बोलें और सलाम का जवाब भी न देवें यह कहकर अमीर बाहरचलेआये तो जिधरसे गयेथे वह रास्ताही भूलगये लाचार होकर फिर बादशाहके पासआये कि उससे रास्तापूछा तो आकर बादशाहके हाथमें एक पत्रथा उसको हाथ बढ़कर ले लिया बादशाह तब भी कुछ न बोले अमीर ने उस पत्रको पढ़ा तो लिखाथा किऐ मुसाफिर यह सुलैमानकी सभा की नकल है और वैसेही सब बनाहुआ है जो लोग दरबार में हाजिरथे उनकी

सूरतें बनीहुई हैं और जो जिसस्थान पर बैठता था उसीतरह से बैठा हुआ है और जो सूरतेंतूने देखीहैं येलोग इसी क़िले में रहतेथे इसकारण पुतलियां क्योंकर बोलसक्ती हैं अमीर इसमें बड़े सन्देह में पड़ेथे कि इज़रत सुलेमानके तख़्तके बराबर एक और तख़्त दिखाई दिया उसपर एक युवास्त्री चौदहवर्ष की सब ज़ेवर पहिनेहुये बैठी है और स्वरूपमें परियों से हज़ारगुना स्वरूपवान है और चारसौसहेली उसके तख़्तके पीछेहाथबांधे खड़ीहैं जिनके हाथों और गलोंमें सोनेकी ज़ंजीरें पड़ीथीं अमीरने उसके बराबर आकरसलाम किया उसनेसलाम का जवाबदेकर कहा कि ऐप्यारेतू इस स्थानमें क्योंकर आया कि कोई मनुष्य इसमें नहीं आसक्ताहै अमीरने कहामेरा वृत्तान्त अधिकहै क्योंकर सुनाऊं जिसका पूराबयान न होसकै बहुतकाहूं परन्तु तुमअपना हाल बताओ कि कौनहोऔर क्योंकर यहांआईहो उसने कहाऐप्यारे मैंभी इज़रत सुलेमान की जोरूहूं मेरानाम गुलीमशरां है मुझको जिस समय इज़रत सुलेमान ने इस दुनिया को छोड़ा और शहपाल ने सब देवोंको अपने आधीनकियाउसने परदेज़ुल्मान की राजधानीदीहै और मैंने उनकी आज्ञानुसार कियापरन्तु थोड़ेदिनों के बाद जब अफ़रेतपुत्र अहरमन ने युद्धकिया और क़ाफ़के देशोंको शहपालसे छीनलिया और सब राजधानी लेलिया तब धीरा २ जुतलमात पर भी दख़ल किया और संदेशादिया कि तू मेरेसाथ विवाहकर नहीं तो तुझेभी मारडालूंगा तब मैंने विचारा कि जब शहपालशाह इससे विजय न पासका तो मैं कबपाऊंगी क्योंकि उसकेपास बड़ीसेनाहै और आपभी अतिबलवानहै वृथा अपनी फ़ुरमत खोनाहै तबमैं विचार करके वहांसे भाग कर यहां आईहूं और इस जादूमें अपने को क़ैदकियाहै इस विचारसे कि यहां वह न आसकेगा और इस स्थानपर केवल इज़रत सुलेमान की सूरत देखकर दिन काटतीहूं और दिनराति ईश्वरका ध्यानकिया करतीहूं और ये चारसौ मेरी सहेलियांहैं इनको मैं अपने साथले आई थी अब आप अपना हाल बताइये कि कौनहैं और कहांसे आये हैं और क्योंकर इसमें आयेहो अमीरने कहा कि मैं सहायक बादशाहक़ाफ़ शहपाल पुत्र इब्राहीम पैगम्बरकाहूं और हमज़ा मेरानाम है और परदेदुनिया में मैंरहताहूं शहपालने अपनी सहायता के लिये बुलायाथा उनकी ख़ातिर से मैंआया और सबदेवों आफ़रेत औरउसके माता पिता समेत सेनाको मारकर सब देशईश्वरकी कृपा और अपने बलसे दिलाकर फिरसे बादशाह बनाकर सब जादूके कारख़ाने बिगाड़ करके आताहूं अब तुम खुशीसे जाकर राजकरो और वहां की मलका बनो उसने कहा कि इसमें तोमैं अपनी इच्छासे आईथी परन्तु निकल नहीं सक्तीहूं क्योंकि जो यहां आताहै वह निकल नहीं सक्ताहै अमीरने

कहा कि मैं इसको तोड़कर निकालदूंगा इतनी पुण्य करूंगा परंतुएक बात जो मेरीमानो उसने कहा क्याबातहै कहो जो करनेके योग्यहोगी तो क्यों न मानूंगी पहिले सुनलूं तो इक़रारकरूं अमीरने कहा कि यहांसे छुटनेके पश्चात् परदेदुनियांमें मुझे पहुंचादे मेरादेश मुझेदिखादे उसने कहा कि शिर और आंखोंपर मैं खुद ले चलकर पहुंचाऊंगी इतना आपका कार्य अवश्य करूंगी अमीरने तख्तीको निकालकरदेखा तो उसमें कुछभी न लिखाथा तबतो बड़े आश्चर्यमें हुये कि इसमेंसे निकलना अब दुर्लभ हुवा तबतो तख़्तीको रखकर हाथ मुख धोकर निमाज पढ़कर ईश्वरका ध्यान करनेलगे तब एक स्वप्नकी तरहदेखा कि हज़रत सुलेमान मेरा शिर छातीसे लगाकर कहतेहैं कि ऐ बेटे दुःखित न हो बदिल मलिकनामे तेरापुत्र इस जादू घरको तोड़ेगा इसकी पराजय उसीकेहाथसेहै और जो तुम निकलनेकी इच्छा करते होतो इस मंत्रको पढ़तेहुये दरवाजेकी तरफ जावो दरवाजा तुमको मिल जायगा और जब दरवाजेसे बाहर जाना तोभी इस मंत्रको पढ़ते रहना और एक हरिन तेरे सामनेसे आकर भागेगा तूभी उसीकेपीछे मंत्र पढ़तेहुये भागे चलेजाना और जब वह हरिन दिखाई न देवे तो जानना कि जादूसे ईश्वरने निकालदिया अमीरने जब ध्यानसे नेत्रोंको खोला तब सबहाल मलिकासे कहकर ईश्वरका धन्यवादकरनेलगेऔर मलिकाने कहा कि जब हम यहांसे निकलें तूभी मेरेपीछे दौड़ीचली आ मेरी आज्ञामात्र अमीर वही मंत्र पढ़तेहुये दरवाजेकी तरफ गये देखातो दरवाजा खुलाहुआहै और जब दरवाजेसे बाहर निकले तो देखा कि एक हरिन कूदता फांदता अमीरके आगेसे अच्छीतरह से सजाहुआ निकलकर मैदानकी तरफ भागा अमीरभी वही मंत्र पढ़ते हुये उसी हरिनके पीछे २ दौड़तेहुये चलेगये और विचारा कि यह वही हरिनहै जिसका हाल स्वप्नमें हज़रत सुलेमानने मुझसे बयान कियाथा और यह मंत्र सिखलायाथा मलिकाभी अपनी सहेलियों समेत पीछे २ अमीरके दौड़ी इतनेमें किलेमें एक बड़ा शोर गुलहोने लगा कि क़ैदी भागेजातेहैं अब मिल नहीं सकेंगे परन्तु कौनसुनताहै किसीने फिरकर भी न देखा गिरतेपड़तेउसक़ैदसे सबबाहरआकर ईश्वरका धन्यवादकिया आगेजाकर दो पहाड़मिले हरिन उसपहाड़ में जाकर अमीरकेआगेसेगुप्तहोगया और फिर उसको किसीने नदेखा तब अमीरने जाना कि ईश्वरकी कृपासेजादूसे बाहर आये उसपहाड़ से निकलकर दूसरे पहाड़ पर उतरकर डेरा डालऔर उस दौड़धूपके दुःखसे आरामलिया और मलकाभी उसीस्थानपर ठहरी अमीरके साथ वहभी निस्सन्देह होगई और चारसौ परियोंसे सब सामान मँगवाकर अमीरकी मेहमानीकी और सब तरहसे अमीरकी सेवाकी

सातदिनतक उसीस्थानपरअमीरनाचरंगदेखाकिये औरपरियोंकेकटाक्ष लोभानेके देखकर प्रसन्नहुये आठवेंदिन मलिकाने अपनी सहेलियोंसे सलाह पूछी कि हमजा आसमानपरीके साथ ब्याहाहैइसकारण कोई इसको दुनियांमें नहीं पहुंचाताहैउसके डरसेइनकोकोईनहींलेजाताहै और मैं हमजासे इक़रार करचुकीहूं कि तुमको दुनियांमें पहुंचा दूंगी पस तुम लोगोंकी इसमें क्यासलाहहै कौनसी युक्तिकरनीउचितहै इन्होंने कहा कि यह समझलो कदाचित् आकाशपरीको मालूम होगा कि किसीने हमारे पतिको पृथ्वीपर पहुंचादियाहै तोवहतुमकोजीता न छोड़ेगी वह अपने माता पितासेतो डरतीनहीं तुम किस गणनामें हो तुम इसके वृत्तांतको भलेप्रकार जानतीहो ऐसा करनेसे वह तुमको बहुत तंग करेगी और बहुतदंडदेगी इससेउत्तमयहहै कि इस मनुष्यको चारसौ परियोंके साथ इसीस्थानपर छोड़कर चलेजावें और आकाश परीकी आज्ञाके विरुद्ध न करो यह सम्मति वहांके बुद्धिमानोंकेपसन्द आई और इसनेभी अपना बचाव इसीमें जाना अमीरको सोता छोड़ कर कुछपरियोंको साथ लेकर उड़के जुलमातको चलीगई और अमीर से प्रतिज्ञा तोड़दी प्रातःकाल जब अमीर सोके उठातो देखा कि सली-सायरावका कहीं पतानहींहै बिचारकिया कि आसमानपरी के डर से इसनेभी मुझको पृथ्वीपर नहीं पहुंचाया अमीरनेकहा कि जो ईश्वर कृपा करेंगे तो दुनियांमें पहुंचना कुछ कठिन नहींहैयह कहकरपहाड़के नीचे २ ईश्वरका ध्यानकरते चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर नव रात्रि दिनचलतारहा और जबभूखलगती तो खिज़िरके दियेहुयेकलीचे को खाते और बलीहोकरफिर चलते तत्पश्चात्पृथ्वी या पहाड़ यानदी जहांकहीं कलीचा फेंकदेते फिर उन्हींकेपास आजाता और उसको खाकर फिर अपना कामकरते दशवेंदिन श्रमशादवृक्षकेनीचेपहुंच कर भेड़ियोंका चमड़ा बिछाकर सोरहे प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर जंगलसेनिकलमैदानकी राहली थोड़ीदूरजाकर क्यादेखतेहैं कि पहाड़के निकटसे एक ज्वाला रह २ कर उठतीहै परन्तु उसका कुछवृत्तांत नहीं विदित होता जब अमीरने निकट जाकर देखातो वह एक अपूर्व पहाड़है वहांकी अपूर्ववस्तुओंको देखकर अत्यन्त विस्मितहुआ कि झिरनोंसे पानी झररहाहै और मैदानमें जो हरी घासहै वह मानो मखमलपर मोतियोंकी फरशसी सुशोभित होतीथी और वह मैदान बहुत हराभराहै और फलिया पहाड़में सोने चांदीकी ईंटों और जवाहिरातसे बनीहुई एक चारदीवारीहै जिसके देखनेसे नेत्र प्रका-शित होतेहैं और जगह २ उत्तम २ जानवर फिर रहेहैं और उसपहाड़ के नीचे एक खोह ऐसीहै कि जिसकी गहराई अप्रमाण है उसकेमुख पर एकदेव बैठाहुआ अरनी ऊंट और हाथी का कबाब बना २करखा

रहाहै और जो धुआं निकलताथा वह सीधा आकाशको जाताथा और इसदेवने अपनेतईं ईश्वरकरके क़ाफ़की राहमें प्रसिद्धकिया था और उसखोह और अलावोंको अपना दोजख़बनायेथा और उसमें चारसौ देवरक्षा करतेथे इसको देखकर अमीरने इच्छाकी कि जाकर पूछें कि यह क्या बातहै जो कुछ समुझमें नहीं आतीहै देखनेसे आश्चर्य्य मालूम होताहै संयोग से एक देवकी दृष्टि अमीर पर पड़ी देखकर कहने लगा कि मेरेपास कबाब नहीं था सो ईश्वरने कृपाकरके इसको मेरे पास भेजाहै यह कहकर वहांसे उठकर अमीरको चुपकेसे यह कहकर बुलाने लगा कि ओमनुष्य धीरे २ चलाआ नहीं तो कोई दूसरा देव तुझको देखकर खालेगा और तू मेरेहाथसे निकलजावेगा अमीर उसकी बातों पर हँसनेलगे अमीरका हँसना जो बुरामालूम हुआ तो वह अमीरकी तरफ़ दौड़ा कि पकड़कर खाजावें अमीरने अक़रब सुलेमानी मियान से निकालकर जो मारी तो वह दोभागहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उसको मरते देखकर सबदेव अमीरके ऊपर हथियार ले २ करदौड़े तब अमीर अक़रब सुलेमानी से सब देवोंको मारनेलगे तो बहुतसे तोमारेगये और थोड़ेसे डरकर भागगये उसस्थान से देवोंका नाश करदिया जब अमीर ने देखा कि अब कोई देवयहां नहीं रहाहै पहाड़पर जाकर स्वर्गपुरी कोदेखनेलगा तोदेखकर अति प्रसन्नहुआ और उसमें एक जमुर्रदतख़्त अति उत्तम बिछाहै अमीर उसपर बैठगये और इच्छाकी कि थोड़े समय इसपर बैठकर आराम करें फिर दिलमें विचारा कि ऐसा न होवे कि हम सोजावें और वेदेव जो भागकर गयेहैं अपने स्वामी को बुलाकर लावें और मुझको दुःखदेवें इससे सोना उत्तम नहीं यह बुद्धि नहीं है उनदेवों ने जाकर अपने स्वामीसे कहा तो उसने पूछा कि अब वह कहांहै देवोंनेकहाकिस्वर्गमेंनिःसन्देहजाकरफिररहाहैऔर नाईस सुनकर आगहोगया और कहनेलगा कि वह कहांसे आयाहै और मेरे रक्षकोंको मारडालाहै मैंभी चलकर उसीकी अच्छीगति बनाताहूं यह कहकर कई सहस्रदेवों समेत वहांसे उड़कर आपहुंचा और क़िलेको घेरकर कहनेलगा कि जाकर तुम सब उसको पकड़लावो देवोंने कहा कि हमलोगोंसे तो वह न पकड़ाजावेगा आपजो जावें तो पकड़ाजावेगा और आज आपकी भी बहादुरी देखेंगेयह सुनकर आरनातीस क्रोधित होकर अमीरके पासजाकर कहनेलगाकि ओपापी तूनेबड़ागजब किया कि हमारेरक्षकोंको मारडाला अबतूभी बचकरनजानेपावेगा तूमुझको न डरा यह कहकर हथियार लेकर अमीरके ऊपरदौड़ा अमीरने कूद कर उसका हथियार छीनकर उसको पकड़कर पृथ्वीपर दैमारा तो उसने इच्छाकी कि भागजावें, इतनेमें अमीर कूदकर उसकी छातीपर खड़े होगये और खंजर निकालकर उसके मारनेकी इच्छाकी तो वह

होकर कहनेलगा कि ऐक़ाफ के जादू तोड़नेवाले तूमेरा प्राणछोड़दे तो मैं बड़ीनेकी करूंगा अमीरने कहाजो तूमुसल्मान हो तो मैंछोड़दूं और अपना सबवृत्तान्त मुझसे कहकरमेरे आज्ञाधीनहो तबउसने मुसल्मान होकर कहा कि मैं सुलेमान के समयमें लैसदारोंमें बड़ा मोतबिरथा और अनेक प्रकारसे मुझपर कृपाकरतेथे जब उनका बैकुण्ठवासहुआ तो सब लोगोंने जहां पाया अपना असल करलिया उसीप्रकार से मैंने भी इसक़िले कोलेकर अपनेको यहांका स्वामी बनाया था अब आपने आकर मुसल्मान करके अपनी कृपासे मेराप्राण छोड़दिया अबआपका सेवकहूं और जो आज्ञादीजियेगा वही करूंगा यह कहकर मकान से बाहर आया और अपनी सेनासे कहाकि मैं अब मुसल्मान हुआ तुम मेंसे जिसको मुसल्मान होनाहोवे वह रहेनहीं अपने घरकी राहलेवे मैं उनसे नाराज़हूं क्योंकि मैं ईमानदारहूं और तुमबेईमान होबहुतों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया और बहुतों ने अपने घरकी राहली औरतीस फिर अमीरके समीप आया और कहने लगा कि जिन देवोंने मुसल्मान होना स्वीकार किया उनको तो मैंने अपने पास रहने दिया और जिन्होंनेस्वीकार नहींकिया उनकोमैंने दूरकिया अमीरनेसुनकर कहा कि बहुत अच्छाकिया परन्तु बड़ीनेकी यहहै कि मुझको दुनिया में पहुंचादे क्योंकि मैं बहुत दिनों से तुम्हारे देश में फिररहा हूं उसने कहा कि दुनियां में पहुंचना आपका दुर्लभ नहीं है परन्तु आसमान-परीके डरसे आपको कोई पहुंचा नहीं सक्ता सब उससे डरते हैं परन्तु मैं आपके लिये उसकी आज्ञासे विरुद्ध होकर दुनियामें पहुंचादूंगाजो आपमेरा कार्य्य पूर्णकरदेवें अमीरने पूछा कि वहक्याहै उसने कहा कि मैं जिस क़िलेमें रहता हूं अकीकनिगार उस क़िले का नाम है उसके समान संसार में और कोई क़िला नहीं है उस के समीप एक जमुर्रद हिसारनामे क़िलाहै उसका बादशाह लाहूतशाह अति नीतिवान है उसकी बेटी लानिसनामे है उसके ऊपर मैं मोहित हूं जो आप कृपा करके उसको मुझसे सिलादेवें तो मैं आसमानपरी से विरुद्ध होकर आपको दुनियांमें पहुंचादूंगा अमीरने कहा कि यह कौनसी बड़ीबात है तुम हमको यहां तक पहुंचा देवो आरातीसा ने कहा कि आइये मेरी पीठपर सवार होकर चलिये तब अमीर उसकी पीठपर सवार होकर चले ॥

दूसरा भाग सम्पूर्ण हुआ ॥

तीसरा भाग ॥



हमज़ाका वृत्तान्त ॥

विदितहो कि जब आरनीसदेव अमीरको जमुर्दहिसार की तरफ लेचला तो सायंकालके समय एक स्थानपर जाकर उतरा अमीरने पूछा कि यहां क्यों उतरा उसने कहा कि अब राचि होगईहै राचिभरयहां पर बासकरके प्रातःकाल उठकर आपको लेकर चलेंगे तब अमीर ने कहा कि यहतो अति उत्तमहै परन्तु हजरत खिजरने आज्ञा दीहै कि परदे क़ाफ़के देवोंका बिश्वास न करना सो हम तुमको एक वृक्षमें बांध कर सोवेंगे उसने कहा कि मैंतो आपके साथ घाट न करूंगा परन्तु आपकी इच्छा होतो मुझको बांधकर सोइये तब अमीर उसको एक वृक्ष में बांधकर आप चर्म बिछाकर सोरहे तब राचिको आरनीसने बिचारकिया कि जिसके लिये हमने सब बस्तुछोड़कर इसका साथकिया सो यह मेरा बिश्वास भी नहीं करता तो और क्या करेगा इस प्रकार से बिचार करके वृक्षसमेत वहां से उड़कर भागा प्रातःकाल को जब अमीर जागेतो न कहीं वह देवहै न वृक्ष देखकर अति ब्याकुलहुये कि पहिलेही कासा फिरहुआ या वृक्षमें बांधने से क्रोधित होकर चला गया होगा पीछे निमाज पढ़कर एक ओरको चले और दोपहर को जब गरमीसे ब्याकुलहुये तो एक स्थानपर थोड़े से वृक्ष देखकर उसकी तरफ जोगये तो चित्त अति प्रसन्नहुवा चर्म बिछाकर लेटगये तो थोड़े समयके पश्चात् बनसे एक देव अमीरकेसम्मुख आकरकहने लगा कि तू मुझको नहींडरा कि यहांपर बैठकर आराम करने लगाअमीर ने कहा कि मैं यहांके देवों से नहीं डरताहूं तब उसने एक पत्थर उठाकर अमीरके शिरपर दैमारा अमीरने उसको रोंककर उस देवके दोभाग करदिये और जब गर्मी कमहुई तो वहांसेउठकर चले तो थोड़ीही दूरपर जाकर देखा कि अरनातीस को चारसौ जिन मारतेहुये लिये आतेहैं अमीरको देखकर दोहाई देनेलगा अमीरने जाकर उसको छुड़ाकर पूछा कि तूने क्यों मुझको वहांपर छोड़दियाथा उसने कहा कि यहउसीके बदलेमेंदण्डमिला आपचलिये आपको लेचलूं तब अमीर फिर उसकी पीठपर सवार होकर चले और राचिको एकस्थानपर उतरकर एक वृक्षमें बांधकर सोरहे तो वह

फिर वृक्षसमेत उड़कर चलागया प्रातः कालको अमीर ने जो उसको नपाया तो अपने चित्त में विचारा कि देवोंका स्वभाव ऐसाही होताहै येकिसी के साथ नेकीनहीं करतेहैं यह कहकर निमाज पढ़कर एक तरफको चले और सातदिन तक बराबर चलेगये आठवें दिन एक क़िलेके समीप जाकर पहुंचे ता देखाकि बहुत से देवउस क़िले को घेरे हैं और दोदेव कोठेपर बैठेईश्वर २ कररहेहैं और एक देव क़िलेका दरवाजा तोड़रहाहै अमीरने जाकर उसको ललकारा कि ओ पापी प्रथम मुझसे लड़लेतो फिरजाकर तोड़यह सुनकर अमीरके तरफदौड़ा और कहनेलगा कि तूतो हमारा भोजनहै तूक्याहै जोलड़ेगा अमीर ने कहाकि तक्या बकताहै मैंही अफरेत आदिदेवों का नाशकरताहूं तब उसने कहाकि तबही तेरीमृत्यु मेरेपास लेआईहै आजतू बच कर नजाने पावेगा यह कहकर अमीरको मारनेको दौड़ा अमीरने रोकर एक तलवार ऐसीमारी कि वह दोभाग होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा इसीप्रकार से थोड़ीही देरमें सबदेवों को मारकर भगादिया तब लाहुतशाह क़िलेसे निकलकर अमीरके पैरोंपर गिरकर अपने क़िले में लेजाकर अति प्रतिष्ठाके साथ सम्मुखहुआ अमीरने पूछाकि तुम्हारा क्यानामहै उसने कहाकि लाहूतशाह मेरानाम है और इसक़िले का स्वामीहूं अमीरने तब उससे कहाकि मेराएक प्रयोजन आपसे है तब उसने कहा कि मैंजो आज्ञा हो करनेको आरूढ़हूं अमीरने कहाकि तुम अपनी बेटी लानिसा का विवाह आरनातीस के साथ करदेवो मैं उससेक़ौलहारगयाहूं तबउसने ऊपरीमनसेकहाकिमुझेस्वीकारहै परन्तु चित्तसे अति क्रोधित हो अमीर से अति प्रसन्नता से कहने लगाकि उठ-कर चलकर गद्दीपर आसन कीजिये और तख्त को एक कूपके ऊपर बिछवा दिया था अमीर उठकर जबगये और उस तख्तपर बैठने लगे तो उलटे शिर कुयेंमें चले गये तब उसने एक पत्थर ऊपर से रखवाकर दो सौ जिन्नोंको रक्षाके लिये मुक़र्रर किया यहखबर लानिसाको पहुंची तो वह अति क्रोधित होकर बादशाह के पासआकर कहनेलगी कि तू बड़ापापीहैकि उसने तेरेसाथ नेकी कीहैतूने उसकोबधकरने कीयुक्ति की उसने कहाकि वह कहताहै कि अपनी बेटीका विवाह आरना तीस के साथमेरी आज्ञानुसार करोइसी से मैंने उसको कैदकिया है तब उससमय लानिसा चुपहोरही कुछउत्तर न दिया रात्रिको लिबास मरदानापहिनकरहथियार बदनपर लगाके कूपकेसमीप अमीरकेनिका-लने कीयुक्तिमेंआईऔरपत्थरहटाकरकुंयेमेंनिस्सन्देहउतरकरगईअमीर ने देखा कि एक स्त्री चौदह बर्षकी मरदाना रूपधरे कुयेमेंरे शिर पर खड़ीहै अमीरने पूछाकि तूकौनहै वहबोली कि लानिसा मेरा नाम है आपके छुड़ानेके लिये आईहूं आपकुछ सन्देह न करिये आप को

छोड़ाने के लिये आईहूं अमीरने ईश्वरका धन्यवाद दिया और कमन्द पकड़कर कुयेंसे बाहर आये और उसकीबड़ी प्रशंसा करने लगे परन्तु पहरेवाले बहुत क्रोधित हुये तो लानिसा तलवार लेकर उनको मारने लगी तो बहुतसे तो मारेगये और बहुतेरे भागकर बादशाह लाहुत के पासगये और इसवृत्तान्त को जाकर बादशाहसे बयानकिया लाहुत शाह सुनकर सुन्नहोगया और लानिसापर बहुत क्रोधित हुआ यहां अमीर लानिसा से रुखसत होनेलगे तबउसने कहा कि मैं आपकी लौंड़ी सेंतकीहूं अब आपको छोड़कर कहांरहूं जहां आप जायेंगा साथ चलूंगी अब आपको न छोड़ूंगी अमीरने बहुत प्रकार से उपदेश किया परन्तु उसने न माना अपनेविचारमें अमीरके साथ रहना उत्तम जाना तब अमीर के साथचली और कई मनजिल तक पैदल चली आखिर को थकगई चलनेकी शक्ति न रहगई तबतो अमीरबड़े सन्देह में हुये और उसके साथ होनेसे बड़ादुःख पानेलगे और मनजिल को बारबार पांचपांच दिनोंमें तैकरनेलगे कई दिनोंके बाद एक पहाड़ बहुत साफ दिखाई पड़ा और उसकी तराई में सैकड़ों कोसतक हरियाली दिखाई पड़ी और उसके मध्यमें एकनहर है कि जिसका जल मोतीसे भी अति स्वच्छहै और चारों तरफ से ठंढी २ वायु आती है जिसके कारण चित्तअति प्रसन्न होताहै तबतो वहां अमीर बैठकर उसके तीरपै सैरकरने लगे कि इतने में एकहरिन सामनेसे आतेहुये दिखाई पड़ा और सीधा अमीर के समीप निस्सन्देह चला आयापरन्तु जब अमीर पकड़नेलगे तबजंगल की तरफभागा अमीरने दौड़कर उसे पकड़ लिया और लानिसा से कहा कि लेईश्वरने तेरी सवारी के लिये इसको भेजाहै ईश्वरको तेरेदुःखसे दयालगी पसजिस समय वहांसे चलनेलगे लानिसा को उसपर सवार कराकर नाथमें रस्सी लगाकर उसके हाथमें दिया दुःखसे आराम हुआ परन्तु थोड़ी दूर जानेपर हरिन लेकर जंगलकी तरफ भागा उसनेरोका परन्तु न रुका और एकसायत में हवाहोगया और उसका कहीं पता न मिला अमीर बड़ेदुःख को प्राप्तहुये और जिसतरफ को वहहरिन भागा उसीतरफ को अमीर भी चले परन्तु कहीं भी पता न मिला दोपहर के पश्चात् एक पहाड़ की तराई में पहुंचे तो एकबाग अति शोभायमान देखा और उसमें एक गुम्मज बनाया जिसमें कि बराबर से जवाहिर जड़ेथे और चारों तरफ जड़ाऊ शामियाने गड़ेथे अमीरजो उसके दरवाजे परगये तो दरवाजा भीतरसे बन्दपाया और भीतर जानेका कुछ रास्ता दिखाई न पड़ी इतनेमें भीतरसे शब्द सुनाई पड़ा कि एकमनुष्य विनय करता है कि मुझे क़बूलकर दूसरा कहता है कि विष्टा खाना अंगीकार है परन्तु तेरेसाथ विवाह करना अंगीकार नहीं है अमीर

ने पुकारकर कहा कि अन्दर कौनहै दरवाजा खोलदे मैं तेरेपास आने की इच्छा करताहूं जबकिसीने न सुना तो अमीरने एकलात मारकर दरवाजा तोड़डाला और भीतर चलेगये तो देखा कि लानिसा तख़्त पर बैठीहै और आरनातीसहाथ जोड़े सामने खड़ा है और प्रर्थना कररहाहै आरनातीसने जबअमीर को देखा तो अमीरके पैरोंपर गिर कर कहनेलगा कि देखिये साहब मैं इसके पैरोंपर गिरपड़ा परन्तु यहमेरे साथ विवाह नहीं करती आप इसको समझाइये कि मेरे साथ विवाह करे तो आपकी सेवकाई से जीतेजी मुंह न फेरूंगा और जहां आप कहियेगा वहां आपको पहुंचाऊंगा अमीरने कहा कि तूने दोबार मुझे बनमें छोड़दिया है अबतेरी बात का कुछ विश्वास नहीं है उसने कहा कि आपमुझे बांधकर सोरहे तोमैं भागगया अब मेरा अपराध क्षमा कीजिये अबसदैव आपकी चरणों की सेवामें रहूंगा अमीरको उसकेरोनेपर दयालगी लानिसासे कहाकि अब आरनातीस मुझे दुनियांमें पहुंचानेका वादा करता है मेरेकहने से तुम इसके साथ विवाह करलेवो यहतुम्हारे साथमें मरता है लानिसाने हाथ जोड़कर अमीर से कहा कि यहतो देखहै आपजो मुझे गर्वकेसाथ विवाह करने को आज्ञा देवें तोमैं करलूं आपकी आज्ञासे मैं विरुद्ध नहीं होसक्तीहूं परंतु मैंभी इससेयह इक़रार करतीहूं कि यहआपको दुनियामें अवश्य पहुंचा देवे फिर अपनी बड़ीमानीसे दगा न देवे उसने इसप्रकार से सौगन्धें खाकर इक़रार किया अमीरने विवाह करने के पश्चात् लानिसा का हाथ आरनातीस के हाथमें पकड़ा दिया आरनातीस ने सलाम करके कहा कि अब आज्ञाहो तो इसको साथ लेजाकर क़िले निगार में विवाहकरूं और अपना हौसिला मिटाऊं किसीतरहसे मेरा और उसका हौसिला बाकी न रहजावे क्योंकि जबमैं आपको दुनियां में पहुंचाकर फिरयहां आऊंगा तो आसमानपरी अवश्यमुझे मारडालेगीऔर ऐसानहीं कि जोवह न जाने इसकारण संयमन का हौसिला मिटाकर तीसरेदिन आपकेपास आकर पहुंचूंगा और आपकी आज्ञा मानूंगा अमीरने उसको जानेकी आज्ञा देकर कहा कि तीनदिन तक तुम्हारा आसरा देखेंगे और जोतीसरे दिन न आवोगे तो अपने कियेकृत्यका फलपावोगे और पीछेको पछितावोगे तबआरनातीस लानिसा का गरदनपर सवार करके क़िले निगारकी तरफगया आधी दूरगयाथा कि एक मैदान दिखाई पड़ा जहां तालाब और दोचार स्थानभी अपूर्व प्रकार के बनेथे वहस्थान उसेप्रसन्न आया उसीतालाब के तीर लानिसा का गरदनसे उतारकर बैठादिया और उससे कहा कि तूइसी तालाब पर बैठारह मैं जाकर कोई सवारी तेरेलिये लेआऊं पैदल लेचलना उचित नहीं है यहकहकर क़िले निगार की तरफ चला और लानिसा

को जोगरमी मालूमहुई तो कपड़े उतारकर तालाव में स्नान करने लगी कि गरमी मिटजावे मनको प्रसन्नता प्राप्तहोवे एकसायत न व्यतीत हुईथी कि एकघोड़ा अरनेभैंसे की तरह मोटा आकर तालाब के किनारे खड़ाहुआ तब लानिसाने उसघोड़े को देखकर तालाबसे निकल करचाहा कि कपड़े पहिने कि वहलानिसा की तरफ दौड़ा और लानिसा डरसे पत्थरपर गिरपड़ी तबतो उसघोड़ेने अच्छी तरहसे उस के साथ भोगकरके अपने दिलका हौसिला मिटाया ईश्वर की अपूर्व रचना से उसीदिन उसके गर्भरहगया और पीछेसे उसके घोड़ा उत्पन्न होगा और बड़ातेज होगा और उसका नाम अश्वकर देवजाद रक्खा जायगा और वहबहुत दिनोंतक अमीर की सवारी में रहेगा और जो उसे देखेगा वहउसकी बड़ी तारीफ करेगा पसजब वहदेव अपने मनका हौसिला मिटाकर भोग करचुका तो पृथ्वीपर लोटकर अपना रूपधारण करलिया तबलानिसा ने कहा कि यहतूने क्या किया क्या उसरूप के धारण करने में अधिक सुखमिला आरनातीस ने कहा कि ऐलानिसा कलनहीं मालूम क्याहो हमने आजही अपना हौसिला मिटालिया संसारमें एकसायत का कुछ ठिकान नहीं है हरमनुष्य को प्रत्येकदिन एककार्यलज्जाकाकरना पड़ता है अपने मनकोतेरेसाथभोग करने से प्रसन्न किया यहकहकर उसको अपने कन्धेपरसवारकरकेचला और क़िले निगारमें लेजाकर नाचरंग जैसा उचितथा सामान करके करवाने लगा दिनको तो नाचरंगमें रहता राचिको लानिसा को बगल में लेकर सोता और उसके साथ भोगकरता अब इसका वृत्तान्त छोड़ कर थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एकदिन प्रातःकाल सुर्ख पोशाक पहिनकर नेत्रोंमें काजल देकर तख्तपर मोहनीरूप बना करबैठी और सबमुसाहिबों को बुलाया और सबके आनेके लिये बड़ी ताकीद की आकर जिसने उसका रूपदेखा वहीं दंगहोगया और हर एक मुसाहब डरने लगे कि कहीं हमलोगों पर मोहित न होजावे बैठे २ अबदुलरहमान की तरफ सनमुख होकर कहने लगी कि हमने अमीर का बियावान सरगरदां मेंछाड़वा दियाथा देखोतो अब जिन्दा है यामरगया और किसयुक्तिमें है अबदुलरहमानने हाथबांधकर बिनय किया कि मलिका साहबा रमलके बिचारसे तो यहमालूम होता है कि अमीर आजतक उसीमें इधर उधर घूमरहे हैं परन्तु आरनातीसदेव ने इक़रार कियाथा कि आप लानिसा से मेराबिवाह करवा दीजिये तो मैं आपको दुनिया में पहुंचादूंगा सो अमीरने लानिसा का बिवाह आरनातीस के साथ करवादिया है वहअब क़िले निगारमें सुखसेभोग कररहा है आजके दूसरेदिन अमीर को दुनिया में लेकर जावेगा जो उसने इक़रार कियाहै उसे पूराकरेगा आसमानपरी यहसुन क्रोधमें

जलने लगी और कहने लगी कि आरनातीस का भी यह मुंहज़ुआ कि मेरे पतिको मुझसे अलगकरने की शक्ति रखताहै और मुझे नहीं डरता इसके बदले में उसे कैसा दण्डदेतीहूं यह कहकर बड़े क्रोधसे कईसहस्र देवोंको साथ लेकर तख़्तों पर सवार होकर क़िले अक़ीक़निगार की तरफचली और क्रोधसे जलती हुई वहां जाकर पहुंची तब दूतोंने खबर दी कि इस समय आरनातीस लानिशा को लियेहुये पलंगपर सोरहाहै इसीसमय में उसको बांधकर देवोंके बश कीजिये आसमानपरीनेजाकर दोनों कीमुश्कें बांधली और गुलिस्तान अरम में लेआई और अपने दिलका संदेह दूरकिया और उनको लेआकर कारागार सुलेमानी में जहांकि जहांनके क़ैदीआकर रक्खेजाते थे और कभी न छूटतेथे उनको खूब मार पीटकर उसीमें बन्दकिया और नगरमें ढ़िंढ़ोरापिटवा दिया कि जो कोई हमज़ा को बिना हमारी आज्ञा लेजाने कीइच्छा करेगा उसको इसीप्रकारसे दण्डमिलेगा बल्कि इससे भी अधिक अब अमीरका वृत्तान्त सुनिये कि जब तीन दिन व्यतीत होगये और आरनातीस न आया तो अमीर अपने दिलमें कहने लगे कि कोई देव हमज़ा तुझको दुनियामें न पहुंचावेगा ये सब बड़े दुष्टहैं और जो कोई वादा करताहै वह अपना प्रयोजनकरने के पश्चात् धोखादेकर चलाजाताहै अब पहुंचावेगा तो ईश्वरही पहुंचावेगा नहीं तो कोई नपहुंचावेगा यह कहकर मेहरनिगार को सोचकर रोने लगे कि इतनेमें एकतरफसे शब्द सलाम का सुनाईदिया अमीरने फिरके जो देखा तो हज़रतख़िज़र है उठकर खड़े हुये और कहनेलगे किहेईश्वर क्या मैं अब इसी मेरहूंगा कबतक इस बनमें दुःखउठाऊंगा कि जो कोई मुझे पहुंचाने का वादा करता है वह पूरा नहीं करता देखिये कि आरनातीस देवने किस २ प्रकार से सौगन्धे खाई थी परन्तु पूरा नहीं करता तबहज़रतने कहा कि यह सायत का फलहै घबरा नहीं ईश्वर तुमको दुनियामें हुंचादेगा और तुम सब से जाकर मिलोगे परन्तु थोड़े दिन और दुःख उठावोगे बहुत गई थोड़ीरही यह मसलासत्य है और आरनातीस देवका अपराधकुछ नहींहै वह अपने कहनेपर तैयार था और उसको इच्छा थी कि आप को दुनियामें पहुंचादेवे परन्तु आसमानपरीने अबदुलरहमानसे पूछकर उसको क़िले अक़ीक़निगार से पकड़कर दोनोंको गुलिस्तान अरम में लेजाकर दण्डदेकर सुलेमानी कारागार में डालदिया है इस बात पर आसमानपरीने उसबेचारे को बड़ा दुःखदिया है यह कहकर हज़रत ख़िज़र जिधरसे आये थे उधरी को चलेगये अमीर इसबात के सुनने से ऐसे व्याकुल हुये कि उनको मालूम भी न हुवा कि किधर गये अमीर वहांसे आगेको चले सतह दिन तक बराबर चलेगये अठारहवेंदिन एक पहाड़ के नीचे पहुंचे तो उसकी चोटीपर एक मंडपबिल्लौरी पत्थर का

दिखाईपड़ा गिरतेपड़ते वहांतक गये तो उसके ऊपर जो कलश रक्खा था वह इसप्रकारसे चमकता था कि जो सूर्य आंखमिलावें तो चकचौंधी लगे तब तो अमीरने अपने दिलमें बिचारा कि इसके समीप से जाकर देखें तब पहाड़पर चढ़गये तो एकबाग़ देखा जिसके चारोंतरफ़ दीवार उठीथी परन्तु दरवाज़ा उसका बाहरसे बन्दथा औरकोई वहांदिखाई न पड़ता था अमीर निडरहोकर उसताले को तोड़कर भीतर चले गये तो देखकर कहनेलगे कि जिसदिन सेमैं क़ाफ़में आयाहूं अबतक ऐसा स्थान कहीं नहीं देखा और फिर जो कलश को दृष्टिकरके देखा तो एक मोतीका शबचिराग़ रक्खा है और उसपर एक लालजड़ा है अमीर ने हाथ लपकाकर कलश से गौहर शबचिराग़को अपने से जो मिलाया तो एकरत्ती का भी फरक न पड़ा अमीर अति प्रसन्न हुये कि यह भी सौगात क़ाफ़कीहै संसारमें काहेको ऐसे किसीबादशाह या शाहनशाह ने देखेहोंगे किसीने स्वप्नमें भी न देखाहोगा तत्पश्चात् मंडप के भीतर जो गये तो देखा कि एक तख्तजड़ाऊ बिछाहै और जिधरही नेत्र उठाकर देखा उधरी हर प्रकारकी वस्तु अपने स्थान पर अपूर्व प्रकार की दिखाईदी तब इच्छाकी कि उसपर थोड़ी समय ठहरकर आरामलेवें परन्तु फिर बिचारा कि ऐसानहो कि कोई आकरकहे किसकीआज्ञा से तू इसके भीतर आया है इसकारण यहां ठहरना अनुचित है और इस स्थानसे निकल चलना उचित है इस बिचारसे मंडप से निकलकर रविशपर रूमाल बिछाकर बैठगये और आसेही तकिया लगालीं तब थोड़ीही समय के पश्चात् एक आंधी ऐसी आई कि मालूम होता था कि सब वृक्षगिरना चाहतेहैं तत्पश्चात् एक सफेददेव जो लंबाईमेंपांच-सौगज का था क्रोधसे भरा हुआ अमीर के सामने आकर पुकारा कि ओ चोर कहां है जिसने गौहर शबचिराग़ कलश मेंसे निकाल के कुरूप करदियाहै और बड़ा शोर गुलकरनेलगा अमीरने ईश्वरकानाम लेकर सामने आकर ललकारा कि ओ खोटेदेव तू क्याबकताहै किसको ढूंढ़ता है मुझको भी जानताहै या नहीं मैंदेवों का मारने वाला और जादूका नाशकरनेवालाहूं और जो न जानताहो तो सामने आ बतलादूं मैं सहायक बादशाहक़ाफ़ नाशकरता अफरेतऔर बधकर्त्ता अहिरमन हूं उसने कहाकि आजमालूमहुआ कि क़ाफ़केबाग़को आपहीने बरबाद कियाहै देखउसका बदलामैं अबतुझसे लेताहूं और जो हजार प्राणभी तेरेहोंगे एकभी मेरेसामने सेलेकर न जाने पावेगा अमीर ने कहाकि बकता क्योंहैजो मरेहुये देवोंकासिचहै और उनकोपासजाने की इच्छा रखता है तो आतुझको भी उन्हींके समीप भेजदूं कि जाकर मिल मेरे सम्मुख आ और अपनी बहादुरी दिखा तब उसने अपनी तलवार लेकर अमीर के शीशपर मारी जिसमें कि कईटुकड़े पत्थर के लगेऔर

जानाकि इसी वारसे अमीर समाप्तहोजांयगे तब अमीरने अक्लबर सुले-मानीसे उसके दोभाग करदिये और कमरबन्द पकड़कर देवों कोपृथ्वी पर दैमारा और छातीपर सवारहोकर खंजर रुस्तमी उसके गले पर रखदी तब तो वह देव रोनेलगा और कहा कि आप मेरा प्राण छोड़ दीजिये तो सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीर ने कहा कि जो मुस-लमानहोजा तो मैं छोड़दूं और तुझकोन मारूं नहींतो अभी इसीखंजर से तेरा प्राणलेताहूं तब उसदेवने कहाकि इस पहाड़की तराईमें मेरे शत्रुहैं जो तू उनको मारडाले तो मैं मुसलमानहोता हूं अमीरने पूछा वे कौनहैं उनका तो हाल मुझसे बतला देवने कहा कि इस पहाड़ के नीचे हजरत सुलेमानकी शैरगाह है वहीं बैठकर चित्तको प्रसन्न करते थे अब उसीस्थानपर सातदेवसुलेमानी रहतेहैं और वे ऐसे बलवान हैं कि सबलोग उनसे डरतेहैं और उनकी सेवाकरतेहैं जो उनको मारिये तो मैं बड़ा गुणमानूंगा और आपकी आज्ञानुसार होकर रहूंगा अमीरने कहा कि तू मुझको वहां लेचल तब वह देव अमीरको पहाड़ पर लेगया और उनका स्थान दिखादिया अमीरने देखा कि कोसोंतक अपूर्व प्रकारका मैदानहै और मध्यमें एक नहर दोसौ गज चौड़ी और लंबाई का कुछ ठिकानहीं और उसका जल ऐसा स्वच्छहै कि जिसकी प्रशंसा करनी शक्ति से बाहर है और हौज के बीचमें एक बिल्लोरका चबूतरा पचास गज का ऊंचा और पचासही गज लंबा चौड़ा और उसमें पुखराज के कड़े उसके चारों ओर लगेथे और कड़ों मेंभी जवा-हिर जड़ेथे और उसके मध्य में एक तख्त सजा हुआ बिछा है और सुन्दरता में अद्वितीय है अमीर कूदकर उसके ऊपर गये और चारों तरफ देखकर सपेददेवसे पूछा कि तुम्हारे शत्रु कहांहै उसने कहाकि इसीमेंहैं आप पुकारें वे बोलेंगे और आपके समीप आवेंगे अमीर ने पुकारकर कहाकि ऐ नेस्तान तुम कहांहो और क्याखातेहो तुम्हारी मुलाक़ात के लिये आयाहूं आकर बाहर अपना रूप दिखलावो वहांसेशब्दआया कि हमलोगजाफ़रां अर्थात् केसरखातेहैं बैठोअभीहम आतेहैंतत्पश्चात्सातोंनिस्तान आकरअमीरकेसमुखबराबरसे हथियार लेकर खड़े हुये अमीरने जोदेखातो बड़ातो मनुष्य की तरह और दांत ऐसे नेज़ेसेतेज कि जो मक्खी बैठे तो दांतकीनोक घुसजावे और दांतों की नोकें तरवार की धारसे भी अधिक तीक्ष्ण थीं तब अमीर ने अकरब सुलेमानी को हाथमें लिया और उनके बीचमें जाकर सातों को मार डाला और तलवार ने उनके रुधिर से अपना पेटभरा तब अमीर ने सपेददेवसेपूछा कि अबतो तुम्हारे शत्रुओं का नाश होगया अब तुमको कुछ संदेहनहीं रहगया तबतो वह देवमारे खुशीके चूतड़ पीट २ कूदने लगा और अमीरसे कहा कि तूने तो मेरे शत्रुओंको मारा परंतु मैंतेरा

शत्रु अभी मौजूदहूं और यह हम लोगोंको उचित है कि भलाई के बदलेमें बुराईकरे उसके पापसे न डरें यहकहकर एकपत्थरका टुकड़ा उठाकर अमीर के ऊपर फेंका अमीर ने उस को रोंकलिया और तलवार खीचकर दौड़ा परंतु वह ऐसाभागा कि फिर उस का पता नमिला हरचन्द अमीरने बुलाया परंतुवह न ठहरा और कहने लगा कि ऐसा पागल नहींहूं कितेरे समीप आकर अपना प्राणदूं जब कभी तुझे गाफिल पाऊंगा उस समय तुझको मारडालूंगा यह कह कर आकाश को उड़ गया अमीर ने दिलमें बिचारा कि अब यहां रहना अनुचितहै क्योंकि सपेददेव अब मेराशत्रुहै नहीं मालूम कब आवै और मुझका मारडाले यहबिचारकर वहांसे चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरसातदिन रात्रिबराबर सपेददेवके डरसे चले गये कहीं एक सायत सुस्तानेको भी नहीं ठहरे आठवें दिन एक नगर दिखाई पड़ा उस का भी अपूर्व वृत्तान्त है कि वहांके मनुष्य केवल आधे धड़केथे जब दो मनुष्य खड़ेहोंतो एक संपूर्ण मनुष्य बने और उनका नाम नीमतनथा और वे सदैव इसी प्रकार से रहतेथे और वहांके बादशाह का फतूह नीमतन नामथा परंतु बड़ा प्रतापी और दयावानथा जिस समय उसने अमीर के आनेकी खबर सुनी उसी समय आकर अगवानी मिलकर अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेंहमानी की और सब तरह से प्रसन्न कियातब अमीरने उस बादशाहसे कहा कि आप मुझको दुनियां में पहुंचा सकतेहैं उसने कहाकि हमआधे मनुष्यहैं हम अपने सरहद से बाहर किसी तरहसे नहीं जासकते तबअमीर उससे अज्ञा लेकर आगेको चले लिखने वाला लिखताहै कि अमीरने उस मैदानको दशदिनमें बड़े श्रमसे तै किया ग्यारहवें दिन एक नदीके किनारे पर पहुंचे तो देखा किवह नदी बढ़ीहुई है और वहां न कोई नाव है न और कोई वस्तु कि जिससे उतरकर पार जावें और नावका उसमें उतना दुर्लभ था लाचार होकर उसीस्थानपर नींद आगई औरस्वप्नमें रोरोकर मलिका को समझाने लगे और कहनेलगे कि अब हम दुनियांमें न पहुंच सकेंगे सपेददेवतोअपनी घातमें लगाही था अमीर को सोतेही में पत्थर समेत उठाकर उड़गया दोकोस उंचाईपर गयाथाकि अमीरके नेत्र खुलगयेतो देखाकि सपेददेव उड़ाये लिये जाताहै अमीरने कहा हेदेव मैंने तेरेसाथ नेकीकी तूमेरेसाथ बदी करताहै ईश्वरसेभी नहीं डरता उसने कहा कि मैंने तुझसे पहिलेही कहदियाहै कि हमलोग नेकीके बदले में बदीकरते हैं यही हमलोगोंकास्वभावहै और सदैव यहीकरतेरहे अबयह बताओ कि तुमको पहाड़पर फेंकूंया नदीमें अमीरने बिचाराकि देवलोगउलटी मतकरते हैं जोकहूंगा उसके बिरुद्ध करेगा अमीरने कहा किजो तूबदलालेतनहै तो मुझे पहाड़पर फेंकदे इसी प्रकारसे अपना बदलाले सपद

जानाकि इसी वारसे अमीर समाप्त होजायंगे तब अमीरने अकबर सुलेमानीसे उसके दोभाग करदिये और कमरबन्द पकड़कर देवों कोपृथ्वी पर दैमारा और छातीपर सवारहोकर खंजर रुस्तमी उसके गले पर रखदी तब तो वह देव रोनेलगा और कहा कि आप मेरा प्राण छोड़ दीजिये तो सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीरने कहा कि जो मुसल्मानहोजा तो मैं छोड़दूं और तुझकोन मारूं नहींतो अभी इसीखंजर से तेरा प्राणलेताहूं तब उसदेवने कहाकि इस पहाड़की तराईमें मेरे शत्रुहैं जो तू उनको मारडाले तो मैं मुसल्मानहोता हूं अमीरने पूछा वे कौनहैं उनका तो हाल मुझसे बतला देवने कहा कि इस पहाड़ के नीचे हजरत सुलेमानकी सैरगाह है वहीं बैठकर चित्तको प्रसन्न करते थे अब उसीस्थानपर सातदेवसुलेमानी रहतेहैं और वे ऐसे बलवान हैं कि सबलोग उनसे डरतेहैं और उनकी सेवाकरतेहैं जो उनको मारिये तो मैं बड़ा गुणमानूंगा और आपकी आज्ञानुसार होकर रहूंगा अमीरने कहा कि तू मुझको वहां लेचल तब वह देव अमीरको पहाड़ पर लेगया और उनका स्थान दिखादिया अमीरने देखा कि कोसोंतक अपूर्व प्रकारका मैदानहै और मध्यमें एक नहर दोसौ गज चौड़ी और लंबाई का कुछ ठहनहीं और उसका जल ऐसा स्वच्छहै कि जिसकी प्रशंसा करनी शक्ति से बाहर है और फौज के बीचमें एक बिल्लोरका चबूतरा पचास गज का ऊंचा और पचासही गज लंबा चौड़ा और उसमें पुखराज के कड़े उसके चारों ओर लगेथे और कड़ों मेंभी जवाहिर जड़ेथे और उसके मध्य में एक तख्त सजा हुआ बिछा है और सुन्दरता में अद्वितीय है अमीर कूदकर उसके ऊपर गये और चारों तरफ देखकर सपेददेवसे पूछा कि तुम्हारे शत्रु कहांहै उसने कहाकि इसीमेंहैं आप पुकारें वे बोलेंगे और आपके समीप आवेंगे अमीर ने पुकारकर कहाकि ऐ नेस्तान तुम कहांहो और क्याखातेहो तुम्हारी मुलाक़ात के लिये आयाहूं आकर बाहर अपना रूप दिखलावो वहांसेशब्दआया कि हमलोगजाफरां अर्थात् केसरखातेहैं बैठोअभीहम आतेहैंतत्पश्चात्सातोंनिस्तान आकरअमीरकेसमुखबराबरसे हथियार लेकर खड़े हुये अमीरने जोदेखातो बड़ता मनुष्य की तरह और दांत ऐसे नेजे सेतेज कि जो मक्खी बैठे तो दांतकीनोक घुसजावे और दांतों की नोकें तरवार की धारसे भी अधिक तीक्ष्ण थीं तब अमीर ने अकरब सुलेमानी को हाथमें लिया और उनके बीचमें जाकर सातों को मार डाला और तलवार ने उनके रुधिर से अपना पेटभरा तब अमीर ने सपेददेवसेपूछा कि अबतो तुम्हारे शत्रुओं का नाश होगया अब तुमको कुछ संदेहनहीं रहगया तबतो वह देवमारे खुशीके चूतड़ पीट २ कूदने लगा और अमीरसे कहा कि तूने तो मेरे शत्रुओंको मारा परंतु मैंतेरा

शत्रु अभी मौजूदहूं और यह हम लोगोंको उचित है कि भलाई के बदलेमें बुराईकरे उसके पापसे न डरें यहकहकर एकपत्थरका टुकड़ा उठाकर अमीर के ऊपर फेंका अमीर ने उस को रोंकलिया और तलवार खीचकर दौड़ा परंतु वह ऐसाभागा कि फिर उस का पता नमिला इरचन्द अमीरने बुलाया परंतुवह न ठहरा और कहने लगा कि ऐसा पागल नहींहूं कितेरे समीप आकर अपना प्राणदूं जब कभी तुझे गाफिल पाऊंगा उस समय तुझको मारडालूंगा यह कह कर आकाश को उड़ गया अमीर ने दिलमें बिचारा कि अब यहां रहना अनुचितहै क्योंकि सपेददेव अब मेराशत्रुहै नहीं मालूम कब आवै और मुझका मारडाले यहबिचारकर वहांसे चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरसातदिन राचिवरावर सपेददेवके डरसे चले गये कहीं एक सायत सुस्तानेको भी नहीं ठहरे आठवें दिन एक नगर दिखाई पड़ा उस का भी अपूर्व वृत्तान्त है कि वहांके मनुष्य केवल आधे धड़केथे जब दो मनुष्य खड़ेहोंतो एक संपूर्ण मनुष्य बने और उनका नाम नीमतनथा और वे सदैव इसी प्रकार से रहतेथे और वहांके बादशाह का फतूह नीमतन नामथा परंतु बड़ा प्रतापी और दयावानथा जिस समय उसन अमीर के आनेकी खबर सुनी उसी समय आकर अगवानी मिलकर अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानी की और सब तरह से प्रसन्न कियातब अमीरने उस बादशाहसे कहा कि आप मुझको दुनियां में पहुंचा सक्तेहैं उसने कहाकि हमआधे मनुष्यहैं हम अपने सरहद् से बाहर किसी तरहसे नहीं जासक्ते तबअमीर उससे अज्ञा लेकर आगेको चले लिखने वाला लिखताहै कि अमीरने उस मैदानको दशदिनमें बड़े श्रमसे तै किया ग्यारहवें दिन एक नदीके किनारे पर पहुंचे तो देखा किवह नदी बढ़ीहुई है और वहां न कोई नाव है न और कोई वस्तु कि जिससे उतरकर पार जावें और नावका उसमें उतना दुर्लभ था लाचार होकर उसीस्थानपर नींद आगई औरस्वप्नमें रोरोकर मलिका को समझाने लगे और कहनेलगे कि अब हम दुनियांमें न पहुंच सकेंगे सपेददेवतोअपनी घातमें लगाही था अमीर को सोतेही में पत्थर समेत उठाकर उड़गया दोकोस उंचाईपर गयाथाकि अमीरके नेत्र खुलगयेतो देखाकि सपेददेव उड़ाये लिये जाताहै अमीरने कहा हेदेव मैंने तेरेसाथ नेकीकी तूमेरेसाथ बदी करताहै ईश्वरसेभी नहीं डरता उसने कहा कि मैंने तुझसे पहिलेही कहदियाहै कि हमलोग नेकीके बदले में बदीकरते हैं यही हमलोगोंकास्वभावहै और सदैव यहीकरतेरहे अबयह बताओ कि तुमको पहाड़पर फेंकूंया नदीमें अमीरने बिचाराकि देवलोगउलटी मतकरते हैं [illegible]हूंगा उसके विरुद्ध करेगा अमीरने कहा किजो तूबद-खालेता[illegible]हाड़पर फेंकदे इसी प्रकारसे अपना बदलालेे सपद

देवने कहाकि नहीं मैं तुझको नदीमें फेंकूंगा कि तू डूबकर मरजाय फिर मेरेसाथ दुष्टता न कर यहकह कर उसे पत्थर समेत नदीमें फेंक कर उड़गया तबहजरत उलियासखिजरने ईश्वरकी आज्ञा पाकरहाथों हाथ अमीरको उठाकर नदीके पार रखदिया अमीरने दोनों पैगम्बरों को सलाम किया और रोकर कहा किऐ हजरत आसमान परी ने मुझको बड़ादुःख दिया कि मुझको दुनियांमें नहींजाने देती कि इस दुःखसे छूटूं हजरतखिजर ने कहाकि व्याकुल न हूजिये आबदाने के आधीनहैं जब आबदाना यहांसे उठेगा तब तुम जाओगे और अपनेजन्म स्थानमें जाकर सुखपाओगे थोड़ेदिन औरदुःखपाओगेफिर तुम्हारेदिन अच्छेआवेंगे ईश्वरपर भरोसा करके बैठेरहो अब थोड़ासा वृत्तान्त शहपाल और आसमान परीका सुनाताहूं कि एकदिन शहपाल दरबार में तख्तपर बैठाथा कि आसमान परी सुख पोशाक पहिनेहुये दरबार मेंआई और अपने तख्तपर बैठकर अबदुल रहमान से पूंछनेलगी कि देखोतो आजकल अमीर कहांहैं जिन्दाहैं या मरगये और उस समय अठारह लाख सरदार दरबारमें बैठेथेसब इस सजको देखकर कांपनेलगे और मारे डरके हरदेवने अपना मुख ढांकलियाकि आज आसमानपरी सजीहै और क्रोधमें भरीहै देखेंकौन अपने प्राणसे जाताहै इतनेमे अब दुल रहमान विचारकर रोनेलगे और शहपाल से कहा कि आप के साथ हमजाने क्याबुराई की है जोआप उसको यह दुःखदेरहेहैं तब बादशाहने व्याकुल होकर पूंछाकि क्याहुआ कुशलतो है किस दुःखमें अमीर पड़े हैं मुझसे अति शीघही बताओ कहाकि जहां दयान हो वहां कुशल कौन पूंछताहै तुम बेपरवाहहो तुमको उनकी क्या खबरहै सपेद देवने अमीर को अखजरनदी में फेंकदिया है अब देखें जीतेनिकलतेहैं यानहींजो इसनदीमें डालदिया जाताहै उसके जीने का कुछ भरोसा नहीं रहता बादशाह यहहाल सुनकर व्याकुल होगये और आसमान परीभी बाल अपने शिरके नोचकर रोनेपीटने लगी तब उसी समय बादशाह छोटे बड़ों समेत तख्तोंपर सवारहोकर नदीकी तरफ चले एक सायतमें उसनदीपर पहुंचेतो उससमय अमीरखाजेअखजर और महतर उलियासके साथ निमाजपढ़चुकेथे कि बादशाह आसमान परी का साथलिये पहुंचे अमीरने दाहिनी तरफजो मुख कियातो शहपाल को खड़ापाया मुंहफेरकर बांई तरफकिया तोआसमानपरी खड़ीथी तब अमीर ने उसकी तरफसे भी मुख फेरलिया दोनोंकी तरफ नदेखा तब बादशाह और आसमानपरी हजरत अखजरके पैरोंपर गिरपड़े और कहने लगे किअब हमआपसे सौगन्धखातेहैं और यह इकरार करतेहैं किछः महीने के पश्चात् अमीरको दुनियांमें पहुचादेवेंगे औरजो न पहुचावेंतो आपके और ईश्वरके गुनहगार होवें और जिस प्रकार से

ईश्वर चाहै दंड देवे अबकीबार मेरा अपराध क्षमा कराइये मेरे ऊपर कृपा कीजिये तब हज़रत ख़िज़रने अमीरको समझाया कि जहां नौवर्ष व्यतीत हुये उसी प्रकारसे छः महीने इनके कहनेपर और रहो औरजो ईश्वरने भागमें लिखदियाहै उसको सहो आसमान परी और शहपाल सौगन्धें खाते हैं अबकी यहभी देखलो जोकोई इक़रार और सौगन्ध करता है उसे मानना उचितहै अमीरने शिर झुकाकर कहा कि आप पैगंबर हैं आपकी आज्ञा मुझे माननी हर प्रकारसे उचित है जो आप कहते हैं तो छः महीने और रहेंगे तब आसमानपरी और शहपालशाह दोनों अमीरके पैरोंपर गिरपड़े और अपने अपराधों पर लज्जित हुये और क्षमा कराने को सौगन्ध दी अमीर लाचार होकर हज़रतख़िज़र और अलियाससेआज्ञा लेकर शहपालशाह और आसमानपरीकेसाथ तख्तपर बैठकर गुलिस्तान अरम की तरफ चलेगये॥

वृत्तान्त खुसरो हिन्द लन्धौर पुत्र साढानका क़िले सरन्दीपमें पहुंचना और पराजय देना महलील संगसार, मलिक अहबूक और बहराम बादशाह खाक़ान चीनको और चीनमें जाकर राजगद्दीपर बैठना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि महलील संगसार और मलिक अहबूक बहुत दिनोंसे क़िलेसरनद्वीपकोघेरेपड़े थे और कईबार क़िलेसेयुद्धकिया एकदिन तबलजंगश बजवाकर क़िलेपर धावा करनेकी आज्ञादी तबसेना मुसलमानी ईश्वरका नाम लेले रोनेलगी कि इतने में एक बारगी जंगल की तरफसे गरद उठी और जब वह गरद बन्द होगई तो अलम और निशान आदिक दिखाईदिये और नवीन २ मनुष्य भी दिखाई पड़े तब क़िलेवालोंनेदूरबीन लगाकरदेखा तोमालूमहुआकि खुसरोहिन्दअपनी सेनासमेत आतेहैं और बहराम बादशाह खाक़ान चीन घोड़ेपरसवार अपने देशकी तरफ चलागया और लन्धौर अपनी सेना समेत इधर को आया तबतो क़िलेमें खुशीके डंके बजने लगे मलिक अहबूक और महलीक संगसार डंके का शब्द सुनकर बड़े आश्चर्य में हुये कि ऐसे दुःख में डंका खुशीका बजवारहे हैं और हमारी सेनाका और हमारा कुछ डरनहीं करते कि इतनेमें खुसरो लन्धौर संगसारोंकी सेनापरआगिरा और मारनेलगा और जैपूरने जो देखाकि खुसरोहिन्द युद्धकर रहा है क़िलेका दरवाज़ा खोलकरअपनीसेनाभीतर लेजाकर मिला और उनके साथहो युद्ध करने लगा मलिक अहबूकने अपना हाथी बढ़ाकर खुसरो के हाथीके बराबर लाकर खड़ा किया और एक तलवार खुसरोपर मारी उसने रोकली परन्तु हाथी के लगी और वह घायल होगया तब खुसरो कूदकर अलग खड़ाहुआ तब फिर अहबूकने एकबार चलाई खुसरोने रोककर उसके हाथीकी सूड़ पकड़कर ऐसा दबाया कि वह चिल्लाया और रुधिरकी नदी बहने लगी और मलिकअहबूक हाथी से

उतरकर खुसरो के सम्मुख खड़ा हुआ तब खुसरो ने उसका कमरबन्द पकडकर उठालिया और पृथ्वीपर दैमारा तो उसकी छठी का दूधतक भी गिरपडा और पीछे दोनों टांग पकड़कर चीरकर फेंक दिया उसी समय में ऐसा बादल और बिजली चमकी कि मालूम हुआ पृथ्वी और आकाश फटगया और इसके बन्द होनेके पश्चात् आकाश से एक छोटासा बच्चा आया और खुसरो को लेकर उड़गया यहदेखकर संगसारोंने एकबारगी धावाकर दिया तब सेना हिन्द ने भागकर अपना क़िला बन्दकर लिया और संगसार की सेनाने चारों तरफ से घेरकर डेरा डाल दिया अब इस वृत्तान्त को छोड़कर थोड़ासा हाल मलिक-लन्धौरका सुनाता हूं कि जो बच्चा लन्धौर को उठा लेगया था वह राशदनिन्नो बादशाह अबेज़ा परदे क़ाफ की बेटी थी उसने खुसरो का बल और बहादुरी देखी तो विचारा कि इसको ले जाकर सपेद देव को मरवाना चाहिये कि उसने रशद परीपर मोहित होकर विवाह करने की इच्छा की थी जिस समय उसने क़बूल न किया और कहा न माना और उसके बदले में दो चार गालियां भी दी उसको पकड कर एक खोहमें उसके स्थानके समीप था क़ैदकिया और राशदह परीके पकडनेकी की घात में हुआ कि उसको भी पकड़कर अपने वशमें करके अपना हौसिला मिटावे राशदहपरी यह हाल सुनकर गुलिस्तान अरमकी तरफ गई कि आसमानपरी से सलाह करके इस सपेद देवको मरवावें वहां जानेपर मालूम हुआ कि आसमानपरी किसी देश को गईहै तब वहांसे पलटकर दुनिया की तरफ सैर करने को चली आई घूमते २ सरन्दीपमें लन्धौर का बल देखकर उठाले गई औ उसको अति प्रसन्नतासे अपनी बागमें उतारा और आप सजकर खुसरोके सामने आई तो लन्धौर देखतेही उसपर मोहित होगया और उसका रूप देखकर व्याकुल होगया और पूछा कि मुझे इसबागमें कौन ले आया और यह कौन देशहै राशिद परीने कहायहदेश परियों का है और मैंहीं आपकोलेआईहूं कि एकदेवनेमेरे पिता को क़ैदकिया है और मेरेसाथविवाह करनेकीइच्छाकरताहै परंतु मैंनहींमानतीहूं और हमारे बादशाहने भी एक मनुष्य परदे दुनिया से बुलवाकर हमारे देवोंका नाश करवाकर अपना देश फिरसे अपने आधीन किया है और उसकी सहायतासेअपनेशत्रुओंसेअच्छाबदला लियाहै औरअपनी बेटीसे जोकि अतिस्वरूपवानहैउसके साथ विवाहकरदियाहैसोमैंअपनी सहायताके लिये आपको लेआईहूं जो आप उस देवको मारकर मेरा दुःख छुड़ादीजिये तो मैंभी आपके साथ विवाह करके सदैव आपकीआज्ञानुसार करूं रशदपरीने खुसरो को सपेद देवके स्थानपर भेजवा दिया जिससमय खुसरो वहां पहुंचा तो पहरेवालोंने अपने सरदार से

जिसका नाम सुक्रराय ब्राह्मनथा जाकर कहा कि एक मनुष्य आया है और नहीं मालूमकिकिसप्रकार से आया है सुकरायब्राह्मन खुसरोको देखकर दौड़ा कि इसको पकड़कर सपेद देव के पास लेजाऊं कि उसको देखाकर पारितोषिक लेऊं लन्धौरके पकड़ने को हाथबढ़ाया तोउसने हाथपकड़ कर ऐसा दमारा किउसकाहाथ टूटकर अलगहोगया तो इससे वह डरकरभागा और शेषदेव लन्धौर के ऊपर तलवार लेकरदौड़ेबहुतोंको लन्धौर नेतलवार से मार डाला और किसीकी तलवार उसपर न लगी तब सबदेव भागगये और लन्धौर राग्रदजिन्नी को लेकर कैसराफैन में चलागया उस स्थानपर ले आनेसेराग्रदजिन्नीखुसरोसेअतिप्रसन्नहुआ और कईदिनोंतक नाचरंग करवानेकी आज्ञादी खुसरोने उसी नाचरंग के समय खाजे अबदुल् रहीम से कहा कि अपने बादशाह से कहो कि मैं उसकी बेटीपर मोहितहूं उसका बिवाह मेरेसाथ कर देवेऔरमुझसे जिस प्रकार से चाहे वैसा इक्रार करालेवे खाजेने बादशाहसेखुसरोका संदेसा कहा तब बादशाह ने वजीरसे कहा कि तुममेरी तरफसे खुसरो से कहोकि मुझे अपनी बेटी का बिवाह करने सेबड़ी प्रसन्नताहैपरंतुपहिले सपेद देवको मारकर क्लिेके मरमर को उससे छीनकर मेरे आधीन करदेवें फिर मेरीबेटी के साथ बिवाह करके प्रसन्नता के साथ बास करें लन्धौर ने अंगीकारकिया और रात्रिको तो सोरहाप्रातःकाल उठकर सपेद देवके मारने के लियेगया अबसपेददेव काहालसुनियेकिदेवप्रलगसर ने जाकर सपेददेवसे कहा किआजएकमनुष्यने आकरतुम्हारेपहरेवालों को मारकर रासदजिन्नीको छुड़ाकर बायुके समानलेकर उड़गयाऔर तुमको भी ढूंढ़ताथा वहपापी सुनतेही आगहोगया और कहनेलगाकि यह दूसरामनुष्य कहांसे आया एक मनुष्य जो आयाथा उसकोतो मैंने अखुजर नदी में फेंक दिया था वह मरगया होगा घर मेंआकर देखा कि एकमनुष्य राग्रदपरी कोगोदमें लियेबोसेलेरहाहैऔरहरप्रकारसेप्यार कररहा है सपेददेव यहहाल देखकर तलवार लेकर लन्धौर पर दौड़ा लन्धौर ने रोक कर तलवार छीनली और एक घूसा ऐसा मारा किवह पृथ्वी पर लोट गया तब खुसरोने उसकी मुसकैं बांधकर अपने बश कर लिया और उसका हौसिला तोड़दिया और सब देवोंको मकान सेनिकाल दिया और मकान अपने क़ब्जेमें करलिया एकको भी वहां नरहने दिया तत्पश्चात सपेद देवको लाकर राग्रदजिन्नी के हवाले किया राग्रद जिन्नीने खुसरोको गलेसे मिलाया और बहुतसीअशरफीऔररुपयान्यबछावर किया और सपेददेवको एक खोहमें जो दोपहाड़ोंके मध्यमें था कैदकरके कई हजारदेवोंकाउसपर पहराकियाऔरआज्ञादी किखूब खबरदारी से रखना यह भागने नपावे और बिवाहका सामानकर के लन्धौर के साथअपनी बेटीका बिवाह करदिया और कईदिनों तकमेह

मानदारी और नाचरंग हुआकिया तत्पश्चात् लन्धौरने देवों को कैसर मरमर से निकाल दिया और उसको अपने क़ब्जे में करलियाऔरराशद परीके साथ दिनरात्रि सुखकरनेलगे और उसीपर मोहित होगये एक दिन गर्मीके दिनोंमें संगमरमरके चबूतरेपर वृक्षोंकी छायामेंसोरहाथा कि इतने में देवपलंगसर ने जो सदैव घातलगाये रहता था संयोगपाकर सपेददेव को खोहसे निकाल कर कहा कि इससमय खुसरो निःसन्देह सोरहाहै इस समय उसको पकड़ना उचित है सपेद देव लन्धौर को अतिशीघ्रतासे उठाकर अपने घर लेगया तौक और जंजीर पहिनाकर कारागार में डालदिया इस उपायसे उसको क़ैद करलिया तत्पश्चात् राशदपरी के पकड़नेके लियेगया कि उसकोभी पकड़कर अपना बदला लेवें परतु वह इसीके डरसे जादू अबली चिमाल में जो सेहच समीदेव ने बनायाथा जाकरछिपी सपेददेव ने यह हाल सुनकर इच्छा की कि जाकर उसकोभी पकड़लावें और अपने आधीनकरें परंतु देवने निषेधकियाकि आप उसमें नजाइये क्योंकि उसमें जाकर कोई जीता नहीं निकला तब सपेददेव सरदारोंको साथ लेकर जादू को घेरकर पड़ारहा और उसका हाल देखाकिया और सुन२ कर डरने लगा अब थोड़ासा हाल संगसारों का बयान करतेहैं उनका वृत्तान्त तुमको सुनाते हैं कि जिस समय वह बच्चा लन्धौर को उठालेगया और सेनाने क़िलाबन्दकरलिया तब बहुत दिनोंतक क़िलेवालोंको बड़ादुःख दिया जैपुरने लाचारहोकर महलीलसंगसार से एक मास का छुट्टी मांगी और एक पत्र बहराम बादशाह खाकान चीनको लिखाकि हम बड़े दुःख में हैं हमारीसहायता करनी आपको उचितहै नहींतो हम लोग बरबाद होतेहैं वहपत्र देखतेही बादशाहचीन सेना समेत सरन् द्वीपकी तरफ रवाना हुआऔरजिस समय बंगाले में पहुंचा तो वहां दो भाई जादखां और समन्दखां जो आतिशबाजी की विद्यामें पूर्णथे बहराम से मुलाकात हुई तबकहाकिजो मुझे साथ चलने की आज्ञाहोवे तो चलकर संग सारों को एक बारगी फूक देवेंऔर ऐसाजलावेंकी सबका नाश होजावे मनुष्य तो क्या कोई स्थान न रहजावेगा खाकान इसबात केसुनने से अतिप्रसन्नहुयेऔरउनको खिलअत देकरअपने सेनामेंकरलियाऔरबड़ीप्रतिष्ठाकेसाथसंमुख होते थे और इक़रार किया कि बिजयहोने के पश्चात् तुमलोगोंके साथअच्छे प्रकारसे संमुख होंगे संगसारोंका वृत्तान्तसुनियेकि जबबादापूराहोगया तो फिर मुसलमानी सेनाको दुःख देने लगे तब मुसलमानी सेना ईश्वरका स्मरण करके कहने लगी कि हे ईश्वर इनदुष्टोंके हाथों से हम लोगोंका प्राण बचा अब तूही हम लोगोंका रक्षक है इतने में शत्रुकी सेना न आई थी कि बहरामकी सेना आपहुंची ईश्वरने उनकी सहायताके लिये भेजदिया और युद्धहोने लगा तब जादखां और समन्दखां ने

ऐसी आतिशबाजी की दृष्टि की कि संगसार झड़ न सके और बहुत से जल भुनकर राख होगये और जो बचे वेऐसी शीघ्रताके साथ भगे जिस प्रकार से बे नकेलका ऊंट भागे और आतिशबाजी से ऐसा डरे कि जब कभी लूक टूटते देखते तो यही जानते कि आतिशबाजी को बरसा रहा है और डरके भागते इसीप्रकार से उनका हियाव छूट गया और सब भागगये और बहराम अति प्रसन्नता के साथ क़िले सरन्दीप औरक़िले वालोंकोबड़ा आनन्द प्राप्तहुआ परन्तु लन्धौरकेन होनेसे बड़ेसन्देहमें हुआ और चारों तरफ लन्धौरके ढूंढ़नेके लिये सिपाहियों को भेजाकि उसको ढूंढ़कर लेआवेंकि बहराम उसकेदेखनेसे प्रसन्नहोवे अबथोड़ासा वृत्तान्त राशद परी का सुनिये कि जब वह सपेद देव के डर से जादू अबिलि चाल में गईथी तब उसके गर्भथा नौमहीने के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्न हुआतो उसकानाम आरशिव परीज़ादरक्खा और उसकेउत्पन्न होनेका वृत्तान्त नाम समेत लिखकर जादूके बाहर फेंकदिया कि पिता मेरेपुत्र होनेका हाल जान लेवे संयोग से एक परीज़ाद ने उस पत्र को पायाऔर ले जाकर राशद जिन्नीको दियाराशदजिन्नीने उस परीज़ाद से कहा कि इसपत्र को सरन्दीप में लेजाकर जो आशिवो परीज़ादोंमें से बड़ाहो उसको देना अति शीघ्रही इसपत्रको वहां पहुंचा परीज़ाद ने सरन्दीप में जाकर बहराम के गोद में डाल दिया तब बहराम ने पत्रको खोल कर चाहा कि उस पत्र को कोई पढ़कर सुनावे परन्तु वह जिन्नी भाषामें था उसको कोई न पढ़सकालाचार होकर उसपत्र को अपने पास रखलिया कि कभी तो कोई इसका पढ़नेवाला मिलेगा एक दिन खुल जावेगा अब आरशिव परीज़ादे का हाल सुनिये कि जब वह आठवर्ष का हुआ तो अपनी मातासे पूछनेलगा कि तुम दुःखी क्यों रहती हो तुम अपना हाल मुझसे कहो तब उसने सबहाल कहा और कहा कि ऐपुत्र मैं अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये यहां आई हूं इस यत्नसे मैंने अपने को निकाला था परन्तु अब जीतेजी इससेनिकलना बहुत कठिन है इस दुःखसे मैं अत्यन्त व्याकुल हूं और तेरा बापभीसपेद देवके बन्धनमेंहै कदाचित्वह छूटा होतातो किसीयत्नसे इसजादूगृहको तोड़कर हमको छुड़ाता आशिव ने कहा कि इस जादूके छुड़ानेका यत्न भी किसीके पास होगा उसका पता लगाना चाहिये तब राशदाने एक पत्र यत्नके ढूंढ़ने के लिये तीरमें बांधकर जादूके बाहर अपने बाप्के नाम फेंकदिया तबराशद जिन्नीकेरक्षक जिन्नोंनेउसपत्रको लेकरअपनेस्वामी केपास पहुंचा दिया राशद जिन्नीने अपने बलके अनुसार यंत्रको तलाश किया जब कहीं पतान लगातो एक खत राशदा परी के नामलिखकर एक परीको दियाकि इसको उस जादूघर के भीतर जहांसे इसकोलायाथा फेंकआ तथाच उसने इसकी आज्ञाका पालन किया कि उसखतको

राशदा केपास पहुंचादिया तब उसने पचको पढ़कर आर्शिव से कहा कि तुम्हारे बापने लिखाहै कि मैंने यंचको बहुत ढुंढ़वाया परन्तु कहीं पतान लगा वह यंच इसी जादूघरके भीतरहै शायद ढूंढ़ने से मिलजावे आरशिव अपने और माताके दुःखको देखकर रोने लगा संयोगसेउसी समय में सोगया तो स्वप्नमें देखा कि एक वृद्ध मनुष्य कहताहै कि तू क्यों दुःखित होताहै तेरे मकान के सामने जो मण्डपहै उसीमें एकदेवबन्दहै उसीके गलेमें एक तख्ती या कूतकी मोटे हरफोंमें लिखीहै तू उस पच के अनुसार कर जो कोई भयानक रूपभी दिखाई देवे तो न डरना वह देव अपने हाथसे देदेवेगा और आप चला जायगा और तेरी इच्छापूर्ण होगी और ईश्वरकी कृपासे इस जादूको तू तोड़ेगा आरशिव ने जाग कर सब स्वप्नका हाल अपनीमातासे कहा और मण्डप का दरवाजाजा कर खोला तो देखाकि एक देवहै और उसके गलेमें याकूतकी एक तख्तो बँधीहुई है और जो जो बातें स्वप्नमें देखीथीं वही सब दिखाई पड़ीं आरशिव ने तख्तीको जो देखातो उसमें लिखाथा कि ऐ जादू के नाशक इस मंचको पढ़तो यह देव तुझको तख्ती देकर चला जावे और इससे तेरा मनोरथ सिद्धहोगा परन्तु जिस समय वह फिरे तो तख्ती उसके शिरपर मार तो वह मर जावेगा इससे तू छुट्टी पाजायगा परन्तु दो हाथी मस्त तेरे सामने लड़तेहुये आवेंगे और तुझको खूब बडरवावेंगे परन्तु तख्तीको दोनोंके बीचमें डालदेना वेदोनों आपसमें खूब अड़कर युद्ध करेंगे दांतों में से दोनों के अग्नि निकलेगी जलकर मरजावेंगे और तुझपर किसीप्रकारसे क़ाबू न पावेंगे आरशिव पच के आज्ञानुसार करके बाहर निकला तो देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है कि जिस के देखन से मनुष्य घबराजाता है और एक बृक्ष देवसार का था उसके पत्तोंपर ऐसी सुन्दरताथी कि जिसका बयान नहीं हो सक्ता और उसपर हटरगला बैठा है जो डील डौलमें हाथी के समान है इस रूपका पक्षी संसार में हमने दूसरा नहीं देखा और चोंच साखू के लट्ठे के बराबरहै और थैलीको खाजे अमरूकी जंबील समझना चाहिये आरशिव ने पचको देखकर मंच पढ़कर ऐसा तीर मारा कि तीर के लगतेही पृथ्वी पर गिर पड़ा तो उसके गिरतेही एक बड़ा शोर गुल एक बारगी होने लगा और ऐसी आंधी उठी कि राचि होगई दूसरा कौन देखसक्ता था और शब्द आता था कि इसका प्राण बच कर न जाने पावे जादू देवको इसने मारडाला है देखें तुममेंसे कौन इसको मारता है तत् पश्चात् आरशिव आगेजो बढ़ा तोएकतालाबपाया उसमें संगमरमर की सीढ़ियां थीं और उसके ऊपर बहुतसी स्त्रियां युवा अति स्वरूपवान् हाथों में शराब केगिलास सुराहियां लिये बराबर से खड़ी हैं आरशिव ने देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया कि इतने में हजारों

स्त्रियां गिलास लेले दौड़ीं और मोह मोह करबातें करने लगीं तबतो आरशिव औरही सन्देहमें हुआ कि किसकी शराबलेंऔर किसकीनलें इसी विचारमें था कि तख़्ती को देखने लगा तो उसमें लिखाथा कि ख़बरदार किसी स्त्री को न छूना यहसब जादू है केवल उसस्त्रीको जो घाटपर स्याह पोशाक पहिने बैठीहै वही जादूकी सरदारिनी है उसका सबहा जादूनाम है उसके हाथसे शराबका गिलास लेकर इसमंत्र कोपढ़ कर शराब का गिलास उसके शिरपर मारकर देखो तो कैसा अपूर्व तमाशा दिखाई पड़ताहै परन्तु इसकाबिचार रखना कि शराबकी छींट तेरे ऊपर न पड़ने पावे नहीं तो तेरा भी वही हाल होगा तब आरशिवने जाकर प्याला उसके हाथसे लेकरउसीमंत्र को पढ़कर उसकोमार कर आप पचास कदम कूदकर अलगहो रहा तो ज्योंहीं उसके मुखपर शराब पड़ी त्योंहीं उसके शरीर से लोवैं निकलने लगीं और इधर उधर ऐसी घूमी जितनी स्त्रियां उसतालाबपर थीं सबजलने लगीं और रो पीटकर दोघड़ीमें सबजलकर राख होगईं इसबातपर उसने ईश्वर का धन्यवाद किया और फिर तख़्तीको देखा तो उसमें लिखाथा किऐ नाश कर्ता जादू अबतेरे सामने से बहुतसे परीज़ादे गाते बजाते आवेंगे और उनके साथ एकदृढ़ मनुष्य होगा वहतेरे साथ सलाम करके मीठी मीठी बातें करैगा परन्तु खबरदार तू उससे कुछ न बोलना तख़्ती को आईने की तरह देखा करना इसे न भूलना तख़्ती को देखकर वे सबभाग जावेंगे और तेरा कार्य्य पूर्ण होजायगा आरशिव ने इसी प्रकार से जादू का नाशकिया तबतो उसकी माता अति प्रसन्न हुई और आरशिव को गलेसे लगाकर जादूसे बाहर निकली तो सबलोग देखकर अति प्रसन्न हुये और परीज़ादे जो राशदजिन्नी की तरफ से पहरा देतेथे राशद परीको देखकरबड़े आश्चर्य्य मेंहुये कि यहइसजादूसे क्योंकर निकली औरदौड़कर बादशाहकोउसकेआनेकीख़बरदीराशदजिन्नीने उसीसमय तख़्त मँगवाकर और सवार होकर जाकर दोनों मा बेटों को गलेसे लगाकर रुपया अशरफी लुटाता हुआ अपने तख़्त पर सवार कराके केसरबेज में लेआया और ईश्वर का धन्यवाद करके आरशिव ने अपने नानासे पूछा कि सपेद देवने मेरेपिता को किसस्थान में क़ैदकर रक्खाहै कृपा करके मुझे उसस्थान को दिखा दीजिये तब राशद जिन्नीने आरशिव को अपन साथ लेजाकर सपेददेव का स्थान दिखाकर सबवृत्तान्त सुनाया अबथोड़ासावृत्तान्त लम्धौरपुत्रसादानका सुनिये कि उसदिन अपनी भाग्यपर बहुत रोया तो उसी समयमें एक तरफ सलाम का शब्द सुनाई दिया तो उसने जवाब देकर देखा तो हज़रत ख़िज़र खड़ेहैं तबलम्धौरने रोरोकर कहा कि ऐहज़रत मैंकब तक इसदुःख में रहूंगा हज़रतने कहा कि मैंईश्वरकी आज्ञासे तुझे

छुड़ाने के लिये आयाहूं यहकहकर सबबन्द खोलकर अन्तर्ध्यान होगये तबमलिक लन्धौरने खोहसे निकलकर बाहर देखा तो राशद जिन्नी और राशदपरी तख्तपर सवार खड़ेहैं और लन्धौर की तरफ देखरहे हैं और राशद परीके गोदमें एकलड़का बैठाहै लन्धौर जाकर राशद जिन्नीके पैरोंपर गिरा और राशद परीसे मिलकर पूछाकि यहपुत्र किसका है यहवृत्तान्त तोमुझसे बतावो राशद परीने सबहाल कहकर अपने पुत्रको खुसरोके पैरोंपर गिराया खुसरोने उसको प्यार किया और राशद जिन्नीको साथलेकर कैसरबैन की तरफचला गया॥

जाना ख़्वाजे अमरू का क़िले क़याम से क़िले देवदो में साथ मलिका मेहरनिगार मुसल्मानी सेना के॥

लेखक लेाग लिखते हैं कि एकवर्ष के पीछेसरदारोंनेअमरूसेकहा कि अब भोजन हमलोगोंकेलियेनहींरहाहैसबलोगक्षुधासेव्याकुलहैं ख्वाजेने सरयादसे पूछाकिकिकोईऔरक़िलाइसकेसमीपहैकिवहांजाकर अपनी सेनाको आरामदेवेंउसने कहा कि यहांसेदोमन्जिलपर एकक़िलाजमशैदकाबनवाया हुआ देवदोनामहैजोकिऐसा पुष्टबनाहैकिउसपर कोई क़ाबूनहीं पासक्ता और चारपहाड़ उसके चारोंतरफ हैं जिसमें जमशैदने लोहेकी जंजीरों से कलाबी बराबर से बँधवा दिया और ऊपरसे लोहे के तख्तों से पटादिया है और चारहाथ की दूरीपर लोहेकी दीवार बनवाकर बालू उसमें भरादिया और क़िला इसक़दर चौड़ाहै कि उसमें खेतीभी ऐसी होतीहै कि वहांके रहनेवाले भोजनके लिये मोलनहीं लेते और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु दरवाज़ाउस क़िलेमें एकही है और वहभी ऐसाहै कि केवल एकमनुष्य जासक्ता है यहनहीं है कि दोमनुष्य बराबर साथ चलेजावें अमरू क़िलेका वृत्तान्त सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सरदारों को बुलाकरकहाकितुमइसकी खबरदारी करो मैंदूसरे क़िलेकी तलाशमें जाताहूं और तुमलोगों के सुखके लिये युक्ति करताहूं यहकहकर पोशाक शाही उतारकर लिबास मक्कारी पहिनकर क़िलेके बाहर निकला और कूदताफांदता क़िले देवदो में पहुंचा तो क़िलेको देखकर आश्चर्य्य करने लगा और अपने दिलमें कहने लगा कि मैंने ऐसाक़िला अबतक कहीं नहीं देखा यह कहकर दोतीन बार क़िलेके चारों तरफ घूमा परन्तु कोई रास्ता भीतर जानेका न दिखाई दिया तबलाचार होकर एक टिकुरेपर बैठ कर युक्ति सोचने लगा कि किसी युक्तिसे इसके भीतर जाना चाहिये इतनेमें एक सूराखसे देखा कि एक मनुष्य कुयेंमें से जलभर रहाहै तब अमरूने विचारा कि इससे और कोई युक्ति न मिलेगीउसमनुष्यसे छिप कर कुयेंमें कूदपड़े और जाकर उसीके डोलमें बैठगये जबवह मनुष्य डोल खींचने लगा तो उसे बहुत भारी मालूम हुआ तबउसने झांक

कर देखा तो मालूम हुआकि एक मनुष्य डोल में बैठा है उसने समझा कि यह जल मनुष्य है ईश्वरने मेरे ऊपर कृपा करके इसको भेजा है अब मुझको बहुतसा खजाना प्राप्त होगा यह विचारकर धीरे २ डोल को खींचने लगा कि ऐसा न होकि गिरपड़े जब डोल चरखीतक पहुंचा तो उसने पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया कि उसको डोलसे निकाल लेवें इतने में अमरू कूदकर ऊपर आया और उसका हाथ पकड़ कर जलमें फेंक दिया तब वह दो एक बार डूब उतरा कर मरगया और उसका भेष धारण करके पानी भरने लगा परन्तु जब मशक भर चुका तो विचारने लगा कि नहीं मालूम कहां २ वह पानी भरता था मशक रखकर उसी कुयें पर लेटगया और जब और भिस्ती जल भरनेको आयेतो उनसेपूछने लगाकि मियां फत्तूक्या हुआ अमरूने कहाकि भाईतप चढ़ाहुआहैकृपा करके मेरे घरमें कहदेनाकि मुझे उठा लेचलें एक भिस्तीने जाकर उसके घरमें कहाकि फत्तू क्लिकी दीवारपर तपमें पड़ा कांपरहा है दौड़कर उसे उठा ले आवो उसके लड़के बाले सुनतेही दौड़कर उठा ले आये और सब उसका हाल देखकर दुःखितहुये परन्तु अमरू आरामसे सोने लगा आधी रात्रिको फत्तूकी स्त्रीने जगाकर कहाकि कुछ खावोगे थोड़ा सा कुछ खालो अमरू ने कहा कि भूखनहीं है तब फिर उसने कहा कि गोलेथिया बनाईहै थोड़ासा लाखो अमरूने कहा अच्छा तेरी खुशी है तो ला थोड़ासा खिला दे उसने लाकर खिलाया और हाथ धुला-कर हुक्का भरदिया जब अमरू हुक्का पीनेलगा कि इतनेमें बाहर से एक मनुष्य ने पुकारा कि मियां फत्तू जागते हो या सोतेहो यहां तो आवो तुमसे कुछ कहना है अति शीघ्रही आवो तब तो अमरू बहुत डरा कि नहीं मालूम कौनहै ईश्वरही इससे बचावे फत्तूने जोरू से कहा कि पूछ तो इस समय रात्रि को क्या काम है और कौन है उस स्त्रीने पूछा कि साहब आप कौनहैं औरयेतोबहुत बीमार हैं बाहर नहीं निकलसकतेक्या आपका कुछ प्रयोजन है उनसे कहाकि मैं बादशाह के सिपाहियों का सरदार हूं मुझे कुछ बात कहनी है अमरू मक्कार का नाम सुनकर बड़े सन्देह में हुआ कि इसने तो आकर घेरलिया उस स्त्री से पूछा कि यह और कभी आयाथातूने कभी इसको पहिलेभीदेखा था उसनेकहा कभी नहीं तबतो अमरू के औरही होश उड़ गये कि पहिले मक्कारही से मुलाक़ात हुई यह तो अच्छी बात न हुई तब लाचार होकर उठ-कर बाहर चला और कहने लगा कि हे ईश्वर तूही रक्षक है यह कह कर बाहर निकला तब सरदार ने देखकर कहा कि शाहअय्यारां अलेकुमस्सलाम तब अमरू ने कहा कि साहब यह घर तो फत्तू भिश्ती का है शाह अय्यारका घर आगे होगातब उसने कहाकि ऐखा जेमुझ से क्यों छिपते हो मैं भी मुसलमान हूं और आपसे मिलने को आया हूं

दो महीने से आपके आनेका आसरा देख रहा था यह कह कर अमरू के पैरों पर गिरपड़ा अमरूने उठाकर छातीसे लगाया और हरप्रकार की प्यारी २ बातें करनेलगा हमादेव दूईने कहा कि चलिये बादशाह को पकड़ लीजिये जिसकार्य्यके लिये आपयहां आयेहैं उसकोसिद्ध कीजिये फिर देखाजावेगा और जो कुछ होगा उसमें मैंभीहूं तब वे दोनों उसीअँधियारी राचिमें पहरे वालोंसे छिपते २ बादशाह केस्थानमेंकमंद लगाकर पहुंचे वहां जाकर देखा तो बादशाह अतलश के शामियाने के नीचे दुशाला ताने हुये पलंग पर सो रहेथे और सब खिदमतगार आदिभी बेखबर सोरहेथे अमरू ने एकाएक जाकर बादशाह के मुखपर से दुशाला उठाया बादशाह ने अमरूका हाथ पकड़ लिया तब अमरू झिड़क कर अलग खड़ाहुआ और अमरूके हाथका भाला बादशाहके हाथमें रहगया तब अमरूने चाहा कि भाग कर अपनी राहले इतने में बादशाह ने कहा कि ऐ ख्वाजे मुझसे न भाग एकबात सुन ले तो जा कि इब्राहीम ने इसीसमय मुझे मुसलमान करके तेरे आने की खबर दी और आज्ञादी कि अमरूकी सहायता करो और नहींतो हम क्योंकर तुमको पहिचानते अमरू यह सुनकर खड़ा होगया बादशाह ने उठकर अमरू से मिलकर बैठाया और हर प्रकार की बातें करके कहा कि सबेरे तुम जाकर मलिका मेहरनिगार को सेना समेत लाकर इसीक्लिले में आराम से रहो और यहक्लिला आपही का है जो जमशैद भी उठ कर आवें तो इस में नहीं आसक्ते हैं अमरू उसी समय बादशाह से आज्ञा लेके अपने क्लिलेमें आया और सब सरदारों से क्लिले के पानेकी खुश खबरी सुनाकर दिन भर तो आराममें बैठे रहे दोपहर राचिबीते मलिका को महाफ़े में सवार कराकर सेना समेत क्लिले देव दो की तरफ रवाना किया और आपकागजकी मूरतें बनाकर किलेमें पहरेपर रखकर पीछेसे गया दोदिन के पश्चात् क्लिले देवदो में जाकर आराम से निस्संदेह हुये बादशाहने पहिलेही से सबको मुसलमान करके द्वारपालकों को आज्ञा दीथी कि जिस समय अमरू आवे क्लिले के दरवाजे को खोलकर आने देना जब अमरू आया तो दरवाजा खुला पाया और निःसन्देह सेना समेत भीतर चला आया और अपना प्रबन्ध क्लिले में करके आराम से बैठा और सब अपने साथियों को आज्ञादी कि जाके अपने आसन पर आराम करो अब हरमर की सेनाका वृत्तान्त सुनिये कि तीसरे दिन एक सिपाही ने जाकर हरमर से खबरदी कि क्लिला खाली मालूम होताहै वह उसी समय सवार होकर क्लिलेमें गया तो देखा कि वही गधा और कुत्ते बँधेहैं और दीवारों पर काग़जकी मूरतें खड़ीहैं बख्तियारक से कहाकि और कोईक्लिला इसके समीप है उसने कहाकि क्लिले देवदो है उसीमें अमरू गयाहै और वहक्लिला बड़ा पुष्टहै

पलटकर शाहज़ादोंने बादशाह नौशेरवांके नामविनयपत्रिका लिखीकि अमरू इसक़िलेसे निकलकर किले देवदोमें गया है और यहकार्यबेआप के आये न पूर्ण होगा और लोकोई कहेकि हम इसको विजय करलेवेंगे तो दुर्लभ है व आपके यहांतक आये हमलोगों कोबड़ादुःखहै औरइससे प्राणबचने काकुछ भरोसा नहींहैयह लिखकर बादशाहके पास करगस-सानीके हाथभेजा और आपसेना समेत चल करके किले देवदोकी तरफ चला तीनदिन के पीछे पहुंचकर क़िलेके पास डेरा गाड़कर पड़ा बाद-शाह नौशेरवांने जब उसपत्रकोपढ़ातो आगेकी तरह जलकर कहनेलगा किदेखो बड़ादुष्टहै कि हमारे लड़कों को ऐसा दुःख देरहा हैऔरहाथ नहीं आता यहकहकर बख़्तियारककी तरफ सम्मुख होकरकहनेलगा कि अब अवश्य उसको दण्डदेना चाहिये उसने कहाकि आप खुदचलकर उसपापीकोलोटयाइसप्रकारसेशाहज़ादोंकोदुःखदेरहाहैचलकेमारकर मलिकाकोपकड़लेआइये औरआपकाचलना अनुचितनहींहैतबबादशाह ने मुजरुचमेहर से पूछा कि आपक्या सलाह देते हैं उसने कहा कि जो पहिले कहाथा वही अबभी गहूंगा किजो आप वहांगये और उसनेअ-पनी दुष्टतासे कोई ऐसी उपायकीकि आपको उठालेगया तोअतिलज्जा हम लोगोंको होगी आगे आपकी बुद्धि सबसे बड़ीहै जोआप आज्ञादी-जिये वही हमलोगकरेंगे नौशेरवां को जो अमरूकी दुष्टता यादआईतो कांपनेलगेऔर बख्तियारक से कहाकितू बड़ा दुष्टहै सदैव मुझकोधोखा दिया करताहैऔरआपभीलज्जितहोताहैसंयोगसेउसीसमयदूतोंनेआ-कर बादशाह से कहाकि बेचीनकामरां लोपीनका भाई दोलाखसेना समेत आपसे मुलाक़ात करनेको आताहै नौशेरवां यह सुनकरअतिप्रसन्न हुआऔर कई सरदारोंको उसकी अगवानीके लियेभेजाकि जाकरउसे मेरेपास ले आवोजब उसने आकर तख्तको चूमकर बादशाह कोसलाम किया तब बादशाहनेअतिप्रतिष्ठाके साथ सम्मुख होकर खिलअतदेकर नाचरंग करवानेकी आज्ञादी औरउसकी मेहमानदारीयथाउचितकी तत्पश्चात् उसनेबादशाहसेपूछाकि हजूरआजकल लोपीनलहांदारलहां-गीरकहांहै उनकावृत्तान्ततोमुझसेबतलाइये नौशेरवांने आहकरकेकहा किक्या बताऊंवेतीनोंभाईहरमरकेसाथमेंअमरूपरजाकरहमलाकेपकड़ने की घातमें हैंऔर नौवर्षसेवेलोग उसीकेपीछेपड़ेहैं परन्तु किसीकेहाथ नहींआताआजइसकिलेमेंतो कलदूसरेमेंइसीप्रकारसे घूमाकरताहैऔर सबकोदुःखदियाकरताहैउसनेकहाकि जो आज्ञाहोतो जिसक़िलेमेंवह होआपकीकृपासे ईंटसेईंट बजाकरअमरूकोमलिका समेतखड़ीसवारी पकड़ कर लेआऊं औरऐसा दुःखदेऊं कि सब अपनी मक्कारीभूलजावे बादशाहइसकेसुननेसेअतिहीप्रसन्नहुआऔरकहनेलगाकितुमऐसेहीहो बादशाहने खिलअतदेकरजानेकी आज्ञादीबीजनकामरांनेदोलाखसेना

समेत क़िले देवदोकीतरफकूचकिया औरथोड़ेदिनोंके पश्चात् क़िलेदेवदो के समीप पहुंचे तबहरमरने आनेकी ख़बर सुनकर जहांदार और जहांगीरको उसकी अगवानीके लियेभेजा कि उनका चित्त प्रसन्न होवे और जिससमय हरमरकी सेनामेंआकर पहुंचेतो हरमरनेबड़ीतैय्यारीकेसाथ मेहमानदारीकीऔरजोकुछउसनेकहा उसेकियाबीजननेजोपीनसेसभामें बैठेहुयेकहा किक्यों जोपीन तुमतो दावा करतेहो कि हम बादशाह के दामादहैं परंतुएक सिपाहीकोन पकड़सके जोपीननेकहा किभाईसाहब आप सत्य कहतेहैं परंतु आप उससिपाहीका हालनहींजानतेहैं अबआप भीआयेहैं जानजावेंगेकि वह केवलअकेला लाखसिपाहियोंसे युद्धकरता हैऔर किसीसेकुछ बननहीं पड़ती वहऐसासिपाहीहै बीजनने कहा कि यहभी कहींहोसक्ता है कि वहअकेला लाखसवारों का सामना करेऔर विजय पावेअबमेरे नामसे तबलजंग बजवायाजावे और सबसेना युद्ध करने कोतैय्यार होवे हरमरनेतबलजंगबजवानेकी आज्ञादीऔरसबकोयुद्धपर आरूढ़ किया जबतबलजंगका शब्दक़िलेमें सुनाईपड़ा उसीसमय अमरूने भीआज्ञादीकितबलसिकंदरीपरचोबदीजावेइसीप्रकारसेराचिभरदोनों सेनाओंमें डंके बजाकिये सामान युद्धका हुवाकिया प्रातःकाल होतेही हरमरजाफ़रांमर्द तख़्तपरसवारहुयेसबसरदार अपनी२ सेनालेकरशाहजादोंके साथचले और युद्धकेखेतमें आकर परेटजमाया और बीजनकामरांभी अपनी दोलाखसेना लेकरएक तरफ से युद्धकरनेको आरूढ़ हुआ औरसेनामेंशोरगुलहोनेलगाऔर हरमरकीसेना अमरूकाहालजानती थी किसीनेआगेक़दमनबढ़ाया किऐसानहो किअमरू अग्निकी दृष्टिकरे परंतुबीजनकामरांकी सेना आगेकोबढ़ी और क़िलेकेसमीप जाकरपहुंच गईतबतो क़िलेपरसे अग्निकी दृष्टिहोनेलगी और हरएकव्याकुलहोकर भागेकिसीकापैरनजमा बीजनने सेनाका ढंगदेख कर जोपीनसे कहा कि इस सेनासे विजय न प्राप्तहोगी येतोअग्निकेडरसे भागतेहैं चलोहमतुम क़िलेकादरवाज़ा तोड़कर क़िलेमें चलकरसबको मारें जोपीनने कहाकि चलिये इसमेंमुझेइनकारनहीं तबतोदोनोंभाईअपने२ घोड़ोंको कुदाकर खन्धककेपारकिया और क़िलेके दरवाज़ेकेसमीप पहुंचगये और क़िलेमें आतिशबाज़ीकेधुयेंसेऐसाअंधियाराहोरहा किकिसीकोअपनाहाथभीन दिखाईदेताथा जबक़िलेवालोंने हाथरोंकलिया तो थोड़ीसमयकेपश्चात् उजियाला हुआतो देखा किजोपीन औरबीजनदोनोंभाई क़िलेके पास खंधकमें घोड़ोंपरसवार खड़ेहैं और दरवाज़ातोड़रहेहैंअमरूउनकेमारने कीयुक्तिमेंथा कि नकाबदार चालीस सहस्र सवार समेत आ पहुंचा और उनदोनोंकेबराबरआकरकहा कि तुमकौनहो जो मुसल्मानी सेनासेयुद्धकरनेको आयेहो क्योंअपने हाथसेअपनाप्राणदेतेहोवेवालेकितू कौनहैजोहमारे और क़िलेवालेके बीचमें दख़लदेताहै और हमारे शत्रु

की सहायता करताहै नक्काबदारनेकहा किमैं तुम्हारे प्राणका गाहकहूं और निश्चयकरकेजानोकिमैंतुमसबकोयमपुरीमेंपहुंचाऊंगा नक्काबदार की ऐसीबातेंसुनकर दोनोंभाईतलवारलेकर नक्काबदारको मारनेकेलिये दौड़ेउसनेतलवारतोछीनली औरदोनोंकाकमरबन्दपकड़करअपनेशिर के बराबर उठालियाऔर पूछनेलगाकि अब पृथ्वीपर फेंकूंया नदीमेंइस-मरनेयह हाल देखकरसेनासमेत दौड़करधावा करदियाऔरनकाबदार के चालीस सहस्र सवारोंने भी तलवारें खींचलीं औरखूंब मरदुमीसे युद्ध किया और अमरू भी क़िले से अपनीसेना लेकर मारनेलगा इस धावे में दोनों भाइयों के कमरबन्द टूटगये और घोड़ोंके नीचेगिरकर भागगये और ऐसायुद्ध हुआ किउसी दिनअस्सी सहस्रसेना इरमरकी मारीगई और बहुतसे बलवान सरदारभीकामआये और नक्काबदार और अमरू की सेनाका एकसिपाहीभी नमारागया औरबहुतसा माल और रुपया मुसलमानीसेनाके हाथ आया तब अमरू दौड़कर नक्काबदार के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आजतो आपनेबहकामकियाहै जोरुस्तमसे भी नहोसकाहोगा औऐसी बहादुरीका तोनामभीकिसीनेन सुनाहोगा यह कहकरकहा कृपाकरके आपअपना नामबतला दीजिये औरसेहरा उठाकर अपना स्वरूप दिखलाइये नक्काबदारने कहा किऐ अमरूआज तक कोईकार्य्यऐसामैंने नहींकियाहैकिअपनानाम बतलाऊं औरस्वरूप दिखाऊं जब अमीर कुशलसे आवेंगे तो नामभी मेरासुनलेना औरस्वरूप भी देखलेना अब अपने क़िलेमें सबलोग आरामसे बास कीजिये और मुझे इरसमय अपना सहायक औरसेवक समझिये यह कहकर अमरू कोतो क़िलेमें भेजदिया औरआप शिखरसेआयाथा उसीतरफ चलागया परंतु किसीने न देखाकि किधर कहांगया और अबइरम जाफरांमर्जने एक विनय पत्रमें सबवृत्तांतलिखकर बादशाहके समीपरवानाकियाऔर उसमें यह लिखदियाकि अतिशीघ्रखेमा औ खज़ाना भेजिये नहींतोदिन को धूपऔर रात्रिको ओसमेंरहनेसेबीमार होजावेंगेऔरखज़ानेकेआने में जादेरीहोगीतोउपास करते २ मरजावेंगे औरआपहीविचारकीजिये कि जब अन्न न मिलेगा तोक्या खायँगे तबइरमर और जाफरां मरजाका विनयपत्र बादशाह के पास पहुंचा और बादशाह ने यह सब वृत्तांत सुनातो बख्तकसे कहाकि तूजो सदैव कहा करता है किआपजो चलें तो मैं अमरूको उसके सहायकों समेतपकड़लूं सोतेरा पुत्र बख्तियारक जो नौवर्षसे शाहज़ादोंके साथहै उसदुष्टनेक्याबनालिया औरतू क्याबनावेगा तूभी उसके हाथसे धोखा उठावेगा तेरेकहनेसेमैंने वृथा अपनेकोबरबाद और लज्जित कियाऔरशत्रुओंकाहौसिलाबढ़ायाखबरदार आजसेमेरे दरबारमें आकर अपनास्वरूपमुझे न दिखलाना नहींतोदण्डपावेगाबख़-तक रोता पीटताअपने स्थानपरआयाऔरएकपत्र अपनेपुत्रकेनामलिखा

किऐ दुष्ट तूनौवर्षसे शाहज़ादोंके साथहैऔर आजतक तेरी कोईयुक्तिन चलीकि अमरूको मारता और इसीकार्य्यके लिये तूभेजागया है तूनेसब बड़ोंका नाम धराया और मुझको दोनोंलोकसे खोयाऔरतेरेहीकारण बादशाहकी सभासेमैंनिकाला गया मैंनेइसकामसे बड़ादुःखउठायाउत्तम यहीहै कितू इस कार्य्य को पूराकर नहींतो मैं आज से तुझे अपना लड़का न समझूंगा और तुझे अपनेसम्मुख कदापि न आनेदूंगा पर तुझेराकुछ भरोसा नहींहै कितू इसकार्य्यको पूरा करेगा मालूम होताहै कितू मेरे वीर्य्यसे नहीं उत्पन्न हुआ मैं जानताहूं कितू किसी शाहकारके वीर्य्यसे उत्पन्न हुआहै बख़्तियारक पचको पढ़कर बड़े सन्देहको प्राप्तहुआकि ऐसी कौनयुक्ति करैं कि पिताके निकट प्रतिष्ठितहों दिनभरतो बड़ेशोच विचारमें रहा संध्याको एक उत्तम यत्न शोच सिपाहाना वस्त्र पहिन करक्लिलेकेचारोंओरकईबारफिरापरंतुकार्य्यनसिद्ध होनेसेबड़ापश्चात्ताप किया संयोगसेअन्तरदेव दूईकाबेटाअर्बाब एकबुर्जपरबैठामदिरापीरहा हैऔरसबचौकीदार निश्चिन्तसोरहेहैंउसनेबख्तियारककोआहटपाकर ललकाराकौनहैकिसवास्तेयहांआयाहैउसनेउत्तरदियाकिमैं बख्तियारक हूंआपसेकुछप्रार्थनाकरनेआयाहूं उसनेनशेकीतरंगमेंनिस्संदेहकमन्दके द्वारा किलेपरचढ़ालियाउसनेएकनालीखतदेकर कहाकि यह खतनौशे-रवांनेतुमकोदियाहै अर्बाबनेलिफ़ाफेपरनौशेरवाकीमुहरदेखकरनिश्चय किया कि यहउसीका लिखाहैउसमेंलिखाथाकिअगरतूइसक्लिलेकोथोड़े दिनके लियेमेरेआदमियोंकेसुपुर्दकरदेऔरअमरूको पकड़करमेरेनिकट भेजदेतो अग्नि देवताकीसौगन्धखाकर कहताहूं कियहक्लिलाभीतुझेदे दूंगाऔर २ भीतेरेसाथमित्रता करूंगा औरतेरीप्रार्थना स्वीकार करके अपनेसंग रक्खूंगा अर्बाबखतकेहालसेप्रसन्नहुआ औरबादशाहकोआशी-र्वाद देनेलगा औरबख्तियारकसेकहाकिअपनीभीसाक्षीइसपरकरदेनो कोईदेखेइसपरविश्वासकरेबख्तियारकनेकहामेरीसाक्षीक्याचलियेशाह ज़ादोंकीगवाहीकरवादूंनिदानउसकोबहकाकरशाहज़ादोंकेपासलेआ याउनके सम्मुखकहाकियहपत्रजोबादशाहने भेजाहैइसपर आपलोगभी अपनी २ मुहरैंकरदेंशाहज़ादोंनेजानाकि बख्तियारक कोईहोशियारी कररहाहै कहाकि इसपर मोहरकरके एक और दूसराखतअपनीओर से लिखदेतेहैं औरइसकेसिवाय जोकुछ तुमकहोगे मंजूरकरादेंगे अन्तको शाहज़ादोंने उसपर अपनी मुहरकरदी औरबहुतसी फरेबकीदूधरउधर कीबातेंकीतबखानह अर्बाबने कहाकिआपकेडेरेकेभीतरएकसुरंगकादर-वाज़ाहै औरदूसरादरवाज़ा मेरेमकानमेंहैइसको आपखुदवाइये उसको जाके मैंखुदवाताहूं कितनी राचि औरसबदिनमें गरमी भी उसकीनि-कालजावे औरवायुभी स्वच्छ आजावे आपकलराचिको सुरंगकी राह से आकर किलेमें वासकीजिये औरमेरा मानदारी भी खाइये औरदोपहर

रात्रिव्यतीतहोनेपर मुसलमानोंकोमारकरअमरूऔर मलिकाको पकड़ लीजिये परन्तु पहलवान अच्छे २ साथले आइयेगा कि वेबहादुरीकेसाथ मारेंतबशाहज्ञादोंने खाजेअरबाबकोखिलअतदेकरजानेकीआज्ञादीऔर अपनी सेनाकोइनकाोंकेलियेआज्ञादी वहजिसप्रकारक्लिलेसे आयाथा उसी प्रकारसेचलागया और बेलदारोंको बुलाकरसुरंग का दरवाजा खोलनेकीआज्ञादीतबबेलदारोंनेप्रातःकालहाते २ सुरंगकादरवाजा खोलदियाऔर आप शाहज्ञादोंकीमेहमानदारीकेलियेभोजनआदितैयार करानेमें संयुक्त हुआ औरअपनेसरदारकोभीआज्ञादीसंयोगसेदिलावर नाम उसकी बेटीनेपूछा कि आजयह कैसी धूमधाम होरहीहै मुझकोभी बतलाइये तबअर्बाबने उसको अपनीबेटी जानकर सबवृत्तान्त राजिका उससे कहा और यहभी कहदिया खबरदार किसीसे यहबात न कहना परन्तु दिलावरने इसविचारसेकिहथाइतनेमुसलमानोंकापाप इसदुष्टके शिरपरहोगा एकपत्र अमरूके नामलिखकर अपनीदाईकोदियाकि तुम इसपत्र को अमरूके पासलेजावो वहतुझेबहुतकुछदेगा परन्तुइसपत्रको कोई देखने न पावे उसदाईने जाकर अमरूकोपत्रदेकर कुछजबानीभी कहा तबअमरूने दाईको बहुत कुछ इनाम दिया औरदिलावरकीबड़ी प्रशंसा करनेलगाउसकेजानेकेपश्चात्आपतख्तपरबैठाऔरसबसरदारों को दरबारमें आनेकी आज्ञादीजबसब आकर बैठेतो पहिलेआदीसरदारसे कहा कि आजएक स्थानपर नेवताहैतुमसबकोसाथलेजाकरबहुत अच्छी तरहसे भोजन करवादूंगा परन्तु श्रमभी करना पड़ेगा औरजोन करसकेगा तो तेरेपेटसे एकएक दाना चीरकर निकाललूंगा और बड़ा दण्डदूंगा आदीने कहा कि हमतो आपके सेवक हैंजोआज्ञा दीजियेगा वही करेंगे देखिये जबसे अमीरगयेहैंकेवल डुबीसमन आटाचावल दोनों जूनमें मिलताहै और मैं एकहीजूनमेंचखजाताहूं तिसपरभीक्षुधासंतृप्ति नहीं होती परन्तु किसीसेआपके डरसेकुछकहतानहीं जबतकअमीरन आवेंगे तबतक इसीप्रकारसे गुजर करूंगा औरजोआपमुझेपेटभरभोजन करा दीजिये तो देखिये कैसी जवांमरदी करताहूं कि आपभी देखकर प्रसन्न होजावें अमरू चारघड़ी दिनरहेसे सरदारोंसमेतखाजे अर्बाबके स्थान की तरफचला जबखाजेनेसुना कि अमरूकी सवारी आतीहैतबतो अति व्याकुल होगया और कुछबोल न सका इतनेमें अमरू की सवारी आपहुंची तबखाजे अर्बाबनेघरसे निकलकर अमरूकोसलामकियाऔर अनेक प्रकार की बातें करने लगा परन्तु दिलसे कांपरहाथाकिअबमेरा प्राण न बचेगा अमरूने पूछा कि मैंनेसुना है कि आजआपमुसलमानोंकी मेहमानदारी करेंगेहजरत इब्राहीमकीपूजाहै तोनिश्चयहैकिहमलोगों कोभी आज अच्छा अच्छा भोजनमिलेगाखाजेअर्बाबइसकेसुननेसे और भी डरा परन्तु क्याकरै सबसामान होरहीरहाथाइनकारकर नहीं सक्ता

था लाचार होकर कहा कि आपतो बलीहैंसबजानतेहीहैंसत्यहै मैंप्रातः कालसे भोजनकीतैयारीकरारहाथादूसीकारणआपकेपासनहीं आसका अबआपकोकहलाभेजतापरन्तुबड़त अच्छाहुआकिबेबुलायेआपहीआये यहकहकर उसीस्थान में जिसमें शहजादोंकेलिये तखतबिछवाकर सजवायाथाअमरूकोखततपरबैठालाऔरसबसरदारोंकेलियेकुरसी आदिक बैठनेको दियाथा उचित सबकोबैठायातबअमरूनेभोजनमँगवाकरपहिले आदीकोअच्छीतरहसेखिलवायातत्पश्चात्और सबसरदारोंको खिलवायातबसायंकालकेसमयजबअंधियाराहोगयासरदारोंकोआज्ञादीकि खाजे अरबाब की मुशकैंबांधलोउनलोगोंने आज्ञानुसार बांधलिया तब खाजे अरबाबने अमरूसेकहा कि कौनसा अपराध मैंनेऐसा कियाहैकि जो आपनेमेरी मुशकें बँधवालीं अमरूनेकहाकिनेकीकाबदलाबदी परन्तु अपनी समझमें मैंने अच्छा कियाहै तबउसको तो एककोठरी में बन्द करने की आज्ञादी और आपसरदारोंसमेतसुरंगकादरवाजाढूंढ़नेलगा और आदीसे कहा कि वहसमय आपजूंचा ऐसा न होकि सुस्तीकरो और कार्य्य न सिद्धहो आदीने कहा कि आप बतला दीजिये तोमैं अपने श्रमका तमाशा आपको दिखलाऊं अमरूने ढूंढ़कर सुरंग के दरवाजे परबैठा दिया और आज्ञादी कि जोकोई इसमेंसे शिरबाहर निकाले उसका गला पकड़कर दबाकर बाहर निकालेना और शेष सरदार यहींखड़े रहेंगे वेभीउसी प्रकारसे गलादबाकर कारागार तक पहुंचावेंगे खबरदार कोई छूटकर जाने न पावे नहींतो जैसा खायाहै वैसेही बकरी की तरहपेट फाड़कर निकाला जावेगा आदी नानबाइयों की तरह पलथी मारकर सुरंगके दरवाजेपर बैठगया कि जो कोई शिरनिकाले उसे पकड़कर खींचलूं जैसी अमरूने आज्ञादी है वैसेही करूं अब थोड़ासा वृत्तान्त शहजादों का सुनिये कि दोघड़ी दिनरहे दससहस्र सवार और चारसौ पहलवानलेकर सुरंगमें धसे जिसप्रकारसे कोई किसीके यहां बुलानेसे मेहमानदारी खाने जाताहै निःसन्देह होकरचले और अमरूकी चालाकीसबभूलगये जबसमीपआये आदीने अमरूसे कहा कि मनुष्यों का शब्द सुनाईदेताहैऔर कटकभी विदितहोता है अमरूने कहा खबरदार कोई न छूटनेपावे इतनेमें एक मनुष्यने सुरंगके बाहर शिरनिकाला आदीने उसका गला पकड़कर ऊपर खींचलिया और दूसरे सरदारको सौंपदियाउसने उसीप्रकारसे कारागार तक पहुंचाया दूसरेने शिरनिकाला उसकी भी वहीगति हुई इसी प्रकारसे चारसौ पहलवान एकसायत में आदीने पकड़कर अपने सरदारों को सौंपा और वेउसी प्रकारसे कारागारमें लेगये और बेड़ियां डलवाकर सिपाहियों को पहरादेने की आज्ञादी और साको सुरंगमें आनेका फलदिया जोपीछेथा उसनेविचारा किवह

कारण कुआहोगा नहींतो चारसौ पहलवान अन्दरगयेहैं कोई तो आता इस विचारसे थोड़ासा शिर सुरंगसे निकालकर देखनेलगा आदी ने उसका शिर पकड़ा परंतु उसने गरदन न निकालीथी इस कारण न पकड़सका और शिरभी हाथसे छूटगया तब जोपीनने अपने दिल में कहाकि यह शियाफत नहींहै अदावतहै तब उसने सुरंगकी दीवार से पैरअड़ाकर एकएक का नामलेकर पुकारने लगाकि भाई दौड़ो मेरा शिर पकड़कर कोई ऊपरको खींचताहै बीचननेदौड़कर जोपोनके पैरों को पकड़कर इसजोरसे खींचा कि उसका शिर आदीके हाथसे छूटगया परन्तु कानजोपीनके आदीके हाथमें रहगये औरवह छूटकर भागगया तब उसने सब मनुष्योंसे इसभेदको कहा औरसबको पलटनेकी आज्ञा दीआदीने वेकाम अमरूको दिया तब अमरूने विचारा कि अब सब जानगयेहैं निश्चयहै कि पलटजावेंगे तबतो सुरंगमें आतिशबाजी लगवा कर फुंकवाने लगा दस सहस्र मनुष्यजो उसके भीतर धसेथे सब जलकर रहगये केवल दोनों शहजादे और थोड़े से सरदार बच कर भाग गये प्रातःकाल अमरूने चारसौ पहलवानों को खाजे अर्बाब समेत फांसी पर चढ़वाकर खिंचवालिया किसीको जीता न छोड़ा और सुरंगका दरवाजा शीशेसे बन्दकरवाकर सबरास्ते बन्दकरवा दिये और हरमज और जाफरां मर्जने यहसब वृतान्त एक विनय पत्रिकामें लिखकरसाबद नमदपोश के हाथ बादशाह के पास भेजकर अपनी किताब में सब हाल लिखलिया॥

अबथोड़ा सा वृत्तान्त अमीर का सुनिये कि आसमानपरी ने खाजे खिज्र और मेहतर उलियास के संमुख सौगन्धें खाईथीं कि छःमहीने के पीछे मैं आपको परदेदुनिया को भेजदूंगी अबकिसी प्रकारसे उनकी बातवृथा न करूंगी जबछःमास व्यतीतहुये अमीरने आसमानपरी से कहा कि अबतो छःमहीने व्यतीत होगये हमको अब परदे दुनिया को भेजदो तबउसने कहा कि एकवर्ष और वासकीजिये तोमैं आपको प-हुंचादूंगी इसके सुननेसे अमीरने क्रोधित होकर कहा किऐ आसमान परी तुझे ईश्वरका भी कुछडर है यानहीं कितूनेदोपैगम्बरोंके संमुख वादाकियाथा कि आपको छःमासके पीछे दुनियाको भेजदूंगी और आजफिर कहतीहै कि एकवर्ष और वास कीजिये तिसपर भी तू कहती है कि मैंबड़ी सच्चीहूं आसमानपरीने कहा कि जोमैं झूठ बोलूंगी तो आपको क्या तबअमीर क्रोधित होकर बादशाह के पासगये और कहा कि ऐशाहनशाह परदेक़ाफ मैंने कौनसी बुराई की है जो आपमुझे यहदुःख देरहे हैं कि मैं अठारह दिनका वादा करके आयाथा इतनाकाल व्यतीत होगया कि आजतक अपने बालबच्चों का कुछ हाल न पाया ईश्वरजाने कि वे किसदुःखमें पड़ेहोंगे कि नौशेरवां

बादशाह मेरा शत्रुहै वहभी अपनी घात पाकर दुःखदेता होगा आप और आसमान परीने दोबलियोंके सम्मुख सौगन्धें खाईथींकिछः मासके पीछे अवश्यआप को परदे दुनियामें भेजदेंगे वह बादाभी आपकापूरा होगया अरंतु अब आसमान परी कहतीहै कि एकवर्ष और वास करो तोमैं तुमको भेजदूंगीसो वही आपसेपूछताहूं किमेरा प्राणछोड़ियेगा यानहीं बादशाहने अमीरको समझाया और उसीसमय चार देवों को बुलाकर अमीरको तख्तपरसवार कराकेउनको आज्ञादी कितुमलोग अमीरको अच्छी तरहसे दुनियामें पहुंचाआवो और किसी प्रकार से दुःख न होनेपावे यह हाल आसमानपरी कोपहुंचावहअपनीबेटीकोभी लेकर अमीरके पास आई और कहनेलगी कि आपको अपनी बेटी की दया हैकि इसने कुछ आपको दुःखनहींदिया अमीरने कहाकि जब तुम आना तबइसकोभासाथलेतीआनाऔर तुम्हाराआनाजाना कुछकठिन नहींहै जबजीचाहे तब चलीआना और जबमुझको बुलाओगी तो मैं भी आऊंगा इससमय मुझे जानेदे यहकहकर देवोंसेतख्त उठवाकरचला आसमान परीरोतीहुई अपने स्थानपरगई औरहजरतसुलेमानपरीजादे को बुलाकरकहा कितू अमीरके पास बिदाकरनेके हीलेसे जाकर देवोंसेकह आ और मेरीआज्ञासुना किवे अमीरको दृश्तअजायबमें छोड़कर चले आवें नहींतो बालबच्चोंसे मारेजांयगे वहअति शीघ्रताके साथ उड़कर अमीरके पास जापहुंचा अमीरने उसको देखकर जाना कि आसमान परीने कुछकहने के लिये देवोंसे इसेभेजा है देवोंसे कहा कि तख्तपलटा करफिर शहपालके पासचलो देवोंने कुछ सन्देह किया तबतो अमीरने तलवार मियानसे निकाल लिया किजा न पलटावोगे तो इसी तलवार से तुम सबको मारडालूंगा तबलाचार होकर अमीरको बादशाह के पास लेआये बादशाह ने अमीर को देखकर कहा कि कुशलतो है क्यों आपपलट आये अमीरने कहा किऐ बादशाह मुझे दुनियामें पहुंचाना है याफिर किसी दुःखमें डालनेको भेजते हैं बादशाह सौगन्धें खाने लगा किमैं अति प्रसन्नहूं कि आपदुनिया में जाकर अपने बालबच्चों के देखनेसे प्रसन्न होवें अमीर ने फिरकहा कि जो आपको मुझे भेजने की इच्छाहै तो देवोंसे हजरत सुलेमान की सौगन्ध लेकर मुझे दुनिया में पहुंचाने के लिये भेजिये बादशाहने जोदेवोंसे सौगन्ध खानेको कहा तो देवोंने इन्कार किया कि हमलोगोंको आसमानपरीकीआज्ञानहीं है कि अमीरकोदुनियामें पहुंचावें और उसकी आज्ञाके विरुद्ध हमलोग नहीं करसक्ते हैं बादशाहने आसमानपरी से पूछा किक्योंतूसदैव अमीर को दुःखदेती है उसने कहा आपको क्यामेरा पुरुषहै मैंनहीं जानेदेती अमीरने तख्तपरसे उतरकर एकशब्द ऐसे जोरसे कियाकिपरदे काफ हिलगया और कहाऐआसमानपरीतूनेहलियोंकेसामने सौगन्धेंखाईथीं

और अब फिर मुझे धोखा देतीहै यह अच्छी बात नहींहै ईश्वर तुझे अवश्यदंड देगा यह कहकर रोतेहुये सिढ़ियोंकी तरह जंगल की तरफ चले शहपालशाहने आसमानपरीसे कहा कि तूनेमुझे परदेशाफ में झूठा करदिया अब मेरीबातको कोई न मानेगा आसमानपरी ने कहा कि आपका लज्जित औरझूठा होना मुझे क़बूलहै परंतु अमीर को जुदाईनहीं यह कहकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि अमीर नगर से बाहरगयाहै जो कोईउसे बासदेगा या उसको देशमें पहुंचानेकी इच्छा करेगातो उसकोमैं दंडदूंगी अब अमीरका हालसुनिये कि गुलिस्तान अरमसे निकलकर सातदिन जंगलमें बराबर चलेगये आठवेंदिन क्षुधाके कारण गिरकर बेहोश होगये दूसरेदिन होशमें होकर उस कलीचे मेंसे जो हजरतखिज़र ने दियाथा निकालकर भोजन करके मैदान की तरफ देखनेलगे तो थोड़ीसमयके पश्चात् देखा कि एकदेव अपूर्व रूपका चलाआताहै जिसके डरसे पृथ्वीकांपरहीहैअमीरकेसमीपआकर सलामकिया अमीर ने पूछा कि ऐदेव यहांसे दुनिया कितनी दूरहै मुझेबता उसनेकहा ऐ अमीर जो मनुष्य पैदल जानेकी इच्छाकरे तो पांचसौ वर्षमें पहुंचेगा और देव छःमहीनेमें और देवपैकर चालीस दिनमें और मुझऐसादेव सातदिनमें लेजासक्ताहै अमीरने कहा जो तू मुझको मेरेघर पहुंचावेतो बड़ागुण मानूंगा उसनेकहा कि जोमुझे फिर इसदेशमें न आनाहोतो अपनेखामीकी आज्ञासे विरुद्धकरूं क्यों कि आसमानपरीने ढिंढोरा पिटवायाहै कि जो कोई अमीरको दुनियामें पहुंचावेगाउसके बालबच्चोंतक न छोड़ूंगी अमीरने उसको अपने समीप बुलाकर सब वृत्तांतसुनाया देवने कहा कि मैंऐसा पागल नहींहूं कि जो आपके पासआऊं और आप मेरेऊपर सवारहो बैठें और कहैं कि मुझेदुनियाकी तरफ लेचल तो उससमयमैं क्याउत्तर आपको दूंगापरंतु लाचारहूं यह कह सलामकरके उड़गया अमीर निराशहोकर मनमें कहनेलगे कि हमजा तुझको कोईदुनियामें न लेजायगा अबतू पैदलचल ईश्वरतुझको पहुंचादेवेगा यह कहकर जंगलकी राहलेकर कभीहँसते कभी रोते चले पन्द्रहवेंदिन एक क़िला दिखाईपड़ा जिसपर जिन्न शिर खोले ईश्वरका ध्यान कररहेहैं और एकदेव क़िलेको चारोंतरफसे घेरेहै अमीरको क़िलेवालोंपर दयाआई उसदेवको ललकारकरकहा कि ओ पापी क़िलेवालोंकोक्याघेरेहै खबरदारहोमैं तेरेप्राणकागाहकपहुंचगया उसने जो देखातो जाना कि सहायकऔरनाशकर्त्ता जादूआपहुंचातल-वार लेकरअमीरकेऊपरदौड़ाअमीरनेआतेही अक़बरसुलेमानीसे उसके दोभागकरदिये और सेनामें घुसकरमारनेलगा आधेसे अधिक सेनाको मारा शेष भागगई बादशाह क़िलेसे निकलकर अमीरसेमिले औरहाथ पकड़कर क़िलेमें लाकरतख्तपर बैठाकर अतिप्रतिष्ठा केसाथ सम्मुखहुये

और कहा कि मैंवही जिन्नी सब्जक़बा शहपालका भाईहूं कि जिस को आपने शतरंज सुलेमानी जादूसे छोड़ायाथा और मेरा प्राण बचाया यह कहकर क़िले सब्जनिगार में लेजाकर सब छोटे बड़ों से मुलाक़ात करवाई और जो न जानतेथे उनसे अमीरका सबवृत्तांत बयानकिया और नाचरंग करवाकर अमीरकी मेहमानदारीकी अमीर ने कहा कि मुझे आपसे भी डरहै क्योंकि आप भी तो शहपालशाह के भाईहैं जैसे वेहैं वैसेही आपभी होंगे उसनेकहाकि आप क्याकहतेहैं मैं आपका सेवकहूं प्राणमेरा जो आपकेकाम आवेतोदेदूं अमीरने कहाकि ईश्वरआपकोबनायेरक्खे मिचोंसे ऐसेकार्य्यसिद्धहोतेहैं यहकहकरकहा किप्राणकेबदलेमें केवलयही कीजिये कि मुझे मेरेदेशको पहुंचा दीजिये तो आपका जबतक जीऊंगा तबतक गुणमानूंगा बादशाहने शोचकर ख्वाजेरूफको बुलाकरकहा कि तुमअमीरसे कहो कि हमारी बेटी प्राण प्यारी जोतुमपर मोहितहै उसकेसाथ बिवाहकरो तोमैं आजके नवेंदिन आपको परदेदुनियाको भेजदूं इसका मेंवादाकरताहूं अमीरने पहिले तो न माना परंतु पीछे को बादशाहसे पहुंचानेका इक़रारकरवाकर कबूलकिया तबबादशाहने बड़ीधूमधामसे तैयारीकरके दोनोंकाबिवाह किया और उसको अपना दामाद बनाया राचिको जब रैहानपरी और अमीर एकपलंगपर लेटे तो अमीर बीचमें तलवार रखकर दूसरी ओरको मुखकरके सोरहेऔरकिसीतरहका काम न किया रैहानपरी ने जाना कि अमीर के देशमें पहिले दिन ऐसाही होता होगा संयोग से उसदिनअमीरने स्वप्नमें मेहरनिगारको देखा चौंककर जागउठाऔर जंगल की राहली प्रातःकालको दादानपरी रैहानपरी की माता जो आई उसनेदेखा कि बेटीअकेली पलंगपर सोरहीहै जगाकर उससे पूछा कि अमीर कहांगये उसने कहा मैं नहीं जानतीहूं राचि को तलवार बीचमेंरखकर सोयेथे फिर मैं नहींजानती कि वे कहांगये मैंभी सोरही थी उहने क्रोधित होकर बादशाहसे जाकरसबहाल कहा तो वह भी क्रोधितहुआ और कहनेलागाकिउसेयही करना था तो बिवाह क्यों किया कि मुझको क़ाफभरमें लज्जित किया कि अमीर सब्जक़बा की बेटीकेसाथ बिवाह करके एकदिन के पश्चात् छोड़कर चलेगये कुछ ऐब होगा नहींकोई एकदिनकी ब्याहीदुलहिन छोड़करजाताहै उसीसमय देवोंको बुलाकर आज्ञादीकि तुमलोग जाकरअमीरको ढूंढ़करलेआओ उनके लेआनेमें देर न करना अबथोड़ा वृत्तान्त आसमानपरीका सुनिये कि एक दिन सुर्ख पोशाक पहिनकर बादशाह के दरबार में गई और अब्दुलरहमानसे पूछनेलगी कि देखोतो आजकल अमीरकहांहैं उसने रमलसेविचारकर और कुछ तो न कहा केवल यहीकहा कि जंगल २ घूमकर दुःख उठारहेहैं तुम्हारी कृपासे परंतु वह भी समीप बैठीथी

और रमल जानतीथी देखकर कहनेलगी किहे ईश्वर जिन्नी सब्ज़क़बा नेमेरा कुछडर न माना और अपनी बेटी का बिवाह मेरे पति के साथ करके अपनी बेटीको मेरीसौत बनाया अच्छा इसका बदलामैं उसको जाकर देतीहूं जोमैंने सबको मारकर उसके देशकानाश न करदियातो आसमान परी मेरानाम न रखना यह कहकर सेनाको साथलेकर क़िले सब्ज़निगार की तरफ तख्त पर सवारहोकर चली ॥

जाना आसमानपरी का सेनासमेत क़िले सब्ज़निगार कोऔर नगरलूटकर पराजय करके पकड़लाना बादशाह सब्ज़क़बा उसकी बेटी रैहानपरी समेत और क़ैदकरना कारागृह सुलेमानीमें ॥

लिखने वाला लिखताहै कि जिस समय आसमान परी क़िले सब्ज़निगारके समीप पहुंची तब सब्ज़क़बा कुछ सौगात लेकर उसकी अगवानी के लिये गया और बड़ी प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख होकर अपने क़िले में लेआया तबआसमान परीने क़िलेमें पहुंचकर अपने सरदारों को आज्ञा दीकि सब्ज़क़बा और रैहान परी कोमुश्कैं बांधलो लोगों ने उसकी आज्ञा मानकर बांधलिया आसमानपरी नगरको लूटती हुई गुलिस्तान अरममें उनदोनों को लेकर पहुंची और कई दिनोंतक हज़ार २ कोड़े दोनोंके लगवाकर कारागार सुलेमानीमें क़ैदकिया यहहाल बादशाह ग्रहपालको पहुंचाकि आसमानपरीने इस प्रकारसे सब्ज़क़बाकी ज़रमत ली है तब तो बादशाह रोता हुआ दौड़ा और जाकर उस को छुड़ालाया औरउस समय आसमानपरीअपनेस्थान पर चलीगईथीबादशाहने उसको अनेक प्रकारसे समझाया कि इसने आपको नहीं दण्ड दिया परंतु मुझको दिया हरप्रकार सेग्रहपालने समझाया परंतु उसके दिलमें क्रोध न मिटा क़िलेके बाहर आकर पागल की तरह पुकार २ के कहने लगा कि हे ईश्वर जिस प्रकारसे आसमानपरीने मुझको वृथा दुःखदियाहै ऐसाही मेरे बदलेमें तूउसकोदे यह कहताहुआ रोते हुये अपने क़िलेमें आया ॥

अब आसमानपरी दुष्टाका हाल सुनिये कि क़ाफके सात देशों में एक रदशतिरनामें जो हज़रत सुलेमान के चैकरों में था और वह बड़ा बहादुर और लड़का था और हज़रत सुलेमान के जोसात नदियोंका देश प्रसिद्ध है उसीमें जिस समयकि हज़रत सुलेमाननेप्राण त्याग किया उस समयसे जाकर वहां रहने लगा औरवहां दो किले बनवाये एक का नामतो स्याह बूम रक्खा दूसरेका सपेदबूम और कुछ जादूका भी कारखाना बनवाया सोअब उसको यह ख़बर पहुंची कि ग्रहपालशाह ने दुनियासे एक मनुष्य बुलवाकर अफरेत देवको उसकी माता समेत और बहुतसे देवोंको मरवाकरजादूके कारखानेतोड़वाकर सबदेश बसालिया है और गुलिस्तानक़ाफको भी बरबाद करवा दिया इसके सुनतेहीआग

होगया और हजरत सुलेमान का जालजो किसी युक्तिसे उसको मिल गयाथा लेकर क्लिलेस्याहबूमसे उड़कर गुलिस्तान अरममें आकरसबको बांधलिया और अपने साथियों से उनको दुःखदेने के लिये आज्ञा दी परंतु केवल अब्दुल रहमान अपने स्थान पर चलागया था इस कारणसे बचगया और जितने थे कोई उस बलासे न बचा यह हाल अब्दुलरहमान को पहुंचा तबतो वह बड़े सन्देहमें हुआ और रमल से विचारा तो विदित हुआ कि अमीर क्लिले के उत्तर दिशापर हैं उसी तरफ तख्तपर सवार होकर अमीरको ढूंढ़नेके लियेगया अमीरका हाल सुनियेकि वे जब क्लिले सब्जनिगार से निकले तोकई दिन जंगल घूमते २ एक पहाड़की खोहमेंजो अब्दुल रहमानके स्थानके समीपथा आकरबैठे थे कि इतनेमें अब्दुल रहमानको तख्तपर सवार आतेहुये देखा और अब्दुल रहमानने भीदेखा तख्तसे उतरकर अमीरके पैरोंपर गिर पड़ा अमीरने उठाकरछातीसे लगायाऔर पूछने लगाकि अब बादशाहने तुम को क्यों जुदाकियाहै तब उसने सब वृत्तान्त शहपालशाह आसमानपरी उकरेशा और सब सरदारोंके क्लिले सपेदबूममें कैदहोने का सुनायातब अमीरने कहाकि यह झूंठ सौगन्ध और मेरे दुःखदेनेका बदला शहपाल शाह औरआसमानपरीको ईश्वरनेदियाअब्दुलरहमानने हाथजोड़कर कहाकि आप सत्य कहतेहैं यहउनको ईश्वरने झूठ सौगन्ध खाने का बदलादियाहैपरंतु आसमानपरी आपकीखीहैइसमेंआपहीकीबदनामी है औरजो अपराध कियाहै वह आसमान परीने कियाहै परंतुउस की नेवछावर में सबको छोड़ादिये कि ये बेचारे इसदुःखसे प्राण बचाकर आवें प्रथमतो अमीरने इनकारकिया परंतु पीछेको अब्दुल रहमानकी बिनयसे कहाकि अच्छा वह क्लिला कहांहै और वहांतक मैं क्योंकरजा सक्ताहूं कि उस क्लिलेपर जाकर छोड़ाऊं अब्दुल रहमानने कहाकि वह सात नदियोंकेपारहैऔरवहांशाह सीमुर्गकेसिवायऔरकोई पारनहीं जासक्ता वह ऐसा स्थानहै अमीरने पूंछाकि वहकहांहै अब्दुलरहमान ने कहाकि शाह सीमुर्गकेस्थानतकमैं आपको पहुंचादूंगा औरउसका पताभीआपकोअच्छीरहसे बतलादूंगा इस प्रकारसेअमीरकोसमझाकर प्रसन्न कियाऔर अपने तख्तपर सवार कराकर क्लिलेमें लेगया और अनेक प्रकारसे मेहमानदारी करके प्रसन्न किया अमीरने उसक्लिलेको देखकर कहा कि एकबार औरहम इस क्लिलेमें आयेथेऔर उनदिनोंमें यह क्लिला लाऊसशाहलानिसाके पिताकेपासथा अब्दुलरहमाननेकहा कि सत्यहै वह मेरा नाथथा औरबड़ा बुद्धिमानथा तत्पश्चात् अब्दुल-रहमाननेअमीरकोतख्तपरसवारकराकरचारदेवोंको आज्ञादी कि अति शीघ्रता केसाथ अमीरकोसाह सीमुरग़के स्थानपरपहुंचावो तबउनचारों [illegible]तउठायाऔर केवलजलहीमें सातदिन रात्रि बराबर उड़ाकर

आठवेंदिनचारघड़ीदिनचढ़े नदीकेपारलेजाकर तख्तकोउतारा औरजो चलते २ थकगयेथे आराम करनेलगे अमीरने नदीको जोदेखातो उसकी लहरें आकाशतक उंचीउठतीहैं औरमनुष्यतोक्यापक्षीभीदेखकर व्याकुल होजातेहैं औरनदीकेतीरेऐसेबड़े २ वृक्षथेकिजिनकीडालियांआकाशतक पहुंचीथीं औरउनकीछायापांचयोजनतकपहुंचीथी औरवृक्षोंकेऊपरएक क़िलाबनाथा औरवहक़िलाअच्छी तरहसेसजाथाअमीरने उनजिन्नों से पूछाकि इसक़िलेको किसने बनवायाहै जो गुलिस्तानअमरसेभी उत्तम है उन जिन्नोंने कहाकियहक़िला नहींहै यहउसीसी मुर्गका स्थानहैअमीर इसबातके सुननेसे बड़े संदेहमें हुये तख्त के लानेवाले जिन तो अपने स्थान को चलेगयेऔरअमीर एक वृक्षकेनीचे बैठकर जंगलकातमाशादेखने लगे कियोड़ीसमयकेपश्चातएकवृक्षपरशोरगुलहोनेलगाअमीरउसवृक्षकेनीचे जाकरदेखनेलगे तोविदितहुआकिसीमुर्गकेबच्चेशोरगुल कररहेहैं सीमुर्ग के बच्चोंकोजो देखातो उनकाधड़ हाथीके तुल्यहैपरंतुसब दूकटु होकर चिल्लारहे थे तब अमीर बड़े संदेहमें हुआ कि किस वस्तुको यह देखकर डरतेहैं देखते २ जो देखातो एकअजगरउसीवृक्षपर चढ़ाजाताथाअमीर ने उसको तीरसे मारकर बलछीकी नोकसे छेद २ उसकेमांसकोबच्चोंको खिलाया और उनका प्राणउस अजगरसे बचाया उन बच्चोंका जो पेट भरगया तोजाकरसोगयेक्षुधासे दृग्नहोगये दोघड़ीकेपश्चात् सीमुर्गाजोड़े समेत अपने बच्चोंको भोजन लियेहुये आये तो उस समयबच्चोंकोनदेखा तोविचारा किआज बच्चोंकोकोईखागया औरसदैवजबवे आनेकीआहट पातेथे तो भोंभसे बाहर मुखनिकालकर देखने लगतेथे अमीरको वृक्षके नीचे सोतेहुये देखकर दोनों आपसमें कहने लगे कि विदित होताहैकि यही मनुष्य हमारेबच्चोंको खाजाताहै औरहमको दुःखदेताहैऔरआज भी यहीखागया नहींतो बोलते इसको मारडालना उचितहै यहएकबच्चे नेसुना और व्याकुल होकर बाहर आकर अपनीभाषामें सबवृत्तांतसीमुर्गसे कहाऔर उस अजगरके मारेजाने की उसे खबरदी तबतो सीमुर्ग अमीरसे अति प्रसन्नहुआ और अमीरके ऊपरजो धूपआगईथीएकपरसे धूपकी आड़की और दूरसे वायुकरनेलगा अमीरको जोआराम मिला तो नेत्र खुलगये तो अमीरने उनके मारनेकेलिये तीर औरकमानलेकर सम्हला तब उसनेकहाकि ऐअमीरअभीतोआपने मेरेबच्चोंकाप्राणबचा कर मेरे ऊपरअपना यह सलूककिया और अबआपमुझेमारनेकी इच्छा करतेहैं अमीरने पूछाकितू कौनहै और तूनेमेरानाम क्योंकर जानाउसने कहाकि मैंने सुलेमानसे सुनाथा कि एक मनुष्य परदे दुनिया से किसी समयमें आवेगा वह अजगरको मारकर सीमुर्गके बच्चोंकीरक्षाकरेगा और आदिल क़ाफ उसका नामहोगा और सब देवोंकानाशकरेगाऔर जोकोई क़ाफमें उससे यडकरेगा वही मारा जायगा तबपीछे लोग उसे

होगया और हजरत सुलेमान का जालजो किसी युक्तिसे उसको मिल गयाथा लेकर क्लिलेस्याहभूमसे उड़कर गुलिस्तान अरममें आकरसबको बांधलिया और अपने साथियों से उनको दुःखदेने के लिये आज्ञा दी परंतु केवल अब्दुल रहमान अपने स्थान पर चलागया था इस कारणसे बचगया और जितने थे कोई उस बलासे न बचा वह हाल अब्दुलरहमान को पहुंचा तबतो वह बड़े सन्देहमें हुआ और रमल से विचारा तो विदित हुआ कि अमीर क्लिले के उत्तर दिशापर हैं उसी तरफ तख्तपर सवार होकर अमीरको ढूंढ़नेके लियेगया अमीरका हाल सुनियेकि वे जब क्लिले सब्जनिगार से निकले तोकई दिन जंगल घूमते २ एक पहाड़की खोहमेंजो अब्दुल रहमानके स्थानके समीपथा आकरबैठे थे कि इतनेमें अब्दुल रहमानको तख्तपर सवार आतेहुये देखा और अब्दुल रहमानने भीदेखा तख्तसे उतरकर अमीरके पैरोंपर गिर पड़ा अमीरने उठाकरछातीसे लगायाऔर पूछने लगाकि अब बादशाहने तुम को क्यों जुदाकियाहै तब उसने सब वृत्तान्त शहपालशाह आसमानपरी उकरेशा और सब सरदारोंके क्लिले सपेदभूममें कैदहोने का सुनायातब अमीरने कहाकि यह झूठ सौगन्ध और मेरे दुःखदेनेका बदला शहपाल शाह औरआसमानपरीको ईश्वरनेदियाअब्दुलरहमानने हाथजोड़कर कहाकि आप सत्य कहतेहैं यहउनको ईश्वरने झूठ सौगन्ध खाने का बदलादियाहैपरंतु आसमानपरी आपकीस्त्रीहै इसमेंआपहीकीबदनामी है औरजो अपराध कियाहै वह आसमान परीने कियाहै परंतुउस की नेवछावर में सबको छोड़ादिये कि ये बेचारे इसदुःखसे प्राण बचाकर आवें प्रथमतो अमीरने इनकारकिया परंतु पीछेको अब्दुल रहमानकी विनयसे कहाकि अच्छा वह क्लिला कहांहै और वहांतक मैं क्योंकरजा सक्ताहूं कि उस क्लिलेपर जाकर छोड़ाऊं अब्दुल रहमानने कहाकि वह सात नदियोंकेपारहैऔरवहांशाह सीमुर्गकेसिवायऔरकोई पारनहीं जासक्ता वह ऐसा स्थानहै अमीरने पूंछाकि वहकहांहै अब्दुलरहमान ने कहाकि शाह सीमुर्गकेस्थानतकमैं आप को पहुंचादूंगा औरउसका पताभीआपकोअच्छीरहसे बतलादूंगा इस प्रकारसेअमीरकोसमझाकर प्रसन्न कियाऔर अपने तख्तपर सवार कराकर क्लिलेमें लेगया और अनेक प्रकारसे मेहमानदारी करके प्रसन्न किया अमीरने उसक्लिलेको देखकर कहा कि एकबार औरहम इस क्लिलेमें आयेथेऔर उनदिनोंमें यह क्लिला लाजसशाहलानिसाके पिताकेपासथा अब्दुलरहमाननेकहा कि सत्यहै वह मेरा नाथथा औरबड़ा बुद्धिमानथा तत्पश्चात् अब्दुल-रहमाननेअमीरकोतख्तपरसवारकराकरचारदेवोंको आज्ञादी कि अति शीघ्रता केसाथ अमीरकोसाह सीमुरगके स्थानपरपहुंचावो तबउनचारों देवोंनेतख्तउठायाऔर केवलजलहीमें सातदिन राचि भरावर उड़ाकर

आठवेंदिनचारघड़ीदिनचढ़े नदीकेपारलेजाकर तख्तकोउतारा औरजो चलते २ थकगयेथे आराम करनेलगे अमीरने नदीको जोदेखातो उसकी लहरें आकाशतक उंचीउठतीहैं औरमनुष्यतोक्यापक्षीभीदेखकर व्याकुल होजातेहैं औरनदीकेतीरेऐसेबड़े २ वृक्ष थेकिजिनकीडालियांआकाशतक पहुंचीथीं औरउनकीछायापांचयोजनतकपहुंचीथी औरवृक्षोंकेऊपरएक क़िलाबनाथा औरवहक़िलाअच्छी तरहसेसजाथा अमीरने उनभिन्नों से पूछाकि इसक़िलेको किसने बनवायाहै जो गुलिस्तानअमरसेभी उत्तम है उन भिन्नोंने कहाकियहक़िला नहींहै यहउसीसी मुर्गका स्थानहै अमीर इसबातके सुननेसे बड़े संदेहमें हुये तख्त के लानेवाले जिन तो अपने स्थान को चलेगये और अमीर एक वृक्षकेनीचे बैठकर जंगलकातमाशादेखने लगे कियोड़ीसमयकेपश्चात् एकवृक्षपरशोरगुलहोनेलगा अमीरउसवृक्षकेनीचे जाकरदेखनेलगे तोविदितहुआकिसीमुर्गकेबच्चेशोरगुल कररहेहैं सीमुर्ग के बच्चोंकोजो देखातो उनकाधड़ हाथीके तुल्यहैपरंतुसब इकट्ठे होकर चिल्लारहे थे तब अमीर बड़े संदेहमें हुआ कि किस वस्तुको यह देखकर डरतेहैं देखते २ जो देखातो एकअजगरउसीवृक्षपर चढ़ाजाताथा अमीर ने उसको तीरसे मारकर बलछीकी नोकसे छेद २ उसकेमांसकोबच्चोंको खिलाया और उनका प्राणउस अजगरसे बचाया उन बच्चोंका जो पेट भरगया तोआकरसोगयेक्षुधासे दुखहोगये दोघड़ीकेपश्चात् सीमुर्गजोड़े समेत अपने बच्चोंको भोजन लियेहुये आये तो उस समयबच्चोंकोनदेखा तोविचारा किआज बच्चोंकोकोईखागया औरसदैवजबवे आनेकीआहट पातेथे तो भोंभसे बाहर मुखनिकालकर देखने लगतेथे अमीरको वृक्षके नीचे सोतेहुये देखकर दोनों आपसमें कहने लगे कि विदित होताहैकि यही मनुष्य हमारेबच्चोंको खाजाताहै और हमको दुःखदेताहैऔरआज भी यहीखागया नहींतो बोलते इसको मारडालना उचितहै यहएकबच्चे नेसुना और व्याकुल होकर बाहर आकर अपनीभाषामें सबवृत्तांतसीमु र्गसे कहाऔर उस अजगरके मारेजाने की उसे खबरदी तबतो सीमुर्ग अमीरसे अति प्रसन्नहुआ और अमीरके ऊपरजो धूपआगईथीएकपरसे धूपकी आड़की और दूरसे वायुकरनेलगा अमीरको जोआराम मिला तो नेचखुलगये तो अमीरने उनको मारनेकेलिये तीर औरकमानलेकर सम्हला तब उसनेकहाकि ऐअमीरअभीतोआपने मेरेबच्चोंकाप्राणबचा कर मेरे ऊपरअपना यह सलूककिया और अबआपमुझेमारने की इच्छा करतेहैं अमीरने पूछाकितू कौनहै और तूनेमेरानाम क्योंकर जानाउसने कहाकि मैंने सुलेमानसे सुनाथा कि एक मनुष्य परदे दुनिया से किसी समयमें आवेगा वह अजगरको मारकर सीमुर्गके बच्चोंकीरक्षाकरेगा और आदिल क़ाफ उसका नामहोगा और सब देवोंकानाशकरेगा और जोकोई क़ाफमें उससे बढ़करेगा वही मारा जायगा तबपीछे लोग उसे

जुलजुलाल काफ़कहेंगे और उसकी बहादुरीसे आश्चर्यकरेंगे अमीरये बातें सुनकर अति प्रसन्नहुआ अमीरने पूछाकि यह कौनसा स्थानहैउस ने कहाकि इस स्थानकानाम कजाक़दर है और यह परदेक़ाफ़ की सरहदसे बाहर है और यहां परियों की राजधानी नहीं है अमीरने कहा कि मुझेतुझसे बड़ा कार्यहै इसीकारण मैं तेरेपास ऐसा दुःख उठाकर आयाहूं उसने कहा कि मैं सेवकहूं जो आज्ञादीजिये वही करूं और आपकी कृपा प्राप्त करूंगाअमीरने कहाकिरद्दतिरदेवने शहपाल और आसमानपरीको सेनापतियोंसमेत लेआकर क़िले सपेदकूहमें क़ैदकिया है इस कारणसे तू मुझको वहांलेकर पहुंचादे उसने कहा परदे क़ाफ़के देव मेरेशत्रु होजायंगे परन्तु मैं आपको अवश्य वहां पहुंचादूंगा इतना कार्य्य आपका मैंकरूंगा परन्तु आप सात दिनकेलिये भोजन औरजल मेरीपीठपर रखलीजिये कि जिससमय भूखलगेतो एकघूंटजल और भोजन मेरे मुखमें छोड़दीजियेगा तब अमीरने जंगलमें जाकर सात नीलगायका शिकार किया और उनकी खाल खींचकर मशक बनाई और उसमें मिष्टजल भरकरके नीलगायसमेत सीमुर्ग़की पीठपर रखकरसपेदकूहकी तरफ़ चलातब सीमुर्ग़ने अमीरसे कहाकिआपकोई लोहेकाशस्त्र अपने पास न रखियेगा नहींतो मार्गमें चुम्बक पहाड़ मिलताहै वहलोहे के कारण हमको खींचलेगा अमीरने कहाकि फिरमैं इनको क्याकरूं उसने कहाकि यहींछोड़चलियेऔरएकछोटासा शस्त्रजोमोजेमेंसमासके रखलीजिये तब अमीरने केवल तमंचा सोहरावका रखकरशेषसीमुर्ग़को सौंपदियाउसने अपने परोंमेंछिपालियाऔरअमीरकोलेकरआकाशकी तरफउड़ा अमीरने ऊपरसे जोदेखातो पृथ्वी एक मुद्रीके तुल्य दिखाई पड़ी और सबजलहीजल दिखाई पड़ताथातब अमीरने सीमुर्ग़सेपूछा कि इस नदीका क्यानामहै उसने कहा सातनदियोंमें यह पहिली नदी है और अभी छःशेषहैं और अति शीघ्रताकेसाथ उसके तैरनेमें श्रम करताथा जब आधीनदीमें पहुंचा तब उसको क्षुधालगीअमीरसेकहाकि ऐ अमीर अति शीघ्रही मेरेमुखमें भोजन छोड़ा मेराजोरघटा जाताहै क्षुधा दबाये आतीहै तब अमीरने एकनीलगाय और एक मसक मिष्ट जलकी उसके मुखमें छोड़दी उसने खाकर एकदिनमें उसनदीको पार किया दूसरे दिन दूसरी नदीपर पहुंचा अमीरने सीमुर्ग़सेउसमें अँधियारा देखकर पूछाकि इसमें अंधियारा क्योंहै उसने कहा कि यह नदी खाककीहै और जबआधी नदीमें पहुंचा तो फिर उसी प्रकारसे भोजन मांगा अमीरने वहीएक नीलगायऔर एकमश्कजलकीउसकेमुखमेंछोड़ दी और जिससमय उसनदीसे पारगया उसी प्रकारसे खातेहुये तीसरी और चौथी नदीको पारकिया जोकिरुधिर औरसिमाबकेनामसेप्रसिद्ध थी इसी प्रकारसे जबचुम्बकनदीपर पहुंचा तोवहसीमुर्ग़को अपनेतरफ

खींचनेलगा तबतोसीमुर्गने अमीरसे कहाकि आपअति शीघ्र उस तमंचे को जो आपके मोजेमेंहै फेंकदीजिये उसीके कारण चुंबकमुझे खींचेजाता है तबअमीरने लाचारहोकर उसतमंचेको फेंकदिया और सीमुर्ग उससे पारहोकर सातवीं नदी जो अग्निकी थी पहुंचा तब आधीनदीमेंजाकर अमीरसेअन्न जलमांगा अमीरने वही नीलगाय और एक मशक जलकी उसके मुखमें छोड़ी परन्तु अग्निकी लपकसे हाथको अति शीघ्रहीहटा लिया और वह सीमुर्गके मुखमेंन गया नदीमेंगिरकर जलगया तत्पश्चात् उसने फिरमांगा तबअमीरने कहाकि अभीतो मैंतुमको खिलाचुका अब मेरेपास कहांहै अबतो सब समाप्त होगये तब उसने कहाकि मेरे पेटमें तो नहीं गया और यही समय श्रमकरने काहै जो न खाऊंगा तो थोड़े कालमें गिरपड़ूंगा अमीरने देखा कि जोइसको नहीं कुछ खिलाते तो यह हमकोलेकर अभीअग्निकीनदीमेंगिरपड़ेगाअपना कालिचानिकाल कर उसके मुखमें छोड़कर उसको क्षुधासे तृप्तकिया तब वह उड़कर उस नदीसे पृथ्वी पर पहुंचा और उतरकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अति प्रसन्नता प्राप्त हुईपरंतु शस्त्रोंके फेंकदेनेसे दुःखितहुयेकि इतनेमेंदाहिने तरफसे हजरतखिज्रने आकर सलामकरके सब शस्त्र जो सीमुर्गके स्थानपर छोड़ आयेथे और उस तमंचे समेत जो चुम्बक नदी में फेंकदिया लाकर सामनेरखदिया तबतो अमीर अतिप्रसन्नहोकर हजरतके पैरोंपरगिर पड़े और शस्त्रोंको उठाकरधारणकिया तबतो हजरत उसीसमयचलेगयेऔरअमीरनेमैदान की तरफ जोदेखातोदोपहाड़अपूर्व प्रकारकेदिखाईदियेअमीरने सीमुर्गसेपूछाकि येपहाड़कैसे दिखाईपड़ते हैं उसनेकहाकिये पहाड़ नहीं हैं येवही दोनोंक्रिलेहैं एकजो प्रातःकाल कीतरह सपेद विदित होताहै वह सपेद धूमहै और दूसरा जो रचिकी तरह विदित होताहै वह स्याहधूम है तब अमीर ने सीमुर्गसे कहा अब तुमजाओईश्वरमालिकहैतबसीमुर्गनेतीनपरदेकरकहाकिएक परतोआप दुतियामें पहुंचकेअपनेघोड़ेमेंलगादूंगा और दूसराअमरूमक्कारकोमेरी तरफसेदीजियेगाऔरतीसरा जोआपकोमेरेबुलानेकीआवश्यकता पड़ेतो इसको अग्निमें डालदीजियेगा तोमैं आपकेपास आकर पहुंच जाऊंगा जोमैंकहताहूं यहीकीजियेगा यहकहकर सीमुर्ग तोअपनेस्थानकीतरफ उड़गया और अमीर उन क्रिलोंकीतरफचले थोड़ीदूर जानेपर एकव्याघ्र अमीरकेऊपरदौड़ा अमीरने अक्लबसुलेमानीसे उसकेदो टुकड़े करदिये और उसकीखालइसविचारसे खींचकरगलेमें डालली किदुनियांमें पहुंच कर इसका लबादाबनावेंगे क्योंकि कहीं सुनाथा किरुस्तमके गलेमें व्याघ्र की खालथीउसको देखकर लोग डरतेथे इसीप्रकार से जब अमीर क्रिले स्याहधूमकेदरवाजेपर पहुंचे तोवहां देखातोनकोईरक्षक दिखाईपड़ता हैनऔर कोई केवलचारसौ देवदरवाजे पर बैठेहैं कि कोई नवीन मनुष्य

न आने पावे संयोगसे उनदेवोंके सरदारने अमीरको देखलिया औरएक बारगी चिल्ला २ कर कहनेलगा कि बड़ा ग़ज़बहुआ कि गुलगुलालकाफ़ यहांभी पहुंचा हम लोगोंका प्राण नछोड़ेगा यह कहकर एक तलवार लेकर अमीर केऊपरऐसीमारी कि पृथ्वी हिलगई परंतु अमीरनेउसको रोंककर एकतलवार ऐसीमारी किउसकेदो भागहोगये देवोंनेजब अपने सरदारकाकुत्तेकीमौतकीतरहमरते देखातोसबअपनाप्राणलेकरभागगये औरउस समय रदशातीर शिकार खेलने कोगया था उसीतरफ कोसब भागे कि उसको जाकर खबरदेवें और अमीर दरवाज़े पर खड़े होकर विचारने लगा कियह नहींविदितहोताकिग्रहपालशाह और आसमान परी स्याहबूममें है या सपेदबूममें इतनेमें आकाशवाणी हुई कि ग्रहपाल शाह और आसमानपरी सपेदबूममें क़ैदहैं अमीर उसक़िले कीतरफचले जबदरवाज़े परआये तो देखा किउसक़िलेमेंसौबुर्जहैं और बुर्जपरकोईदेव तो व्याघ्रका शिर कोई घोड़े का कोई सांप आदिक का शिर किये हुये रक्षा कररहे हैंऔर दरवाज़े पर एक अजगर है जिस के मुखसे ऐसी लौ निकलतीहै कि जंगलका जंगल जलजाताहै और उसकामुख इतनाबड़ा हैकि उसीकेकारण दरवाज़ेका रास्ताबंदहै अमीर व्याकुलहुये किइसके भीतरक्योंकर जावें इतने में आकाशवाणीहुई किऐ हमजा इसजादू का नाशकर्तातू नहींहै तेराएक पोतारुस्तम दूसरा उत्पन्नहोगा वहीइसका नाशकरेगा तब अमीर अति व्याकुलहुये किअभीतो मैंखुदही लड़काहूं जबमेरेपुत्रहोग, और उसके फिर पुत्र होगा तबतकये बेचारे इस क़ैदही मेंपड़रहेंगे क्योंकर दुःख सहसकेंगे इतनेमें फिर आकाशवाणी हुई कि तू क़ैदियोंको छोड़ासक्ता हैपरन्तु जादूका नाशनहीं करसक्ताहै इसमंत्रको पढ़कर अजगर के मुखमें चलाजा तूपार होजायगाअमीरने जोउसमंत्रको पढ़ा तो अजगर दरवाज़े परसे हटगया और अमीर दरवाज़े से होकर क़िलेमें गये तो वहां देखा किएक बाग़है उसीमें ग्रहपालशाह सरदारों समेत बैठेरोरहेहैं अमीरकोदेखकर लज्जित होकर शिरनीचे करलिया अमीरने सबकोक़ैदसेछोड़ाकर आराम दियाऔर ग्रहपालशाहसेपूछा कि आसमानपरी कहां है उसने कहा किसामने के बुर्ज में क़ैदहै अमीर उसका दरवाज़ा तोड़कर भीतर गये तो देखा किआसमानपरीनीचे को शिर ऊपरकोपर कियेहुये लटकाईहै और थोड़ासा प्राणरहगयाहैऔर उसकी बेटी अपनी माता के सम्मुख खड़ी रोरहीहै तब अमीर नेउसको भी क़ैदके बन्दकाटदिये और सबको लाकरबादशाहकेपास डुकड़ाकिया तबतो आसमानपरी अति लज्जित होकरअमीरकेपैरोंपरगिरपड़ी और कहनेलगी किहे अमीर अबकी बारमेराअपराध क्षमा करो अबछःमास व्यतीत होने परअवश्य आपको दुनियाकी भेंटदूंगी अमीरने कुछ उत्तर नदिया और उसके कहने परकुछभरोसा न कियासबकोसाथलेकरक़िलेसे

बाहर निकला तो देखा कि रदशतीरकई सहस्रदेव साथलियेहुये गरजता चलाआता है कि जिसकेडरसे पृथ्वीहिलरही है अमीरके संमुख आकर कहनेलगा कि ऐमनुष्य तूनेसब क्राफकेबागोंका नाश करदिया औरयहां भी आकर मेरे क्रौदियोंको छोड़ाये जाताहै अब तेरा प्राण न बचेगाअब मेरे हाथसेक्योंकरबचकर जासक्ताहैयहकहकरएकपत्थर उठाकरअमीर कोमाराअमीरनेउसकोरोककरऐसाएकघूसामाराकि वहउसीस्थानपर रहगया तब उसके साथके देवोंने लाशलेजाकर देव समुंदकिजिसकेसहस्र करथे दिया अमीर सबको साथलेकरगुलिस्तान अरमको चलेआयेऔर सबतरहआरामसे रहने लगे और जबछः महीने व्यतीतहोगयेतोएकदिन फिर राजिको स्वप्नमेंमेहरनिगारको देखकरचौंकउठे औररोनेलगेआस-मानपरीभी रोना सुनकर जागउठी और अमीरसे पूछनेलगी कि क्याहै कुशलतोहै अमीरने कहाकि अबतू मुझको दुनियामें भेजदे उसने कहा कि एकवर्ष और वासकीजिये अबकी अवश्य भेजदूंगी अमीर यह सुन कर क्रोधितहुये और उठकर बादशाहकेपास आये और सब अपनाहाल कहा बादशाहनेउसीसमयअमीरकोतख्तपरबैठाकर चारदेवोंकोआज्ञा दी कि अमीरको लेजाकर परदेदुनियामें पहुंचाआवोहमारीआज्ञाको पूर्णकरो जबअमीर तख्तपर सवारहोकर दुनियाकीतरफचले उसीसमय आसमानपरीने एक परीजादेसे कहाकि तुमअमीरके समीपअतिशीघही जाकर देवोंसे कहआवो कि खबरदार अमीरको लेजाकर सैरगाहसुले-मानीमें छोड़आवो औरजोदुनियामें पहुंचावोगे तोदंडपावोगेजबमार्गमें अमीरकेपास वहदेव पहुंचा तो अमीरने जानाकिइसकोआसमानपरी नेदेवोंसे कुछ कहनेके लियेभेजाहै तब अमीरभी तख्त पलटाकर शहपाल शाहके पास चलाआया औरआसमानपरीकीबुराई करनेलगाउससमय आसमानपरीभी वहींथी बादशाहने क्रोधित होकर कहा कि तूलज्जित तो नहीं होती और बार बार वहीबात किये जातीहै आसमानपरी ने कहा कि आप मेरेबीचमें पड़कर दुखःनदीजिये मैं आपके कहनेसे बसा बसाया घर उजाडूं अमीर यहसुनकर उठखड़ेहुयेऔर आसमानपरीको शाप देतेहुये जंगलकी तरफ चले गये और बहुतसे लोग लिखते हैं कि अमीरने उसीदिनसे आसमानपरीको शापदेकर छोड़ दिया था और बहुतेरे नहीं मानते और लिखनेवाला लिखताहैकि अमीरकेजानेकेपीछे शहपालभी साधुबनकरपहाड़में जाकर बैठेथेऔरआसमानपरीराजगद्दी परबैठकरराज्यकाजकरनेलगीऔरक्राफकेनगरभरमेंढिंढोरापिटवादिया था किजोकोई अमीरकोदुनियामेंपहुंचानेकीइच्छाकरेगाउसकोमैंबड़ा दण्डदूंगी तत्पश्चात् अब्दुलरहमानसे पूछाकि देखोतो वहस्त्रीजिसपर हमलोगोंहितहैअधिकसुरूपवानहैउसनेविचारकरबतलायाकि वह स्त्री ऐसीस्वरूपवानहै कि उसकीसहेलियांभीआपसे कहींस्वरूपवानहैं और

वह आजकल क़िले देवदेमेंहै आसमानपरीने उसक़िलेकीतसवीरखिच-
वाकर कईएक देवोंको देकर आज्ञादी कि इसरूपकेक़िलेमेंजाकरजहां
मेहरनिगारहै उसको उठालेआवो परीज़ादेआज्ञापातेही क़िलेकीतस-
वीर लेकर दुनियाकीतरफरवानाहुये अबजबतक वेमेहरनिगारकोआस-
मानपरीके समीपलेआवेंतबतक थोड़ाहृत्तान्त मल्लिकलन्धौर पुत्रसादान
का लिखताहूं विदितहोकि जबमल्लिकलन्धौर क़ैदसेछूटकरआया तब
नाचरंग होनेलगा उसीसमयमें एकदेवने देव रुपेदके आनेकी ख़बरदी
लन्धौरने सभासे उठकर सपेददेवकेपास जाकरउसकोमारडाला लिखने
वाला लिखताहै कि उसीयुद्धमें लन्धौरने ऐसाशब्द कियाथाकि वहशब्द
अमीरके कानतक पहुंचा था और सब पहाड़आदिक कांपउठेथे और
अमीरनेभी उसीसमय देवशातिरके युद्धमें शब्द किया था जो लन्धौरके
कानोंतक पहुंचाथापरन्तु दोनोंव्याकुलथे लन्धौर कहता था कि यहां
अमीरकहांऔरअमीर कहताथाकियहांलन्धौर कहां जबलन्धौरसपेद
देवको मारचुका तबबादशाहसे कहा कि अब मुझेमेरेदेश को भिजवा
दीजिये अबतो आपकाबादापूर्णहुआ बादशाहने उसी समय लन्धौरको
एकतख्तपर सवार कराकरआरशिव परीज़ादसमेत दुनियाकीतरफ भेज
दिया और देवोंको दुनियामें पहुंचानेकी आज्ञादी बहराम खाकान
शाहचीनका हाल सुनिये कि संगसारोंसे विजय पाकर दिन राति इसी
विचारमें रहतेथे कि लन्धौरको कौनलेगया यहदाग हमलोगोंका लगा
गया उसदिनभी यही बातचीतहोरही थी किबड़ेआश्चर्यकी बातहै कि
लन्धौरका अबतकपता न मिला उनको कहांढूंढें कि इतने में खुसरो
फ़िन्दका तख्त आकाशसे आकर क़िलेमें उतरा बहराम दौड़करलिपट
गया और सबमनुष्यआकर लन्धौरके पैरोंपरगिरे और क़िलेमेंखुशीका
बाजाबजने लगा औरनगारे बादलके समानगरजनेलगेऔर नाचरंगहोने
लगा बहरामने उसीसमय में लन्धौरसे कहाकि एकपत्र आकाशसेकोई
फेंकगयाहै परन्तु वहकिसीसे पढ़ानहींजाता तबलन्धौरनेकहाकिलाओ
देखेंतो जोहमसे पढ़ाजावेतो पढ़ें बहरामने पत्र मँगवाकर खुसरो को
दिया परन्तु उससेभी न पढ़ागया तब आरशिवने लेकर पढ़ाऔर कहा
कि पत्र मेरी मातानेलिखकर जादूसे तुम्हारे पास फेंकदियाथा बहराम
आरशिवको छातीसेलगाकर अतिप्रसन्नहुआ औरजितनेलोगउससमय
बैठेथे बहुत प्रसन्नहुये और सब उसकी प्रसंशा करनेलगे और कहने लगे
कि सानों सरंदीप आज फिरसे बसायागया ॥

लेपहोना जहरमिग्रीका केसरक़िलेसे और पहुंचना आसमानपरीके पास परदेकाफपर ॥

अबथोड़ासा हृत्तान्त अति दुःखीमलीन विरहसंयुक्त मल्लिकामेहरनि-
गारहमशा कीस्त्रीकासुनियेकिदिनराचिअमीरकीजुदाई सेरोतीपीटती
थी औरनकुछ खातीन पीती औरमैलेकुचैले कपरखट परसोती थी और

जबजहरमिथीयाऔर कोईसहेलीमुंहहाथधोनेको कहतीथी तबरो २कर धोतीथी औरजबकोई शृंगारकरनेको कहे तोउसकेबदलेमेंरोतीथीऔर महाविलापकरतीथीसरदारोंनेदेखा किऐसा न हो कि इसीप्रकारसेयह पागलहोजावेउसकेदिलबहलानेकाउपायकरनेलगेऔरयहीकहतेथेकिऐ मलिकाबड़तगईथोड़ीरहीअबईश्वरकीकृपासे आकरतुम्हारेदुःखको छु-ड़ातेहैंपोशाकबदलकरभोजनकरकेचित्तकोआनन्दकीजिये जोआपनेप्राण त्यागदिया तौ कौनबड़ी बातकी अमीरआकरकिसकोदेखेंगे और कौन अमीरको देखेगाकृपाकरके कोठेपरचलिये ठण्ढी २ वायुसे चित्तकोप्रसन्न कीजियेईश्वरकेलिये हमलोगोंको दुःखनदीजिये इसप्रकारसे कह सुनकर कोठेपरलेगये और फरियालीखेतोंकोदिखलानेलगे और इधर उधरकी बातचीत करनेलगे कि मलिका का चित्त प्रसन्नहोवे इतनेमें थोड़ीसमय व्यतीतहुईथी कि एकआंधीआईऔरबादलगर्जनेलगातत्पश्चात्एकबड़ा आकाशसेउतरकरजहरमिथीकोजोमलिकाके सामनेखड़ीथीउठालेगया कोईतोभागकर सीढ़ियोंपरमुखकेबलगिरपड़ा औरकोईआंखमून्दकर पृ-थ्वीपरबैठगयासबव्याकुलहोगयेकिसीकोकिसीकीखबर न रहीजबसबआं धीपानीबन्दहोगयाऔरलोग चैतन्य हुयेतोदेखा कि जहरमिथी नहींहै तबतो सबओरही दुःखितहुये अबथोड़ासा वृत्तांतजहरमिथीका सुनिये कि जब उसने देखा कि मैं तख्तपर बैठीहूं औरतख्त आसमान पर उड़ा जाताहै और सर्वचवस्तु मुझको कालीदिखाईपड़तीहै तब उननेदेवों से पूछा कि तुमकौनहो और कहांमुझकोलियेजातेहो उन लोगोंने कहा कि आसमानपरीहमजाकीस्त्रीने हमलोगोंकोआज्ञादेकरभेजाहै कितुम लोग जाकरमलिकामेहरनिगारनौशेरवांकी बेटीकोहमारेपास लेआवो सो हमलोग तुमको उसके आज्ञानुसारलियेजातेहैं तबतोजहरमिथी ने विचारा कि विदित होताहै कि हमजानेपरदेशाफमेंदूसरा विवाह कर लियाहै सो उसस्त्रीने मलिका कोमारनेकेलिये मंगवायाहै परन्तुये उसे पहिंचानते न थेमुझीको मेहरनिगार जानकर उठालायेहैं अच्छीबातहुई कि ईश्वरने उसकोबचादिया मैंहीउसकेबदलेमें मारीजाऊंगीइसीप्रकार से जहरमिथीजबगुलिस्तानमेंपहुंची तो सुरमासुलेमानीउसकीआंखोंमें आसमानपरीने लगवादिया तब वह सबको देखनेलगीजिस समय उसको आसमानपरीकेसम्मुखलेगये तब आसमानपरीउसके स्वरूपको देखकर व्याकुलहोगईऔरकहनेलगी कि तबक्यों न हमजादूसीकी जुदाईके दुःख से व्याकुलहो औरफिर जहरमिथीकी तरफ सम्मुखहोकरपूछनेलगीकि मेहरनिगार नौशेरवांकीबेटी तूहीहै जो सुन्दरतामेंप्रसिद्धहै औरजवानों को मोहितकरलेतीहै जहरमिथीने अदबकेसाथ सलामकरके कहा कि नहीं मैंतो अब्दुलवजीर बादशाहमिथी की बेटी और मक़बूलवफादार पैकर हमजाकी स्त्रीहूं मैंकब मेहरनिगारकी बराबरी करसकतीहूं और

मेरानाम जहरमिथीहै और मुझऐसी चारसौ सहेलियां उसकेसाथमेंहैं आसमानपरी जहरमिथीकीबातोंसे अतिप्रसन्नहुई और पूछनेलगी कि सत्यकहना जहरमिथी तुझे हमजाके शिरकी सौगन्धहै मैंखरूपवानहूं या मेहरनिगार तेरेसमीपदोनोंमेंसे कौनअधिकखरूपवानहैजहरमिथी ने हाथबांधकरकहा कि अपराध होताहै नहींतो आपकी सुन्दरता मेहरनिगारकी सहेलियोंकी बराबरभी नहींहै कहां सूर्य कहांएकतारा आसमानपरी उसकीबातोंपरअतिक्रोधितहुई औरजल्लादोंकोबुलाकर आज्ञादीकिइसकोलेजाकरफांसीदोयहबड़ी बेअदब सभाकेयोग्यनहीं है संयोगसे करीश्मा जो उन दिनोंमें सातवर्षकीथी परन्तु सुन्दरता और बुद्धिमानोंमेंप्रसिद्धथी उसतरफसे आ निकली आदमियोंका जमावादेख कर हाथमेंतमंचालियेजहरमिथीकेपासगईजल्लादोंसे पूछा कि यहकौन है और कौनसा अपराध कियाहै जो पहरा देतेहो उन लोगोंने कहा कि हम कुछनहीं जानते कि यह कौनहै और कौनसाअपराधकियाहै परन्तु शहपरियोंने आज्ञादीहैकरीश्माने जहरमिथीसे पूछा कि तू कौन है उसने सब अपना वृत्तांत ब्योरेवार सुनाया तबतो वहक्रोधितहोकर झुंझुलागई और जहरमिथी को साथ लेकर आसमानपरीके पास आई औरउससेक्रोधितहोकर पूछनेलगी कि इसने कौनसाअपराधकियाहैजो परदेदुनियासे इसको मँगवाकरबधकरातीहै विदितहोताहै कि जोमलिकामेहरनिगारआतीतो उसकोभी बधकराती न अमीरसेडरती न ईश्वर से वहभी एक प्रसिद्धमनुष्यहैऔरतुमसेलाखगुनाप्रतिष्ठाऔरबलआदिक में बढ़ाहै औरवह अमीरकी प्रधमन्त्रीहै सब बातोंमें तुमसेउत्तमहोगी क्याकरूं ईश्वरसेडरतीहूं कि तू मेरीमाताहै नहींतो एक तमांचा मारकर दोटुकड़ेकरदेतीऔरकभीकिसीसेनडरतीआसमानपरीकरीश्माकोक्रोधितदेखकर डरगई कुछन बोलीयहांतककिकरीश्मानेउसीसायतजहरमिथी को तख्तपर सवारकराकर उन्हींदेवोंको जो लेआयेथे आज्ञादी कि जहांसे लेआयेहो वहीं इसको लेजाकरपहुंचाआवोमेरीआज्ञामानोतब वे तख्तको उठाकर रवानाहुयेसंयोगसे उसी समयमें देवसमुन्द जो उसके मार्गमें पड़ताथा अपने सरदारोंसमेतबैठाहुआशराब पी रहाथा उसकी दृष्टि तख्तपरपड़ीतोअपनेसिपाहियोंसेआज्ञादी कि दौड़करउसतख्तको अति शीघ्र हमारेसमीपलेआवो कौनहैं इसको कहांलियेजातेहैं जबतख्त को उसकेसमीपलेआये तबजहरमिथीसेपूछा कि तूकौनहै और कहां जातीहै औरतेराइतनाबड़ामक़दूर कि देवोंसे तख्तउठवातीहै तबउसने सब अपनावृत्तांत कहा तबदेव समुंदने परीजादोंकोतो मारडाला और जहरमिथीकोआज्ञादी कि तूहमारेपुत्रकापलनाझुलायाकरऔरउसको किसीप्रकारसेदुःख न होनेपावेलाचारहोकरवहपलनाझुलानेलगीऔर अपनी भाग्यपररोनेलगीअबखाजेअमरूकाहाल सुनिये कि जबशोरगुल

होनेलगामहलमेंगयातो विदितहुआ कि एक बच्चाआकाशसेआयाऔर अहरमिठीको उठालेगया क्रोधितहोकरमलिकामेहरनिगारकेपासगया और कहनेलगा कि हजारबार मैंने आपको समझाया कि कोईकार्य बे मेरेपूछे न करना परन्तु तुमनहीं मानतीहो जो तुमहीको उठा लेजाता तबतोहमारी बारहवर्षकीमेहनत वृथाजातीऔरलोगोंसे भी लज्जितहोते यह कहकर तीनकोड़े मलिकाकीपीठमें ऐसेमारे कि वह बेतामहोके पृथ्वी पर लोटनेलगी और अमरूसे बहुतनाराजहुई और अपने चित्तमें विचारकरनेलगी कि जो हमनासे मिलता न करती तो अमरू मुझे क्यों मारता कि इससे बड़े २ मेरेपिताकेयहां पैकरहैं यहविचारकरके उस समयतो कुछ न बोली परन्तु आधीरात्रिको कमन्द लगाकर किलेसेबाहर उतरी और कुछदूरअपने भाईकेखेमेकीतरफगई परन्तुफिर अपनेचित्तमें विचारा कि भाइयोंकेपासजाना उचितनहींहै एकघोड़ा हरमजकासजा हुआबंधा था और साईस सोरहाथा मरदानारूप धारणकरकेमुखपर सेहराडालकरघोड़ेपरसवारहोकर जंगलकीतरफचलीऔरप्रातःकालहो ते पचासकोस निकलगई अमरूका हाल सुनिये कि कोड़ेमारकर महलमें अपने स्थानपर चलेआये और विचारा कि सवेरेजाकर मलिकासेअपना अपराध क्षमा करवाकरउसे प्रसन्नकरलेंगे परन्तु उसीरात्रिको अमीरने स्वप्नमें कहा कि ऐअमरू तूने मलिकाको ऐसा दुखदिया कि तेरे कारण क्रोधित होकर जंगलकी तरफ चलीगई अमरूयहस्वप्न देखकर चौंक उठा और मलिकाके महलमें गयातो देखाकि पलंगखाली बिछाहैऔर मलिका उसपर नहींहै तबतोइधरउधरढूंढ़नेलगापरन्तुकहीं पतानलगा तबतो अति व्याकुल होकर किलेकी दीवारपर जोगयातो देखाकिएक तरफको कमन्दलगीहै तबतो अमरूको विदितहुआ कि मलिकाइसतरफ से उतरकर गईहै परन्तुयह विदित न हुआ कि किधरको गईअमरूभी कमन्दसे उतरकर नीचेगयाऔर मलिकाके पैरोंके चिन्हसेहरमजकेखेमे तकगया और वहां जाकर देखातो कुछ पतानलगा परन्तुएकसवारहाथ में बागडोर पकड़े सोरहा था तब अमरूने जानाकि मलिका यहां तक आई और यहांसे इसी घोड़ेपर सवार होकर कहीं चलीगई तबअमरूने उससाईससे जगाकर पूछा कि घोड़ातेरा क्याहुआ तबवह उठकर इधर उधर ढूंढ़नेलगा परन्तु कहीं पता न लगा तब उसीघोड़ेकेसुमकेचिन्हसे चला कि इसको कहीं ढूंढ़ना चाहिये मेहरनिगारका वृत्तान्तसुनियेकि वह प्रातःकाल होते पचासकोस चलीगई एकाएक बादशाह एलयासतर सलात पूजक हाथपरबाजलियेहुये आनिकलामलिका एकवृक्षकीआड़में होगई परन्तु उसने देखलिया कि एक सवार सेहरामुंहपरडालेआताहै इसको देखकर वृक्षके आड़में होगया समीप जाकर पूछाऐमनुष्यतूकौन है कहांसे आताहै और इस जंगलमें किस प्रयोजनके लियेआयाहै और

तेरानाम क्याहै मेहरनिगारने कहा कि मुसाफिरहूं भाग्यसे यहां भी आगयाहूं बादशाहने कहा कि हमारी नौकरी करेगा उसने कहा कि मुझे नौकरी करनेकीकुछआवश्यकतानहींहैबाद शाहने बोलीसेविदित किया कि यहस्त्रीहै हाथ बढ़ाकर सेहरा मुखपरसे हटाकरदेखातोवह ऐसी स्वरूपवानस्त्रीथी कि जो एकबारसूर्यभी दृष्टिसे देखनेकीइच्छा करे तो चकचौंधीलगे तब बादशाहने उसीसमय घोड़ेपरसे उतरकर एक मकानमें सवारकराया और अनेक प्रकारसे फुसिलातेहुये अपने स्थानमें लेजाकर एक अति स्वच्छऔरविमल स्थानमेंउतारा औरसबतरहआराम का समान इकट्ठाकरवाकर उसके चित्तको अति प्रसन्नकिया औरजिस समय उसके समीपजाकर इच्छाकी किमेहरनिगारके शरीरको छुवेमेह रनिगारने कहाकि खबरदारजोऔरकिसीबातकीइच्छाकरेगातोमुझसे बड़ादुःखपावेगातबबादशाहलाचारहोकरचलाआयाऔर अफसोसकरने लगा कि ऐसीस्वरूपवानपरी हाथभीलगी सो मेरेहाथसेजायाचाहती है संयोगसे उसीदिन ख्वाजानिहालसौदागर जो पहिले बादशाह नौशे-रवांके पासनौकरथा और उसने मलका मेहरनिगारको गोदमें लेकर खिलायाथा और उससे बड़ालाभ हुआथा बादशाहके समीप सौ-गात लेकरआया उसने बादशाहको दुःखित देखकर पूछा कि आप दुःखित क्योंहैं बादशाहने सब अपना वृत्तांत कहा कि एकपरी मुझे मंगल मे मिली है परन्तु वह मुझसे राजी नहीं होतो परन्तु मैं उसके मोहमें फंसकर मराहूं ख्वाजे निहालने कहा कि जोमैं उसे देखूं तो एकमंत्रपढ़कर आपसे राजी करादूं तब बादशाहने प्रसन्न होकर उसी समय ख्वाजेको अपनेसाथ लेजाकर उस स्थान को देखाकर कहा कि इसी स्थानमें वह स्त्रीहै ख्वाजे निहालने दरवाजेके दरसेदेखकरपहिंचान लिया कि मलिका मेहर निगारहै और एक बारगी नाम लेकरपुकारा तब मलिका ने भी पहिचानकर दरवाजा खोलदिया औरभीतरआनेकी आज्ञादी ख्वाजे भीतरमलिकाके पासगयाऔरसर्ववृत्तान्तविदित करके चपकेसे मलिकासे कहा कि अब आपदुःखित न हूजिये हमकिसीयुक्तिसे आपको निकाल लेचलेंगे किइस पापीके हाथसे आपकाप्राणबचेमलिका को इस प्रकारसे समझाकर आप बादशाहके समीप आया और उससे कहा कि आप अपने रक्षकोंको आज्ञा देदीजिये कि मुझे रात्रि दिन इस स्त्रीके पास जानेसे निषेध न करें आपकी कृपासे आजकेतीसरेदिन आपसे राजी करादूंगा बादशाहने अतिप्रसन्नहोकर ख्वाजे निहालको खिलअत देकर अति प्रसन्न किया ख्वाजेवहांसे आकर बाजारमें सौदा गरोंकी दुकानोंमें घोड़े तालाश करनेलगे पश्चात्दोघोड़े अतिशी-घ्रदौड़नेवालेले कर उस स्थानपर जिसमें मलिका रहती थी दरवाजे परलेगया और उसी रात्रिको एकपर मलिका को सवार कराया और

एकपर आप सवार होकर नगर से बाहर निकलकर राचि भर चला गया प्रातःकाल बादशाह ने खाजेनिहाल को बुलवाया तो वह न मिला और उसीसमय में सिपाहियोंने आकर खबरदी कि वहस्त्री जो आप लेआये वह आजमहीं दिखाई पड़ती मकान खाली पड़ाहै तबतो बादशाहने विचारा कि निश्चय करकेखाजेनिहाल उसकोलेभागा उसी समय सेना साथलेकर उसके पीछे रवाना हुआदोपहरहोते मलिकाने गरद गुब्बार देखकर खाजे निहालसे कहा कि ऐखाजे बादशाह आ-पहुंचा घोड़ेको बढ़ा खाजा तो उसीगरद गुब्बार को देखता रहगया परन्तु मलिका जंगलमें जाकर छिपगई कि इतनेमेंबादशाह की सवारी खाजेनिहाल के समीप आपहुंची खाजेनिहाल जिसप्रकार से खड़ाथा वैसेही हक्काबक्का होरहा तबबादशाहने आकर खाजेको तो मारकर अपना बदला लिया और मलिका को इधर उधर ढूंढ़कर जब न पता लगा तो लाचार होकर पलटगया और मलिका दूसरे दिनतक बहुत दूरचलीगई परन्तु क्षुधासे अति व्याकुल होगई जातेजाते एकसाधु की कुटीपर पहुंची तबतो चित्त ठिकाने हुआ उससे एक तरबूज मांगा उसने लाकर कई तरबूज दिये और जबमलिका ने सब खालिया और चित्त प्रसन्न हुआ तबउसने कहा कि ऐप्यारी जो तूमेरे पास रहे तो मैं तुझको अच्छी तरहसे रक्खूंगा और जो तूमांगेगी वहीदूंगा मेहर-निगार व्याकुल हुई कि यहपागल क्या बकता है इसको क्या सूझीहै उससे पूछा कि तेरे और कोईहै उसने कहा कि मेरे दसबेटे ग्यारह-बेटी और एकस्त्री है तब मेहरनिगारने कहा कि तेरीस्त्री है तोमैं तेरेपास क्योंकर रहसक्तीहूं तब उसने कहा मैंस्त्री को छोड़दूंगा तबमेहरनिगारने कहा कि अच्छा तूमजाकर उसे छोड़ आवो मैंयहीं बैठीहूं जबवह अपनीस्त्री को छोड़ने के लिये अपने घरको गया इधर मेहरनिगार सरदे के दाम उसकी कुटीपररख आप घोड़ेपर सवार होकर चलीगई जबवह अपनीस्त्री को छोड़कर आया और उसपरी को न पाया तो चिल्ला २ कर कहनेलगा कि हायपरी २ तू मुझको छोड़ कर चलीगई स्त्री उसकी जिमीदारको लेकर आई कि उसको चलकर समझावेयहां आकर देखा कि वहहाय २ करके एकस्त्री के लियेरो रहाहै सबलोगों ने जाना कि इसपर कोई पिशाच याभूत चढ़ा है उसकीस्त्री और लड़कोंसे कहा कि इसकीऔषधिकरोनहींतोयहसिड़ी होजायगा मेहरनिगार जो वहांसे चली तो उसकोएकजंगलमें राचिहुई उसमें बहुतसे व्याघ लंगूर बन्दर आदिकथे जोकि मनुष्य को देखतेही भखजातेथे तबमलिकाने घोड़ेको तो एकवृक्षमें बांधदिया और आप एक वृक्षपर चढ़गई प्रातःकाल एकव्याघ आया और मेहरनिगार के घोड़ेको मारकर उठा लेगया तब मेहरनिगार ने वृक्षसे उतरकर जीत

तो वृक्षमें बांधदी और आप पैदलचली और सायंकाल को एक नगरी में पहुंची उससे बाहर निकलकर एकबड़ा भारी तालाब था उसके समीप एकवृक्षथा मलिका उसी वृक्षपर चढ़कर रात्रिभर बैठीरही प्रातःकाल को उसनगरी के चौधरीने अपनी टहलुई को तालाबसे जल स्नान करने के लिये लेआने को भेजा तबउसने जलमें मेहरनिगार के स्वरूपकी परछाहीं देखकर जाना कि मेरीहीपरछाहींहै घमण्डसेघड़ाले कर पलटगई कि मैंऐसी स्वरूपवान होकर पानी भरूंगी जबचौधरी ने पूछा कि जललेआई तबउसने कहा कि वाह साहब मैं आपके स्नान करने के लिये ऐसीस्वरूपवान होकर तालाबसे जल लेआऊंगी चौधरीने फिर उसको धमकाकरभेजा कि अतिशीघही जाकरजल लेआमुझेस्नान करने के लिये बिलंब होतीहै वहफिर तालाब परगई मेहरनिगार की परछाहीं देखकर फिरलौट आई औरपहिलेहीकीतरह फिरकहनेलगी तीसरी बारफिर चौधरी ने धमकाकर भेजा और फिर पलट आई तब मेहरनिगार ने सोचा कि यहांसे अबचलदेना उचित है नहीं तो अबकी अवश्य कुछफसाद यहबरपा करेगी वृक्षपरसे उतरकर एक तरफकी राहली और उसनेफिर जाकर वहीकहा तबचौधरीने उस को एक आईना दिया कि इसमें तो अपना स्वरूप देख जब उसनेआईने में देखा तो उसेकाला स्वरूप दिखाई पड़ा तबचौधरी ने कहा कि इसी स्वरूपपर कहतीहै कि मैं स्वरूपवानहूं उसनेकहा कि तालाबमें तो चलकर देखिये तबवहां से चौधरीजी और दोचार मनुष्य समेत उसके पीछे २ तालाबपर आये तबउसने अपना स्वरूप वैसाही देखा जैसा कि आईने में देखाथा बेहयाई से यहकहतो गई कि मैं इसप्रकार से स्वरूपवान होकर ऐसा निकृष्टकार्य करूंगी तबलोगोंने कहा कि इस को कहीं भूत लग गयाहै इसकी औषधि करनी चाहिये और मेहर-निगार जो वृक्षसे उतरकरचली तो दूसरेदिन एकसाधु की कुटीपर जा पहुंची और वहसाधू चारसौ जमातका स्वामीथा मलिका को देखकर पूछनेलगाकितूकौनहैमेहरनिगारनेकहाकिजुलाहेकीबेटीहूं मेरे पिताने वृद्ध अवस्था में विवाह किया है सोमेरी सौतेली माताने मुझे निकाल दियाहै वहसाधू बड़ा दयावन्तथा मेहरनिगार का हाल सुनकर अति दुःखित हुआ और कहा कि मैंने तुझको अपनीबेटी बनाया तू साधुओंको भोजनकाभागलगाकरदियाकरऔरप्रसन्नताकेसाथमेरेस्थानपरवासकर यह कहकर उसकोअपने भण्डारेका स्वामी बनाया मेहरनिगार ईश्वर का धन्यवाद करके वहां रहने लगीअबअमरूकावृत्तान्तसुनियेकि मेह-रनिगार के ढूंढ़ने को जोचला तो कईदिन के पश्चात् उसबादशाहके नगरमें पहुंचा जो मलिका को जंगलसे लेगयाथा वहांभी ढूंढ़ढाढ़ कर उससाधू के खेतमें आया तो वहां हायपरी २ जो उसके मुखसे सुना

तो जानाकि यहां भी मलिका आईथी वहांसे उस जंगलमें पहुंचा जहां घोड़ेकोव्याघ्रने मारडाला था और जीनकोपृष्ठमें बांधकर मलिकाचली आईथी अमरूने जीनको उठाकर जनबोलमें रक्खा वहांसे चलकर उस चौधरीकेनगरमें आयाऔर वहांसेचलकरसाधूकोकुटीपर आया फिरते२ पीछेसे अपने कार्यको सिद्धकिया दूरसे जाकरदेखा कि मेहरनिगार साधुओं को छांदा बांटरहीहै आपभी अमरू उनही के साथ जाकर बैठगया जब मेहरनिगार उसकोभी छांदादेनेलगी तब अमरूने रोकर कहाकि मैं साधूनहींहूं मैं आपका चैकर अमरूहूं और अपने अपराध करनेके कारण इतना दुःख उठायुका देशदेशकी राखउड़ाता आता हूं कि इससेमरनाउत्तमहै मलिकाने जो अमरूको देखातो लिपट कर रोनेलगी साधूने दौड़कर कहाकि बेटीऐसी क्योंरोती हो कुशल तो है उसने कहा कुछ नहीं मेरापिता यहीहै तबतो साधु उसे समझानेलगा कि ऐसमुष्य पुत्रीको कोई इसप्रकार से रखताहै अमरूने कहा क्याकरूं इतना सामान कहांपाऊं कि इसका विवाहकरूं साधुनेपांचसौ रुपया देकर कहा कि अति शीघ्रही जाकरइसकाविवाहकरदे कि इससे तूउऋणहोजावे अमरूरुपये औरमेहरनिगारको वहांसेलेकर चलामार्ग में पहुंचकर रुपयेको जंबोलमें रखकर मेहरनिगार को बेहोशकरकेएक गठरीमें बांधकरअपने शिरपर रखकर चलाकिइसको क़िलेमेंपहुंचाकर आरामसेबैठेंपरन्तु शहजादोंनेभी सिपाहियोंसे खबरपाईथीकिरात्रिको मेहरनिगार क़िलेसेनिकलकर हमारेखेमेतक आकरमरदाना भेषधारण करकेचौकीके घोड़ेकोले सवारहोकरचलीगई परन्तुयहनहीं विदित होता कि किधरगई और अमरू भी उसके ढूंढ़नेके लियेगया है तब तो सबलोगों ने सलाहकी कि इस पहाड़के रास्ते के सिवा और कोई मार्ग इसदिशाकोआनेकेलियेनहींहैइसलियेचारसौसेनाउसपहाड़मेंजाकरछिपरहैंऔर बराबरसे डाकचौकियोंको बैठादीजावेकिजिससमयअमरूमलिका कोलेकरआवे मलिकाकोछीनलेवें और अमरूकोमारडालें औरजीता पकड़लेआवे तो अतिही उत्तमहोवे और हमलोगोंको उसीसमय खबर देवेतो हमभी सेनालेकर पहुंचें और सहायता देवेंकि उनको खटका न होवे और जिनलोगों कोसाथ लेजानेके लियेसुनाथा उनको आज्ञादीथी कि सदैव कमरबांधेतैयाररहेंऔर घोड़ोंकी बदलीहुआकरे तथाचअमरू जबगठरीबांधेहुये पहाड़के समीप पहुंचाताउसी पहाड़से चारसौसिपाहियोंने निकलकर चारोंतरफ सेघेरलिया और अमरूको दुःखदेनेलगेतब अमरूने भीतलवार निकाली किइतनेमें शहजादोंने जो अमरूकेघेरजाने की खबरसुनी तो उसीसमय सेनासमेत दौड़धाये अमरूने जबशहजादों को सेनासमेत आतेदेखा तब तो व्याकुलहुआ कि एकतो मैंअकेलादूसरे बोझलियेहूं इससे लाचारहूं यह कहकर ईश्वर२ करनेलगा कि इतनेमें

नक़ाबदार चालीससहस्रसेना सहितआपड़ंचा और जहांदार औरजहां-
गीरकाबुली और तोपीनकोमारकर हरमज़ेव आफ़रांमरज़की सेनाको
व्याकुलकरदिया और बहुतसेमारेगये औरबहुतसेभागगये तबशाहज़ादे
जहांदारऔर जहांगीरकी लोथकोलेकर रोतेपीटते अपने स्थानपरचले
गये और नक़ाबदारअमरूको क़िलेतकपड़ंचाकर अपने स्थानकोजिधरसे
आयाथा उधरी चलागया अमरू क़िलेमें जाकर मलिका को महल में
करकेअपनाअपराध क्षमाकरवाकर आरामसेबैठा अबहूनका वृत्तांतछोड़
करअमीरका हालसुनातेहैं किजब अमीरगुलिस्तानसे निकलेतोचालीस
दिन तकबिच्छिप्तकीभांति जंगल२ फिराकिये हूकतालीसवेंदिन सावधान
होकर एक क़िलेकेनिकटपहुंचे लेकिनक़िलेकादरवाज़ाबन्दथाऔरउसके
चारोंओर देवघेरे हुयेखड़ेथे अमीरने जाकर ऐसे ज़ोरसे शब्दकिया कि
क़िला हिलने लगा और सुननेवाले बधिर होगये और जोसंमुख खड़ेथे
भागगये और देवोंके सेनापतिने अमीरको देखकर पहिंचाना और संमुख
आकेकहनेलगा किहेबलबुद्धिनिधान आपपरदेक़ाफके बागोंकोउजाड़कर
औरदेवोंका नाशकरके यहांभीआपड़ंचे मैं तुमको अच्छेप्रकार जानता
हूं परन्तु आजतुम मेरे बशमें आयेहो अबजीते न जानेपावोगे यहकहकर
एकखड्ग अमीरकेशिरपरमारापर अमीरनेउसको रोककर एकतलवार
ऐसीमारी कि उसदेवका एक हाथशिर अर्द्ध कटि तक कटिके पृथ्वीपर
गिरपड़ाऔर शेषसेनाउसको देखडरकर भागगई और उसक़िलेमेंगाव
पावोंकी जातिके लोगरहतेथे जिनके बादशाह का नाम तुलूथा क़िलेसे
बाहर निकलकर अमीरको बड़ीप्रतिष्ठासे संमुखहोकर अपने स्थानमेंले
गया और बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की अमीरने मेहमानदारीके
पश्चात् उससे पूछाकि तुमुझको मेरेस्थानपर पहुंचासक्ताहै उसने कहा
किपहुंचा क्योंनहींसक्ता परन्तुआसमानपरीने यहढिंढोरा फिरवायाहै
किजोकोई अमीरकोदुनियामें पहुंचावेगा उसकोमैं बडादंडदूंगी लेकिन
मेरी कन्याके साथ आप अपना बिवाहकरैं तो यह भी स्वीकारहै उसने
कहाकि मुझेयहांके लोगोंका कुछबिश्वास नहींहै इसवास्ते मैं बिवाह
नहीं करूंगा तब बादशाहने कहा अगर बिवाह नहीं करते तो मेरे
शत्रु रुखपक्षी को मारकर मुझे आनन्दित कीजिये इनदोनों बातों में
से एकपर भी आप आरूढ़हों तो मैंआपको पृथ्वीपर पहुंचा कर आस-
मानपरी की बदनामी अपने ऊपर लेसक्ताहूं अमीरने उत्तरदिया कि
दूसरी बातमुझे मंज़ूरहै चलके उसका स्थानमुझे दिखा तुलूने अपने
आदमियों कोअमीरके साथकरके आज्ञादी किइनके साथजाकर दूरसे
रुखका स्थानदिखाआवो अमीरनेजाकर एकसपेदकूचा देखकर पूछाकि
यह कूचा कैसाहै उनलोगोंने कहाकि यह उसी पक्षीका अण्डाहै जो
तुलूबादशाहकाशत्रुहै औरउसीकेडरसे बादशाहव्याकुलरहताहै विदित

हुआ कि इससमय वह कहीं चरनेको गयाहै तब अमीर उसकेअण्डेके समीपजाकर बैठरहे कि जब आवे तो पकड़ने की कोई युक्ति करें जब वह पक्षीआकरअपनेअण्डे परबैठाऔरउसकेऊपरपरफैलालिया तबअमीरने अपने चित्तमें विचारकिया कियहबहुत बामलबड़ानहै इसकावशमेंआना दुर्लभहै और निश्चय है कि यहदुनियामेंभीजाताहोगाइससेयहीअच्छा है कि इस के पैर में लिपटकर जोरसे शब्द करें तब यह व्याकुल होकर दुनियाकीतरफउड़करजावेगा इसीके साथ हमभीदुनियामेंपहुंचजावेंगे यह विचार कर अमीर उसके पैरमें लिपटगयेऔर वहबहुतजोरसेउड़ा परंतु जब अखजर समुद्रके मध्यमें पहुंचा तो अमीरके हाथ मेंइसजोरसे चोंचमारी कि अमीर काहाथउसकीटांगसेछूटगयाऔरदुनियाके पहुंचने की इच्छा रहगई और अमीरका नीचे पहुंचना था किखाजेअखजर औरखाजेअलयासनेईश्वरकीआज्ञासेहाथोंहाथलेकरपृथ्वीपरलेटादिया कि आरामपावे किसी प्रकार से दुःख न उठावे परंतुअमीरउसकेदुःखसे बेहोश होगये अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरीकासुनियेकिएक दिन उसने अब्दुलरहमान से पूछा कि देखोतो अमीरदुनियामेंपहुंचगयेया हमारे देशमें हैं अगर दुनियामें पहुंचे तो किस प्रकारसेअब्दुलरहमान ने रमलसे विचारकर कहा अमीर गाव पावोंके क़िलेतक गया था तो देखा कि तुलूबादशाह को देवोंने चारोतरफ से घेर लियाथा अमीरने सबकोमारकरहटादियातबबादशाहतुलूनेकिलेसेबाहरनिकलकरअमीर को बड़ी प्रसंशाकी और हाथपकड़कर अपने क़िलेसे लेजाकर कई दिन तकमेहमानदारीकीतत्पश्चात्एकदिनअमीरनेकहाकि तूमुझकोदुनिया मेंपहुंचासक्ताहैतबउसनेआपकीआज्ञानुसारकरकहाकिमैंआसमानपरी कीआज्ञाकेविरुद्धनहींकरसक्ताहूंपरंतुजोआपमेरीबेटीकेसाथविवाहकरें लेकिन अमीरने स्वीकार न किया तब उसने फिर कहाकि जो आपमेरी बेटीके साथ विवाह करना स्वीकार नहीं करते तोमेरा एकभ्रातृखनाम पक्षीहै उसीकोमारडालिये ता मैंआपकोदुनियामेंपहुंचादूंगा अमीरने दूसरी बात स्वीकार की और कहा कि तुमहमको उसकास्थानचलकर दिखलादेवो तथास्तु उसनेअमीर को उसके स्थान तक पहुंचादिया परंतु अमीरनेवहांजाकरविचारकियहदुनियाकीतरफभी अवश्यजाताहोगा इससे इसीके पैरको पकड़ कर दुनिया की तरफ उड़कर चलेजावेंजबवह आया ता अमीर ने उसका पैर पकड़कर ऐसे जोरसेशब्दकिया कि वह व्याकुल होकर उड़ाऔरजबसमुद्रअखजरमेंपहुंचातोऐसेजोरसे अमीर के हाथमें चोंचमारी कि उसका पैर अमीरकेहाथसेछूटगयाऔरअमीर समुद्रमें गिरपड़े यहसुनकरआसमानपरीबहुतरोईऔरउसीसमयकरी-गहको आज्ञादी कि तू सेना लेकर गावपावों कोजाकरमारडालऔर तुलूबादशाहको पकड़ला और आपअखजरसमुद्रकीतरफचलीपरंतुहज-

रत अख़ज़र औरअलयासके सामनेलज्जित होकरअमीरकेसमीपगई जब अमीर सावधान हुये तो हज़रत अख़ज़र सेआसमानपरीका बड़ागिल्ला किया तब उन्हों ने कहा कि अमीर बहुतगई थोड़ीरहीअब न घबराइये अभी आसमानपरी आईथी परंतु हम लोगों को देखकरलज्जितहोकर पलटगई तबअमीरने कहाकिआपलोग मुझकोकृपाकरके क्लिेशावपामें पंहुचादेवो उन्होंने अमीरकी आज्ञानुसारवैसेही कियाजबअमीर वहां गयेतोदेखा कि सब नगर वीरान पड़ाहै एकपक्षीभी नहींदिखाईपड़ता तब अमीरने हज़रत से पूछाकि हज़रत इसक्लिे के सब मनुष्य कहांगये जो दिखाईनहीं पड़ते इसके देखने से तोचित्त व्याकुल होता है खाजे खिज़रने कहाकि यहसब दुःख जो तुमपर पड़ाहै यहसबअबदुलरहमान न आसमानपरी से कहाहै सो उसीने करीशहको भेजकरइसनगरको फुकवादिया और जितने मनुष्यमिलेसबकोढूंढकरमरवाडालाहैयहकह कर हज़रत खिज़र तो वहीं से अन्तर्ध्यान होगयेऔरअमीरतीनदिनतक अकेले उसनगर में रहकर चौथेदिन एक जंगल की तरफ चले और सात दिनतक बराबर चलेगये आठवेंदिन एकनगरके किलेमेंपहुंचेसमीपजाकर देखा तो विदित हुआकिमदायनकाक्लिाहैऔर उसीप्रकारसे सबस्थान बनेहुये हैं परंतु मनुष्य कोई नहीं दिखाई देता तबतो बड़े आश्चर्यमेंहुये कि मनुष्य यहांसे कहां चलेगये वहांसे निकलकरमेहरनिगारकेस्थानपर गये तो अपने हाथकेदोहेतक लिखेहुयेदीवारोंपरदेखे परंतु कोई मनुष्य न दिखाई पड़ा वहां से चलकर जबबागमें आया तो देखाकिएकदेव बड़ा भारीखड़ाहै अमीरको देख हँसकर कहने लगाकि ओमनुष्यमुझको इसकिलेमें मनुष्योंकेबसाने कोइच्छाहैऔरराचिदिन इसीविचारमेंरहता हूंकिइसक्लिेको मदायन एकक्लिा जादुनियामेंहै उसीतरहसे बनवाया है और मनुष्योंसे आबाद करूंगा औरदोमनुष्यमें दुनियासेलायाहूंपरंतु तूआपही आया इसकारण तुझको इस क्लिेका बादशाह करूंगा और सबदेशतुझकोदूंगा अमीरने पूछा कि यहकौनदेशहैउसने कहाकिकाफ तबअमीरने कहा कितूमुझको भी जानताहै कि मेरा नामक्याहै उसने कहाकि मैंने केवल आजही तुझकोदेखाहै किसतरहसे पहचान सकताहूं अमीरने कहा कि जुलजुलालकाफ मेराही नामहैऔर मेराबलजगतमें प्रसिद्धहै तबउसने पूछा कि अफरेत और अउकेमाता पिता को तूहीने माराहै अमीर ने कहा कि अफरेत क्या मैंने सब देवों का नाश कियाहै तो उसने कहा कि तो तू इसक्लिेका भी नाशकरेगा इससेमैंतुझकोमार करकाफके देवोंका बदलालेताहूं यहकहकर एक पत्थर लेकर अमीरके ऊपर देमारा तब अमीरने उसको रोंककरएक हाथ ऐसा माराकिवह समाप्त होगया वहांसे चलकर एक दालान में गया तो वहां देखा कि दो लड़के अति खरूपवान बैठेहैं अमीरने पूछाकितुम कौनहो उन्होंने कहा

कि हम एक सौदागर के पुत्रहैं पिताहमारा मरगयाहै यहदेव जिसका यहस्थानहै हमको उठालेआयाहै और इसदुःखमें डालदियाहै अबआप बतलाइयेकि आपकौनहैं अमीरने कहा किमेरानाम हमजाहै परंतुलोग जुलजुलालक़ाफकोचक सुलेमानकहतेहैंऔर बलबीरतामेंप्रसिद्धहूं दुनिया सेआकर मैंने सब परदेक़ाफके देवोंका नाशकरदियाहै और इसदेवकोजो तुमको उठालायाहै अभीमारकर आतेहैं अबतुमलोग निःसंदेहरहोतुम को हमदुनियामें पहुंचादेवेंगे इतनातुम्हाराभी कार्यकरेंगे तबतोबेलड़के अतिप्रसन्नहोकरअमीरके पैरोंपरगिरपड़े अमीरने पूछाकितुम्हारानाम क्याहैएकने कहाकिमेरानाम खाजेआसाचहै दूसरेने कहाकि मेरानाम खाजेबहलोलहै अमीरने कहाकि ईश्वरकीकृपासे दुनियामेंपहुंचकरएक को वज़ीरबनाऊंगादूसरेको बख़्शीकरूंगाउन्होंने कहाकिजबदुनियामें पहुंचनावेंगे तबवज़ीर और बख़्शी कहलावेंगे पहिलेतो हमलोगों का दुनियामेंपहुंचनादुर्लभहैइसी दुःखमेंमरजावेंगे अमीरने उनकोसमझाकर कहाकि ईश्वरकीकृपासे अतिशीघ्रहोतुमकोलेकर दुनियामेंचलेंगेइसदुख सेछोड़ावेंगेयहकहकर उनकोसाथलेकरचला और क़िलेसेबाहरनिकल एक वृक्षके नीचेबैठकर उनलड़कोंकोभीभोजनदिया और आपभीखाय तबतो बेलड़के अति प्रसन्नहुये और दोघड़ी तकबैठेरहेकि इतनेमेंएकदेव तलवार हाथमेंलियेहुये अमीरके सम्मुखआकर कहनेलगा कि ऐमनुष्यत् बड़ादुष्टहैकिमेरेरक्षकको मारकर इनदोनोंलड़कोंको लेकरचलाजाताहै और मुझको न डरातूमेरानाम नहीं जानता कि सुमारदेवहै मुझसे अधिक बलवानदेव क़ाफमेंनहींहै अमीरने पूछाकियह क़िला मदायन के तख़्तने बनवायाहै उसने कहा यहक्या जितने स्थान हज़रत सुलेमानके परदेक़ाफमेंहैं वह सब मेरेही हाथके बनवाये हुयेहैं और ये कारख़ाने सबमैंने बनायेहैं अबतू बतला कितेरा क्या नामहै और यहांक्यों आया अमीरने कहाकि आसमानपरी जो परीज़ादोंके बादशाहकी बेटीहै उसकामैं पतिहूं और जुलजुलालकोचक सुलेमान मेरानामहै और मेरीप्रबलता और बहादुरी तुम्हारे जगत्में प्रसिद्ध हैतब उसने कहाकि क़ाफके बागोंका आपहीने नाशकियाहै परन्तु आपकी मृत्यु हमारे हाथसेथी वही आपको खींचले आईहै यह कह-करएक तलवार अमीरके शिरपरमारी अमीरने रोकर एक हाथ अक़रब सुलेमानीका ऐसा माराकि उसके दोभाग होगये लड़कों ने जो अमीरकी बहादुरी देखीतो प्रसन्नहोकर कहनेलगे किवाह साहब आपतो बड़े बलवानहैं अब हमलोग आपहीके साथरहेंगे जहां चलोगे वहीं चलेंगे और आपही की आज्ञामें रहेंगे विदित होताहै कि आप अपने नामोंके प्रतापसे ऐसे २ देवोंको मारसक्तेहैं नहीं तो मनुष्य को इतनी शक्तिकहां होसक्तीहै कि देवोंसे जीतसके हम अपना भी यही

नामरक्खेंगे इसीप्रकारसे बातेंहँसने की करतेहुये लड़कों समेत चले वेलड़केभीअमीरसे अतिप्रसन्नहुये तबअमीरने उसव्याघकी खालजिसको क्लिलस्याहबूममें मारायाथा दोभागकरके दोनोंको देकर एकका जहांदार कलन्दर दूसरेका जहांगीर कलंदर नामरखकर दोनोंकी प्रतिष्ठासमान रक्खी जबअर्द्ध भूगोलपर पहुंचे तो अमीर व्याघछाला बिछाकर लेट गये और ठंडी २ वायुमें निद्राआगई थोड़ीसमयमें सोगयेतब वेलड़के एक नदीपरजो उसोद्दच्चके समीपथी जाकर स्नानकरने औरखेलने लगे अचानक एकदेव जंगलसे निकला तो उनलड़कोंने कहाकि वह मंच यादहै चलोइस देवको मारेंनदीसे निकलकर ललकारकर कहाकि ओ देवकहां आताहै अभीतेरा नाशकरदेता हूं तू जीतानजाने पावेगा हम ईश्वरके सेवकहैं तुमलोगोंको अच्छीतरह से जानतेहैं यह कहते हुये उसकीतरफ चले और जब देखा कि यह देव कुछहमारी बातों को सुनकर डरतानहीं और बराबर चलाआताहै तबतो डरगये और दौड़कर अमीरको जगादिया और सब हालकहा अमीरने देखा कि एक बड़ाभारी देव चलाआताहै जब अमीरके समीपआया तब अमीरने ईश्वरका नामलेकर उसको देमारा और छातीपर चढ़कर एक खंजर मारकर दोटुकड़ेकरदिये और उसकोउठाकर फेंकदिया औरलड़कोंसे कहाकि खबरदार फिरकभीऐसासाहस नकर नहींतो वृथातुम्हारा प्राण जायगा दूनदेवोंके हाथसे किसी प्रकारसे नबचोगे यह कहकरसब दिशाकोचले पांचवेंदिन नदीकेतीर एकनाव मालसे पूर्णदेखकर उसके समीपजाकर मल्लाहोंसे पूछाकि यहनाव किसकीहै और कहांजायगी उन्होंने कहाकि यहनावसमोद सौदागरकीहै दुनियाकी तरफजाती है अमीरने कहाकि हम तीनमनुष्यभी दुनियाको चलेंगे नावपर सवार करालो जो किरायामांगो वह हमदेवें उनलोगोंने कहाकि आपलोगों को चढ़ाकर दुनियामें पहुंचाना यहमेरे आधीन नहीं हमारा स्वामी बैठाहै उससेजाकर यह बातचीत कीजिये वह आपलोगोंको नावपर सवारकरा लेवेगा तब अमीरने आकरख्वाजे समीदसे वही बातें कहीं ख्वाजेने कहाकि किरायाक्याहै आपमेरीबेटी के साथ विवाह करलो हम आपको दुनियामें पहुंचादेवें और किसीप्रकारसे दुःख आपको न होने पावेगा अमीरने कानोंपर हाथरखकर कहाकि यह मुझसे न होगा तबतो सौदागर उसकी बातें सुनप्रसन्न हुआ और अमीर भी उठकर चलेआये परन्तु उनदोनों लड़कोंने सौदागरसे कहाकि जो तुम हमलोगों काभी विवाह करदो तो हमअमीर का विवाह तुम्हारी बेटीके साथ करवादें सौदागरने कहाकि मुझे यहभी स्वीकारहै तब लड़कोंने आकर अमीरसे कहा कि आपविवाह क्योंनहीं करते कि एक स्त्रीभी पातेहो और सेंतमें दुनियामें पहुंचतेहो वहां पहुंचकर कैसे २

मज़े पावोगे अमीरने कहा कि हम विवाह न करेंगे उन लड़कों ने कहा कि आपको विवाह करना पड़ेगा अमीर ने कहा क्या तुम्हारी जोरावरी से विवाह करना पड़ेगा अमीर उनकी बातें सुनकर हँसने लगे और कहा कि अच्छा जो तुम लोगों को दुःख न होवे तब तो वे लड़के अति प्रसन्नताके साथ उस सौदागरके समीप दौड़ गये और उससे कहा कि आप सब सामान विवाहका इकट्ठा कीजिये अमीरको आपकी बेटी के साथ विवाह करना स्वीकार है तो सौदागर ने उसी समय सब सामान करके अमीर का विवाह अपनी बेटी के साथ और उन दोनों लड़कों का विवाह एक दूसरेकी लड़कियोंके साथकरदिया तीनों मनुष्य अपनी २ स्त्रीके साथ रात्रिको सोये प्रातःकाल उठकर देखा तो आसमान परी अमीरके बगलमें सोरही है और वहसौदागर जो था वह अब्दुलरहमान है अमीर इसको देखकर बड़े आश्चर्य में हुये और पहिले एकबेर अमीरने आसमानपरीको तलाक़ देकरछोड़दियाथा इस कारणअब्दुलरहमानने फिरसे आसमानपरी काविवाह अमीरके साथ करा दिया तब आसमानपरी अमीरके पैरोंपर गिरकररोनेलगी कि मेराअपराध क्षमाकरो और अब्दुलरहमान भी अमीर के पैरोंपर गिरपड़ा और कहने लगा कि अब तक जो अपराध हुआ वह क्षमा कीजिये अब जो अपराध होतो दण्डदीजियेगा और आसमानपरीकहने लगी कि अबआपको अवश्य दुनियाकोभेजदूंगी इसीप्रकारसेप्रार्थनाकरकेअमीरको लड़कों समेतगुलिस्तानअरममेंफिरलौटालेआयेऔर छः महीनेतकआसमानपरीकेसाथसुख उठाया तत्पश्चात् एकदिन अमीरनेआसमानपरीसेकहाकिअबमुझको तू दुनियामें भेजदे यहां बड़ादुःखहोताहै वहांजाकर अपने लड़के बालोंको देखकरचित्तको प्रसन्नकरूं आसमानपरीने कहाकिईश्वर की कृपासेकल प्रातःकाल आपको रुखसतकरूंगी और यहतो बतलादिये किफिर कभी यहां आकर अपना स्वरूप मुझको देखलावोगे यानहीं अमीरने कहाकि हमलिकाकाफजिसप्रकार सेयहांसेमेहरनिगार के देखनेकी इच्छाहोती हैउसी प्रकारसेवहांसेतुम्हारेदेखनेकोइच्छाहोगी आसमानपरी अमीर कीबतोंसे अति प्रसन्नहुई और प्रातःकाल तख़्तपर बैठाकर उन्हींचारों देवोंको जो सदैव अमीरको लेजाया करते थे बुलाकर पारितोषिकदेकर आज्ञादी कि अमीरको लेजाकर दुनिया में पहुंचा आवो और इनको किसीप्रकारसे दुःखन होने पावे यह आज्ञा देकर सब उत्तम २ वस्तु तख़्त परर खवाकर अमीरने इच्छाकी कि तख्तपरसवारहोकर चलें कि इतनेमें चारसौ देव और जिन जोशहपालशाहके पालेथे रोते पीटते आकाशसे आकर उतरे आसमानपरी यहहाल देखकर व्याकुल होगई और पूछने लगी किकुशलतोहै उनदेवोंने कहाकिशहपालशाहकास्वर्ग वासहोगया हमलोग आपके पास चलेआये यहसुनकर आसमानपरी

तख्तपरसे नीचे गिरपड़ी औरसब क़ाफ़केबासी स्याहपोशहोगये और शोरगुल होनेलगा रोते २ सबबेहोश होगये आसमानपरीने हाथजोड़ कर अमीरसे कहा कि जिसप्रकार से आप सवाबर्ष यहां रहे उसी तरहसे चालीसदिन और रहिये जब मैंशहपालकी क्रिया कर्म से छुट्टीपाऊंगीतोआपको चालीसदिनकेपश्चात्आकरबिदाकरूंगीअमीरने कहा कि अच्छा तुमजावो मैंयहांरहूंगा जो तुमकहतीहो वहीकरूंगा आसमानपरीने कहा कि ऐसा न हो कि तुम दुःखितहोकर कहींचले जावो और मुझको फिर दुख उठानापड़े सलासलपरीको आपकेपास छोड़ेजातीहूं जो चित्त न लगेतो इससे कुंजियांलेकर सुलेमानकेअजायब खानेमें जाकर चित्त बहलाना यह कहकर शहपालशाह की लोथ लेकर सेहरिस्तान नज़रीकीतरफ़ रवानाउड़ी वहां पहुंचकर सब छोटे बड़े जाकर इकट्ठाहुये और चालीस दिनतक मातमपुरसी करके काले वस्त्र पहिनेरहे अमीरका हाल सुनिये कि दो तीनदिन तो रहेचौथेदिन घबराकर बाहरजानेकी इच्छाकी तब सलासलपरीने अमीर से कहा कि जबतक आसमानपरी न आवे तबतक आप अजायबखाने सुलेमानीमें जाकर दिल बहलाइये यह कहकर एक कुंजी अमीरको दी और कहा कि आप अजायबखाने सुलेमानीमें जाकर सैर कीजिये अमीर ताला खोलकर अन्दरगये तो अन्दर जातेही दरवाज़ा अंधियारेसेबन्द होगया एक सायतके पश्चात् अंधियारा दूरहोगया तो एक बड़ाभारी मैदान दिखाई पड़ा तब उस मैदानकी तरफजागया तो एक तख्त जड़ाऊ दिखाई पड़ा और उसपर एक गुलदस्ताआधा लालऔरआधा सुर्ख रक्खाथा अमीरने उठाकर जोसूंघा तो बेहोश होगया और तख्त पर गिरपड़ा स्वप्नमेंदेखा कि एक बड़ाभारी क़िलाहै और उसमें बड़े २ स्थान बनेहैं उस क़िलेमें जागये तो देखा कि एकबन अति उत्तमहै और उसमें एकस्त्री युवा अतिस्वरूपवानहै लिबास पहिनेहुये तख्त पर बैठी है अमीर उसको देखकर अति मोहित होगये तब उसने चारसौ परियों को नाचने गानेकी आज्ञा देकर हरएक प्रकारसे अमीरके दिलकोप्रसन्न किया इतनेमें उसके पिताकी आमदहुई तब उसने अमीरसे कहा कि अब मैं कहांजाकर छिपूं अमीरने कहा कि क्यों डरतीहै जिस प्रकार से बैठीहै उसीप्रकारसे बैठीरह पिता तेरा आताहै तो आनेदे कुछ सन्देह न कर इतनेमें पिता उसका आया और अपनीबेटीको अमीरके पास बैठेहुये देखकर अमीरके कदमोंपर गिरकर सलामकिया अमीर ने उसको छातीसे लगाकर पूछा कि आपने मुझको क्योंकर पहिंचाना है उसने कहा कि मैंने दूतोंसे सुनाथा कि जलजलालकाफ़ किसी समय में यहां आकर सुलेमानी अजायबखानेकी सैर करेगा और बहुतसे देवों का नाश करेगा और मनुष्यको कहां शक्तिहै कि यहां आवेऔरदेवोंका

नागकरे अमीर उससे अतिप्रसन्नहुये और उसकी बेटीके साथ अपना विवाहकिया और सातवर्षतक अमीरवहां रहे इसीमें दोपुत्रभीहुये एकदिन अमीर अपनीस्त्री समेत उस नहरके तीरपर बैठे ठंढी २ हवाले रहेथे कि उसने अमीरसे कहा कि हेअमीरइसमेंमेरी हबेल गिरीहैतुम जाकर निकाल लेआवो तो बड़ी कृपाकरो अमीरउसमेंडुब्बीमारकरजो निकलेतोवहीकोठरीहैऔरसल्लासलपरी सामने खड़ीहैअमीरनेव्याकुल होकर कहा कि मैंफिर उसीकोठरीमेंजाऊंगावहांमेरेदोपुत्रहैंउन्हींमें मेराप्राण लगाहै और सातवर्षतक वहांरहा न नहरमें डुब्बी मारता न यहांआता सल्लासलपरीनेकहा कि किसके लड़के किसकीलड़कियांवह सुलेमानी अजायबात है और केवल एकपहर आपको गयेहुआ चलिये सायंकालहुआ अब भोजन कीजिये वहसब जादूथी उसमें ऐसी २ बातें दिखाईपड़तीहैंउनसबको अपने चित्तसे दूरकरदीजियेकलदूसरीकोठरीमें जाकरदेखियेइसप्रकारसेअमीरकोसमझाकर महल सरायमेंलेआई और भोजनकराकरचित्तकोप्रसन्नकियाप्रातःकालउठकर अमीरअपनेनित्यनेम से छुट्टीपाकर एक दूसरीकोठरीमें गये थोड़ीदूरजाकरमैदानमेंएकतख्त पड़ाहुआ देखाऔर उसपर एकमूर्त्तिरक्खीहुईथीउसको उठाकरदेखने लगे कि इतनेमेंबेहोशहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े सुधबुध सबजातीरही उसी बेहोशीमेंदेखा कि एक बागहै औरउसमेंबहुतसी स्त्रियांजमाहैऔरवहीं स्त्री जिसकीतसवीर देखकर बेहोश होगयेथे नाचरहीहै औरस्त्रियां गा बजारहीहैं और बहुतसी स्त्रियां एकतरफ जुदा खड़ीहैंअमीरकोदेखकर बलछी लेले दौड़ींऔर अमीरभी अकरबसुलेमानी लेकरदौड़ेतबवे सब व्याकुल होकर भागीं इतनेमें अमीरके नेचखुलगये तो न कहींस्त्रियां न नाच न राग न वहबागहैसल्लासलपरी केवलसामनेखड़ीहै अमीरउसेदेख कर बड़े आश्चर्यमेंहुये और महलसरायकी तरफदेखनेलगे कि इतने में सल्लासलपरीभी उस कोठरीको बन्दकरके सामनेआकरखड़ीहुई अमीरने भोजनमँगवाकरखायाऔरराचिको आरामकेसोरहेतीसरेदिन तीसरी कोठरीकी सैरकोगयेतो थोड़ीदूर जाकर राहभूलकर एकरेगिस्तानमें जापड़े और सूर्यकी गरमीसे व्याकुल होगये औरसात दिनतक उसीमें हैरानरहे आठवेंदिन नईतरहका एकदेवदिखाईपड़ा जिसने अमीरको उड़ाकर कहसाके बराबर लेजाकर पृथ्वीपर छोड़दिया इतनेमें अमीरके नेच खुलगये तो देखा कि न कहींरेगिस्तानहै न देवहै वहीस्थान और सल्लासलपरी सामनेखड़ीहै तबअमीरने सल्लासल परीसे सबहालकहातब उसने कहा कि इनकोठरियोंमें इसीप्रकारकी अपूर्वबस्तुविदितहोतीहैं कि मनुष्यदेखकर व्याकुलहोजाताहै परंतु किसीप्रकारसे दुःख नहीं पाताइसीप्रकारसेअमीरने उन्तालीसदिनमेंउन्तालीसकोठरियोंकीसैर करके अपूर्व २ बस्तु देखकर चित्तको प्रसन्नकिया चालीसवेंदिनअमीरने

सलासलपरीसे कहा कि चालीसवीं कोठरीको भी खोलदे कि इसकेभी तमाशेको देखकर चित्तकोआनन्दकरूं उसने कहा कि इसकी कुंजीमेरे पासनहींहै इसकोमैनहीं खोलसक्तीहूं कि यह जिन्दान सुलेमानी है अमीरने धमकाया तब उसने फिरकहा कि इसकी कुंजी मेरेपासनहींहै परंतुअमीरने सहजोरीसेउसके हाथसे सबकुंजियों कोछीनकर उसको खोलकरभीतरगयेऔरसलासलपरीआसमानपरी के पासदौड़ीगईऔर कहा कि अमीरने सहजोरीसे हमसे कुंजी छीनकर चालीसवीं कोठीमें गयेहैं मेरा कहना नहींमाना रावीलिखताहै कि जिस समय अमीर चालीसवीं कोठीमेंगये तो देखा कि हजारहों देवऔर परीजादक़ैदहैं सबोंने आकर अमीरसे सलामकरके कहा कि जुलजलालकाफआपकृपा करके हमलोगोंको इस कारागारसे छुड़ाइये अमीरने पूछा कि क्योंकर तुमलोगोंने हमकोपहिंचानाकिहमीजुलजलालकाफहैंउनलोगोंने कहा कि इसमें बक़ौलसे हजरत सुलेमानके क़ैदीहैं औरयहांका क़ैदी कभी नहींजीताछूटताहै परंतु एकदिन हजरत सुलेमानने अपने मुखारबिन्द सेकहाथा कि किसीसमयमें जुलजुलालकाफ दुनियांसे आकर हमारे क़ैदियोंको छुड़ावेगा इसकारण हमलोगोंने जाना कि आपहीहैं सो कृपाकरकेईश्वरकेलियेहमलोगोंकोइसकारागारसेछुड़ाकरकृतय लीजिये अमीरको उनसबपरदयाआई तो एकतरफसे सबकीबेड़ियां काट २ कर छोड़ दियातबहरएकअमीरकेकदमोंपरगिर २ कर अपने २स्थानकोचले गये उसकेबाद आकस्मातअमीरकेकानमेंएकघोड़ेकीटापकाशब्दपड़ा तो अमीर उसतरफगयेतब देखा कि एक बछेड़ा अतिशोभायमान चित-कबरे रंगका चररहाहै अमीरकोदेखकरकूदनेफांदनेलगाअमीरउसको देखकरअतिप्रसन्नहुयेवहघोड़ापीछेकोकूदतेर अमीरको एकलातमारकर भगा तबअमीरबेताबहोगयेफिरक्रोधितहोकरउसकेपीछेदौड़ेवहभागके एक मकानमें घुसगया अमीरभी उसीके पीछेचलेगये परंतु उस स्थान में अंधियाराथा तिसपरभी शजरचिरागहाथमेंलेकरचले थोड़ीदूरकेजाने पर एकशब्दआया कि हे स्वामी अबबड़ा दुःखहुआ अब आकरहमको इससे छुड़ाओ तब अमीर जो उसकीतरफ गयेतो देखा कि आरनातीस और लानिसा बैठेहुयेरोरहेहैंअमीरने कहा कि तुमठहरोरहोअभीहम आकरतुमकोक़ैदसेछुड़ातेहैंइसबछेड़ेने हमको लातमारीहैइसकोमार कर अभी आतेहैं तब लानिसाऔरआरनातीसने कहा कि यहआपको जानता नहींथा यह मेरापुत्रहै आपइसका अपराध क्षमाकरें तब तो अमीर संदेहमें होकर कहनेलगे कि तुम देवऔरतुम्हारीस्त्रीपरीघोड़ा क्योंकर तुम्हारा पुत्रहै इसका वृत्तांत मुझको सुनावो तब उन्होंने सब वृत्तांतसुनाकरकहा कि इसकानाम हमने असकररक्खाहै फिरआरना-तीसने उसकोबुलाकरअमीरकेक़दमोंपरगिराकर अपराधक्षमाकरवाया

फिर अमीरने उनको कैदसे छुड़ाकर आज्ञादीकि तुमयहीं बैठेरहोहम आगे सैरकरके आतेहैं यह कहकर आगे जोगये तोदेखा कि एक मकान मेंदो परीज़ादे उलटेटगेहैं अमीरने उनको भीछोड़कर आगेबढ़े तोदेखा कि रहियानपरी और कमरचेहरा जिसकेसाथ अमीरने बिवाह किया था वहभी उसीस्थानमें क़ैदहै और दुःखकेमारे व्याकुलहै अमीरभीदेखकररोनेलगे तब उनकोवहांसे छुड़ाकर लानिसाऔर आरनातीसकोभी साथलेकरकोठरीसेबाहरआयेऔरउसरात्रिकोआसमानपरीके बिस्तरे परउनदोनोंकोसाथलेकरसोयेईश्वरकीकृपासेदोनों उसीरात्रिकोगर्भिणीहोगईं रावीलिखताहै किरहियानपरी से जोपुत्रउत्पन्नहोगाउसका नाम दुरदुरपोश होगाऔर कमरचहरेकेपुत्रका कमरज़ादा नामरक्खा जावेगा और उसका बयान आगेलिखा जावेगा फिर अमीर उनदोनों परीज़ादोंकोरुखतसकियाऔरवे अपनेस्थानकोगये अमीरनेआरनातीस सेपूछा कि अबतो मुझे दुनियामें पहुंचादो उसने कहा कि हमतैयारहैं चलिये तब अमीर लड़कोंको लेकर तख़्त परबैठे और वेदोनों कन्धेपर रखकर आकाशकी तरफउड़े और पहरदिन रहेजाकर एक नदीकेतीर उतरेतो वहां अमीरने एक स्थान अतिउत्तम बनाहुआ देखकर अति प्रसन्नहोकर उसमेंजाकर बासकिया फिर मालूमहुआ कि यह हज़रत सुलेमान का शीशमहल है और संसारमें प्रसिद्धहै और इसमें रात्रिको दीपककीकुछ आवश्यकता नहींपड़ती इसीभांतिकीबातचीतकरते२चार घड़ी रात्रिरहे सबलोग सोगये लेकिन अशकर बनकी तरफचरनेको चला गया उसकोवहांरहनान प्रसन्नकिआअब थोड़ासावृत्तान्तआसमानपरी कासुनियेकिजब आसमानपरी नेचालीस दिनके पश्चात्शहपालशाहकी क्रियाकर्म से छुट्टीपाकर सबछोटे बड़ोंको यथा उचित पारितोषिक और खिलअत देकररुखसतकरके गुलिस्तानअरमको आतीथीमार्गमेंसलासल परीने सलामकरकेबिनयकिया कि अमीरनेसुलेमानी कारागारमेंजाकर सबक़ैदियोंको छोड़दिया औरमेराकहनानहींमाना तब आसमानपरी ने कहा कि अतिउत्तम किया अबहज़रत सुलेमान की आज्ञानुसारहोगया फिर उसनेकहाकि आरनातीस और लानिसाकोभीछोड़दियातब भीआसमानपरीनेकहा कि अच्छाहुआ तबफिर सलासलपरीने कहाकि रहियानपरी औरकमरचेहरे कोभी छोड़दियाइसपर आसमानपरी ने कहा कियह बुराकिया मेरेशत्रुओं को नछोड़ता तो अच्छा करताफिर पूछाकिक्याहुआ सलासलपरीनेकहाकिमेरेसामनेतोइतनीहीबातेंहुईथीं औरईश्वरजाने क्याहुआ होगाइतनेमेंदूसरीपरीने आकर खबरदीकि आपके पलंगपरअमीर रहियानपरी औरकमरचेहरे को साथलेकरसोये और रात्रिको खूबमज़ाउठाया और उनकोरुखसत करकेआपलानिसा औरआरनातीससेतख्त उठवाकर दुनियांकी तरफ़गयेयहसुनकरआस

मानपरी क्रोधके मारेजलने लगी और कहनेलगी कि मैनेतो खुद इच्छा कीथी कि अबअमीर को दुनियामेंभेजदूं परन्तु उसने नमाना और मेरी सेजपरमेरी सवतियोंको लेकरसोया ता अबमैंभी उनको अच्छीतरह से दुःखदूंगी जैसा वेमुझे जलारहेहैं यह कहकरसेनासमेत तख्तोंपरसवार होकरअमीरके ढूंढ़नेकोचली जाते २ जब शीशमहलमेंपहुंचातो विदित हुआ कि अमीर इसीमेंहैंलानिसा और आरनातीसकी जोमौतआईथी तो आसमानपरीने पहिले उसीस्थानमें जहांवेदोनों सोतेथे जाकरदोनों कोमारकरअपनेहौसिलेकोपूराकियावहांसेउसीतरह रुधिरसेतलवारभ रेहुयेअमीरकेपासआकरइच्छाकीकिअमीरकोभीइसीतलवारसेमारेपरं तुकरशपनेतलवारछीनलियाऔरक्रोधितहोकरकहनेलगीकितूमेरीमाता हैनहीं तो इसखंजरसेतेरी आंतोंकाढेरकरदेतीतेराइतनाबड़ामुंहकिमेरे सामनेमेरे पिताके शिरपरतलवार चलायहसुन आसमानपरीचुपहोरही औरएकपचलिखकरअमीरकेपलंगपररखकेगुलिस्तानअरमकोचलीआई और एक दिनभी वहां नठहरी प्रातःकाल जबअसकर जंगलसे चरकर आयातो अपने माता पिताकोमराहुआ देखकर रोनेलगा उनकेदुःखमें अपना प्राण देनेलगा इतनेमें अमीरभी जागउठे तोदेखा कि लानिसा और आरनातीसकेशिरकटेहुये अलग पड़ेहैंतब बहुतप्रकारसे असकरको समझाकर कहा कि ईश्वरकी रचनाअपूर्वहै उसमें किसीकाकुछवसनहीं है ईश्वरकी आज्ञामें किसीका चारानहीं जो मुझको विदित होताकि किसने माराहैतोमैं अभीजाकर उसको मारतातेरेमाता पिताकाअवश्य बदलालेता अबतूअपना माता पितामुझीको समझमैं तुझको अपनेपुत्रकी तरह रक्खूंगा किसीप्रकारसे दुःखनहोने पावेगा तिसपीछे देखाकिएक पचपलंग पररक्खा हुआहै उसमें लिखाहै किइसबारमैंने आपहीइच्छा कीथी कि तुमको दुनियाकी तरफ भेजदूं और अपनी बात को पूर्णकरूं परन्तु विदित होताहै कि अभी आपका आबदाना क़ाफसे नहीं उठान उठेगा और इन आपकेदोनों कामोंने मुझको बड़ेदुःख दियेएक तोमेरे पलंगपर मेरीसवतोंको लेकरसोनादूसरे मुझसे छिपाकर दुनियाकीतरफ जानासो पहिलेके बदलेमें मैंनेइच्छा कीथी कि आपकोभी आरनातीस और लानिसाकीतरह एकबारगीमारडालूं परन्तु आपकीपुत्रीकरीशह से मजबूरहुई कि आपके बदलेमें युद्धकरने को आरूढ़होकर मेरेहाथसे तलवार छीनकर मेरेसाथ बहुतबुरीतरहसे सम्मुखहुई और दूसरेकेबदले मेंमैंने आरनातीस और लानिसाकोमारकरअपनाबदलाकियाऔरअब आपको देखतीहूं किदुनियाको क्योंकरजातेहो कौन पहुंचाताहैअमीर पचकोपढ़करसुन्नहोगये और सातदिवसतकवहीं लानिसाऔरआरना-तीसके दुःखमें ठहरेरहे और आठवेंदिन नेत्रोंमेंआंसूभरकर कहनेलगेकि अब हम दुनियामेंनजासकेंगे आसमानपरीके हाथसे बचकरजानादुर्लभहै

विदितहोताहै किइसीक़ाफ़में पड़ारहूंगा और यहींमेरीमृत्युहोगीअश-
कारनेसुनकरअमीरसेकहाकि आपक्योंमलीनहोतेहैंमैंआपकादुनियामेंप-
हुंचादूंगाआसमानपरीसेनडरूंगा आपमेरीपीठपरसवारहोकरचलियेअ-
मीरनेकहाकिइनदोनोंलड़कों क्याकरूं उसनेकहा किइनकोभीअपनेसाथ
सवारकरलीजिये अमीरने टोकरीबनाकर उनदोनों लड़कों कोबैठाकर
एकाबकी तरह दोनों तरफलटकाकर आपउसकीपीठपरसवारहुयेअश-
कर अमीरको लेकर दिनभरमेंहजारकोस लेजाताथा और एकसायतमें
एक मंजिल तैकरजाताथा इसीप्रकारसे नदीके पार होगयाजबपृथ्वीपर
पहुंचातो अति शीघ्रता से दौड़ा चलागया पहर दिनरहे नूरपहाड़पर
पहुंचातबवहांअमीरलड़कोंकोलेकर उतरपड़े तोदेखाकिउसीखोहमेंसे
हजरत खिज़र और अलियास दूनहींकीतरफचले आतेहैं अमीरदौड़कर
उनके क़दमोंपर गिरपड़े और अपनावृत्तान्त कहकर कहाकिऐहजरत
मैं आसमानपरीसे बहुत दुखितहूं यहांअबमेराचित्तनहींलगता उन्होंने
कहाकि हेअमीर अबन घबराओ अबकी अवश्यदुनिया में जाकर अपने
बालबच्चोंको देखकर चित्तकोप्रसन्नकरोगे चलोहमारीमाताकिजिसका
नाम बीबी आसफ़ा वासिफ़है आपको विदा करनेको बुलायाहै आपके
ऊपर उन्होंने बड़ीकृपाकीहै तब अमीरने दोनों लड़कों समेतपहाड़पर
गयेतो देखा किपहाड़पर एकमंडप है और उसमें रोशनीआपही आती
जातीहै उसके भीतर जोगये तो देखाकि एक वृद्धास्त्री हाथमें मालालिये
हुयेबैठीहै और ईश्वरका भजनकररहीहै अमीरउसको देखकरबड़ेसंदेह
मेंहुयेऔरनम्रताके साथ प्रणाम करके उसके समीप बैठे तबबीबीआस-
फ़ाने शिरकातोंसे लगाकरकहाकिऐपुत्रमैंतेरेदेखनेकीबड़ी इच्छा रखती
थी बड़ी बातहुई कितू मेरे पासआया और अपना समहाल सुनायाअब
ईश्वरकीकृपासे अतिशीघ्रही दुनियामें पहुंचेगा यहकहकर एकसवागज़
कीकमंद देकरकहा कि यहकमन्द मेरीतरफसे अमरूको देकर कहदेना
कि यह कमन्द मेरेहाथकी बनी हुईहै इसको अच्छी तरहसे अपने पास
रखना इससे तुझको बड़ासुख होगा और अनेकप्रकारके तमाशेयहदिख-
लावेगी जब इच्छा करेगा तो इससे देवोंको बांधलेगा यह हर प्रकार से
सहायक होगी और जब इसको मंत्र पढ़कर फूंकेगा तो हजार रंगकी
होजावेगी यह कहकर फिर कहा कि आज तुम हमारे यहां रहकर
मेहमान्दारीखावो अमीरनेअंगीकारकिया प्रातःकालजब अपनेनिमाज
पढ़नेसे छुट्टीपाई तो खाजा खिज़रने कहाकि ऐअमीर इसघोड़ेके पैरों
में नाल अवश्य चाहिये नहीं तो यह काफ़के जंगलोंको तैन कर सकेगा
यहकरकर अशकरके दोनों पर काटकर उसकी नाल लगाकर कीलें
जड़ दिया अमीरने कहा किऐ हजरत यह परकी नाल कबतक रहेगी
इससे क्यापुष्टता होगी खाजेने कहा कियह आपकी जिन्दगी भरइसके

पैरोंसे नछूटेगी और जब इसके चौथे पैरकी नाल गिरे तो जानना कि अब हमारी अवस्था समाप्तहुई अब अवश्यहमारी मृत्युहोगी औरएक जीन अमीरको देकर कहा कियहजीनइस घोड़ेपरकसोइसे सिकन्दर बादशाहने सात देशोंका कर लगाकर बनवायाथा तब अमीरने लेकर उसजीनको अच्छाकर परकसकर चलनेकोआरूढ़हुये और हजरत कीकृपा पर बहुतईश्वरका धन्यवादकिया अब थोड़ा साहत्तान्तआसमानपरीका सुनाताहूं जिस समय आसमानपरी शीश महलसे गुलिस्तान अरम को पलटकर गई तो कईदिनों केबाद सुर्ख पोशाकपहिनकरतख्तपर बैठकर अब्दुलरहमानसे पूछा कि कुछ हमजाका हालबतावो किकहांहैऔर क्या कररहा है उसने रमल में विचार कर कहा कि अमीर जाते २ पहाड़ नूर पर पहुंचे और वहांसे बीबी आसफा की इच्छाहै कि अमीर को दुनिया पर भेजें यह सुन कर आसमानपरी क्रोध से लाल होगई और कहनेलगी कि वह मेरी सवत होकर मेरे पुरुष को बिना मेरी आज्ञा दुनियाको भेजने की इच्छारखती है यहकह कर तख्त मंगवा कर सवार होकर हवा की तरह से जाकर कोह नूर को घेर लिया और तलवार लेकर बीबी आसफा के सम्मुख जाकर कहा कि क्यों बीबी तुझे कुछ मेरा डर नहींहै कितूने बिना मेरी आज्ञा मेरेपुरुषको दुनिया की तरफ भेजने इच्छाकी तुमनहीं जानतीहो कि मैंबड़ी क्रोध वन्तहूं किमैंने अपने दुष्टोंको थोड़ीसी बातमें बेकुसूरमतकर डालाहै और तुमको तो मैं कुछ समझतीही नहीं बीबी आसफाने उसकी इस प्रकारकी बातें सुनकर कहा कि तू पगली क्या बकती है मैं तुझे क्या जान्ती हूं तूकुछ मेरा कर सक्ती है जा तेरा शरीर भस्म हो जावेगा जोतू ईश्वर से नहीं डरती है और मुझसे ऐसी २ बातें करती है बीबी आसफा ने ज्योंहीं यह मुखसे कहा कि उसके शरीर से अग्निकी लपकें निकलने लगीं और वह चिल्लानेलगी अब्दुलरहमान ने दौड़करकर शियासे कहा कि तू अति शीघ्रही जाकरअमीरके पैरोंपर गिरकर बिनयकर कि वे आसमानपरी का अपराध बीबी आसफासे कह कर क्षमा करावें नहीं तो थोड़ेही कालमें आसमानपरी जलकर खाक होजायगी तब वह जाकर अमीर के पैरों पर गिर पड़ी और कहने लगी कि बाबा जानईश्वर के लिये माताका अपराध क्षमाकरो और यह मेरा कहना करो असीरने जाकर आसफा बीबी से उसका अपराध क्षमाकरनेके लिये प्रार्थनाकी तब उसने अमीरके कहने से अपने वजू का पानी आसमान परी के ऊपर छिड़का तब उसका प्राण जलने से बचा और व्याकुलहोकरपृथ्वी पर गिरपड़ी तब परियों ने उसको तख्त पर लेटालिया और गुलिस्तान अरम को उठा लाईं फिर बीबी ने उसदिन भी अमीर को नजाने दिया और प्रातःकाल होतेही हजरत खिजरसे कहाकि तुम जाकर हमजा

को रुधिर की नदी से पार करआवो इतनीमेरी आज्ञामानो फिर अमीरने बीबीसे प्रणामकरके लड़कोंको छीकोंमें लटकाकर आपअश्वकरपर सवार होकर हजरत खिजरके साथरवाना हुये और चौदह पन्द्रह कोसतक चलेगये तबनदी दिखाई पड़ी कि उसका दूसरा किनारा किसीको न दिखाई पड़ताथा और देखनेसेलोग व्याकुल हो जातेथे हजरत खिजरने अमीरसे कहा कि रुधिरकी नदी जो तुम सुनते थे वह यही है तुम लोग अपने नेत्रोंको मूंदलोइस तरफ न देखो तब अमीरने लड़कों समेत अपनी २ आंखोंका बन्दकरलिया हजरत खिज़रने सातपरगनाकर कहा कि अब आंखखोल दो तब अमीर ने नेत्रोंको खोलकर देखातो विदितहुआ कि नदीसे पार उतर आये और हजरतखिजर नहींहैं लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर चालीसदिन तक बराबर कूचकरते चलेगये एकतालीसवें दिन अखज़र नदीपर पहुंचे तो देखाकि एक अपूर्वप्रकार की नदीहै कि कोई दूसरा दिनारा नहीं विदितहोता और डरकेमारेकोईवहां एकमसायत नहीं ठहरता तबतो अमीर किनारे २ दसदिन तक चलेगये तब एक क़िला किखाई पड़ातो वहां ठहरकर उसक़िलेको देखनेलगे विदितहुआ कि यह गवसाका क़िलाहै इतनेमें एक मनुष्यने अमीरको देखकर पहिचाना और जाकर अपने बादशाहसे अमीरके आनेकी खबरकी तब वह बादशाह जिसका समरात नामथा क़िलेसे बाहर निकल आया और अमीरके क़दमोंपर गिरकर अमीरको अपनेक़िलेमें लेजाकर कईदिनों तक मेहमानदारीकी तत्पश्चात् अमीरने एकदिन उससे कहा कि तुम हमको इसनदीकेपार उतार सक्ते हो उसने कहा कि हम क्योंनहीं उतारसक्ते परंतु जो आपमेरी बेटी आरदानाके साथ बिवाहकरें तो आपको मैं इसनदीसे पार उतारदूं अमीरने इनकारकिया परंतु उन दोनों लड़कोंने समरातशाहसे कहा कि तुम बिवाहका सामानकरो हम अमीरको राजीकरलेवेंगे बादशाहने अपने सरदारोंको बिवाहके सामान इकट्ठा करनेकी आज्ञादी और लड़कोंने अमीरको समझाकर उसकेसाथ बिवाह करवादिया और राचिको जब वह अमीरकेसाथ पलंगपर सोई तो उसने चाहा कि अमीरकेगलेमेंहाथडालकर बोसालेवें कि अमीरने एकऐसा घूंसामारा कि उसके अगलेदांत टूटगये तब वह रोतीहुई अपनी माताके पासजाकर सब वृत्तांतकहा तब बादशाहने उनदोनोंलड़कोंकोबुलाकरकहनेलगा कि यहअमीरनेक्याकिया किवृथा मेरीबेटीकादांततोड़डाला उनलड़कोंनेकहा कि आपनहीं जानतेहमारे देशमें यही रस्महै कि पहिली राचिको जब स्त्री पुरुष साथसोते हैं तब दो दांत तोड़कर दूसरेदिन आधीनदीमें जाकर उसकेसाथ भोग करते हैं कि सदैव यादगारी रहै तब उनदेवों ने जाना कि सत्यहोगा इनके

देशमें ऐसाही होताहोगा उसीसमय एकनाव मँगवाकर सब सामान रखवाकर अपनी लकड़ीको सवार करवाकर लड़कोंसे कहा कि तुम जाकर अमीरसे कहोकि वेभी सवारहावें तबवे दानोंलड़के अतिप्रसन्न होकर अमीरके पासआकर यह सब वृत्तांत उनसे कहकर कहा कि चलिये नावपर सवार हूजिये अमीर लड़कोंकी बातें सुनकर हँसनेलगे और साथजाकर सवारहुये जब नाव आधीनदी में पहुंची तब आरदाना ने अमीरके साथसोनेकी इच्छाकी तबअमीरने उसकेहाथ बांधकरनदी में डालदिया और वहनदीमें डूबगई औरमल्लाहोंसे कहाकि अतिशीघ्र ही नावको पारकरो नहं तो तुमसबको मारडालूंगा मल्लाहोंने डरके मारे अतिशीघही चारपांच पालैं मसालपर उड़ाकर अमीरकी आज्ञानुसार पारकिया अमीर लड़कोंसमेत इष्वीपर उतरकर बाघकीखालपर बैठकर कलिया खिजरका निकालकर दोनों लड़कोंको भी दिया और आपभीखाके सावधान होकर वहांसे आगेको चले जो क्षुधालगी तो कहाकि आजतो कोई चटपटी चीज भोजन करनेकी इच्छाहोती है इससे तो अबमनभर गयाहै यह कहतेहोये कि सामनेसे एक हिरन निकला अमीरने उसको मारकर कबाबबनाकर आपखाया और लड़कोंकोभी खिलाकर उसीस्थान पर रात्रिको सोरहे प्रातःकाल उठकर सवार होकर रवानाहुये

वृत्तांत खूजे अमरूका ।

लेखक लोग यों लिखतेहैं कि जब अमरूको डेढ़वर्ष क़िलेदेवदोमें व्यतीतहुये तो एकदिन अन्तरदेवदू बादशाह क़िलेसे पूछा कि यहांसे समीप औरकोई क़िलाहै कि जहां चलकर थोड़ेदिन आरामसे रहें उसने कहा कि यहांसे बीसकोसपर एक क़िला तलवाबहर नामे पहाड़पर है तीनतरफ उस क़िले के नदी है और केवल एकदिशाको मार्गहै और वहभी ऐसाछोटाहैकिकिसीप्रकारसेदोमनुष्यबराबर नहीं जासक्ते हैंऔर सिवाय इसके जोएकमनुष्यऊपरसेपत्थरढलदेवेतोहजारों मनुष्यदबकर मरजावें औरजो बादशाह नौशेरवां आपही जाकर उस क़िलेको लियाचाहे तो केवल लज्जित होनेके और कुछ न पावे लज्जित होकर पलटआवे तब अमरूनेकहा कि उसक़िलेका लेना कुछदुर्लभ नहीं परंतु यहांसे जाना दुर्लभहै और हम अकेलेभी नहीं जासक्ते हैं तब अन्तर देवदूनेकहा कि इसक़िलेमें एक सुरंगहै उसीमें होकर निकल जाइये तब अमरूनेमल्लिकाआदिको सवारियों परसवार कराके सेना समेत उसी सुरंग से निकल कर क़िले तलवाबहरकी राहलेकर सबको प्रसन्नकिया और दूसरेदिन पहररात्रि व्यतीतहुयेक़िलेके समीप पहुंचा फिरअमरू क़िलेके भीतर चलागया परंतु कोईयुक्ति न करपाई कि क़िलेमें अपना बसपावे और विचारा कि युद्ध करनेसेभी हाथ न

आवेगा तबतो लज्जित होकर कहनेलगा कि अमरू तूनेबड़ी नादानी की कि बिना क़िलेके लियेजोतूसबछोटेबड़ोंकोदूसक़िलेकेसमीपलेआया जो अभी हरमज़ व जाफ़रां मर्ज़नो सेनालेकर आवे तो इथा सबको मार कर मलिका को पकड़ लेजावे इससे कोई युक्ति बिचारना उचित है कि इस क़िलेको अपने आधीन करूं बिचारते २ यहबिचार में आया कि चारसौ पहलवानों को संदूक़ोंमें भरकर आपसौदागर बनकर क़िलेके सामने ऊटोंमें लादकर जाकर उतरे तबक़िलेवालों ने दीवार परसे पूछा कि तुमकौन हो कहांसे आयेहो और कौनवस्तु लेआयेहो अमरू ने कहा किमैं सौदागरहूं नौशेरवां ने जुलमात की तरफ असबाब ख़रीदने को भेजाथा वहीमैं लेकर आयाहूं औरमेरेपासनवोन २ प्रकार की वस्तुहैं कि आजतक किसीने न देखाहै न देखेंगे यहसबहाल सिपाहियों ने जाकर बादशाह से कहा तबउसने हामाननामी अपने वज़ीर को आज्ञादी कि तुमजाकर देखोकौनहै और कहांसेआताहैऔरक्या२ वस्तु लायाहै उसने अमरूके खेमेके पास आकर कहा कि जाकर अपने स्वामीसे कहो कि बादशाह का वज़ीर आपकी भेंटको आयाहै और बादशाह ने तुमको बुलाया है तबअमरू ने सुनकर कहा कि कहदेवइस समय आरामें हैं आनेकी फ़ुरसत नहींहै वज़ीर बेचारा दोघड़ीतक खड़ारहा पीछेको कहा कि अच्छा भाई कहदेना कि इससमयमैं जाता हूं फिर आकर मुलाक़ात करूंगा जो बादशाह कहेगा वह आकर कहूंगा जब अमरूने सुना कि अबजाता है तबकहला भेजा कि कहदेव अबजागे हैं आप ठहरिये थोड़ी समयके पीछेअमरूनेअपनेखेमेमें बुलाकर अति प्रतिष्ठाके साथ संमुख होकर अपने पास बैठाया उसने देखा कि दश मनुष्य मसनद लगाये हुये अपने सरदारों समेत बैठाहैऔरमोमकी बत्ती जलरही हैं उसने जाकर सलाम किया परंतु अमरू ने पहिलेहीसे उसकाहाल जानलियाथा सलामकाउत्तरदेकरपूछा किआपकौनहैं और आपका नामक्या है हामान ने कहा मैं जमशेदशाह का वज़ीरहूं और हामान मेरानाम है अमरूने पूछा कि क्यातू रहिमानका बेटाहै उसने कहा जी हां फिर पूछा कि वहकहां है उसनेकहा कि मेरेतो माता पिता दोनोंका बैकुण्ठ बास होगया यहसुनकर अमरू रोनेलगा और हाय २ करके कहनेलगा जबभाई मरगये तो अबमैं जीकर क्याकरूंगा यहकह खञ्जर लेकर पेटमारने को आरूढ़ हुआ तबउसने हाथसे खञ्जर छीनकर पूछा आपका नामक्या है अमरूने कहा कि खाजे शहपालपुत्र करबल मेरानाम है और तेराजन्म उन्हीं दिनोंमें हुआथाजिस समयमें नौशेरवां ने मुझको जुलमात को असबाब ख़रीदने के लिये भेजाथा और अब जोआयातो यहतूनेसुनाई कि भाईका बैकुण्ठ बासहुआ उसने कहा कि ईश्वरकीमहिमाअपूर्वहै उसमेंकिसीकी कुछशक्तिनहींजोहोना

था वह होगया अबसबकीजिये इसदुःखकोअपनेशिरपर रखियेऔरक़िले में चलकर आराम कीजिये तबअमरूने सबअसबाब आदमियोंसे उठवा कर उसके साथ क़िलेमें चला राहमें वज़ीर ने अमरूसे पूछाकि कौनर उत्तम बस्तु आप लेआये हैं अमरूने कहा कि सबवहां की उत्तम बस्तुहैं परंतुदोस्त्रियांऐसीस्वरूपवानलेआयाहूंकि लोगदेखतेहीमोहितहोजाते हैं हामानने कहा कि हमारा बादशाहभी आशिक़ मिज़ाजहै जोस्त्रियों को उसके समीप भेज दीजिये तो अति प्रसन्नहोगा बख़्त कुछ आपको देवेगा अमरू ने क़िलेमें जाकर दोनों यारबच्चों को सौगात समेत डो-लियों में बैठाकर हामान के पास भेजदिया तो वहां अति प्रसन्नता के साथ अपने बादशाह के समीप लेगया बादशाह भी देखकर अति प्रसन्न हुआ और शराब मंगवाकर उन्हीं के हाथोंसे लेलेकर पीने लगा जब दोतीन गिलास पीचुका तबउन्होंने दारू बेहोशी मिलाकर दी तब वह बेहोश होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और इधरअमरूनेपहलवानों को संदूक़से निकालकर पहिलेतो हामानको पकड़करबांधलियातत्पश्चात् सबक़िले वालोंको मारनेलगा और जिसने अपने प्राणकी रक्षाचाही उसे मुसल्मान करके छोड़दिया और जबबादशाह भी होशमें आया तो उसने भी अपने प्राणकी रक्षा के लिये मुसल्मान होना अंगीकार किया तत्पश्चात् हामानने भी देखा कि अबतो बादशाह भी मुसलमान हुआ और जो मुसल्मान नहीं होते तो प्राणनहीं बचता लाचार हो-कर मुसल्मान हुआ और प्रातःकाल होतेही अमरूने क़िलेपर सब प्रकारसे अपना प्रबन्ध करके अपनी आज्ञानुसार क़िलेको सजाकर शा-मियाना खड़ा करके आप शाहानारूप धारण करके आराम के साथ बैठा अमरू के आनेके पश्चात् शाहज़ादों को खबर मिली कि अमरू क़िले देवदूं को छोड़कर तलवाबहर में जाकर सब क़िलेवालों को मुसल्मान करके अपना प्रबन्ध करके क़िलाबन्द है यहसब हाल बाद-शाह नौशेरवां को लिखकर भेजकर आपसेना समेत जाके क़िले तलवा-बहर के समीप खेमा गाड़कर पड़ा अब थोड़ासा वृत्तान्त बादशाह नौ-शेरवां का लिखते हैं दरबार में बैठाथा कि हरमर और जाफरांमर्ज़की विनयपची पहुंची और समाचार सुनकर कहनेलगा कि यारो कोई युक्ति ऐसीकरो कि अमरू पकड़ा जावे यामारा जावे कि हमसबों को उसपापी से आराम मिले बख़्तक ने कहा कि आपतो मेरा कहना नहीं मानते बुज़ुरचमेहर के कहनेपर चलते हैं इसीकारण वहकार्य्य सिद्धनहीं होता और वह मज़हब के विचार से आपको खराब कर रहा है कि हमज़ा काफ़में कब मरगया है परन्तु बुज़ुरचमेहर के कहने से जीता है अच्छा आपमेरी और बुज़ुरचमेहर की परीक्षा लीजिये देखिये कौन सत्यवक्ता है बादशाहने कहा कि यह तुमने अच्छी बात

कहो उसी समय दोनों से रमल में विचरवाकर कहा कि अपने २ विचार को लिखकर सुनाओ संयोग से जिस समय वहां विचारा जाता था उसी समय में अमीर को दो सौ कोस की उंचाई से रुख-पक्षीने अखज़रनदी मे फेंकदिया था बख़तकने विचार में यही लिखाकि अमीर को एक पक्षीने दोसौकोसकीउंचाईसे एकनदीमेफेंकदियाहैवह उसी मे मरगया होगा और बुजुरुजमेहरने लिखा कि अमीर कुशल से थोड़े दिनोंके पश्चात् आकर संसार में सबसे मिलते हैं पहिलेबख़तक का विचार सुनाया गया तब बादशाहने खाजे से पूछा तो उसने कहा कि सत्यहै अमीरको रुखपक्षी ने अखज़र नदी में फेंकदिया परंतु हज़रत खिज़र और अलियासने हाथों हाथ उठाकर पृथ्वीपर रखदिया है जब खाजे का विचार सुनायागया तो बादशाह ने बख़तक की तरफ देखा उसनेकहा कि हमजाहै कहांजो दुनिया में आवेगा और आपही अपनी बुद्धिसे विचारकीजिये कि दोसौ कोससे गिरकर मनुष्यकाप्राण बचसक्ता है और क़ाफतो दूरहै आपएक गाभिन गऊमँगवावें हमदोनों आदमी विचारकर बतलावें किकिसरंगका बच्चा उसके पेटमेंहै फिर आप उसका पेट फड़वाकर देखें परंतु उसमें यहशर्त है कि जो बुजुरुजमेहर का विचार सत्य होवेतो आपहमको उनकेहवालेकरदेवें जो उनका जीचाहे वह करें और जो हमारासत्य होवे तो जो हमारा जी चाहै वह हम करें बादशाहने खाजे से पूछा कि यह क्या कहता है उसने कहा कि अच्छा तो कहताहै परीक्षादेनेसेकबमैंडरताहूं तबउसीसमय एकगाभिन गऊ मँगवाई गई बख़तकने विचार कर कहा कि इसके बच्चेका स्याह रंग और सपेदहै बुजरुजमेहर नेकहा कि रंगतो स्याह है परंतु माथा भी कालाहीहै और चारो पैर सपेद हैं गायका पेटफाड़ कर बच्चा निकाला गयातो संयोगसे झिल्ली उसके माथेपर आगईथी इससेमाथासपेदबिदित हुआ और सबलोग कहने लगे कि बख़तक बाजीजीताऔरबुजरुजमेहर हारा अब वह इसको मारडालेगा तबबख़तक ने बुजुरुज मेहरको अपने स्थान पर लेजाकर इच्छाकी कि इसको मारडालेंपरंतुउसकीस्त्रीनेमना-कियातब उसकाप्राण बचा परंतु उसपापीनें एकप्रकारकीसलाईउसके नेत्रोंमेफेरकरअन्धाकरदियासंयोगसेउसीदिनसादजरीऔरआसादजरी तुकनौशेरवां की मुलाकात को आये उसगायके बच्चेको देखकर पूछा कि यहक्याहै और यह किसका बच्चाहै तब बादशाहने सबवृत्तांतउससेकहा तबसदा नजरी ने खंजर की नोकसे उसकेमस्तककी झिल्लीछीलडालीतब सबोंने देखा कि मस्तकभीकालाहैसपेदीका कहींएकदागभी नहींहै बुजु-रुजमेहरकाकहनासत्यहैबादशाहने उसीसमयबख़तककोबुलाकरकह कि तूबाजीहारगयाऔर बुजरुजमेहर जीताअबउसको हमारेसंमुखले आवो उसने कहा किमैंने तोअपनीबाजीजीतीजानकरउसकोअन्धाकरदियाहै

बादशाहने हाथ पटककर कहा कि हेपापीतूने बड़ाबुरा काम किया कि ऐसे मनुष्यकोअन्धाकर दिया तब उसको खंभेमें बँधवाकर इतनेजूते लगवाये कि उसका शरीर घूम उठा उठनेबैठने की शक्ति न रही और आप बादशाह सवारहोकर बख़्तक के घरपर जाकर बुजुरुजमेहर को प्रतिष्ठाके साथ संमुखहोकर कहाकि खाजे तुमने बाजीजीती थी परंतु होनहार से धोखा पड़गया अब जो कहिये वह दण्ड बख़्तक को दूं खाजेने कहा कि उसे दण्ड देने की कुछ आवश्यता नहींहैमेरीभाग्यमें जो लिखाथा सो हुआ ईश्वर की होनहार में किसीका चारा नहीं हमजा जब आवेगा तो दोपत्ते वहांसेलेते आवेगा उसीसे हमारे नेत्र फिर अच्छे होजावेंगे और मैंफिर उसीतरहसे देखनेलगूंगा अबमुझको आप आज्ञादेवें तो जबतक हमजा न आवे तबतक बसरोमें जाकर रहूं और आपसे कहे जाताहूं कि सचह बर्ष तक आपको सब प्रकार की बुराईयों से बचाया अब देखियेगा क्या होता है निश्चय करके जानिये कि आप अब अमरूके हाथसे बड़ा दुःखउठावेंगे और संसार में बदनाम होंगे और जिस दिन हमजा आवेगा तो सीधा आपही के पास चला आवेगा और एक घोड़ा उसी दिन धावामारेगा और दूसरे दिनअमीर आपको पराजय करके बड़ा दुःख देवेगा इतना कहकर खाजा चलेगये और वहांसे बसरा की ओर गया और बख़्तक जो जूतियों की मारसे बेहोश होगया था बादशाहने उसको मकानसें बाहरफेकवादियाऔर जब उसको होशहुआ अपने स्थानको चलागया और बहुत दिन तक अपनी औषधि करता रहा औरजबअच्छा हुआतोफिरदरबारसेगया नौशेरवां ने कहा इसको सभामें आनेकीआज्ञाकिसनेदीहमारे संमुख यह क्यों आया जब सभासद लोग उसकी सई करने लगे तब बादशाह ने सभामें रहनेकी आज्ञादी तब वह कुछदिन तोचुपचापरहा पश्चात् फिर बादशाह को अमरू से लड़ने की सम्मिति देनेलगा निदान धीरे २ बादशाहके भी चित्तमें यह बात आई कि बख़्तकसत्यकहताहैबिनामेरे गये यह कार्य्य सिद्धन होगा इसी प्रकारअमरूसबकोदुःखदियाकरैगा यह बिचारकर एकलाख सवार और पैदललेकर तलवारहरके किलेकी ओर याचा की जब उसकेनिकटबादशाहपहुंचातो हरमजबजाफरामर्ज बनो मीनआदिक राजकुमारोंने अगवानीमिलकरबादशाहकोलेजाकर खेमेमें उतरा और सब बहुत प्रसन्न हुये रात्रिको सभामें बादशाह ने कहा कि इतने दिनोंसे तुम सबयहां हो परंतु एक मनुष्य को जीत न सके अब देखो मैं उसका और उसके साथियों का क्या २हालकरताहूं तब सभा सद लोग एक मुख होकर कहने लगे कि आप और हम में बड़ा अन्तरहै आप के सम्मुख हमारी क्या गणनाहै यह सुन रात्रि को तो बादशाह सोरहा प्रातःकाल उठकर नित्यकर्मकर सेनाको साथ ले

युद्धकरनेको आरूढ़ हुआ और आप अकेला जाकर क़िलेके चारों ओर
शिस्तलगाकर देखने लगा तो उस समय अमरू शामियाने के नीचे जवा-
हिर की कुरसी पर बैठा था और सब सरदार लोग बराबर से खड़े
थे जिनके हथियारों में जवाहिर जड़ेथे और मुरचों पर हर एक मनुष्य
अपने २ कार्य्य पर आरूढ़थे अमरू ने तीर बादशाह की तरफ घुमाकर
कहा कि हेअग्नि पूजक तूयातो अभी भागजा नहीं तो तेरी क्या गति
करताहूं तेरी भी कैसी गति बनाताहूं और जो मैं अमरू कि तेरी छठी
का दूध निकालकर तुझे इसका मजा चखाऊं बादशाह अमरूकी बातें
सुनकर कांपने लगा और बख्तकसे कहा कि सुनताहै अमरू क्या कहता
है उसने कहा कि दूरसे जो चाहै वह कहे जबान उसकी उसके मुखमें
है लेकिन करकुछ नहींसक्ता है वृथा बकरहा है सेनाको आज्ञा दीजिये
कि युद्धकरने को आरूढ़ होवे और एकबारगी धावाकरके क़िला अमरू
से छीनलेवे तब बादशाह की आज्ञानुसार सेनाबढ़ी और क़िले तक जो
पहुंची तब क़िले पर से आतिशबाजी छूटने लगी और थोड़ेही काल में
हजारों पहलवान मारेगये और शेष युद्धके खेतसे भाग खड़े हुये किसी
ने किसी का साथ न दिया तब लाचार होकर बादशाह भी सेना के
पीछे २ भाग कर खेमे में आकर लाचार होकर बैठे तो बख्तक कहने
लगा कि कहीं इस प्रकार से भी क़िला हाथ आता है वृथा हजारों
सिपाही भी मरवाये और लज्जित होकर पराजय पाईतब नौशेरवां ने
कहाकि ऐ पापी तूही नेतो कहा कि अब सेना को आज्ञा दीजिये कि
क़िले पर धावा करके इसी युक्तिसे लेलेवें और तूही अब यह भी कहता
है तब उसने कहा कि हां मैं भूलगया जो हुआ सो अच्छा हुआ अमरू
को यहतो विदित हुआ कि बादशाह बड़ी सेना लेकर मुझसे युद्ध करने
को आयेहैं हजार पहलवान मारे गये तो अच्छाहुआ बादशाहने कहा
कितू बड़ादुष्टहै कि एकबात पर स्थिर नहीं रहताहै कभी कुछ कहताहै
कभी कुछ अब थोड़ासा अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि अपने क़िलेवालों
से कहा कि तुम लोग खबरदारी से रहना हम बादशाह नौशेरवां को
भी अपनी मक्कारी का मजा चखा आवें यह कह कर लिबास शाहाना
उतार कर मक्कारी की पोशाक पहिनकर एकनटका भेष धारणकरकेदो
अपने शिष्योंको जो मक्कारी में बड़ेबुद्धिमान थे स्त्री का भेषधारणकराकर
साथ ले क़िलेसे बाहर निकला और अपने गलेमें एकफूटा ढोलडाल-
कर बजाता हुआ जाकर बादशाह नौशेरवां खेमे के समीप एक कमरी
तानकर आप ढोलबजाकरउनदोनों कोनचाने गवानेलगा थोड़ीसमय
में बहुत से मनुष्य आकर देखने लगे और उसी समयमें जोपीन और व
चीन सवार चले आतेथे भीड़ देखकर वेभी उसी तरफगये जाकर देखातो
एक अपूर्व तमाशा होरहाहै उन दोनोंकी आंखेंजो इनसेमिलींतो अपने

करफनसेलोभानेलगा यहांतक किदोनोंभाईमोहित होगये एकनेस्याह पोशकोप्रसन्न किया दूसरेने सब्जपोशको और दोनों आपसमें सलाह करके बादशाह के समीप जाकर उनकेगानेबजाने और सुन्दरताकीबड़ी प्रशंसाकी तोबादशाहभी मोहितहोगये और उनके बुलानेकीआज्ञादी और जब वे आयेतो अमरूने ऐसा ढोलबजाया औरयारबच्चोंनेगायाकि जितनेलोगथे सब मोहितहोगये औरनौशेरवांनेमोहितहोकरउन्हींको शराब पिलानेकी आज्ञादीतबसबनेउन्हींके हाथसेगिलासमेंलेकरशराब पी तो थोड़ेही समय के पश्चात् सब लोग बेहोश होकर गिरने लगे और इकबारगी सब लोग बोल उठे कि चलो यारो नदीमें गोता लगावें यह कहकर सब एक बारगी बेहोश होकर चुप होगये और अमरू ने बाहर आकर शागिर्द पेशोंकोभी बेहोश किया और खेमे में आकरसबअसबाब उठाकर जनबीलमें रखकर अपनी चालाकी करने लगा कि नौशेरवांकी दाढ़ीमोछ उस्तरेसे मूड़कर हाथपावोंकोतोनीलसेरंगाऔर मुखकाला करके चूनके टीके देदिये और बख्तक व बख्तियारक की दाढ़ीमोछ मूड़ कर सात सात बाल शिरपर रहने दिये और बख्तियारक केशिरमें सेंदूर भरकर टांगें उसकी बख्तक के कमर से बांध दी और बख्तियारक की गुदामेंएक मेंख ठोंककरफैलीकरदीऔरजोपीन व बेचीनकेसाथभी यही मामिला कियाऔरइसीप्रकारसेसबलोगोंकीगतिबनाईऔरशाहजादों कोभी नंगा करकेसातरंगके टीकेदिये और इसी प्रकारसे जितनेसरदारथे सबकी गति बनाई औरपीछे को एकपत्रमें लिखकर किऐजवानमहीने२ दाढ़ी मोछ काकर मेरे पासभेज दियाकर नहीं तो एक बालभीनरहने पावेगाऔरइसीप्रकारसेलज्जितहुआकरेगाऔरयहभीविदितहोकिइस बारतोइसविचारसेकिअमीरहमजाकेआपससुरहैंप्राणछोड़ करकेवलयह गतिबनाईहैलिखकरनौशेरवांके गलेमें बांध दियाऔर आपदोनोंमक्कारों समेतअपनेक्लिमेंचला आयाऔर जबप्रातःकालहुआतो सबसावधानहुये बख्तकको जोमजा मिलातोखीजानके धक्केदेनेलगा और नेचोंकेबंदरहनेसे कुछमालूमन हुआ औरबख्तियारकको जोदुःखमालूमहुआतोचिल्लाकर कहनेलगा किपिताजी यहक्याकाम मेरे साथ कर रहेहो लोग यह सुन कर चारों तरफसे दौड़कर आयेतो देखा कि बाप बेटे में यह मामिला होरहाहै तोसब एक दूसरे का रूप देखकर हसनेलगे और अपने रूप का कुछ विचार नरक्खा किहमारारूप कैसाहै नौशेरवां ने प्रातः काल जो उठकर आइनेमें अपनास्वरूपदेखा तोअति लज्जितहुआ औरइसी प्रकारसे सबकाहाल देखकर बड़े आश्चर्य्यमें हुआ इतने में गले का पत्र देखकर पढ़ा तोविदित हुआ कि अमरूनेयह सबकी गति बनाई है तत्-पश्चात्स्नान करके पोशाकबदल कर गद्दी परबैठकर बख्तक को बुलवा कर सभा में उसकी मुशकें बंधवाकर ऐसी जूतियां लगवाईं किबेहोशहो-

गया और जब सब सभासद लोग सईकरनेलगेतो बादशाहने उत्तरदिया कि इसके बारे में अबहम किसीकी सई न मानेंगे क्योंकि यह सब गति इसीने करवाई और इसीकी बातपर मैंयहां आया अफसोस कि मैंने बुजुरुचमेहरको सलाहपर कार्य न किया जो उसकीबातपर स्थितरहता तो क्यों ऐसीगति सबलोगोंकी अमरू बनाता लोगोंके कहनेसे पीछे उसको कारागारमें डालदिया और एक पत्रहामानकेपासएकसिपाही केहाथ इस समाचारका लिखकर भेजा कि अमरू बड़ा दुष्टहै इससे खबर दार रहना और अपने किसी सरदारको क़िला सौंपकर हमारे पास आप शीघही चलेआवो औरइसीसमाचारकाएकपत्र कारावां बादशाह शेरशाह के समीपभेजा तो पहिले सवार नमदपोश हामानशाहके पास पहुंचकर अति शीघही उत्तरलेकर बादशाहके पासपहुंचा तो उसने लिखाथाकिअमरूतो क्या देवभी हमारे क़िलेमें बसनहीं पासक्ता और मैंभी अति शीघहीआपकेपाससेनासहितपहुंचताहूं आपकिसीप्रकारसे सन्देह न कीजियेसमावाजबपत्रशेरशाहकेसमीपलेकरपहुंचा तो उसनेभी इसीप्रकारसेउत्तर लिखकरउससेकहा कि एकबातमैंअपनीतुझसेकहता हूं परंतुकिसीसेकहनानहींऔरउसकीयुक्तिकरोउसनेस्वीकारकिया तब बादशाहनेकहा कि बहुतकालव्यतीतहुआहोगाकि मैंनेमेहरनिगारकी तसवीरदेखीथी उसी समयसे मैं मोहित होगयाहूं और सदैव उसके देखनेकी इच्छा रखताहूं जातू किसीयुक्तिसे मेहरनिगारकोमेरे समीप लादे तो मैं आधाराज्यदूंगा उसने कहा कि मैं केवल मुखके कहनेसेनहीं मानता आपईश्वरकोगवाहकरकेमुझेलिखदीजिये तोमैंजाऊं चाहेमरूं या जीऊं तब शेरशाहने उसीसमय एक इक़रारनामा लिखकर उसको दिया और सब प्रकारसे कहदियातबसमावावहांसेचलकर क़िलेकेपास जाकर भीतरजानेका उपाय ढूंढ़नेलगा तो पृथ्वीकीमार्गसे तोजानेका रास्ता न पायापरन्तुएकनावपर सवारहोकरपहाड़तक पहुंचातो वहां से देखा कि सब सिपाही खबरदारीसे रक्षा कररहेहैं जाते २केवलएक बुर्जमें सन्नाटा मालूमहुआ तबउसने एक ढेलाउसकेऊपर फेंकातोकिसी ने उत्तर न दियातब मालूमहुआ कि इसपर यातोकोई है नहींयासब सोतेहोंगेकमन्दडालकरबुर्जमेगया और उसीकी सीढ़ियोंसे नीचेउतरा तो रात्रिभर तो एककोनमें बैठारहा और प्रातःकाल होते इधरउधर रहनेकेलियेस्थानढूंढ़नेलगापीछेकोजबकहींठिकानानपायातो स्नान के स्थानपरगया और एक कोनेमेंबैठकरस्नानकरनेलगा संयोगसेउसीसमय मेंबुलबुलखलीफा उसीस्थानपरपहुंचा जोकि मेहरनिगारका अति शुभ चिन्तकऔर दिलसेचुथाकि सदैवउसीस्थानपरजाकरअग्निपूजाकरता था उसदिनभी स्नानकरकेपूजाकरनेलगाकिइतनेमेंसमारानीने सम्मुख आकर प्रणामकिया तबतो खलीफाबुलबुल बहुतडरे कि जोयहसब मेरा

करफनसेलोभानेलगा यहांतक किदोनोंभाईमोहित होगये एक
पोशकोप्रसन्न किया दूसरेने सबजपोशको और दोनों आपसमें
करके बादशाह के समीप जाकर उनकेगानेबजाने और सुन्दर
प्रशंसाकी तोबादशाहभी मोहितहोगये और उनके बुलाने
और जब वे आयेतो अमरूने ऐसा ढोलबजाया औरयार
जितनेलोगथे सब मोहितहोगये औरनौशेरवांनेमोहि
शराब पिलानेकी आज्ञादीतबसबनेउन्हींके हाथसे
पीतो थोड़ेही समय के पश्चात् सब लोग बेहोश हो
इकबारगी सब लोग बोल उठे कि चलो यारो
कहकर सब एक बारगी बेहोश होकर चुप हो
आकर शागिद पेशोंकोभी बेहोश किया औ
उठाकर जनबीलमें रखकर अपनी चालाक
दाढ़ीमोछ उस्तरेसे मूड़कर हाथपावों
करके चूनके टीके देदिये और बख्तक
कर सात सात बाल शिरपर रहने दि
भरकर टांगें उसकी बख्तक के क
गुदामेंएक मेंख ठोंककरफैलीक
मामिला कियाऔरइसीप्र
कोभी नंगा करकेसातरंगे
सबकी गति बनाई और
दाढ़ी मोछ काकर दे
पावेगाऔरइसीप्र
बारतोइसविचार
गतिबनाईहैलि
समेतअपनेक्रि
बख्तककोछ
कुछमालु
कहनेलगा कि.
कर चारों तरफसे द
होरहाहै तौसब एक दू
का कुछ विचार नरक्खा किहम.
जो उठकर आइनेमें अपनास्वरूपद
प्रकारसे सबकाहाल देखकर बड़े आश्चर्य
देखकर पढ़ा तोविदित हुआ कि अमरूनेयह
पश्चात्स्नान करके पोशाकबदल कर गद्दी परबैठकर
कर सभा में उसकी मुशकें बंधवाकर ऐसी जूतियां लगवा

गया और जब सब समासद [illegible] कि घड़ेमें जल रक्खाहै
कि इसके बारे में अवश्य [illegible] और उसनेदेखा तो विदित
इसीने करवाई और इसीकी बातपर [illegible] कूदकर अलग खड़ाहुआ और
बुजुरुजमेहरको सलाहपर कार्य [illegible] है तेरीजाल मुझसे न चलेगी
तो क्यों ऐसीगति सबलोगोंकी [illegible] अमरू खंजर निकालकर उसके
उसको कारागारमें डालदिया [illegible] उसकेआगे होरहा तब वह
केहाथ इस समाचारका लिख [illegible] रने को आरूढ़हुआ तब अमरूने
दार रहना और अपने [illegible] रा कि देखते क्याहो दौड़कर मा-
आप शीघ्रही चलेआवो [illegible] सिपाही भीआपहुंचे पीछे फिर
शेरशाह के समीपमें [illegible] नन्द उसके गलेमें डालकर खींचलिया
पड़ंचकर अति [illegible] गरपड़ा तो अमरू ने गठरीको तो
लिखाथा कि [illegible] ो मुशकें बांधकर अतिशीघ्रही चलकर
मैंभी [illegible] वाको तो कारागारमें भेजदिया और
स [illegible] या मल्लिका ने देखा कि मैं बँधीहूं अमरू
ाहै तब अमरूने सबहाल कह कर छोड़
समावाको मरवा डाला नौशेरवांने जब
ड़ी प्रशंसाकी और चित्तसे अति प्रसन्नहुवा
तो सभामें कहनेलगा कि अमरूबड़ा भाग्य-
न कर सकेगा तबहीं इतने दिनों से नौशे-
ता चलाआताहै और जो उससे युद्ध करने
ा लज्जित होकर पलट आताहै औरमेराचित्त
ं जाकर मुलाक़ात करूं इतनेमें पिरान नाम
अमरूको मैं आज पकड़ूंगा मैं उसका बीड़ाउठा
ा कैसीसुन्दरता के साथ विजयपाताहूं आपमेरे
ौशेरवां को लिखदीजिये कि मेरेनामसे तबलजंग
ड़ी सवारी क़िलेको लेलेताहूं यानहींबादशाहनेउसी
पत्रिका में बादशाह नौशेरवां को लिखकर सबवृत्तांत
ोके हाथ भेजा ॥

का देवसमुन्द के स्थान परऔर छोड़ाना जहर मिश्रीकाकारागारसे ॥

ा लिखता है कि अमीर हरिनका कबाब खाकर अखूजर
ले तो दसवेंदिन एक क़िलेके समीपपहुंचे तोख्वाजेआशोब
। तुमजाकर देखआओ कि इसक़िलेमें आबादीहै या वी-
स्वामी मुसलमान है या काफिर ख्वाजे आशोबतमंचाहाथ
क़िलेके भीतर जोगया तो देखा कि बराबरसे दूकानेंलगी
लोग फिर रहेहैं ख्वाजेने एक दूकानदार से पूछा कि इस
ा स्वामी कौनहै और कैसाहैउसने कुछ उत्तरनदिया दूस

हाल अमरूसे कहदेवेगा तो अमरू मेराप्राण न छोड़ेगा यह विचारकरके उससेमिलता करनेलगातबसमावाने पूछा कितुम्हारा क्यानामहैऔरकिस ओहदेपर यहांहै उसने कहाकिमैं मेहरनिगारका शुभचिन्तकहूं भाई ईश्वरके लियेमेरा हाल किसीसे न कहना उसने कहाकि आप सन्देहन करें मैंयहांनहीं रहताहूं मैंतो बादशाहनौशेरवां के सिपाहियोंका सरदारहूं और मेहरनिगार के लेजानेकेलिये और बहुतसी उत्तमर वस्तुलेआयाहूं आप कृपाकरके इसकार्यमें सहायता करेंतो सिद्धहोजावेगा और मुझको अतिप्रसन्नता प्राप्तहोगी खलीफाबुलबुलाने कहाकि मैंतो आपहीसदैव इसीउपायमें रहताहूं कि किसीप्रकारसे मेहरनिगारको नौशेरवांके पास पहुंचाऊं सो ईश्वरने आपहीको यहां तकभेज दिया आपमेरेसाथ चलकर बावर्ची खाने में ठहरिये तबतो उसने प्रसन्नता से उसके साथहोकर बावर्ची खानेमेंजाकर भोजनमें दारूबेहोशी मिलाई और जबवह भोजन सबलोगोंने खायातो सबथोड़ेही समयके पश्चात् बेहोशहोगये परन्तु अमरूने उसदिन भोजन न किया और न महल में गया जब सबबेहोशहो गया तब सादानी ने मेहरनिगारको एक गठरी में बांधकर अपने ऊपरलादकर खलीफा बुलबुल समेत उसीबुर्जसे जिधरसेआयाथा निकला और जब सादानी क़िलेसे निकलकर बनकी तरफ चलातो खलीफाने पूछाकि बनमें क्योंजाताहै वहांतेरा क्या प्रयोजनहै उसने कहाकि शेरशाह ने मेहरनिगार को मांगा है सोमैं उनके पासलिये जाताहूं तब खलीफा बुलबुलने कहाकि यहतो अभीनहोगा तूने कहाथा किमैं नौशेरवांके समीप लेजाऊंगा और अबदूसरेके पास लियेजाताहै अबतो तेरीबातोंपर मुझको क्रोधलगताहै दोनोंमें युद्ध होनेलगा तबसादानीने एकखंजर खलीफाको ऐसामारा कि उसका प्राण निकलगया और सादानी मलिकाको लेकर उसीतरफचला अब थोड़ासाहाल अमरूका सुनिये किवहीं बेखबर पड़ासोरहाथा किसुमने में अमीरने आकर कहाकि वाह तुमतो खूबरचा करतेहो बतावो मेहरनिगार कहांहैं तुमको नहींविदितहोता कि वह किसदुःखमें पड़ी हैइतना देखकर अमरूचौंककरउठा और मेहरनिगारकेमहलमें जोगया तोदेखा कि पलंगखालीहै इधर उधरढूंढ़कर क़िलेकी दीवारपर गया तो विदितहुआ किकोई कमन्दलगाकर निकाललेगया तब तो अति शीघ्रताकेसाथमक्कारी पोशाकपहिनकर उसीकमन्द की राहसेउतरकर कदमपर कदमरखते हुयेचला जब थोड़ीदूरगया तो देखाकि खलीफा बुलबुलमारा हुआ पड़ाहै तबतोजाना किशुचुसे मलिकाको छीनकर चलागयो राहछोड़कर दूसरी ओरसे आगेजाकर एक साधूका रूपधर करके एकघड़ामें दारूबेहोशी रखकरबैठा किइतनेमें सबावा मेहरनिगारको एकगठरीमें बांधेहुये जाकर पहुंचा और अमरूसे कहा कि

बाबाप्यास बड़ी लगीहै तब अमरूने कहा कि घड़ेमें जल रक्खाहै निकालकरपीलो जब वह घड़ेकेपासगया और उसनेदेखा तो विदित हुआ कि इसमें दारू बेहोशी मिलीहै कूदकर अलग खड़ाहुआ और कहनेलगा कि तू मुझसे जालकरने चलाहै तेरीजाल मुझसे न चलेगी यह कहकर अमरूके आगेसे भागा अमरू खंजर निकालकर उसके पीछेदौड़ा और एकबारगी कूदकर उसकेआगे होरहा तब वह भी गठरीको पृथ्वीपर रखकर युद्धकरने को आरूढ़हुआ तब अमरूने कमन्द कमरसे निकालकर ललकारा कि देखते क्याहो दौड़कर मारलो तब उसने जाना कि इसके सिपाही भीआपहुंचे पीछे फिर कर देखनेलगा इतनेमें अमरूने कमन्द उसके गलेमें डालकर खींचलिया और वह औंधे मुख पृथ्वी पर गिरपड़ा तो अमरू ने गठरीको तो कन्धे पर रखलिया और उसकी मुश्कें बांधकर अतिशीघही चलकर क़िलेमें आकरपहुंचा तो समावाको तो कारागारमें भेजदिया और मेहरनिगारको सावधान किया मल्लिका ने देखा कि मैं बँधीहूं अमरू से पूछा कि बाबा मुझे क्योंबांधाहै तब अमरूने सबहाल कह कर छोड़ दिया और बाहर आकर समावाको मरवा डाला नौशेरवांने जब सुना तब उसने अमरूकी बड़ी प्रशंसाकी और चित्तसे अति प्रसन्नहुवा और जब शेरशाहने सुना तो सभामें कहनेलगा कि अमरूबड़ा भाग्यवानहै उसेकोई विजय न कर सकेगा तबहीं इतने दिनों से नौशेरवांसे बराबर विजयपाता चलाआताहै और जो उससे युद्ध करने की इच्छा करताहै वही लज्जित होकर पलट आताहै औरमेराचित्त चाहताहै कि अमरूसे जाकर मुलाक़ात करूं इतनेमें पिरान नाम सेनापतिने कहा कि अमरूको मैं आज पकड़ूंगा मैं उसका बीड़ाउठाताहूं और देखियेगा कैसीसुन्दरता के साथ विजयपाताहूं आपमेरे नामसे बादशाह नौशेरवां को लिखदीजिये कि मेरेनामसे तबलजंग बजवावे जाकर खड़ी सवारी क़िलेको लेलेताहूं यानहींबादशाहने उसी समय एक विनयपत्रिका में बादशाह नौशेरवां को लिखकर सबवृत्तांत मज़बूती सिपाहीके हाथ भेजा ॥

पहुंचना अमीर का देवसमुन्द के स्थान परऔर छोड़ाना जहर मिश्रीकाकारागारसे ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर हरिनका कबाब खाकर अखूजर नदीसे जब चले तो इसवेंदिन एक क़िलेके समीपपहुंचे तो ख्वाजेआशोब से कहा कि तुमजाकर देखआओ कि इसक़िलेमें आबादीहै या वीरान और स्वामी मुसलमान है या काफिर ख्वाजे आशोबतमंचाहाथ में लेकर क़िलेके भीतर जागया तो देखा कि बराबरसे दूकानेंलगी हैं और लोग फिर रहेहैं ख्वाजेने एक दूकानदार से पूछा कि इस क़िलेका स्वामी कौनहै और कैसाहैउसने कुछ उत्तरनदिया दूसरीबार

बार फिर पूछा तौभी कुछ न बोला तब खाजेने कहा कि क्या तू ब-
हराहै या गूंगा तौभी वह न बोला चौथीबार तमंचा लेकर उसकोमार-
डाला तबतो सब दौड़े और खाजेको चारोंओरसे घेरलिया तब खाजे
आशोबने अमीरको पुकारा कि दौड़िये मेरी सहायता कीजिये अमीर
उसका शब्द सुनकर क़िलेमेंआये और उन लोगोंसे युद्ध करने लगे
करते २ क़िलेके दरवाज़ेतक पहुंचे लेकिन वे तीनों उसीभीड़ में खोगये
तब अमीर उस क़िलेके भीतरगये परन्तु युद्धकरने वाले भीतर न गये
बाहरसे चिल्लाया किये अमीर जब क़िलेमें जाकर तख्त पर बैठे तो
एक ओरसे शब्द आया कि अफ़सोस हमारीतो यहगति हुई नहीं
मालूम अमीरकी क्यागति हुई होगी यह सुनकर अमीर जो उसतरफ
गया तो देखा कि वेतीनों उसीमें क़ैदहैं और एक मनुष्य औरभी उन्हीं
केसाथ शाहानी पोशाक पहिने क़ैदहै अमीरने पूछा कि तू कौनहै
उसने कहा कि मैं इसी क़िलेका बादशाहहूं खलखाल देवने मुझेक़ैद
करके क़िला छीनलियाहै अमीरने उसको क़ैदसे छोड़ाकर तख्तपर
बैठाया और हरप्रकारसे उसकी सहायताकी जिन्नोंने जब अमीरको
देखा कि हमारे बादशाहके साथ बड़ी नेकी कररहाहै तबतो सब
चुप होकर अमीरके क़दमोंपर गिरनेलगे और वह देव उस समय
शिकारको बाहरगया था जब उसने यह सब हालसुना तो क्रोधके
मारे जलनेलगा और अमीरके सामने आकर ललकारकर मारनेको
दौड़ा अमीरने उसकी वार रोंककर एकहाथ अक़रब सुलेमानी का
लगाकर दोभाग करदिये तबतो उसकेसाथी अमीरके बलको देख
कर भागगये और बादशाहने सातदिन तक नाच रंग करवाया और
हर प्रकारसे अमीरको प्रसन्नकिया आठवेंदिन अमीर वहांसे चले
तो इक्कीस दिनतक बराबर चलेगये तो एक चारदीवारी अपूर्व प्र-
कारकी दिखाईपड़ी परन्तु दरवाज़ेमें ताला लगाथा तब अमीर ने
बलछीसे तोड़डाला और उसकेभीतर जागये तो देखा कि एक बड़ा
भारी सुनसान मैदानहै और चारदीवारी संगमरमरकी है उसके
भीतर जो गये तो एकअति उत्तमबाग़ दिखाईपड़ा कि जिसके देखने
से बड़ा आनन्दहुआ और ऐसा बाग़ काफ़भरमें कहीं न देखाथा तब
अमीरतो एक वृक्षके नीचे व्याघचर्म बिछाकर बैठगये परन्तु लड़के
इधर उधर घूमते २ एक बारहदरीमें पहुंचे तो वहां देखा कि एक
देव तीनसौ गजका लम्बा सोरहाहै और एक स्त्री अति सुरूपवान
पंखेकी डोरी खींचरहीहै लड़कोंको देखकर कहनेलगी कि ऐ लड़को
तुमयहां कहांआये जल्दयहांसे भागजावो नहींतो अभी यह जागेगा
तो तुम लोगोंको खाजावेगा क्षुधाके मारे रोते २ अभी सोगयाहै
लड़कोंने कहा कि हम हैबत अलताहसाहब किरांके साथहैं हम इसको

क्या इसके बापकोभी नहींडरतेहैं जहरमिश्रीने अपने चित्तमें बिचारा कि शायदजिसकेकिएलड़केहैं वेतअल्लाह कहतेहैंवहीसाहब किरांहों उनलड़कोंसे कहाकि तुमलोग जाकरउस मनुष्यसे जो तुम्हारे साथहै कहदो कि जहरमिश्री यहां क़ैदहै तबखा जे अमीर और बहलोलने अमीरसे आकर कहाकि इसबाग़में एक बारहदरी है उसमें हमलोग जोगये तो देखा कि एक देवतीनसौ गज़कालंबा पड़ासोरहा है और एकस्त्री अति खरूपवान पंखेकोड़ोरी बैठीखींचरहीहै हमकोदेखकरबड़ी नम्रता और मोहब्बत से कहनेलगी कि तुम यहांसे भागजावोनहीं तो अभी यह जागेगा तो तुमको खायगा इसके दया न आवेगी तबहमने कहाकि हमारेसाथ मियांहै वेतअल्लाहहैं हम इससे क्या इसके बापसे भी नहीं डरते तब उस स्त्रीने कहा कि तुम जाकर उसमनुष्यसे जिसकेसाथ तुमहो कहदेना कि जहरमिश्री यहां क़ैदहै अमीर जहरमिश्री कानाम सुनतेही व्याकुलहोकर दौड़े कि जहरमिश्री कातो यह हाल हुआ मेहरनिगार को नहीं जानतेकि क्यागतिहुई होगी बारहदरीके भीतर जोगया तो देखा कि जहरमिश्रीबैठी है उसको देखकररोनेलगी अमीरने सब हाल पूछा तो उसनेसब अपनाहाल सुनाकरकहा अबइसदेवकी क़ैदमेंहूं जोदुःखपड़ता है उसका बयान मुझसे नहींहोसक्ता जो अमीर आते तो मेराप्राण बचता नहीतो अबप्राण नबचेगा जिसदिन इसका पिता क्षुधावन्त होगा उसीदिन खालेगा इसदुःखमें मैं आपही मरजाऊंगी अमीरने कहा कि तुमसाहबक़िरांको पहिचानतीहो उसने कहाकि क्यों न पहिंचानती मैंतो उनकी दासीहीहूं उन्होंनेमेरी पालना कीहै तब अमीरने मुखसेसेहरा हटादिया तो देखतेही जहरमिश्रीरोकर अमीर के पैरोंपर गिरपड़ी देवबच्चा रोनेका शब्दसुनकर जागउठा तो देखा कि कईमनुष्य खड़ेहैं क्षुधाकेमारे झुलझुलाकर अमीर को पकड़ने को दौड़ा कि लेकरखाजाऊं अमीरने पकड़कर उसेबांसके समानचीरडाला और बागकी क्यारीपर बैठकर जहरमिश्रीसे कहनेलगा कितूने मुझको नहीं पहिंचाना उसने कहाकि तबआप जवानथेऔर अबआपकी डाढ़ी केबाल सपेदहोगयेहैं फकीरी भेषविदित होताहै दासी क्योंकर पहिंचानसके अमीर उससेबातें करहोरहेथे कि इतनेमें देवसुन्द सहसकर आंधीकी तरहसे उड़ताहुआ अमीरके शिरपर चला आपहुंचा और दरवाजा खुलादेखकर क्रोधिततो हुआहीथा जब अपनेपुत्रकोभी मारा देखा तबतोजलकर अग्निहोगयाऔर अमीरसे कहनेलगा कि ओपापी मनुष्यतू किस आंधीसे यहां उड़कर आया तुझको यहांकौनले आया अमीरने कहाकि मैंतोकिसी आंधीमें उड़करनहीं आयाहूं अपनीखुशी से तेरेमारने को आयाहूं यमपुरी से नेवताले आयाहूं और मैंजी अफ-

रित और अहरमन आदि देवों का नाश करके तुझे मारने आया हूं और थोड़े समय में तुझको उन्हीं के पास भेजता हूं यह सुनकर देवसमुन्द ने सहस्र करों से सहस्र पत्थर उठाकर अमीर के ऊपर दे मारे तो अमीर अक्रबसुलेमानी लेकर कूदकर उसके शिर पर जाकर एक तलवार ऐसी लगाई कि एक तरफका अंग पांचसौ करों समेत कटकर अलग होगया तब सब हाथों को बटोरकर भागा और थोड़ी समय के पीछे सबकर संयुक्त होकर फिर आकर अमीर से युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तो अमीर ने फिर पांचसौ कर एक ओर के काट डाले इसी प्रकार से दो तीन बार अमीर ने उसके कर काटे और वह फिर जोड़कर अमीर के पास आकर युद्ध करने को आरूढ़ होता तब बड़े आश्चर्य में होकर ईश्वर का ध्यान करने लगे कि इतने में एक ओर से हजरत खिज्र ने आकर सलाम किया तो अमीर ने उत्तर देकर कहा कि हजरत इस देव ने तो बड़ा दुःख दिया कि मैं मार डालता हूं और वह फिर जीकर आता है और युद्ध करने को आरूढ़ होता है हजरत खिज्र ने कहा कि इस बाग में एक चश्मा है कि ईश्वर ने उसमें ऐसी शक्ति दी है कि जिस घाव पर उसका जल पड़े वह भर आता है और किसी प्रकार से दुःख नहीं होता चलो हम तुमको दिखाकर उसका लोप कर दें कि वह देव तुम्हारे हाथ से मारा जावे कि फिर आकर दुःख तुमको न दे वे अमीर हजरत खिज्र के साथ जो गये तो देखा कि उसका जल मोती से भी स्वच्छ है और देखने से सब जल जीवित होते हैं हजरत खिज्र ने पैर रखकर उस तालाब का लोप कर दिया और दो पत्ते एक वृक्ष के अति स्वच्छ तोड़कर दिये कि इसको खाने बुजुरुजमेहर को देना कि जो बख्तक ने उसको अंधा कर दिया है इन पत्तों का अरक नेत्रों में डाल लेवे तो फिर उसी तरह से देखने लगेगा अमीर ने उन पत्तों को रखकर कहा कि अब कृपा करके मुझे उसी स्थान पर पहुंचा दीजिये तब हजरत अमीर को उसी बाग में पहुंचा दिया और वहीं से अन्तर्ध्यान होगये अबकी बार जो देवसमुन्द उस तालाब पर गया और उसका पता न पाया तो शिर पटक २ कर मर गया तब अमीर ने उस बाग की कोठरियों को खोलकर देखा तो उनमें अनेक २ प्रकार के जवाहिरात दिखाई पड़े उससे उनको बड़ा आनंद हुआ लड़कों ने कहा कि थोड़ा सा जवाहिर यहां से लेते चलना चाहिये वहां ए कहां मिलेंगे अमीर ने हँसकर कहा कि जो तुम दुनिया में लेजा कर लोगों को दिखाओगे तो अमरू नामे एक मेरा भाई है वह सब तुम से छीन लेवेगा और एक भी न देगा इसी प्रकार से दो दिन वहां रहे और तीसरे दिन लड़कों ने छीके में लटकाकर जहरमिश्री की पीठ पर सवार करके आप सईसों की तरह चले ग्यारवें दिन मुहीद नदी के निकट पहुंचे संदेह में थे कि किस प्रकार इसके पार उतरें इसी विचार में थे कि हजरत खिज्र ने आकर पार उतार दिया दूसरे दिन उस लोहे की चारदीवारी के निकट पहुंचे कि जहां बड़े साहस और वीरता से राहतदेव को मारा था उसका

दरवाजा खुलादेखकर जाना कि आज जुम्माहै क्योंकि उसका दरवाजा बृहस्पतिके दिनकेसिवायऔर दिन नहीं खुलता तब सालिमकीसमाधि पर जाकर मतके अनुसारमंत्र पढ़करप्रसन्नकियाऔर वहांसेयात्राकरके कहनेलगे कि ईश्वरकी दयासे क्राफकी सीमा पूर्णहुई श्रीकरुणानिधान ने आरामके दिन दिखायेयही विचारकरतेहुये पर्वतकेनीचे २ प्रसन्नचित्त छाया में चले जातेथे और मेवे तोड़ २ के लड़कों और जहरमिश्रीको खिलातेथे संध्याको उसी पहाड़के किनारेखड़ेहोकररहनेकीजगह ढूंढ़तेथे इसीअन्तरमें एक वृक्षसे सलामका शब्द सुनाईदिया इधरउधरदेखा तो किसीका पता न लगा सम्मुख देखातो एक वृक्ष दृष्टिपड़ाउसमेंमनुष्य की सूरतके फललगेहैं और उसी वृक्षसे आवाज आतीहै और ईश्वरकी रचनाकातमाशादिखातीहैऔर अमीरनेईश्वरकी रचनापरधन्यवाद करके नमस्कारका जवाबदियाउसीवृक्षसेफिर आवाजआईकिमेरानाम दाकहैएकरात्रिकोसिकन्दरशाहनेभीमेरीछायामेंवासकियाथा इसीस्थानपर आपभी सुखपूर्वक वासकीजिये और यहांके तमाशेसे अपनेचित्तको आनन्ददीजियेइसबातकेपश्चात्उसीवृक्षसेएक उत्तमफलअमीरकीगोदमेंगिरा अमीरने उसकोकाटकर आपखाया और बाक़ीजहरमिश्री और दोनों लड़कोंकोदिया उसफलके खानेमेंऐसास्वादपायाकिजिसका वर्णन नहींहोसक्ता फिरउसीवृक्षकेनीचेहर्षसेवासकियाऔरसम्पूर्णरात्रि वह वृक्ष अमीरसेबातीलापकरतारहा और अपनीमिष्ठवाणीसेअमीरको प्रसन्न करतारहाऔरकहा कि जिसस्थानमेंआपबैठेहैं इसीजगह सिकन्दरभी ठहराथा और मुझसे यहभी पूछाथा कि मेरी मृत्युकबहोगी तब मैंनेउसको यहउत्तरदिया कि जबलोहेकी जमीन और सोनेका आकाश होगा तबतुमइस संसारकोछोड़ोगेउसकेदोतीनदिनकेपश्चात्हफ्तगर्दिश सुलेमानीके जंगलमें जो यहांसे थोड़ीही दूरहै कि उसमें वृक्षका नामभी नहींहै पहुंचा तोवहां सूर्यकी गरमीसे अत्यंत व्याकुल होनेलगा तो उसके साथियोंने लोहेकेशिरहें बिछाकर ढालकी छायाकी लेकिनउसी समयमें उसका बैकुंठवास होगया अमीरने पूछा कि हे वृक्ष मुझको तो बतला कि मैं कबमरूंगा उसने उत्तरदिया कि जब अशकरके किसी पैरमें नाल न रहजाय तब तुम जानना कि अब मेरीअवस्था संपूर्णहोगईहै अब कुछ दिनमें बैकुंठवास होगा परन्तुअभी बहुतदिनशेष रहेहैंइसीप्रकार से रात्रिभर वह वृक्ष अमीरसे बातें करतारहा और प्रातःकाल होतेही वहांसें उठकर रवानाहुये और दोपहरकेसमय जब रेगिस्तानमें पहुंचे तो वह सूर्यकी तपिशसे जलनेलगा तबतो सब गरमीसे व्याकुल होने लगे परन्तु अमीरके पास हजरतखिजरकी दीहुई मशकथीउसीमेंसे आपभी जलपीतेथे और लड़कोंकोभी पिलातेजातेऔररात्रिको उसीमेंपड़रहतेथे इसीप्रकारसेसातदिनकठिनतासेकाटेआठवेंदिनएकनगरमेंपहुंचे वहांकी

अधिपतिएकस्त्री अतिदयालऔरसुशीलशीरीनासघीअमीरको अगवानी लेकर अपनेनगरमें लेजाकरकईदिनोंतक मेहमानदारीकी अमीरनेदेखा कि स्त्रियोंके सिवा यहां पुरुषका कहीं नामनहींहै उसस्त्रीसे पूछाकियह क्याकारणहै कि यहां पुरुष कहीं नहीं दिखाई पड़ते उनसे कहाकिइस नगरमें स्त्रियोंके सिवापुरुष नहीं उत्पन्नहोते अमीरने पूछा कि फिरगर्भ क्योंकर रहताहै उसने कहा कि इसनगरके बाहर एक वृक्षहै उसमेंनफल लगताहै नफल जबस्त्री युवाहोतीहै तो उसीवृक्षमें जाकर लिपट जातीहै औरथोड़ेसमयकेपश्चात्चीखमारकरगिरकरबहोशहोजातीहै फिरहोश में आकर चलीआतीहै तभी उसकेगर्भ रहजाताहै और लड़कीही उत्पन्न होतीहैअमीरने स्त्रियोंकास्वरूप और उनका यहहालदेखकर ईश्वरका धन्यवादकिया लड़कोंनेअमीरसे कहा कियहांकी स्त्रियां अतिस्वरूपवान हैंइनको लेचलना चाहिये शीरीने कहाकियहांकी स्त्रियांकहीं जानहीं सक्तीं और जो कोई लेजाताहै तो एक चौकीदार ईश्वरने यहांकरदिया हैवह फिर उठाले आताहै तब लड़कोंने कहा कि तू हमारे साथकर दे देखेंकौन हमसेछीन लेआताहै आखिरकार लाचारहोकर पचास स्त्री उसने साथकरदीं जबवहां सेचले और रात्रिको एक स्थानपर सोये तो वहांसे पचीसस्त्रियोंको कोई उठालेगया जबप्रातःकाल देखातोबड़ेसंदेह मेंपड़े कि वृथा हमलेआये दूसरीरात्रिको जबसोने लगेतो दोनोंलड़कों ने सबस्त्रियोंके कमरमें रस्सीलगाकर अपने पैरोंमें बांधली तोरात्रिको सीमुर्ग की स्त्रीजोवहांकीवृक्षकथीरात्रिको आईऔरसबस्त्रियोंकोलड़कों समेत उड़ा करभागीकि इतनेमें अमीरके नेत्रखुलगये तोदेखा कि कोई सबस्त्रियोंको उड़ायेलियेजाताहैऔरनीचेलड़के लटकेजातेहैं अमीरने अपने दिलमें विचारा कि शायद कोई देवहै इसविचारसे एकतीरऐसा मारा कि सीमुर्गकी जोरूघायलहोगई और स्त्रियोंसमेत उतरपड़ी और अमीरसे आकर कहाकि ऐसाहबक़िरां मैंनेआपका क्या अपराध किया था कि आपने मुझे तीरमारा और मेरेपुरुष नेजो आपके साथ नेकीकी थी यहउसका बदलाहै मैंतोयहां इन्हींस्त्रियोंकी रक्षाकेलिये ईश्वर से आज्ञापाकर रहतीहूं कि कोईइनस्त्रियोंको बाहर न लेजानेपावे अमीर सीमुर्गकी जोरूको देखकर अतिलज्जितहुआ और कहने लगा किमैंने तुझको नहीं पहिंचानाथा सौगन्धखाताहूं किमैंने तुझको नहींजाना ईश्वरकेलिये अपने पुरुषसे यह न कहना अबकी बारमेरा अपराधक्षमा करना क्योंकि उसनेमेरे साथबड़ी नेकीकीहैतबअमीरने ईश्वरकास्मरण करके उसकेघावको अच्छाकरदिया तबवहस्त्रियों समेत अमीरकी आज्ञा लेकर रवानाहुई

वृत्तान्त अमरू अमीर अमीरी केपुचका।।

नौशेरवांजोकरवानपश्चिमीकेलिखनेसे पीरानसग़रबीकेनामसेतबल

जंग बजवाकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ तो इतनेमें सामनेसे गर्द उठा और जब गर्द बन्दहो गई तो दासौभरण्डे दिखाईपड़े तो अमरूको विदित हुआ कि दोलाख सवारोंकीसेनाआरहीहै जब समीपक़िलेके आपहुंचे तो विदितहुआ किक़ैरवांमग़रबी अपने सेनापतिपीरानमग़रबीको साथ लेकर अपना सेना समेत आताहै तबनौशेरवां ने जोपीन और बेचन को अगवानीके लिये भेजा तो उसने आकर बादशाह के तख्तपर बोशा देकर इसप्रकारसे बादशाहको समझाया औरपीरानमग़रबीको क़िलेपरधावा करनेकीआज्ञादी और कहाकिजिसतरहसेहोसके क़िलेको अमरूसेछीन लेना जिससमय पीरान मग़रबी अपने दोलाखसवारलेकरक़िलेकी तरफ आरूढ़हुआ तोअमरू अपनीसेनाथोड़ीदेखकर डरा और ईश्वरकाध्यान करनेलगा तोइतने में जंगलकी ओर गर्दउठीतोनक़ाबदारनारंजी पोश अपनेचालीस सहस्रसवार लेकरआखड़ाहुआतो अमरूअतिआनंदहुआ बख्तियारक ने उसको देखकर नौशेरवां से कहा कि यहीं नक़ाबदार सदैव मुसलमानी सेना की सहायता को आताहै और इसीकीसहायता सेमुसलमानी सेनाकी विजयहोतीहै इतनेमें नक़ाबदारने पीरानमग़रबी के सामने आकर ऐसीडाट लगाई किउसका घोड़ा पीछे को हट गया तबउसने क्रोध करके नक़ाबदार के शिरपर एक तलवार मारी नक़ाब-दारनेघोड़ेका आसनदबाकर तलवार कूदकर छीनली और एकहाथ से उसकीकमर पकड़ कर ऊपरको उछाला और जब नीचे को आने लगा तोएक तलवार ऐसीमारी कि दो भाग होकरपृथ्वीपर गिरपड़ा तबतो उसकीसेना ने नक़ाबदार कोआकर घेर लिया और नौशेरवां की सेनाने भी सहायता की परंतु नक़ाबदार अपनेचालीससहस्रसवारोंसे मारता हुआ जंगल की तरफ चला गया और अमरू क़िलेमें विजय का डंका बजवाने लगा तो बादशाहनौशेरवांपराजय पाकरअपनीसेनासमेतखेमेमें जाकर क़ैरवां मग़रबी को मातमपुरसी की खिलअतदेकर इसप्रकारसे समझाया इतनेमें उसीदिन मस्कालशाह बादशाहक़िलेतेग़ मग़रबी का नौशेरवां के समीप आया तो बादशाह से समझा करकहा किकलमैं इस क़िलेको छीनलेताहूं और इनलोगों सेअपना बदला लेताहूं परंतु आज राचिकोमेरीमेहमानदारी स्वीकारकीजियेतबबादशाहनेकहाकि अच्छा तबवह नौशेरवांके खेमें के समीप खेमा गाड़ कर उतरा और मेहमान-दारीकी तैयारी करने लगा और जिससमय अमरूने सुना कि मिसकाल शाह नौशेरवां की मेहमानदारी केलिये उत्तम २ भोजन बनवा रहा है तोसबअपनेसरदारोंकोबुलवाकरकहाकिआजतोतुमलोगथोड़ा अमकरो तोमैं तुमको चलकर उत्तम २ भोजन खिलाऊं मिस्कालशाहने नौशेरवां कीमेहमानदारी केलिये भोजन बनवायाहै राचिको क़िले से निकलकर खन्धौर और अमीरऔर बहरामकानामलेकरउसकीसेना परधावाकरो

तो सबने उसकी आज्ञास्वीकार की तबअमरूने सिपाहियों से कहा कि तुमलोग दिनभरमें पांचसौ देवकागजके चारसौ गजके लंबे तैयार करो पहिये उनके पैरमें लगावो और जिससमय मेरे सपेद मोहरे का शब्द तुम्हारे कानों में पड़ंचे तोतुमउसी समय उनको लेकर आना तब सिपाहियोंने अमरू की आज्ञानुसारदिनभरमेंदेवों को बनायाऔर जबरात्रि कोनौशेरवां मिस्कालशाह कीसेना में गया संयोग से वहरात्रि शुक्लपक्ष कीथी और चारोंतरफ रोशनी भी होरहीथी बादशाह नाचदेख नेलगे जबपहर रात्रि व्यतीत हुई तो अमरूने सुक्लबिल को स्याह क़ैतासपर सवारकराके कहा कि अमीर कानामलेना और आदीसे कहाकि तू अपने कोलन्धौर कहना और सुलतान वख्तक मग़रबीसे कहा कितूबहराम के नाम सेशोर गुल करना इसी प्रकारसे सेनाको समझाकर क़िलेसे बाहर निकला और मिस्कालशाह और नौशेरवांकी सेनापर जागिरा तबसुक्लबिलने तो कहाकिमैंहमजाह्न और आदीनेकहा किमैं लन्धौरपुचसादान ह्नं और सुलतान वख्त मग़रबीने चिल्लाकर कहा कि मैंबादशाहखाकान चीन का बहरामनामीह्नं इसके पश्चात् तीनों सेनामें तलवार चलने लगी तब अमरूनेविचारा कियहतो युद्धकरनेलगे परंतु सेनामेरीथोड़ीहै कहीं ऐसानहो कि पराजयपाकर लज्जितहोऊंसपेदमोहरा बजाकेशत्रुकीसेना को ललकारा किसाहबक़िरां आज्ञादेतेहैंकिकाफ़केदेवोंको अतिशीघ्रही दौड़आकर शत्रुओंको खाजाओ सिपाहीअमरूका शब्द सुनकर देवोंको लेकरआयेऔरउनकेमुखसे आतशबाजी छोड़नेलगेतोशत्रुकी सेनामेंजाना किदेवोंकी सेना अमीरके साथआईहै वह अबलोगोंको पराजय देगीइस विचारसे डरकर भागखड़े हुये हरचन्द बख्तकने कहाकि यह सब अमरू कानाल हैं परंतु किसीनेन सुना सबशिरपर पांवरखकर जोभागेतोबारह कोसतक चले गये औरकहीं एकसाथतभी नठहरे बादशाहोंनेदेखाकिजो हम बिनासेनाकेयहां रहे तो अवश्य शत्रुके हाथसेक़ैदहोंगे वह भीअपनी सेनाकेपीछेभागे तबअमरू नेसबअसबाब दोनोंबादशाहोंका उठाकरजनबीलमें रक्खा मानोंअपनाअसबाबहै और सेनाको पेटभरकर भोजन करवाया तबसुक़बिल से कहाकि तुम क़िले में जाकर स्त्रियों कोसवारकरके सब असबाब ऊंटोंपरलादकर अति शीघ्रही आवो कोईवस्तुवहांरहने न पावे कियहां सेसब वस्तुलेकर क़िले तंजमगरबको चलें तबवह आज्ञापातेही जाकर सबमालस्त्रियों समेत क़िलेसे निकाल कर बाहर आया वहां कोई वस्तुन रहनेपाई तब अमरू सेनासमेतक़िलेतंज मग़रबकीतरफचला औरजिससमयक़िलेपरपहुंचातोमिस्कालशाह कानालीपचसेनापतिको दिखलाकर क़िलेमें निस्संदेह जाकरबैठातबकाफिरोंकोमारनेलगा और जोमुसलमानहुये उनका प्राण छोड़कर शेषको माराडालाऔरक़िलेको अपने तौरपर करके दरवाजेपर अतलसका शामियाना खड़ाकरकेकुरसी

जड़ाऊ बिछाकर आरामसे बैठा और क़िलेका दरवाज़ा बन्द कर लिया नौशेरवांका हाल सुनिये कि उसने प्रातःकाल होतेही अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखआवो कि क़ाफ़के देवों की सेना कहांहै यहां अमरू कागज़ के देवोंको पहाड़के नीचे बराबरसे खड़ाकर गयाथा सिपाहियोंने दूरसे देखकर बादशाह से कहा किदेवोंकी सेना पहाड़के नीचे खड़ीहै बख्तकनेकहा कि मिट्टा खातेहैं जोझूंठबोलतेहैंयह सब अमरूकाजालहै इतनेमेंसिपाहियोंने आकर ख़बरदी की अमरूक़िले तंग मगरिब में जाकर दाख़िल हुआ और सब सामान बादशाही भी उठाकर लेगया यहहाल सुनकर बादशाहअति व्याकुल हुआ औरपीछे को सेना समेत जाकर क़िलेतंग मगरिबको घेरकर पड़ा अब अमरू का हालसुनिये कि अपने सरदारोंको इकट्ठाकरके कहा कि अब हमआकाको अठारह वर्षसे अधिक व्यतीत हो गये और अब तक न आये सो अब हम सबको केवल आधी खुराक देवेंगे जिसकी खुशीहो वह रहे नहीं अपने घरकी राहलेवे तब सबोंने तो स्वीकारकिया परन्तुआदीने कहा कि मुझसेतो नरहा जायगा क्रोधित होकर वहांसे निकला और बादशाह नौशेरवां से आकर प्रार्थनाकी कि आप मुझको नौकर रख लेवें उसने सब वृत्तांत पूछकर रखलिया और आज्ञादी कि तुम दरवाज़े पर बैठेरहो कोई भीतर न आनेपावे तबवह जाकर दरवाज़े पर बैठा तो रात्रिको एक स्त्री आई उसके हाथ पकड़करऐसे प्रकारसे भोगकिया कि वह मरगई तब वहांसे डरकर नौशेरवां के घोड़े पर सवारहोकर भागा और मार्गमें जाकर क्षुधाके मारे उसको भी मारकर खालिया तबफिर वहांसे चलकर एक साधुकी जमातमें पहुंचा वहांसेभी निकाला गया तो जाकर नगरमें भिक्षा मांगते एक नानबाई की दूकान पर पहुंचा उसने दो रोटियां दीं आदी और मांगने लगा तो उसने कहा कि मियां अच्छे तो बनेहो मेहनत करके नहीं खाते तब फिर आदीने कहा कि तुमहीं नौकर रखलो उसने लकड़ी चीरने पर रखलिया और कहा कि पेटभर तुमको भोजन दूंगा जब आदी उसकी लकड़ी चीरचुका तो उसने उसे पांच रोटियांदी तब आदीने कहा कि इसप्रकारसे मेरापेट न भरेगा तुम उठकर अलग बैठो हम खालेवेंगे जब उसने स्वीकार न किया तो उसकी गरदन पकड़करनीचे करदियाऔर सब रोटियां खालींइसी तरहसे कई नानबाई की रोटी खागया पीछेको इसकी ख़बर बादशाह को पहुंची तो प्रथम कोतवाल आया परंतु उसके सिपाहियोंके कहनेसे आदीने न माना आख़िरको बादशाहआपही आया औरआदीसेबुलाकर कहा कि जो तुम मुसल्मानों से युद्ध करना स्वीकार करो तो हम तुम को नौकर रख कर अपनी बेटी के साथ विवाह कर देंगे औरबड़ी प्रतिष्ठासे रक्खेंगे परंतुहमारेयहांकीयहरीतहै कि जबस्त्रीपुरुष

मेंसे एककीमृत्यु होजावेतो दोनों गाड़े जातेहैं आदीने सब स्वीकार कियातब बादशाहने लेजाकर अपनी बेटीकेसाथ बिवाह कर दिया तो जब रात्रिको आदीने उसकेसाथ भोगकिया तो वह मरगई प्रातःकाल बादशाहने देखकर आदीसे कहा कि स्त्री अब मरगई चलोअब तुम भी गाड़ेजाओगे पीछेको जब सबलोगोंने स्त्रीको गोरमें धरके आदी को भी उसीके साथ गाड़नेकी युक्तिकररहेथे कि इतनेमें उसी समय अमीर परदेश क़ाफ़से आकर उसी नगरमें उतरे उस स्थान पर भीड़ भाड़ देख कर खाजे बहलोलसे कहा कि देखोतो यहक्या होरहा है लड़कोंने जाकर जो देखातो एक मनुष्य को जीतालोग गोरमें गाड़नेको ठेलते हैं और वह नहीं जाता आकर यहीहाल अमीरसे कहा तो अमीर भी गये तो देखा कि आदीहै उससे पूंछाकि तूकौनहै औरयह क्या होरहा है उसने कहाकि मैं हमजा अरबीकी सेनामें नौकरथा सो वह अमरूको स्वामी सेनाका बनाकर परदेशक़ाफ़को चलागयाहै सोअठारहबर्ष तकतो अमरू आधापेट भोजन दिया करताथा वही खाकररहताथा अबउसने चौथाई पेट करदिया है तब वहां से चलकर भिक्षा भवन करता हुआ यहां पहुंचा यहांके बादशाह ने अपनी बेटीके साथ मेरा बिवाह करदियासो वह मत्यु से मरगईतो अब मुझको भी उसीके साथ गाड़नेकी इच्छाकरते हैं अमीरने पूछा किंतु अमीरको पहिचानताहै उसने कहा क्यों नहींतब अमीरने मुखपरसे मुकुट हटादिया देखतेही आदीदौड़कर अमीर के क़दमोंपर गिरपड़ा अमीरने आदीको छातीसे लगाकर कहा कि अब तू न डर कोईअब तुझको न मारसकेगा यह कहकर एकबड़े ज़ोरसेशब्दकिया तो बादशाह शबीदशाहने सेनासमेतआकर अमीरको घेरलिया अमीर ने सबको मारडाला पीछेको शबीदशाहके सेनापतियोंने मुसलमान होकर अमीरके साथ सुलह करके अपने स्थानपर लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी करके अमीरको रुख़सत किया वहांसे सबलोगों समेत चलकर दोपहरके समय एक नदी के निकट पर पहुंचकर उतरे आदी गरमीसे जाकर नदीमें कूदकर स्नान करनेलगा तो एकसंदूक़मयहताहुआ निकला आदीने सन्दूक़को पकड़कर खोला तो उसमें एकदेव बन्द था उठकर आदीसे लपटगया तो आदी चिल्लाकर अमीरको पुकारनेलगा अमीरनेजाकर देवको सन्दूक़में बन्दकरकेआदीको सौंपदियाआदीनेइस बिचारसेकि अमरूने मुझको यह दुःखदियाहै मैंभी उसको चलकर दुःख दूंगा सन्दूकको अपनेपास रखलिया तब अमीरने आदीसे कहाकि तुम सबको साथलेकर आवोमैं पहलेसे चलकर क़िलेका हालदेखूं कि अमरू उसी किलेमेंहै या औरकहीं गया और आदीसेयह पहिलेही विदित होचुकाहै कि किलेतंग मगरिबमें अमरू मेहर निगार समेतहै वहां से अश्वकरपर सवार होकर अमीर जब चलेतो थोड़ेही समय में आकर

क़िलेके समीप पहुंचे तो देखा कि क़िला अतिपुष्ट बनाहै किसी प्रकार भीतरजाने कीगली नहींहै तब उसीक़िलेके निकट चर्मबिछाकर बैठगये और अशरफ़ीको बनमें चरनेकेलिये छोड़कर भेजदिया और आपफ़कीरों की तरह दीवालके सहारेसे बैठगये अब अमरूका वृत्तांत सुनिये कि उसदिन अठारहवर्ष पूर्णहोनेपर भी अमीरके न आनेसे सबलोग अति व्याकुलथे उससमय अमरूमल्लिका मेहरनिगार को समझाकर कोठेपर लेगयाथा संयोगसे तीनपक्षी बराबरसे उड़तेदिखाईपड़े मेहरनिगार ने अपने चित्तमें यह विचारकरके कि जो अमीर आज आतेहों तो बीचके पक्षीके तीरलगे संयोगसे उसीकेलगा और वह पक्षी और तीर आकर अमीरके आगेगिरा अमीरने तीरको उठाकर चूमकर रखलिया तब अमरूने दूरसे देखकर कहाकि तू कौनहै जो यहां आकर बैठाहै और मल्लिकाके तीरको क्यों उठाकर रखलिया लातीर हमको दे अमीरने कहाकि मैं साधूहूं परदेशफ़ासे आताहूं परदेशफ़ाका नाम सुनकर अमरू समीप आकर पूछनेलगा कि तूने हमज़ा कोभी देखाहै अमीरने कहाकि मैं उसीके पाससे आताहूं और उसने मुझसे कहाथा कि जब मक्केकीतरफ़ जाना तो हमारेपितासे प्रणाम कहदेना और कुछसन्देसा मेहरनिगार सेभी कहनेको कहाहै सो हम उसीके कानमें कहेंगे तब अमरूने अनेकप्रकारसे अमीरको लोभ दिखलाकर कहाकि तूमुझे बतलादे तो बहुत कुछदूंगा परन्तु अमीरने सदैवयही उत्तर दिया कि हम उसीके कानमें कहेंगे पीछेको लाचार होकर मल्लिका के पास जो गयातो वहां सबप्रकारसे प्रसन्नता होरहीहै मेहर निगारने कहा कि आजमैंने सगुन उठाकर देखा सो निश्चय है कि आज अमीर अवेंगे हमारा तीर दीवार के नीचे गिराहै तुमजाकर लेआओ अमरूने कहा कि आज एकसाधू आकर क़िलेकेनीचे बैठाहै उसीके पासतीर है और कहताहै कि मैं परदेशफ़ासे आता हूं हमज़ाने कुछ सन्देसा कहाहै वहभी मैं मेहरनिगार के कानमें कहूंगा सोंअनेकप्रकार से मैंनेउसको लोभदेकर कहा परन्तु न वह तीर देताहै न संदेसा कहता है और कहताहै कि मैंनेहमज़ाके प्रतापसे हज़ारों रुपये अशरफ़ी मंगनो को बांटदियेहैं मुझको अब कुछ रुपये अशरफ़ीकी आवश्यकता नहीं है ज्यों ज्योंदिन व्यतीत होता जाताहै त्यों त्यों अधिक दुःख होताहै मेहरनिगारने आज्ञादी कि अति शीघ्रही जाकर उसको लाओ अमरू ने फिर आकरकहा कि सहस्र अशरफ़ीमैं तुझको दूंगा बतादे अमीरने कहा जो पहिले मैंने कहाहै वही अब भी कहताहूं तब बहुतही लाचार होकर अमरूने अमीर से कहा अच्छा आओ तब अमीर ने पक्षीतो अमरूको देदिया और तीर और चर्म अपने हाथ में लेकर चला जब क़िलेके भीतरगया तो अमरूने कहा कि मेहरनिगार इसी

परदेके आड़में बैठीहै अब जो कहनाहो कहो अमीरने कहाकि मैं तो कानहीमें कहूंगा जो सुननाहो तो आवे नहीं मैं जाताहूं लाचार होकर फितनाको लाकर अमीरके संमुख बैठालदिया तब अमीरने जो मुखखोलकर देखातो कहाकि यह मेहरनिगार नहींहै यह तो फितनाहै अमीरने मुझे सबकी तसवीरें दिखाईहैं जो सुननाहो तो मेहरनिगार आवे नहींमैं जाताहूं तब अमरूने क्रोधितहोकर मुक़ाबिल को बुलाकर आज्ञादी कि जब यह क़िलेसे बाहर जानेलगे तो इसका शिर काटकर फेंकदो यह बड़ादुष्ट है इतनेमें मेहरनिगारने आकर संदेशा सुननेके लिये कानझुकादिया और अमीरने चुपकेसे कहा कि मैंसाधु नहींहूं मैं हमज़ाहूं यह कहकर दोनों चिल्लाकर बेहोश होगये अमरूने जो बिचार करके देखातो पहिंचाना कि हमज़ाहै दौड़कर कदमोंपर गिरपड़ा और गुलाब आदि छिड़ककर दोनोंको सावधान करके नाचरंगकिया और मंगनोंकोरुपया पैसाअशरफी लुटानेलगे यहां तककि उसदिन अमरूने भी दोपैसे पुण्यकिया और नक्कारखानेमें जाकर नौबत बजनेकी आज्ञादी तत्पश्चात् अमीर महलसे निकलकर बाकरआये और सबछोटेबड़ोंसे मिलकर यथा उचित सबको खिलअत देकर प्रसन्नकरके महलमें आकर मेहरनिगार के पासबैठे और मलिका भी स्नानकरके पोशाक बदलकर बैठी लिखनेवाला लिखताहै कि जब नौशेरवांके कानमेंनौबत आदिबाजों के बजने का शब्द पहुंचातोउसने अपने सिपाहियोंको बुलाकरपूछाकि यहक्या होरहाहै सिपाहियोंने कहाकि क़िलेमें नौबत बजरहीहै शब्द सुनाई पड़ताहै सुनतेहैं कि हमज़ाक़ाफसे ईश्वरकी कृपासे कुशलानन्दसेआया बख़्तकने कहा कि अमरूको फिरकोई जालसूझाहोगा तब बादशाह ने बुजरुजमेहर से पूछा कि आपके बिचारमें क्या आताहै उन्होंने कहाकि हिसाबसे तो बिदित होताहै कि हमज़ा आयाहोगा और इसी बिचारसे मैं भी बसरेसे आयाहूं कि चलकर अमीर हमज़ासे मुलाक़ात करके क़ाफका सब वृत्तांत उनसे सुनूं अब अशकर देवके पुत्रका हालसुनिये कि जिस समय वह बनमे चरनेकोगया तो वहां नौशेरवांके घोड़ेभी चररहे थे तो अशकरने क्रोधितहोकर बज्रतसे घोड़ोंको टापोंसे मारडाला और शेषजो बचरहे वे सायंकाल को अपनी सेनाकी तरफभागे तो अशकर भीउनके पीछेदौड़ा जो व्याकुलहोकर गयेतो तोड़तेफांदते अपने थान पर पहुंचे तबलोग अशकरके तरफ पकड़नेको दौड़ेतो जोही उसके सामने आताथाउसीको पकड़कर मारडालता इसीप्रकारसे हजारहों काफिरोंको अशकरने मारा नौशेरवांकी सेनाने जाना कि मुसल्मनों नेछापामाराहै आरूढ़होकर अपनीही सेनाको शत्रुकीसेनाजानकर प्रातःकाल तक युद्धकिया किये जब प्रातःकाल हुआ तो देखाकि सब

आपही मरेछये पड़े हैं शत्रु का कहीं नाम नहीं नौशेरवां अशकर को देखकर मोहित होगया और आज्ञादी कि किसी युक्तिसे इस घोड़ेको पकड़ो तब जो उसके पकड़ने के लिये जाता तो वह घाव लेकर पलट आता किसीने काबू न पाया अमीर ने अमरूसे कहा किरा चिसे अब तक नौशेरवां की सेना में शोरगुल हो रहा है जाकर देखो तो क्या कारण है क्यों शोर गुल हो रहा है इतने में एक सिपाही ने आकर सब हाल अमीर से कहा तब अमीरने अमरूसे कहा कि वह घोड़ा मेराहै तुम जाकर उससे कहो कि ऐ पुच आरनादूस वाला निसा तुझको साहब-क़िरां ने बुलाया है मैं तेरे बुलाने के लिये आया हूं तो वह उसी दम तुम्हारे साथ चला आवेगा तुम निस्संदेह होकर उसको यहां लेआना अमरूने अमीर की आज्ञानुसार जाकर घोड़ेसे अमीरका संदेसा कहा तब वह अमरू केसाथ हुआ तब अमीर क़िलेसे नीचे आकर अशकर को गलेसे लगाकर क़िले में लेआकर अमरूका सब हाल उसे सुना कर कहा कि यहीतुम्हारी सेवा किया करेगा किसीप्रकार से तुमको दुःख न होने पावेगा और अमरूकोआज्ञादी कि अशकरको सबघोड़ोंकेआगे बांधना और खाने पीने की ख़बरदारी रखना उसके दूसरे दिन आदी जहर मिश्री बहलोल व खाजे आशोब समेत आया जहर मिश्री को तो अमीरने मेहरनिगार के पास महलमें भिजवा दिया और आज्ञादीकि सदैवमलिका के पासरहे और खाजे आशोब बहलोल को अपने साथ रहने की आज्ञादी आदीने चुपके सेअमरू को बुलाकर कहा कि इस संदूक़ में बहुतसा जवाहिर है इस को तुम लेजावो अपने पास रक्खो तबतो अमरू अति प्रसन्नताके साथ उस संदूक़ कोलेकर एक कोठरी में जाकर ज्योंही संदूक़खोला तो उसमेंसेएक देव निकला और अमरू के ऊपर मारने को दौड़ा तब अमरू डरकर भागा और एक कोनेमें खड़ा होकर जहरमोहरा बजाने लगातब अमीरने जहर मोहरे का शब्दसुना तो उससमय में मेहरनिगार केसाथलेटा था सुनतेही उठकर दौड़ा कि अमरू पर क्या आफत आई किवह सपेद मोहरा बजारहा है मेहरनि-गारको साथ लेकर सहन मेंआकर खड़ाहुआ मुक़ाबिल भी जहरमिश्री के साथ लेटाथा अमीरका आहटपाकर निकल आया तो वह भी अति व्याकुलहुआ अमीरने शोकानलगाकर सुनातो विदितहुआ किफलानी कोठरीसे जहर मोहरेका शब्द आरहाहै अमीर उसकोठरी केतरफजो गये तो दरवाज़ा भीतरसे बन्दपाया एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़ भीतर जोगये तो देखा कि वहीदेव जिसको अमीरने क़ैदकरके आदी को दिया था तलवार लिये अमरू के मारने को आरूढ़है और अमरू एक कोनेमें खड़ा जहरमोहरा बजा रहाहै जाकर उस देवको कमन्दसे बांधकर पृथ्वी पर गिरादिया और बाहर लाकर मेहरनिगारके सामने

पकड़कर चीरडाला तब सब लोग अमीर के बल की प्रशंसा करने लगे और मल्लिका ने बहुतसी अशरफी रुपया पुण्य किया और अमरू जो उसके डरसेबेहोश होगया था जब लोगोंने गुलाब छिड़क कर सावधान किया तब आदीसे अमरूने कहा कि यह तूने मेरे साथ क्या किया कि मुझको इतना दुःखमिला अच्छा मैंभी इसका बदलालूंगा आदी ने हँस कर कहा कि खाजे मैं तुम्हारे कहनेसे जिन्दागोर में गाड़ा गया था मैं कुछ उसका बदलालूं यानहीं फिर सुलह कराके अमीर ने दोनों को मिलवा दिया अमरू अतिप्रसन्न हुआ और अमीर कोआशीर्वाद देने लगा अमीरने कहा कि अमरू तूनडर आसमानपरी तेरे लिये बहुतसी वस्तु लावेगी ॥

इति तीसरा भाग सम्पूर्णम् ॥

चौथाभाग ॥

साहब क़िरां अर्थात हमज़ा का वृत्तांत ॥

लेखक लोग अति तेज लेखनीसे स्वच्छ कागजपर यों लिखते हैं कि जब नौशेरवां और बख़्तक आदिकोअमीरकाआनाविदितहुआ तोबख़्तक ने बादशाह से कहा कि हमजा अठारह वर्षकेपश्चात्पर दे काफ़ससेआया परन्तु आपके समीप न आया तो इससेविदितहोताहैकिबादशाह सप्त-देशीकीबेटीकोबलात्कार२सेलेनेकीइच्छारखताहैऐसेमें तबलजंगबजवाकर उससे युद्ध करनेकोआरूढ़हूजिये कि वहथकामांदाहैऔरआपकीसेना युद्ध करनेकोआरूढ़हैआसानी से उसकोमारकरमलिका को छीनलेवेंगे नौशेरवांभीउसके जालमेंआगयाऔरतबलजंगबजवानेकीआज्ञादेकरयु-द्धपरआरूढ़हुआ जब यह ख़बर अमीरको पहुंची तो उसनेभी तबलजंग बजवानेकी आज्ञादी तबवहचीनी व क़लावचीनीने कठारह मनकीचोब उठाकरतबलसिकन्दरीपरदैमारातोउसकेशब्दसेनौशेरवांकेसिपाहियों के कानके परदे फटगये और रुधिर बहनेलगाऔरबहुतसेसिपाहीबधिरे होगये इसी प्रकार से रात्रिभर दोनोंसेनाओंमेंयुद्ध का डंकाबजाकिया और प्रातःकाल होतेही जो पहलवानकिसदैवयुद्ध करनेके लिये आरूढ़ होतेथे अपनासब सामान करकेशस्त्रआदिकलेकरघोड़ोंको दोहरीतंगसे कसकरऔरसबसेमिलकरईश्वरका ध्यानकरनेलगेऔरबहुतसेमनुष्यताना देनेलगे किदेखेंकल किसकाशिरघोड़े कनीचेआताहैऔरकिसकीतलवार बहादुरी दिखातीहै और इसीकेलियेसालोंसे बैठेखातेथे अबवहदिनआ-पहुंचा और जोलोग सदैव घरमेंबैठेढोलऔरसितारबजायाकरतेथेयुद्धके डंकेकाशब्द सुनकरव्याकुलहोगये और अपनेसाईसोंसेकहाकिराचिको घोड़ोंकोकसकरतैयार रखनाहमतोअपने घरकीराहलेवेंगेहमसेतोयहन होगा किहथा प्राणदेवें आजहीसे तैयारीहोतीहैकलतोलाखोंमारेजावेंगे साईसोंने कहा कि ऐसाक्या है जिसकी मृत्यु होतीहैवहीमाराजाता है और जोऐसाचित्तहैतोसिपाहियोंमेंनौकरीक्योंकीथीवेश्याकेपीछेतबला बजाया करते याघरमेंबैठे मलारेंगाते तबतो उसने झुलझुलाकर कहा कि ओउल्लू तू बड़ा बुद्धिमान है जो नसीहतकररहाहैहमने अपनीखुशी से सिपाहियों में चेहरानहीं लिखवायाहै ईश्वर ईमानराय बेलदारकेची-नीका नाशकरे कि उसने खरची बटोरकर एकघोड़ा मोल लेकर हुमको

इसबला में बख्शीको सेंतमेंमरवाकरमेरानामसवारोंमें लिखवा दिया हैं नहींतो हम कब इसबला में पड़तेथे कि हमरुधिर देखनेसेव्याकुलहोजाते हैं कि एकदिन पिताने फस्त अपनी खुलवाईथी तो हमरुधिर देखकर पहरभर तक बेहोश पड़ेरहे और कहीं एककांटाभी गड़जावे तो एकपैसे की भांगखिलाकरनिकालतेथे नहींतोऐसेरोते कि निकटवासी लोगराचि भर न सोनेपाते और जबसे इससेना में नौकरहुये हैं सदैव भागने में आगे और मारनेमें पीछेरहे हैं हमनेकभी युद्धनहींकिया तूअभीथोड़ेदिनोंका नौकर है तूहमारा हाल क्याजाने आज सुनते हैं कि बादशाह सप्तदेशी सबकी युद्धमें परीक्षा लेवेगा इसलिये हमपहिलेही से अपना प्राणलेकर भागते हैं यही न कि पन्द्रहदिन की तनख्वाह काटलेवेंगे यानौकरी से छुड़ादेवेंगे तो बलासे अपनादिया सलाई बेंचकर खावेंगे परंतु युद्धकरने न जांयगे परंतु नौशेरवां का चित्त उसदिन ऐसाबढ़ाथाकिदोघड़ीराचिरहे मशाल बराबर से जलवाकर सबसरदारों और सेना समेत युद्धके खेतमें आकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ अमीरने भी यहहाल सुनकर मुक्तबिलसे संदूक मँगवाकर जिरह पहिनकर सबशस्त्रधारण करकेअश्वपर सवार होकर युद्धकरनेकोआरूढ़हुआतोसबसेनापति अपनी २ सेना लेकर अमीरके साथ नौशेरवां की सेनाके साथ युद्धकरने को आरूढ़हुये और कई सहस्र पंक्षाखे और महताबियां अमीरकेघोड़ेकेआगे २ जलाये हुये और कदम २ पर महताबी छोड़ातेथे और अमरू चारसौ सिपाहियोंसमेत अर्द्धमुकुट शिरपररक्खेऔरसीसुर्गकापरऊपरसे खोंसे अमीर के घोड़ेकी बाग पकड़े हुये आगे २ चलाजाताथा और सरदारों ने इस प्रकारसे अमीर को बीचमें करलियाथा जिसतरहसे अमीरमानो दूलह थे और सब सरदार लोगबरातीं विदित होतेथेदेखकर लोग अतिप्रसन्न होतेथे इसीप्रकार से बड़ी धूमधाम से जाकर युद्धके खेतमें पहुंचे तो हर एक सरदारों ने अपनी सेना को युद्ध करनेपर आरूढ़ किया तबमजदूरों ने झाल झाखर कांटा और बेलदारों नेफरुहेसे पृथ्वी को बराबर किया तब भिश्तियों ने मशक लेकर पानीसे पृथ्वी को स्वच्छकिया तोयमराजने आकर खेतमें डेराकिया तो हरएकके डरके मारे प्राणनिकलने लगेऔर मंगलग्रह हरएकके मस्तकपर चमकनेलगा और झगड़े बरदार बड़े जोरसे पुकारनेलगे कि जिसको आजबहादुरीदिखानाहोवहआकरयुद्ध पर आरूढ़ होवे औरमैदानमेंअपनीबहादुरीदिखावेदोनोंसेनाकेसिपाही व्याकुलहोगये मृत्यु का बाजारप्रचण्ड हुआ और सबने एकबारगी सन्नाटा मारलियाइतनेमेंनौशेरवांकीओरसेएकपहलवानसासानी कोहपैकर नाम अपनी सेनासे घोड़ाकुदाकरनिकलाऔरबादशाहकेतख्तको बोसादेकर आज्ञामांगी तबनौशेरवां ने अतिप्रसन्नताकेसाथएक गिलास शराबदेकर पीठठोंककर आज्ञादीमानोवह गिलास आखिरीथा पीकर

मैदानमेंआकर ललकार २ करकहने लगाकिऐ मुसलमानोंतुममेंजिसको यमपुरीमें मेरेहाथ से जानेकी इच्छा होवे वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे साहब किरांने मंचपढ़कर अग्रकरकोउसके घोड़ेकेबरा-बर लाकर एक डाट ऐसीमारी कि उसका घोड़ाडरकर पीछेहटगया औरडरके मारे उसका रंग बदलगया तो अमीरसे कहनेलगा कि हमजा तूऐसा बुद्धिवान और बहादुर होकर बादशाहसे शत्रुता रखताहै उचित है किचलकर बादशाहके पैरोंपरगिरकर अपना अपराधक्षमाकरा अमीर ने कहाकि तू युद्धकरने आयाहै या सुलहकराने युद्धकरने के लिये आया होतो सीधे युद्धकर नहींतो अपनीसेनाकीराहलेमेंऐसापागल नहींहूंकि तेरीबातोंमें आऊं तबतो उससिपाहीने बलछीलेकर घोड़ेको फेरा और अमीरने भी बलछीलेकर अग्रकरको चुचकारके उसके सम्मुख किया तो उसने एक बलछी अमीरके ऊपर चलाई अमीरने उसको रोंकलियाऔर दोदो हाथ चलेये कि अमीरने घोड़ेको फेरकर दाहिनी तरफ करके बलछी मारनेकी इच्छाकी परन्तु वहभीसिपाहगरी की विद्यामेंनिपुणथा अपने घोड़ेको बाईंतरफ फेरकर अमीरके ऊपर एक बलछी चलाई तो अमीर कूदकर अग्रकरकी काठीसे पीछेहोरहे औरउसके वारकोरोंक कर फिर जीनपर होकरघोड़ेको फेरकरजोमारा तोउसकी बलछीटूट-कर आधीपृथ्वीपर गिरपड़ी और आधी उसके हाथमें रहगई अमीर की इस फेरको देखकर मिचया शत्रु सबने प्रशंसाकी अमरूने जवाहिर लगे हुये उसनेजेमें देख दौड़करउठालिया और चूमकर अपने भोरेमें रख कर कोहपैकरसे कहनेलगा कि वह टुकड़ाभी मुझको देदे तू क्या करेगा मेरेकाम आवेगा उसने जवाहिर की लालच से कहा कि हे पापी एक तो तूने लेलिया और दूसराभी मांगता है अमरू ने कहा कि तू नहीं जानता कि गिरेपड़ेका मैं खामीहूं तू खुशीसे दे देगा तो अच्छाही है नहींता मैं छीनकर तुझको लज्जित करूंगा तब वह क्रोधित होकर कहने लगाकि देखेंगे किस तरहसे तू लेताहै यह कहकर उसी टुकड़े से चाहाकि अमरूको मारें इतनेमें अमरूने ढलवास में एक पत्थर रख कर घुमाकर उसके हाथ में इस जोरसे मारा कि उस का हाथ सुन्न होगया और वह टुकड़ा पृथ्वीपर गिरपड़ा अमरूने दौड़कर उस को उठालिया और अपने भोरेमें रखकर कहनेलगाकिदेख इसप्रकारसे अहमकोंको धोखा देकर लेतेहैं यह कहकर अपनी सेनामें जाकर खड़ा हुआ तब उसने लज्जित होकर अमीरसे कहाकि मैं तेरेसाथ बलछी से विजय न पासकूंगा इसमेंतो धोखे की बात होजाती है अब हमारी तुम्हारी तलवारसे युद्धहो और इसमें अपनी २ बहादुरी दिखावें तब अमीर ने कहाकि इससे क्या उत्तम है यहतो मैं चाहताही था कि तेरीतलवार की भी बहादुरी देखूं इतने मेंउसनेतलवार मियान से

निकालकार चलाया तब अमीरने उस को अपनी ढाल पर रोंककर अपनी तलवार खींचकर ललकारा कि खबरदारहो अब मैं भी वार करताहूं यह न कहना कि मुझको धोखा देकर मारा देख तलवार और वार इसको कहतेहैं यह कहकर एक तलवार उसके ऊपर चलाई इरचन्द उसनेभी बहादुरी से रोंका परंतु वह ऐसी तलवार न थी कि वार खालीजावे ढालको काटतीहुई शिरसे घोड़ेको काटकर पार होगई उसका पृथ्वीपर गिरना कि नौशेरवांने एक आहमार कर सेना से कहा कि खबरदार यह जाने न पावे जिस तरहसे बन पड़े मार डालो सेना आज्ञापातेही टीड़ीके समान अमीरके ऊपरआगिरी तो मुसल्मानी सेनाभी ढाल तरवार और बलछी और तीरआदिका लेकर ईश्वर का नामलेकर टूटपड़ी और तलवार चलनेलगी तो एक सायत में चालीस सहस्र सवार नौशेरवां के मारेगयेशेषभाग खड़े हुये कोई मुसल्मानीसेना का सामना न करसका अमीरने उसीदिन चारकोसका पीछा किया था और कभी किसीसेना का पीछा न कियाथा और पलटती समय विजयका डंका बजवाते हुये बहुतसे शत्रुओंके सिपाहियों को पकड़े हुये चले और उसदिन इतनामाल और असबाब पाया कि सब लोग धनवान होगये अमीर विजय पाकर अपने सरदारों समेत पलट कर अपने किले में दाखिल होकर नाचरंग करवाने लगे तत्पश्चात् अमीर नेपूंछा कि हमारे पीछे तुमपर क्या २ दुःख पड़ाहै तब अमरूने सब वृत्तान्त अमीर से कहा इतनेमें खाजे आशोब और बहलोलसे अमीरने बुलाकर पूंछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है तुमकिस कार्यको पसन्द करतेहोउन्होंनेकहा कि हमलोगोंको सौदागरी करनेकी इच्छा है तब अमीर ने कई सहस्र अशरफी देकर राहदारीका परवाना लिखकर जानेकी आज्ञादी तत् पश्चात् अमीरने अमरूसे पूछा किहमारेपीछेकभी लन्धौर औरबहराम भी आयेथे या नहीं अमरूने कहा किमैंने कई पत्र उनको लिखा था परंतु न उत्तरही लिखा न कभी मेरी सहायता के लिये आये परंतु जब कोई शत्रु मुझपर सेना लेकर आताथा तो एक नक़ाबदार नारंगी पोश आकर मेरी सहायता करताथा और उससे हजारहों मनुष्य मारेजाते थे और अनेक प्रकारसे मैंने उससे पूछा कि तू कौन है परन्तु सदैव उसने यही उत्तरदियाकिअभीतक हमसे कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ कि अपना मुख किसीकोदिखलावेंऔरजब मैंनेअधिकहठकियातो उसने कहा कि जब ईश्वर हमजा को लावेगा तो मेराहाल उस समय तुमको विदित होगा तब अमीरने क्रोधितहोकर आज्ञादी कि आजसे जो कोई लन्धौर और बहरामका नाम लेगा उसकी जबान निकलवा डालीजावेगी और उसको अति लज्जित करूंगा औरजब अमीरकेआने की खबर सब बादशाहों को पहुंचीतो सब सौगात लेकर अमीरकेपास

आकर हाजिरहुये और अशरफी रुपये नेवछावर करके मंगनोंको बांट दिया और जो न आसके उन्होंने रुपये अशरफी सौगात समेत भेजकर अमीरको अतिप्रसन्न किया लन्धौर और बहरामभी सुनकर अतिप्रसन्न हुये लन्धौरने बहरामसे कहा कि हमको तुमको बीसबाइस वर्ष रहते व्यतीत होगये और अबतक इसदेश के शत्रुओं से निर्भय न हुये और अमरू के ऊपर बड़े २ शत्रुओंने इसकाल में चढ़ाई की होगी परंतु हममेंसे कोई उसकी सहायता को न गया इससे निश्चयहै कि साहब किरां सुनकर अतिक्रोधित हुयेहोंगे इससे उचित है कि अब अमीर के कदमोंपर चलकरगिरैं और अपना अपराध क्षमाकराकर प्रसन्नता प्राप्तकरैं नहींतो लोग नमकहराम कहैंगे संसार में लज्जित तहोंगे तब बहराम ने कहा कि यहतो अति उत्तम है तुम आगेचलो मैंभी आताहूं और अमीर के चित्तको प्रसन्न करके आनन्द प्राप्त करताहूं यह कहकर बहराम तो चीनकी तरफ चलेगये और लन्धौर अपनी सेनाको किलेपर स्थित करके अमीर के समीप जाकर हाजिर हुआ तो अमीर ने बुलाकर अतिलज्जित किया तबलन्धौर ने अनेक प्रकार से अपने वृत्तान्त को वर्णन करके अपना अपराध क्षमाकरा के बहराम की भी सिफारिश की पीछेको अमीर ने उसका अपराध क्षमाकरके अपने समीप बैठाकर सेनापति का उपनाम देकर अतिप्रसन्न किया अमरूसे पूछा कि कुछ विदित हुआ कि नौशेरवां किसदिशा को गयाहै तब अमरूने कहा कि पूर्वकी तरफ गयाहै बहांके अधिपतिने पांचलक्ष सेना समेत एक सेनापतिको नौशेरवांकी सहायता के लिये भेजाहै सो वह आकर आपके समीप पहुंचगया है थोड़ीसी सेना तमसा नदीके उसपार है और कुछ इसपार उतर आईहैयहसुनकरअमीरनेभीआज्ञा दी कि हमारी सेनाभी चलकर नदीके समीप युद्धपर आरूढ़ होकरपड़े और नाचरंग का सामान इकट्ठा कियाजावे यहआज्ञा पातेही सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर युद्धकरने को आरूढ़ होकर अमीर के साथ होकर बड़ीधूम धामसे जाकर नदीके किनारे उतरे और नाचरंग होनेलगा इतनेमें सिपाहियोंने आकर खबरदी कि मुक़बिल बफादार फरमुज़ताजदार और बख्तकको बांधकर लिये आताहै यह सुनकर अमीर अति प्रसन्न हुये विदितहो कि जिसदिन युद्ध अतितीक्ष्ण हुआ था उसीदिन फरमुज़ ताजदार और बख्तक किलेको खाली जान-कर पांच सहस्र सवार समेत मलिका मेहरनिगार के लानेके लियेगये थे तोवहां मुक़बिल चालीस सहस्र सवार समेत किलेमें बैठाथा उसने पांच सहस्र सवारोंको मारकर उनदोनों के हाथोंको बांधकर अमीर के समीप पहुंचाया तो अमीर अति प्रसन्नहुये साहब किरांने फरमुजसे कहा कि जो आप मुसल्मान होवें तो यहराज्य आपही के लिये है

प्रसन्नता के साथ मुसलमान होकर गद्दीपर बैठकर राजधानी कीजिये बख्तक ने बिचारा कि हरमुज तो बचभी जावेगा परन्तु मेराप्राण न बचेगा इसबिचार से हरमुज को स्वीकार करनेकी सम्मतिदी जिस समय हरमुज और बखतक प्राणकी रक्षाके लिये ईर्षा चित्तमें रखकर मुसल-मान हुयेतब साहब किरांने हरमुजको राजगद्दी परबैठाकर बखतक को सेनापति बनाकर अति प्रसन्न होकर प्रसन्नता के डंकेबजवाने लगे और नाचरंग की सभाबन्दहुई तीनदिवसके पश्चात् चारघड़ी दिनरहे अमीर अति प्रसन्नता के साथ बनकी हरियाली देख रहेथेकिआकाशसे तीनमोर आकर उसीबनमें उतरे अमीरने देखकर मुक्तबिल वफादार और अमरू यारको उनके देखने के लिये भेजा परन्तु वे जातेही लोप होगये तो देखनेवाले इसहाल को देखकर बड़ेसन्देहमें हुये लिखनेवाला लिखता है कि वे मोर न थे परन्तु आसमानपरी थी जोकि परदेक़ाफसे सेना समेत आकर दो कोसकी दूरीपर उतरकर हरियाली देखकर चित्तप्रसन्न करनेको मोरकाभेष धारण करके आईथी उसीने अबदुल रहमान आदिको अमीरके पतालेने को भेजाथा थोड़े समय के बाद आकर अमीरने प्रसन्न होकर अपने समीप कुरसीपर बैठालकर अति प्रसन्न करके सर्ववृत्तान्त आसमान परीके आनेका पूछा और हरमुज ताजदार आदि सेनापतियों से आसमान परीके आनेका सर्ववृत्तान्त कहकर अमरू से कहा कि अब प्रसन्नहो आसमानपरी तुम्हारे लिये बहुत सामान परदेक़ाफसे लेआई होगी अमरू यहहाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ और रात्रिभर नाचरंग हुआ किया प्रातःकाल होतेही अमीर तैयार होकर आसमानपरी के पास जानेको आरूढ़ हुये सब सेना के सरदारों समेत अबदुल रहमान नें पहिलेही से सलासल परी-जाद को आसमानपरी के पास भेजदिया था उसने जाकर आसमान परीसे कहा कि अमीर बड़ीधूम धामसे आपकी मुलाक़ात को आते हैं तब उसने अति प्रसन्न होकर अपने डेरेसे क्रिलेतक बाग आराम बनाकर रचदिया जिससमय अमीर बारगाह सुलेमानीपर पहुंचे तो सबको बाहर छोड़कर आपखेमे के भीतर गयेतोआसमानपरी करीशा को साथ लेकर सरदारों समेत अमीर की अगवानी को उठकर आई और हँसकर अमीर से कहा कि आपतो मुझको छोड़कर चलेआये थे परन्तु मैं आपही आई और मेहरनिगार के बिवाहका सामान भी साथ लेआईहूं तबअमीरने पूछा कि क्या २ लाईहो हमको दिखलाओ आसमान परीने कहा कि बारगाह सुलेमानी नक्कारखाना सुलेमानी चार बाजार आदि और २ प्रकारके जवाहिर अमीरने अति प्रसन्न होकरकरीशाकोछातीसेलगाकरआसमानपरीकोभीप्यार करकेसबसर-दारों से कुशल आनन्द पूछकर अति प्रसन्न किया तबआसमान परीने

अति प्रसन्न हुई और एक कुरसीपर बैठकर बातें करने लगे तब हमज़ाने आसमान परीसे कहा कि अमरू जिसकी प्रशंसा हम आपसे कियाकरतेथे वहभी आपके समीप आनेकी इच्छा रखता है आसमान परीने कहाकि अच्छा बुलवालेओ अमरू जब खेमेके अन्दर गयातोसिवा अमीर के और किसीको न देखातो बड़े सन्देहमें हुआकि ऐसाखेमाहै परंतुसिवाअमीर के औरकोई दिखाई नहीं पड़ता तब अमीरसे पूछनेलगा कि कृपाकरके मुझेभी मलिका का स्वरूप दिखलाइये कि जिसके स्नेह से आप अठारह वर्ष परदे काफ़ में पड़ेरहे तब अमीरने कहा कि तू सलाम क्यों नहीं करता आसमान परी तख्तपर बैठी है अमरू ने कहा कि मुझको तो दिखाईही नहीं पड़ती क्या मैं कुरसियों और तख़्तको सलामकरूंमेरा ऐसा सलाम नहीं है तब आसमान परीने उसके दाहने नेचमें सुलेमानी सुरमा लगा दिया विदितहो कि दाहने नेचमें सुरमा लगानेसे देवदिखाई पड़तेहैं और बांये नेचकेलगानेसे परी दिखाई पड़तीहैं अमरूकी दाहिनी आंखमें सुरमा सुलेमानीजो लगाया तो अमरूकोदेवोंका स्वरूप दिखाई पड़ने लगा तब अमरूने अमीरसे पूछाकि इसमें आपकी स्त्रीकौनहै कृपा करके दिखला दीजिये अमीर अमरूकीबातोंपरहँसनेलगा और मलिका भी हँसते २ तख़्तपर लोटगई और आज्ञादी कि इसके बांयेनेचमें भी सुरमा लगादेवो अब इसको मेरा स्वरूप दिखादो तब बांयेनेच में सुरमा लगा देनेसे परियोंको देखने लगा तो देखा कि एकतख़्तपर एकस्त्री अति स्वरूपवान बैठीहै और एकयुवा लड़की अमीरकेस्वरूपकीउसकी गोदमें है जिसके स्वरूप के देखने से लोग बड़े सन्देहमें होतेथे चित्तमें बिचार किया कि विदित होताहै कि यहलड़की अमीरकी है तख़्तके समीप जाकर मलिका को सलाम किया और साहब किरांसे कहने लगा कि हेअमीर आसमानपरी यहीहै जिसके लिये अठारह वर्षतक आप दुखमें पड़ेरहे मैंतो ऐसी स्त्रीसे जाफ़रूरका लोटाभी न रखवाता न इसके छुयेबर्त्तन में भोजन करता यहसुनकर मलिका अति दुःखित हुई तबअमीरने जिन्नीभाषा में कहा कि तुमदुःखी न हो यहतो इसकी एक छोटीसी हँसी है अभीजो आप इसको कुछदेवें तो देखिये कि कैसी २ बातें आपको सुनाता है और मैंने क़ाफ़में इसका सब हाल पहिलेही कहाथा यह बड़ादुष्ट है कि जिसकी बातोंसे लोगबड़े सन्देह में होतेहैं तब आसमानपरी ने आंसू पोंछकर एक सुनहली खिलअत और बहुतसा द्रव्य समेत अमरूको दिया उसने खिलअतको पहिनकर सलाम किया और चुटकी बजा बजाकर इसशेर को अपने मसखरापन से गाने लगा॥

शेर॥

क्यातेरे हुसन की तसवीर है अल्लाह। सूरहनूर की तरफसीर है अल्लाह॥

और अमीर की तरफ देखकर कहनेलगा किऐ साहब क़िरां मैं पहिलेहीसे जानताथा कि कोई अप्सरा आपकोमिलगई है कि जिसको छोड़कर आपनहीं आसक्ते थे पहलेमैं जानताथा कि मेहर निगारही केवल संसारमें खूबरूपवान है परंतु इस मलिका के सामने उसकी सुन्दरता कुछनहीं है फिरक्यों न हो कहां मनुष्य और कहां परीज़ाद आसमान परी अमरूकी बातोंपर हँसने लगे और बहुतसा जवाहिर और उत्तम २ वस्तु क़ाफ़कीअमरूको देकरनिहाल करदियातत्पश्चात् आसमान परी ने अमीरके सेनाके सरदारों को बहुतसी उत्तम २ वस्तु देकर अति प्रसन्न किया और अमीरसे कहा कि मेहरनिगार के विवाह का समान अतिशीघही इकट्ठाकरो यद्यपि मैं परदे क़ाफसे सब सामान लेकर विवाहके लिये आईहूं परंतुइसदेशकीरीतिकेसामानअवश्यहोना उचितहै और मेरी इच्छाहै कि विवाह विधि पूर्वक होवे मुझको हर प्रकार स्वीकारहै तबतीनदिन बसके पश्चात् चौथेदिनअमीरअपनीसेना में आये चारदिन तक आसमानपरी से न छूटने पाये तब मेहर निगार से जाकर सबहाल कहा उसने शिर झुका लिया औरकुछ उत्तरन दिया तब अमीर ने बाहर आकर हरमुज़ ताजदार से सब हाल कहकर उंकाविवाहका बनने की आज्ञादेकर सामान इकट्ठा करवाने लगे और एक विनयपत्र इस समाचार का बादशाह नौशेरवां को लिखकर भेजा कि आपतो मेहरनिगार को मुझको देचुकेथे परंतु आजतक ऐसे उपद्रवरहे कि विवाह करनेकी विधि न होसकी सो अबतक जोहुआ सो हुआ परंतु अबमैं विवाहका सामान करताहूं उचितहै कि आपभी आकर सेवकके स्थानको अपने पदोंसे पवित्रकरें अमरूपत्रलेकरबादशाह के समीप गया जबबादशाह ने पत्रको पढ़ा तो अमरू से पूछा कि मैंने सुना है कि आसमानपरी परदेक़ाफ से मेहरनिगार के विवाह के लिये सामान लेआई है उसने कहा कि सत्यहै इतनेमें एक पत्रिका हरमुज़ और बख़्तककी पहुंची कि आप विवाहकरनेकीआज्ञा अवश्यदेदीजियेगा कि आपकी बातभी रहजावे और अमीर भी प्रसन्नहोजावेगाऔर जो आप न आज्ञा देवेंगे तौभीवह विवाह करेगा और आपकीबातहटया जावेगी तबबादशाह ने सब सरदारों को बुलाकर हरमुज़की पत्रिका पढ़कर सुनाई तो सबने उसकी सम्मति को पसन्द किया नौशेरवां ने क़लमदान मँगवाकर अमीरकी पत्रिका के उत्तर में विवाह करने की आज्ञादी परंतु जानेसे इनकार किया उससमय में अकसर सेनापतियों ने कहा कि हमने तो ऐसा विवाह फ़कीरों का भी नहीं देखा न कि अमीर का विदितहोता है कि बड़े २ लोग अपने आपही विवाह कर लिया करते हैं तबबुज़ुरुज्ञमेहर ने कहा कि जो आपलोग जावेंगे तो अमीर प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर तमाशा दिखावेंगे दोचार दिन

तमाशा देखकर चले आइयेगा बहुतदिन तक वहां न बासकीजिये और नौशेरवां से कहाकि जो आप तमाशा देखनेकी इच्छा रखतेहों तोअमरू को कुछ इनाम दीजिये कि वह आपको अपने स्थानमें बैठालकर तमाशा दिखावेगा बादशाहने इसको स्वीकार करके अमरूसे कहा किहम साधु का भेष धारण करके आवेंगे तब अमरूने स्वीकार किया पीछे बादशाह ने अमरूको खिलअत देकर बिदाकियाऔर बुजुरुजमेहरभी अमरूके साथ होकर गया लिखने वाला लिखताहै किअमीर अपने पत्रका उत्तर बिधि पूर्वक पाकर अतिप्रसन्न हुआ और हरएक मनुष्य को पत्रदिखला कर बुजुरुज मेहरसे मिलकर उन दोनों पत्तोंका रसजो हजरत खिज़रनेदिये थे अपने हाथसे नेत्रों में टपका कर नेत्रों को तारागण के समान रोशन करदिया तब बुजुरुज मेहर अमीरकी अति प्रशंसा करनेलगा और नौबत बिवाह की बराबर से बजने लगी और देव और परीजादों ने मलिका आसमान परीकी आज्ञासे बारगाह सुलेमानीको एकबड़े टीलेपर स्थित करके सब सामान बिवाह का इकट्ठा किया और अपने स्थानपर जवाहिरादिक चुनकर अति अपूर्व स्थान बनादिया और नक्कारखाने सुलेमानीमें नौबत बिवाह की बजने लगीतब मलिका आसमानपरीने मलिका मेहरनिगार को एकांत में लेजाकर दुलहिन बनाकर सब बिवाह की सामग्री बिधि पूर्वक मँगवा कर इकट्ठा किया तत्पश्चात् बरात के दिन अमीर खिलअत शाहाना पहिनकर अशकर देवजादे पर सवार हुये और सब सेनापति आदि साथ बराबरसे जवाहिर लुटातेहुये घोड़े के चारोंतरफ जटकरचले और बारहसहस्र जिन्न पनशाखे और लालटेन आदि रोशन किये हुये घोड़े के आगे चलेजाते थे और चालीस सहस्र जिन्न क़ाफकी आतशबाजी छुड़ाते हुये और बीस सहस्र तख़त उड़ने वाले जिसपर परियां गाती बजाती थीं उड़ चले जाते थे और ऊंटोंपर नौबत सुलेमानी बजती थी इसी प्रकारसे ऐसीधूम धामथी कि नकिसी ने कभी पहिले देखी होगी न देखेगा और अमरू चार सहस्र चारसौ चौवालिस मक्कार साथ लिये सुनहली पोशाक पहिने सवारीका प्रबन्ध करते चले जातेथे और घोड़े इस प्रकार से कूदते जातेथे कि लोग देखकर अति अंचभित होते थे अशकर देवजादा उस समयइस प्रकार से कूदता फांदताचारोंतरफसे चलताथा कि कोईसुरक्षलहांकताहै लोग देखकर बड़ी प्रशंसा करते थे पश्चात् को जब इस प्रकार से बरात बड़ी धूम धामसे सुलेमानी बारगाह से पहुंची तो अमीर घोड़े पर से उतर कर हुरमुज ताजदार के तख्तपर बैठकर परियों का नाच देखने लगा मलिका आसमान परी और करीशाअपने मुसाहबोंसमेत मेहरनिगार के समीपजाकर उसकोजर और जवाहिर क़ाफके जिसको शाहनशाह क़ाफके सिवा और किसीने न देखाथामेहरनिगारको पहिनाकरनेवव-

और अमीर की तरफ देखकर कहनेलगा किऐ साहब फ़क़ीर मैं पहिलेहीसे जानताथा कि कोई अप्सरा आपकोमिलगई है कि जिसको छोड़कर आपनहीं आसक्ते थे पहलेमैं जानताथा कि मेहर निगारही केवल संसारमें स्वरूपवान है परंतु इस मलिका के सामने उसकी सुन्दरता कुछनहीं है फिरक्यों न हो कहां मनुष्य और कहां परीज़ाद आसमान परी अमरूकी बातोंपर हँसने लगी और बहुतसा जवाहिर और उत्तम २ वस्तु क़ाफ़कीअमरूको देकरनिहाल करदियातत्पश्चात् आसमान परी ने अमीरके सेनाके सरदारों को बहुतसी उत्तम २ वस्तु देकर अति प्रसन्न किया और अमीरसे कहा कि मेहरनिगार के विवाह का समान अतिशीघ्रही इकट्ठाकरो यद्यपि मैं परदे क़ाफ़से सब सामान लेकर विवाहके लिये आईहूं परंतुइसदेशकीरीतिकेसामानअवश्यहो उचितहै और मेरी इच्छाहै कि विवाह विधि पूर्वक होवे सुभक प्रकार स्वीकारहै तबतीनदिन बसके पश्चात् चौथेदिनअमीर में आये चारदिन तक आसमानपरी से न छूटने पाये तब मे जाकर सबहाल कहा उसने शिर झुका लिया औरकु तब अमीर ने बाहर आकर हरमुज़ ताजदार डंकाविवाहका बजनेकी आज्ञादेकर सामान एक विनयपत्र इस समाचार का बाद कि आपतो मेहरनिगार को द्वरहै कि विवाह करनेकी हुआ परंतु अबमैं वि आकर सेवकके स्थानको के समीप गया जबबादशाह सुना है कि आसमानपरी पर सामान लेआई है उसने कहा। और बख़्तककी पहुंची कि आप। येगा कि आपकी बातभी रहजावे औ जो आप न आज्ञा देवेंगे तौभीवह विवा जावेगी तबबादशाह ने सब सरदारों को पढ़कर सुनाई तो सबने उसकी सम्मति को क़लमदान मँगवाकर अमीरकी पत्रिका के उत्तर आज्ञादी परंतु जानेसे इनकार किया उससमय मे ने कहा कि हमने तो ऐसा विवाह फ़क़ीरों का भी अमीर का विदितहोता है कि बड़े २ लोग अपने आपह लिया करते हैं तबबुज़ुरुजमेहर ने कहा कि जो आ अमीर प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर तमाशा दिख

तमाशा देखकर चले आइवेगा बहुतदिन तक कहीं न बाहरजीवे चौं
नौशेरवां से कहाकि जो आप तमाशा देखनेकी इच्छा रखतेहों तोअमरू
को कुछ इनाम दीजिये कि वह आपको अपनेस्थानसे बैठालकर तमाशा
दिखावेगा बादशाहने इसको स्वीकार करके अमरूसे कहा किसी साधु
का भेष धारण करके आवेंगे तब अमरूने स्वीकार किया पीछे बादशाहने
अमरूको खिलअत देकर बिदाकियाऔर बजुरुज मेहरभी अमरूकेसाथ
होकर गया लिखने वाला लिखताहै किअमीर अपने पक्का उतर कि
पूर्वक पाकर अतिप्रसन्न हुआ और फरखुज मनुष्य को पहिचान
बजुरुज मेहरसे मिलकर उन दोनों पक्षोंका रक्षक इसरत किया
थे अपने हाथसे नेत्रों में टपका कर नेत्रों को ताराम
करदिया तब बजुरुज मेहर अमीरकी अति प्रशंसा करके
विवाह की बराबर से बजने लगी और देव और
आसमान परीकी आज्ञासे बारगाह सुलेमा
करके सब सामान विवाह का इकट्ठा
हिरादिक चुनकर अति
मानीमें नौबत बिवा
का मेहर

लका रैहान
भोग किया
नन्द पातेरहे
हुआ एक दिन
त बाहरगयेथेकि
कोअमीरने मारा
मीरनेवाररोककर
देखकर सबलोगबड़े
क पड़ारहा अमीर ने
पास बिदा होने के लिये
रवांसे कहा किअग्निका
वाकरेंगे तबबादशाहनेकहा
ना धर्म छोड़कर दूसरेका धर्म
सौगात बादशाह कोसरदारों
अपनीसेनाको इकट्ठा करकेदूसरे
मल्लिकाआसमान परीनेभीसबसौ-
गी तबअमीरने गलेसे मिलकरकहा
थे वैसेही अबप्रसन्नहुये अबजिससमय
य जो किसी युद्धमें न होंगे तो चलेआवेंगे
चित्त चाहे तभी चलीआना और करीआ
कके देनेके योग्य थी देकर बिदाकियाऔर
परीभी अमीरसे बिदाहोकर मल्लिकाकेसाथ
पूर्वी शाहतेग मगरबी को देकर उसदेश का
रन्तु वह अपना कारिन्दा देशमेंछोड़करअमीर
दूसरेदिन अगवानी खेमा भेजकर मक्केकी तरफ
मरू बिन हमजा मामे अपने पुत्र कोजोकि मल्लिका
तनसे उत्पन्नहुआथा अपनेस्थानापन्नकरकेसबकारो-
रनिगारके साथ भोगबिलास करनेलगे एकदिनअमरू
में बैठा शराब पीरहाथा आकस्मात् आदी अक्करब ने
न्धौरसे कहा कि तुझको भी इतनी सामर्थ्य हुई कि
र बैठनेलगा तब लन्धौर ने कहा कि तू चारही प्यालेमें
और मुझसे क्रोधित होकर बातें करताहै और मेरी युक्ति से
ाहै और मैं तो कुरसीपर अमीरकी आज्ञासे बैठाहूं आदीने
क कर कहा कि नहीं अमीरने तुझको मेरीकुरसीपर बैठने की
नहीं दीहै तूझूठकहताहै तब लन्धौरने कहा कि आदी
स शराब पीनेसे पागल होगया इतना सुनतेही आदी

छावरकिया उस शोभाको देखकर आसमान परीने मेहर निगार का हाथ चूमकर दुलहिन बनाकर बहुतसा जवाहिर निछावर करके बहुत सी जवाहिर की डालियां रखदिया उस समयकी सुंदरता को आसमान परी देखकर अति मोहित होकर बिवाह के कारोबार में प्रवेशित हुई अब नौशेरवां का वृत्तान्त सुनिये कि सात मनुष्यों समेत साधुका भेष धारण करके बिवाह का तामशा देखने के लियेगया तब अमरू ने नौशेरवां को पहिंचान करकहाकि आपचलकर सभामेंबैठियेऔर तमाशा देखिये नौशेरवां ने मंजूर न किया अमरू ने कहाकि मैं आपको ऐसे स्थानपर बैठालूंगा कि आप सबको देखें और आपको कोई न देखसके इसबातको बादशाह ने मान लिया और अति आनन्दके साथ बादशाह अमरू के साथ होकर बारगाह सुलेमानी में आया तो अमरूने जवाहिरकी कुरसियोंपर बड़ी प्रतिष्ठाके साथ बैठाया और साक़ी अर्थात् शराब पिलाने वालोंको मदिरा बांटने की आज्ञादी किसबको अच्छीतरहसे पिलाओ नौशेरवां चारघड़ीके पश्चत् उठखड़ा हुआ और अमीर को अशीर्बाद देकर कहने लगा कियाबाहम साधुहैंसैरकरने को आयेथे अबविदाहोतेहैं कृपाकरके प्रसन्नता केसाथ विदाकीजिये तब अमीरने अय्यारी भाषामें अमरूसे कहाकि इनको चारताकके ऊपर लेजाकर बैठाओ और ऐसी युक्तिकरो कि प्रसन्नतासे बादशाह तमाशा देखें अमरू ने नौशेरवां को चारताक के ऊपर बैठालकर जो सामान कि उचित थे रखकर उनके चित्तको अति प्रसन्नकिया तत्पश्चात् चार घड़ी राचिरहे खाजे बुजुरुज मेहरने अमीर का बिवाह मेहरनिगार के साथ मतानुसार करदिया प्रातःकाल होतेही महलमें दुलहे की पुकारहुई तो अमीर जो महल के पहिले दरवाजे पर पहुंचे तो आसमानपरी ने दरवाजा बन्दकर लिया और कहा कि दरवाजा उसी समय खुलेगा जिस समय मेहरनिगार की न्यवछावर दे लेओगे तब अमीर ने मुक़बिलवफादारके चालीस हजार सवार जरीकम समेत मेहरनिगार के बदलेमें दिया तब आसमानपरी ने दरवाजा खोला फिर दूसरा दरवाजा बन्दकिया इसी प्रकार से सात दरवाजों पर सातबस्तु आसमानपरी ने मेहरनिगार के लिये लीं और अमीर ने निस्संदेह दीं तब आगे जाने पाये और अमीरमेहरनिगार को दुलहिन बनकर मसनद पर बैठेदेख अति प्रसन्न हुये ईश्वरका धन्यवाद देने लगे तत्पश्चात् मेहरनिगार काहाथपकड़ कर छपरखट पर ले गये और गोदमें बैठाकर स्नेहकी बातें करनेलगे एक घड़ीके पीछे दोनोंमें हाथ पैयांहोने लगी तबअमीर ने दमदिलासा देकर अपनी इच्छापूर्णकी और ईश्वरकीकृपासेउसीराचिकोगर्भरहगया प्रातःकाल स्नानकर वस्त्रधारणकरके बारगाहसुलेमानी में आकर बैठे और दिनभर आनन्दरूपी तमाशा देखतेरहे राचिको मलिकाआसमान

परीके साथ भोगकरने को गये और उसके दूसरे दिन मलिका रैहान परीके साथ भोगकिया तीसरेदिन समनसीमापरी के साथ भोग किया इसीप्रकारसे हरदिन सब स्त्रियोंके साथ भोगकरने से आनन्द पातेरहे चालीस दिनतक नाचरंग के सिवा और कुछ कार्य्य न हुआ एक दिन अमीर चारताकको सैरको सवार होकर अरदली समेत बाहरगयेथेकि संयोगवश आकाशसे एकदेव रदशातिरका भाई जिसकोअमीरने मारा थाआकरअमीरको अकेलादेखकरमारने कोदौड़ाअमीरनेवाररोककर उसको पकड़कर दोभागकरकेफेंकदियाइस बलको देखकर सबलोगबड़े आश्चर्यमें हुये नौशेरवां बेहोशहोकर बड़ी देरतक पड़ारहा अमीर ने गुलाब आदि छिड़ककर चैतन्यकिया अमीरकेपास बिदा होने के लिये साधुका भेष धारणकरके गया तब अमीरनेनौशेरवांसे कहा किअग्निका पूजनछोड़करईश्वरभक्त होहमतम्हारीबड़ीसेवाकरेंगे तबबादशाहनेकहा कि हमारेयहां ऐसीबात नहींहै कि अपना धर्म छोड़कर दूसरेका धर्म स्वीकार करें पीछेको अमरूने बहुत सी सौगात बादशाह कोसरदारों समेत देकर बिदाकिया तब बादशाहने अपनीसेनाको इकट्ठा करकेदूसरे दिन मदायनकोयात्राकी तत्पश्चात् मलिकाआसमान परीनेभीसबसौ-गात क़ाफ़कीअमीरकोदेकरबिदामांगी तबअमीरने गलेसे मिलकरकहा कि जिसप्रकार किहमतुमसे दुखितथे वैसेही अबप्रसन्नहुये अबजिससमय तुम हमको बुलाओगी उसीसमय जो किसी युद्धमें न होंगे तो चलेआवेंगे और तुम्हारा तो घरहीहै जबचित्त चाहे तभी चलीआना और करीशा के मुखको चूमकर जो बस्तु उसके देनेके योग्य थी देकर बिदाकियाऔर रैहानपरीऔरसमनसीमा परीभी अमीरसे बिदाहोकर मलिकाकेसाथ हुई माहबकिरां सब देश पूर्वी शाहतेग मग़रबी को देकर उसदेश का उसको स्वामी बनाया परन्तु वह अपना कारिन्दा देशमेंछोड़करअमीर के साथहुआ अमीर दूसरेदिन अगवानी खेमा भेजकर मक्के की तरफ रवाना हुआ और अमरू बिन हमजा नामे अपने पुत्र कोजोकि मलिका नाहिद मरहीमके तनसे उत्पन्नहुआथा अपनेस्थानापन्नकरकेसबकारो-बारछोड़कर मेहरनिगारके साथ भोगविलास करनेलगे एकदिनअमरू बिन हमजा सभामें बैठा शराब पीरहाथा आकस्मात् आदी अक़रब ने नेच उठाकर लन्धौरसे कहा कि तुझको भी इतनी सामर्थ्य हुई कि मेरी कुरसीपर बैठनेलगा तब लन्धौर ने कहा कि तू चारही प्यालेमें घबड़ागया और मुझसे क्रोधित होकर बातें करताहै और मेरी युक्ति से नहीं डरताहै और मैं तो कुरसीपर अमीरकी आज्ञासे बैठाहूं आदीने फिर तड़क कर कहा कि नहीं अमीरने तुझको मेरीकुरसीपर बैठने की आज्ञा नहीं दीहै तूझूठकहताहै तब लन्धौरने कहा कि आदीतूदोतीन गिलास शराब पीनेसे पागल होगया इतना सुनतेही आदी ने उठकर

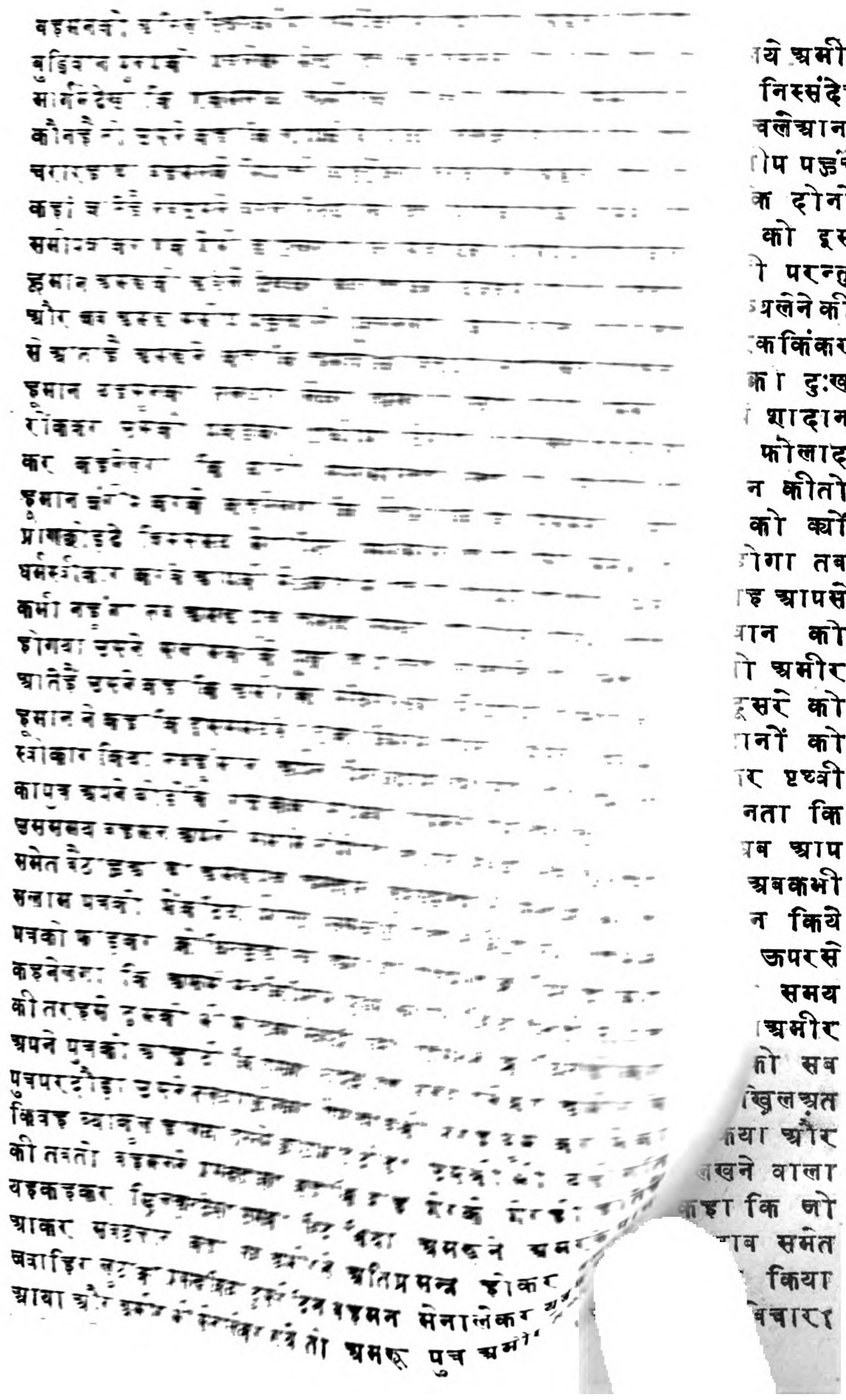
एकघूसा खन्धौरके शिरपरमारा तब खन्धौरने हँसकर कहा कि आदी क्योंदुष्टपना करताहै होशमें आ भूल न जा अमरू के पुत्र हमजा ने इसवृत्तांत को देखकर आदीको ललकार कर कहा क्यों दुष्टपना करताहै आदीने नशेके कारण चिल्लाकर कहा तुमको इससे क्या प्रयोजनहै मैं और खंधौर समझलूंगा आप चुपरहिये यह सुनकर अमीरजादेने उठकर एकघूसा ऐसेजोरसे लगाया कि पृथ्वीमें लोटगया तबआदी अपनाशिरपीटकर कहनेलगा किजब अमीरजादा इसप्रकारसे बेक़रमती चाहैगा तब हम इस राजसभामें किसप्रकार रहि सकैंगे जो कि यह बातसबको पसंदआई तब सभामें शोरकरनेलगे तब अमीर व्याकुलहोकर बाहरचले आये और अतिदुखीहोकर अपने बेटेसे कहने लगे कि खबरदार ऐसीबात कभी न करनावेदोनों आपस में समझ लेते अमीरजादेने क्रोधितहोकर कहा जो फिर कदाचित् आदी ऐसा कामकरैगा तब फिर कांनकाटिके नगरसे निकलवादेऊंगा अमीर ने क्रोधितहोकर कहाकि गाल न मार नहीं तौमैं मारडालूंगा अमीर-जादेकी भी युवाअवस्था थी पिताकी बातोंपर क्रोधितहोकर कहने लगाकि किसको सामर्थ्यहै कि मुझेमारै तबतो अमीर अग्निके समान जलउठे और अमरूका हाथ पकड़कर युद्धके मैदानमें बापबेटे दोनों घोड़ेपर सवारहो युद्धकरनेको आरूढ़हुये और सब लोग बापबेटों का युद्धदेखनेलगे तब अमीरने अमरूको आगेबुलाया उसने इच्छाकी कि चलकर युद्धकरें परंतु उसका घोड़ाआगे नबढ़सका तब अमीरने कहाकि इनादानघोड़ेसे अदबसीख तबतो वहघोड़ेपरसे उतरपड़ा और अमीर भी उतरपड़े कुश्तीलड़नेपर आरूढ़हुये अमरूने अमीरके कमरबंदको पकड़कर यथाशक्ति घुमाया परंतु अमीरकापैर न उठसका तबलाचार होकर छोड़दिया परंतु अमीरने अमरूके कमरमें हाथडाल कर शिरतक उठाकर धीरेसे पृथ्वीपर रखदिया और उसके मुखकाबो-सालिया तब अमरूने भी अमीरके पैरोंपर शिर झुकाकर अपना अप-राधक्षमा कराया अमीरने उसको छातीसे लगाकर कहाकि हे-पुत्रइनहीं सरदारोंहीसे मेरानामहै इनकी आज्ञामाननी उचितहै और इनको अनेकप्रकारसे प्रसन्न रखना उचितहै तब अमीरजादा शरमिंदाहोकर फिर सभामें बैठालिखने वाले लिखते हैं कि नवेंमास अमीर और अमीरजादेके स्त्रियोंके तनसे पुत्र उत्पन्नहुये इस हालको सुनकर अमीर अतिप्रसन्नहुये पोतेका नाम तो साहान रक्खा परंतु पुत्रका नाम न रक्खा और अमरूसे कहाकि तुमनौशेरवांसे जाकर खबरदेवोऔर उससे कहो किनामभीआपही रक्खें अमरूथोड़े दिनोंके पश्चात्मदायनमें पहुंचा और नौशेरवांसेसलामकरके कहाकिनातीको ईश्वर कृपाकरे और अमीरने विनयकरके कहाहै कि आपही नाम भी

रक्खें बादशाह इसवृत्तान्तको सुनकर अतिप्रसन्नहुआ और अमरू को खिलअत देकर चालीस दिनकाजलसा होनेकीआज्ञादी और सामान सभाका सब इकट्ठा किया और उसका नाम कबाद रक्खा गया और मेहरंगेजबानूने इस वृत्तान्त को सुनकर अमरू को अपने समीप बुलाकर अमीर और मेहरनिगारकी कुशल और अपने नातीके स्वरूप को पूछकर अमरू को खिलअत देकर बिदाकिया तबअमरूने अति प्रसन्नता के साथ वहांसे चलकर अमीरकेसमीप आकर सब वृत्तान्त आदिसेकहा जब सादान औरकबाद चार २ वर्षकेहुये तोअमीरनेउनदोनोंलड़कोंको अमरू को सौंपकर आज्ञादी कि इनदोनोंको अच्छीतरहसे अदब तमीज सिखाओ और जिससमय पांच वर्षके हुयेतो देखनेवाले देखकर कहतेथे ऐसे सुन्दर और तमीजदार लड़के कभीदेखने मे नहींआये कि अभीसे इनकी बहादुरी प्रसिद्ध होतीजातीहैप्रातःकाल और सायंकालको लेकर खिलाते थे लिखने वाला लिखताहै कि जिससमय जोपीन ने कबाद के उत्पन्न होनेकावृत्तान्त सुनातो उसने नौशेरवांको एकबिनयपचलिखाकि हमजाने जो अबतक आपकी गद्दीनहींली तोकोई पुच उसके न था अब जो आपकी पुचीसे पुचहुआहै तो अवश्यहै कि हमजा आपकी गद्दीछीन कर अपने पुचको बैठावेगा इससे उचितहै कि आपबहमनके समीपजाकर उसको साथ लेकर हमजा को परास्त करिये आगे आपकी बुद्धि प्रबलहै जैसा उचितहोवे सो कीजिये नौशेरवां जो पीनकेपचको पढ़कर कहाकि हमजा मुझसे ऐसा कभी न करेगा बुजुरुजमेहर ने कहा कि सत्यहै ऐसा ही होगा परंतु बख्तकने जानेकी सम्मतिदी पीछेको नौशेरवां ने युद्धका सामान इकट्ठा करके बहमन के समीप जानेकी याचा की जब वहां पहुंचे तो बहमन ने अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर सर्व वृत्तान्त नौशेरवां से पूछा तो उसने सबकहकर अन्त को कहा कि किसी युक्तिसे कअतिथी घरी युद्धका सामान इकट्ठा करके चलो तब बहमन ने स्वीकार करको अमीरको लिखा कि तू बहादुरी लोगोंको देखता फिरताहै सोआकर मुझको भी अपनी बहादुरी दिखा अमीर पचको देखकर जलउठा और कहनेलगा कि अबतक तो यह इच्छानथी परंतु अब किसी प्रकारसे न छोडुंगा तब अमीर ने शुभ सायत पूंछकर क़ाबाद को गद्दी पर बैठाकर सब सेना पतियों और देशवासियोंसे नजरें दिलवा कर बहुतसाजवाहिर असरफियां भिक्षुक आदिको देकर चालीस दिवसके नाच रंगके सभा करानें के पश्चात् बहमनके तरफ याचाकी और पहाड़के समीप जाकर डेरा खड़ाकरके पड़े बहमन ने पहिलेहीसे हुमान नाम अपने पुचको बहुतसी सेना समेत पहाड़की रक्षा करनेके लिये भेजाथा सोजब आदीअकरब ने पहुंच करइच्छाकी कि पहाड़पर चढ़जावें कि इतनेमेंहुमान पहाड़पर से पत्थर मारने लगा इसकारण आदीअकरब का पैरआगेन

बढ़सका कि इतनेमें अमरू पुचहमजा मलिक लन्धौर सेनापति समेत आकर पहुंचगये और देखाकि पहाड़ परसे पत्थर गिररहेहैंऔरआदमी चुप चाप नीचे खड़ाहै तबवे तीनोंमिलकर बड़ी बहादुरी से ढालसेरोकते हुये जाकर पहाड़पर पहुंचे सहस्रों सेनाको मार वार हूमान कोउठाकर पृथ्वीपर दैमार कर छातीपर खंजर रखकर कहनेलगा कि अबमुसल्मान होनहीं मारडालताहूं तबउसने कहाकि कृपा करके इससमय मुझको छोंड़दीजिये जब मेरापिता मुसल्मानहोगा तो मैंभीहूंगा अमरू पुचहमजाने उसको छोंड़दिया तो उसने जाकर सब हाल बहमन से कहा बहमन ने क्रोधित होकर कहाकि विदित होताहै कि तुमेरेवीर्य्यसेनहीं है जो तलवारसे डरताहै और लज्जितहोकर चुपनहीं रहता फिरआकर सम्मुख होकर मुखदिखाता है कि इतनेमे सामने से एकसेना की गर्द उड़ती हुई दिखाई पड़ी तत्पश्चात् विदित हुआकि साहबक़िरांअपनी सेनालेकर आतेहैं और सहस्रों झंडे दिखाईपड़े तब बहमन ने कहा कि हे बख्तक मैंने अमीरका नामतो सुनाहै परन्तुस्वरूपआजतक नहींदेखासो तूकिसी प्रकार से हमको दिखादे तब उसने कहाकि आपसवार होकर मार्गमें खड़े हूजिये मैं अमीरको दिखलादूंगा तबदोनों सवार होकर मार्गमें जाकर खड़े हुये तो इतने में पहिले झंडेके छापा में जिसमें सर्पकी मूर्ति बनीथी आदीअकरब अपनी सेना समेत आकर निकला तो बहमन ने पूछाकि हमजा यहीहै तब बख्तक ने कहा कि नहीं यहतो अमीर की सेनाका सेनापति है इसी प्रकार जितने सरदार निकले सब को बख्तक ने बहमनसे बतलाया सब सेना पतियोंके पीछे अमरू की सवारी निकली तब बख्तकने कहा कि जो अमरू का नाम आपने सुनाहोगा वहयहीहैजिससेबादशाहसप्त देशीभीडरतेहैंतत्पश्चात्बादशाहजादाकबाद का तख्त सूर्यके सदृश्य पृथ्वी पर आकर निकला तो बख्तकने बहमन से कहा कि कबाद पुत्र हमजा का यही है तत्पश्चात् अमीर अशकर देव जादे पर सवार बड़ी धूम धाम से आकर निकला तो बख्तक ने बहमनसे कहा कि अमीर यही है बहमन यह सुनकर बड़े सन्देह में हुआ कि किसप्रकार से इसने इसी स्वरूपसे परदे क़ाफके बड़े बड़े देवों और बलवानों को मारा है तब बख्तक ने कहा कि युद्धके समय आपही विदित हो जावेगा तब उसने कहा कि आज तो वह थका मांदा आया है कल हमहैं या अमीर ऐसा लज्जित करूं कि वहभी जाने अमीर ने दूसरे दिन एक पचमें सब वृत्तान्त लिख करलिखाकि हम तुम्हारेबुलाने से आयेहैं सो तुम अतिशीघ्रही नौशेरवां बख्तक और जोपीन को बांध कर हमारेपास भेजकर तुमभी कर लेकर हमारे समीप आकर हाजिर होकर मुसल्मानी स्वीकार करके सेवकाई करो नहीं तो आकर दण्ड दूंगा परंतु इस पचको अमरूके हाथ इसकारणसे न भेजा कि वह जाकर

बहमनको अतिलज्जितकरेगा इसविचारसे अपनेपुत्र अमरूके साथ एक बुद्धिवान पुरुषको पत्रलेकर भेजा वह जब पत्रलेकर थोडीदूर गया तो मार्गमेंदेखा कि एकमनुष्य अमीरकी दोहाई देरहाहै उससेपूछा तू कौनहै तो उसने कहाकि आपके घोड़ोंका रक्षकहूं सो घोड़ोंको यहां चरारहाथा बहमनके सिपाही घोड़ोंको लियेजातेहैं अमरूने पूछा कि कहां जातेहैं तबउसने बतलादिया तब वह घोड़ोंके टापके पतेसेदौड़ा समीपजाकर एक ऐसी डाटलगाई कि सबडरकर भागगये परन्तु केवल हूमान अमरूको अकेले देखकर खड़ाहोकर युद्धकरने पर आरूढ़हुआ और जब अमरू समीप पहुंचातो पूछनेलगा कि तू कौनहै और कहां से आताहै अमरूने कहाकि हमजाका पुत्रऔर तेरेप्राणका गाहकहूं हूमान यहसुनकर तलवार लेकर अमरू के ऊपर दौड़ा अमरू ने रोंककर उसको पकड़कर पृथ्वीपर दैमारा और खंजरपेट पर रख कर कहनेलगा कि यातो मुसल्मानहो नहीं तो मारडालूंगा हूमान जंगीर करके कहनेलगा कि हेअमीरके पुत्र इससमय तू मेरा प्राणछोड़दे जिससमय मेरापिता मुसल्मान होगा उसी समयमैं भी धर्मस्वीकार करके आपकी सेवकाई में रहूंगा आपकी आज्ञासे विरुद्ध कभी नहूंगा तब अमरू पुत्र हमजा उसको छातीपरसे उठकर खड़ा होगया उसने सलामकरके पूछा आप कहां कोजातेहैं और कहां से आतेहैं उसनेकहाकि अमीरका संदेसालेकर तेरेपिताके पासजाताहूं हूमान ने कहाकि इससमयके युद्धको किसीसे प्रसिद्ध न करना तबउसने स्वीकार किया तबहूंमान अपने पिताकेपास चलागया और अमीर कापुत्र अपने घोड़ोंके रक्षकको सौंपकर बहमनके पास चलागया तो उससमय बहमन अपनी सभामें नौशेरवां जोपीन वख्तक बुजुरुचमेहर समेत बैठाहुआ था अमरूपुत्र हमजाने बुजुरुचमेहर से सलाम करके सलाम पत्रको फेंकदिया परन्तु उससेकुछ वार्त्ता न किया तब बहमन पत्रको फाड़कर क्रोधितहुआ तब अमीरका पुत्रअमरू क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफसोसहैकिपिताने युद्धकरनेकोमनाकियाहैनहीतोपत्र की तरहसे तुमको भी फाड़कर फेंकदेते तबतो बहमनने क्रोधितहोकर अपने पुत्रको आज्ञादी कि इसको दंडदेव वह तलवारलेकर अमीर के पुत्रपरदौड़ा उसने तलवारछीनकर ऐसाचरखकी तरह घुमाकर फेंका किवह व्याकुल होगया इतनेमें छोटाभाई दौड़ा उसकी भी यहीगति की तबतो बहमनने प्रसन्नहोकर कहाकि वाह शेरके शेरही होतेहैं यहकहकर खिलअतदेकर उसको बिदाकिया अमरूने अमरके पास आकर सबवृत्तांत कहा तब अमीरने अतिप्रसन्न होकर बहुतसा जवाहिर लुटाकर प्रसन्नकिया दूसरेदिन बहमन सेनालेकर युद्धके खेतमें आया और अमीर भी सेनालेकर गये तो अमरू पुत्र अमीर तख्त का

बढ़सका कि इतने में अमरू पुचहमजा मलिक लन्धौर सेनापति समेत आकर पहुंच गये और देखा कि पहाड़ परसे पत्थर गिररहेहैं और आदी चुप चाप नीचे खड़ाहै तबवे तीनोंमिलकर बड़ी बहादुरी से ढालसेरोकते हुये जाकर पहाड़पर पहुंचे सहस्रों सेनाको मार वार हुमान कोउठाकर पृथ्वीपर दैमार कर छातीपर खंजर रखकर कहनेलगा कि अबमुसल्मान हो नहीं मार डालताहूं तबउसने कहा कि कृपा करके इससमय मुझको छोड़दीजिये जब मेरापिता मुसल्मानहोगा तो मैंभीहूंगा अमरू पुचहमजाने उसको छोड़दिया तो उसने जाकर सब हाल बहमन से कहा बहमन ने क्रोधित होकर कहा कि विदित होताहै कि तुमेरेवीर्यसेनहीं है जो तलवारसे डरताहै और लज्जितहोकर चुपनहीं रहता फिरआकर सम्मुख होकर मुखदिखाता है कि इतने मे सामने से एकसेना की गर्द उड़ती हुई दिखाई पड़ी तत्पश्चात् विदित हुआकि साहबक़िरांअपनी सेनालेकर आतेहैं और सहस्रों झंडे दिखाईपड़े तब बहमन ने कहा किइे बख्तक मैंने अमीरका नामतो सुनाहै परन्तुस्वरूपआजतक नहींदेखासो तूकिसी प्रकार से हमको दिखादे तब उसने कहाकि आपसवार होकर मार्गमें खड़े हूजिये मैं अमीरको दिखलादूंगा तबदोनों सवार होकर मार्गमें जाकर खड़े हुये तो इतने में पहिले झंडेके छापा में जिसमें सर्पकी मूर्ति बनीथी आदीअकरब अपनी सेना समेत आकर निकला तो बहमन ने पूछाकि हमजा यहीहै तब बख्तक ने कहा कि नहीं यहतो अमीर की सेनाका सेनापति है इसी प्रकार जितने सरदार निकले सब को बख्तक ने बहमनसे बतलाया सब सेना पतियोंके पीछे अमरू की सवारी निकली तब बखतकने कहा कि जो अमरू का नाम आपने सुनाहोगा वहयहीहैजिससेबादशाहसप्त देशीभीडरतेहैंतत्पश्चात्बादशाहजादाकबाद का तख्त सूर्यके सदृश्य पृथ्वी पर आकर निकला तो बख्तकने बहमन से कहा कि कबाद पुत्र हमजा का यही है तत्पश्चात् अमीर अशकर देव जादे पर सवार बड़ी धूम धाम से आकर निकला तो बख्तक ने बहमनसे कहा कि अमीर यही है बहमन यह सुनकर बड़े सन्देह में हुआ कि किसप्रकार से इसने इसी स्वरूपसे परदे क़ाफके बड़े बड़े देवों और बलवानों को मारा है तब बख्तक ने कहा कि युद्धके समय आपही विदित हो जावेगा तब उसने कहा कि आज तो वह थका मांदा आया है कल हमहैं या अमीर ऐसा लज्जित करूं कि वहभी जाने अमीर ने दूसरे दिन एक पचमें सब वृत्तान्त लिख करलिखाकि हम तुम्हारेबुलाने से आयेहैं सो तुम अतिशीघ्रही नौशेरवां बख्तक और जोपीन को बांध कर हमारेपास भेजकर तुमभी कर लेकर हमारे समीप आकर हाजिर होकर मुसल्मानी स्वीकार करके सेवकाई करो नहीं तो आकर दण्ड दूंगा परंतु इस पचको अमरूके हाथ इसकारणसे न भेजा कि वह जाकर



घूमकर घोड़ेको बढ़ाकर युद्धकरनेको आरूढ़हुये और उधरसे हुमान भीवादालेकर आये अमरूने हुमानकी कमर पकड़कर दोतीन बार घुमाकर पृथ्वीपर दैमारा और मुशकैंबांधकर अमीरके पास लेगया अमीरने अमरू अय्यारको सौंपदिया बहमननेअपने दूसरेपुत्रकोभेजातो उसीको भीयही गतिहुईअन्तकोडंका बजवाकर लौटगया और अमीर भी अतिप्रसन्नताकेसाथडंकाबजवातेहुयेअपनी सेनासमेत डेरेपरचलेआये सबलोगोंने जीतकी भेंटदी और प्रातःकालहोते सभामें बैठकर बहमनके बेटोंकोबुलाकरआज्ञादीकिमुसलमानी धर्मस्वीकारकरकेअग्निकापूजन छोड़देव लड़कोंने कहाकि हेअमीर जिससमय मेरापिता मुसल्मान होगा उसीसमय हमलोगभी होंगे अभी कृपाकरके क्षमाकीजिये तब अमीरने उनको छोंड़दिया तब उन लड़कोंने बहमनसे सबवृत्तांत वर्णन किया बहमनसेअमीरकी बड़ीप्रशंसाकी औरदूसरेदिन प्रातःकालदोनों सेनामैंदानमे युद्धपर आरूढ़होकर आईं और एकतरफसे बहमन और दूसरी तरफसे हमजाकापुत्र अमरूसेनासे निकलकरयुद्ध करनेलगे परन्तु सबदिन युद्धहोतारहा दोनोंमेंसे कोई न हटासायंकालको दोनोंअपनी सेनामेचलेगये तबअमीरने अपने पुत्रपरसे बहुतसा रुपया अशरफी न्योछावर करकेपूछा कि बहमनकैसा पहलवानहै उसनेकहाकि आपके बादवही एक पहलवानहै दूसरेदिन डंकाबजवाकर दोनोंसेना मैंदानमें आईंऔर बहमन और लन्धौर युद्धकरनेपर आरूढ़हुये तो बहमन ने लन्धौरसेपूछा कितू कौनहै उसने कहाकि मेरानाम लन्धौरहै मैनेबड़े२ बहादुरोंकोमाराहै इतनाकहकर लन्धौरनेऐसा शब्दकियाकि सेनाडर सेकांपगई तबतो बहमनने कहाकि सत्यहै जैसाहमनाम सुनतेथे वैसाही तूहैतब दोनोंसे शामतक युद्धहुआकिया और कोई नहटसका सायंकाल कोडंका बजवाकर चलेगये तब अमीरने पूछा कि कहो लन्धौर बहमन कैसापहलवान है उसने कहाकि आपके पुत्रकी बाक्यसत्यहै दूसरे दिन जबसेना मैदानमें आईतो आदीअकबर बहमनके संमुख होकर युद्धकरने पर आरूढ़हुआ तो बहमनने पूछा कि तू कौनहै आदीने कहा कि मेरा आदीअकबर नामहैतबबहमननेकहाकि तेरापेटखालीहो तोचलकरमेरे साथभोजनकर पहलवानसे युद्धनहोसकेगा तब आदीनेकहाकि हेबहमन कहांहै तेराचित्तक्या बकताहै (दृष्टान्त) (जो देगयेहैं वहआपही प्रसिद्ध होजावेगा)देखअमीर कैसादंड देताहूं जो तेराप्राण बचगयातो अपने प्राणकीमेहमानीकरलेना और बहुतसादानकरनाइसके पश्चात्दोनोंमें गदासे युद्धहोनेलगातबबहमनने कमरबन्दपकड़कर आदीकोउठालिया परन्तु आदीने घूसेउसके शिरपरमारे कि उसनेछोड़दिया और डंका बजाकर पलटगये दूसरेदिन बहमन छःभाई आदीके पकड़ लेगया तब अमीर अतिदुःखितहुआ तो अमरूने कहाकि जोआज्ञाहोतो मैंजाकर

सबको छोड़ाआऊंतबअमीरनेकहाकिइससेक्याउत्तमहैतबअमरूमक्कारी
पोशाकपहिनकरबहमनकीसभामेंगयाउसराचिकोबहमननेसबसे पूछाकि
तुमलोगोंकीक्यासम्मतिहैइनसरदारोंकोमारडालेंयाछोडदेंतबनौशेरवांने
कहाकिइनसबकोमारडालोकिजिससेहमलाकीसेनाकेसरदारकमहोजावें
और बख्तक ने कहा कि इनकोशूलीदेनाउचितहैइसीप्रकारसेहरएकने
मारनेकी सम्मतिदी पीछेको अपने बेटोंसेपूछातोउन्होंनेकहाकिइनको
मारकर किलेकी दीवारपर लटकादो कि अमीरकीसेनाकेलोगदेखकर
डरें तब बहमनने कहा कि तुमलोगोंको कहतेलज्जानहींमालूमहोतीकि
अमीरनेतुमकोछोड़दियाऔरतुमउसकेसरदारकेमारनेकीसम्मतिदेतेहो
इतना कहकर सबसरदारोंको बुलाकर छोडकर अमीरकेसमीपभेजदिया
तब अमरूने प्रसिद्ध होकर कहाकि वाह बहमन पहलवानों को ऐसाही
उचित है और जोतू न छोडता तो मैं अवश्यछोडा लेजाताऔरबख्तकके
सम्मुख होकर कहने लगा कि तू मुझे नहीं डराऔरअमीरके सरदारोंको
मारने की सम्मति देताथा अबदेखना मैंभी तेरी केसीगतिबनाताहूं तबतो
बख्तक हाथ जोड कर कहने लगा कि मैंने तो केवल बहमनकेखुशहोनेके
लिये कहाथा परंतु चित्तसे मैं ऐसा नहीं चाहताथा औरअबजोबहमनने
कियाहै इससे मुझे अति आनन्द हुआ परंतु अमरूने कुछ उसकाकहना
न माना और चलते समय उसके शिरकामुकटलेकरएकचपतशिर में मार
कर चलागया और कहाकि खबरदारअपनी दाढ़ीकाबालभेजदेनानहीं
तो मैं तुमको अति लज्जित करूंगा और वृथा मुझे तेरेखेमेमेंनआनापड़े
तत्पश्चात् अमीरके समीप आकरसब वृत्तान्तवर्णनकियातबअमीरनेकहा
किअच्छा वह मुसलमान होजावे क्योंकि वह बड़ा पहलवान है प्रातः
काल दोनो सेना फिर मैदानमें आकर युद्धकरनेपरआरूढ़हुईंतोबहमन
ने अमीरसे कहा कि हमला तू क्यों नहीं आकर युद्ध करता तब तोअमीर
अश्वकर देवज़ादे पर सवारहोकर बहमनके सम्मुख आकरखडाहुआतो
बहमनने कहा कि लावो वारचलावोतबअमीरनेकहाकिपहिलेहमलोगों
का यह धर्मनहीं है कि किसी कार्य्यमें शीघ्रताकरें तब बहमनने कहा कि
युद्ध करना उचित नहींहै केवल लंगर उठाना उचित है जो हारे वह बल-
वानकी आधीनता में रहै तब बहमनने अमीरका लंगर पकड़करउठाया
परंतु हिल न सका तब अमीरनेपकड़करसातबारघुमाकरपृथ्वीपररखकर
मुशकेंबहमन की बांधकर अमरूके हवालेकरके डंकाबजवाकर पलट गया
और सेना में जाकर बहमनको बुलाकरजड़ाऊकुरसीपरबैठाकरकहाकि
तुमअब मुसलमान होकर हमारी आज्ञा में हो रहोउसने कहाकि मुझे
सबआपकी आज्ञामाननीहरप्रकारसेउचितहै परंतुनौशेरवांऔरजोपीन
आदिकाभी अपराध क्षमाकीजिये तब अमीर ने कहा कि जोवेलोगमुस-
लमान होवें तो हम उनका अपराधक्षमा करतेनहींउनको अपने हाथसे

हम बधकरेंगे तब बहमन ने कहा कि जो आज्ञा होवे तो हमजाकरउन सब लोगोंको समझाकर आप के समीप लाकर अपराध क्षमा करावें तब अमीर ने खिलअत देकर बहमनकोबिदाकरके उनकेलानेकोभेजा बहमन ने जाकर नौशेरवां जोपीन और बख्तकआदीसेकहाकिअबतुमलोगमिल कर अमीरसे मिलो अब जो हम न विजय हमजा से पास के तो निश्चयहै कि कोई संसार में न जीत सकेगा इससे सब लोग चलकरउसकेसाथमिल कर रहें तब सब लोग एक चित्त होकर अमीर के समीप आये अमीरने यथा उचित सबको बैठालकर अतिप्रसन्न किया और खुशीकाबाजाबजने लगा इसके पश्चात् सात दिनतक नाचरंग होने की आज्ञादी ॥

अमीर का मक्के की ओर जाना और पराजय देकर पकड़कर सादान अमरू हबशी का मुसलमान करना ॥

लिखनेवाला लिखताहैकिसभाकेपश्चात्अमरूऔरआदीअकरबनेअमरू से कहाकि अब यहां जीवजंतुओं कोभोजनकेलियेअतिदुःखहोताहैइससे और कहीं चलकर बास कीजिये अमीर ने स्वीकार करके कहाकि अति उत्तम है कावसहिसार की ओर अगवानी खेमा भेजा जावे उसीसमयमें नौशेरवांने अमीरसे कहा कि अबहमारीयह इच्छाहोतीहै किकवादको गद्दी पर बैठालकर हमईश्वरकाभजन एकान्तमें बैठकरकरें अमीरने कहा कि हम इसमें कुछ नहीं उतर देसक्ते जैसीआपकीइच्छाहोवहीकीजिये तब नौशेरवांने कबादको अपनास्थानापन्नकरके बुजुरुजमेहर समेत मदा-यनकी तरफ यात्रा की और अमीर का बिसहिसार भेजाकरदिनको तो शिकार करतेथे और रात्रिको हर प्रकार की वस्तुओंसे चित्तको प्रसन्न करते रहे एक दिन एक दूतने आकर मक्के से अमीर के पिता का एक पत्र दिया अमीर ने पत्रको ले कर पढ़ा तो उसमें लिखाथाकि ऐपुत्र जिस दिन से तूने हाथ सम्हालाहै तबसेकिसीने हमारेऊपर चढ़ाईनहीं की थी परंतु अब शादाद अमरू हबशीने हमारे नगर को भी लूटलिया है और मक्के को भी नाशकरने की इच्छा रखताहै इससे उचित है कि अति शीघ्रही आकर उसकी कोई युक्तिकरो नहीं तो कोई मुसलमान न बचेगा अमीर ने उस पत्रको सब सरदारोंको दिखलाकर बहमन से कहाकि जबतक हम न आवें तबतक तुम हमारे स्थानापन्न होकर राज गद्दीकरो और हमारे मित्रोंको मित्र और पुत्रोंको पुत्र जानकर रक्खो और मैं ईश्वरकी कृपाहोगी तो अति शीघ्रहीपराजयकरकेमक्के से आता हूं तब बहमन ने हाथ बांधकर कहाकिमैं आपके स्थानापन्न होकर नहीं बैठ सक्ता मेरा इतना बडा मुंहकि आपकी गद्दीपर बैठूं परन्तु अमीरने समझाकर सब कारोबार उसके हवाले करकेआपमक्केकी ओर अमरूको साथलेकर चले तो जब मक्केके समीपपहुंचेतोअमीरने अमरू से पूछाकिअब क्या सामानकिया चाहिये अमरूने कहा किआप अशकरदेवजादेकोइसी

बनमें चरनेके लिये छोड़दीजिये और पैदलमेरे साथहोकर चलिये अमीर ने अशकर देवजादे को जिन्नी भाषामें समझा दिया कि तुम निस्संदेह होकर इसी बनमें चरो जब हमशब्दकरें तो सुनकर हमारेपास चलेआना और आप अमरूको साथलेकर पैदलचले जिससमय सेनाके समीप पहुंचे संयोगसे अमरूसे एक बाजीगरसे मुलाक़ात होगई यहांतक कि दोनों साथ होकर शादान के समीप जाकर कलाबाजी करके शादान को इस प्रकारसे प्रसन्न किया कि उसने पारितोषिक देनेकी आज्ञादी परन्तु अमरूने न लिया और संमुखजाकर प्रार्थनाकी कि मुझको द्रव्यलेनेकी इच्छा नहीं परंतु आप इतनी कृपा कीजिये कि मेरेचचाका एककिंकर है सोवह टहलुई छोड़कर पहलवान होगया रात्रिदिन मुझको दुःख दिया करता है सोआप उसको डाटदेवें तो मेरादुःख छूटजावे शादान ने कहा कि अच्छा उसको बुलावो तबअमरूने पुकारा कि फौलाद पहलवान इधरआवो अमीर आये परंतु जो शादानसे दण्डवत् न कीतो उसने क्रोधित होकर कहा कि क्योंरे किंकर तू अपने मालिक को क्यों दुःख देताहै अमीरने कहा कि मैंतो किंकर नहींहूं तूहीहोगा तब अमरूने शादानसे कहा कि आप इसकी दुष्टता देखतेहैं यह आपसे भी नहीं डरता तबतो शादानने क्रोधित होकर एक पहलवान को अमीरके शिरकाटनेकी आज्ञादी परंतु जबवह समीप आया तो अमीर ने ऐसा घूसामारा कि वह पृथ्वीपर बैठगया तब शादानने दूसरे को भेजा उसकाभी वही हालकिया इसी प्रकारसे चालीस पहलवानों को मारा पीछेको शादान जबशस्त्र लेकर उठा तो अमीरने उठकर पृथ्वी पर दैमारा और छातीपर सवार होकर कहा कि तूनहीं जानता कि हम अमीर हमजा हैं तबतो उसने हाथ जोड़कर कहा कि अब आप मेरा अपराध क्षमाकरें मैंकेवल नौशेरवांके बुलानेसे आयाथा अबकभी न आऊंगा तबअमीरने कहा कि अबतो हमतुमको बेमुसल्मान किये न छोड़ेंगे लाचार होकर वह मुसल्माम हुआ तबअमीरने उसके ऊपरसे उतरकर गले लगाया और अमीरने जो शब्द शादान के उठाती समय किया तो उसको सुनकर मक्केके सबलोग आकर हाजिर हुये तबअमीर ने जाकर अपने पिताका पैरछुआ उन्होंने छातीसे लगाया पीछेको सब लोग अमीरको साथलेकर मक्के को आये तो अमीरने शादानको खिलअत देकर सबमक्का बासियोंको यथाउचित खिलअत देकर प्रसन्नकिया और अमरूभी अपने पिताके समीप जाकर स्थित होकर रहा लिखने वाला लिखता है कि नाचरंग होनेके पश्चात् शादानने अमीरसे कहा कि जो आज्ञा होती तो जाकर अपने देशसे बालबच्चों को माल असबाब समेत लेकर आऊं तब अमीरने अति प्रसन्नतासे खिलअत देकर बिदा किया जब शादान मदायन के समीप पहुंचा तो उसने अपने चित्तमें विचारा

कि नौशेरवांने हमको बड़ादुःख दियाहै अबइसको भी कुछ दण्डदेना उचित है दरवाजेपर जाकर द्वारपालकों से कहा कि बादशाहसे खबर करो कि शादान अपने देशको जाताहै बिदाहोने आयाहै नौशेरवां ने सुनकर बुलवालिया तबउसने जाकर दण्डवत् करके बादशाह से कहा कि आपने तो मेरीखूब इज्जतकी इतना कहकर बादशाहका कमरबन्द पकड़कर उठालिया और कहनेलगा कि जो कोई मेरे समीप आवेगा तोमैं बादशाहको ऊपरसे छोड़कर मारडालूंगा सबराज्य तुम्हारा नष्ट होजावेगा इसडरसे कोई समीप न जासका और शादानने बादशाह को अपने नगरमें लेजाकर पैरोंमें जंजीरें डलवाकर चौराहेपर लटका दिया और एकजवार की रोटी और जल उसके भोजनके लिये देने लगा इसप्रकार से दुःखदेने लगा तो नौशेरवांने एकदिन शादानसे पूछा कि तुने क्यों मुझे ऐसे दुःखमें डालरक्खा है मैंने तेरेसाथकौनसीबुराईकी है किंतू ईश्वरसे भी नहीं डरता शादानने कहा कि जोतू मुझको बुला कर मक्केके बरबाद करनेके लिये न भेजता तो मेरीयह गति क्यों होती नौशेरवांने कहा कि मैंइसे क्याजानूं बख्तकने बुलाकर भेजा होगा शादानने कहा कि जो बख्तकने भेजाहोतोउसीकोलाकरहमको देवो हम तुमको छोड़देवें उसीको इसमें क़ैदकरूं बादशाह इसबात को सुनकर चुपहोरहे अब थोड़ासा हाल अमीर का सुनिये कि थोड़ेदिनके पश्चात् अपने पितासे बिदाहोने की इच्छाकी तबखाजे अबदुल मुत्तलब ने कहा कि ऐसुच बहुत दिनोंके पश्चात् जो देखाहैइससेअभीचित्तनहीं चाहता कि जानेदेवें एकबर्ष औररहो अमीरने स्वीकार किया यह वृत्तान्त जबबख्तक को पहुंचा कि अमीर अभी एकबर्ष मक्केमें और अपने पिताके समीप रहेंगे बिचारा कि मैदानखाली है किसी युक्तिसे अमीरको लज्जित कियाचाहिये इसप्रकार से बिचारकर नौशेरवां की ओरसे एक जालीपत्र जोपीन और हरमुज के नाम लिखकर एकदूत के हाथ भेजा कि हमने शादानको भेजकर मक्केके मुसल्मानोंकानाशकरवा डाला और उसने हमजा और अमरूको भी लेजाकर अपने देशमें शूलीदी है सो तुम हमजाकी मुसल्मानी सेना को मारकर मेहरनिगार को बहमन को देदो संयोग से उससमय जोपीनबनमें शिकार खेलने को जाताथा मार्गमें दूतसे मुलाक़ातहुई उसने पत्रदेकर सबहाल जबानी भी सुनाया जिसप्रकारसे कि बख्तक ने समझा दियाथा जोपीन पत्र को पढ़कर सीधा बहमन के समीप आकर उसपत्र को देकर सबवृत्तान्त सुनाया बहमन ने पत्रको पढ़कर जोपीन से कहा कि यहतेरा फरेब है मैं तेरीबात कबमानताहूं पीछेको जब जोपीन सौगन्धें खानेलगा तो बहमनको भी निश्चयहुआ कि जोपीन सत्य कहता है और उसदूत को जब बुलाकर पूछा तो उसने भी उसीतरह से वर्णन किया तबतो वह-

मन अति दुःखित होकर कहनेलगा कि अच्छाजो हुआ सो हुआ उसके लड़कोंको उसके स्थानपति करकेइन्हींकीआज्ञानुसार करेंगे इतनाकह कर दूतसे पूछनेलगा कि सत्य बता क्याहुआ दूतने सौगन्धैं खाकर कहा कि मैं सत्य कहताहूं मेरे सामने दोनों शूली पर चढ़ाकर मारेगये हैं तब बख्तक ने बहमनसे कहा कि हमजाकी आज्ञा में होकर रहना तो उचितभी था परंतु ऐसा पहलवान होकर छोकड़ोंके अधीन होकर रहना उचितनहीं है तब उसने कहा कि आप भी बादशाह के दामाद हैं यहसुनकर बहमन कामी चित्त बहका और बख्तक से भी कहने लगा कि जो तुम्हारोभी यही सम्मतिहै तो हमने स्वीकार किया परंतुक्योंकर यह होसकेगा तब बख्तकने कहा कि अभी इस बातको किसीसे न कहो मैं शीघ्रही इस कार्यको करूंगा जो पीननेकहा कि मैं आज सभा में जाकर शाहज़ादोंसे कहूंगा कि मेरेपिताका कार्यहै जो आप लोग चलें तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा है बख्तक ने कहा कि यह तो अच्छा यत्न है जोपीन जबराचिको सभामें गयातो हुरमुज और कवाद आदि शाहजादोंसे कहा कि आपलोग कृपा करके मेरी मेहमानी स्वीकारकरें तो मेरीबड़ी प्रतिष्ठा होतीहै सबने स्वीकार किया औरदूसरेदिन सबशाहजादे पहलवानों समेतगयेऔर जब भोजन करनेके पश्चात् शराबपिलाने लगा तो जोपोनने कवाद और शहरयार से प्रार्थनाकी कि आप लोग ता आये परंतु मलिकाजो आती तो मेरी अति प्रतिष्ठा होती शाहजादों ने स्वीकार करके मलिका कोभी सवारी भेजकर बुलवाया और जबमलिका आकर तख्तपर बैठीतो इतनेमें किसीके मुखसे बात निकल गई कि अभीतो आकर तख्तपर बैठी है परंतु यह नहीं जानती कि कौनसी गतिहोगी यहबात मलिकाके कानतक पहुंचगई तो उसी समय कवादको बुलाकर उससे कहा उसने अति शीघ्रही बाहरसे सवारी मंगाई और मलिकाको सवार कराकर अपने क़िलेमें चलापीछेको जब बहमन और जोपीनने सुना कि मलिका आई और चलीगई तो हाथ मलकर कहने लगेकि बड़ी लज्जाकी बातहुई कि हाथमें आकर निकल गईबख्तक ने आकर जो बहमन और जोपीन को दुःखीदेखातो कहने लगा कि दुःखित क्योंहोतेहो कहां जायगी एकदिनतो हाथ आवेगीतब बहमन और बख्तक दोनों कहनेलगे कि अफसोसहै कि हुरमुज गद्दीपर न बैठे और क़वाद लड़काका पुत्र होकर गद्दीपर बैठे अमीर हमज़ा ने बहमनसे कहा कि तेराक्या नुकसान है बहमन ने कहा कि सत्य मैं कहताहूं कि क़वाद गद्दीपर बैठानेके योग्य नहींहै मलिक लन्धौर ने ऐसीबातें उसकीसुनी तो क्रोधित होकर कहने लगा कि अफसोस है कि अमीरने तुझको अपनी कुरसीपर बैठाला नहींतो तू ऐसी बातें क्यों करता तबतो बहमन नेक्रोधित होकर एक तलवार लन्धौरको

मारी लन्धौरने रोकर एकगदा बहमनपर ऐसी लगाई कि बहमन बेहोश होगया और दोनोंके सिपाहियों से तलवार चलनेलगी बहुत से लोग दोनों तरफके घायल हुये पीछेको बहमन के लोग लेकर भाग गये संयोगसे यह खबर नूरबानो बहमनकी बहिनको जो अमरूपुत्र हमजा पर मोहित थी पहुंची कि मुसल्मानों को काफरोंने बड़ादुःख दिया है और घरसे निकलकर इसप्रकार से लड़ी कि बहुतसे पहाड़ी मारे गये और अरबी पहलवानों को साथ लेकर क़िलेमें आई और खन्धक को पनियासोत कराकर क़िलेके दरवाजे को बन्द करके बैठरही और जब पहलवानों का धावा अच्छा हुआतो क़िलेकी दीवारोंपर चढ़करमारने लगे तो पहाड़ी क़िलेसे हटकर पड़े परंतु फिर एकदिन क़िलेपर चढ़ाई की तो क़वादने अपनी मातासे कहा कि अब आज्ञा देवोतो हम जाकर इनपापियों को मारकर भगादेवें मेहरनिगार ने कहा कि अभी तुमलड़केहो युद्धकरने के योग्य नहीं परंतुक़वादने न माना और कहा कि जो नजाने देओगी तोहम पेटमारकर मरजावेंगे हमारे पिता तो हमसे भी छोटेथे तभीसे युद्धकरने के लिये जातेथे तब नूरबानोने कहा कि आप जाने दीजिये मैंसाथ जाकर सहायता करूंगी लाचार होकर मेहरनिगारने क़वाद को जाने की आज्ञादी क़वादहथिया रलेकरपहाड़ियों के सम्मुख जाकर ललकाराकिऐपापियो तुमनेंसेजिसको मारने की इच्छाहो वहआकर सामने युद्धकरे मुझको अपनी बहादुरी दिखावे बहमन क़वाद को देखकर अति प्रसन्न हुआ कि अबहम क़वादकोपकड़ कर अपने पास रक्खेंगे तो अवश्य है कि मेहरनिगार अपने पुत्रकेलिये मेरेपास आवेगी यहविचारकर क़वादके समीपगया और कहने लगा कि लावार चला क़वादने कहा कि मेरापिता कोई कार्य पहिले नहीं करता था सो वैसाही मैंभी करताहूं पहिले तूवारचला जामैं तेरे वारसे बचजाऊंगा तोमेरा तमाशा देखना तब बहमन ने पहिले वार मारी क़वादने ढालपर रोककर ऐसे जोरसे एकतलवार मारी कि बहमन घायल होकर भागा और चारकोसतक क़वाद पीछाकिये चला गया और जबदेखा कि सेना उसकी बायुकेसमान उड़ालेगई तो लाचार होकर पलट आया और अपनी माताके समीप जाकर सबवृत्तान्त वर्णन किया तबमेहरनिगारने बहुतसा रुपया अशरफी अपने पुत्रपरसे उतार कर कंगालों को दिया कुछकाल व्यतीतहोनेके पश्चात् अमरू पुत्रहमजा और लन्धौरने जाकर मलिका के समीप कहा कि विदितहोता है कि इसमें बहमन का अपराध कुछ नहीं है परंतु बख़्तक और ज़ोपीन ने उसको भी अपने साथ मिलालिया है तबअमीरक पुत्रने कहा किफिर क्याकरें पहाड़ी लोग क़िलेको घेरेहैं हमारेसब पहलवान घायल हैं इससे हमडरते हैं क़वादने कहा कि क़िलेका दरवाजा खोलकर बाहर

चलकर युद्ध करने पर आरूढ़ हो इतनी आज्ञा देतेही युद्धका डंका बजने लगा सबसेना किले से निकल कर मैदान में खड़ीहुई तो उस समय बहमनने पुकारकर कहाकि हेअरब वासियोतुमलोग क्यों वृथाप्राणदेतेहो-हमजाको मरे बहुत दिन होगया अब उत्तम इसीमें है कि मलिकाको हमको देदो और तुम लोग अपनी राहलो नहीं तो अबकी किसीका प्राण न बचेगा तबऔर बहमन की सबबातें सुनकर अमरू पुत्र हमजा से विदाहोकर उसके सामने आकर खड़ाहुआ तोदोनों में गदाचलनेलगी और सायंकाल तक बराबर युद्ध करतेरहे शामको दोनों सेना पलट कर अपनेस्थानों परचली गई दूसरे दिनप्रातःकाल होतेही दोनोंसेनामैदान में जाकर खड़ीहुईं किइतने में एकतरफ से गरदउड़ती हुई दिखाईपड़ी दोनों सेनाओं के दूतों ने जाकर देखा तो विदित हुआ कि फरहाद जोपीन की सहायताके लिये आताहै अमीरके पुत्रने सुनकर कहा कि हमारी ईश्वर सहायता करेगा और जोपीन अगवानी मिलकर अपनी सेना में ले आया और सब वृत्तान्त उससे वर्णन किया इतने में फरहाद पुत्र लन्धौरको अमीर के पत्र की आज्ञा लेकरफरहादके साथयुद्धकरने के लिये आकर खड़ाहुआ तो उसने पूछा कि तूकौनहै फरहाद ने कहा कि हम पुत्र खुसरो मलिकलन्धौर पुत्र सादन बादशाह हिन्द के पुत्रहैं जिसको संसार जानताहै उसने पूछा कि तेराबाप कहांहै फरहादनेकहा सेनामेंहैं फरहादने कहा कियहविदितहोताहै किउसनेअपना प्राण बचाया और तुझको मरनेके लियेभेजाहैतबफरहादने कहाकिओपापीक्याबकता है उसका कोई सामनाभी करसक्ताहै लातूवार चला तबतो उसनेसातसौ मनकी गदाउठाकर फरहादके शिरपर हमारी फरहादने ढाल से रोककर कहाकिदोवारअपनी औरकरले फिर मेरी वाररोकनाफरहाद नेदोवार फिरउसी तलवारसे कियेपरन्तु फरहाद ने उसीस्थानसेरोककर कहाकि देखखबरदार होअब मैंभी वारचलाताहूं यहकहकर ऐसेजोरसे गदाचलाई कि अग्नि निकल आई तबतो बड़ी प्रशंसा करने लगा और उसी प्रकार से सायंकाल तक दोनों से युद्ध होता रहा और शाम को पलटकरअपने २ स्थानपरचलेगये अब इनदोनों कोलडनेदोथोड़ासाहाल अमीरका सुनो कि एकदिनरात्रि कोअमीरने स्वप्नमें देखा किपहाड़ियों ने हमारी सेना पर छापामारा है और बहुतसे पहलवान घायलहैं उठकर अमरूसे स्वप्न का हालसुनाया अमरूने कहाकि आपका स्वप्न झूंठा नहीं होता आप यहांरहिये मैंजाकर देखआऊं तब अमीरने अमरू को समझाया अबफिर थोड़ासा वृत्तान्त युद्धकासुनियेकिफरहाद औरदुस्तफतानोश से युद्ध होरहाथा कि अमरू आकर पहुंचा अमरू को देखकर मुसलमानों में अति प्रसन्नता हुई और बहमन न देखकर बख्तक से पूछा कि तूनेतो कहाथा कि अमरू और हमजामरगया अब यह

कहांसे आया बख्तकने कहा कि मैं क्याजानूं मैंने नौशेरवांके लिखनेसे जानाथा तब तो बहमनने क्रोधित होकर बख्तकको उठाकर जोपीनके शिरपर दैमारा परतु उनदोनों की मृत्यु नथी इससे बचगये बहमन इस पर अति लज्जितहुआ अमरू सब हालजानकर क़बाद आदिको समुझा कर घायलोंके घावोंपर नोशदारू रखकर रात्रिदिन चलकर अमीर के पास जाकर पहुंचा तो सबहाल अमीर सुनकर उसी समय अपने पिता से आज्ञा लेकर बहुतसे लोगोंको साथ लेकर अशकर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू कोलेकर काबिसके तरफचले अब थोड़ाहाल युद्धस्थानका सुनिये कि दानोंसेना मैदानमें खड़ीथीं कि सामनेसे गरद दिखाई पड़ी दानों सेनाके दूतोंने जाकर देखातो बिदितहुआ कि सरकोब तुर्कनामे नौशेरवां की सहायताकेलिये आताहै और सेना अधिक साथलाताहै जोपीन अगवानी मिलकर उसको अपनी सेनामें लेआया तो उसने भी अपना खेमाउन्हींके साथखड़ा करकेजोपीन से पूछाकिभला हमज़ाको तो हमको देखादो उसने कहा कि हमज़ातो नहींहै परन्तुउसके दो पुत्र लड़रहेंहैं तबतो उसने प्रसन्नहोकर कहाकि आजतो सेना हमारी थकीहै प्रातःकाल हम उनकी बहादुरी उनको दिखावेंगे इतनेमें फरहाद घोड़ा लेकर मैदान में निकल कर खड़ा हुआ और दूसरी तरफ से सादान पोता हमज़ाका अपने पितासे आज्ञा लेकर आया तो उसको देखकर सब हंसनेलगे कि यहतो बच्चा है पहलवानों से यह क्या लड़ेगा सरकोबने बहमनसे पूछा कि यह किसकापुत्र है जोलड़ने को आयाहै उसनेकहा कि यह हमज़ाका पोताहै सरकोबने कहा कि भला यह फरहाद से क्योंकर लड़ेगा बहमन ने कहा कि देखिये क्या होता है यह बातेंहोही रहीथीं कि इतनेमें उसने ललकारा कि ओ पापियोतुम मेंसे जिसको मरनेकी इच्छा हो वह आकरमेरेसामने अपनी बहादुरी दिखावे तब फरहादने घोड़े को बढ़ा कर एक गदा मारकर कहा कि देखा वह मारा सादानने पृथ्वीसे उठकर कहा कि पापी क्योंझूठबकता है किसको तूने मारा मैंतो तेरे प्राणका गाहक बैठाहूं यह कह कर एक तलवार ऐसी मारी कि फरहाद का एक हाथ कट कर गिर पड़ा और ज्योंही उसने भागने की इच्छाकी दौड़कर दूसरा भी हाथकाट लिया और सिपाहियों ने दौड़कर शिर काट लिया इस प्रकारसे उस को मारडाला तब अमीरकी सेनामेंतो बिजयका डंका बजनेलगा और काफिरोंकी सेना में गमी पड़गई और सबका हँसना बन्दहोगया और सब बड़े संदेहमें हुये कि छोटेसेबच्चेने ऐसेबड़े पहलवान को मारडाला और उसके एक छोटासा भी घाव न लगा सरकोबने बहमन से कहा कि बड़ी भाग्यहै इसके मातापिता की जिसके घरमें ऐसा बहादुर पुत्र उत्पन्नहुआ क्योंन उसका पिता उसका भरोसाकरे यह कहकर दोनों

सेना अपने २ स्थानपर चलीगई हरसुजने पहलवानों और सरदारों को साथलेकरभोजनकियातत्पश्चात् शराबऔरकबाबखाने पीनेलगे औरजब शराब प्रमाणसेअधिकहोगईतोसरकोबने बहमनकोहरसुजके बगलमें बैठे देखकर कहा कि ओपहाड़ी तेराइतनाबड़ासुह कि मुझसे बढ़कर बैठा है बहमनने कहा कि ऐ सरकोब सिड़ीहोगयाहै मुझसेनिडर होकर ऐसी बातें क्रोधित होकर करताहै सरकोबने उठकर घूसामारा तबतो उसने मनमें क्रोधितहोकरसरकोब कोउठाकरपृथ्वीपर दैमारा परन्तुहरसुज ने दौड़करदोनोंकोहटादियाऔरसभा समाप्त करके चलेगयेफिरप्रातः काल दोनों सेना आकर मैदानमेंखड़ीहुईं तो एकओरसे बनकी तरफ़ गर्दउड़ती दिखाईपड़ी दूतोंने जाकर देखातो विदित हुआ कि हमज़ा बहुतसी सेना लेकर अमरूसमेत आताहै दूतना सुनकर मुसल्मान लोग अति प्रसन्न हुये और प्रसन्नता के डंके बजानेलगे और हरएक सरदार औरपहलवान जाकर अमीरके पैरोंपर गिरे औरअमीरने सबकोछाती सेलगाकरसबकीकुशलपूछी तत्पश्चात् अश्वकर देवज़ादे पर सवार होकर मैदान में आकर बहमन से पुकार कर कहा कि ओ पहाड़ी मैंने कौनसा दुःखतुझेदियाथा जिसकेबदलेमेंतूनेयहकियाहै अब बहादुर हो तो आकर मेरेसाथ मैदानमें लड़ इतनासुनकरबहमननेहरसुजसे कहा कि मैंतो हमज़ाके सामने मुंह न दिखाऊंगा तुम जो चाहो वह करो उसने कहा मैं क्याजानूं बखतक जानें पीछेो सरकोबने आकर अमीर के शिरपर गदाचलाई अमीरने रोककर कहा कि दोवार और करले सरकोबने दूसरी वार चलाई अमीरने उसकोभी रोकलिया तब तीसरी वार ऐसेजोरसे मारी कि गदासे लौ निकली कि जिसके धुयें से दोनों सेनामें अंधियारी छागई और सरकोबने चिल्लाकर कहा कि देखोमार लिया और कहनेलगा कि यहतो मनुष्यथा जो पहाड़होता तो वहभी जलजाता इतनेमें अमीरने सामनेसे निकलकर कहा कि क्या बकताहै किसको तूने मारा मैंतो तेरे प्राणका घातक जीताहूं और कहाकि देखवार इसको कहतें हैं कि जो बचभीजावै तौ भी छठीके दूधतकतो निकल आवैगा यह कहकर गदा जो उसके शिरपरमारीतो वह जीन परसे घोड़ेकी पीठपर चलागया केवल घोड़ा मारागयातब सरकोब ने चाहा कि अमीरके घोड़ेको भी मारे कि इतनेमें अमीर कूदकर उसके सामने खड़े हुये और दोनोंसे गदा और तलवार चलाकी परन्तु कोई नहारा तब अमीरने कहा कि जो जिसका पैर उठालेवे वह दूसरे को आधीन करके रक्खे सरकोब स्वीकारकरके अमीर का पैर उठाने लगा परन्तु न उठा तब अमीर ने उठालिया और सात वार घुमाकर अमरूके हवाले किया सायंकाल होनेके कारण दोनों सेना अपने २ स्थानोंपर जाकर उतरींमुसल्मानीसेनामेंतो शराब और कबाबकीसभा

ड़ई और पहाड़ी अति दुःखित होकर पड़ेरहे तत्पश्चात् अमीरने सरकोबको बुलाकर अपने समीप बैठाकर पूछा कि देखहमने किस प्रकार से तुमको पराजित कियाहै सरकाबने कहा कि आपका कोई सामना नहीं करसक्ता ईश्वरने आधा बल आपको दियाहै और आधा संसार में बांटाहै अब छपाकरके मुझे मुसल्मान कीजिये तब अमीरने कलमा पढ़कर उसको मुसल्मानकिया और खिलअत देकर सोनेकी कुरसीपर बैठाकर तीनदिन तक नाचरंग होनेकी आज्ञादी तत्पश्चात् चौथे दिन डंका बजवाकर अपनी सेनाको साथ लेकर चौदह परेट बांधकर खड़े हुये और पहाड़ी सेनाभी आकर इस प्रकार से खड़ीहुई कि मानोसिकन्दरऔर दारा कासामनाहै तबअमीरने ललकार कर बहमनसेकहा कि बहमन जो बहादुरहै तो आकर सामनाकर परन्तुबहमन न आया और हुरमुजसे कहा कि अब सेनाको एकबारगी लेकर धावा करदेव इतना सुनतेही सबसेना दौड़पड़ी औरअमीर अकेलाखड़ा होकरयहां तक लड़ा कि रुधिरकीनदी बहनेलगी तब बहमन ने शापीनसे कहा कि अमीर इससमय व्याकुल होगयेहैं तुम किसी यत्नसे अमरूकोहटा दो तो आसानीमें हम अमीरको मारलेतेहैं शापीनने सातसौ हाथी लेकर एक तरफसे जाकर अमीरके शिरपर एक तलवार ऐसीमारी कि चार अंगुलका घाव होगया और चिल्लाकर कहनेलगा किदेखोहमनेशाको मारलिया यह सुनकर अमीरकी सेना अतिदुःखितहुई तबतो अमीरने अशकर से जिन्नी भाषामें कहाकि हमको सेनासे बाहर निकाल कर लेचलो तब लेकर भागा और जो कोई पास आता था आगे मुहसे काटता और पीछेलातोंसे मारताहुआ सेनासे निकलकर जंगलकीतरफचला कईकोस निकलकर एकनदीके समीप पहुंचा तो जाकर जलजल पीनेलगा ता अमीर नदीमें गिरपड़ा जलरुधिर से लाल होगया परन्तु अशकरने दौड़कर अमीरको नदीसे ऊपर निकाललिया डूबनेसे बचा लिया संयोगसे सेशीरनामे गड़रिया अपनी बकरियोंको पानी पीनेके लिये लायाथा उसने देखा कि नदीका जललाल होरहाहै और एक मनुष्यघायल नदीकेतीर पड़ाहै और एक घोड़ादांतोंसे ऊपरखींचताहै गड़रिये को देखकर दयाआई और यह भी अपने चित्तमें बिचारा कि यह काहींका बादशाह लड़ाईमें घायलहुआहै घोड़ालेकर भागआयाहै मैं जो इसकीसेवा करूंगा तो ईश्वर चाहेगा तो कुछ प्राप्त होगा यह अपने चित्तमें बिचार कर उसके समीपगया और अमीर को उठाकर अशकर की पीठपर रस्सीसे बांधकर अपने स्थानपर लाया और अपनी मातासे सबहाल कहकर अमीर की औषधी करनेलगा परन्तु अशकर बराबर अमीर के समीप रात्रि दिन खड़ा रहताथा और जब कभी वह बाहर लेजानेकी इच्छाकरता तो अशकर नेत्रोंसे डाटदेता तबवह डर

कर भागजाता इसीप्रकारसे सातदिवस व्यतीत होनेके पश्चात् अमीरके नेत्र खुलगये तो देखाकि अश्कर देवज़ादा और एक मनुष्य समीप खड़े हैं और हम चारपाई पर किसीके घरमें लेटेहैं इतना देखकर उस मनुष्य से पूछाकि तू कौनहै और यह किसका स्थान है उसने कहा कि मैं गड़रियाहूं आप नदीकेतीरपड़े थेइसी घोड़े पर सवार कराकर लेआयाहूं अबईश्वर आपकोअच्छा करेतो मेरेभी कुछदिन अच्छेहोवें तबअमीरने उससेकहा कि घोड़ेकी पीठ परसे जीन उतारलो और उसको चरनेके लिये छोड़ देा और जो तुमने मेरे साथ नेकी की है इसका फल मेरे अच्छे होनेपर मिलेगा और कहा कि एक बकरी अपने गल्लेमेंसे ला मैं उसको हलाल करदूं तोतूउसकी कबाबऔरशुरुआबनाकरमुझको खिला इसीतरहसेतीनदिनतकउसकोमारमार २खिलायाचौथेदिनउसनेअपनी माता से पूछा कि इसीतरह मैं यह सब बकरियों को समाप्त करदेगा अब हलाल करने देवें तब उसने जाकर अमीर से पूछा कि तू कौन है अमीरने कहाकि हमजाका चचेराभाईहूं सादसामी मेरानांम हैतूमेरी सेवाकरमैं तेरीबड़ीसेवा करूंगाएक बकरीके बदले दशबकरी दूंगाऔर इसके सिवाय और बहुत कुछदूंगा मेरे अच्छे होनेतक एक बकरी मार कर रोज खिलाया कर अमीर का नाम सुनकर वह स्त्री अतिप्रसन्न हुई और कहनेलगी किमैं सब बकरियां तुमको खिलादूंगी यह कहकररोज एक बकरी मारकर खिलानेलगी अब अमीरकी सेनाकाहाल सुनियेकि जब अमरूने अमीरको सेनामें न देखातो सब मुरदोंमें ढूंढ़कर सेना से बाहर निकल कर अति व्याकुल होकर ढूंढ़ताहुआ चला मार्ग में जो रुधिर शिरसे गिरता गया उसीके पतेसे नदीके तीरतक पहुंचातो देखा कि जल नदीकालालहै तोजानाकि अश्करदेवजादा यहांतकले आयाहै वहांसे ढूंढ़ते हुये अश्कर देवज़ादे के समीप पहुंचा तबवह अमीरकेपास लेगया अमरू जाकर अमीरके पैरोंपर गिरा और सब वृत्तान्त कहकर अमीर से कहा कि आप अब चलिये तब अमीरने कहा कि तुम जाकर सबको यहां लेआवो तो हम चलेंगे उसीसमय सेना में आकर अमीरके कुशलका हाल सबसे कहकर सबको साथ लेकर अति शीघ्रही मलिका समेतअमीरके पास पहुंचा मेहरनिगार ने जबजाकर देखा किअमीरका घावबहुत बड़ाहै तबतो लपटकर रोनेलगी और इसीप्रकार से सबपहलवान और सरदार आकर अमीरसे मिले अमीरने सबको छाती से लगाया तत्पश्चात् अमीरने अपनासब हाल कहकर सब सरदारों और पहलवानोंसे कहाकि इस गड़रिये ने हमारी बड़ी सेवा की है जिससे जो होसके वह इसको दे तब सब लोगोंने इतना रुपयाऔर मालअसबाब दिया कि उसके घरमें न आसका और मलिकामेहरनिगार ने भी बहुतसा जरजवाहिर देकर उसको धनवान करदिया तब वहां से

कूच करके फिर मैदानमें आकर युद्ध करने पर आरूढ़ हुये अमीर ने आज्ञादी कि अबइनको चारोंओरसे घेरकरमारलो कोईबचकर जाने न पावे अमीरकी आज्ञा पातेही सब सेना इसप्रकार से पहाड़ी सेनापर टूट पड़ी जिसतरह व्याघ बकरी के लिये दौड़ता है चारोंतरफसे घेरकर ऐसा माराकि बहुत थोड़े ही बचकर जाने पाये और जो भागे उनको मंजिलोंतक खेदकरमारा एक तरफसे बहमन निकला संयोगसे अमरूपुच हमना उसीतरफ खड़ाथा उसने पीछाकिया जब थोड़ीदूर चलागया तो इस विचारसेकि यहअकेलाहै पलटकर खड़ा होगया दोनोंसे लड़ाईहुई आखिर को बहमन मारागया और शिर काटकर अपने पिताके समीप चलाआया और अपनी बहादुरीका हाल कहकर शिर अमीरके समीप रखदिया तबअमीरबहमनकेशिरकोदेखकरकहनेलगा कि ऐसे पहलवान औरऐसी २ वस्तु कहांमिलतीहैंतत्पश्चात्जितनेसरदारथे सबोंनेलाकर पहाड़ी सेनाकेसरदारोंकेशिरोंकोअमीरकेपैरोंपररखदियाइसप्रकार से अमीर बिजयपाकरडंका बजवातेहुये सेनाको साथ लेकर अपने स्थानपर आये और जिससमय अमीर घायलहोकर बहमनके हाथसे बचकीओर जातेथे उसीसमय में एक परी आईथी उसनेजाकर परदेकाफ में आस मान परीसे यहसबहालकहाआसमानपरीअतिव्याकुलहोकरउसीसमय करीशा और अब्दुल रहमान को बुलाकर सबहालकहकर बहुतसेपरी जादों को साथ लेकर दुनियाके तरफचली जब आकर पहुंचगई दोकोस के फांसलेसे अब्दुलरहमानको अमीरकेहाललेनेको भेजाउसनेआकरजो देखातो अमीर बैठेहैंअमीर देखकरबड़े सन्देहमें हुये तो उसनेसबहाल पूछकरआसमानपरीऔर करीशाके आनेकीखबरदी तब अमीरअतिप्रस न्नताकेसाथसरदारों समेतआसमानपरी की अगवानीके लियेगये पहुंच करआसमान परीसे मिलकरकरीशाकामुख चूमकरअपने गोदमें बैठाकर बहुतप्यारकियापरियांअमीरकीसवारीकी शोभादेखकरसबभूलगईं और कहनेलगी कि तब क्यों न अमीर परदेकाफ से दुनियामेंआने की इच्छा करें और अमीरसे प्रार्थना करनेलगी कि आपके सरदारों औरसेनाकी शोभातो देखी परन्तु मलिकामेहरनिगारकेदेखनेकी ओर इच्छाहै तब अमीरनेकहाकिजिसप्रकारसे तुम्हारीइच्छाहै उसीप्रकारसे हमारेसर-दारों की इच्छा तुम्हारे देखनेकी है सोतुमपरदा हटाकर उनकेनेत्रोंमें सुरमा सुलेमानी लगादेवोकिवे तुमको देखकर प्रसन्नहोवें परियोंनेकहा किऐसा नहोकि मोहितहोकर हमकोदुःखदेवें अमीरने कहानहींकिस का मुंहहै कि तुमसे बोलसके तब परियोंनेपरदाहटाकर अपना मुखसर दारोंको दिखाया पहलवानोंने जोदेखातोहरएक व्याकुल होगयाऔर जब होशमेंहुये तोअमीरकोधन्यवाददेनेलगेकिआपकीकृपासेहमनेइनको भी देखा नहीं कहांदेखते तत्पश्चात्अमीर सबकोसाथलेकर मलिकामे

फर निगारके महलमेंआकर चित्तको प्रसन्नकियातो पहिलेमेहरनिगार मलिकासेमिली तबकरीश्माको चूमकरलेकर गोदमेंबैठालियातत्पश्चात् सब परियोंसे यथाउचित मिलकर प्रसन्न किया और तीनदिनरात तक मलिका सबसहेली औरसरदारों समेतनाचरंगदेखतीरही औरसबकार्य बंदरहा चौथेदिन जो सौगातिआदि उत्तमवस्तु परदेशफ़से लेकरआई थी मेहरनिगारको देकरबिदाकुई मलिकाआसमानपरीके जानेकेपश्चात् अमीरने अपने सरदारोंसे पूछा किमालूम नहींहोता कि पहाड़ी लोग किसतरफको गयेहैं अमरूनेकहा कि सुनाहै कि कश्मीरकी तरफजाकर नफरनामे स्वामी कश्मीरसे सहायता मांगी है उसने उनको भरोसा दियाहै इसबातकोसुनकर अमरूपुत्र हमजानेकहा कि आज्ञाहोतोमैंजा कर उसका नाशकर डालूं एकको भी जीता न छोड़ूं अमीरने कहा कि इससेउत्तमक्याहैतबवह सातपहलवानोंको उनकीसेना समेत कश्मीरकी ओरचला अमरूआदीअकरबफरहादपुत्र लंधौरइसतफतानीसआदिसर दार साथमें सबकोलेकर जबकश्मीरके समीपपहुंचा तोपहाड़ीसेनाडर करक़िलेमें जाकरबंदकरके बैठरही तब मुसल्मानी सेनाभी चारों तरफ से क़िलेको घेरकर उतरपड़ी और कईदिनोंतक घेरेपड़ी रही एक दिन राचिको व्याघ्र पहाड़सेनिकलकर सेनामें आया और बहुतसे सिपाहि-योंको घायलकरके चलागया यहहाल जबअमीरके पुत्रकोपहुंचा तोवह हथियार लेकर उसके पीछेपहाड़तक पीछाकिये परंतु पहाड़ परजाकर व्याघ्रलोपहोगया तबवह कईदिनोंतक उसीकीतलाशमें पड़ारहा परंतु कहींपता न मिला आखिरको पहाड़से उतरकर जबअपनी सेनाकीतरफ चला तो मार्गमेंएक अपूर्वनगर देखकर अतिप्रसन्नहुआ औरलोगोंसेपूछा कियहकिसकानगरहै तबलोगोंनेबतलाया किइसनगरका नामफ़रखारहै यहांकी स्वामिनीगुलचेहरानामज्योपीनकीबहिनहै संयोगसेउसीसमयमें वहझरोखेकी राहसे अमरूकेस्वरूपको देखकरमोहितहोगई और एक खोजेकोभेजा किजाकर उसमनुष्यको किसी प्रकारसे मेरेपास लेआवो उसनेजाकर अमरूसे कहा किमेरी स्त्री आपकोबुलातीहै तब अमरू ने न माना दूसरीबार कहनेसेसुननेसे उसकेसाथगया जब उसस्त्रीकेपासपहुंचा तोउसनेअतिप्रतिष्ठाकेसाथबैठाकरअपनेसाथभोजनकराकरशराबपिलाया तत्पश्चात् उसकेसाथ भोगकरनेकी इच्छाकी तबअमरूनेकहा कि अभीमैं तेरेसाथ भोग न करूंगा क्योंकितेरी एकबहिन मेरेपासहै हम अपने सर-दारोंसे पूछलेवें जैसा वे कहेंगे तबवैसा हमकरेंगे इतना सुनकर उसने उस समय दूतभेजकर अमरूके सरदारोंको बुलवालिया और उनसे अपना प्रयोजन कहा उसी समयमें एकमनुष्य उसी नगरमें रहताथा उसने जब सुनाकि अमीरका पुत्रज्योपीनकी बहिनके पासबैठाहै अपने दो पुत्रों को बुलाकरकहा कि तुम जाकर उसको पकड़ लावो वे दोनों लट्ठ बांधकर

अमरूकेपासआये और अमरूकेमारनेकेलिये लाठीचलाई उसनेदोनोंकी लाठीछीनकर ऐसाघूसामारा किवेदोनोंबेहोशहोकर थोड़ीदेर तकपड़े रहे फिरउठकर अपनेपिताकेपासआकर सबहालसुनाया तबफरखारसर शमने कहा किमुझसे तो हमज़ासे प्रयोजनहै इससे क्या करनाहै परन्तु हमज़ाका मैं कुछ कर न सकूंगा तत्पश्चात् दूसरेदिन सब सरदार अमरू केपासआयेतब उसस्त्रीगुलचेहरानेसबकीमेहमानीकरकेअतिप्रसन्नकिया तब अपनामोहितहोना अमरूपरसब सरदारोंसे कहा आदीने अमरूसे कहाकि तुमक्योंइसकोबेमौतकेमारतेहोइसकेमनोरथकोपूराकरो अमीर ज़ादेनेकहाकि किसतरहहम शास्त्रकेविरुद्धकरसक्तेहैं तबआदीनेकहाकि करना और न करना तोतुम्हारेअधीनहै परंतु मुझेइसके कहनेपर दया आतीहै इस कारण तुमसे कहतेहैं जब राचिहुई तो दोनों नशेमें भलकर एकहीपलँगपरसोगये तबगुलचेहरानेकामकेकारणअमरूसेलपटकरभोग करनेकी इच्छाकी अमरूने जागकरउसकोएकचपत मारकर हटादिया तबतोउसने अतिदुःखितहोकरअपनेचित्तसेविचारकिया कियहमेरीबहिन परमोहितहै और मुझसेभोगकरनेकीइच्छा नहींकरता इससेइसकोमार डालनाउचितहै एकबारगी तलवारलेकर अमरूकाशिरकाटकर चिल्लाने लगीकिदेखोयारोकोई बैरीअमीरके पुचको मारगयायारोंने जब जाकर देखाकिअमरूमरापड़ाहै सबदेखकररोनेलगेतबआदीनेकहाकियहांइसी पापिनीने अपनेइच्छापूर्वक न होनेके कारणमारडालाहै इसबातको सबों ने स्वीकार करके उसेबांधकर जो पूछातो उसने कहा कि नशेमें मैंने मार डाला अबजोचाहोसो करो तब सबपहलवान बड़े संदेहमेंपड़ेये कि स्त्रीको मारनाउचितनहीं इसीसमयमेंअमीरनेस्वप्नमेंदेखाकिअमरूरुधिरमेंपड़ाहै उसीसमय अमरूमक्कारकोबुलाकर कश्मीरको भेजाजबअमरू कश्मीरमें पहुंचातो मालूमहुआकि अमरूपुचहमज़ा फरखार नगरमें कोपीन की बहिनकेमहलमेंहै तबवहांसेचलकर उसमहलमें जबपहुंचा तो सरदारोंने उसकेपैरोंपर गिरकर सबहालसुनाया अमरूसुनकररोतापीटता अमीर के पास आकर कहाकिआपकापुच फरखारकोपीनके घरमेंघायल पड़ाहै औरआपकोअतिशीघ्रहीबुलायाहैमैंआपकोलेनेआयाहूं अमीरउसीसमय अश्वकर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू समेत फरखारमेंजापहुंचे तब अमरूने इसविचारसे किएकबारगी जोअमीरको पुचका मरना विदित होजावेगातोअतिदुःखहोगा इन्हेंकुछखिलालेवें इस प्रकारसे विचारकर अमीरसे कहाकि किसीबाग़में चलकर कुछभोजनकरलेवें तो उसकेस्थान परचलें अमीरस्वीकार करके एकवाटिकामें जाकर उतरे संयोगसे उसमें बकरियां चरतीथीं एकबकरीको मारकर कबाब बनाया रक्षकने बाग़में धुंवां देखाजब बाग़में आया तो देखा किदो मनुष्यएक बकरी मारकर क-बाबबनारहेहैं यहदेखकरअतिव्याकुलहोकर सरग्वांसेजोबकरियोंऔर

बागका स्वामीथा जाकर खबरदी फरखार सरश्वां यहसुनतेही वहां से दौड़कर दोनोंलड़कोंसमेत जबबागमेंआया तो देखताहै किदोनों कबाब भून २ खारहेहैं और किसीको डरतेनहीं अपनेलड़कोंसे कहाकिजाकर इनदोनोंकोपकड़लावो वेउनदोनोंकोजाकरपकड़तेहीअमीरके ऊपरचलाया अमीरनेबैठेहीलट्ठछीनकर दोनोंकोपृथ्वीपरदेमारा यहदेखकर फरखारा जलकरआगहोगयातुरन्तहीसातसौमनकीगदालेकरअमीरके ऊपरदौड़ा औरकहनेलगा कि विदितहोताहै कितुमदोनोंकीमृत्युयहां लाईहै तबतो यमराजको बकरीमारकर खाईहै यहकहकर अमीर के ऊपर गदामारी तबअमीरनेबैठेहुये गदा पकड़कर खींचली कितनाही उसने जोर किया परंतु न छोड़ा तबउसने गदाछोड़कर अमीरके कमरसे हाथलगाया तब अमीरने उठाकरपृथ्वीपर देमारा फिरवह उठनसकातब पूंछाकिऐ जवान तेराक्या नामहै अमीरनेकहाकि अब्दुल मुत्तलबकापुत्र हमजा लोग मुझे कहतेहैं सबलोगमुझसेडरतेहैं फरखारने कहाकिहमजा केसिवायऔरकिसीको ऐसीशक्तिनहींहै जोमेरीपीठलगा देवे तबअमीरने उसकोमुसल्मानकियाऔर अनेकप्रकारसे प्रसन्नकरकेअपनेसाथरहनेकी आज्ञा दी तबउसनेचाहा किअमरूकेमरनेकीखबरसुनाऊं परअमरूमङ्गर नेनेचोंकेद्वारानिषेधकिया अमीरवहांसे उठकरसबकोसाथलेकर आगेचले जबनगरमेंपहुंचेयारोंनेअमीरको देखकरशोर गुलमचाया तबअमीरनेपूछा किकुशलतोहै इसप्रकारसे दुःखी क्योंहो तबयारोंने कहाकि अमीरजादा जोपोनकी बहिनकेहाथसेमारागया तबअमीरने आज्ञाकीउसकोउसीके माताकेपासलेजावो औरउसस्त्रीकोभीसाथलेजावो उससेकहना कि किसीनेतुम्हारे पुत्रकोमाराहै अमरूने गुलचेहराको बांधके मलिकाकेहवाले कियाऔर कहा किइसीनेआपकेपुत्रको माराहैवहइसे सुनतेहीपुत्र२कह करमरगई तब अमीरकोदूनादुःखहुआ चालीसदिनतक पुत्रके मरनेकीग मीमानी औरअमरूकीलोथगुलचेहरासमेत काबिशहिसामेंसादानकेपा सभेजदीउसनेअपनी बहिनकोअपनेहाथसे माराइसप्रकारसेबदला लिया तत्पश्चात्अमीरनेकहाकिइसअशुभस्थानकोनाशकरकेउजाड़देनाउचित है कियहां मेरापुत्र मारागयाहै यह कहकर गदासे दरवाजोंकोटुकड़े२ करडाला और (किलेमेंधसकरसबको मारडाला हरमुज केवल चोरदर वाजेसेनिकल करचलागया औरसबउसकेसाथी अमीरके हाथसेमारेगये और बहुतसे मुसल्मान हुये तब कइमीरवासियोंको मारनेलगे तबवहांके स्वामीनेअमीरसेसहायताचाही अमीरनेउसकोमुसल्मानकरके छोड़दि-या औरआप कूचकरके काबिस हिसारको चलेआये ॥

मदायनमें पहुंचकर हरमुज़ और नौशेरवां का पतालगाना और अमीरहमजा का नौशेरवांके छुड़ा ने के लिये जाना ॥

लिखनेवालालिखताहैकि जिससमय हरमुज़ किलेकअमीरसे भागकर

किलेमैदानमेंगयातब उसकोविदितहुआ कि नौशेरवांकोशहादपकड़कर लेगयाहै और बांधकरदण्डदेरहाहैबुजुरुजमेहरसेनाकर छोड़ानेकी यत्न पूंछीतो उसने कहाकिबिना हमजाकेगयेवहनहींछूटसकेगासोतुमजाकर अपनीमातासे एकपत्र हमजाके पासभेजवादो वहजाकर छुड़ाले आवेगा तब उसनेजाकर अपनी मातासेएकपत्र इस समाचार का लिखवाके भेजा किबड़ेलड़ाकीबातहै कितुम्हारेहोतेबादशाहको दूसरादुःखदेवे शहाद पकड़करले गयाहै तुमखबर नहीं लेते अमीरने पत्रको पढ़कर कहा कि हरचंद नौशेरवांमेरेसाथ बदीकरताहै परंतुमैं उसकेसाथनेकीही करूंगा इसबार अवश्यछोड़ाऊंगा अमरूने मनाकियाऔमुक्तबिलको साथलेकर हबशकी तरफ चला और वहां पहुंचकर एक बाग़ में उतरकरघोड़े को चरनेके लिये छोड़कर नौशेरवांके निकालने की युक्ति करनेलगा रात्रिको मुक्तबिलसे कहाकि यारबनकर शाहानके सभामेंजाकरनौशेरवांकोछुड़ा लेआवो उसनेकहा किजैसीआपकीइच्छाहोवे तबअमीरखिजरकीकमंद लेकर शस्त्रधारणकरके कमंदके द्वारादीवर पर चढ़करशहादकेपासपहुंचे तो देखाकिशहादसोरहा औरउसके समीपनौशेरवांएक लोहेके पिंजड़े मेंबंदहै और बहुतसामेवा आदिशहादके पलंगके नीचे रक्खाहै अमीर मेवाशराबपीकर पहरेवालोंको मारकरनौशेरवांको पिंजड़ेसमेतउठाकर मुक्तबिलके समीप लेआया और अंतिसमयएकपत्रमें लिखाकि मैं आया और तेरे कैदीको छोड़ालेजाताहूं नौशेरवांको मुक्तबिलके पास रखकर उससेकहा कितुम इसकी रक्षाकरो मैंकोई घोड़ा ढूंढ़कर उनकेलिये ले आताहूं अमीरतोघोड़ा ढूंढ़ने गये उधरशहादजगातोदेखे कि नौशेरवां पिंजड़े समेत नहीं और रक्षक सबमरेपड़े हैंबड़ेसंदेहमें था कि उसपरचे पर दृष्टिपड़ी उसकोपढ़कर क्रोधकेमारे जलनेलगा और उसीसमयचार सहस्र सवारसाथ लेकरअमीरकीखोजमेंचलाफिरते २ बागमें जोगयातो देखाकि नौशेरवांकापिंजरा रक्खाहै पूछाकि हमजा कहांहै उसनेकहा कि मैं नहींजानता कि कहां गया परन्तु कहीं घोड़ेकी खोजमें गयाहै शहाद नौशेरवांको कैदसे छुड़ाकरअमीरकी खोजमें चला थोड़ीदूरजा करदेखाकिमुक्तबिल घोड़ालिये आताहैहमजानेजानकरउसकोपकड़कर बांधा तबउसनेकहाकिमेरानाम हमजानहींहै मैंमुक्तबिलहूं तबशहाद को निश्चय हुआकि अमीर बालूमें तृषाके मारे फँसकर कहीं मरगया होगा यह बिचारकरके नौशेरवांकोसाथ लेकर काबिसहिसारकोचला कि वहां चलकर अमीरके लड़कोंको मारकर मेहरनिगार को छीनलेवे और जोपीन और हरमुजको भी लिखाकि हमजामरगया नौशेरवांको हम साथ लेकर आतेहैं तुमभीआवो किमुसलमानी सेनाको मारकरमे-हर निगारको छीनलेवें येसुनतेही सेनाको लेकरदौड़धाये औरअमीर का वहीहालहुआ जिसतरहशहादके दिलमेंआयाथा अमरूने रात्रिको

स्वप्नमें देखाकि अमीर बालूके मैदानमें प्यासके मारे बेताबपड़ेहैं यहहाल सबसेकहकर वहांसे अमीरकी खोजमेंचले मार्गमेंजबआयेतोदेखाकि शद्दाद अपनी सेना लिये मलिकाकोलेनेके लियेजाताहै और सुनाकिअमीरबालूकेमैदानमें प्यासकेमारेमरगये तबतोऔरहीव्याकुलहुआअतिशीघहीजाकर पहुंचे सातदिनतक इधर उधर ढूंढ़ाकिये कहीं पता न मिला आठवेंदिन अमीरके हथियार मिले तबतो चित्त कुछ ठेकाने हुआ औरजोरसे हमजाका नामलेकर पुकारनेलगे तो हमजा सुनताथा परन्तु बोल न सक्तेथे आखिरकार अमीरके पास पहुंचादेखा बहुत रोया और अति शीघहीं एकगिलास मिष्टपानीका झोरेसेनिकालकरअमीरकोपिलाया तब नेच खुलगये और कुछहोश आया एकगिलास शरबत और पीकर हथियार लेकर होशमें आये देखाकि मुकबिल औरअशकरबंधेहैंअशकरने देखतेही बन्दतोड़ले अमीर अशकर पर सवार होकर और मुकबिलको साथलेकर नगरमें जानेकी इच्छाकीतबरक्षकोंनेजाकर शद्दादके पुचसे खबरकी वहसहस्रसवार लेकर अमीरकेसामने युद्ध करने को आया तब अमीरने कहाकि पापी एकबार तेरा पिताहारगयाहै अबतू क्योंदुष्टपना करताहै परंतु उसने न माना और तलवार लेकर अमीरके ऊपर दौड़ा अमीर ने छीनकर पृथ्वी पर दैमारा तबवह मुसल्मानहुआ और तीन दिनतक अमीरकी मेहमानीकरकेचौथे दिन बिदाकिया अबशद्दादका हाल सुनिये कि इधरसे यहपहुंचा और उधरसे जोपीनऔरहरमुनइसके लिखने परआकरनौशेरवांसे मिलकरउन्हींकेसाथसेनासमेतउतरे तब उसी दिन शद्दादने डंकायुद्धका बजवाकरउसघोड़ेपरजिसकेपैरमेंएक सौबीस मनकी नाल बंधतीथी सवार होकर शत्रुके सामने खड़ा होकर कहनेलगा कि ऐ अरब बासियोंमें अमीरको मारकरनौशेरवांकीआज्ञा से मेहरनिगारको लेनेके लिये आयाहूं मेरानाम शद्दादहै इससे उत्तम है कि तुमलोग छोड़कर अपने घरकीराहलेवोनहींतोआकरहमसेलड़ो तबलंधौर उसके सामने आया उसने एकगदा ऐसे जोरसे मारी कि लन्धौरडरकरभागनावेपरन्तुलन्धौरनेरोककरएकहाथ ऐसामाराकिउसका घोड़ा पृथ्वीमें दलदलके समान धसगया शद्दाद घोड़ेपरसेउतरकर पैदल होकर लड़नेलगा जब गदा से जीत न सकातबतलवारसेलन्धौरको घायल कर दिया परंतु लन्धौर घायलहोने परभी बराबरशामतकलड़ता रहा शामको शद्दाद डंकाबजवाकर चलागया और दूसरेदिनफिर फरहादपुच लन्धौरने आकर सामना किया वहभी घायलहुआ इसीतरहसे उसदिनकई पहलवान घायलहुये तबशद्दाद मारे खुशीके फूलगया फरखारने देखाकि शद्दादको बड़ाघमंडहोगया किसीको अपनेसामनेनहीं समझता अपने घोड़े को मैदानमें लड़नेके लियेनिकाला तबशद्दादने पूछा कि ऐमनुष्यतूकौनहै तेराक्यानामहै फरखार बोला किमेरानामफरखार

खार सरश्वांहै संसारमें मेराकोई सामना नहीं करसक्ता लाचार चला
शहाद ने गदासे मारा उसनेरोककरसातसौमनकीगदाइसजोरसेमारी
किदोनोंसेना चौंकउठीं और सब बड़ी प्रशंसाकरनेलगे और जो शहाद
खाली न देतातो हड्डियांभीन उसकी मिलतीं शामतक युद्धहुआकी परंतु
कोई जीतन सका तब दोनों सेना लौटगईंदूसरेदिनफिरउन्हींदोनोंका
सामनाहुआदोतीनदिनयुद्धहोनेपरएकदिनफरखारनेशहादका एकहाथ
काटलियाउसीदिनसेयुद्धकाहोनाबन्दहोगयासंयोगसेएकसिपाहीगही
मनामेंने एकदिन नौशेरवांसे कहा किजो आज्ञाहोतोमैंजाकरसबअरब
के सिपाहियों का शिरकाटलाऊं नौशेरवांने कहाकि इससेक्या उत्तमहै
उसीदिन अर्धरात्रि को वह सिपाही अरबियों की सेनामेंगया देखाकि
दो सिपाही क़बादके खेमेके पास टहलरहेहैंउनसेनेचछिपाकरएकतरफ
का परदा काट कर खेमेमेंजाकर कबादका शिरकाटकरनिकल करचल
दिया तब अमरूके सिपाहियोंने जो पहरा फिरतेथेपकड़ाउसके हाथ में
क़बाद का शिर देखकर सब चिल्लानेलगे सेनाके सरदारोंने जब उसखेमे
में जाकर देखातो क़बाद बेशिर का पलंगपरपड़ाहै सबदेखकरशिरपीट२
कर रोने लगे मेहरनिगार ने सुनकर ऐसा दुःखउठाया कि और किसी
मातानें पुत्रकेलिये न कियाहोगा प्रातःकाल गेंहूं के टुकड़े २ कियेगये
नौशेरवांने जबसुनाकि कबादमारागया तो उसकेभी बड़ादुःखहुआऔर
चालीसदिनतक दोनों सेनाओं में गमी पड़ीरही चालीस दिनके पश्चात्
दोनों सेनाआकर मैदानमेंखड़ीहुईंऔरउसदिनभीफरखारऔरशहाद
का सामनाथा कि उसीसमयमें बनकी तरफ़से गरद दिखाई पड़ी दूतोंने
जाकर देखा तो मालूम हुआ कि अमीर अमरूके साथबड़ेधूमधाम से
आतेहैं फरखारतोलड़ाईमेंसेबहुतसेसरदारोंकोसाथलेकरअमीरसेअग-
वानी मिलनेके लियेगया और शहाद अमीरका नामसुनतेही सेनामेंसे
भागगया अमीरने सबसे मिलमिलाकर पूछाकि शहादकहांहै आजक्यों
नहीं पुकारता फरखारनेकहाकि मैं तो मैदानमेंछोड़ आयाहूं तब अ-
मीरने चारों तरफ देखा परन्तुकहीं दिखाई न पड़ा तब अमीरनेजानाकि
वह भागगया अश्वपर सवार होकर थोड़ी दूरगयेजबपतानमिलातो
हिन्दी भाषामें उससेकहाकिबेटे जल्दशहादकेपासपहुंचावोअश्वपर जो
चढ़ातोथोड़ीहीदेरमेंपहुंचादिया उसनेदेखाकिहमलाआकरपहुंचगया
अब किसीतरह से प्राणनहीं बचसकेगा नेत्रोंमें अंधियारीछागईचाहता
थाकि भागकर निकलजावेकि इतनेमें अमीरने कमंद डालकर पकड़
लिया कि इतनेमें लन्धौरभी आपहुंचाअमीरनेकमन्दउसकेहाथमेंदेकर
कहाकि खुशरो इसकोखींच लन्धौरने कमन्दपकड़के खींचा तो शहाद
काप्राण निकलगया तब उसकेअपूर्व घोड़ेकोलन्धौरकोदियाउसनेकहा
कि यहघोड़ा आपही के योग्यहै इतनेही में अमरू भी आपहुंचा उसने

शहादका शिरकाटकर एकबलछे पर टांगदिया तत्पश्चात् अमीरअपने मित्रोंके साथबातें करते हुये धीरे २ इसविचार से अपनेस्थान की तरफ चले कि ऐसा न हो कि कोईआकर फिर युद्ध करनेको आरूढ़हो उधर जो जोपीनने देखा कि किला खालीहै चलकर मेहरनिगार को लेआवें इसविचारसे मुसलमानी सेनामें गया और बहुत से द्वारपालकों को मारता हुआ मलिका मेहरनिगारके समीप पहुंचा तब मेहरनिगार ने उसको देखकर एकतीरउसकेपेटमें ऐसामारा कि वहघायलहोकरगिर पड़ा तब जोपीनने जाना कि मुझसे यहराजोनहीं है तब उठकर उसके शरीरमें मारा कि वहबेहोश होकरपृथ्वीपरगिरपड़ी फिरवहचाहताथा कि दूसरी तलवार चलावे कि इतनेमें अमीर आपहुंचा तबजो जोपीन ने भागने की क़ाबू न पाई तब अमीरपर वार लगाई अमीर ने रोककर भागतेहुये एक तलवार ऐसीमारी कि जोपीन दो भाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा वहांसेअमीर जबमहलमेंआये तोदेखाकिमलिका बेहोशपड़ीहै उसको देखकर बेताबहोकर सेनामें जाकर अमरूको ख्वाजेबुजुरुगमेहर के बुलानेकेलिये भेजा इधर मेहरनिगारका प्राणनिकल गया तब अमीर एकआहमारकर बेहोशहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ा घाड़ीसतयपर जबहोश हुईतो बौरहे की तरह से कभी हसते और रोते थे अमरू ख्वाजेबुजुरुग-मेहरको लेकरआयातो मलिकाको मरीपाया और अमीरको दीवाना देखकरव्याकुलहोगयाऔरबुजुरुगमेहर से कहनेलगा कि ऐख्वाजेकिसी युक्तिसेअमीरको अच्छाकराख्वाजेने कहा कि आजकहूंसवेंदिनअमीर आपही अच्छे होजावेंगे तब अमीर तीनताबूत बनवाकर सब सखासमेत मक्केकीतरफचले समीप पहुंचकर एकपवित्रस्थानपर उतरकरवहीं तीनों कीकबर खोदवाकर ताबूतोंको रखकर उसरात्रिको वहींपर ठहरे रहे लिखनेवाललिखताहै कि इक्कीसदिनकेपश्चात्बाईसवींरात्रिकोअमीरने स्वप्नमें देखा कि हजरत खिज्र आयेहैं और एक गिलासशराब देकर कहने लगकि वो हमजा एक स्त्रीकेलिये तू क्योंऐसादुःख सहताहै तूहै तो बहुत ऐसी स्त्री मिलजावेंगी इतना देखकर नेचनोखुलगये तो घबराकर अमरूस पूछनेलगा कि सत्यबता अमरूमेरा क्याहालथा अमरूने सबहाल अमीरसे कहा तब अमीरने अपने स्वप्न देखने काहालसबसेकहासबसुनकर अतिप्रसन्न हुये और कहने लगे कि आपतो उनके पुत्रहैं सिवाय उनके और कौनआपको समुझासक्ता है जिना उनके समुझाये और किसीका कहनाभी आपनहीं मानते हैं परन्तु अमीरने न माना कहनेलगा कि कुछहो परन्तु मैं मेहरनिगारसे वादाकरचुकाहूं उसीकी कबर पर मरूंगा तुम सबलोग अपने २ घरकी राहलो ईश्वरकेलिये अब मुझेदुःख न दो अमरूने अनेक प्रकारसे समुझाया परन्तुकिसीका कहना न माना अमरूकेपुत्र सादानको गद्दीपर बैठाकर मिश्रकी तरफ रवाना किया

तब अमरूने कहा कि ऐ अमीर मुझको तो अपने पास रहने दे मुझेक्यों अपने पाससे जुदाकरताहै अमीरने कहा कि मेरेपास मुक़बिलकेसिवाय और किसीका कामनहींहै जब सब चलेगये तब अमरूने कहा ऐअमीर मुझको तो अपने पास रहने दे मुझे अपने पाससे पृथक् न कर अमीरने कहा कि मुक़बिल तो रहसक्ता है परन्तु औरकोई मेरेपास नहीं रहसक्तामुझेदूसरेमनुष्य की कुछ आवश्यकता नहींहै आखिरकारअमरूभी चलागया तत्पश्चात् अमीरने शिरमुड़ाकर साधुका वेष धारण किया और एक लंगोट बांधकर मेहरनिगारकी कब्रपर रहने लगे जब नींद आतीतो उसी कब्रपर सोरहते ॥

कारूनपुत्र फरहादपक्ष और कयात पुत्र गईम सिपाहीका अमीरके पास पहुंचना और अमीर और मुक़ाबिल को बांधकर लेजाना ॥

लेखकलोग मोतीरूपी कागजपर अपनी तेजलेखनीसे योंलिखतेहैंकि मलिकामेहरनिगारकी कब्रपर अमीरकेरहने की खबरदेशभरमें फैलगई तब हरएकशत्रु चारोंतरफ से अमीरके मारने की युक्तिमें हुये जिसमें से कारून पुत्र फरहाद जो अपने सामने दूसरेको बलवान न समझता था मनुष्यतो क्या देवोंसे भी नहीं डरताथा बहुतसी सेना साथ लेकर अमीरकेमारने केलिये स्थानसेनिकलकरचला तो मार्गमें कयातपुत्रगईम से जिसने कबादको माराथा मुलाक़ातहुई तो उससे पूछा कितू कहां जाताहै क्योंदुःख उठाताहै उसने कहाकि मेरेपिताको हमजाके सरदारोंने मारडाला था सो आजकलसुनाहै कि हमजामेहरनिगारकी क़ब्र परहै सो उसीकेमारने को लियेजातेहैं तब कारून ने कहा कि मैं भी वहीं जाताहूं इससे उत्तम होगा कि हमतुम साथहीचलें उसने स्वीकारकिया तब दानोंसेना साथहोकर कईदिनोंके बादमक्के के समीप जाकर पहुंचकर एक स्थानपर उतरो तब कयातने कारूनसे कहा कि तुमयहींरहो मैं जाकर अमीरको पकड़ने की युक्तिकरूं जो तुमको इसी भीड़भाड़से देखेगा तो वह भी खबरदार होजायगा तब कारून वहीं रहगया कयात साधुबनकर अमीरके पासगया अमीरको सलाम करके बैठगया अमीरने पूछा कि तू कौनहै उसने कहा कि साधूहूं अबआप हीकेसमीप रहकर दिनकाटूंगा अमीरने कहाकि मेरी सेवाकेलिये तो मुक़बिलहै उसने कहाकि अबतो मैं कहीं जाता नहीं तब अमीरचुपहो रहे घाड़ीदरमें जब मुक़बिल भोजन लेआया तब अमीर ने उसको भी साथ बैठाकर भोजन करवाया जब अमीरने जलमांगा तो कयात ने उठकर दारूबेहोशी मिलाकर अमीरऔर मुक़बिलको पिलाकरदोनों को अपनी चालाकी से बेहोश करदिया और आप पेशाबके बहानेसे वहांसे उठकर चलाआया और कारूनसे कहाकि मैं दोनोंको बेहोश करआयाहूं अति शीघ्रही सवार होकर मेरेसाथ चलिये तबकारूनने

कयात के साथ होकर मेहर निगार की कबपर जाकर अमीरकेमारने के लिये तलवार निकाली तो मुक़ाबिल देखकर कारूनकेमारनेकोदौड़ा परन्तु नशाके कारण पृथ्वीपर गिरपड़ा अमीर का भी यही हालहुआ आखिरको दोनोंको बांधकर क़ारूनने अपनी सेनामें लाकर दोनोंको चैतन्य करकेकैदमें करके पूछा कि ऐ अरबवासियो तुम्हाराइतनाबड़ा मकदूर कि मेरे बापको तूने मारडाला और नौशेरवां का दामाद बन कर आपही बादशाह बनकर राज्यकरताहै अब बता क्योंकर तेरा प्राण बचेगा अमीरने कहाकि सत्यहै जोमुझसेलड़ा और हारकर मुसल्मान होनेसे इनकार कियाहै उसको मैंने माराहै परन्तु मेरा मरना ईश्वर के हाथहै तूतो मेराकुछनहींकरसक्ता विदितहोताहै कि तूबड़ा अज्ञान है इसपर क़ारून अति क्रोधित होकर अमीर को कोड़े मारनेलगा अमीर ने कहा कि इतने कोड़े तूमुझको मारताहै तुझे कोई मारैतो क्याहो उसने कहा कि मुझको कौन मारसक्ताहै यह कहकर अमीर को मंगाकरके कोड़ों से मारने लगा और ऊंट की खालखिचवा कर निमक छिड़कवाकर एक बड़े ऊंचे खंभमें लटकादिया इसीप्रकार से सदैव सायंकालको उसी खंभमें लटका देता और सबेरे उतारकर कोड़े मारता इसप्रकार से अपने पुरुषोंका बदला लेता रहा तत्पश्चात् नौशेरवां को इसहालकी खबरदी उसने सुनकर अपने हमराहियोंसे पूछा कि अमीर को मरवाडालें याछोड़ादेवें उन्होंने कहा कि अबतो मेहर निगारभी नहींहै कि उसको मोहब्बतहै अब मारही डालना उचित है आखिर कार नौशेरवांने अपने सरदारोंकीबातेंस्वीकारकी औरवहां जाकर अपने सामने अमीरको दण्डदिलानेलगासंयोगसेयहखबरअमरू को पहुंची तब अमरू सबको इकट्ठा बटोरकर नौशेरवांपर चढ़ाईकरके गयाकि जाकर नौशेरवांको विजयकरके अमीरको छोड़ा लेआवें परन्तु वहां बहुत दिनोंतक रहेकोई ऐसी युक्ति न लगी किजिसमें अमीर को छोड़ाते पीछेको किलेके अन्दर जाकर कपड़ेकी दूकान रखकर दूकान-दारी करने लगा अमीर का हाल सुनिये कि उसीप्रकार से सदैव दण्ड पाताथा कि एकदिन क़ारूनकी बहिन फ़राज़वानों ने स्वप्नमें देखाकि हजरत खिज़रने आकर उसको मुसल्मान किया और कहाकितू अति शीघही जाकर अमीर को इसदुःखसे छोड़ाकर अपने पास लाकरउसके साथ भोगकरो तुम्हारे उससे पुत्र पैदाहोगा वह यहसुनतेही अमीरकी पास दौड़आई और बहुतसा माल असबाब रक्षकोंको देकरअमीरको छोड़ालेजाकर अपने स्थान में रखकर भोगविलास करनेलगीअमीरके लोपहोजाने की खबर कारून को पहुंची उसने अपने बज़ीर से पूछा कि रमल से विचारो कि हमज़ा कहां गयाहै उसने विचार कर बता-लाथा कि आपकी बहिनके पासहै तब उसने एकमनुष्य उसके पास

भेजाकि जाकर देखआवो कि हमजा वहांहै या नहीं उसने जब फरा-
जवानोंके स्थानपर जाकर पूछातो वह जलकर आगहोगई और कहने
लगी कि वजीर ऐसा प्रबल होगया कि मुझको झूठमूठ चोरी लगाताहै
कारून ने जब सुनाकि यह झूठही कहताहै उसीसमय वजीरको मार
डाला और अमीरकी खोजमेंलोगोंको इधर उधर भेजा तब अमीरने
फरहाद से कहकर एकसहेलीको अमरूकी सूरतका सबप्रकारबनवाकर
भेजाकि तुमजाकर इसरूपका मनुष्यदेखो तो लेआओ वह जबबाजार
मेंगई तो अमरूको कपड़ा बेचते देखा उससे जाकर कहाकि हमारी
बेगम साहब ने कुछकपड़ा मांगाहै सोलेचलो अमरूसुनतेही कपड़ोंका
गट्ठर बांधकर शिरपर रखकर उसके साथहोकरगया औरकपड़ाखोल २
कर दिखलानेलगा अमीरअमरूकाशब्दसुनकरबाहरनिकलआया अमरू
दौड़कर अमीरके पैरोंपर गिरा अमीरने उठाकर छातीसे लगाकर सब
हालपूछा उसने कहाकि सेनासबतैयारहै आपहीका आसरा देखरहीहै
तब अमीरने कहाकि यहांसेनिकलनेकीभी कोईयुक्तिहैअमरूने कहा कि
हमारी दूकानपर चलकर बैठिये वहांसे किसी प्रकारसे निकल चलेंगेअ-
मीरने कहानहीं वहांक्या करेंगे किसीलोहारकीदूकानपरचलोकि वहां
कोई शस्त्रभी मिलेगा तब दोनों एकलोहारकी दूकानपरगये अमीर बैठ
कर भट्टी जलारहेथे कि इतनेमें बख्तक और कारून ने आकर कहा
कि अबबतला हमजाक्योंकर बचकर जायगा यहकहकर कारूनने अमीर
केऊपर तलवारचलाई अमीरने उसीहथौड़ेसे मारकर तलवार छीन
कर कारूनको पकड़करअमरूको सौंपकरएकशब्द ऐसाकियाकि जिससे
नगरवासी व्याकुल होगये और अमीरकी सेना सुनकरदौड़कर क़िलेमें
दाखिलहुई उधर बख़्तकने जब नौशेरवां से अमीर के छूटनेका हाल
कहातो वहचोर दरवाजेसे भाग खड़ा हुआ सेनाने पहुंचकर लूटना मा
रना शुरुअकिया और उसदिन मुसलमानीसेनाके हाथइतना माल अस
बाबलगा कि किसीको रखने की जगह नहीं मिली और बख़्तों को जो
मुसलमानहुये उनको नहीं मारा तत्पश्चात् गद्दी पर बैठकर अमीर ने
कारूनको बुलाकरपूछा किबताअबतेरी कौनसीगति कीजावे तबवहरोने
लगा आखिर को अमीरने कहा कि हमतेरा सब अपराध क्षमाकरतेहैं
तू मुसलमान होकर हमारे पास रह उसने उत्तर दिया कियहतोमुझसे
नहीं होगा इतनासुनतेही अमीरने आज्ञाकरबकोसौंपदियाउसनेकुत्ते
की मौत मारकर जलादिया और शिरको क़िलेके दरवाजेपर लटका
दिया सबमनोरथ ईश्वरने पूर्णकिया अब अमरूका वृत्तान्तसुनिये किवहां
सेभागा मदायन को चलाजाता था कि राह में दोपहलवान जिनका
नाम शिरबरहना तपश्वी और दीवान तपश्वी था जो नौशेरवांही की
सहायताके लिये आतेथे मुलाकातहुई तो उनसे अति प्रतिष्ठा के साथ

सन्मुख होकर सब वृत्तान्त कहा उन दोनोंने हाथजोड़कर कहा कि हमलोग तो क्या जो सातों देशोंके शत्रुआवें तो हम सबको मारडालेंगे बादशाह इसपर अति प्रसन्नहुये और बड़ीभारी खिलअत देकर अपने साथ शराबपिला कर उत्तम २ पदार्थ मँगवाकर अपने साथही भोजन करवानेलगी अमीरका हालसुनिये कि फरजानबानों के साथ एक अच्छी सायतमें बिवाह कर के चालीस दिनतक भोग बिलासमें पड़ेरहे इकतालीसवें दिन सभामें बैठकर पूछाकि नौशेरवां का भी कुछ हाल किसीको मालूमहै अमरूने कहाकि दोशाहजादे तपशदेशकेबासी बड़ी सेनालेकर मार्गमें नौशेरवां से आकरमिलेहैं आपका आसरा देखतेहैं अमीरने यह सुनकर उसीसमय आदीअकरब को आज्ञादी कि याचा उसदिशाकी करो और सेनाको आज्ञादी कि युद्धकरने पर आरूढ़होवे आदीने उसीसमय आकरअमीरकी आज्ञानुसार प्रबन्धकिया दूसरेदिन अमीर वहांसे चलकर तीसरेदिन जाकर उससेनासे थोड़ीदूर उतरपड़े और डंका बजवाकर चौदह पलटनें मैदानमें बराबर से खड़ी कीं तब तप शवासियोंने भी अपनी पलटन जमाई और प्रथम सिरवरह नातपशी ने घोड़ेको मैदानमें कुदाया उसकेपीछे लन्धौरभी आकर मैदानमेंखड़ा हुआ तब उसने कहाकि वोनपुंसक नाम बतलावेगा या बेनाम मारा जायगा लन्धौर ने कहा कि ऐ पापी जन्तु मेरानाम लन्धौर पुच सादान है संसारमें मेरी प्रबलता प्रसिद्धहै लावारचला यह सुनकर उसने गदा चलाई लन्धौर ने उसको रोककर सातसौ मनकी गदाऐसे जोरसेमारी कि जो पहाड़पर लगती तो टूटजाता परन्तु उसका एकबाल भी नटेढ़ा हुआ इसी तरहसे शामतक दोनों लड़ाकिये सायंकालको डंका पलटनेका बजवा दोनोंसेना अपने स्थानपर गईं अमीरने लन्धौरसे पूछाकि तुमने इस पहलवानको कैसापाया उसने कहाकियहांतो क्यापरदेशाफ में देवोंकोभी मैंने ऐसा नहींदेखा अमीरने हँसकर कहाकि इसकाबदन फौलादकाहै इसपरहथियार नहीं लगेगा दूसरेदिन सिरवरहना और आदी अकरबका सामनाहुआ तो जब आदीगदा मारता तोवहशिरपर रोकलेता यहांतक कि आदी मारते२ थकगया परन्तु उसके एक घावभी न लगा इतनेमें बनकी तरफसे गरददेखाई पड़ी दूतोंने जाकर जब देखा तो विदितहुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये अलजोस बरबरी चालीससहस्र सवारसमेत आयाहै नौशेरवांने कई बादशाहोंको उसकी अगवानीके लिये भेजा जिससमय वहआया तो देखाकि नौगजकाडील है देखने से डरमालूम होताहै नौशेरवां देखकर अतिप्रसन्न हुआ और अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुखहोकर अमीर और अमरूका हाल उसको सुनाकर डंका पलटनेका बजवाकर उसको अपने खेमेमें लाकर अपूर्व प्रकारकी शराबपिलाकर भोजन करवाया और नाचरंगकी सभाकरवा

भेजाकि जाकर देखआवो कि हमजा वहांहै या नहीं उसने जब फरा-
जवानोंके स्थानपर जाकर पूछातो वह जलकर आगहोगई और कहने
लगी कि वजीर ऐसा प्रबल होगया कि मुझको झूठमूठ चोरी लगाताहै
कारून ने जब सुनाकि यह झूठही कहताहै उसीसमय वजीरको मार
डाला और अमीरकी खोजमेंलोगोंको इधर उधर भेजा तब अमीरने
फरहाद से कहकर एकसहेलीको अमरूकी सूरतका सबपतावतलाकर
भेजाकि तुमजाकर इसरूपका मनुष्यदेखो तो लेआओ वह जबबाजार
मेंगई तो अमरूको कपड़ा बेचते देखा उससे जाकर कहाकि हमारी
बेगम साहब ने कुछकपड़ा मांगाहै सोलेचलो अमरूसुनतेही कपड़ोंका
गट्ठर बांधकर शिरपर रखकर उसके साथहोकरगया औरकपड़ाखोल २
कर दिखलानेलगा अमीरअमरूकाशब्दसुनकरबाहरनिकलआया अमरू
दौड़कर अमीरके पैरोंपर गिरा अमीरने उठाकर छातीसे लगाकर सब
हालपूछा उसने कहाकि सेनासबतैयारहै आपहीका आसरा देखरहीहै
तब अमीरने कहाकि यहांसेनिकलनेकीभी कोईयुक्तिहैअमरूने कहा कि
हमारी दूकानपर चलकर बैठिये वहांसे किसी प्रकारसे निकल चलेंगेअ-
मीरने कहामहीं वहांक्या करेंगे किसीलोहारकीदूकानपरचलोकि वहां
कोई शस्त्रभी मिलेगा तब दोनों एकलोहारकी दूकानपरगये अमीर बैठ
कर भट्टी जलारहेथे कि इतनेमें बख्तक और कारून ने आकर कहा
कि अबबतला हमजाकोंकर बचकर जायगा यहकहकर कारूनने अमीर
केऊपर तलवारचलाई अमीरने उसीहथौड़ेसे मारकर तलवार छीन
कर कारूनको पकड़करअमरूको सौंपकरएकशब्द ऐसाकियाकि जिससे
नगरबासी ब्याकुल होगये और अमीरकी सेना सुनकरदौड़कर क़िलेमें
दाखिलहुई उधर बख़्तकने जब नौशेरवां से अमीर के छूटनेका हाल
कहातो वहचोर दरवाजेसे भाग खड़ा हुआ सेनाने पहुंचकर लूटना मा
रना शुरूकियाऔर उसदिन मुसल्मानीसेनाके हाथइतना माल अस
बाबलगा कि किसीको रखनेकी जगह नहीं मिली और बख़्तों को जो
मुसल्मानहुये उनको नहीं मारा तत्पश्चात् गद्दी पर बैठकर अमीर ने
कारूनको बुलाकरपूछा किबताअबतेरी कौनसीगति कीजावे तबवहरोने
लगा आखिर को अमीरने कहा कि हमतेरा सब अपराध क्षमाकरतेहैं
तू मुसल्मान होकर हमारे पास रह उसने उत्तर दिया कियहतोमुझसे
नहीं होगा इतनासुनतेही अमीरने आदीअकरबकोसौंपदियाउसनेकुत्ते
की मौत मारकर जलादिया और शिरको क़िलेके दरवाजेपर लटका
दिया सबमनोरथ ईश्वरने पूर्णकिया अब अमरूका वृत्तान्तसुनिये किवहां
सेभागा मदायन को चलाजाता था कि राह मं दोपहलवान जिनका
नाम शिरबरहना तपस्वी और दीवान तपस्वी था जो नौशेरवांही की
सहायताके लिये आतेथे मुलाकातहुई तो उनसे अति प्रतिष्ठा के साथ

सन्मुख होकर सब वृत्तान्त कहा उन दोनोंने हाथजोड़कर कहा कि हमलोग तो क्या जो सातों देशोंके शत्रुआवें तो हम सबको मारडालेंगे बादशाह इसपर अति प्रसन्नहुये और बड़ीभारी खिलअत देकर अपने साथ शराबपिला कर उत्तम २ पदार्थ मँगवाकर अपने साथही भोजन करवानेलगी अमीरका हालसुनिये कि फरजानबानों के साथ एक अच्छी सायतमें बिवाह करके चालीस दिनतक भोग बिलासमें पड़ेरहे इकतालीसवें दिन सभामें बैठकर पूछाकि नौशेरवां का भी कुछ हाल किसीको मालूमहै अमरूने कहाकि दोशाहजादे तपशदेशकेबासी बड़ी सेनालेकर मार्गमें नौशेरवां से आकरमिलेहैं आपका आसरा देखतेहैं अमीरने यह सुनकर उसीसमय आदीअकरब को आज्ञादी कि याचा उसदिशाकी करो और सेनाको आज्ञादी कि युद्धकरने पर आरूढ़होवे आदीने उसीसमय आकरअमीरकी आज्ञानुसार प्रबन्धकिया दूसरेदिन अमीर वहांसे चलकर तीसरेदिन जाकर उससेनासे थोड़ीदूर उतरपड़े और डंका बजवाकर चौदह पलटनें मैदानमें बराबर से खड़ी कीं तब तप शवासियोंने भी अपनी पलटन जमाई और प्रथम सिरबरह नातपशी ने घोड़ेको मैदानमें कुदाया उसकेपीछे लन्धौरभी आकर मैदानमेंखड़ा हुआ तब उसने कहाकि वोनपुंसक नाम बतलावेगा या बेनाम मारा जायगा लन्धौर ने कहा कि ऐ पापी जन्तु मेरानाम लन्धौर पुत्र साहान है संसारमें मेरी प्रबलता प्रसिद्धहै लावारचला यह सुनकर उसने गदा चलाई लन्धौर ने उसको रोककर सातसौ मनकी गदाऐसे जोरसेमारी कि जो पहाड़पर लगती तो टूटजाता परन्तु उसका एकबाल भी बाँका हुआ इसी तरहसे शामतक दोनों लड़ाकिये सायंकालको डंका पल-टनेका बजवा दोनोंसेना अपने स्थानपर गईं अमीरने लन्धौरसे पूछाकि तुमने इस पहलवानको कैसापाया उसने कहाकिवहांतो जाकरदेखाफ में देवोंकोभी मैंने ऐसा नहीदेखा अमीरने हँसकर कहाकि इसकाबदन फौलादकाहै इसपरहथियार नहीं लगेगा दूसरेदिन सिरबरहना और आदी अकरबका सामनाहुआ तो जब आदीगदा मारता तोवहशिरपर रोकलेता यहांतक कि आदी मारते२ थकगया परन्तु उसके एक घावभी न लगा इतनेमें बनकी तरफसे गरदेखाई पड़ी दूतोंने जाकर जब देखा तो विदितहुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये अलजोम बरबरीयार चालीससहस्र सवारसमेत आयाहै नौशेरवांने कई बादशाहोंको [illegible] अगवानीके लिये भेजा जिससमय वहआयाको देखाकि नौशेरवां [illegible] है देखने से डरमालुम होताहै नौशेरवां देखकर [illegible] अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुखहोकर [illegible] सुनाकर डंका पलटनेका बजवाकर [illegible] प्रकारकी शराबपिलाकर भोजन करवाया [illegible]

के दूसरेदिनसिरबरहे नातपशीनेमैदानमें आकर ललकारा किवोहमजा तू क्यों प्राणबचाताहै आकर सामनाकर पहलवानोंको भेजकर दिनक्यों काटताहै यहबातें होहीरहीथीं कि बनकीतरफसे गरददिखाईपड़ीऔर गरदमिटनेके बादचालीस निशाननेरंजी पोशदिखाईपड़े अमरूनेदेखकर अमीरसे कहाकि यहवहीनक़ाबदारहै जिसनेमेरी कईबार सहायताकी थी जबआप परदेक़ाफ़को गयेथे इतनेमें नक़ाबदार ने आकर एक ओर अपनी सेनाका परेटजमाया और शचुसे पुकारकहा कि तुममेंसे जिसका जी चाहे वहपहिले मुझसेलड़े तब मुसल्मानी सेनासे लड़नेकी इच्छाकरे तब अमीरनेकहा कि तुमजाकर नक़ाबदारसे कहोकि वह हमको ललकार चुकाहै हमको जानेदेवे आपखड़े होकर तमाशादेखें और जाते समय हमसे बेमिले न जाना अमरूने जाकर कहा तो उसने स्वीकार किया अमीर अशकर देवज़ादे पर सवारहोकर आये और सिरबरहनों से कहाकि तुमसे युद्धकरना वृथाहै तुम हमारी कमर पकड़कर उठाओ हम तुम्हारी जो उठालेवें वह दूसरेको आधीनकरके रक्खें उसने कहा कि बहुत अच्छा अमीर घोड़ेपरसे उतरपड़े वह भी उतरा और अमीर का कमरबन्द उठाते २ उसकेपैर पृथ्वीमें धंसगये परन्तु अमीर न हिले लाचार होकर छोड़दिया तब अमरूने सेनासेपुकार कर कहा कि यारो खबरदार होजाओ अमीर अभीऐसा शब्दकरेंगे कि हजारहींशचु मरजावेंगे अमरूकी इसबातको सुनकर सब बड़े सन्देहमें हुये कि यह क्या बकताहै हमजाशब्द चाहेकरें कहीं पहलवानके शब्दसे लोगमरते हैं इतनेमें अमीरने ऐसा शब्दकिया कि शचु की सेनामें बहुतोंके कानके परदेफटगये आखिरकार अमीरने उसको उठाकर मुंहके बांधकरअमरू कोहवालेकिया उसका दूसराभाई यह हाल देखकर तलवार खींचकर दौड़ा अमीरने यहोगति उसीकी भी की तब नौशेरवानें दुःखित होकर डंका बजवाकर अपने स्थानको राहली तब अमीरभी सेनासमेत अपने खेमेमें आकरबैठे और नक़ाबदारनें भी अपनी सेनाको अमीरकी सेना के समीप बासकरनेकी आज्ञादी और आपसीधा अमीरके खेमेमेंजाकर दाखिलहुआ तो अमीर अति प्रतिष्ठाके साथसम्मुख होकर बहुतसीबस्तु परदेक़ाफ़ की दिखलाकर अमरूकी सहायताका धन्यवाद देनेलगे तब उसने कहाकि अब अधिक लज्जित न कीजिये कि इतनेदिनआपकोपरदे क़ाफ़से आयेहुयेहुआ औरमैंनेआसका और आपनेबड़े २दुःखसहे अमीर ने उसकी बातचीतसे अपने चित्तमें बिचारा कि यह स्त्रीहै हाथ पकड़कर दूसरे खेमेमें लेजाकर कहाकि अबकामने बहुत दुःखदिया यह कहकर नक़ाब मुखपरसे उतारलिया तो देखतेही बेहोशहोकर गिरपड़ा अमरू की आंखोंमें भी चकचौंधी आगई परन्तु उसने समझकर अमीरकेमुख पर गुलाब आदिक छिड़ककर नक़ाबदारसे कहाकि अपराध क्षमाकरकें

अमीरसे मुख मिलाइये कि आपकी सुगन्धसे अमीरको होश होजावे नारंगीपोश जो बहुतदिनों से विरहमें मरतीथी उसी समय अमीर के मुखसे मुखमिलाया उनके चित्तको आनन्ददिया अमीरने नेत्रखोलदिया तब अमरूने लाकरदोदोगिलास अतिउत्तम शराबपिलाकर चैतन्यकिया अमीरने नारंगी पोशको बगलमे बैठाकर सब हालपूछा उसने कहाकि मेरा नारंगपरी नामहै बहुत दिनोंसे परदेक़ाफ़ को छोड़कर आपके विरहमें इधर उधर घूमतीथी जिसदिन आप शुस्तहमसे लड़तेथे मेरातख्त वायुपर उड़ताजाता था आपके सूर्यरूपी मुखको देखकर मैंबेहोश होगई थीतोमेरी वजीरजादीने मुझको उत्तम स्थानपरलेजाकर चैतन्यकियाथा तबमैंफिर उसीस्थानपर आपके देखने केलिये आईथी और बहुतसे लोग मेरेसाथथे अपने सेवकोंको आपके ढूंढ़ने केलिये भेजाथा तो मालूमहुआ किआप अब्दुलरहमानके साथपरदेक़ाफ़ कोचलेगये क्याकहूं किजोदुःख दिनोंमें मैंने दुःख सहेहैं परन्तु लाचरहोकर रात्रिदिन आपके आने के लिये ईश्वरसे मनातीथी और जिससमयसे मुझको विदितहुआ कि आप अपनीस्त्रीको अमरूको सौंपगयेहैं और नौशेरवां उसके लेजाने कीघातमें हैउसीसमय से मैंने परीजादोंकी डांकबैठाईथी कि जब कोई शत्रु आकर अमरूपर चढ़ाई करै तोहमको खबरकरो इसीप्रकारसे जब कोईआता थातोमैं चढ़दौड़तीथी और आपकी कृपासे विजय पातीरहीं यहबातेंसुनकर अमीरने उसकामुख चूमलिया और उसी समय विवाह करकेसब रात्रिदोनोंने भोगविलास करके एकनेदूसरेको आनन्ददिया प्रातःकाल होते अमीरने उठकर स्नानकिया और पोशाक पहिनकर सभामें बैठकर दानोंतपस्वियोंसेबुलवाकरपूछा किहमनेकिसतरहसे तुमलोगोंकोपकड़ा उन्होंने कहाकि जिसप्रकारसे पहलवान लोगोंका धर्महै अब आपहमारे स्वामीहुये और हम आपके सेवक तब अमीरने दोनोंको कलमा पढ़ाकर मुसल्मानकरके बड़ीभारी खिलअत देकर अपने समीप बड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर अति प्रसन्नकिया और अनेक प्रकारसे उनको समझाकर आप महलमें जाकर मलिका नारंगपरी के साथ भोगबिलास करनेलगे तत्पश्चात्एकदिन फिरशत्रुकी सेनामेंडंकाबजा अमीरने शब्दसुनकर अपनी सेनामें भीडंका बजने की आज्ञादी डंकेकाशब्दसुनतेहीसबसेनाहथियार बांधकर अमीरकेपास आकरखड़ीहुई तब अमीरने मैदानमें जाकरशत्रुके सामने चौदह पलटनोंका परेटबराबरसे जमाया अलजोस शत्रुकीतरफ से खड़ाहुआ और अमीरकी तरफसे सरकोबगया तो सामना होतेही अलजोस घोड़ेपरसे कूदपड़ा और ऐसी दोलत्ती सरकोबके शिरपरमारी कियहबेताब होकरगिरपड़ा और अलजोसफिर घोड़ेकी पीठपरहोरहा फिरजबसरकोब उठातो फिर यहीगतिकिया लोगदेखकर हँसने लगेऔर सरकोबबड़े आश्चर्यमें हुआ कि कौनसीयुक्ति इसकेसाथकरैंकिइतने मेंबन

कीतरफसे एकसेना दिखाईपड़ी दूतोंने जाकर देखातो विदितहुआ कि नौशेरवांकी सहायताकेलिये चारभाई धूमधामसे सम्मादी सिनादीवक बादआदी और मियादजरादी अलबुर्ज से आतेहैं नौशेरवांने कईसरदारोंको उनकी अगवानी केलिये भेजकर बुलवाकर अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुखहोकर उनको बैठाकर सब कुशलक्षेम पूछरहेथे कि एकबारगी मुसल्मानी सेनामें चिल्लाहटमची कि एकगारखरबनसे आकर बहुतोंको घायलकियाअमीरउसकी तरफदौड़े आगे २ वहऔरपीछे २ अमीरअशकर देवज़ादेपर सवार ग्रामतक पीछाकिये जाकर दूसरे देशमें पहुंचे तो वहलोप होगया अमीर लाचारहोकर एक शिकार करके क़बाब बनवाकर खाकर उस रात्रिको वहीं एकवृक्षके नीचे सोरहे प्रातःकाल होते फिरवह गोरखर दिखाईपड़ा अमीरने उठकर उसकापीछाकिया वह भागते २ एकबाग़में पहुंचा अमीरभी उसके पीछे २ बागमेंगये और सर्वत्र बढ़कर भूखकेमारे बेताब होकर बैठकर इधर उधर देखनेलगे तो एक तरफ बकरियां दिखाई पड़ीं तो अमीर उसमें से एक बकरी को मार भूनकर खारहे थे कि इतनेमें कन्दर जिसकी बकरियांथीं सातसौ मनकी गदा लेकर अमीरके शिरपर गिरा अमीरने उसको उठाकर तालाब में फेंकदिया तबतो वह बड़े सन्देह में हुआ कि यह कौन है जिसने मुझे उठाकर फेंकदिया तालाबसे निकलकर अमीरके सामने आकर पूछनेलगा कियाआपकौनहैं अमीरने कहा कि हमसादान अमीरहमज़ाके भाईहैं वहहमज़ाकानामसुनतेही अमीरके पैरोंपरगिर पड़ाऔरकहनेलगाकि अबमैंआपहीकेसाथ रहूंगा आखिरकारअमीरने उसको मुसल्मान करकेअपनेसाथ रहनेकी आज्ञादी तबउसनेकई दिनोंतक अमीरकी मेहमानीकीतत्पश्चात् अमीरने उससे पूछाकि यह कौनदेशहै उसनेकहाकि करनेसाकायहदेशहैऔर इसकीएकबेटीऐसी खूबरूपवान्है किसीके साथ वह विवाहनहींकरतीअमीरनेकहाकिअच्छा हमको उसनगरमेंलेचलो उसनेकहा बहुतअच्छाचलिये मैं लेचलूंगाआखिरकार अमीरवहांसे उठकरचले जबथोड़ीदूरगयेतो उसनेकहाकि हे अमीर अबतो कुछ खापी लीजिये तब चलिये अमीर उसीजगह उतरपड़े और दो बकरियोंको भूनकर खाकर चले थोड़ीही दूरगयेथे कि उसने कहा कि क्षुधाकेमारे चलानहींजाता तबतो अमीर हैरानहुये कि इस को यहां क्या खिलावें जाते २ एक सौदागर उतराथा उसीके समीप जाकर उतरेतोअमीरनेजाकर उस सौदागरसे कहाकि थोड़ासाभोजन दीजियेउससौदागरने कहा कि आकरखाइये सब आपहीकाहै अमीर लेजाकर उसको बैठाकरखूबखिलवाया तब अमीरने सौदागरसे पूछाकि आपकहांसे आतेहैं औरकहांजाइयेगा कारवांनेकहा कि हमलोगोंको इच्छातो खमनजानेकीथी परन्तुसुनाहैकि फोशादवज़ीरक़ैसरकाडक़ैती

करताहै इससेवहां जाते डरतेहैं अमीरने कहा कि जब हमलोग तुम्हारे साथहैं तो तुमकोकुछ डरनहींहै उन्होंने पूछाकि आपकौनहैं अमीरने कहाकि अमीरहमजाके भाईहैं गोरखर हमको उठा लेआयाहै तबतो सौदागरअति प्रसन्नहुआ कि तुम अब्दुलमुत्तलबके बेटेहो वह मेरा मित्रहैतोतुममेरेभीपुत्रहो आखिरकार वे सौदागरअमीरकेसाथहोकर चले मार्गमें फौलादडांकूसे मुलाकात हुई अमीरने उसको मारडाला और वहांसेसीधेआकर खरमनाकी सरायमें उतरे तोचलतीसमयसौदागरोंने अमीरसे कहा था कि आपहमको वहां पहुंचा दीजिये तो पांचवां हिस्सा अपने मालकाआपकोदेंगे सोपहुंचने परलाकरअमीरके आगेरखदिया परंतु अमीरने न लियाऔरउसीसरायमेंरहकरदानपुण्य करने लगा यहांतकि बहुतसेफकीर धनवानहोगये यहखबरउसस्त्रीको पहुंची तो उसने अपनी एकसहेलीको भेजा किजाकरदेखआवो किवह मनुष्य कैसाहै उसने देखकर जाकर कहा कि यहतो वही मनुष्यमालूम होताहै जिसकी तसवीर आपके पासहै वहीदानपुण्य कररहाहै यह सुनकर वह मारेखुशीके फूलगई और पण्डितोंने पहिलेही बिचार कर कहाथा कि हमजा आपही इसनगरमें आकर तेरेसाथ बिवाह करेगा संयोगसे नसाईनामे पुत्रशहफरंगका बहुतसी सेना के साथ आकर नगर लूटने लगा अमीरने शोरगुलसुनकर लोगोंसे पूछा कि यह क्यों चढ़कर आयाहै लोगोंने कहाकिबादशाहकीएकबेटीहै उसीकेलियेआयाहै यह सुनकर अमीरने अशकरको पीठपर जीनरक्खी और कन्दनकोसाथले करफाटकपर पहुंचकर कोतवालसे कहा कि फाटकखोलदो कि हम बाहरजावेंउसने न माना आखिरको उसकोमारकर फाटक तोड़डाला अमीरकन्दनपरनाराजहुये कि इस बिचारेको क्योंमारा वहखबरबादशाहको पहुंची उसने आकर अमीरसे कहा कि तू क्योंऐसी मेहनत उठाताहै अमीरने कहा कुछमेहनत नहीं आपजाकर तमाशा देखिये उसने कहाकिजोआपनहींमानते तो जामेरीसेनाहै उसीकोसाथलीजिये अमीरने कहाकि सेनाकी कुछआवश्यतानहींपरंतु जबशत्रुकी सेनाभागे तब लूटनेके लियेसेनालेकरआनाआखिरकार अमीरने जाकर फिरंगियों कोसेना चालीस पहलवानोंको मारकर भगादिया औरचारकोशतक पीछाकरके बहुतेरोंको घायलकिया बादशाहको लड़कीकोभीयहखबर मालूमहुई तबएक कोठेपर बैठकर बालखोलकर ईश्वरसेमनाने लगी कियह दूसरेकेलिये लड़ताहै बचाओ और दूरबीन लगाकर अमीर की लड़ाईकातमाशादेखनेलगी औरबादशाहने जबदेखा किदोनोंमनुष्योंने शत्रुकोहल्लाकरकेभगादिया तबतोअतिप्रसन्न होकर अपने वजीरसेपूछने लगे कियेदोनोंकौनहैं उसने कहा कि एक सौदागर सरायमेंटिका है येदोनोंभी उन्हींकेसाथहैं तबबादशाहने उनसौदागरोंकोबुलाकर पूछा

कि ये दोनोंकौनहैउन्होंने मार्गकासब हालकहकरकहाकियहजोघोड़े परसवारहै यहतो अमीरहमजाका भाईहै और शदसामीइसकानाम है दूसरामनुष्य इन्हींके साथहैऔर कुछमैंनहींजानताहूं बादशाहअफ-सोसकरनेलगे कि इतने दिनोंसे यहमेरेनगरमेंहै और मुझको नमालूम हुआनहींतो इनकीमेहमानदारीकरते और कहनेलगा कि निश्चयक-रके यह हमजाहै दूसरेमें ऐसी शक्तिनहींहै अच्छा अबदेखलियाजावेगा तत्पश्चात् जब अमीरने फिरंगियोंको मारकर हटादिया तबबादशाह अमीरकी आज्ञानुसार सेनासमेतजाकर सब मालअसबाब शत्रुका लूट लिया और अपनीसेनामें कहाकि इसमेंसेकोई न छूना यहसबमालशद सामीकाहै रावेपलासपोशने भी बहुतसा रुपया पैसा साधूऔरमंगनों को लुटाया यहांतक दानकिया कि कोई उस नगरमें दुःखी न रहगया जिससमयअमीरशत्रुकोपराजितकरनगरकी तरफफिरेतोफतेनोशअमीर को साथ लेकरक्लिमें आकर अतिप्रसन्नताकेसाथबैठे तबफतेनोशनेबड़ी धूमधामसे अमीरकी मेहमानदारीकरकेअपने साथशराबकबाबखिलाया कन्दन जो नशेमेंआयातो पलेपनानामेंएकपहलवानसे लड़नेलगाअमीर नेडाटकर मनाकरदिया और कईदिनके विलासकेपश्चात्बादशाहने अपने वजीरसेकहा जो रावपामानती तो इसीकेसाथ बिवाह करदेते इससेउत्तमकोईनमिलेगा वजीरने जबजाकररावपासेपूछा तोउसने शिर झुकाकेकहाकिपिताजीकीजैसीइच्छाहोमैं उनकीआज्ञासेबाहरनहींहूं बादशाहने यहसुनकर अमीरसेअपनीदामादी स्वीकारकरनेकीप्रार्थना की अमीरने स्वीकार किया तब बादशाह एक शुभसायत पूछकर उसी दिन बिवाहका सामानजुटानेलगाअमीरने उससमयअपने चित्तमें बिचाराकिइससमयजोअमरूहोतातोअतिहीप्रसन्न होताअमरूकाहाल सुनिये कि जिसदिनसे अमीरगोरखरके पीछे निकलेथे उसीदिनअमरू भी बराबर पतालेताछुआ वहांसे चला यहांतक कि एकदिनअमीर के बिवाहके पहिले अमरूनेबादशाहके फाटकपर पहुंचकर दरबानोंसे कहाकि बादशाहसेजाकर कहो कि शदसामीनामे मेरा गुलाम भाग कर आयाहै उसको अभी हमारे पासलाकर हाजिर करैं नहीं तो अच्छा न होगा दरबाननेजाकर बादशाहसे उसका संदेशाकहाअमीर सुनकर अति व्याकुलहुये कि कौनहै दरबानसे पूछाकि उसका डील-डौल कैसाहै उसनेकहाकि तेरहगज का तो लंबाहै और पांचगज की टोपी लालबनात की दियेहै और उसपर दोपरलगेहैं वे बायुसे हिलतेहैं और व्याघके चर्मकी कबागलेमेंहै और बहुतसे तीर और कागज की ढाल शिरपर रक्खेहै और अठारह मनका सोंटा हाथमेंलियेहुये ऐसे ठाटसे अड़ाखड़ा है कि देखनेसे डर मालूम होताहै अमीर इसहालको सुनकर बाहर निकल आये सब लोग सुनकर बड़े आश्चर्य में हुये अमरू

अमीरको देखतेही दौड़कर पैरोंपर गिरपड़ा अमीरनेउठाकर छातीसे लगाया और हाथपकड़कर लेजाकर अपने समीप बैठाकरसब वृत्तान्त उनकी चालाकी का सुना बादशाह ने कहाकि यहतो बतलाइये कि येकौनहैं अमीरने कहाकि नौशेरवां का मसखराहै अमरूने कहा कि साहब मसखरेतो बादशाह और अमीर होतेहैं मुझको यह कहांमव-स्सरहै यहसुनकर सब सभाकेलोग हँसनेलगे तत्पश्चात् विवाहके समय अमीरने अमरूसे कहाकि जाकर तुम एक काजी मुसल्मान को विवाह करानेके लिये लेआवो अमरू वहांसे उठाकर बाहर आया और काजी का वेषधारण करके एकबड़ा आसाहाथमें लेकरलंग मारताहुआजाकर बादशाहकेसामनेखड़ाहुआ लोगोंने उठकरबैठाया औरसबलोगकहने लगे कि आजतक हमने तो ऐसाहृष्ट मनुष्य कभीनहीं देखाथा न मालम हजरतकहांसेआयेहैं अतिप्रसन्नकरके विवाहकरानेकीआज्ञादीअमरू ने इसप्रकारसे पढ़ाकि लोगसुनकरघबरागये बादशाहने विवाहकराने के पश्चात् हजार अशरफियां अमीरके आगेरखदीं तब अमरूने कहाकि इसको मैं क्या करूंगा पांचहजारअशरफीसेकमनहीं मैं लेता कन्दनने कहाकि मोलवी साहब जो आप न लें तो इसको मुझको देदीजिये तब अमरूने उसको उठाकर झोरेमें रखलिया और कन्दनको एक आसा ऐसा माराकि वह पृथ्वीपर गिरकर लोटने लगा और अमरूने अपनी राहली कन्दन कहने लगा कि अच्छा काजीजी कहींतो मिलोगे तो मैं समझलूंगा बादशाहने पूछाकि यह कहांसे आयाथा अमीरने कहा कि ईश्वरने इसको भेजदिया था फिर कन्दनने पूछाकि वह मसखरा कहां गया ऐसे काजीको लाया जिसने बे अपराध मुझेमाराहै कि अबतक मेरे शरीरमें पीड़ाहै जो वह काजीन मिलैगा तो उसी से समझूंगा बड़ादुःख दूंगा इतनेमें अमरू फिर दरबारमें आया और कन्दनके शिरपरशिर रखकर ऐसा नाचा कि लोग देखकर हँस हँस कर लोट २ गये बादशाहभी अमरूकी चालाकीसे अति प्रसन्नहुये और अपने वजीरसे कहने लगे कि ऐसा मनुष्य तो हमने कभी नहींदेखा यह हरबातमें अति प्रचण्डहै तत्पश्चात् शराबपीकर सब बदमस्त होगये और कूद २ नाचने लगे सब दुःख सुख भूलगया तब बादशाहने बहुतसा इनाम अमरूको दिया और सबको यथा उचित प्रसन्न किया इसी प्रकारसे सातदिन राचि नाचरंगहुआ किया आठवें दिन अमीर ने अमरूसे कहाकि तुम चलकर सेनाको हमारा हाल सुनाओ हम कुछ दिन यहांकी सैरकरके आतेहैं तब अमरू तो सेनाकी तरफ चला और अमीर महलमें जाकर रावेपलास पोशके साथ भोग बिलास राचिदिन करनेलगे थोड़े दिनों के बाद एक सहेलीने आकर खबरदी कि मलि-काके अवधानहै अमीर सुनकर अति प्रसन्नहुये और कहनेलगे कि

अब जबतक लड़का न होगा तब तक हमभी यहीं रहेंगे रावपने कहा कि यही मेरीभी इच्छाहै कि मैंने आपके बिरहमें बहुतदुःख उठायाहै अब तो कुछ दिन सुख दीजिये ॥

अमीर का फतेहयार भाई फतेनोशके देशमें जाना और अजदहे का मारना और अलमशेर रूमी का उत्पन्न होना ॥

लेखकलोग लिखतेहैं कि जब अमीरका बिवाह रावपाके साथ हुआ तो एक फतेनोश के भाई फतेयार नामेने जिसका देश वहां से मिला था इसने इस बातको सुनकर कि फतेनोशने अपनी बेटी का बिवाह एक मुसाफिरके साथ करदियाहै अपने भाईको लिखा कि मैंने सुनाहै कि रावपाका बिवाह कियाहै सो दामादके देखनेकी मेरीभी इच्छाहै कृपा करके भेज दीजिये फतेनोशने उस पत्रको अमीरके हाथमें देदिया अमीरने पत्र पढ़कर कहाकि अच्छा हम जायँगे आखिरकार दूसरे दिन अमीरगये जब समीप पहुंचे तो फतेयार अगवानी मिलकर लेजाकर अपने स्थानपर अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख होकर बातें कर रहेथे कि एकबारगी शोर गुलसुनाई पड़ा अमीरने पूछा कि यह शोर क्यों होताहै उसने कहाकि इस नगरके समीप एक अजदहा है वह जब श्वास लेताहै तो बहुतसे मनुष्य जीव जन्तु भस्म होजातेहैं उसीने सांस लियाहै अमीरने कहाकि अफसोसहै कि आजतक कभी इसका हाल फतेनोशने मुझसे नहीं कहा नहीं तो अब तक कभी मार डालते अच्छा अब आप किसी को मेरे साथ कर दीजिये कि वह दूर से उसके रहनेका स्थान दिखादेवे फतेयारने कहाकि मैं आपही आपके साथ चलूंगा तब अमीरने अश्वारूको तैयार करवाया और सवारहोकर कन्दजको साथ लेकर जानेके लिये आरूढ़हुये और फतेयारभी अपनी सेना साथलेकर अमीरके साथहुये कि हर एक अपने चित्तमें आश्चर्य करताथा कि यह मनुष्य अजदहेको किसतरह मारेगा आखिर कार अमीरने उसको मारकर दो भाग करदिये तब उसके मुखसे ऐसा धुआं निकला कि कोसोंतक अँधियारा होगया जब धुआं बन्द होगया तब अमीरने फतेयारको लेजाकर दिखलाया वह देखकर अति प्रसन्न हुआऔरजितने लोगथे देखकरअमीरकी सबप्रशंसाकरनेलगे तत्पश्चात् थोड़े दिनतक वहां बासकरके नगरखरसनामेमें आयेऔरइतने दिनोंमें गर्भके दिनभी पूरेहुये और एक अच्छी सायत एक पुत्र पैदाहुआ तो अमीरने उसका नाम अलमशेर रूमी रक्खा और फतेहनोशने इतना पुण्यकिया कि बहुतसे लोगधनवान होगये जिसने जो चाहावह लिया जबअलमशेररूमीचालीस दिनकाहुआतब अमीरबादशाहऔर रावपा पलास पोशसे बिदाहुये जाती समय कहाकि जिस समय यह लड़का युवाहो तो इसको हमला की सेनामें भेजदेना तब फतेनोशने अमीर से

सौगन्ध देकरपूछा कि सत्यबतावो तुम्हारा नामशादसामीहै या हमज़ा अमीरनेकहा कि हमज़ानहींहूं फतेहनोश अतिप्रसन्नहुआ औरकन्दन बगलबना २ कर कहनेलगा कि मेरीबात तो रहगई कि आधीन हुआ तो केवल हमज़ाकेहुआ दूसरा मुझसे न जीतसका रावपानेभी सुनकर ईश्वरका धन्यवाद किया कि हमज़ा ऐसापुरुषमिला जो संसारमेंप्रसिद्ध है तत्पश्चात् अमीर वहांसे कन्दनको साथलेकर अपनी सेनामें पहुंचे तो सब सरदारोंने दौड़कर सलामकिया अमीरने सबको छातीसे लगा कर सबहालपूछकर कन्दनको अलजोसके साथलड़नेको भेजा अल-जोसने सदैवकी तरह उसको भी लातोंसे मारा वह बड़े सन्देहमें पड़ा रहा कि किसतरहसे इसको मारूं आखिरकार शामतक दोनोंसे युद्ध हुआ दूसरेदिन उसने अमीरको ललकारा तो अमीर अश्वर देवज़ादे पर सवारहोकर गये और अलजोस से वार चलानेको कहा उसने दो बार चलाकर तीसरीवार चाहा कि दोलत्ती मारे अमीरने उसके पैरपकड़कर घुमाकर दैमारा और बांधकरअमरूकेहवालेकिया अमरूने उससेकहा कि उठचल उसने कहाकिबलहोतो उठालेचल अमरू ने दो तीनकोड़े मारे तब तो वह कूदताहुआ अमरूके आगे २ भागा लोगदेख कर हँसनेलगे तत्पश्चात् अमीर डंकाबजवाकेचलेआयेराचिकोअमीरने अलजोसकोबुलाकरपूछा कि अबक्याइच्छाहैउसनेकहाकि सेवककोक्या जैसीआज्ञाहो वहीकरूंजबतकप्राणहैं आपकीसेवकाईकरूंगा तबअमीर ने उसको मुसल्मान करके अतिप्रतिष्ठासे बड़ाऊ कुरसी पर बैठाकर सबसे अधिक प्रतिष्ठादी तत्पश्चात् अमरूने बाला गुलामीका उसके कानमें डालकर नाचरंग करानेकी तैयारीकी लेखक लिखता है कि अपनी सभामें महलीने आकरखबरदी कि नारंजपरीके पुत्र उत्पन्नहुआ अमीरने सुनकर डंकाबजानेकी आज्ञादी और सबको यथा उचित इनामदेकर एकमनकी सुवर्णकी हसुली बनवाकर अमीरज़ादेके गलेमें पहिनाकर तौकजंरी नाम रखकर रक्षाकरने वालीको सौंपदियाऔर बहुतसेसिपाही उसकी रक्षाके लियेमुकर्ररकिया तत्पश्चात् आपसवार होकर मैदानमेंगये तो एकदिन सेनासे निकलकर अमीरको ललकारा तब दुस्तफतानोश ने जाकर उसका सामना किया इतनेमें बनकी तरफ से एकसेनादिखाईपड़ी दूतोंनेजाकर खबरली तोविदितहुआ किशाह-ज़ादारूम दोनोंसेनाओंसेयुद्धकरनेकेलियेआताहै इतनेमेंआकरदोनों सेनाओंके बीचमें परेटजमाकरशाहज़ादे नौशेरवांकी सेनाकीतरफघोड़ा लेजाकर ललकारा कि जिसकोबहादुरीकाघमण्डहो वह आकर हमारे सामनेदिखावे तब नौशेरवांकीओरसेएकादीसामनेआकर गदाचलाने की इच्छाकी थी कि इतनेमें शाहज़ादेरूमने गदा छीनकर फेंकदी औरएकादीको घोड़ेसमेत उठाकर पृथ्वीपर पटकदिया कि वहमरगया

इसीप्रकार से थोड़ेही कालमें बहुतसे नौशेरवांके सरदारों कोमारकर सेनाकाणी तोड़दिया तब अमीरकी सेनाके सरदारोंको ललकारा तब फरहादने जाकरसामनाकिया तब उसने एक वार ऐसी मारीकिहाथी सिसपर फरहाद सवारथा गिरकर मरगया इसीप्रकारसे कईपहलवानों के सामना करनेके पश्चात् शाहरूमनेकहाकि हमजा क्योंनहींआताआ खिरकार हमजाने सामनाकरके कमरपकड़कर चाहताथा कि उठाकर पृथ्वीपरपटकेकिइतनेमें आकाशवाणी हुई किखबरदारहमजायहतेरा पुचहैयह सुनकरअमीरने धीरेसेरखदिया तबवह उठकर अमीरकेपैरपर गिरा अमीरने उसको छातीसे लगाया और हाथपकड़कर सेनामेंलेआ कर सब सरदारोंसे उसका अपराध क्षमाकरवाया अमीर का पुचजान कर सब लोग अति प्रसन्नहुये और सातदिन तक नाचरंग हुआ किया आठवेंदिन शत्रुकी सेनासे डंकेकाशब्द सुनाई दिया अमीरनेभीडंकाबजा वायाऔर मैदानमेंजाकरअपनी सेनाका परेटजमाकर खड़े हुये तबनौशे रवांकी सेनासे एक पहलवान आदी नाम खडाहोकर ललकारनेलगा रुस्तमपीलतनउसकेसामनेगया तो तीन बार रोकर एक तलवारऐसी लगाई किउसका प्राणनिकल गया लिखनेवाला लिखताहै कि उससमय रुस्तमपीलतनने पचास पहलवानोंको मारकरनौशेरवांकी सेनामेंजाकर बहुतेरे पहलवानोंको मारकर सेनाको भगादिया अमीरने देखाकिपुच अकेलाहैसेनालेकरदौड़करउसीकेसाथमारते२ चारकोशतकखेदकरछोड़ दियालौटकरइतना मालवअसबाबपायाकिउसकोइतनाकभीनमिलाथा किकोईआपसेउठाकरनलेजासका तत्पश्चात्रुस्तमआकरअमीरकेकद मोंपरगिरा अमीरनेउठाकर छातीसे लगाकर बहुतसा रुपया अशरफी पुण्यकियातत्पश्चात् नाचरंगकरानेकीआज्ञादीऔरसबकारोबारबन्द रहानौशेरवांने बख्तकसे कहाकि बड़ीपराजयहुईअबकोईसामानयुद्धका नहींरहासेनासबव्याकुलहैअबकौ नयत्नकरनीउचितहैबख्तकने कहाकि यहांसे निकटखादर नगरहैवहांका खामीकैमाजशाह कादरीबड़ाबहा दुर और स्वभावका अति उत्तमहै उसीके निकटचलकर शरण लीजिये ईश्वरचाहेंगेतोवहआपकानाम सुनकरअति प्रतिष्ठाके साथसन्मुखहोगा नौशेरवां उसनगरकी तरफचलकर दूसरे दिन जाकर पहुंचा तो दूतोंने उसको जाकर खबरदी कि नौशेरवां सात देशोंका बादशाह हमजासे हारकर आपके निकट सहायताके लिये आयाहै वहबड़े धूमधामसे स- वारहोकरनौशेरवांकीअगवानी के लियेगयाऔर अपने स्थानपरलाकर तख्तपर बैठालकर सब हाल पूछनेके बाद उसको बडी आशादीकिजो हमजा वहां आवेगा तोअपने किये हुयेका फलपावेगाबख्तकने कहाकि जो ऐसा न होता तो काहेको बादशाह आपके पासआते ॥

अमीर का नौशेरवां का पीछाकरके खावरनगर की तरफजाना और
कैमाज बादशाह खावरको मुसल्मान करना ॥

लिखनेवाला लिखताहै जिसमयय अमीरसभासे उठतेाअमरूसे पूछा कि कुछमालूमनहींहोता कि नौशेरवां किसदिशाकोगया अमरूने कहा कि सुनाहै कि कैमाजशाह खावरीके पासजाकर शरणली है उसने शरण देकरबचनदियाहै कि तुमयहांरहोअमीरजब आवेगातोहम उसकोआने का फलदिखावेंगे अमीरनेहँसकरकहा किहमाराखैमाखावरकी तरफ रवानाहो उसकीआज्ञानुसार कियागया तब अमीरदूसरेदिन सेनासमेतखावरकी तरफचले जिसमयखावरके निकटपहुंचे कहमाजशाहको एकपत्र इससमाचार का लिखकर अमरूके हाथभेजा कि नौशेरवां और बख्तक दो हमारेशत्रु तुम्हारेपासहैं उनको बांधकर हमारेपासभेजदो नहीं तो हमआकर बड़ादण्डदेंगे अमरूने पत्रलेकर दरवानोंसे कहा कि बादशाहसे अतिशीघही हमारी खबरकरो दरवानोंने कहा तब बादशाहने अमरूको सभामें बुलाकरपत्रमांगाअमरूनेकहा कि सेंतमेंत मैं इस पत्रकोनदूंगा तुमनहीं जानते कि यहपत्रबड़ेनामी मनुष्यकाहै आखिरकार कैमाजने बहुतसी अशरफियां देकर उसपत्रको लेकरचूमकर खोल कर पढ़करपत्रको नोचडाला और कहनेलगा कि जो हमजा लिखताकि नौशेरवां और बख्तकको मेरेपासबांधकरभेजदोनहीं तो हमारे तख्तके पटरों से ताबूतबनावेंगे तो क्याहम उसके नौकर हैं या उससे डरतेहैं अमरूने कहा कि लाचारहैं कि अमीरनेमनाकियाहै नहींतोजिसतरहसे तूनेपत्रफारडालाहै उसीतरहसे हमतेरे पेटको फाड़ते कहमाजनेक्रोधित होकर अपने गुलामोंसे जोहाथ बांधकर खड़ेथे आज्ञादीकिइसकोपकड़ लोजबवे दौड़ेतब अमरूने खंजर निकालकर बहुतोंको मारकर बादशाह केशिरपर एकचपतमारकर मुकुटलेकर चलदिया बहुतोंने पीछाकियापरन्तु अमरूको कौनपाताहै आखिरकार अमरूने आकरअमीरसेसब वृत्तान्त कहा दूसरेदिन कैमाजशाह डंका बजाकर युद्ध करने परआरूढ़ हुआ अमीरने भी अपनी सेनाको परेटलमाया तो सबसे पहिलेखुरशेद खबरी बहिन कहमाजशाह कीजो अपनेसामने किसीकोनसमझतीथी मैदानमें खड़ीहोकर ललकारा तब अमीरकी सेनामेंसे शेरमार नामीने जाकर सामना किया तोउसने एकही बलछी मारकर घोड़ेको घायल किया इसीतरहसे थोड़ीकालमें बहुतसे पहलवानों को घायल किया आखिरकार रुस्तमपीलतनसे न रहागया उसनेभी जाकेसामना किया तब उसने एक बादशाहजादे परभीचलाई रुस्तमने बलछी पकरकरखींच लिया कितनाही उसने बलकिया लेकिनबलछी न छूटी और थोड़ीदेरमें घोडेपरसे कूदकर उसकोघोड़ेसे गिराकर चाहा कि बांधलेवेंलेकिनजब मालूमहुआ किस्त्रीहै तो गोदमें उठाकर अमीर के पास लाकर डाल

दिया अमीरने उससे पूछाकि तू कौनहै तू क्यों लड़ने आई उसने कहाकि मैं कहमानकी बहिनहूं खुरशैदखबरी मेरा नाम है तब अमीरने आज्ञादी कि इसको रुस्तमकी माता के पास लेजावो आखिरकार खुरशैदखबरी तो उधर भेजीगई इधरकहमान शाहकेभाईसे रुस्तम पीलतनका सामनाहुआ तो रुस्तमने उसकोभी बांधा और पुकारकर कहाकि स्त्री को लड़ाकर तामशा देखतेहो जो मर्दहोतो खुदआकरलड़ोतब नीमतनपिता कहमानशाह खबरीने आकरसामनाकियारुस्तमने उसको भी एकही बारमें बांधलिया तत्पश्चात् हमानखबरी आयातो उसकोआतेही बांधलिया इसीतरहसेथोड़ेकाल में बहुतसे पहलवानोंको बांधलियाआखिरकारकहमानडरकरपलटनेकाडंकाबजवाकर भागगया तबअमीरभीअपनीसेनासमेतअपनेस्थानपरचलेआयेरुस्तमनेआकरअमीर के कदमछुये अमीरने गलेसे लगाकर बहुतसारुपया अशरफ़ी पुरयकरके राचिको सभामें बैठकरनीमतन औरहुमानसेबुलाकर पूछाकितुम्हारी अब क्या इच्छाहै उन्होंने कहाकि जबतक कहमान मुसलमान न होवे तब तक हमलोगोंको कोईरखिये अमीरने स्वीकारकरके आदीकेहवाले किया और आप नाचरंग देखनेलगे उसी समयमें खुरशैदखबरी से पुछवायाकि तुझको रुस्तमकेसाथबिवाहकरना स्वीकारहै उसनेउत्तरदिया किमेरीभाग्यमेंयहकहांहै किऐसापुरुषमुझेमिले तब अमीरने एकअच्छी सायत पूछकर दोनोंका बिवाहकरदिया तब रुस्तम सात दिन राचि बराबर महलमें रहकर भोगबिलास करतारहा आठवेंदिनडंकेकाशब्द सुनकर महलसे बाहरआया और शस्त्र धारणकरके अमीरकेसाथहोकर मैदानमें जाकर सेनाका परेट जमाकर खड़ाहुआ तब कहमानशाह ने घोड़े को मैदानमें लाकर ललकाराकि ऐशाहजादे तूलड़नानहींजानता आमैं सिखलादूं यहसुनकर रुस्तम घोड़ेकोलेकर उसके सामनेगया तब उसने आठसौमनकीगदा उठाकररुस्तमकेऊपर मारीतोरुस्तमनेतोढाल से रोकलिया लेकिन घोड़ा घायल होगया तब शाहजादेने घोड़ेपर से कूदकर एकतलवार ऐसीलगाईकि उसके घोड़े केचारोंपैर कटकर गिर पड़े फिरदोनों दूसरे घोडोंपर सवारहोकर लड़नेलगेरुस्तमने हजारमन का गदाइसजोर से बहमनके शिरपर मारीकि जो पहाड़ होतातो वह भी डरजाता लेकिन कहमानका एक बालभी न टेढ़ाहुआ हंसकरकहनेलगा कि हमजाके पुत्र इसीबलपर मुझसे लड़नेआयाहै जा अपने पिता को भेजदेवह आकर मुझसेलड़रुस्तमने कहाकि तूनेमेरा क्याकियाजोमेरे पिताको बुलाताहै ऐसी बातमतबक आखिरकार शामतक दोनों लड़ा किये देखनेवाले बड़े आश्चर्यमेंहुये शामको कहमानडंका बाजगयातबबजवाकर चलागया दूसरेदिनफिरदोनोंसेनाआकर परेटपर खड़ीहुईंउस दिनशामतकलन्धौरऔरकहमानकासामनारहाआखिरकार सायंकाल

को दोनों सेना अपने २ स्थानोंपर गईं तब अमीरने लन्धौर और रुस्तम से पूछा कि यहकौसापहलवानहै उन्होंने कहा किआपकेबाद संसार में यहीहै दूसरेदिन दोनों सेना मैदानमें आकर खड़ीहुईं और कोई सेना से न निकला था कि एक जवान चालीस गजका लंबा बनकी तरफ से आकर दोनों सेनाओंके बीचमें खड़ाहुआ और नौशेरवां की सेना के तरफ मुखकरके ललकारानौशेरवांने एकआदी को उससेसामनाकरनेको भेजा उसने एक घूसा ऐसा मारा कि उसकी हड्डियां चूर चूर होगईं उठनेके योग्य न रहा तब दूसरे आदी ने आकर सामना किया उसका भी वही हाल किया तब तो सबका जी टूट गया कोई सामने न आ-सका थोड़ी देर रहकर मुसल्मानी सेना की ओर मुख करके ललकारा तो सरकोबने पहिले आकर सामना किया फिर कन्दजने उसनेदोनोंको उठा२कर पृथ्वीपर छोड़कर कहाकि तुमजावो दूसरेकोभेजो जबयेदोनों हारकर आये तो अमीरने कन्दजसे कहा कि यह तुम्हारा पुत्र हमको मालूम होताहै कन्दजने कहा कि जो यह मेरा पुत्रहोगा तो मैं बे मारे न छोड़ूंगा तत्पश्चात् रुस्तमने आकर सामनाकियाउसनेचाहाकिइसको भी उठाकर फेंकें लेकिन रुस्तमने भी उसकी कमरपकड़ी थोड़ीदेर तक दोनों जोरकरतेरहे आखिर रुस्तमने एकबारगी उठाकर पृथ्वीपर धीरे से रखकर पूछा कि सत्यबता तू कौनहै तेरा क्या नामहै उसने कहा कि मेरा शबानतालफी नामहै और कन्दज सरशानका पुत्रहूं तब शाहजादे ने उसको अपनेसाथ अमीरके पास लाकर अमीरके कदमोंपर गिराया अमीर ने उठाकर गलेसे लगाकर सब वृत्तान्त पूछकर अपने समीप बैठाकर सब सरदारोंसे बड़ा अधिकारदिया तत्पश्चात् सातदिवसतक सभाकी और यथोचित लोगों को पारितोषिक दिया आठवेंदिनफिर दोनोंसेना आकर मैदानमें खड़ीहुईं तब शाबानतालफी कैमानशाहका सामनाहुआ सबदिनलड़ाईहुआकी लेकिनजीतहार न सका शायंकाल को दोनों सेना अपने २ खेमेमेंगईं दूसरेदिन प्रातःकाल मैदानमें आकर कैमानने घोड़ानिकालकर ललकारा कि वो हमजा जो लड़ने आयाहो तो तू आकर सामनाकर लड़केकोभेजकर दिनक्योंकाटताहै तुझकोलज्जा नहींआती तेरीसेना पराजित होजातीहैं इतना सुनकर अमीर अश्वकर पर सवारहोकर मैदानमें खड़ेहुये तो दोनों हथियार लेकर लड़ाकिये परन्तु किसीकीजीतहार न हुई तो आखिरकारअमीरनेकन्दजसेकहा कि हे बादशाह हमारी तुम्हारी हथियारकी लड़ाई होचुकी अब मग उठाईहो जो हारै वह दूसरेकी सेवाकरै आखिरकार दोनों की कमर पकरीवलहुई तो कन्दजशाहने अमीरकी कमर पकड़कर उठाया लेकिन न उठासका तो हारकर छोड़दिया तब अमीरने कमर पकड़कर एक-बारगी उठाकर पृथ्वीपर रखकर अमरूके हवालेकिया और डंका खुशी

का बजवाते हुये खेमेमें आकर आज्ञादी कि खाबरियों को लेआवो तो अमरूने लाकर मौजूदकिया तब अमीर ने कैमाजशाह से कहा कि हम जीते तुमहारे अब हमारी सेवकाई करो उसने कहा कि मुसल्मान तो मैं नहींहूंगा और सब करनेको आरूढ़हूं तब अमीरने क्रोधित होकर आदीअक्करबसेआज्ञादीकिइसकोगदासेमारडालो उसनेलेजाकरमारने की आज्ञादी परन्तु कैमाजके शरीरमें कुछ दुःख भी न होता था यह देखकरअमीरकहनेलगेकि बड़ेअफसोसकीबातहै किऐसा पहलवानहाथ सेनिकलाजाताहैऔरमेराकहनानहींमानता आज्ञादीकिइसकोआदी के हवालेकरो कैमाजनेकहाकबतकबांधरक्खोंगा अमीरनेकहाजिन्दगी भर न छोड़ूंगा इतने में कैमाजशाह ने अमरू से जलपीने को मांगा तब अमीर ने शरबत बनाकर मंत्र पढ़कर फूंककर कैमाज को दिया उसने ज्योंहीं शरबत पिया त्योंहीं उसके चित्तमें मुसल्मानी धर्म्मका स्मरण आगया तब तो अमीर के पास आकर कहने लगा कि अब मुझ को सब स्वीकार है जो आपका चित्तचाहे वह कीजिये तब अमीर ने उसके भाई पुत्र पिता समेत मुसल्मान करके बड़ी भारी खिलअत देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसीपरबैठाकर बड़ेधूमधामकी सभा नाचरंगकरवाई नौशेरवां और बख्तक ने कहा कि अब तो यहांसे भागना चाहिये नहीं थोड़ी देरमें बांधे जावेंगे बख्तकने कहा कि यहांसे कीमुर्जनगर अति-निकटहै वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है उसके डरसे कैमाज पहाड़ में भाग जाताथा आखिरकार नौशेरवां बख्तक समेत जाकर वहां पहुंच-कर सहायता मांगी तो अगवानी लेकर अति प्रतिष्ठा के साथ बैठाकर सब आदरभाव करके सब हाल नौशेरवां का सुनकर कहा कि आप यहां चैनसे बास कीजिये वह हमारा क्या कर सक्ता है नौशेरवां उसकी बातपर प्रसन्न हुये और उसके यहां रहकर आसरा देखने लगे अमीर का हाल सुनिये कि सभामें बैठेथे कि एकबारगी अमरू से पूछ उठे कि नौशेरवां किसके पास गयाहै अमरूने कहा कि कीमुर्जनेके जा-वाजीमें अतिप्रचण्डहै उसीने रक्खाहै औरकहताहै कि जो हमजायहां आवे तो उसकी मत्युआवे अमीर ने सुनकर हँसकर खेमा अगवानीजाने की आज्ञादेकर दूसरेदिन कूचकरके बड़ी धूमधामसे उसके नगरकेसमीप उतरकर कीमुर्जशाहको अपने आने की खबर देकर अति प्रसन्नता से सभाविलासकरनेलगे उधर कीमुर्ज युद्धपर आरूढ़होकर मैदानमें खड़ा होकर डंका बजवानेलगा तब अमीर भी डंका बजवाकर युद्धकी तैयारी करके उसकी तरफ चला जब समीप पहुंचा तो कीमुर्ज बख्तक के साथ देखनेके लिये चलाआया तो जब अमीर की सेना निकली और बख्तक कीमुर्ज से नाम लेकर बतलाने लगा तो अमीर की सेना का प्रमाण न करसका तब कीमुर्ज बख्तक से कहनेलगा कि हमको यह नहीं मालूम

था कि अमीरहमजाके साथ इतनी सिपाह और बड़े पहलवान हैं आखिरकार दोनोंसे बड़ा युद्धहुआ पहिले तो कीसुर्जने अमीरके बहुत से पहलवानों को घायलकिया लेकिन आखिर को अमीर हमजा ने पछाड़कर बांधकर अमरूके हवाले करदिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि जब उसने देखा कि कीसुर्जअमीरकेकारागारमें गयातोउसनेबख्तक से कहाकि अब तो कीसुर्ज पकड़ागया अब यहांसे निकल चलने की कोई यत्नकरनी चाहिये नहीं तो क़ैदहोंगे बख्तक ने कहा कि यहां से थोड़ीदूर पर गैला नगरहै वहांका स्वामी बड़ा बहादुरहै कि उससे कोई हथियार चलानेमें सामना नहीं करसक्ता कि उसकी प्रशंसाजीभसे नहीं होसक्ती और हमजा उसके सन्मुख तिनके के समानहै सो वहीं चलकर बासकीजिये तब नौशेरवांने दूसरेदिन याचाकरके गैलाकेसमीप पहुंचकर उतरकर बादशाह गैलाको अमीरके दुःखदेने का हाललिख-कर भेजा उसने पचको पढ़कर नौशेरवां के अगवानी मिलकर अपने स्थानपर बैठाकर अति प्रसन्नकिया और बचनदिया कि हमजा यहां न आनेपावेगातबतोनौशेरवां निःसंदेहहोकर अमीरकाआसरादेखनेलगा उधर अमीरने कीसुर्जसे पूछा कि अबतुम्हारी क्या इच्छाहै उसने कहा कि अब सेवकाई आपकी मुसल्मान होकर करनेकी इच्छाहै अमीर ने उसी सायत मुसल्मानकरके खिलअतदेकर कुर्सीपर बैठाकर अपने साथ भोजन कराकर प्रसन्नकिया तत्पश्चात् एक दिन कीसुर्जने हाथबांधकर अमीरसे कहा कि अबतो क्षपाकरके नगरमें चलकर बासकरते तो अति-उत्तमहोताअमीरने स्वीकारकिया और दूसरेदिन उसके महलमेंजाकर अति प्रसन्नतासे तख्तपरबैठे और कीसुर्ज रूमाललेकर मक्खियांहटाने लगा अनेक प्रकारसे अमीर और सरदारोंकी सेवाकरने लगा॥

अमीरका गैलानगरकी ओर जाना और वहांके अधिपति गुनजालशाह को मुस-
ल्मानकरके उसकी बेटी गैलासवारके साथ बिवाह करना॥

लेखकलिखताहै कि उस नगरके समीप तराई बहुतथी अमीर दिन को शिकारखेलते और रात्रि को सभाबिलासमें चैनकरते बहुत दिनोंके पश्चात् एक दिन अमरूसे पूछा कि कुछ मालूम नहीं होता कि बख्तक नौशेरवांको कहां लेगया अमरूने कहा कि सुनाहै कि नौशेरवांने नगर गैलान के स्वामी शाहगुनजाल के समीप जाकर सहायता मांगीहै सो उसने अतिप्रतिष्ठाके साथ बासदेकर इक़रारकियाहै कि अमीर हमजा यहां किसी प्रकारसे न आवेगा अमीरने अपना खेमा उसीदिन भेजकर दूसरेदिन सेनासमेत उसीओर का पयान किया दूसरे दिन चलकर कई दिनोंके पश्चात् उसनगरके समीप खेमा गाड़कर उतरपड़े तब जासूसों ने शाहगुनजालसे अमीर के आनेकी खबरदी तो नौशेरवांने उसीदिन डंका बजवाया और शाहगुनजाल आदीको सेनालेकर मैदानमें परेट

नमाकर खड़ाहुआ अमीरने भी अपनी सेनाको उसकी बराबरलेजाकर खड़ाकिया परन्तु कोई अभीसेनासे निकला नथा कि बनकीतरफसेएक सवार आया और दोनों सेनाके मध्यमें खड़ाहोकर मुसल्मानी सेनाके तरफमुखकरके ललकारनेलगा उसकोदेखकर सबडरे आखिरकोअमीर के दोतीन पहलवानसे सामनाहुआ सबको उसने उठा२ कर पृथ्वीपर रखकर कहाकि तुमजावो दूसरेको भेजो इतनेमें शामहोगई तब वह जिधर से आयेथे उसीतरफकोगये अमीर उसकेहाल पूछने केलिये कि कौनहै अमरूको साथलेकर उसके पीछेचले जबथोड़ी दूरगये तो उसने देखा किदो सवार आतेहैं देखकर खड़ी होगई और जब अमीर समीप पहुंचे तो वह एक बागमें चलीगई अमीर भी उसके पीछे बागमें गया वहां जाकर देखाकि बहुतसी स्त्रियांहैं और वह सवार जाकर एककोने में घोड़ेपरसे उतरकर खड़ाहै अमरूने देखकर अमीरसे कहाकि विदित होताहै कि यह सवार स्त्रीहै कि इतनेमें उसकी भी दृष्टि अमीर पर पड़ी अपने खाजेसराय को बुलाकर कहा कि जाकरपूछो कि ये दोनों सवार कहांसे आतेहैं किसप्रयोजनसे आयेहैं उसनेजाकर अमीरसे पूछा कि आपका क्या नामहै और किसप्रयोजनसे आयेहैं अमीरने कहाकि हमजा मेरानामहै और यह अमरू मेरायारहै इसकी चालाकी संसार में प्रसिद्धहै तब अमीरने पूछाकि ऐखाजे तू यहतो बताकि इस शाहजादीका क्यानामहै वह बोलीकि मेरीशाहजादीका गैबीसवार नामहै यह कहकर शाहजादीके पासजाकर खबरदी तब उसनेजाकर खिवास मरदानाउतारा औ स्त्रीकीपोशाक पहिनकर अमीरको अगवानीलेकर बारहदरी में लेजाकर मसनदपर बैठाकर अतिप्रसन्न करके अपनेसाथ भोजन करवाकर शराबमँगवाकर दोनों साथबैठकर पीनेलगे दोतीन गिलासपीनेके पश्चात् शाहजादी नशेमें कूदकर अमीरके गोदमेंबैठीसब लज्जा भूलगई तब अमीर ने उससे बिवाह करनेकी इच्छाकी उसका चित्ततो पहिलेहीसे चाहताथा सुनतेही स्वीकार करलिया अमरू ने उसीसमय मंचपढ़कर उसके साथ विवाह करदिया तत्पश्चात् दोनों छपरखट परजाकर भोग बिलास करने लगे गुनजालशाह को यह खबर पहुंची वह सुनतेही जलकर आग होगया और चार सहस्र सवारलेकर अमीरके ऊपर दौड़आया और चारों तरफसे बागको घेर-लिया तब शाहजादीने अमीरसे कहाकि आज्ञाहो तो जाकरबादशाह का शिरकाट लाऊं अमीरने कहा लाखहो पिताके ऊपर हाथ न चल सकेगा लेकिनमैंजाकर उसको पकड़लाताहूं आखिरकार अमीरबाहर आये दोनोंसे सामनाहुआ तब अमीरने गुनजालशाहको पराजयदेकर मुसल्मान करलिया वह अपनी बेटीके पास आया औरअपने मुसल्मा नहोनेका कारण उससे कहा तब यह खबर देशमें प्रसिद्ध होगईएक

दिन रात्रिको अमीर गैलीसवार को बगलमें लिये लिपटे सोरहे थे कि इतनेमें जरंगेज़ नौशेरवां की स्त्री जिसने अमीर को पहिले भी लेजाकर खन्दक में तीनदिनतक बांधरक्खा था आकर अमीरके समीप पहुंचगई देखकर अपनेचित्तमेंकहनेलगी कि इसनेमुझे न स्वीकार किया और इसके साथ विवाह करके भोगविलास कररहा है इससे दोनोंको मारडालना उचितहै यहीविचार रहीथी कि शाहज़ादीके नेचखुलगये और उठकर हथियारलेकर उसको खेदलिया वह थोड़ी दूर जाकर फिरकर खड़ी होगईऔर कहनेलगीकि वहांसे हमज़ाके डरसेभागीथी तुझसेक्याडरहै यहकहकरएकतीरचलाया शाहज़ादीने रोंककरएकतलवार ऐसीमारी कियह दोभागहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ी अमीरने पुकारकर कहा कि ऐ गैलीसवार तूने यहक्याकिया नौशेरवां जानेगाकि हमज़ाने मारा है वृथा लज्जितहोगा उसनेकहा कि अबतोजो होनाथासोहुआ तबअमीर गैली सवारको साथलेकर बाग़में आकर आराम करनेलगे और उधर प्रातः काल नौशेरवांको ख़बरहुईकिजरंगेज़की लोथ मैदानमें पड़ीहैंतबसेवकों से लोथ उठवा मँगवाई और अफसोस करकेकहनेलगा कि विदितहोता है कि यह हमज़ाकेपासगईथी उसने इसको मारा है अफसोसहमऐसे होगये कि हमारी बगलसे स्त्रीउठकर दूसरेके पास जावे अब हम लोगों को क्योंकर मुखदिखावेंगे इससेतो हमकोबड़ी लज्जाहुई अपने सरदारों सेकहा किहमनेगहीबहुतदिनकी अबइच्छाहोतीहैकिदेशपर्यटनकरैंसर-दारोंने हाथजोड़करकहा कि जैसीआज्ञाहोहमलोगआपहीकी इच्छा चाहतेहैं आखिरकार नौशेरवां आधीरात्रिको हज़ारसरदारोंको साथ लेकर बहुत सा माल असबाब लेकर बाहर निकल कर बन को चला और जो कोई पूछता तो अपनेको सौदागर बतलाता अपनानामकिसी से न कहताथा उनके जानेके पश्चात् प्रातःकाल सेनामें शोरहुआकि नौ-शेरवां लोपहोगया बहुतेरे कहनेलगे कि अमीरने मारडाला औरबहुतेरे कहतेथे कि अमरूमक्कारी करकेउठालेगयाहोगा लेकिन बुज़ुरुचमेहर ने कहाकि अमीर मारडालते या अमरू उठालेजाता तो हज़ार जवान क्याहोतेबादशाह अपनीस्त्रीजरंगेज़की इसबातकोदेखलज्जितहोकरकहीं चलेगयेहैं पीछेको हरमुज़लोगोंको बादशाहकी खोजमें भेजकरआपसब लोगोंकी सलाहसे नौशेरवांकी गद्दीपर बैठकर सबकारोबार करनेलगा नौशेरवांका हालसुनिये कि अपनेको सौदागरके नामसे प्रसिद्ध करता हुआ चलाजाताथा जासूसोंने यह ख़बर बहरामनामे एक डाकूको पहुं-चाई वह कोईसहस्रडाकूलेकर नौशेरवां के समीप आकर सब माल लूट कर नौशेरवां समेत अपने स्थानपर लेकर चलागया वहां लेजाकर उससे पूछाकि तू सत्यवता कौनहै नौशेरवांने कहा मैं नौशेरवां कबादका पुत्रहूं लेकिन उसको यकीन न आया दोतीनबार पूछकर नौशेरवांको फकीर

करके हटादिया तबनौशेरवां साधूबनकर वहांसे चला और जोकोईपूछ-ताथा उससे अपनानाम बतलाताथा लेकिन सुननेवाला झूठजानहटादेता था जाते२ खतन नगरमें पहुंचा वहांभी जो पूछताथा उससे अपनानाम बतलाताथा आखिरको यह खबर बादशाहको पहुंची किएकसाधूआया हैउससे जोकोई पूछताहै कि तूकौनहै वहकहताहै कि मैं नौशेरवांबाद-शाह कबादका पुत्रहूं बादशाहनेभी बुलवाकरपूछातो नौशेरवांने अपना नाम बतलाया तब उसने झूठाजानकर अपने नगरसे निकलवादियाआ-खिरको फिरते२ आतिश कुन्दान मरूदपर पहुंचा वहांका यहप्रबन्धथा कि जोकोई नवीनमनुष्य आताथा वहतीनदिन तक भोजनपाताथाचौथे दिन बिदाकरदिया जाताथा और जो सदैवरहनेकी इच्छाकरता था उसेप्रतिदिन बनसेलकड़ी लानीपड़तीथी तबभोजन मिलताथा इसकारण तीनदिनतक नौशेरवांको भोजनमिला चौथेदिन लकड़ी लानेकीआज्ञा हुई तब बादशाह लाचारहोकर रोजलकड़ी लानेलगा और जबलकड़ी कमलाताथा तो आधीरोटी पाताथा और जब अधिकले आतातो एक इसीप्रकारसे वहां रहकरदिन काटनेलगा अबथोड़ा वृत्तान्त नौशेरवां की सेनाका सुनिये कि एकदिन हुरमुजने बुजुरुचमेहर से कहाकि मैंने लोगोंसे बहुत ढुंढ़वाया लेकिनकहीं पताबादशाह कानहींमिलता अबतो विचारिये कि कहांहैंख्वाजेने कहाकि हम पहिलेहीसे विचार चुकेहैं कि बादशाहअति शकुन्दान मरूदमें बड़े दुःखमें पड़े हैं जोशीघहीकोईनजा-यगातो उनका प्राणन बचेगा शाहजादेने कहाकि फिर आपही जाकर ले आइये तबख्वाजेने कहाकि बेहमजाके गये बादशाह न आवेंगे सोतुम जाकर अपनी मातासे कहो कि वे अमीरको पचलिखैं तो निश्चयहै कि हमजाजाकर बादशाहको लेआवेगा तब हुरमुजने आकर अपनी माता से सबहालकहा उसने उसीसमय अमीरको पचलिखा कि ऐ पुत्र बाद-शाह बड़े दुःखमेंआतिशकुन्दान मरूदमें पड़ाहै सो बे तुम्हारेगयेवहनहीं असकेंगेकि मेहरनिगारके मरनेसे सम्बन्ध टूटगया है और सदैवनौशे-रवां बख्तकऐसे लोगोंकेकहनेसेतुमकोदुःखही देतारहा लेकिन जोतुम लावोगेतो बड़ानाम और पुण्यहोगा अमीरने पचपढ़कर अमरूकोख्वाजे बुजुरुचमेहरके पास भेजाकि पूछआवो नौशेरवां कहांहै उसनेजबजाकर ख्वाजेसेपूछातोउन्होंनेकहाकिबादशाहअतिशकुन्दानमरूदमें बड़े दुःखमें पड़ाहै जो अति शीघही जाओगे तो मिलेगा नहीं तो मरनेचाहताहै॥

अमीर हमजाका आतिशकुन्दा नमरूदकी तरफ नौशेरवां केलानेको जाना और आनेपर नौशेरवांकी दूसरी बेटीके साथ बिवाह करना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरसाधूका भेषधारण करकेअतिशकुंदा नमरूदकी तरफचले मार्गमें जब बहरामके स्थानके समीप आये तोमालूम हुआ कि इसीने प्रथम नौशेरवांको लूटकर फकीरकरदियाहै उसकेक्लि

के समीप जाकर ऐसा शब्द किया कि इस पहाड़ सब हिलगये बहराम व्याकुल होकर क़िलेसे हज़ार जवान साथलेकर बाहर आया तोउसने अमीरको देखाकिअकेलाएकमनुष्यखड़ाहै दौड़करएकबलछीचलाईअमीरनेवहीबलछीछीनकरएकबलछीऐसीमारीकिवहघोड़ेपरसेनीचेगिरपड़ाअमीरदौड़करउसकीछातीपरचढ़बैठाऔरखंजरनिकालकर कहाकियातोमुसल्मानहोनहींतोइससेमारडालतेहैंउसनेकहाकिपहिलेआप अपनानाम बतलाइयेफिरजोकहियेगावहीकरूंगाअमीरनेकहाकि मेरा हमज़ानामहैवहहमज़ाकानामसुनतेहीडरगयाऔरकलमापढ़कर मुसल्मानहोकरकईदिनअमीरकीमेहमानीकरकेहज़ारअशरफ़ीकमरमेंबांध करसाथलिआअमीरढूढ़ते२कईदिनोंकेपश्चात् आतिशकुन्दानमरूदमें जा करपहुंचे तबसाधुओंनेभोजनलाकरअमीरकोदियाअमीर और बहराम दोनोंने भोजनकियाऔरबैठकरनौशेरवांकीखोजमेंलगे आखिरकारशाम कोजबसबलकड़ीलेकर आयेतोपीछेकोनौशेरवांभीथोड़ीसीलकड़ीलेकर आया अमीर देखकर रोनेलगा आखिरकार अमीरकई दिनतकवहांरहे फिर अपनेकोऔरप्रसिद्धकरके बक़्तसी सेनासाथ लेकरवहांसेनौशेरवां को साथ लेकर कूचकिया उसीदिन नौशेरवांने अमीरसे वादाकियाजो तूहमज़ा को बांधकर मेरेपास लावेगा तोहम अपनी छोटी बेटीका बिवाहतेरे साथकरदेंगे अमीरने कहाकि हम तुम अकेले सेनामें चलें देखें कोई पहचानताहै या नहीं तब वे दोनों जाकर सेनाकी बाजारमें एकनानबाईकी दुकानपर बैठकर रोटीमोललेकर खानेलगेसंयोगसेमुकबिल अशकर देवज़ादेको पानी पिलानेकेलिये जाताथाअशकर अमीरकी सुगन्ध पाकर खड़ाहोगया इतनेमें अमरूभी पहुंचादेखाकि अमीरऔर नौशेरवां एक नवीन मनुष्यके साथभोजनकर रहाहै अमरूनेसलामकरके कहाकि ऐ अमीर अच्छी सायतआये तबनौशेरवांने उससमय अमीरको पहिचाना और अपनेचित्तमेंकहनेलगा कि इतनेदिनोंसेमैं अमीरकेसाथ रहा लेकिनमैंने इसको न पहिचानाऔरसदैव हमज़ाकी बुराईउससेकी निश्चयहै कि अमीर मुझसे नाराजहोंगे यह बिचारकर वहांसे उठकर अपनी सेनामेंगया सरदार लोगदेखकर अति प्रसन्नहोकर सबभेंटलेकर और तख्तपर बैठाकरडंकाबजनेकीआज्ञादी अमीरभी अपनीसेनामेंगये और सब सरदारोंसे मिलकर अपना सबहालकहकर शादादसेकहाकि हमको बांधकरनौशेरवांकेपासलेचलोअमरूने सुनकर मनाकियालेकिन अमीरनेनमानाऔर शादादसेहाथअपना बंधवाकरनौशेरवांकेपासगया नौशेरवांने देखकर पूछाकि अमीरको क्यों तूने बांधाहै अमीरने कहा किमैंनेतुमसेवादाकियाथा किहमज़ाकोबांधकरतुमको सौंपदेवेंगे सोमैंने अपनावादा पूराकिया अबआप अपनावादापूराकरके अपनीबेटीकामेरे साथ बिवाह करदीजिये बख्तकने उठकर नौशेरवांके कानमेंधीरेसेकहा

किहमज़ा इससमयबेप्रयासमाराजासक्ताहै आपइसको मारलीजिते तब बादशाहनेकुछउत्तरनदिया लेकिनअमीरकोविदितहोगयाकिनौशेरवां का चित्तमुझसे साफनहींहै हाथखोलकर शादादसे कहाकि बख्ततपापी कोपकड़करखूबपीटोउसनेतुरन्तहीअमीरकीआज्ञानुसारकियानौशेरवांबख्तकाहालदेखकर महलमेंचलागयाउसीसमय जिसनेबख्तककीसहायताकी वही अमीरके हाथसे मारागया आखिरकार वहांसे अमीर अपनी सेनामेंचलेआये औरयहांसेएकपत्रलिखकरअमरूकेहाथनौशेरवां केपासभेजाकिहमने अपनीबातपूरीकीआपभी अपनीबातकोपूर्ण कीजिये नौशेरवांने लोगोंसे पूछाकि तुमलोगोंकी इसमें क्या सलाहहै लोगोंने कहाकि हमारी बुद्धिमें तो उसकेसाथबिवाहकरना अनुचितहै लेकिननौशेरवांने नमानाऔर सामानकरकेअपनीबेटीकाबिवाहहमज़ाके साथकरदिया तब हमज़ा तो लेकरअपनेस्थानपरआकरउसकेसाथभोग बिलासकरनेलगा उधर बख्तकने इधरउधर पत्रभेजा किबड़ अफसोसकी बातहैकि तुमलोगोंकेहोतेहमज़ानेनौशेरवांकी दोबेटियोंके साथबिवाह करलिया औरबादशाहकादामाद कहलाताहै लेकिन अबभीइतनीहिम्मतकरो कि आकर इसअरबवासीसेमेहरअफरोज़को छीनलोतौभीअच्छाहैऔर सब नगरवासियोंने इकट्ठे होकरहरमुज़से कहाकि बादशाह की बुद्धितो अवस्थाके साथकम होगईहै परन्तुजोतुम यत्नकरोतोहमज़ा आसानीसेमाराजासक्ताहैशाहज़ादेने पूछाकि वहकौनसी युक्तिहैसबोंने कहाकि जो बादशाहकोह अलबुर्जमें आदीके पासजाकर पनाहलेवेतो हमज़ा वहांके जानेसे अवश्यहै कि माराजाय आखिर बादशाह सबकी सलाहसे कोहअलबुर्जकी तरफगये ॥

अमीरका कोहअलबुर्जकी तरफजाना ॥

लिखनेवालालिखताहैकिजबअमीरकोमालूमहुआकिनौशेरवांनेपहाड़अलबुर्जमेंजाकर आदीसे इसबिचारसे पनाहलीहै कि यहांजो हमज़ा आवेगा तो जीता बचकर न जावेगा उसीसमय लैनडोरी भेजकर दूसरे दिन कूचकरके कईदिनोंके चलनेके पीछेजाकर देखाकिनौशेरवां पहाड़ कीखोहमें सेनासमेत पड़ाहै औरचारोंतरफसेसेनाआरहीहै यहतमाशा देखअमीरभी थोड़ीदूरपर उतरपड़े इसीतरह कई दिनतक दोनोंसेना पड़ीरहीं निससमय बहराम और आदी चालीस सहस्र सवार समेत आये उसी दिन नौशेरवांने डंकाबजवाकर सेनाको लाकर परेट पर जमाया तब अमीरभी सेनालेकर सामनेगये अभीदोनों सेनाओंमें से कोई न निकलाथा कि बनकी तरफसे एक सवार आकर दोनोंके बीचमें खड़ाहोकर नौशेरवांकी सेनाको ललकारा तो आदीने आकर सामना किया तो उसने एकबारगी उठाकर ऐसा दैमारा कि हड्डियां आदीकी चूरहोगईं बहराम चोबअपनेभाईकाहाल देखकर मैदानमें

आयातो उसकाभी यहीहाल किया तबतो नौशेरवांकी सेनामेंसेकिसी ने फिर उसकीतरफ न उठाया वह घोड़ीदेर खड़ारहा फिर मुसल्मानी सेनाकीतरफ मुखकरके ललकारनेलगा रुस्तमपीलतन ने आकरउसकी कमर पकड़ी उसनेभी कमर पकड़ी दोनोंने ऐसा जोर कियाकिघोड़ोंके पैर पृथ्वीमेंधस२गये आखिरको सवारनेरुस्तमको छोड़कर कहाकितुम जावो किसी दूसरेको भेजो इसीप्रकारसे सब बारी २ आये लेकिनकोई उससे जीत न सका तो आखिरको अमीर जब आये तो उसने दौड़कर अमीरकी कमर पकड़ी तब अमीरने कमर उसकी पकड़कर शब्दकरके उठाकर कहा कि बता तू कौनहै वह बोला कि कैसकैमाजखाबरी मेरा नामहै कैमाजशाह का मैं पुत्रहूं तब तो अमीरने उसको धीरे से पृथ्वीपर रखकर गलेसे लगाया और कैमाजशाह से पुकारकर कहाकि ईश्वर आपका पुत्र मुबारककरै वह सुनकर अति प्रसन्नहुआ अमीर डंका बजवाकर सेनामें आये बड़ी धूम धामसे उसकी मेहमानी की दूसरे दिन जब फिर दोनोंसेना मैदानमें आईं तो उसदिन आदी चोब और सरशवां दोनोंका शामतक सामना रहा कोई किसीसे जीत न सका रात्रिको दोनों सेनाने आराम किया प्रातःकाल फिर सामना हुआ तो उसदिनआदीचोबने अमीरकोललकाराअमीरने आकरदोनों भाइयोंको बांधकर अमरूके हवाले करदिया और विजयका डंकाबज-वाकर अपने खीमेमें रात्रिकोबैठकर दोनोंसे बुलवाकर पूछा कि अबक्या इच्छाहै उन्होंने कहाकि सेवकाईके सिवायऔर कुछनहीं तब अमीरने उनको कलमापढ़ाकर मुसल्मानकिया और अमरूने गुलामीका बाला उनके कानोंमें डालकर अपने साथ बैठाकर बड़ी प्रतिष्ठाकी तत्पश्चात् उनदोनोंने अपनी सेनाकोलिखा कि तुम लोग शाहको छोड़करहमारे पास चलेआवो ॥

शाहज़ादे बदीउलज़मां गैलीसवार का लड़की गुनजालशाहके पेटसेपैदाहोना और बहादेना शाहज़ादे कोसंदूकमें बन्दकरके नदीमें औरहज़रतख़िज़र की आज्ञानुसार करीशा बेटी आसमानपरी का लेजाकर रक्षाकरना ॥

लेखक लिखताहै कि जब अमीर कोहअलबुर्ज की तरफ जानेलगे तो गैली सवार को जो उनदिनों में अवधानसे थी गुनजालशाह के पास एक घड़ीहरके तौरपर रखगये थे उसपापीका हाल सुनिये कि जब उसके पुत्र पैदहुआ तो उसने अपने समीप मँगवाकर दाईसे कहा कि इसको मारडालो उसको दयाजोआई तो उसने कहाकि आज्ञाहो तो जीताहीगाड़लूं उसने कहाकि अच्छा आखिरकार उसनेनदीके किनारे जाकर एक संदूकमें रखकर ईश्वरकोसौंपकर बहादिया वह संदूक बहते२ उसी स्थानपर जहां आसमानपरी और करीशा स्नान करती थी लगा करीशा ने संदूक पकड़वाकर खोला तो उसमें देखा कि एक

लड़का अति स्वरूपवान लेटाहै इतनेमें हजरतखिज़रने प्रकट होकर क़रीशासे कहाकि यह हमज़ाका पुत्र है इसको तुम लेजाकर रक्षाकरो जब बड़ा हो तो हमज़ा के पास इसको भेजदेना और बदीउज्ज़मानी इसका नामरखना हजरतखिज़रयहकहकर अन्तर्द्धान होगये क़रीशा गोद में लेकर क़ाफमें आई और परियोंका दूधपिलाकर बड़ी रक्षा करने लगी और जबसे सातवर्षका हुआ तभीसे सिपाहगरी सिखलाने लगी जहां कहीं युद्धकरने को जाती उसको अपने साथ लेजाती ग्यारहवें बर्ष एकदिन उसने क़रीशासे पूछा कि मेरे माता पिता कहां हैं उसने कहाकि माताकोतोमैं नहीं जानती लेकिन पिताहमारातुम्हारा एकहीहै दुनियामें राज्य कररहाहै हमज़ा उसका नामहै उसने कहा कि फिर हमको कृपाकरके पिताकी सेनामें भेजदो तब आसमान परी और क़रीशाने बहुतसी उत्तम२वस्तुरखकर परियोंकोबुलाकरआज्ञादी कि इसको लेजाकर कोहअलबुर्ज़पर मुसल्मानी सेनामें पहुंचादो किसी प्रकारसे मार्गमें दुःख न होनेपावे और चलती समय उससे दो चार आदमियों का नाम बतलाकर कहाकि तुम पहिले लड़ाई करके अपने को प्रसिद्धकरना सबतुम्हारेभाईलड़कर अमीरसे आकरमिलेहैं आखिर कर वह आसमानपरी और क़रीशासे बिदाहोकर चला परियों न कई दिनकेबाद लाकर अलबुर्ज़के समीप उतरकर दोनोंसेनाओंका पताबतला कार उसको सेनाकी तरफभेजा आप छिपकर तमाशा देखनेलगी बदीउज्ज़मां जाकर दोनोंसेना के बीचमें खड़ाहोकर मुसल्मानी सेना की तरफमुखकरके पुकारनेलगा कि तुममें से जिसको मरनेकी इच्छाहो वह आकर मेरा सामनाकरे सब लोग देखकर बड़ेसंदेहमेंपड़ये कि यह कहां से आया इतनेमें उसने फिर पुकारा कि जो मृत्युसे प्राणबचाना था तो ओढ़नी ओढ़कर घरमें बैठेरहते मैदानमें क्यों आयेहो यहसुनकरकीसुर्ज़ ने आकर सामना किया उसने आतेही की सुर्ज़से वारमांगी कीसुर्ज़ने कहाकि पहिले तू वार करलेतो फिर हमकरेंगे तब तो उसने हाथ पकड़कर घोड़ेसे उठाकर पृथ्वीपर रखकर कहाकि तुमजावो दूसरेको भेजदो और दूसराआया तोउसकोभी उठाकररखातीसरेको बुलाया इसी प्रकारसे सबको हराकर आखिरको जब साद आया तो उसको भी उठाकर पृथ्वीपर रखदिया और उससे कहाकि जाकर अब अमीर हमज़ाको भेजदो उसने आकर अमीरसे कहा तब अमीर मैदानमें आये तब बदी उज्ज़मां देखतेही बिजलीके समान घोड़ेको चमकाकर अमीरके समीपलाकर कमर पकड़कर उठानेलगा तब अमीरने भी उसकी कमर पकड़ीऔरदोनोंने ऐसाज़ोरकिया कि घोड़ेव्याकुलहोगये लेखकलिखता है कि जो घोड़ोंपरसे उतर न पड़ते तो घोड़ोंकी कमर टूटजाती और अमीरने चाहा कि इसको शिर तक उठालेवें लेकिन वह हिलताभी

न था तब तो वख्तक नौशेरवां से कहने लगा कि आज हमजा इसके हाथसे माराजावे तो कुछआश्चर्य नहींहै अखिरकार जब अमीर पैर न उठासका तो क्रोधित होकर तलवार निकाल कर खड़ा होगया कि इसको मारें इतने में क़ारीशा ने आकर हाथ पकड़ लिया और कहने लगी कि यह आपका पुत्र मेरा भाई है अमीर बड़े आश्चर्य में हुये कि यह किसके पेटसे पैदाहुआ है तब क़ारीशा ने सबहाल अमीर से कहा अमीर सुनकर अति प्रसन्न हुये और अमरू से पुकार करकहा कि यह हमारा पुत्रहै ईश्वरने हमारी सहायता के लिये भेजा है यह कहकर उसको गलेसे लगाकर डंकाबजवाते हुये खीमेमें आकर चालीस दिनतक नाचरंग होने की आज्ञादी लेखक लिखताहै कि समुंददेवजिसने अमीर को डरसे परदेकाफको छोड़कर कोहअल बुर्जमें आकर ठिकानापायाथा जब उसने सुनाकि हमजा यहां अयाहै तब वह अपने स्थानसे राचिको निकलकर अमीर की सेना में आकर अमीर को ढूंढ़ने लगा यहां तककि सादकेखीमेमें पहुंचा उसकोसोतादेखकरबेहोशकरके अपने स्थानपरको उठा लेजाकरनदीपारक़ैद किया प्रातःकाल होतेहीसेनामें गुलमचा कि सादको खीमेसेकोईउठालेगया अमीरसुनकरअतिदुःखीहुये और अमरू सेबुलाकर कहा कि तुमजाकर बुजुरुच्चमेहर से पूछो किसादको कौनले-गया खाजेने विचारकर बतलाया कि देव समुन्द ने लेजाकर अलबुर्जनदी के पार क़ैदकिया है जो अमीर अकेले जावेंगे तो उसको पावेंगे अमीर अमरूसे यह खबर सुनकर उसी समय यारोंसे बिदाहोकर अशकर को नदी पैराकर पारउतरे वहांजाकर अशकरको तोचरनेकेलियेछोड़दिया और एक जानवर भूनकर भोजन करके राचिको एक वृक्षकेनीचे सोरहे प्रातःकाल सवार होकर बुजुरुच्चमेहर के बतानेकी पतासे चले जबक़िले के समीप पहुंचे तो समुन्ददेव अमीरका नाम सुनकर हजारदेव लेकर क़िलेसे निकलआया तब अमीरने देखकरकहाकि ओपापी अबतेराप्राण क्योंकर बचेगा देखनातेरा कौनहाल होताहै तब तो समुन्ददेवने एकदेव को आज्ञादी कि इसपापीको पकड़लावो अमीरने आतेही उसकोमार डाला इस प्रकारसे सातदेवोंको उसनेबारी२ से भेजा और अमीरने मार डाला आखिरको समुन्ददेवने क्रोधितहोकर हजारमनका पत्थरअमीर केशिरपर फेंका अमीरने तलवारपर रोंककर एकवार ऐसामारा कि उसकेसात हाथकटकर अलगगिरपड़े तबतोसबदेवदेखकरभाग गये और वहदेवफिरथोड़ीदेरके बादअच्छाहोकरअमीरकेसाथलड़नेकोखड़ाहुआ यहीहाल सब दिनरहा सायंकाल को देवअपने क़िलेमें चले गये और अमीर एक वृक्षकेनीचे सोरहे तब स्वप्नमें हजरत खिज़रने आकर कहा कि क़िलेकेभीतर एक अमृतका कुण्डहै जबतक उसको न पाटोगे तब तक यहदेव किसीतरह से न माराजायेगा अमीर स्वप्नके देखतेही जागउठे

और क़िलेकेभीतर जाकर उसकुंडको कूड़ेकरकटसे हज़रत ख़िज़र की आज्ञानुसार पाटकर वृक्षके नीचे आकर सोरहे प्रातःकाल को फिरसमुन्ददेव अपनी सेनालेकर क़िलेसे बाहर आकर खड़ाहुआ और पहिले दिनकी तरह एक पत्थरहज़ारमनकाअमीरकेऊपरफेंकाअमीरने उसको रोंककर एक तलवार ऐसी मारी कि आधीगर्दन उसकी कटकर गिरपड़ी तब अमीरके आगेसे भागा अमीरने भी उसका पीछाकिया तो वहां जाकरदेखा कि जब उसने कुंडको न पायातोशिरपटक २ अपनेको मारडाला तब अमीरने उसका शिरकाटलिया और लोथबनकी तरफ फेंकदी और वहांसे ढूंढ़ते २ सादके पास पहुंचे देखा कि बेहोश एकपिंजड़ेमें पराहै उसको चैतन्य करके साथ लेकर बाहर आकर कबाब बनवाकर दोनों ने खाया तत् पश्चात् दोनोंसाथहोकर समुन्द देवकेशिरको लेकर नदीसे उतरकर अपनी सेनामेंपहुंचकरदेवके शिरकोशत्रुकीसेनामें फेंकदिया शत्रुकी सेना देखकर बड़ेआश्चर्य में हुई कि जिसकाशिर इतना बड़ाहै उसका डीलतो औरही बड़ाहोगा जबहमज़ाने इसको मारडाला तो कौन मनुष्य उससे जीत सक्ताहै ये बातें होही रहीथीं कि बनकी तरफ से एकसेना आती दिखाई पड़ी दूतोंने जाकरदेखातोमालूमहुआ कि बखिया शुतरवान और मलिकअशतर नौशेरवां कीसहायताकेलिये आते हैं तबतो हरमुज़ने जाकर अगवानीली और अपनी सेनामें लाकर अति प्रतिष्ठासे सम्मुख होकर टिकवाया ॥

वृत्तांत अनलपुत्र अब्दुल मुत्तलिब भाई हमज़ा का ॥

लेखक लोग लिखतेहैं कि अमीर हमज़ाके जाने के पश्चात् अब्दुलमुत्तलिबकेएक पुत्र पैदाहुआख्वाजेने उसकानामअनलरक्खाविधिपूर्वकउसकी रक्षा किया बारह वर्षकी अवस्थामें जिस समय कलमातशाहने मक्के पर चढ़ाई कीथी और नगर बासी डरके क़िलाबन्द होकर बैठेथे उससमय अनल ने जाकर अपने पितासे कहाकि जोआपएकघोड़ाऔरहथियार देवेंतोमैं जाकर कलमातशाहकी पराजय करदूं ख्वाजेने हँसकर कहा कि अभी तुम इससे युद्ध करने के योग्य नहीं हो और मेरे पुत्रोंमें केवल हमज़ाहीको यह शक्तिहै किउससे कोई न जीतसके अनलने कहा कि ईश्वर हमारा सहायक है आखिर हमभी तो हमज़ाही के भाईहैं जब उसने बहुत हठकिया तब लोगोंने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि आप क्यों नहीं इसको जाने देते विदित होताहै कियह बड़ा बहादुर और प्रतापी होगा आखिर कार ख्वाजेने एक घोड़ा और हथियार देकर ईश्वरके भरोसे पर छोड़कर भेजा अनल हथियार लेकर घोड़ेपर सवार होकर अपने यारोंसमेत क़िलेसे बाहर निकलकर कलमातशाहकीसेना कीतरफ चला कलमातशाह ने देखकर जाना कि सुलहके लिये आताहै एकसवारको भेजाकि जाकरदेखो यह सवार क्योंआताहैउसने जाकर

अजलसे पूछाकि जो सुलहके लिये आयाहोतो चल हम सुलहकरा देवं अजलने तलवार निकालकर ललकारा दोनोंका सामना हुआ सवार मारागया इसीप्रकारसेकलमातशाहनेचालीस सवार भेजे सबोंकोअजल ने मारा आखिरको कलमातशाहने आकर सामना किया उसको भी अजलने उठाकर पृथ्वीपर दैमारा और छातीपर चढ़कर कहाकि मुसल्मानहो नहींतो मारडालता हूं उसनेकहा कि जो तू यहइक़रार करै कि हमतुमकोहमज़ाके पास भेजदेवेंगे तो जो तू कहे वहीकरैं उसने कहा कि यहतो होनाही है आखिरकार वह मुसल्मान हुआ अजलने उसको छोड़कर गलेसे लगाया और अपनेपिता के पासलेगया अब्दुलमुत्तलिबने दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठाकी और बहुतसा रुपया अशरफी निछावरकरके मंगतोंको दिया और कलमातशाहकी बड़ीमेहमानदारीकी दूसरेदिन अजलने अब्दुलमुत्तलिबसे कहाकि अब हमारी इच्छाहै कि भाई हमज़ा केपास जाकर अपना सबहाल उसको सुनावैं खाजेने अति प्रसन्नता के साथ जानेकी आज्ञादी तब वेदोनों सेना समेत वहांसेचले मार्गमें आकर करबमादी पुच आदीकर्ब से मुलाक़ातहुई तो मालूमहुआ कि वह भी अमीरके पासजाताहै तब अजलने कहा कि हमभी वहीं चलते हैं इससे दोनोंआदमी साथही चले उसने कहा कि आप यहां ठहरिये मैं जाकर मक्केकी याचाकर आऊं तो चलें तब अजलतो उसी स्थान पर सेनासमेत उतरपड़ा और करबमादी मक्केकी तरफजाकर चौथेदिनवहां से आया तब दोनों साथ होकर अमीर के तरफ चले मार्ग में अजल ने करबमादीसे कहा कि अमीर के सब लड़के जब पहिले अमीरके पास गयेहैं तब लड़कर सेनामें दाखिलहुये इससे हमलोगोंको भी यहीकरना उचितहै आखिरको पहिलेअजल जाकर दोनों सेनाके बीचखड़ाहोकर लड़कर अमीर की सेनामें गया फिर करबमादी ने भी ऐसाकिया तत्पश्चात् कलमातशाह सेनासमेत जाकर अमीरसे अति नमताके साथ मिला तब अमीर ने तीनों पहलवानों को साथलेकर खीमे में लेजा कर बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की प्रातःकाल डंकेका शब्द सुनकर मैदानमें गया तो उसदिन बखिया शुतरवान और शाबानतालफी का सामनाहुआ शाबानतालफी घायलहोगया इसी प्रकारसे केवल बखिया शुतरवानने अमीरके कईसरदार पहलवानोंको घायलकिया तीसरेदिन बदीउज्जमां ने जाकर सामना किया दोनोंसे लड़ाई हुई आखिर को बदीउज्जमां ने उठाकर मुशकैं बांधकर अमरूके हवाले करदिया वह बांधकर अपने खीमेमेंलाया मलिकअशतरने जब अपने चचाकी यहगति देखी तो नौशेरवांसे कहनेलगा कि हमज़ाके पुचबड़े बहादुरऔर पहलवानहैं देखोकि सबबहादुरी से मेरेचचाको क़ैदकिया नौशेरवां नेकहा कि हमज़ाके सब पुचऐसेही हैं तब उसनेकहा कि आजलड़ाई बन्दरहे

कलमैं इससेसामाना करूंगा कि लोगयह न कहें किअमीर का पुत्रथका था इससेबांधागयानौशेरवां लौटनेका डंकाबजवाकरअपने खीमेमेंआया और अमीरभी अपने स्थानपर गये और बहुतसा रुपया अशरफी लुटवा कर सभामेंबैठाकर बखियाको बुलाकर मुसल्मान होनेके लियेकहाउ-सने कहा कि जबतक मलिक अख्तर न आवें तबतक मुसल्मान करनेसे क्षमारखिये तब अमीरने उसको मादी करब के पहरेमें करदिया इतनेमें एकयारने आकर बिनयकी कि एकदूत खरसनामें पत्रलेकर आया है अमीरने उसको बुलवाकर पत्रलेकरसबके सामने चिल्लाकरपढ़ा तोउसमें लिखाथा कि फिरंगियोंने ऐसाहमको दुःख दिया है कि हमक़िलेबन्दहैं इसलिये यातो आपआइये या रुस्तमपीलतनको भेजिये नहींतो धर्मभी छूटेगा और देशभी हाथसे जायगा अमीरने पत्रसुनाके पश्चात्सरदारों सेकहाकितुमयहांकी ख़बरदारीकरो हमजाकर उसकोमारकरलातेहैं और हमारी जगहपर रुस्तमकोजानना रुस्तमने हाथजोड़कर कहा कि मुझे आज्ञाहो तो मैंजाकर खुरसना में उसका शिर काटलाऊं अमीरने कहाकि अच्छा पचास सहस्र सेना साथलेकर जाओ रुस्तम ने कहा कि सेनाकी कुछ आवश्यकता नहींहै आपके प्रतापसे मैं अकेला जाकर उसका शिरकाट लाऊंगा कितनाही अमीरने सेना साथ लेजाने को कहा लेकिन रुस्तम ने न माना अकेलाघोड़ेको दौड़ाकर उस नगरके समीप जाकर पहुंचा तो देखा कि फिरंगीसेना क़िलेको चारों तरफ से घेरे पड़ीहै रुस्तम ने जाते ही एक बारगी चिल्ला कर ललकारा माजूकशाहने मालियानामीअपने बड़े पुत्रकोरुस्तमकेसामनेभेजा रुस्तमने पहुंचतेही दोतीनवारउससे मांगकर यकबारगी उठाकर पृथ्वीपरदेमार कर मारडाला यहहाल देखकर माजूकशाहकी सबसेना भागी रुस्तमने पीछा किया बराबर मारते चलेगये चारकोस पर फतेहनोश से सेना समेतमुलाक़ातहुई उसने कहा किअबआप पलटचलिये लेकिन रुस्तमने न माना और कहाकि आपजाकर क़िलेकी ख़बरदारी कीजिये हमशत्रु को मारकर आतेहैं रुस्तम तो शत्रुके पीछे गया फतेहनोश ने उसी स्थानपरसे सबहाललिखकर अमीरके पासभेजाआखिरकार जब रुस्तमने माजूकशाह का पीछा न छोड़ा तो वह खड़ाहोकर लड़नेलगा यहांतक लड़ा कि रुस्तमका घोड़ा मारागया और आपभी घायलहोकरएकटीले परसे तीरमारनेलगा जब तीरभीसमाप्तहोगये तबतोईश्वरकाध्यानकरने लगा इतनेमें अमीर पहलवानों समेतआपहुंचे रुस्तमको घायलदेखकर शत्रुकी सेना पर जाकर व्याघ्रके समान टूटपड़े और चिल्लाकर कहनेलगे कि जिसने हमजाको न देखाहो वह आजआकर देखलेवे हमजाकानाम सुनतेही माजूकशाह की सेना कांपगई किसीका पैर आगेको न बढ़ा और सबभागकर क़िलेमें चलेगये अमीर वहांसे रुस्तमके पासआयेउसके

घावोंपर नोशदारके फाहे लगाकर क़िलेकी तरफचले माजूकशाह ने देखाकि अमीरक़िलेमें आकर सबको मारडालेंगे तो वह आपहीबाल बच्चोंको साथलेकर अमीरके क़दमोंपर गिराअमीरने कहा किजोबाल बच्चोंसमेत आकर मुसल्मानहुआ तो अपनी बेटीभी रुस्तम कोदे तोहम तेरा अपराध क्षमाकरें उसने मानलिया आख़िरको रुस्तम का बिवाह उसकी बेटीके साथहुआ और कुछदिन वहांरहकर सबको साथलेकर अमीर कोहअलबुर्जमें आये सेनाके सरदार अमीरको देखकर दौड़कर अमीरके क़दमोंपरगिरे अमीरने सबको छातीसेलगायाऔरअपनासब हाल सबसे सुनाया इतनेमेंमलिक अख़्तरने अमीरको ललकारकर कहा कि हमजातूमेरे डरसे भागगयाथा लेकिन तेरी मृत्यु फिर घसीटलाई तब अमीरने जाकर सामना किया ऐसीलड़ाईहुई कि कईहथियारटूट गये और कोई जीत न सका औरजो हथियारटूटताथा उसे अमरूउठा-कर अपने झोरेमें रखलेताथा आख़िरको अमीरने कहाकिअबहमारी तुम्हारी हथियारकी लड़ाई होगई अबपैर पकड़करउठावोजोजिसका पैर उठालेवे दूसरा उसकी आज्ञामें होकररहे उसने कहा बहुत अच्छा तब दोनों कमरपकड़ कर बलकरने लगेआख़िरकोअमीरने उसकी कमर पकड़कर उठाकर पृथ्वीपर दैमार कर अमरूको सौंपदिया अमरूने झटपट बांधलिया मलिकने कहा आपमुझे क्यों बांधते हैं मैं आपकीआज्ञामेंरहूंगातबअमीरने उसको मुसल्मानकरके गलेसेलगाया और अमरूने उसी स्थान पर गुलामीवाला उसके कानमें डालदिया तब अमीर डंका बजवातेहुये खीमेमें आकर बखियाकोबुलाकर मुसल्मान किया और दोनोंको अतिप्रतिष्ठाके साथ संमुख होकर ख़िलअत देकर अपने साथ बैठाकर भोजन करवाया और अनेक प्रकारसे उसको प्रसन्नकिया प्रातःकाल होतेही एकमनुष्यने आकरख़बरदी किजोपीन फौलादी बड़ीसेनालेकर नौशेरवांकीसहायताके लियेआयाहै अमीरसुन कर चुपहो रहे इतनेमें एकने फिर आकर ख़बरदी कि एक मनुष्य दरवाज़ापर खड़ाहैऔरकहताहै कि अमीरसे कहदो कितुम्हारेपिता बुलातेहैं अमीर सुनकर बड़े सन्देहमें हुये कन्दन ने कहा विदित होता है कि वहीसौदागरहै किसीप्रयोजन से आयाहै अमीर ने कहाअच्छा जाकरदेखो वह होतो बुलालेआओ आख़िरको वह आकर बुलालेगया अमीरने देखकर अतिप्रतिष्ठाके साथ बैठाकर पूछा कि आपयहां किस प्रयोजनसे आयेहैं उसने एकतसवीर निकालकर अमीरको दिखलाई और कहाकि जिसकी यहतसवीर है वह हरदमकी बेटीहैवह कहताहै जोकोई मुझसे जीते वह इसकेसाथ बिवाह करै सो मैंने उसको एकझ-रोखेसे देखाहै तभीसे यह हालहुआ अब आपजो सहायताकरें तोवह मिलसक्तीहै अमीरने उससे वादाकरभोजनकराके बिदा किया लिखने-

वालालिखता है किसादपुत्रअमरूउसतसवीरकोदेखतेहीमोहितहोगया
औरदोपहररात्रिव्यतीतहोनेपरसेनासेउठकरघोड़ेपरसवारहोबड़ौदा
की राहली और नगीमऔर गोरनपहरेपरफिरतेथेउन्होंने पूछाऐसाद-
शाह इससमय कहांजातेहो उसनेकहा आना होतो आओ नहीं चुपके
चलेजाओ चलनेपर आपमालूमहोजायगा तब दोनोंभाई सादके साथ
होकर चले थोड़ेदिनके बाद बड़ौदाके समीपपहुंचे तोएकबाग़ देखकर
उसीमें जाकर उतरपड़े एकतरफ़ उसीमें बकरियां चररहीथीं पकड़कर
दोतीन बकरियोंको हलालकरके भूनकर खाया जब इसकी ख़बर हर-
दमको हुई तो उसने आकर लड़कर दोनोंसरदारोंको मारकरसादको
भी पछाड़कर छोड़करकहाकि जा हमज़ाको भेजदेतबसाद लज्जाकेमारे
अमीरके पास तो न गया लेकिन जाते २ हरदमकेभानजे केबाग़मेंपहुंचा
वहां तकिया लगाकर बैठकर ठंढ़ी बायु लेनेलगा संयोगसे बाग़की
मालिकन अपनी सहेलियों समेत उसबाग़में टहलरही थी उसने आकर
सादसे पूछा कि ऐ जवान तू कौनहै सादने उत्तर कुछ न दिया
हथियार लेकर खड़ा होगया उसने उठतेही एकगदा सादके शिरपर
मारी सादने उसीको छीनकरएक लकड़ी ऐसी मारी कियहलोट पोट
होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी साद नेछाती पर बैठकर चाहा कि इसको
बांध लेवें इतने में स्तनपर हाथ पड़गया तो वह उठकर अलग खड़ी हुई
और मखपरसे बुरकाउतारा उसका मुखदेखतेही साद मोहित होगया
आखिर वह अपने स्थानपर लेगई सादने उसकेसाथ विवाहकियाऔर
चैनसे भोगविलास करनेलगे अमीरका हालसुनियेसादके लोपहोनेका
हाल सुनकर अति व्याकुल हुये जब कहीं पता न मिला तो लन्धौर ने
कहा कि जिससमय सौदागरने उस स्त्रीकी तसवीर आपको दिखलाई
थी सादको मैंने देखाथा कि उसका मुखलालहोगया था क्या आश्चर्यहै
कि वहींगया हो इतने में ख़बरमिली कि बरग और नारंग भी नहींहै
तबतो अमीरके चित्तमें निश्चय हुआ कि वहींगया रुस्तम को अपने
स्थानपति करके अमरूको साथ लेकर जाकर उसी बाग़में बकरियां
भूनकर खानेलगा रखवारोंने आकर कहाकि ओ पापियो तुमकोक्या
हुआहै अभी कईदिनहुये हमज़ाका पोता दो मनुष्यों समेत आया था
उसनेभी तीनबकरियां मारकर खाईथीं हरदमने आकर दोनोंमनुष्यों
को मारकर उसको निकालदियाथा सो तुम्हारी भी आज वही गति
होगी अमीरने उसको निकट बुलाकर पूछाकिहमज़ाका पोता किधर
गया उसने कहा यहतो मैं नहीं जानता लेकिम हरदमने मारा नहीं
केवल निकालदिया था अमीरने ईश्वरकाधन्यवादकरके कहाकि जाकर
हरदम से कहदो कि हमज़ा आया है तुमको बुलाता है उसने जाकर
हरदमसे अमीरका संदेशाकहा वह हमज़ाका नाम सुनतेही हथियार

बांधकर अमीर के पास आया अमीर भी उसको देखकर उठकर अश्वकरपर सवारहुये हरदम हमज़ाको देखकर हँसकर कहनेलगा ऐ हमज़ा जबसे मैंने तेरानाम सुना तबसे सदैव मेरे चित्तमें यही इच्छा रही कि कबतुझसे मुलाक़ातहो और तेरी बहादुरी देखूं लावारचला अमीरने कहाकि पहिले तू चला फिर हम उत्तरदेंगे हरदमने गदाघुमा कर अमीरके शिरपर मारी अमीरने उसकोरोककर अपनीवारकी इसी प्रकारसे दोनोंसे ऐसा युद्धहुआ कि हरदम की गदाटूटगई और उसने एकवृक्ष उखाड़कर अमीरके ऊपरमारा अमीरने उसको भी रोका तब तो हरदम अमीरकी बड़ी प्रशंसा करनेलगा कि जैसा मैं सुनता था वैसाही तूहै अबतू कृपाकरके अपने मुखको दिखलादे अमीरने नक़ाब हटाकर अपना मुख सूर्यके तुल्य उसको दिखलादिया वह देखकर अति प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि अब शामहोगई कलप्रातःकाल फिर आकर तेरा सामना करूंगा यह कहकर अपने स्थान को चला गया उसने अपने स्थानपर सबहाल अपनी बहिनसे वर्णनकरके कईबकरियां और शराब अमीरके भोजनकेलिये भेजदिया और प्रातःकालफिरआकर अमीरसे युद्धकरनेलगा आख़िरको अमीरने उठाकर पृथ्वीपर दैमारा तब उसने मुसल्मानहोकर अमीरकोअपने स्थानमेंलेजाकर अपनीबहिन से अमीरका विवाह करदिया यह ख़बर सादको पहुंची वह सुनतेही हथियार बांधकर घोड़ेपर सवारहोकर हरदमके दरवाज़े पर जाकर चिल्लाया अमीरने उस शब्दको सुनकर हरदमसेकहा कि जाकरदेखो कौनहै हरदम अपनी गदा नौसौमनी लेकर बाहर आया सादने देख-तेही घोड़ेपर से कूदकर हरदमको उठाकर पृथ्वीपर दैमारकर छाती परखड़ा होगया तब हरदमने कहाकि ऐपहलवान तू अपना नाम तो बतला उसने कहाकि मेरा सादपुत्र अमरूनामहै हमज़ा का मैं पोताहूं हरदमने कहाकि तू मुझको छोड़दे तो मैं तुझेतेरे दादा के पासलेचलूं सादउसकी छातीसे उतरकर उसके साथहोकर अमीर के समीपलेगया वह देखतेही पैरोंपर गिरपड़ा अमीरने उठाकर छातीसे लगाया सबतरह से प्यारकरके बैठाया तत्पश्चात् अमीरहरदम और सादको साथलेकर उससमयमें अपनीसेनामें पहुंचे जबजोपीन फौलादी और मजूकसे सामना था अमीर को देखकर सब सरदार दौड़ कर अमीरके कदमपरगिरे जोपीन फौलादीने माजूकको उठाकर पृथ्वीपर दैमारकर कहा जा दूसरेको भेजदे इसीप्रकार से जोपीनने कईपहल-वानोंको हराया आख़िरको अमीरने आकर उठाकर अमरूके हवाले करदिया परन्तु ऐसा पहलवान था कि अमीर का भी बड़ी देरतक सामनाकिये अड़ाथा बड़ीदेरमें अमीरका बस इसपर मिलाहै तत्प-श्चात् अमीर तो अपने महलमें डंका बजवाते चलेगये यहां सरदारों ने

अमरूसे कहाकि इसने हमलोगोंको बड़ा दुःखदियाहै इसकोमारडालें तब अमरूने प्रथमतो न माना लेकिन जब सरदारोंने लोभ दिखाया तब तो अमरूने स्वीकार करके कहाकि अच्छामैं अमीरको समझालूंगा फरदमने शीशागरम करके जोपीन को पिलादिया उसको समाप्तकर दिया अमीरने सभामें बैठकर जोपीनको बुलाया लेकिनलोगोंसे विदित हुआ कि फरदमने जोपीनको शीशापिला कर मारडाला तब अमीरने क्रोधितहोकर फरदमको बुलाकर पूछा तुमने जोपीनको क्यों मारडाला उसने उत्तर दिया कि मैंने अमरूकी आज्ञानुसार मारा मैं बिना किसीकी आज्ञाके क्यों मारता तब अमीरने अमरू को बुलाकर पूछा ऐ पापी तूने क्यों जोपीनकोमारा उसने कहाकि वह दूसरी लायकथा तब अमीरने कहाकि क्याकरूं तेरेसमान और कोई दूसरा होतातो अभी तेरा शिरकटवा डालता लेकिन तिसपरभी सातकोड़ मारकर कहा कि अबफिर जो ऐसाकरैगा तो मरवाडालूंगा तब अमरूने कहा ऐ अमीर सातकोड़के बदले सत्तरकोड़ मारूंगा यह कहकर नौशेरवां की सेनामें जाकर अपना सब वृत्तान्त कहकर रहनेलगा और सदैव अमीरके पकड़नेकीयुक्तिमेंलगा आखिरकार एकदिनरात्रिकोअमीरको उठालेजाकर वनमें एकवृक्षमें बांधकर चैतन्य करके एकलकड़ी तोड़कर सत्तर लकड़ीमारी अमीरने हँसकर कहाकि अच्छा अबतो तेराप्राण बचगया तो मेरानामहमजा नहींतोनहीं यहकहकर जोरकरकेकमन्दको तोड़डाला तब अमरूजिस प्रकारसे बेनाथका जंटभागताहै वैसेहीअमीर के सामनेसे भागा अमीरने तीरकमानलेकर उसका पीछाकिया तबतो अमरू डरकरकि अमीरका तीरबेमारे रहता नहीं दौड़कर अमीर के पास आया अमीरनेकहाअबबेतेराप्राणलिये न छोड़ूंगा अमरूने कहा जो यही इच्छाहै तौमैं हाजिरहूं जो इच्छाहो वह कीजिये तब तो अमीरने केवल सौगन्ध उतारनेकेलिये नस्तरदेकर रुधिरनिकाल कर अमरूको साथलेकर सेनामें आये ॥

मरजू कहकीम का बहलक के भेजनेसे आना और अमीरको सरदारों समेत अन्धा करना ॥

लिखनेवालालिखताहै किएकदिन मरजूकनामहकीम जिससेबख्तकसे बड़ी मिचताथी उसने कहाकि जोनौशेरवां आज्ञादेवै तोहमजाकरहमजाकोसेनासमेत अन्धाकरदेवें बादशाहने सुनकर उसकोबुलाकरखिलअतदेकर जानेकी आज्ञादी हकीमने अमीरकी सेनामेंजाकर अमरूसे मुलाक़ात करकेकहा कि जो अमीर आज्ञादेते तोमैं सेनामें दवाकरता और सदैवसेवकाईमें हाजिररहता अमरूने जाकर अमीरसे सबहाल कहा तबअमीरने उसकोबुलाकरअपनी सेनामें वैद्यककरनेकीआज्ञादी तत्पश्चात्एकदिनअमीर के नेत्रोंमेंगर्दपड़ी उससेनेत्रोंमेंदुःख होनेलगा तब उसनेएक अञ्जन ऐसादिया किजिससे तुरन्तही अमीरकेनेत्रअच्छे

होगये यह देखकर सबलोगोंने अतिप्रसन्न होकर उसको इनाम दिया तत्पश्चात् उसने एकसुरमाऐसादिया जिसके लगानेसे सबअन्धे होगये और जाकर नौशेरवांसे कहा किमैं अमीर को सरदारोंसमेतअन्धा कर आयाहूं डंका बजवाकर युद्धकी तैयारी करके सबको मारलीजिये नौशेरवां ने तबल जंग बजवाया अमीर ने भीसुनकर डंका बजवाकरमुखधोने के लिये जलमँगवाया तबतो सबको यही मालूम हुआ किहमसबअन्धेहैं बड़े अफसोसमें हुये और कहनेलगे कि जो सामने नहीं जाते तो शत्रु की सेना आकर सब लूटपाटलेगी इससे चलकरलड़ो जैसी ईश्वरकीकृपा होगी वही होगा लेजाकर सेनाका परेट शत्रुकेसामने जमायानौशेरवां ने कहा कि जो अन्धेहोते तो काहेकोलड़ने कोआते मरजूकने कहाकि किसीको लड़ने केलिये भेजिये आपही विदित हो जायगा तब नौशेरवां नेगानीसवारकोभेजा उसनेजाकरअमीरकीसेनाकेसामनेजाकर ललकारा कि ऐ अरबवासियो तुम सब अन्धे होगये इतनी देरसे पुकारता हूं कोई सुनतानहीं तबतो हरदम क्रोध से जलउठा और आकर उसका सामना करके मारडाला तब नौशेरवांने बराबर से पचास बीरभेजे सबोंको हरदमने मारा आखिर को नौशेरवांकी सेनामें घुसकर ऐसामारा कि इतने डिठियारेमें कभी नहीं मारा था तबतो नौशेरवां की सेना भाग खड़ी हुई और अति प्रसन्न होकर किलेमें आकर मुरचोंपर सिपाहियों को मुकर्रर करके किलेको बन्दकरके ईश्वरका भजनकरने लगे नौशेरवां ने पहिलेजाकर किलेमें युद्धका सामानकिया लेकिन जब किलेवालों ने तीरसेबहुतही सेनाकोघायल किया तब किलेसेहटकरघेरकरउतरपड़ा ॥

हाशम पुत्र हमज़ा और हारस पुत्र सादका अमीरके पास आना और अमीर के नेत्रों का हज़रतख़िज़रकी सहायता से अच्छा होना ॥

लेखक लिखताहै किहरदम को बहिनके पेटसेजो पुत्र हुआथा उसने उसका नाम हाशम रक्खा और सादके पुत्रका नाम हारसखांथाजबवह दोनों नौबर्षके हुयेतब दोनों में बड़ी मित्रता हुई ऐसी मित्रता थी कि साथही भोजन करते और बनमें शिकार खेलने भी साथही जाते थे आखिर को जब उनको खबर मिली कि अमीरबदाऊं किलेमेंकैदहैतब दोनोंने आकर नौशेरवां की सेनाको मारकर भगादिया तब अमीर ने जानकर कि ईश्वरसे सहायक आयाहै किलेका दरवाजाखोलकरउनको भीतर करलिया उनकाहाल बिदित होनेपर अमीर ऐसे प्रसन्न हुये कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता दोनोंको दोनों आंखों पर बैठालकर प्यार करनेलगे तब हाशमने कहा कि यहांपर हमारी सेनाको बड़ा दुःख है इससेबरोदा में चलकर बास कीजिये वहां बड़ा सुखमिलेगा अमीर ने उसी समय डंका बजवाकर बरोदा की तरफ कूच करके किले में जाकर उतर पड़े और शत्रु की भी सेना पीछे २ जाकर किलेको घेरकर उतर

पड़ी अमीर दिनराति ईश्वर का भजन कररहे थे कि एकदिन हजरत खिजर ने आकर एक पत्तेका रस अमीर के नेत्रों में टपकाकर अच्छाकर दिया तब अमीरने हजरत खिजरसे सलामकरके कहा कि मैं तो अच्छा हुआ लेकिन मेरेसरदार भी सब अन्धेहैं तब हजरत खिजर ने कई पत्ते देकर कहा कि इसी कारंग लेजाकर सबके नेत्रोंमें छोड़ देना सब अच्छे होजायँगे आखिरकारजबसबको दिखाईपड़नेलगा तोअमरूने अमीरसे कहाकि यह सब बख्तकने कियाहै आज्ञा होतो उसको इसके बदले में दण्डदूं अमीरने मनाकिया लेकिन उसने नमाना नौशेरवां की सेना मेंजाकर बावरची बनकर पहिले बख्तकके पासरहा फिर बादशाहके बावरचीखानेका दारोगा होगया तब एक दिन घातपाकर बख्तक को उठालाकर शिर काटकर गाड़लिया और शेष धड़का कबाब बनाकर लेजाकरनौशेरवांके भोजन में दिया संयोगसे एक उंगुली जिसमें बख्तक मुँदरी पहिनेथा वह बादशाहके भोजनमें निकल आई बादशाहने अंगूठो से जाना कि यह बख्तक को उंगुलीहै बावरचीसे पूछा कि यह उंगुली किसकी है उसने कुछ उत्तर न दिया तब बख्तक की खोज कराई जब उसका पता न मिला तो बुजुरुज्ज मेहरसे बुलाकर कहा कि आजयेभोजन आपके लिये रक्खा है खाजेने कहा कि मैं भोजन करकेआयाहूं तबबादशाहने कहा मैंजानता हूंकि जिसकारणतुमभोजननहींकरतेहो निश्चय है कि तूने रमलसे विचाराहोगा लेकिन हमसे खबरनहीं की खाजेने कहाकि हमलोग बेपूछीकोई बात किसीसे नहीं कहतेहैं इसे बादशाहने क्रोधित होकर बुजुरुज्जमेहर कोअन्धाकरकेनिकालदियाऔरहरमुजको गद्दी पर बैठाकरआपमदायनकोचलागया औरबुजुरुज्जमेहरने आकरअमीर से सबअपनाहालकहा औरवहांसेमक्केमेंजाकरफिरउसकेनेत्रअच्छे होगये अब हरमुजका हालसुनिये किबादशाहके जानेकेबादगद्दीपर बैठ कर ख्वाबसमुच बर्जचमेहरको तो सेनापतिप्रधानबनाया औरबख्तियारक को दूसरा वजीर बनाया परंतु बख्तियारकथोड़े दिनोंके बादऐसामुंह लगा होगया कि वे उसके पूछे हरमुजकोई कार्य न करता एकदिन हरमुजनेकहा कि कोई युक्ति ऐसीकरनीचाहिये किजिससेहमजामाराजावे बख्तियारक ने कहा कि गावलंगी बादशाह खामका बड़ा बहादुर है और वहांकेलोग मनुष्यका भोजन करतेहैं जो उसकोआमंत्रलिखें तो वह आकर हमजाको सेनासमेत नाशकरदेगाआखिरकारबख्तकने लिखकर बुलवाया जबउसनेआकर अमीर की सेनाका सामनाकिया तोप्रथमतो चालीसव्याघसवारमारेगये तत्पश्चात् जबउसनेआकरअमीरकासामना कियातो अमीरने ऐसी तलवारचलाई किवहभागकरअपनीसेनामेंखड़ा हुआ औरहरमुजसेकहनेलगा किहमहमजासेनहीं जीतसक्ते हैं लेकिन जोतुमहमजासे बचा चाहते होतो कजाबकदरमें सरपालपुचसलसालके

पासचलो वह तुम्हारी सहायता करेगा हरमुज्ञने सब से सलाह पूछी सबोंने तोजानेकी सलाहदी लेकिन स्याविसने कहाकि वहां जाकरबड़ा दुःखप्राप्तहोगा वहां न जाइये परन्तु उसने न माना आखिरकार वहां जाकर ऐसी आपदामेंपड़ा कि उसका वर्णन नहींहोसक्ता अब हमज्ञाने आकरमुसल्मानकरकेसहायताकी तबवहांसे छूटकर आनेपायेजबअमीरने हरमुज्ञको वहांसे मदायनकी तरफभेजदिया तबतो सरपाल अतिक्रोधित होकर सेनालेकर क़िलेसेनिकला अमीरनेजाकर सामनाकिया बड़ीभारी लड़ाई हुई आखिरको अमीरके हाथसे बांधागया और मुसल्मानी धर्मस्वीकारकरके अमीरकेगुलामोंमेंमिला और अमीरको अपनेनगरमेंले जाकर कईदिनोंतक मेहमानदारीकी तत्पश्चात् अमीरने सरपालसेपूछा कि कोई और स्थान यहांदेखनेके योग्यहै उसनेकहा तीनमंजिलरतिलस मातनमशैदीहै वहां चलदेखिये अमीरनेकहा जो तूने उसको देखाहोतो पहिले सबहाल वर्णनकर किसने बनवायाहै उसने कहाकि जमशैदमरने सेपहिले नगरको उजाड़कर वहांसब तरहके मनुष्यजादूके बनारक्खेहैं और एककबर खोदाकर उसीमें बैठकर सोरहा दूसरा यहहै किजंगलमें एकदामीप अलमनामजादूका बनाहै वहभीदेखनेके योग्यहै तीसरे एक देवसपेद बड़ादुष्टहै उससे सबलोग डरतेहैं देवसपेदका नामसुनकरअमीर ने कहाकि विदितहोताहै कि वह वहीदेवहै जो क़ाफमेंथा हमारेडरसे भाग आयाहै आखिरकार अमीरने जाकर पहिले तो जादूके तिल-स्मातोंको तोड़कर सरपाल औरअमरूको उसका तमाशादिखायाफिर कुयेंमेंजाकर देवसपेदको एकबारगी घेरकर शिरकाटकुयें से बाहरला कर लोगोंको दिखाया और देवजो उसकेसाथथे उनमेंसे बहुतेरे मारेगये और बहुतेरे भागगये और बहुतोंको अमीरने मुसल्मान करके कहा कि तुमक़ाफमें जाकरकरीशाकेसमीपहो तत्पश्चात् सपेददेवकाशिरलेकरकुयें के बाहर आये और सरपालको दिखाकर आखेटबन्दमें लटका दिया और आपघोड़े पर सवारहोकर वहांसे रवानाहुये थोड़ीदूरजाकर एक हरे मैदानमें शिकारखेलनेलगे और सब सन्देह मनके दूर बहानेलगे ॥

रुस्तम पीलतन का अहिरनसे मारा जाना ॥

लिखनेवाले इस इतिहासको योंवर्णन करतेहैं कि रुस्तम पीलतन ने देखा कि अमीरको गयेहुये देरहुई अबतक कुछसमाचार न मिला सो अब हम यहां बैठकर क्याकरैं इससे यह अच्छीबातहै कि जमशैद में जाकर तिलस्मात को सैरकरैं सरपालके पुत्रोंको लेकर कज़ाक़दर से सेनासमेत चलकर कईदिनोंके बादतिलस्मात जमशैदमें पहुंचा उसको टूटादेखकर मालूमकिया कि अमीर इसको तोड़कर और कहीं गये तब वहांसे सेनालेकर नगरमेंगये तो वहांदेखा कि जमशैदकी लोथ एक तख्तपरपड़ीहै औरखजानेकीकोठरीजोखोलकरदेखीतोसर्प और बिच्छू

दिखलाई पडे तबसरपाल के बेटों सेकहा कि अब बख्तक को भी चलकर देखना चाहिये उन्होंने कहाकि अहरनसेर गरदां वहां का बादशाहहै उसका एकसौ पच्चीस गजडोलहै और सबसेनाउसकोमनुष्यखातीहैहमसे वहांजाना उचितनहीं वहांसे किसीका प्राणनहींबचता रुस्तमने कहा कि मालूम होताहै वहभी सरपालके बराबरहै उसनेकहाकिवहसरपाल से कहीं बलवानहै जबवह हमारेदेशमेंआताहै हमारेपिता उसकीशंका में पहाड़पर भाग जातेहैं तबरुस्तमने पूछाकिसुरजवांकहांहैउन्होंनेकहा किवहभीवहींहै आखिरकार रुस्तमने जाकर अहरनसे लड़ाई की और कई सरदारों समेत आप मारागया उसके मार जानेके बाद अहरनको मालूम हुआ कि हमजा सेनामें नहींहै तबतो अपने किलेमें चला गया और अमीरकी सेनामें रोना पीटना मचगया आखिरकोरुस्तमको गाड़ कर अमीर का आसरा देखने लगे अमीर का हालसुनिये किजबशिकार से छुट्टी पाकर जम श्वैदमें आये तो सेना के उतरनेका पता पाकरअमरूसे कहाकि विदित होताहै कि रुस्तम यहांतक आकर बख्तककी तरफ गया ईश्वर खैरकरै मेराचित्त व्याकुल है यह कहकर बख्तककी तरफचले जब समीप पहुंचेतोजितने सरदार और पुरुष सबदेखकरचिल्ला २ कर अमीरकेकदमोंपरगिरे अमीरभीदेखकरघोड़े परसे पृथ्वीपरगिरपड़े औरइधर उधर लोटने लगे सरदारोंने देखाकिअमीरअतिव्याकुलहै सबसरदारोंने अमीर से समझाकर कहा किईश्वर की रचना अपरम्पारहै उसमेंकिसी का साझा नहीं इससे कुछदिन आपजंगलमें चलकरचित्तको स्थिर कीजि ये फिर जैसा ईश्वर करैगा वही होगा आखिर समझाकर अमीरको जं- गलकी तरफ लेगये संयोग से उसी दिन सुरजवान अहरनसे बिदा हो- कर खामको जाताथा उसने मार्गमें सुना कि हमजारुस्तमकेदुःखसे जंगल में चित्त बहलानेकेलिये सबको साथलेकर शिकार खेलने आयाहै उसने एक जादूगर को बुलवाकर घोड़ा जीन समेत तैयार कराकर उसी मार्गमें खड़ा करके आपलोगों समेत एक स्थानमें छिपकरबैठकरदेखने लगाइत नेमें साद उसीतरफ से घोड़ेपर सवार निकला उसने घोड़ेकोदेखकरअ पने घोड़ेपरसे कूदकर उसपर सवारहोकर एककोड़ामारा तोवहघोड़ा वहां से वायुसे अधिकभागा आखिरको सादने तलवारनिकालकरघोड़े को मारडाला तो घोड़ासाद समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा सुरजवानने दौड़ कर सादको बांधलिया और खामकी तरफ चला जिससमय गवलीके स- मीप पहुंचा सादको हाजिर करकेकहा कि देखिये यह हमजाकापोता और मुसलमानी सेनाका बादशाह है कि सतौर से मैं बांधलायाहूं साद ने कहा ऐवगली यहतो कहताहै कि मैं बांध लायाहूं सो हमारा इसका सामना हो आपही झूठ सत्य विदित होजायगा आखिर को दोनों से लड़ाई हुई सादने उठाकरसुरजवानकोपृथ्वी परदेमारा तब सुरजवानने

फिर उठनेकी इच्छाकी इतनेमें गावलंगीने उठकर मार डाला; और साद्को गलेसे लगाकर अपनी बगलतख्तपर बैठाया और कहा ऐ पुत्र किसी प्रकारसे सन्देह न करो मैं तुझको विदाकरदेता लेकिन इसकारण मैंतुझको यहां रक्खूंगा कि हमजा तेरेलिये यहां आवे तो मुझसे भी मुलाक़ात होजायगी साद गावलंगीकी मोहब्बत देखकर अतिप्रसन्नता से रहनेलगा बदीउज्जमांने जो साद्कोघोड़ेकोखालीऔरजादूकेघोड़ेको मुआदेखा तो अति व्याकुल होकर इधरउधर उठनेलगा जबकहींनपता मिला तोकहा कियिदितहोताहै कि मरजवाननेयहदुष्टपनाकियाहोगा आखिरकार ढूंढ़ते २ मार्गमें गावलंगीके दोहामादोंकोमारताड़आगा वलंगीके नगरमेंपहुंचा तोउसकोभीएकपत्रलिखाकिसादहमारामतीजा तुम्हारेपासहै जोअपनाभलाचाहतेहोतोउसकोहमारेपासभेजदोहरदम ने पत्रलेजाकरदेखा कि गावलंगी और साद एकही तख्तपर बैठेहैं हर-दमगावलंगीको देखकरबड़े आश्चर्यमेंहुआकिईश्वरनेऐसामनुष्यभीसंसार में पैदाकियाहै गावलंगीने हरदमको देखकर अतिनमतासे कहा कि भाई अच्छेताहो यह कहकर अतिनमतासेउससेकहा कि जैसेबदी उ-ज्जमांने मेरे दोहामादोंकोमाराहैपरंतु मैं हमजासे वैसाबदलानहींले सक्ता हूं हरदमगावलंगी की बातें सुनकर अपने चित्तमें अति लज्जित हुआ कियहतो ऐसीबातें करताहै और पत्रमें और तरह से लिखा है लेकिनलाचारहोकर पत्रदेकर सब संदेशा उससे कहा गावलंगीने पत्र कोपढ़कर संदेशाकहा कि मैंने आपकोकौनसा दुःखदिया है जो आपके चचा साहबने यहपत्रलिखाहै साद्ने कहाकि उनकोयह क्यामालूमकि-सतरहसे आपसुझसे सन्मुखहोतेहैं गावलंगीने कहा हां यहभी आपसत्य कहतेहैं तब हरदमको खिलअत देकरकहा कितुम जाकरबदीउज्जमां से हमारासलामऔरहमारीतरफसेकहनाकिसत्यहै मुरजवानसादकोदगा देकरपकड़लायाथा सोहमने उसको मारकर साद्कोअमीरके आनेतक मेहमानरक्खाहैसोआपभीउतरकरशिकारखेलियेऔरअमीरकेआनेतक हमारेमेहमानरहिये औरजोलड़नेकीइच्छाकरोगेतोउसकाफल अच्छा न होगालेकिनबदीउज्जमांने नमाना युद्धकाडंकाबजवाकरसामनाकिया आखिरको जबशिरबरहनातपशी दोनोंभाईमारेगयेतबगावलंगीने बड़ा अफसोसकिया और दोनोंकी लोथउठाकर बदीउज्जमांके आगे लाकर रखकेकहा कि अबजो हुआ सोहुआ अबभीहमजाके आनेतकचुपचाप बैठेरहोनहींतोमुझकोमारनेकी इच्छाहोतो मैं हाजिरहूंबदीउज्जमां ने कहा कि मैं जल्लादतो हूं नहीं कि तुझेमारूं हथियार बांधकर आ हमारीतेरीलड़ाईहोतूभीमेराबलदेखे गावलंगी हथियारलेकर शाहजादे के सामने आया तबभी मनाकरतारहा लेकिनकौनमानताहै आखिरको गावलंगीनेतीनवारबराबरकियेतीनोंको अमीरजादेनेएकगदाऐसीमारी

कि गावलंगीकी सवारीका बैलमरगया औरगावलंगी भी व्याकुल हो-
गया तबतो गावलंगी बदीउज्ज़मांकीबड़ीप्रशंसाकरनेलगा औरसायंका-
लतकदोनोंमें गदा और तलवारचलाकी यहहाल अमीरकोपहुंचा कि
मरजवानसाद को उठालेगया है और बदीउज्ज़मां उसकीखोजमेंखाम
तक पहुंचे यह सुनकर अमीरने अमरूसे बुलाकर कहा कि मैंतो बेअह-
मरके मारे यहांसे कहीं हटनहीं सक्ता तुमजाकर हालखावो अमरू
वायुके समानवहांसे उड़कर अतिशीघही खाममें पहुंचादेखा कि गाव-
लंगी और बदीउज्ज़मांसे लड़ाईहोरहीहै सेनाके सरदार देखकर दौड़
कर अमरूसेमिले गावलंगी अमरूको देखकर लड़ाईसे हटकर अमरू से
बातें करनेलगा अमरूने कहाकि ईश्वरकी कृपासे आप छोटे बहुत हैं
इससेबातें नहीं सुनाईदेतीं समीप आवोतो आपकी बातों को सुनूं यह
कहकर कूदकर उसकी छातीपर जाबैठा औरकहाकि मैंने तेराबड़ानाम
सुनाहै लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि अमीरके लड़कोंसे लड़तेहो
उसनेकहा कि मैंने कुछ नहीं किया मेरीबातोंका सब अमीरकी सेना
गवाहहै अबतुमआयेहो बदीउज्ज़मांको ईश्वरकेलिये समझादें कि वह
अमीरके आनेतक चुपचापरहे मुझको अमीर से लज्जित न करावे तब
अमरूने अमीरज़ादेकोसमझाकर मैदानसे फेरदिया औरआपगावलंगी
के साथ उसके क़िलेमें गया वहां जाकर गावलंगी से लौटने की इच्छा
की परंतु उसनेन माना और कहाकि आजहमारेयहां मेहमानरहिये
और अपना कुछ तमाशादिखाओ मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनीहै यह
कहकर साद और अमरूको साथलेकर भोजनकिया और शराब और
क़बाब खापीकर कहा कि तुममें सब अच्छाहै केवल एक बुराईहै कि
तुम अपनीदाढ़ी क्यों मुड़ातेहो तुमको लोगोंके सामने लज्जा नहीं
आतीहै अमरूने कहा कि सातसौ अशरफी आप भी दाढ़ी की बन-
वाई भेजदीजिये नहीं तो दाढ़ी आपके मुखपर न रहेगी गावलंगी ने
कहा तब मैं तुझको मर्द जानूं जो तू मेरीदाढ़ी मूड़ले मैंकिसी प्रकार
से क्रोधित नहुंगा अमरूने कहा कि आपकी दाढ़ी मूड़ना कुछ कठिन
नहींहै बहुतअच्छा आजमैंराचिकोआपकीदाढ़ीमूड़ूंगाखबरदाररहिये
आखिरकार राचिकोअमरूने आधीदाढ़ी मूड़करजगाकरदूरसे सलाम
करकेकहा किआईनालेकर मुखदेखिये उसनेजो देखातो आधीदाढ़ी
मुड़ीपाई अति लज्जित होकर कहनेलगा कि कोई युक्तिऐसी करो कि
सबदाढ़ी बराबर होजावे तब अमरूने वह भी आधीमूड़कर झारे से
एक दाढ़ी निकालकर जमादी और कहा कि जबतक गर्म जलसे
दाढ़ी न धोवोगे तबतक इसी प्रकारसे रहेगी गावलंगीने आईनालेकर
देखातो असलमें वैसही मालूम हुआ जब प्रातःकाल हुआ गावलंगीने
सातसौ अशरफी खिलअतपर अधिककरके अमरूको देकर बिदाकिया

अमरूने वहांसे आकर बदीउज्जमां को अच्छीतरहसे समझा दिया कि जबतक अमीर न आवें तबतक तुमगावलंगीसे सामना न करना यहकह कर अमीरके पास रवानाहुआ कईदिनों केबाद पहुंचकर सब हाल अमीरसे कहा अमीरनेदोनों पहलवानोंके लिये बड़ी गमीमनाई प्रातःकाल को अहरनशेरगरदां डंकाबजवाकर मैदान में आया और ललकारनेलगा तब अमीरनेभी जाकर मैदानमें उसका सामना किया उसने अमीरपर एकवारचलाई अमीरने उसको रोककरकहा किदोवार औरकरले तबउसने झुलझुलाकर दोवार ऐसेकिये कि अश्वकर व्याकुल होगया तब अमीरने एकही वारमें उसकेघोड़ेकोमारा और आप भी अश्वकरपरसे कूदकर उसके सामनेगया थोड़ीदेरतक गदाचली जिससे पृथ्वी हिलगई फिर तलवार चलनेलगी इसीप्रकारसे तीन दिन तक युद्धहुआ चौथेदिन अमीरने शब्दकरके शिरपर उठालिया और घुमा कर पृथ्वीपर दैमारा और अमरूसेकहा कि इसको बांधलो अमरू बांधकर लेगया और अमीर तलवार लेकर उसकी सेनामेंगया जो मुसल्मानहुये उनको छोड़कर बाकियोंको मारडाला लोगोंने अमरू से कहाकि अमीर इसको न मारेंगे तुममारकर रुस्तमका बदलाले लो अमरूने लोगोंके कहनेसे उसके कानमें शीशागर्म करके डाल दिया वह मरगया इसीप्रकारसे सब तरहसे वहांका नाशकरके कईदिनों के पश्चात्चलकरखाममें पहुंचे गावलंगीने अमीरकेआनेकीखबरपाकरसाद कोखिलअत और बहुतसी सौग़ात देकरअमीरकेपास भेजदियाअमीरने सादकोगलेसे लगाया और गांवलंगीकी कृपा करनेपर अतिप्रसन्नहुये प्रातःकालगावलंगी डंकाबजवाकर मैदानमें आकर खड़ाहुआ अमीरभी जाकरसामने खड़ेहुये लेखकलिखताहै कि इक्कीसदिनराचि ऐसी लड़ाई दोनोंसेहुई किजिसका वर्णननहींहोसक्ता बाईसवेंदिनअमीरने गावलंगी सेकहाकि सबप्रकारकी लड़ाईहोचुकी अबतुम हमारा पैरउठावो हम तुम्हारा जो उठालेवे वहउसकेआधीन होकरदूसराहेगावलंगीने अतिप्र सन्नतासेस्वीकारकरकेकहा कि हमजा इसमें तुमबहुतचूके अमीरने कहा अच्छादेखाजायगा देखेंकौन लज्जितहोताहै तबगावलंगीने इसप्रकारसे बलकिया कि अंगुलियां टूटगईं औरकानोंऔर नेत्रोंसे रुधिरगिरने लगा आखिरको छोड़करकहा कि मुझमें इससेअधिक बलनहीं है तब अमीर नेकहा अच्छा खबरदारहो हमउठातेहैं यहकहकर एकशब्दऐसाकिया सोलहकोशतक के पहाड़आदिक हिलगयेऔर एकबारगी गावलंगीको उठाकरपृथ्वी परटखकर अमरूसे कहाबांधले उसने कहा मैंतो आपही बँधाहूं तब अमीरने उसकोमुसल्मान करके छातीसे लगाकर सेनामेंजा-कर सबसरदारोंसे अधिकप्रतिष्ठाकीऔर सबसरदारोंसे मिलाकरअपने साथबैठाकर भोजनकराया तबगावलंगीने अमीरको पुत्रों औरसरदारों

समेत अपने क़िलेमें लेजाकर चालीसदिन तक मेहमानदारी की॥

अमीरका बख़्तरको जाना और वहांके बादशाहकारबबख़्तरको मारना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरने मेहमानदारीकेबाद गावलंगीसेपूछा कियहांसेनिकटकौननगरहै उसनेकहाकिबख्तरनगरअतिसुशोभितस्थान है लेकिन वहांका बादशाह कारबबख्तर बड़ापहलवान एकसौ साठगज काडीलहै औरमनुष्योंका आहारकरताहै वहजब हमारे नगरमेंआताहै हम उसके डरसे पहड़ापर भागजातेहैं और वह जादूगरभीहै अमीरने कहामैंतोजादूगरोंऔरमनुष्यभक्षी औरअग्निपूजकोंकाशत्रुहूंअबवेदूसके मारे मुझेचैन न होगी बुजुरुजमेहरको कहावतमेरा फराशधर्म उपनाम है यह कहकरगावलंगीसेकहा कि अच्छाअबहम जातेहैं गावलंगीनेकहा ऐअमीर जीतेजी अबआपअपने निकटसे अलगनकीजिये अमीरनेकहाजो ऐसाहोतोमेरेसाथचलो तब गावलंगीअपने पुत्र कमलगावलंगीकोअपना स्थानपतिकरकेअमीरकेसाथचला थोड़ेदिनोंमें बख्तरकेसमीपपहुंचकर चारकोशके फांसलेपर उतरकर बख्तरकोएकपत्रलिखा किऐकारबबख्तर यहां आकर मुसल्मानहोकर मेरेआधीनहो नहींतो ऐसीख़राबी से तुझको मारूंगाकिजीवजन्तु तेरेलिये दुःखपावेंगे जबअमरूपुत्र अम्बियाने पत्रलेजाकरदियाउसनेथोड़ासापढ़कर आज्ञादी कि यहजाने न पावेइसके लानेवालेको पकड़लोअमरूने टोपीझाड़करशिरपररक्खी औरकारबके शिरपरएकथप्पड़मारकरटापीशिरसेलेकरअमीरकेपासआकरसब हाल वर्णनकिया अमीरनेरात्रिको शराबपीनेमेंकाटी प्रातःकालकारबनेजबआ करमैदानमेंडंकाबजवाया तोअमीरनेभी जाकरसामनाकियाआख़िरको कारबमारागयातत्पश्चात्उसकीसेनाकोमारकरनगरकोलूटकर अराश नगरमेंआयेतोवहांकेबादशाहआराशने क़िलेसेनिकलकरअमीरकासाम-नाकियाअमीरने देखाता १८० गजका उसकाकदहैऔरएकभयानकरूप है जिससमय उसने अमीरके ऊपरगदा चलाई अमीरकूदकर दूसरीतरफ चलेगये तो गदाउसकी पृथ्वीपर जितनी दूरमेंगिरी उतनी पृथ्वी धसगई उसने झुककरचाहा किगदा उठाकरफिर अमीरकोमारे इतनेमेंअमीर ने एकतलवार ऐसीमारी कि वह दोभागहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना उसकी यहहाल देखकरक़िलेमें भागगई तब अमरूने सुरंग लगाकर उस क़िलेकोभी उड़ादिया जितने मनुष्यभक्षकथे सबकोयमपुरीमेंपहुंचाया॥

अमीरका नेस्तान की तरफ़जाना और वहांके बादशाह को मारना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरने आराशको नाशकरके गावलंगी से पूछा कि अब इसके आगे कौननगर है उसनेकहा एकअति सुशोभित नगर नेस्तानहै और वहांके स्वामीकानाम सगंदाजखूनखार नेस्तान है उसकाडील१९० गजकाहै और उसकी सेनाभी अधिकहै और बड़े २ बहादुर सरदारहैं और क़िलाऐसा पुष्टबनाहै कि जिसमें मनुष्य तो क्या

जीव जन्तु भी जानेका रास्ता नहीं पाते और पृथ्वीसेऐसीलवनिकलतीहै कि पहाड़ जलतेहैं लेकिन अमीरने इनबातों का कुछ विचार न किया नेस्तान की तरफ कूचकरके चले जब उस स्थानपरपहुंचेतोअमीरकीसेना गरमीके मारे आगेनबढ़सकीबहुतसेलोगमरनेलगेउससमयअमीरने खाजे खिजरकी कमंद निकालकर पृथ्वीपर फैलादीऔरकहा किइसीकोपकड़ करसबलोगचलेआवो अबकुछनडरो लिखनेवालालिखताहै किसबसेना उस नदीमें जल करमरगई केवलएक सरदार ऊंटपरसवारऔर३००सौ सिपाही कमन्द पकड़कर नदीसे पारउतरे बड़े दुःख सहने के बादनगर नेस्तानके समीप पहुंचे वहांकाबादशाहअमीर कानाम सुनकरजातेही सेना लेकर सामनेआया औरअमीरपरखड्गमारनेलगा यहांतककिबहुत से जवान अमीरके मारेगये तबतो अमीरव्याकुलहोकरदोनोंहाथोंमेंतल वारलेकर इसप्रकारसे उसकी सेनामें घुसकर मारने लगे कि जिस तरह व्याघ बकरियोंके झुण्डमें घुसकर मारताहै यहांतक कि खूनखार मारेगये किउनके रुधिरसेएकनदीबही आखिरकारनेस्तानसंगर्न आकरअमीरके शिरपर एक तलवारमारी अमीरने उसकोरोका औरजबवहगदाउठाने लगा तो अमीरने कूदकर एकतलवार ऐसीमारी कि उसकेचारोंपैरकट कर अलग होगये तोएकतलवारदूसरीमारकरशिरकोकाटकर पृराकर दिया और जो किलेमेंथे उनकोसुरंगलगवाकरउड़वादियाऔरकहाकि मैंने बुजुरुच मेहरसेसुनाथा कि जुलमातसेकेवल १० सिपाहीबच कर आवं गे औरअब ११ हैं नहींमालूमकिकौनमरेगा यहकहकरअतिदुःखितहुये लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरने गावलंगीसेकहा कि हेमित्र लाख सवार हमारे साथथे उनमेंसे केवल ११ हैं इनके मरनेसेमुझको बड़ादुःख हुआ अबबतावो किइसके आगे कौन नगरहै उसने कहा कि यहां से थोड़ीदूरपरआरोबेलनामेनगरहै वहांकेखामीकानामआरदपीलदन्दां और मुर्जवान पीलदन्दां और उसके आगेजरदेहस्तजादूकातिलस्मात है वहां अपूर्व २ तरहकी वस्तुहैं तब अमीर वहां से चलकर आरद वेलमें पहुंचे वहांके खामी को सेनासमेत मारकर चलकर जरदस्त जादूगर के तिलस्मातमें पहुंचे तो एकचारदीवारी दिखाई पड़ी और उसकेभीतर एक गुम्मद दिखाई पड़ा तो उसमें से गानेबजाने का शब्द सुनाईपड़ा तब अमीरने गावलंगीसे कहाकि इसमें मनुष्य मालूम होतेहैं कि गाने बजानेका शब्द सुनाई देताहै उसने कहा यहां मनुष्य नहींहैं यहां सब जादूहै तब अमीरने कहाकि तुम सबसे बड़ेहो जाकर देखोतो क्या बात है गावलंगीने जाकर जो दीवारसे झुककरदेखा तोएकबारगी चिल्लाकर दीवार के भीतर कूदपड़ा इसीतरह से सब देख २ करभीतरकूदगये तब अमीर अति दुःखित होकर सोगये तो देखा कि आकाश से एक तख्त उतरा उसपर एक वृद्ध मनुष्य बैठा था उसने आकर अमीर से कहा कि

ऐ पुत्र दुःखित क्यों होतेहो इस गुम्बद पर एकसपेद मुर्ग बैठाहै उसको तीर से मारो जादूका नाश होजावेगा यहकहकर तोतातो आकाशकी तरफ उड़गया और अमीरकेनेत्रजोखुलगयेतो देखाकिगुम्बदपरएकसपेद मुर्ग बैठाहै अमीर ने तीरसे उसको मारा उसक गिरतेही तिलस्मातटूट गया लोगजो उसके भीतर थे सब आपही अमीरके कदमों पर आकर गिरे अमीरने सबसेमिलकर ईश्वरकाधन्यवादकिया उनलोगोंसेजोवहां का हाल पूछा तो उन्होंनेकहा कि एक ऐसी खरूपवानयुवास्त्रीदिखाई पड़ी कि जिसके देखनेमें हमलोगव्याकुलहोकरकूदपड़े थे अमीरने कहा कि गुम्बदका दरवाजा खोलकर देखोतो इसके भीतरक्याहै परंतु उनमें कोई न खोलसका तब अमीर ने जाकर दरवाजे को तोड़ा और भीतर जाकर देखा तो गुम्बदमें एक ताबूतलटका था उसको उतार करखोला तो जरदिहस्तजादू की लाश और एक किताब मिली अमीर ने उसको जलादिया लेकिन दोचार पत्र अमरूने चुरालिये थे वही जादू अब तक दुनियामें है तत्पश्चात् उसकी लोथ किताबसमेत जलाकरतिलस्मातके किनारे आये तो यारोंसे कहाकि आजसब कोईपहरादो बारी २ सोना यह कहकर आदी को पहिले पहरेपर बैठाया तो सामने से एक हिरन आया उसको मारकर खानेके लिये पकाने लगा इतनेमें एक बुढ़िया स्त्री आकर दांत चबाने लगी तब आदीने कहा सत्यबता तूकौनहै उसनेकहा किमैं एक सौदागर की स्त्रीहूं मेरेपुरुषको व्याघ्रने मारडालाहै मैं तीन दिनसे भूखीहूं थोड़ा सा मांस मुझको भी दे उसकोजोदयाआईतोउठ कर डेकचेसे मांसनिकालनेके लिये झुका इतनेमें बुढ़ियाने उठकर एक थप्पड़ मारकर आदीको बेहोशकरदिया औरमांसखाकरचलीगई यही हालअख्तर औरलंधौरका भी हुआ आखिरीपहरा जबअमीरकाहुआ तो अमीर ने भी हिरनका शिकार करके पकाया तबवही बुढ़ियाआकर मांगने लगी तो अमीर ने उसके मुखसे मांसकी सुगन्धपाकरजानाकियह चुड़ैलहै उठकर एकहाथमें तलवार लेकर एकहाथ से मांस उसके लिये निकाल ने लगे इतनेमें उसने चाहाकि मारकर बेहोशकरे कि अमीर ने दूसरे हाथसे एक तलवार मारकर दो टुकड़े करदिये पृथ्वीपर गिरतेही वहएक तरफको भागी अमीरने उसका पीछाकिया देखाकि वहशिर एककुयेंमें गिरपड़ा अमीर उसीकुयें पर खड़े होगये इतनेमें सब लोगभी पहुंच गये अमीरने अमरूसेकहा कि ढालमें कमन्दको बांधो हमइसकुयें में जावें अमरूनेकहा कि आप जगतपर खड़े रहिये मैं जाकर हालले आता हूं यह कह कर अमरूकुयेंमें गया वहांजाकर देखा कि वहशिर एक सुवर्णके पात्रमें एक अति खरूपवानस्त्रीकेसामनेरक्खाहै और वह स्त्री रोरो कहरही है कि मैंने मनाकियाथा कि हमजाके पास न जा आखिर तूने अपना प्राण दिया और मुझको भी दुःखमें डाला अमरूने

यह सुनकर कमन्दको फेंककर उसको बांधलिया और अतिशीघ्रशीघ्र सिर समेतलाकर अमीरके पास रखकर सब हालसुनाया अमीरने पूछा कि तूकौनहै और वह बुढ़िया कौनथी उसने कहा कि मैं जरदस्तकी बेटीहूं और वह माताथी तब फिर अमीरने पूछाकि तू अकेली क्यों है उसने कहाकि दो बहिन मेरी सेनासमेत तिलस्मातमें रहतीहैं वे इसकेमरने का हालसुनकर आकर तुमसे यथाशक्ति युद्धकरेंगी तब अमीरने उसको अमरूको सौंपकर कहाकि इसको बड़ी खबरदारीसे रक्खो इससे गाफ़िल न रहना वह रात्रितो बीतगई प्रातःकाल होते उसीकुयें से जादूगरों की सेनानिकलकर मैदानमें उतरी और उससेनाके सरदार जरदहस्तकी दो बेटियांथीं एकका नाम गुलरुखथा और दूसरी का फर्रुखथा और उनकी एकदाई जादूमें प्रचण्डथी उन्होंने उसीकोजादू करनेकी आज्ञादी एकदिन अमीरने उसलड़की से पूछा कि तेरी बहिन मुझसे क्यालड़ेंगी उसने कहाकि वह लड़तो नहींसक्ती लेकिनजादूसेआप को खराबकरेंगी तब अमीरने अमरूसेकहा कि तुम इसलेजाकर किसी प्रकारसे पूछो कि जादू क्याचीजहै और किसतरहसे बनताहै अमरू ने लेजाकर अनेकप्रकारसे उससेपूछा लेकिन उसने न बताया तब उसको मारडाला और अमीरसे आकर कहाकि मैंने तो उसको मारडाला लेकिनमैं जाकर किसीसे पूछ आताहूं यहकहकर जादूगरोंकी सेनाकी तरफचला मार्गमें जादूगरकी सेनाका एकसवार मिला उसको मारकर अपनीसूरत उसीतरफकी बनाकर सेनामेंगया कि अपना कार्यसिद्धकरे जबराचिड़ई तो चौकीके लोगोंकेसाथ फर्रुखके पलंगकी चौकी देनेगया संयोगसे एक जादूगरने फर्रुखसेआकरकहा कि आजकईदिनोंसेदाईह-मजाकीसेनापर जादूकररहीहै लेकिन कुछ मालूम नहींहोता फर्रुखने कहाकि कलशामतक जादूतैयारहोगा तबतमाशा देखना हमजाकीसेना में एक मनुष्यभी न बचेगा यहसुनकर अमरूने प्रातःकाल अमीरसेआकर कहाअमीरने कहाकिकोई ऐसीयुक्तिकरो कि उसीकी सेनापर जादूपड़ें आखिरकारअमरूनेजाकर उसदाईकोमारकर जादूगरोंकीसेनापरजादू फेंककरनाशकरदिया सबखेमे और असबाबजलादिया कोईवस्तु रहनेन पाई तत्पश्चात्थोड़े दिनोंकेबादअमीरनेगावलंगीसेपूछाकिअबकोईऔर स्थानबताओ उसनेकहाकि अबसबपापी मारेगये अबथोड़े दिनोंतकचल करखाममेंआरामकीजिये आखिरकार अमीरवहांसेचलकरखाममेंआये गावलंगीने कईदिनोंतक मेहमानदारीकी उसके पश्चात् एकदिनअमीर यारोंसमेत शिकारखेलनेगये तो एकहरिन बदीउज्जमांके आगेसेभागा उसने पीछाकिया भागते २ वह एकहौजमें कूदपड़ा बदीउज्जमांभी कूद पड़ा उसके पीछेअमीरभी यारोंसमेतकूदे उसमें जाते अमीरने देखा कि एक बड़ाभारी मैदानहै और न कहीं हरिन है न बदीउज्जमां अमीर

दुःखित होकर कहनेलगे कि ७१ मनुष्यथे जिसमेंसे एक और गया अब सत्तर हैं यारों ने कहा कि यह ईश्वरकी रचनाहै इसमें सिवायचुपरहने के कुछ चारा नहीं है ॥

अमीरका मक्केकीतरफ जाना और हज़रत सालिम से मिलकर एक स्त्रीके हाथसे अशकर समेत मारा जाना और वृत्तान्त का पूराहोना ॥

लेखकलोग इस अमृतरूपी वृत्तान्तकोयोंवर्णनकरतेहैं कि जबअमीरका चित्तस्थिरहुआ तो गाँवलंगीनेकहा कि आपने कहाथा कितुमकोमक्केमेंले चलकरपैगम्बरअलेहुस्सालिमसेमुलाक़ातकरावेंगेसोअबचलिये तबअमीर सबको साथलेकर मक्केकी तरफचले कुछ कदरमें जब पहुंचेतोसरपाल पुच दालाअमीरकोयारोंसमेतअगुवानी मिलकरअपनेनगरमेंलेजाकरकई दिनोंतक मेहमानदारीकी उसीसमयमेंसरपालकेपिताका बैकुण्ठवास हुआ तब अमीर ने उसको सबक्रियाकर्मकरवाकरसरपालकोसमझाकर तख्त पर बैठाकर मक्के की तरफ चले थोड़े दिनोंमें चलकर मक्के मेंपहुंचे गावलंगीऔरसबयारपैगंबरके कदमोंपरगिरकर मुसल्मानहुये तत्पश्चात् एकदिन सब बैठेथे कि एक दूतने आकर कहाकि मिश्र,रूम, और शामके बादशाह बड़ीसेनालेकर युद्धकरनेकी इच्छासेआयेहैं तब हज़रतनेहमजा कोसेनासमेत कोहबुकवर्लास पर भेजा तत्पश्चात् आपभीगये शत्रुने सेना की परेट जमाई अमीर ने गावलंगी को उनके सामने भेजा तब एक बड़े पहलवानने आकर गावलंगीकोललकारा गावलंगीने उसको पृथ्वीसेउठा कर घुमाकरदेमारातोवहमरगया इसीप्रकारसे कईवीरगावलंगी केहाथ से मारेगये तबशत्रुकी सेना ऐसी लज्जितहुई किकोईगावलंगीकेसामनेन आया आखिर शहजादहिन्दने आकरगावलंगीकासामनाकरके समाप्त किया अमीर उसके लिये दुःखित होकर आपही उसके सामने गया और गावलंगीके बदले में उसको भीमारा और उसकीसेनामेंव्याघकेस-मानधसकरसेनाकानाशकरदिया और जोबचेवेभागगयेतबपैगम्बरअमीर को अति प्रसन्नताकेसाथलेकरमक्के मेंआये लेखकलिखताहै कि पुरहिन्दी की माता अपनेपुत्रकामरनासुनकरशाहनशाहहिन्दरूम,शाम,चीन,जबस जंगवार और तुरकिस्तान का बड़ीभारी सेनासमेतमदायनमेंआकरहर-मुजको साथ लेकरमक्के मेंआई तबजनाबरिसालतपनाहसलीमने सुनकर कहा कि हमाराचचाहमजादूनसेनाओंकेलियेअकेला बहुतहै यहकहना जनाब अहदियतकोबुरामालूमहुआ जबजाकर शत्रुके सामने खड़े हुये तो हरमुजने कहाकि इनसे एक २ लड़ने मेंनजीतोगे एकबारगीघेरकरमार लो यह कहते हरमुज की सेना एकबारगीमुसल्मानीसेनापरटूटपड़ी तो उसीमें लन्धौरसादपोताहमजाआदीअक़रबआदिसरदारमारेगये और एकदांत जनाब रसालतपनाह का टूटगया यह सबखबरअमरूने जाकर अमीरकोदी अमीरसुनतेही घोड़ेपर सवारहुये और शत्रुओंकोमारते २

हरमुज़तकपङ्के वहहमज़ाको देखकर तख्तपरसे भागा अमीरने उसका पीछाकिया मार्गमेंहज़ारोंकोमारतेहुये चारकोशतकचलेगये जिससमय लौटे मक्केकीतरफ आतेथे मार्गमें हिन्दमारपुरने जोछिपी बैठीथी निकल कर एकतलवार अशकरकेमारीकिचारोंपैरकटगये अमीरअशकर समेत पृथ्वीपरगिरे उसने फिरकर एकतलवारसे अमीरकाशिर अलगकरदिया औरपेटफाड़करकलेजानिकालकरखागई औरलोथकेसत्तर ७० भागकर दियेतत्पश्चात् जब उसकोहोशआया किक़रीशाहमज़ाकीबेटी जबअपने पिताकेमरनेकीख़बरसुनेगीतोवहसब देवोंकीसेना साथलेकरआवेगीतोमैं क्याउसको उत्तरदूंगी यहविचारके हज़रतसालिमके समीपजाकर उनके पैरोंपरगिरकेमुसल्मानहोकर अपराधकोक्षमाकराके हज़रतको अमीर की लाशकेस्थानपरलाई हज़रतसालिमने अमीरकेशरीरके टुकड़ोंको इ-कट्ठाकरके सबपरपृथक् २ निमाज़ पढ़ी और उससमयअंगूठोंके बल हज़-रतखड़ेथे लोथगाड़नेकेपीछेलोगोंने हज़रतसेपूछा किआपनिमाज़पढ़ती समयअंगूठोंकेबलसेक्योंखड़ेथेउन्होंनेकहाकिफरिश्तोंकेमारे खड़ेहोनेकी जगहनथीऔरमक्केकेमोलवीनेहरटुकड़े परसत्तरबारनिमाज़पढ़करलोगों के सामने अमीरकी अतिप्रतिष्ठाकी आखिरको जब हमज़ाको गाड़कर हज़रत औरहिन्दाहज़रतसालिमकेपासआयेतोउन्होंनेहिन्दाकीतरफ से मुखफेरलियातबउसनेकहाकिआपआशकापरतो देखियेहज़रतने शिर उठाकरदेखातो अमीरतख्तपरबहिश्तमेंबैठेहैं औरगुलामसबहाथजोड़े खड़ेहैंतबतो हज़रतसालिमने ईश्वरकाधन्यबादकिया तत्पश्चात्क़रीशा सेनासमेतहज़रतसालिमकेपासआकरअपने पिताके मारनेवालेको बुला या हज़रतसालिमनेअमीरकातख्त बहिश्तमेंदिखलाकरकहाकि आपके पिताजोइसकेहाथसे न मारेजाते तोकाहेको इसप्रभुत्वकोप्राप्त होते इससे हमारेकहनेसे अबतुमबदला न लो लेखकलिखताहैं कि उसीसमयमें १६ फरिश्तोंनेआकरक़रीशाकोसमुझायाथा आखिरकारहज़रतसालिमकी आज्ञानुसारकरीशा अपनेदेशको सेनासमेत पलट गई ॥

अमीरकेशरीरके ७० भागहोने और हज़रतके दांतटूटनेकेदो कारण लोग कहतेहैं ॥

१——जब कि हज़रत ने बेकलमा पढ़े कहा था कि इस सेना के लिये मेरा चचा हमज़ा अकेला बहुत है ॥

२——एकरात्रिको आशिपरजा अपने कपड़े सीरही थी हज़रतउस तरफनिकले संयोगसेउसकी सुईसे तागानिकलगया हज़रतहँसपड़े उनके दांतोंकीचमकसे आशिपरजाने सुईमेंतागा डालदियाहज़रतने कहाकि मेरेदांतऐसेहैं कि उनकी चमकसे तुमनेसुईमें तागाडालदिया यह बात हज़रतकोनापसंदआईइससेदांतउनहज़रतकेटूटगये उसीलड़ाईमें हज़-रत अमीर के पैरमें तीर टूटकर रहगया था अनेक प्रकारसे जरीहों ने

निकाला लेकिन निकलनहींसका जिस समय निमाजपढ़करध्यानकरने लगे हजरतसालिमने पहलवानोंसे कहा कि अली रजाके पैरमेंसे तीर निकाललो पहलवानोंने जाकरनिकालालिया लेकिनहजरतको कुछमालूम न हुआ निमाजपढ़नेकेबाद रुधिरदेखकरपूछा कि यह रुधिरकैसाहै सेवकोंनेसबहाल कहकर पूछाकि क्या आपको नहींमालूम हजरतनेसौगन्धखाकर कहाकि मुझेसत्यनहींमालूम कि यहतीर कब लगाहै ॥

ईश्वरहूसलेखकका प्रभुत्वसंसारमेंबढ़ावे कभीकिसीकाआश्रित न करै और अपनी अनुग्रहसे सत्यअसत्यका अपराध क्षमाकरके अपनी सेवकाई में संयुक्त रक्खे ॥

इतिचतुर्थ भागः समाप्तः ॥



नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
काव्य	लावनी	कथा सत्यनारायण स०	दिल लगन
सूरसागर	**क़िस्सा वग़ैरह**	ज्ञान आभूषण	**ज्योतिष भाषा**
कथा सागर	नानार्थ नौ संग्रहावली	हनुमान बाहुक	जातक चन्द्रिका
विश्राम सागर	ब्रह्मसार	जनक पच्चीसी	जातकालंकार
प्रेमसागर	शिवसिंह सरोज	हरिहर सगुण निर्गुण	देवज्ञा भरण
ब्रजविलास बड़ा	भक्तमाल	पदावली	ज्ञान स्वरोदय
ब्रजविलास छोटा	इन्द्रसभा	बनयात्रा	रमल सार
कथाप्रिया	विक्रम विलास	कायस्थ वर्ण निर्णय	रमल नौरत्न
विजय मुक्तावली	बैताल पच्चीसी	विहार वृन्दावन	इन्द्रजाल
उपदेश चन्द्रिका	सिंहासन बत्तीसी	समर विहार वृन्दावन	**संस्कृत की पुस्तकें**
मंगल विनोद	पद्मावती खण्ड	कल्प भाष्य	लघु कौमुदी
विजय चन्द्रिका	शुक बहत्तरी	लक्ष्मी सरस्वती सम्वाद	सिद्धान्त चन्द्रिका
सिद्धान्त संग्रह	बकावली सुमन	रसायन प्रकाश	भाषा तत्त्व प्रकाश
राम विनय शतक	चहार दरवेश	**दरसी**	पञ्च महा यज्ञ
अनेकार्थ	क़िस्सा हातमताई	अक्षरावली	निर्णय सिन्धु
छन्दोर्णव पिंगल	अपूर्व कथा	स्वयम्बोध	कर्म्म विपाक
रसराज	क़िस्सा गुलसनोवर	ज्ञान चालीसी	संग्रह शिरोमणि
सतसई मूल	सहस्र रजनी चरित्र	दोहावली	भगवद्गीता पञ्चरत्न
सतसई सटीक	राबिन्सन का इतिहास	बालाबोध	दुर्गापाठ मूल
सभा बिलास	सीता हरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	दुर्गापाठ सटीक
युगुल बिलास	सती विलास	किताब जब्ती	विष्णु भागवत
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	क़िस्सा सर्द औरत	गणित कामधेनु	कथा यम द्वितीया
भजनावली	सांगीत प्रह्लाद	लीलावती	अपराध भञ्जन स्तोत्र
प्रेमरत्न	**सुतफ़र्क़ात**	पटवारियों की पुस्तक	कायस्थ कुल भास्कर
चित्र चन्द्रिका	शनिश्चर की कथा	भाग	कायस्थ धर्म्म निरूपण
बारहमासा बलदेव प्र०	ज्ञानमाला	**वैद्यक भाष्या**	तथा छोटा
मनोहर लहरी	गोपीचन्द भरतरी	निघण्टु	मथुरा सभा
गंगा लहरी	कथा श्री गंगा जी	अमर विनोद	**ज्योतिष**
यमुना लहरी	अवध यात्रा	वैद्य जीवन	मुहूर्त्त गणपति
जगद् विनोद	भरतरी गीत	औषधि संग्रह कल्पद्रु-	मुहूर्त्त चिन्तामणि सटीक
नवीन संग्रह	दानलीला व नागलीला	अमृत सागर बड़ा	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
शृंगार बत्तीसी	दोहावली रत्नावली	अमृत सागर छोटा	मुहूर्त्त दीपक
राग	गोकर्ण माहात्म्य	इलाजुल गुरबा हिन्दी	बृहज्जातक सटीक
राग प्रकाश	श्रीगोपाल सहस्र नाम	वैद्य मनोत्सव	जातकालंकार

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
जात का भरणा	ऋजु पाठ २ भाग	तथा ३ भाग	हिदायत नामा मुर्-
होरा मकरन्द	तथा ३ भाग	अवध देशीय भूगोल	रिसान
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक	धात्वर्थाव	इंग्लिस्तान का इतिहास	पशु चिकित्सा
संस्कृत उर्दू टीका	नागरी कैथी	हितोपत्रिका	यहा बख़्त कैथी
मनुस्मृति	वर्णमाला कैथी १ भाग	बाला भूधरण	तथा क़बूलियत
विष्णु हारीत	तथा २ भाग	पद्य संग्रह	रजिस्टर दाख़िल ख़ारि-
महिम्न स्तोत्र	तथा कैथी फ़ारसी	भाषा काव्य संग्रह	ज तुलबा मदर्सा
व्रतार्क	नागरी	कवित्त रत्नाकर १ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठ-
याज्ञवल्क्य स्मृति	हरूफ़ मुफ़र्दात	तथा २ भाग	शाला
संस्कृत भाषा टीका	अक्षरारम्भ	मंगल कोष	क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व १
अमर कोष तीनों काण्ड	वर्णप्रकाशिका १ भाग	अंक प्रकाश	तथा २ भाग
याज्ञवल्क्य स्मृति	तथा २ भाग	गणित प्रकाश १ भाग	व्यवहार पत्र संग्रह कैथी
सन्ध्या पद्धति	सूरजपूर की कहानी	तथा २ भाग	क़ानून कैथी
व्रतार्क	धर्म्मसिंह का इत्तान्त	तथा ३ भाग	
भगवद्गीता टीका हरि	शिक्षावली	तथा ४ भाग	पटवारियों के क़ायदे
वंशलाल कृ.	शिशुबोध	गणित क्रिया	उर्दू कैथी महाजनी
भगवद्गीता टीका आ-	पत्र हितैषिणी	क्षेत्र प्रकाश	टिकट के लाइसन्स का
नन्दगिरि कृ.	पत्र दीपिका	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	ऐक्ट २ सन १८७८ ई०
गीतगोविन्द	विद्या चक्र	तथा २ भाग	नागरी
कथा सत्यनारायण	विद्याङ्कुर	सकील दायरा	ऐक्ट लगान मग़रबीव
परमार्थ सार	पदार्थ विद्यासार	रेखागणित १ भाग	शिमाली १० सन १८५९
शार्ङ्गधर संहिता	पदार्थ ज्ञान विटप	तथा २ भाग	ईसवी
पाराशरी सटीक	भोज प्रबन्ध सार	बीजगणित २ भाग	इंडियन पिनल कोर्ट
शीघ्रबोध सटीक	राजनीति	रामायण तुलसी कृत	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौज-
लघुजातक	भाषा लघु व्याकरण १	बालकाण्ड	दारी ऐक्ट २५ सन १८६१
बृहज्जातिका	भाग	अयोध्या काण्ड	ईसवी
सामुद्रिक	तथा २ भाग	आरण्य काण्ड	ऐक्ट रजिस्ट्री २० सन
गरुड़ पुराण	भाषा तत्त्व दीपिका	किष्किन्धा काण्ड	१८६६ ई०
राम विवाहोत्सव	भाषा चन्द्रोदय	सुन्दर काण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत
सर्किल ते तालीम की	भूगोल तत्त्व	लंका काण्ड	२६ सन १८६७ ई०
पुस्तकें	भूगोल दर्पण	उत्तर काण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन १८६२
संस्कृत	इतिहास तिमिर नाशक	गुटका १ भाग	ईसवी
ऋजु पाठ १ भाग	१ भाग	तथा २ भाग	इत्यादि
	तथा २ भाग	तथा ३ भाग	

